

DUE DATE SLIP**GOVT. COLLEGE, LIBRARY**

KOTA (Raj)

Students can retain library books only for two weeks at the most

BORROWER S No	DUE DTATE	SIGNATURE

श्री शारदा



नवम्बर १९५३

‘राष्ट्रभारती विहार, राजस्थान, मध्यभारत, हैदराबाद और भोपाल राज्यके शिक्षा-विभागों द्वारा स्कूलों, कॉलेजों और वाचनालयोंके निम्ने स्वीकृत हो चुकी हैं ।

[सूचना — ‘राष्ट्रभारतीमें, सदश्री डा बाबूराम सन्नेना आचार्य काका कालेलकर, महामहाराष्ट्राय दत्तो वामन पातदार, स्वर्गीय किशोरीलाल मण्डवाला पीर जूनर प्रदाक ववमान राज्यपाल श्री क-ना-मु-गांजी आदि विशेषज्ञाकी अंके ‘समिति द्वारा १९३६ में निर्णय नागरी लिपिका प्रयोग हाता है —अि श्री, झू झू अ, अं (इ ई, उ, ऊ ए और ऐ की जाह) और व ण ओं वप (अं ए और अ अवयवके न्यायपर) —न०]

— विषय-सूची —

१. लेख :	लेखक	पृ० सं०
१ 'वाक्यान्तरे'	... श्री गंगाधर त्रिद्वर	७८९
२ डॉ भवानीलंकर नियोगी (परिचय)		७९२
३. कन्नड साहित्यके इतिहासकी अंके पाकी	... { श्री वेङ्कटरामण अनु०-श्री प्रा हिरण्मय	७९४
४ सम्पादकाचार्य बाबूराम विष्णु पराडकर	... श्री लक्ष्मीनाथर व्याम	७९७
५ श्री बाबूराम विष्णु पराडकर-अंके अंके	... श्री कमलेश	८०३
६ मेरी दविषण-भारत-भाषाके दस दिन	... श्री विनयमोहन गर्भा	८०७
७ सभ्यतावा सार (बंगला)	... { श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर अनु०-श्री मोहनलाल वाजपेयी	८१३
८ सरस्वती पुत्रके प्रति ।	... श्री नन्दन आनन्द कौमन्यायन	८१५
९ सामाजिक प्रगतिके प्रणेता विद्वद्विद्यालय और गिन्या-शास्त्री	... { श्री जामप्रकाश जयं	८२८
१० सन्त साहित्यकी अमूल्य विभूति गुरु शरण्य साहित्य	... { श्री डॉ हरदेव बाहरी	८४५
११ हिन्दीमें नगरवर्णनात्मक साहित्य	... मुनि श्री कानिशागर	८४९
१२ व्यासकर आशान	... { आचार्य श्री म. ज भाववन श्री राजप्रसाद मडु	८५५
१३ कहावत और न्याय	... श्री कर्तपालल महल	८६०
१४ बन्नाचार्य श्री पथे मुदजी	... श्री रामदेवर दयाल दुबे	८६३
१५ अर्थशास्त्रा रामायण	... श्री प्रा रजन	८७०
१६. बंगलाका पहला अक्षरमास	... श्री म-मचनराय गुज	८७४
१७ बन्ना लिपिका उत्पत्ति और वर्णमाला	... श्री गुरुनाथ जोगा	८७७
१८. श्री अक्षर मडु	... श्री प्रभात शास्त्री	८८९
१९. श्री अक्षर मडु श्री अक्षर मडु श्री अक्षर मडु	... { श्री अनुसूयादेवमाद पाटन	९०९

एनएच आरती

[भारतीय साहित्य और मस्कृतिकी मासिक पत्रिका]

—: सम्पादक —

मोहनलाल भट्ट : हृषीकेश शर्मा

* वर्ष ३ *

वर्षा, नवम्बर १९५३

* अंक ११ *

“काकासाहेब”

: श्री गंगाधर शिंदूरकर :

अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समन्वयनके अनेके प्रति आदर और आत्मोपना—दोनो ही भावनाअध्यवय श्री नरहरि विष्णु गाडगोल अपने परिचितोमें “काकासाहेब”—अिम नाम ही अधिक प्रसिद्ध हं। मैं समझता हूं कि श्री गाडगोल को भी यह नाम बहुत पसंद है। अिमका कारण सोचद यह है कि ‘काकासाहेब’ अिम अभिधानम व्यसन हानेवात्री आत्मोपना काकासाहेबके सार्वजनिक जीवनमें भी व्याप्त है। अच्छे नेताओंमें गिनती होनेपर भी अव्यवहार्य आदसोंका अक्व आडबर अूनमें नहीं है, और मोहने वयण जनसाधारणता पतना-भिमुख वरनेवात्री मानसिक दुर्वलतामें भी वे बहुत दूर हं। अिमोंअिअे “काका” से परिचित लोगोंके मनमें



है। जहाँक में ममअ पाया हूं “काका” के जीवनका आदर्श वह स्वल्पकुमुप नहीं है, जा अभी व्यवहारमें दियाया ही न दे और न वही है जो बिना किसी परिश्रम तथा बिना आयास प्राप्त हो जाअे। जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें “काका” मध्यममार्गी हं और वास्तविक अर्थोंमें वे मध्यमवर्गका प्रतिनिधिव करते हं।

सन् १९२०में राष्ट्रीय आंदोलनमें भाग लेकर सार्वजनिक जीवनमें प्रवेश करनेके बाद जिला कृषिस कमेटीके मंत्रीरदये लेकर केरलसरकारके अेक प्रमुख

मन्त्रीक और अब लोकसभाके अेक साधारण सदस्यके

यह प्रसिद्ध है कि काका स्वर्गीय सरदार पट्टेजे अत्यन्त विद्वान् भाजन थे और प्रिसीडिअं स्वानध्य-प्राप्तिये बाद केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलमें अन्या समामेय हुआ था। गन आम निर्वाचनके बाद, नये मन्त्रिमण्डलमें जब अन्या समामेय नहीं हुआ कुछ लोगोंने कहा— काका' की लाभप्रियताका मूर्धन्य अस्त हो रहा है। यह भी प्रसिद्ध है कि मन्त्री न बननपर अ' भागने अंक राज्यका राज्यपाठ अन्या काका' ने अस्वीकार पर दिया था। कुछ लोगका अग्रमें भी काका' की राजनीतिक मूल प्रतीक हुआ। पर मूल लगना है कि अस्त दोनो ही बात निराधार है। पिछले दोनो दा वपने सदाय जीवनमें कायम दलने साधारण सदस्यकी हैमियनसे 'काका' न जो कुछ काम किया, अग्रमें अन्की लोक-प्रियता मन्त्रित्वकालकी अपेक्षया कृष्ण नही ही है घटी नहीं। अतएव अिसी प्रकार राज्यालया पद अस्वीकार करनेमें अन्या आधिक हानि भजे ही हुआ ही और यह अपेक्षणीय भी नहीं है पर सावजनिक जीवनका मूल्य कभी भी खपे-आने पाशीमें नहीं आता जाता। अिस प्रसन्नका अंक दूसरा पढ़ू भी है। पुणेंके जिन मत-दाताओंने श्री गाडगीलको लारुमभायें भङ्कर अुनपर विश्वास प्रकट किया था यदि गाडगीलको केवल अपना लाभ और प्रतिष्ठाका ही विचारकर राज्यालया पद अस्वीकार कर लेने, तो वे मतदाता क्या सोचते। मतदाताओंके विश्वासको निभानमें कुछ आधिक स्वार्थसे मुंह मोडना प्रत्येक निवाचित प्रतिनियिके अिअे आवश्यक ही नहीं अनियार्य भी है।

केवल अितना ही नहीं केन्द्रीय सरकारके महत्वपूर्ण मन्त्री जैसे अूके पदपर रहनेके बाद अीरसभाके साधारण सदस्यका जीवन गितानका अवसर आनेपर भी 'काका' के अुसाहमें कोशी कभी नहीं आयी। फ़िरोज़गहा राडपर ही "काका" के दो जीवन— मन्त्रिकालोन वटो कोठीका और आजका छोटे और साधारण बगलेका— देखकर स्मरण हो आता है भवंहृदयके अंक वाच्यता— 'वचिद्भूमो धम्या वचि च पर्वक शयनम्'। पर अिस अवस्था-परिवर्तनसे 'काका' की जीवनकी गति और अुसाहमें कोशी परिवर्तन नहीं हुआ। पिछले मन्त्रिमण्डलके दो अन्य मन्त्रियापर नये मन्त्रिमण्डलमें न लिये जानेका प्रभाव अितना अधिक रहा है कि दानानेही सदस्यमें अपन मुंहपर टाला सा लगा रवा है, पर श्री गाडगीलकी हलचलमें पढ़े जैसा ही अुसाह और प्रसन्नताका वातावरण है। हाँ, अुनकी बाणी मन्त्रित्वकालकी अपेक्षया आज कुछ अधिक

जनमुखी हो गयी है जो कि स्वाभाविक और अुचित भी है।

जैसा कि मने पहले लिखा है 'काका' के मनमें अपने परिचिताने प्रति आत्मीयताकी अितनी भावना रहनी है कि अुनके राजनीतिक विरोधी भी, जो मन्त्रपर अुनकी सभी प्रकारकी लरी खोटी सुनानेमें नहीं हिचकते, अुनसे हादिक स्नेह करते हैं। अिसका अंक कारण और भी है। काका' अपने राजनीतिक विरोधियोंको अवसर मिलनपर मुंहटाट अुतर अवश्य देते हैं, पर विरोधियोंके प्रति अपने मनम कटुता अुत्पन्न नहीं होने देते। वे बरसर कहा करत हैं कि अुनके प्रति कही गयी जली-बटी धातका सस्कार अुनके मनार दूसरे दिन भी नहीं रहता। काका' का नयी-दिन्नी स्थित निवासस्थान दिल्ली आनेवाले अुनके सभी परिचित मित्रोंके अिअे खुला हुआ है। 'काका' का कभी-कभी विरोध करनेवाले मराठी साहित्यिक राजनीतिज्ञ और पत्रकार भी 'काका' के घरको अपनाही समझते हैं। यह स्थिति जब वे मन्त्री थे तत्र तो थी ही, पर आज भी है। आजकी परिवर्तित अवस्थायें यह आतिथ्यका बोझ अवश्यही अुनपर कुछ अधिक होता होगा, पर अुन्ह कभी किसीने सिका-यत करते नहीं सुना।

राजनीतिक क्षेत्रमें 'काका' भापाके आधारपर राज्याके निर्माणके समर्थक हैं और महाराष्ट्रीय होनेके कारण सयुक्त महाराष्ट्राके निर्माणमें अुनकी विशेष रुचि और प्रयत्न होना भी स्वाभाविक है, पर अपनी अिष्ट सिद्धिके अिअे वे आदोलनवादी नहीं, बल्कि सन्नोतावादी हैं। पिछले वर्ष हैदरावादमें अु-होने अिस सवधमें कहा— सविधानकी चौलटयें रहकरही हमें यह समझा हल करानी होगी। मारपीट अथवा अुपद्रवोंसे समझा हल नहीं हो सकती। अन्य प्राताको अप्रसन्नकर किसी अंक प्रत्येक कल्याण नहीं हो सकता। अैसा कभी न समझिये कि जो महाराष्ट्रीय नहीं हैं, वे आपके दुस्मन हैं। हमें लोगोंको यह समझाना होगा कि जनतंत्रके विकासकी ही दृष्टिसे भापाके आधारपर राज्याका पुनर्गठन आवश्यक है।

अतमें 'काका' के जीवनको यदि अंक वाच्यमें अभिव्यक्त करना हो ता यह कहकर किया जा सकता है कि सिद्धांत और व्यवहारका सामग्र्यही काका' का जीवन है। अिस वर्ष अैसे सभापति नागपुर अधिवेशनके राष्ट्र-भाषा प्रचार सम्मेलनको प्राप्त अूअे, यह अवश्य ही सजोय और सुपकी बात है।

डॉ० भवानीशंकर नियोगी

(संक्षिप्त परिचय)

आम्र देशके स्मार्त ब्राह्मणकुलमें जी० सन् १८८६ में जन्म । मध्यप्रदेशमें, १८६१ में ब्रिटिश सरकारको जमीनवा बन्दोबस्त (रेविन्यू मेटलमेंट) करनेके लिये अंग्रेजी भाषा जाननेवाले कर्मचारियोंकी आवश्यकता पड़ी थी, तब पिस प्रदेशमें अगिल्ला भाषा जाननेवाला नहीं मिलता था । अंग्रेज अमलदाराने अतः समय मछली-पट्टमकी अरुकी फँवटरीमें काम करनेवाले जित कुछ

अंग्रेजीदाँ कर्मचारियोंको यहाँ बुलाया, अतः श्री नियोगी जीके प्रपितामह भी आपे थे । नाम अरुका 'वैरागी बाबू' था । अिस विचित्र नामका कारण यो बतलाने हे, कि जब अेक साधु पुरप अरुके घर आया और माताने बालकको अरुके चरणोंमें रखा तो साधुने "चिरजीव हो बच्चा" का आशीर्वाद दिया । अेक ही बच्चा, साधुका बचन और माता पिताकी—निरठा ! बच्चेका नाम 'वैरागी बाबू' ही अरुस परिवारमें चल पडा ।

श्री नियोगीजीके पिता-महका नाम भी भवानी-शंकर था वे रायपुरमें कामशनरके दफतरमें सुपरिन्टेण्ट थे । १८८५ में अरुका देहान हुआ । जब १८८६ में डॉ सर नियोगीका जन्म हुआ और यही अरुन बालमें पहला बालक था, ता पितामहका नाम ही अरुनको नाम-करण सस्कारमें दिया गया । अरुनके पिता नागपुरके सरकारी मचिशालयमें हेड क्लर्क थे । जब नियोगीजी ८

सालके थे तभी अरुनक पिताकी मृत्यु हो गयी । अरुनकी माता, जब वे दो टाअी सालके रहे होगे, तभी मर चुकी थी । काकापर बालकके पालन-पोषणका भार आ पडा । काका सोतारामजी नियोगी (नियोगी यह खानदानी नाम हे) कट्टर भक्तानतो थे और दयासाधिविष्ट भी थे । पढो दवताचन और भजन-शूजन चलता । साधु-बाबा वैरागियोंपर अट्ट श्रद्धा ।



डॉ० भवानीशंकर नियोगी

रहनेके कारण बिगडोंमें बिगडे माने जाने लगे । चाचाने अरुनकी आदतको मुषारा और पदवाचा । अच्छी सखिमें आये । 'सन्मगति मुद मगलमूला' मराठीके अरुतम बोधप्रद श्रयोका पाठ । माध्वजनिक काव्योंमें रचि आप्रत हुआ । १९०६ में नागपुरके हिन्साप कालेअरे बी. अे दिना । कुछ बालक आप नागपुरके पठकर्म

अिषय समाज सुधार प्रेमी छोटे चाचा श्री दुर्गाशंकर नियोगीने विषवा विवाह किया, तो अरुन जाति-च्छुत किया गया । भाजी-बन्दीने बहिष्कार किया । डॉ नियोगीकी स्कूलमें पढाअी हुआ । सगतका अनर । बीडी पीना, स्कूलकी अपनी ककशासे पलायन कर जाना, ठाग खेल्ना—अिस प्रकारके शरारती चक्करमें आर पड गये । बीदह साल-की अरुध । अरुनी समय विवाहके लिये भी परिवारमें आग्रह हो रहा था जब कि मिडिलस्कूलमें ही पढ रहे थे । चाचा दुर्गाशंकरके साथ

हाजीस्कूलमें अध्यापन रहे। १९१० में अेम अे, अेल-अेल बी हुअे। वकालतका धघा आरभ किया। माथ ही अुस समयके काँग्रेसी कार्यकर्ता स्व० डॉ० मुंजे और वैरिस्टर अभ्यकर आदिके साथ राष्ट्रीय कार्य करते। १९२० की प्रसिद्ध नागपुर काँग्रेसमें डॉ० मुंजे मंत्री थे और आप सहायक-मंत्री। १९२१ में अपनी वकालत स्वगिन कर दी १९२२ मे फिर गुरु की। नागपुरके कञ्ची सास्त्रिक, सामाजिक, दैवपणिक कार्योंमें भी तन मन-धनमे सलग्न। गुप्तवागी तालाबके चौराहेपर लोकमान्य तिलक महा-राजकी मध्य पायाणमूर्तिकी स्थापना नियोगीजीके भगी-रथ प्रयत्नोंका फल है। अनेक वर्षोंमे आप नागपुरमें अनेक अुच्च शिक्षण-संस्थाओंके जन्मदाता, मचालक, पोषक, प्रेरक रहे हैं और अब भी हैं। आज आप गोर-वण सभा, मरम्बनी महाविद्यालय, लेडी अमृतदात्री महिला महाविद्यालय, स्कूल ऑफ आर्ट तथा प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति नागपुरके अध्यक्ष हैं। १९३३ से १९३६ तक आप नागपुर युनिवर्सिटीके वाचिम चान्मलर रहे और १९३६ से १९४६ तक नागपुर हाजी कोर्टके जस्टिस तथा चीफ जस्टिस रहकर सर-कारी सेवासे निवृत्त हुअे। सी आजी अी और 'सर' (नाओट हुड) की अुपाधियाँ भी मिली और विश्व-विद्यालयसे अेल अेल डी की पदवी। जब देशमें काँग्रेस-सरकारका राज्य स्थापित हुआ तब काँग्रेसी सर-कारका भी नियोगीजीने विश्वास संपादन किया।

१९४८ से १९५३ तक आप म प्र सरकारके पब्लिक सर्विस कमिशन (लोक-सेवा-आयोग) के अध्यक्ष रहे।

मीभाग्यमे आपकी पत्नी श्रीमती डाक्टर अिन्दिरा-वाभी नियोगी भी सच्ची सहचारिणी आपको मिली। वे स्ववशी विश्वविद्यालयकी अेम बी बी अेम है और कुछ समयतक आप पुणेंकी मुक्तिपात स्त्री-शिक्षण संस्था कर्वे महिला विद्यापीठमें हाअुम सर्जनका काम करती रही। आज भी अितनी बुद्धावस्थामें श्रीमती अिन्दिरावाअीका कार्यक्षत्र नागपुरमें बहुत व्यापक है। आप महाराष्ट्रीय हैं।

श्री नियोगीजीका दृष्टिकोण प्रजातंत्री है। सारे भारतकी अखंडताके समर्थक और पार्टी पावर पॉलि टिवमसे दूर रहने हैं। मन मनांतरे तथा भाषावार प्रान्तोंकी रचनाओंकी धीमाधीगीका आप समयन नहीं करते। आपने संस्कृत-साहित्यका विशेषकर मीमांसा, प्राचीन न्याय, पातञ्जल योग दर्शन, वेदान्त, बौद्ध-दर्शन आदिका मर्मज्ञतापूर्वक गहरा अध्ययन किया है और अुच्च कोटिके संस्कृत विद्वानोंकी सत्संगतिका लाभ अुठाने रहने हैं। आपकी अडसठ (६८) बरगकी अुध है। रोज दीन-चार मील मंशानमें पैदल घूमते हैं। चुस्त, फूर्तिले और कार्यव्यस्त रहते हैं। श्री नियोगीजी मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन नागपुर अवि-वेदानके स्वागतअध्यक्ष हैं।



कन्नड़ साहित्यके इतिहासकी एक झाँकी

: श्री के. चैकटरामप्प, भेम. अ., कन्नड़-प्राध्यापक, मैसूर विश्वविद्यालय :

लगभग पचहत्तर साल पहले स्वयं कन्नड़ भाषा भाषियोंको जिस बातका पता नहीं था, कि कन्नड़का साहित्य कितना प्राचीन है, उसमें कौन-कौन कवि हुए हैं और जिसकी क्या महत्ता है। जिस दिशामें सबसे पहले काम करनेवाले थे रेवरेण्ड अफ किट्टल साहब, जो जर्मन थे और मंगलोरमें आकर बस गये थे। रेवरेण्ड किट्टल गभीर विद्वान थे और थे भाषा तथा साहित्यके अनन्य पुजारी। जैसेही वे कन्नड़ भाषाके सोचवसे अवगत हुए, वैसेही वे कन्नड़ भाषा अथवा साहित्यके अध्ययनमें लग गये। अल्प कालहीमें वे कन्नड़ भाषा तथा साहित्यके असाधारण पंडित बन गये। साहित्यके रसास्वादनसे तृप्त न होकर किट्टल साहबने कन्नड़के प्राचीन ग्रंथोंको खोज अथवा प्रकाशनका कार्य शुरू किया। उनका सबसे महान् कार्य कन्नड़-अंग्रेजी कोशाका संपादन और प्रकाशन है। अब तक कन्नड़ भाषाके जितने कोश लिखे गये हैं, उनमें किट्टलका कोश सबसे बड़ा और गवेषणापूर्ण है। किट्टल साहबने कोशाके प्रकाशनके साथ-साथ "उद्योगविधि" नामक ग्रंथका संपादन करके कन्नड़ साहित्यके इतिहासपर एक गवेषणापूर्ण निबन्ध लिखा, जिसमें कन्नड़ साहित्यके इतिहासपर काफी प्रकाश पड़ा। जिस दिशामें काम करनेवाले दूसरे महानुभाव थे मि. वी. अेल. रंस जो मैसूरके प्राच्य-अनुसंधान विभागके प्रधान थे। रंस साहबने कन्नड़ शिलालेखोंका पता लगाकर जो कुछ प्रकाशित कराया, उसके द्वारा कन्नड़के कन्नड़ अथवा कविओं और राजाओंके बारेमें बहुत-सी बातोंकी जानकारी प्राप्त करनेमें मदद मिली। मिस्टर रंसने अष्टाक्षरके "शब्दानुशासन" के लिये भूमिका लिखते हुए कन्नड़ साहित्यके कन्नड़ पहलुओंपर प्रकाश डाला। साथ ही मैसूर गजेटिंगमें एक खोजपूर्ण लेख प्रकाशित किया, जिससे अनेक समस्याओंपर विचार करनेमें सुगमता हुई। रेवरेण्ड किट्टल और रंस साहबने जो कार्य प्रारंभ किया था, उसका प्राच्य-

विभागके सहायक अधिकारी श्री आर. नरसिंहाचार्यने अपने हाथमें लिया और आगे बढ़ाया। उन्होंने अपने एक वधु श्री अंस जी नरसिंहाचार्यके सहयोगसे "कन्नटक कवि चरिते" नामक बृहद् ग्रंथका प्रथम भाग सन् १९०७ में प्रकाशित किया। यह बड़े ही दुर्भाग्यकी बात हुई कि "कन्नटक कवि चरिते" का काम समाप्त होनेके पहले ही श्री अंस जी नरसिंहाचार्यका देहान्त हो गया, किन्तु आर. नरसिंहाचार्यने अपनी टलनी धुंधकी परवाह न करके, निरंतर परिश्रम कर 'कवि चरिते' का दूसरा तथा तीसरा भाग प्रकाशित किया। जिस प्रकार चार विद्वानोंके बुधोगके फलस्वरूप कन्नड़ साहित्यके इतिहासकी रूपरेखा ही नहीं अपितु एक बृहत् ग्रंथ भी प्रस्तुत हुआ गया; जिससे कन्नड़की प्राचीनता तथा महत्ताका परिचय कन्नड़ भाषा-भाषियोंको प्राप्त हुआ।

'कन्नटक कवि-चरिते', कन्नड़ साहित्यके इतिहासपर अब तक जितने ग्रंथ रचे गये हैं, उनमें सबसे बड़ा है। जिसमें नवीं शताब्दीसे अठनीसवीं शताब्दीके अनूठके कवियोंके नाम अथवा काल तथा अथवा उनकी कृतियोंके नाम दिये गये हैं। भूमिकामें कन्नड़ प्रदेशकी राजनैतिक, भौगोलिक तथा सामाजिक परिस्थितियोंका वर्णन करते हुए कन्नड़ भाषाके विकासका बड़ा ही रोचक परिचय दिया गया है। लेकिन कवियों और उनके ग्रंथोंकी आधुनिक ढंगमें आलोचना नहीं की गयी। पर ही, आलोचनात्मक अध्ययनके लिये काफी सामग्री जुटायी गयी है।

छठी शताब्दीके कन्नड़-शिलालेख प्राप्त हुए हैं; जिनके आधारपर जिस बातका निर्णय हो गया है कि नवीं शताब्दीके आरंभमें लिखा हुआ "कविराज-मान" कन्नड़का आदि ग्रंथ है। यह एक अथवा कविता रीतिग्रंथ है। जिसके रचयिता थे राष्ट्रकूट चक्रवर्ती

राजानुपनूय । अब यह मान्य होने लगा कि अिसके पहले ही कन्नडमें साहित्यकी रचना हुआ करती थी । प्राचीनताकी दृष्टिसे भारतीय भाषाओंमें अवर मस्तुनका स्थान सर्वप्रथम है, तो तमिलका दूसरा और कन्नडका तीसरा । कन्नडका साहित्य जितना पुराना है अतना ही बृहत् और सर्वांग-सुन्दर भी है । ' कर्नाट कवि चरिते ' में करीब १२०० कवियोंका अुल्लेख हुआ है । भाषाकी प्रौढता, काव्य-मौल्य रसाभिव्यञ्जना, विषयकी विविधता तथा रचना कौशलकी दृष्टिसे कन्नडका प्राचीन साहित्य दुनियाके किसी भी अूँच दर्जेसे साहित्यसे टकर ले सकता है । छन्द, रस, अलंकार, व्याकरण आदि भाषा तथा साहित्य-शास्त्र सम्बन्धी विषयों ही प्रौढ यथ बारहवीं शता दीने पहले ही लिखे गये थे ।

यह सर्वविदित ही है कि भारतवर्षमें धार्मिक विचारोंके प्रचारके लिये सबसे पहले भगवान् बुद्ध और अुनके अनुयायियोंने देशी भाषाओंको माध्यम बनाया था । अिस तत्त्वकी महत्ताका समझकर जैनोंने भी बौद्धोंका अनुकरण किया । अिन दोनों धर्मके आचार्यों तथा प्रचारकोंने धर्म सम्बन्धी सभी ग्रंथोंका देशी भाषाओंमें अनुवाद किया । कन्नडमें भी धार्मिक तथा साहित्यिक ग्रंथ निर्माण कार्य जैनोंने ही सभसे शुरू किया । अिस बातका तो पता नही चलता कि बौद्धाने कन्नडमें ग्रंथ रचे थे या नहीं, यद्यपि जैनोंने पूर्व ही बौद्ध धर्मका काफी प्रचार कर्नाटकमें ही शुरू था ।

अिस तरह आजकल विज्ञान (सांज्ञ-स) का बोल-बाला है अुगी तरह प्राचीन कालमें मानव समाजमें धर्मकी प्रचलना थी और अिन धार्मिक भावनाओंसे समाज जितना मजिन तथा प्रभावित हुआ था, अतना शायद ही और किसीसे हुआ हो । जीमवी पहली-दूसरी शताब्दीसे बारहवीं शत तक कन्नड भाषा भाषियोंवर जैन धर्मका काफी प्रभाव पडा । जैनोंने अपने धर्मके प्रचारके लिये कन्नड भाषा और साहित्यको माध्यम बनाया । यद्यपि जैन कवियोंका प्रधान लक्ष्य अपने धर्मका प्रचार करना ही था, तो भी अुनके रचे हुए काव्योंमें साहित्यिक सौन्दर्यकी कमी नहीं । अिन जैन कवियोंने जैन-तीर्थंकरों तथा आचार्योंकी कथा-

ओंको ही अपने काव्यकी वस्तु अवश्य बनाया, लेकिन लोगोंके जीवनके निकट आने और अुन्हें अपनी तरफ आकर्षित करनेके लिये पौराणिक कथाओंने भी अपने काव्योंको सजाया । अिन कवियोंने पौराणिक कथाओंमें अवश्य कुछ परिवर्तन कर लिया किन्तु कदात्रीकी रोचकताको वेने ही बनाये रखा जैसे कि मूल कथाओंमें थी । यही कारण है कि अिन जैन कवियोंके रचे गये भारत, रामायण और भागवतकी कथाओं कन्नड भाषा-भाषियोंके लिये अुनकी ही प्रिय हैं जितने मस्तुनके काव्य शय । पम्पका ' विक्रमाजुंन विजय ' अथवा पम्प-भारत, रत्नका ' सांज्ञ मीम विजय ' कन्नडके अतमोल रत्न हैं, जिनमें कन्नडके लोगोंने जीवनके रोचक चित्र अंकित हैं ।

कन्नडका आदिकाल जो नवीं शताब्दीमें बारहवीं शताब्दी तक माना जाता है, जैन-काव्यके नामसे प्रसिद्ध है । अिसका कारण यही है कि अिस अवधिमें कन्नड साहित्यकी थी वृद्धि करनेमें जैनोंका विशेष हाथ रहा । जैन कवि मस्तुन भाषा तथा साहित्यके अच्छे ज्ञाता थ । अिमलिये यह स्नाभाविक ही था कि कन्नड साहित्यके निर्माणके लिये मस्तुनका साहित्य प्रेरक शक्ति बन जाय । अिमलिये अिम कालमें ग्रंथोंकी भाषा न केवल मस्तुनमय थी बल्कि शैली, छन्द कथा वस्तु आदि सभी बातोंमें मस्तुनका अधानुकरण हुआ । अिस कालकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सब शय 'चम्पू शैली'में ही रचे गये । अत अिसकी चम्पू काल भी कहते हैं । यह तो स्वाभाविक ही था कि कन्नडके अत्यन्त लोक-प्रिय 'त्रिपदि', पदपदि 'साग्रथ', 'रगते' आदि छंदोंका प्रयोग कम होने लगा । चूँकि मस्तुनके संपूर्ण साहित्यका गहरा प्रभाव कन्नडपर पडा, अिमलिये भाषामें नवीं शताब्दी आयी और अभिव्यञ्जना प्रणालीका चरम विकास हुआ । जैसा कि जगतकी सभी भाषाओंके आरंभिक कालकी समस्त रचनाओं पद्यमें ही हुई हैं अिम समयका सारा साहित्य पद्यमें ही निर्मित हुआ । यशतिक कि शब्दके सत्र शास्त्र शय भी पद्यमें बनें । नृपनूय केरि-राज नागवर्म नामक प्रसिद्ध कवियोंने अपने लक्षण शयोंका प्रणयन पद्यमें ही किया । गणितके महान् पंडित

राजादित्यन लीलावती का अनुवाद भी पद्यमें किया। किसी कालमें कन्नडमें गद्य लिखनका सूत्रपात हुआ। अंसे गद्य रूपमें 'चाण्डराय-पुराण' अल्लेखनीय है। यद्यपि अिस समय बड़ बल कलात्मक प्रौढ काव्याका निर्माण हुआ तो भी समाजके सधारण लोगोंके जीवनके साथ साहित्यका संपर्क नहीं रहा। अिसका कारण यह था कि आमतौरपर अिस कालमें कवि राजाओंके आश्रयमें रहत थ और वे जो कुछ लिखते थ या तो अपन आश्रयदाताओंका यश मानेके लिय लिखते थ या दरबारके अ्य पण्डितोंक बीचमें वाहवाही लूटनेके लिय अथवा अपन धमके प्रचारक लिय। अिसका परिणाम यह हुआ कि न बोलचालकी भाषा साहित्यके मूलनके लिय अपुपूत समझी गयी न कन्नडक छंदोंका हा प्रयोग किया गया। लेकिन कम्पू 'गलीमें बड़ ही प्रौढ काव्य रचे गये जो मौलिकताकी दृष्टिमें संस्कृतके महाकाव्यके टक्करके बने।

सन १२०० सन १६०० तकका काल 'वीर' गैव काल माना जाता है। यद्यपि अिस कालमें अ्यान्य धर्मावलम्बियान भी साहित्यकी सेवा की, तो भी कन्नड साहित्यमें अक क्रांतिकारी नूतन युगके निर्माणमें वीरदौब संप्रदायके अनुयायियोंका हा विगप हाथ रहा। वारहवी 'गतादीक अतमें कर्नाटकमें श्री वसववरका प्रादुर्भाव हुआ जिनके व्यक्तित्वक प्रभावम समस्त कन्नड भाषा भाषियाका हा नहीं बल्कि दक्षिणप्रायके विगाल मू मागके निवासियाक धार्मिक सामाजिक अक नैतिक जीवनमें बड़ा अूपल पुयल मची। वसव उंका अूनके गिण्णेल अयने मन्क शककरक लिय बोलचालकी कन्नड भाषाकी माध्यम बनाया। वसवकी वाणी वचन साहित्यक नामस प्रसिद्ध है जो अपन ही दगका अक अनुठा साहित्य है। अिन वचनानमें न केवल वीरगाव संप्रदायके सिद्धांतका निरूपण हुआ, बल्कि बड़ी ही सरल सरम और चुस्त भाषाम भक्ति ज्ञान प्रम लोकनीति मसाचार आदिका सद्ग दिया गया। अिन वचनान द्वारा वसवके महान व्यक्तिवकी गहरी छाप कन्नड जनतापर पडा। वचन-साहित्यके निरालके पल्लवका कन्नड भाषा और साहित्यमें नूतन चक्षितका मचार हुआ। पुरानी रक्षियाका अक तरफ बहिकार हुआ दूसरा तरफ साहित्यमें लोक जीवनका मच्चा चित्र अतिविश्विस्त हुआ। वचनकाराकी मख्या दो सीस भी

ज्यादा है जिसमें वसव, अल्लमप्रभू निद्धराम चिन्नवसव और अवकमहादेवी अग्रगण्य हैं।

'वचन साहित्यके माय साथ अिस कालमें और भी कअी प्रकारकी शैलिया प्रचलित रहीं। ह'पीनारक हरिहरन गिरिजाकन्याा नामक कम्मूकाव्यकी रचना की और 'रगळ' नामक छंदका प्रयोग करत हुआ कअी प्रय रचे जिनमें गिव भक्ताका जीवनिया बड़ी हा लोक प्रिय हुआ। अिस कारणसे हरिहरको 'रगळ कवि भी कहन है। हरिहरक बाद 'रगळ' छंदमें लिखनकी प्रणाली खूब चल पडी। अिसके अतिरिक्त 'कन्नडि' और सागय छंदोंकी गैलिया भी खूब प्रयुक्त होन लगीं। हरिहरके भनीज और गिण्य राषवावन 'हरिद्वद काव्य पटपदीमें लिखा। कअी अक वीरगाव कविया और कुमार व्यान कुमार घाल्मीकि, लक्ष्मण्य प्रनूति द्वाहाय कवियात पटपदी छंदका बड़ी सफलताके साथ प्रयाग करते हुए कअी महाकाव्योंका निमाण किया। अिस प्रकार अिस आलोच्य-कालमें संस्कृतके छंदका अपुपयोग करना कम होने लगा और 'गुड कन्नडके छंदोंकी अपुपयागिता मवत्र वन्त लगी। अँसा कि अपूर लिया जा चुका है अिस कालकी सवत्र बड़ा विगपडा यह रही कि साहित्य कवल राजदरवाराकी वस्तु न रहकर, जन साधारण लोगोंके समावादनकी वस्तु बन गया।

अिनतरह वीरगाव भक्तान अपन लोकप्रिय वचनों क द्वारा कन्नड-साहित्यका समृद्ध और जनप्रिय बनाया, अुसी तरह वैष्णव भक्तोंन अपन भजन और कीतनों द्वारा कन्नड भाषा व साहित्यकी समुन्नन किया। अिन वैष्णव हरिदासाका काल सोलहवीं 'गता'डा तक बराबर चलता है। व नारके सार हरिदास था मध्वाचारकी गिण्य परंपराके थ जिनमें पुरंदरदास, वनकदास, जगन्नाथदास प्रथान ह। अिन सत्रान कर्नाटकमें बड़ी काम किया जो काम अतुर भारतमें मूर तुलना मारा बाअी आदिन किया। अाने मुदर भजना द्वारा अिन हरिदासान कर्नाटकमें भक्ति गगा बहायी और प्रम ज्ञान बराय, मन्गवार लोकनीति आदिना अमर मदेग घर पर तक पहुँचाया। अिस भजन साहित्यक प्रचारन कर्नाटक मगीतक विनाममें बड़ा महापता मिला।

अठारहवा 'गतादीक आरनमें अक अन्त लक्ष अिस कवि हुआ जिनका नाम था मवन। मवन (गप पृष्ठ-सख्या १०३ पर)

सम्पादकाचार्य बाबूराव विष्णु पराङ्कर

: श्री लक्ष्मीशंकर व्यास, अेम. वे. (जानसी) :

आधी शताब्दीम भारत भारती जोर भारतती सतन माधनामें मगल रहनवाक तथा देशमें याि अेव अनेशानेक युग-परिधनने सग्टा और इण्डा मग्गा दवाचार्य पण्डित बाबूराव विष्णु पराङ्कर राष्ट्रकी विभूतियोंमें प्रमुप हँ । विचारो द्वारा देशमें जिन महा-पुग्गोंने नव जागरण और राष्ट्रीय-चतनाका स्कुण किया अनम श्रद्धेय पराङ्करजीका विसय अच विशिष्ट स्वात है । ण दोव अिम जादूगरने देशके तप-लक्ष्य जनानी मानयताना पाठ पढाया अपने अरिमारोका चोप कराया और चतया है अुहे दासत्व शृषलासे मुक्त होनेका मत्र । बीसवी सदीके प्रारम्भसे वार्य-नयेत्रमे अवतीर्ण हाकर अवतर लाखा जनोकी विचार धाराको अुत्तेजित-आन्दोलिन करनेवाले अिस सुधधारका जिनना महान् व्यक्ति व है अुतना ही महान् है अुसना कृत्स्न । देशके समाज, अितिहास और साहित्य-गस्त्रुतिपर अिम महान् तपस्वीकी लेखनीने अपनी अमर छाप अनित की है । यही नही, राष्ट्रभाषा हिन्दीने समा-चारपत्रोका मार्ग-दर्शनकर अुनका मापदण्ड बनाया है । सम्प्रति, देशके हिन्दी समाचारपत्रोने विकास तथा अुनकी ह्परैवाके वर्तमान रूपका अधिनाश थ्येय अिसी महारथीको प्राप्त है ।

वचन तथा शिष्या-संस्कार

महात्माओ,म-नो,विचारका तथा साहित्यने प्रवर्त-कीको जन्म देनेवाली अतिहासिक काशी नगरीमें बालक बाबूराव पराङ्करका जन्म कातिक शुद्ध षष्ठी मगलवार, सवन् १९४० विघ्नम तदनुसार १६ नवम्बर सन् १८८३ को हुआ । आपके पिताका नाम पण्डित विष्णु दास्त्री

या । आप विहारके राजकीय स्कूत्रके हेडपण्डित थे । बाङ्क बाबूरावका नामकरण 'सदाशिव' किया गया था किन्तु पिता स्नेह भावस अुन्ह 'बाबू' ही पुकारा करते थे । परिणाम यह हुआ कि यही 'बाबू' बाबूराव विष्णु पराङ्कर हा गये । आगे चलकर वचनका 'सदाशिव' नाम अकदम ही विस्मृत कर दिया गया हो, अंती बात नही । अपने मुदीघ पत्रकारिताके जीवनमें पण्डितजीने सदाशिव के नामसे बहुतेमे लेख लिखे हैं । अस्तु । बाङ्क बाबूरावकी शिष्या-दीक्षया सना-तनी परिवारके बाङ्कका जेपी हुआ । यज्ञोपवीतके पूर्व

अुन्ह लगेटी लगाकर वेदाङ्कका अध्य-यन करना पडा । बुद्धि पहलेसे ही तुनाय रही और अिसके परिणाम-स्वरूप यज्ञोपवीतके पूर्व ही वेदाङ्क कटाप ही गय, जनअू हो जानके बाद आपने वेदका अध्ययन किया । बाङ्कालकी अिस शिष्याने पराङ्करजीने मस्काराको सनातनी बनाया और जितकी छाया अब भी अुनके व्यक्ति-वमें परिलक्षित होनी है ।

बाल्यकालकी विषम परिस्थितियाँ

आपके पिता श्री विष्णु पराङ्कर विहारके सर-कारी हाअीस्कूलमें मस्त्रके हेडपण्डित थे । अनलिभे परिवार सहित अुहे छपरा जाना पडा । यही वचनमें बाङ्क बाबूरावको रोमन अक्शरोका सस्कार कराया गया । कठिनतासे अेक वर्ष बीना होगा कि आपके पिताजीकी बदली अयत्रके लभे हा गये । यही क्रम देय पण्डित विष्णु दास्त्री अपने पत्रिकारको काशी पहुँचा गये । बालक पराङ्कर अपनी माता तथा छोटे

माओके साथ पुन जागी आ गये । श्री विष्णु शास्त्री जिस प्रकार छपरा, मुंगेर, भागलपुरके सरकारी हाजीस्कूलोंमें अध्यापन करत रहे और जिधर दाबूराव पराडकरका शिक्षाक्रम पुन काशीकी गल्पियों होने लगा । अम समय बनारसकी दण्डपाणि गलीके निकट अंक स्कूल था, यही आप पढ़ने लगे । जिसके बाद आपका नाम हरिद्वन्द्व स्कूलमें लिखाया गया जो अम समय बुलानालाके निकट मुन्धिया मुहल्लेमें था । अम समय आपकी सगत काशीके कुठ कबूतरदाज लडकोंने हो गयी । वे पंसा चाहते थे पर श्री दाबूरावके पास पंसा कहाँ ? अंक दिन जुन्हींकी प्रेरणासे श्री दाबूरावको अपनी माताकी अगूठी चुरानी पड़ी । उसे अंक सर्रापके यहाँ बेचा गया । अंक ही दो दिन बाद आपकी माताजीने अम अगूठीकी खोज की तो अम काण्टका रहस्योद्घाटन हो गया । बादमें वह अगूठी भी सीतारकी रूपसे देकर प्राप्त कर ली गयी । जिस पटनाकी खबर आपके पिताजीके पास पहुँची जो अम समय भागलपुर हाजीस्कूलमें हेड पठित थे । वे काशी आये और बिना कुछ डाटे-फटकारे चुनचार बालक दाबूरावको अपने साथ भागलपुर ले गये । भागलपुरके जिस स्कूलमें वे अध्यापक थे, अममें अमका नाम लिखाया गया । अगूठी लेकर बेचनेकी घटना थी दाबूरावजीके जीवनमें परिवर्तनकारिणी रही । इसी कारण काशीकी गल्पियों परम स्वतंत्र होकर कबूतर अडानेवालाके साथ धूमनेवाले जिस महान् बालकका जीवनक्रम अंक नयी दिगामें परिवर्तित हुआ । अभी श्री दाबूरावजी अिद्वन्द्व परीक्षा भी अमूर्तिर्ण न हो पाये थे कि आपके पिताका दुःखद देहावसान हो गया । परिवारमें बड़े होनेके नाते आन-पर अनेक नये नार अंक अतुलदाजिब आ गये । अिद्वन्द्व परिस्थितियोंमें आने सन् १९०० में अिद्वन्द्वकी परीक्षा अमूर्तिर्ण की । आधिक साधनोंके अभावमें भी आने अध्यापन न छोडा । अिसका अंक कारण तो यह था कि स्कूल काण्टमें आन अमकी प्रतिभाके दण्डपर सबके दिव्य आन बन गये थे । दूसरे भागलपुरके

जमीदार पाडेजीके यहाँ जे आनेके पिताजीके गिम्न थे, आपको पारिवारिक स्नेहका दातावरा मिला । अिसलिसे आशी अे कथयामें भी आपने भागलपुरके टी अम जुबली कालेअमें अमना नाम लिखाया । अनी आप अिस कथाका अध्यापन पूरा भी न कर सके थे कि सन् १९०३ में काशीमें प्लेठका मयकर प्रकोप हुआ और आपकी माताजी अिस लोचने चल बसीं । अण्डर दण्डके जब आन थे तनी पिताजी परलोकगामी हो गये थे और अब माताजी अिद्वन्द्व छोडकर चली गयीं । पिताकी मृत्युके बाद छह-आठ वर्षों अरमें जो कुछ था समाप्त हो चुका था । काशी आकर श्री दाबूरावजीने देखा कि अब पढ़नेका अवसर नहीं रह गया था । परिवारके पीपणका दापिब आ गया था और अमाने खानेका अमन सामने था ।

छात्रमें गृहस्थ बने

अिसी बीच काशीके सप्रान्त जडे परिवारमें आपका विवाह सम्बन्ध टी । यह परिवार अब भी काशीमें विद्यमान है । पठितजीको अिस पत्नीके देहावसानके बाद अमके अनी विवाह हुआ पर अनी-अम जो आपकी पहली पत्नीसे प्राप्त हुआ वह अिसी अण्डे नहीं । वे जायी और रोगका गिकार बनकर चलती गयी । पतिजीकी पहली पत्नीकी मृत्यु सन् १९१०-१३ में हुआ । अिस बीच कामकी तलाग जारी थी । और अिसी अमामें आपकी काशीके लक्ष्मीचौधरीके अंक पण्डितोंमें टपूगन भी करना पया । आपके स्वसुर भी आपके अिद्वन्द्व कामकी तलाग कर रहे थे और अिसमें नदलता भी मिला । एक-द्विनाममें आपका नौकरी मिला गयी और कामका अमस्थित होनेका पथ भी मिला पर सरकारी नौकरी न करनेका आपने निश्चय कर लिया था ।

लोकमान्य निलम्ने अण्डकः

अमनीर आधिक परिस्थितियोंके रहने होने भी सरकारी नौकरी न करनेका विचार तथा अमका श्री दाबूरावपर पहले ही पड चुका था । आनेके अण्डे अिद्वन्द्वमें लानेवाले मामा श्री सुताराम गणेश देअडकर अमनी बनी लडकीके विवाह-अमामें काशी आये थे ।

श्री सत्यारामजीने बालक बाबूरायसे बातचीतके अनन्तर प्रश्न पूछा कि अन्तर क्या था या औरगजब ? श्री बाबूरायने जैसा अतिहासमें पढ़ा था वह दिया 'अक्षर महान्' था । श्री सत्यारामजीने पूछते ही पूछा—'तो ?' इस 'वयो' का अन्तर बाबूरायसे पास न था । अतःपर सत्यारामजीने अन्ते बताया कि अक्षरकी नीतिसे हिनू सम्प्रतिष्ठा अम्बुधान बने सम्भव था और अमु परिस्थितिके निवाजी बने अल्प होते । आपने बताया कि ठीक अमी प्रवर्तकी नीति अगरेजोंकी भी है जो हमारी सम्पत्ता और मरुतियों ही मरुत कर देना चाहते हैं । यही बाबूरायजीके लिखे राष्ट्रीयता तथा देश-प्रेमका पहला पाठ था । इस घटनासे आपका दृष्टिकोण ही बदल दिया । अगरेजोंके बाद मन् १९०५ में बनारसमें कांग्रेस हुआ तो आप कांग्रेस स्वयंसेवकके रूपमें अमुमें सम्मिलित हुए । इसी अवसरपर आपकी लोकमान्य तिरुतके दर्शन तथा सम्पर्कका सीमाय प्राप्त हुआ । लोकमान्य अगरे अपने साथ राजनीतिक कार्यके अगरे ले जाना चाहते थे किन्तु पारिवारिक परिस्थितिके कारण बाबूरायजी काभी छोड़कर नहीं जा सकते थे । श्री सत्यारामजी, बनारस कांग्रेस की लोकमान्य तिरुत अिन सीनेकी प्रेरणा तथा प्रभाव श्री बाबूरायकी जीवाभाराको नयी दिशाकी ओर गनवान करनेमें सहायक हुए । आपमें देशप्रेम और राष्ट्रीयताकी भावनाका अदय हुआ, जिनके परिणामस्वरूप आपने एक तार विभागकी नीकी टुरा दी तथा राष्ट्रके नव जागरणके महान कार्योंमें प्रयुक्त हुए । श्री सत्यारामजीके आदेशानुसार आपने प्रसिद्ध मराठी साप्ताहिक 'वेमरी' पढ़ना प्रारम्भ कर दिया था ।

पत्रकारिके कर्षेमें

विद्यार्थाने श्री बाबूरायकी पत्रकारिताके लिखे बनाया था, तो अला के किम प्रकार तार-विभागकी मरुतारी नीकी स्वीकार करते और किम प्रकार राजनीतिके कर्षेमें लोकमान्यके साथ अन्तर पडते । अगरे तो मरुतारी कर्षेचारियोंकीही नहीं, मरुतार बदलनेके लिखे कार्य करता था । राजनीतिक नेता बनकर भाषणकी अर्षणा अन्तका मार्गदर्शन करा, देशकी कोटि-कोटि

जनतामें देशभक्तिकी भावना अल्पन करनी थी । अिमलिखे जब कर्षेमें प्रकाशित होनेवाले 'हिन्दी वगवासी' में सहायक सम्पादकी अवस्थानताका विज्ञापन आपने देखा तो अपने हाथसे आदेशनपत्र लिख भेजा । अिसके साथ किमीकी न ही विफारिस थी, न कोअी साटीरिक्टेही था ।

श्री हरेकृष्ण जोहर 'हिन्दी वगवासी'के सम्पादक थे । आवेदन-पत्रकी शंरीमें आप अितने प्रमाकित हुए कि बाबूरायजीको अन्त पदने लिखे चुना और पुला भेजा । जुन दिनों दुर्गा पूजाके अवसरपर दैनिक पत्रोंमें अेक मन्ताह और साप्ताहिकोंमें दो साप्ताहिकी दुर्द्विया हीनी थी । अमी वष जोहरकी पूजाकनागमें बासी आवे तो बाबूरायजीसे अन्तरी भेंट हुआ । जोहरकी आपसे मिलकर वडे प्रमत्त हुए और आपकी लेखन-शैलीकी मराहना की । अिसी बीच बाबूरायजीने अपने मामा श्री सत्यारामजीके जिनका घर मवाल परगनामें था पत्र लिखा और अन्तकी सम्मति मागी । श्री सत्यारामजी अमु ममय बगला दैनिक 'हिन्दीवादी'के सम्पादक थे और कलकत्तेमेंही रहते थे । अस्वस्थ होनेके कारण वे अपने घर गये हुए थे । बाबूरायजीका जब अन्त पत्र मिला तो अन्तेने तत्काल सहायिकी दी और कहा कि कलकत्ता जानके पूर्व मुअसे मिलने जाओ तथा घरकी ताली लेने जाओ । सन् १९०६ के पूजाकनागके बाद बाबूरायजीने बासाके कलकत्तेकी ओर प्रस्थान किया । आप 'वगवासी' में कार्य करने लगे लेकिन रहते थे श्री सत्यारामजीके निवागपरही । कुछही दिनोंके बाद आपके मामा श्री सत्यारामजी आ गये । बाबूरायजीकी मामी भी अन्तके साथ आयी थी । अिस प्रकार कलकत्तेमें पत्रकारिताके कर्षेमें आप अवतीर्ण हुए । देशसेवाकी भावना तथा 'वेमरी'के अध्ययन-मननके अर्षेकारिक प्रयोगका समय अर आ गया था । अमु समय 'वगवासी'का वडा प्रचार था । पर यह पत्र था प्रतिशियावादी नीमिना सैय्येक । अितने श्री बाबूरायका चित्त कुछ समयके लिखे हटने लगा, पर अपने मामाके आदेशका पात्रन करते हुए वे यहाँ कार्य करते रहे ।

अध्ययन और मननके वे दिन

'हिन्दी बगवासी'में महायक सम्पादकके बेतन रूपमें अन्हें पच्चीस रुपये मानिक प्राप्त होते थे। बेतन जिस दिन मिलता अुगी दिन मामा सखारामजीकी आज्ञानुसार २० २० मनिआडर बनारस कर देना पडता था और रमीद अन्हें दिखानी पडती थी। यही त्रम प्रत्येक मास चलता था। पांच रुपये कपडे-लत्ते अथवा हाय खर्चके लिअे अपने पास रखनेकी श्री बाबूरावजीकी आज्ञा थी। वे मदा अिसका पालन करते रहे। भोजन और निवासकी समस्त व्यवस्था मामा सखारामजीके यहाँ थी ही। पांच रुपया जो बचता था अुसका अधिकास भाग कलकत्ता स्थित अिम्पीरियल लाअिब्रेरीके आने-जानेमें व्यय होता था। कार्यालयसे लौटकर आनेपर श्री बाबूरावजीको मखारामजीके आदेशानुसार प्राय नित्य ही अिम्पीरियल लाअिब्रेरी जाकर विभिन्न विषयोंका अध्ययन अेव तथ्य-सग्रह करना पडता था। यह त्रम अितना नियमित हो गया था कि अुबन देश-प्रसिद्ध पुस्तकालयके पुस्तकालयके आपके लिअे स्थायी प्रवेश-पत्र तथा पूषक बँडर अध्ययनकी समस्त सुविधाअें सुलभ कर दी थी। काशीमें नागरी प्रचारिणी सभाके आयें भाषा पुस्तकालयमें बँडर वहाँकी अधिकास पुस्तकोंको पड जानेवाले बाबूरावजीने अिम्पीरियल पुस्तकालयमें भी अुसी वृत्तिसे काम लिया। अिसके अतिरिक्त श्री सखारामजी प्रायः नित्य ही अेक न अेक प्रदन या समस्या सम्बन्धी विवाद छेड देते थे और जिस पक्षका बाबूराव समर्थन करते अुसका वे सपहन पत्र पढ़ते। अिस प्रकार बाबूरावजीको महान अध्ययन-मननके साथ तर्कसक्ति अेव प्रसन्नके दोनो पहलुओपर ध्यापक विचार करनेकी शैलीका जन्मान हो गया। कलकत्तेमें अुन समय पण्डित गोविन्द नारायण मिश्र तथा पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्र हिन्दीके प्रख्यात विद्वान थे। अिन अिनके पास जाकर हिन्दी-शैलीकी शैली तथा व्याकरणकी बारीकियाँ मननने लगे। अिन दोनो विद्वानोंका श्री बाबूरावजीपर अत्यधिक प्रभाव पडा।

क्रान्तिकारी समिति और नजरअन्दी

यौसथी शताब्दीके अुन प्रारम्भिक दिनोंमें बंगालके मधुवृष समाजमें गुप्त समितियों और क्रान्तिकारी

भावनाओंका व्यापक प्रचार था। श्री सखारामजीके घर अनेक क्रान्तिकारी अेकत्र होने और परामर्श लेने। बाबूरावजीका भी सम्बन्ध अिन्ही दिनों गुप्त समितिसे हो गया अिमका केन्द्र था चन्द्रनगर। अिधर अेक और घटना हुआ। कलकत्तेमें राष्ट्रीय शिष्याके निमित्त नेशनल कालेजकी स्थापना हुआ और अिसके प्रधान थे श्री अरविद घोष। अिस मस्यामें विनयकुमार सरकार, राधाकुमुद मुखर्जी जैसे देश-प्रसिद्ध विद्वान अध्यापन कार्य करते थे। श्री बाबूरावजीको भी यहाँ अध्यापन कार्य सौंपा गया। हिन्दी बगवासीके सम्पादकको यह बात न हची, फलत बाबूरावजीने पत्रसे अिस्तीफा दे दिया। 'हिन्दी बगवासी' से पूषक होनेपर आपकी साप्ताहिक 'हितवार्ता' के सम्पादक पदपर बुलाया गया। अिस पत्रको आपने राजनीति प्रधान बनाया, जो अुस समयके हिन्दी-पत्रोंकी परम्परामें सर्वथा नवीन प्रयोग था। सन् १९०७ में आपने अिस पत्रका भार सभाला और लगभग चार वर्षोंतक अिषयवा सम्पादन किया। अिसके बाद नीति सम्बन्धी मतभेदके कारण 'हितवार्ता'से पूषक होकर आप 'भारतमित्र' में चले गये जो दैनिक रूपमें निकलने लगा था और अिसके सम्पादक थे पण्डित अम्बिकाप्रसाद जाजपेयी। सम्पादन-कार्यके साथ ही साथ आपका सम्बन्ध गुप्त समितियोंसे भी बराबर बना रहा। यह बात छिपी नहीं रही। फलत सन् १९१६ को १ जुलाअीको सरकारने १८१८ के ३ रे रेगुलेशनमें आपको साठे तीन वर्षके लिअे नजरबन्द कर दिया।

'आज' सम्पादकः पराङ्करजी

सन् १९२० अीम्वीमें जब ३१ वर्षकी नजरबन्दीके पश्चात् श्री बाबूरावजी काशी लौटे तो अुनकी द्वितीय पत्नी यशमामे पीडित थी। सन् १९१५ में यह विवाह सम्बन्धीमें हुआ था। विवाहके अेक वर्ष बाद ही श्री बाबूराव नजरबन्द कर लिये गये और जब १९२० में मुक्त होकर आये तो अुनकी पत्नीके स्वल्प होनेकी कोश्री आज्ञा न थी। आते ही आप पत्नीकी मेवा-मुभूषामें लगे। किन्तु षोडे ही दिन बाद आपकी पुन पत्नी-शोक महता पडा। अिधरसे आप 'भारतमित्र' में जाने ही वाटे थे कि वानू शिवप्रसाद गुप्तने आपको

रोक लिया और 'आज' निकालनेकी योजना बनायी। मजी सन् १९२० से श्री बाबूराव 'आज' के प्रकाशनकी व्यवस्थामें लगे। अश्री तिलकसिलेमें आप लोकमान्य तिलकसे मिलने भी गये थे। तिलकसे आपकी यही अन्तिम मुलाकात थी। बनारसमें स्वयंसेवक रूपमें, कलकत्तामें पत्रकार रूपमें और पुनामें अंकनये समागमके प्रसंगमें आप ब्रुनसे मिले। तिलकको श्री बाबूरावजी अमु समय अपना राजनीतिक गुरु मानने थे।

अश्री वर्ष जन्माष्टमीके दिन 'आज'का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ और श्री बाबूरावजी श्री श्रीप्रकाशके साथ सयुक्त सम्पादक बनाये गये। अिन समय तक बाबूरावजी अपनी देशभक्ति, भ्रान्तिकारी भावनाओं, गुण गमितियोंसे सम्बन्ध आदिके कारण काफी प्रमिद्ध हो चुके थे। 'आज'के सम्पादक रूपमें तो आपने देशमें राष्ट्रीयताकी अंसी लहर फेंकायी कि 'आज' और पराडकरजी ममानार्थक हो गये। सन् १९०० से लेकर सन् १९५३ तक चौडेमे समयके अतिरिक्त आप निरन्तर 'आज'के सम्पादनके रूपमें कार्य कर रहे हैं। 'आज'के स्वरूप-अंकनके जन्मदाता आपही हैं। आप ही हैं अमुके पालक पोषक और जनताके हृदयमें अमुका प्रतिष्ठापन करनेवाले। आपने जब 'आज'का सम्पादन प्रारम्भ किया तो गान्धीजीका अद्वय ही रहा था और युष्ठीके अंक दो बप बाद देशमें स्वाधीनताका आन्दोलन छिड़ गया। पराडकरजी गांधीजीके भक्त बने और राष्ट्रको विदेशी आधिपत्यमे मुक्त करानेके लिये अपनी लेखनीसे जनताके विचारोंमें भ्रान्तिकी भावना भरने लगे। आपको भक्ति, अन्वभक्ति न थी। अश्रीका परिणाम था कि अनेक प्रश्नोंपर आपने गान्धीजीकी आलोचना भी की। आपने 'आज' में काँग्रेसके वाषिक अधिवेशनमें अध्यक्षीय पदमे दिया गया पूराका पूरा भाषण प्रकाशित करनेकी व्यवस्था की। सन् '२२ और ३० के स्वदेशी आन्दोलनके देशके कोने कोनेके समाचार छापने शुरू किये। दमन-चक्रमें पीसे जानेवाले तथा देशकी स्वाधीनताके निमित्त बलिदान होनेवाले देशभक्तोंके समाचार आपके 'आज'में छपने थे। यही नहीं, अद्रोख और हिण्णियों द्वारा आपने देशको, देशकी जनताका और

देशके नेताओंका मार्गदर्शन किया। काँग्रेस तथा अमुके मूत्रधार गान्धीजीने अनेकवार नहीं अनेकवार 'आज'के परामर्शानुसार ही आन्दोलनकी धारा मोडी और अन्तमें विजयी हुई।

राजद्रोहका मुकदमा

आपपर कभी बार राजद्रोहका मुकदमा चला और कभी बार पत्रमे जमानत मांगी गयी। अमु समय वर्षामें भ्रमण करनेवाले बाबा गणवदासका अंक लेख छापनेके लिये आपपर मुकदमा चला और छह मासकी कैद अथवा १००० रु० जुर्माना देनेकी आज्ञा हुयी। आपने जेल जाना ही पसन्द किया था वगर्न कि परका सामान आदि कुकं न हगनेका अस्कारिमोये धास्वासन मिल जाये। नत्कालोन बनारसके जिला मजिस्ट्रेट श्री ओवेनने अिन प्रकारका आस्वायन देनेमे अिनकार किया। अुपर श्री प्रकाशजी आदिकी सलाह भी यही हुयी कि जुर्माना दे दिया जाअ। यह घटना सन् १९३१ अीस्वीकी है।

'रणभेरी' का प्रकाशन

सन् १९३० में राष्ट्रीय आंदोलनके समय 'आज' मे जमानत मांगी गयी। सरकारी आडिनेमके विरुद्ध पराडकरजीने पत्र बन्द ही करना अचित समझा। पर देशमें स्वाधीनताका मुगम चल रहा था। जनता नया नेताओंको राष्ट्रीय आन्दोलनकी गतिविधिसे अजरिचित रखना भी सम्भव न था। अश्रीलिअे आपने "आजके" समाचार बुलेटिन माअिकनोस्ट्राअिअर निकाले। जब सरकारने अिमे भी बन्द करनेकी आज्ञा दी तो 'रणभेरी' नामकी गुण पत्रिका आप निकालने रहे। यह पत्रिका जनतामें प्रमिद्ध हो गयी थी। पुलिम परेशान थी पर लपार थी। अमुकी सारी डीडूप ओर छान-वीन व्यर्थ जानी थी। अंक दिन चर्चामें अड्डेय पराडकरजीसे मेने पूजा कि आप लोग पुलिमकी नजरसे कैसे बच निकलते थे, तो आपने बताया कि यदि हपारी लिपि और लिखावट देखकर पुलिम चाहता तो हमें तत्काल पकड सक्ती थी। पर यह बात अमुके ध्यानमें आयी ही नहीं। 'आज' के पुन प्रकाशनपर आपने राष्ट्रीय आन्दोलनके समाचार ही प्रमुखतामे प्रकाशित

किये। सत्याग्रहियोंकी पूरी सूची 'आज' में छापी जाती रही है। इस समयके हिन्दी पत्रोंके लिये यह सर्वथा नवीन और साहमका कार्य था।

पराङ्करजीकी देन

श्रद्धेय पराङ्करजीके चरणोंमें बैठकर कार्य करनेका सीमाग्य, अिन पकिनयोंके लेखकोंके विगत दम वर्षोंसे प्राप्त है। अिन कालमें और अिनके पूर्वके दशकोंमें कुछ मिलाकर विगत अर्ध शताब्दीमें अिस महान् साधक और युग-निर्माताकी सेवाओं चिरस्मरणीय रहेंगी। सर्वप्रथम अिस महान् तपस्वीने स्वाधीनता और राजनीतिक स्वतन्त्रताके लिये जो प्रयत्न किया था वह सफल हुआ। 'आज'के अग्रलेखों और टिप्पणियोंने तत्कालीन परिस्थितियोंमें विचारोंकी कंसी क्रान्ति की है, अब भी सहजमें ही जाना जा सकता है। पराङ्करजीकी टिप्पणियाँ बड़े-बड़े अंग्रेजी पत्रोंकी टिप्पणियोंकी मात कर देनी थी और लोग उनका लोहा मानते रहे हैं, आधुनिक समाचार-पत्रोंमें अग्रलेखोंका वह महत्त्व नहीं रह गया है, जो इस समय था। इस समय लोग साँस रोककर 'आज'के अग्रलेख टिप्पणियाँ पढ़नेकी आकुल व्याकुल रहते थे। हिन्दी भाषाके पत्र तत्कालीन समयमें अत्यन्त हेय दृष्टिसे देखे जाते थे, किन्तु पराङ्करजीने 'आज' द्वारा हिन्दी पत्रकारिता तथा भारतीय पत्रकारिताको नया मानदण्ड दिया और इसका स्तर अितना अग्रगत किया कि लोग अिनका लाहा मानने लगे। यही नहीं, हिन्दीके समाचार-पत्रोंके सर्वांग सुन्दर रूपके लिये 'आज' आदर्श पत्र माना जाता रहा है। यह सब कुछ पराङ्करजीका ही चमत्कार रहा है और है आपकी सतत साधना। भारतमें हिन्दीके सभी समाचार-पत्रोंने 'आज'से प्रेरणा ली है और अत्यन्त प्रभावित हुए हैं, सहज भावसे यह कथन अन्यथा दृष्टिसे न देखा जाना चाहिये। अिन सबके मूलमें श्रद्धेय पराङ्करजीकी कठिन तपस्या और साधना निहित है। प्रायः लोग

पराङ्करजीके साहित्यके सम्बन्धमें प्रश्न करते हैं और अुने पुस्तकोंके रूपमें खोजते हैं। वस्तुतः पराङ्करजीको 'आज'के सम्पादकीय लेख और सम्पादन कार्यके बाद अवकाश ही कहाँ मिला है कि वे पुस्तकोंका प्रणयन करें। 'आज'के अग्रलेख और बहुत-सी टिप्पणियाँ हिन्दी साहित्यकी स्थायी सम्पत्ति हैं, जिनकी ओर बहुत कम लोगोका ध्यान अब तक गया है।

राजनीतिक स्वतन्त्रताके लक्ष्यमें सफलता प्राप्त करनेके अनिश्चित जिस प्रश्नको लेकर 'आज'ने प्रारम्भसे ही जानदोलन किया वह था कि हिन्दी राष्ट्रभाषा बनायी जाये। *मिद्धान्तर*, *जुसका यह लक्ष्य नो पूरा हो चुका है*। अिनका भी सारा श्रेय पराङ्करजीको ही है। पिछले वर्षों हिन्दीकी विशेषता बताने हुअे आन कहने रहे कि प्रायः सभी भारतीय भाषाओंमें दूसरी भाषावालोंके लिये पूजा व्यक्त करनेवाले शब्द हैं पर हिन्दीमें नहीं। अिसके अुदाहरण स्वरूप आप मराठीका 'रागडा', बंगलाका 'खोटा' आदि शब्द सम्मुख रखते। 'मिस्टर'के लिये 'श्री' का प्रयोग सर्वप्रथम 'आज' ने ही चलाया और आज सरकारने भी अिनीको मान्यता प्रदान की है। अिसी प्रकार न जाने संवडे हजारा नये शब्द 'आज'के स्तम्भोंमें नये गडे गये होंगे, अिनका पढ़के कड़ी पता नो न था, पर अब वे नवैत्र प्रयोगमें आते हैं। व्याकरण सम्बन्धी आपकी मौलिक धारणाओं है, जिन्हें अभी तक किसी हिन्दी व्याकरणमें निबद्ध नहीं किया गया है। यह है 'को'के प्रयोगके सम्बन्धमें। हिन्दी भाषा तथा साहित्यकी अिन्होंने सेवाओंका समादर आपको मन् १९३८ में हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सिमला अधिवेशनका समापति बनाकर किया गया। समकालीन और निकट होनेके नाते अिनकी विशेषताओंका विवेचन विद्वेषण प्रायः कठिन होता है। अिस स्थितिमें श्रद्धेय पराङ्करजीकी विलक्षण और विशिष्ट अनेक विशेषताओंका दृष्टिसे बोझिल होना स्वानाविक्त है।

श्री वावूराव विष्णु पराङ्कर-अेक मेंट

श्रीरामलेश

पहले दिन जब अिन्टरड्यून् रिअ समय मोगनक लिअ गया ता आज क मम्पादक ता वावूराव विष्णु पराङ्कर आराम कुर्गीवर रैठ थ । दुवरा वनदा गरीर डिगना क नगा बदन पन्नीगर घाती और निस्मकोच वातालाप मत्र मिलकर किमी श्री व्यक्तिको अनुनी सादगा और तपस्याका भान इरानवाअ अपकरण थे । त्रिस भी अधिक चरमन भीतरन चमकनवाग्या बाये महमा सामन वेंठ व्यक्तिको यह अनुभव करा देती ह कि यह व्यक्ति गहूराजी तक दखनकी वपमता रणता है । दपन हा वाग— जत्र मे किसी मिअन वाग्या भान हूअ दखता हूँ ता मुअ विपनि मो जान पडना है ।

त्रिम अत्रवागिन ग्यावगम म चौक पडा । मुझे लगा कि त्रिम ग्यनिका व्यय समय बरवा करनवागम बहुत पीडित होना पना है । त्रिम म समय चरमाद करन नही गया था । म गया था हि दी-गत्रका जगतके अत्र अनुभवो सम्पादकी जीवन गाथा जानन । त्रिमत्रिअ जत्र मन अपना बुद्ध्य वनाया तो वे प्रमदनापूरक अिटरव्य देनत्र त्रिअ राजी हा गय और दूसरे दिन तीन वजना समय निदिचन कर दिया ।

अिन्टरड्यूका समय तो निदिचन कर दिया था पर अूस समय वे मूअ में थ । त्रिमत्रिअ घण्टे ँड घण्टे तक साहित्यकाराने सम्मरण सुनाने रहे । अून मस्मरणा में अधिकाग मस्मरण आचाय प महावीरप्रमाअे द्विवेदीके थ । अून सस्मरणा द्वारा द्विवेदीजीकी जाग रकना और साहित्य सबाकी लगनवर प्रकाग पना था । स्वय अूनमे मन्वियन अत्र मस्मरण मुअ बहुत अच्छा लगा । अूहोन कहा— अत्र बार जसा हुआ त्रि म सम्पाकीय त्रिन वग । त्रिननेके त्रि काओ विषय नही सुनता था । वठ-वेंठ पर्वण्ट समय चीन

गया था और कम्पोजीटर सरवर मवार था । त्रिस वार मन क्या त्रिये ? गीपक मम्पादकाय त्रिवा । वह आचाय प महावीरप्रमाद द्विवेदीन पना और दूसरे ही दिन मर पाम अूनका अत्र पत्र आया । त्रिम पत्रमें मरे अूम सम्पादकीयकी मुवन कण्ठे प्रगसा का गयी थी । अूम समय मुअ द्विवेदीजीकी गुण ग्राहकताका परिचय मिआ । यह कहन कहन वे गदगद हा गय ।

वे त्रिमी प्रफार सस्मरण सुनान रहे । और भी सुनात परनु म अूनकी कठिनाजी और मन म्यनिम अूमी समय परिचिन हो गया था जब मुअ दखकर अू हान मिअनवाग्या विपति वताया था । त्रिमत्रिअ अिच्छा न रहने हूअ भी विदा गत्र चग आया ।

दूसरे दिन जब पढना तो अपन पत्रकार जीवनकी कहाना सुनाने हूअ अूहान वनाया— मरा ज म राशीमें हूअ और वचपन भी कागीमें ही बोता । मरे चार भाओ और जत्र वहन थ । म सबसे वग था । पडाओ का त्रय अूम समय अूग था । आजकालकी भांति स्पर्ण (अ) नहीं होने थ वगम होने थ । बारह वपकी अूममें जत्र म पाँचके वगसमें था मन अत्रजी पडना प्रारम्भ किया । पत्रनका मुअ जिनता गीक था कि वचपनमें ही अत्रारह पुराण पठ ना थ । कसरत कग्ना और अवाअमें जाना गुण्डापन ममझना था पर पूटवाअ सलनमें बडा मजा आना था । अूस मजकी सजा भी मुअ अच्छी मित्री । मेरी हूँगरीकी हडडी टूट गयी ।

जब पत्रह वपका था तब मरे पिता चल बसे । सन १९०१२ म प्नेगकी अमी भयकर बीमारी कैंगी कि गत्रियाम मुअे बिठ रहने थ । वह बीमारो माँको ल गयी । अूम समय म अू ममें था । परिवारमें सबसे बडा था । कागीमें रहना और बिना पाता पिताके सबको संभाअना कठिन बाय था । त्रिम कारण नौकरी

करनकी सोची। सयोगकी बात है कि अन्हा दिनों स्वदेशी आन्दोलनक प्राण और हितवादीक सम्पादक श्री सखाराम गणग देवसुकर अपनी बड़ी लडकीकी गादामें बागा। बाय। वे मेरे दूरक मामा होन थ। नवयवकाको प्रोत्साहन देना अूनकी विगपता थी। अन्हान मुनस प्रान किया— औरगजब अच्छा या अकबर ?

मन कहा— अकबर।

अन्हान पूछा— क्या ?

मन बताया— अतिहासम असा ही लिखा है।

अिसपर अन्होन मुय समनाया— अंसा कहना ठीक नहीं है। अकबरका अच्छा लिखनवाले वे अग्रज ह जो अकबरकी नीतिपर चलकर गतादिदियोंसे भारतको गुलाम बनाय हुआ ह। अच्छ-बुरेका नियम स्वय करना चाहिये। अकबर ददचलन था जब कि औरगजब सगचारी था। असन अपन कायक द्रोहियोंका ही नाग किया गणको समादरित्ते देखा। अितनाही नहीं असन बहुतेसे मदिराको दान दिया था जो बहुत दिनतक मिलता रहा। अन्हान मुय कमरी मोगानकी राय दी।

अस दिनसे मरी प्रवृत्ति देश-नवाकी ओर हुआ यहाँ तक कि म अफ अ की परीक्षा भी न दे सका। मन कुछ दिन पोस्ट अण टलीग्राफम नौबरी की। लकिन गीधहा मुय देवसुकरजीका अक पत्र मिला जिसम मुय बगवासीमें सहायक सम्पादक हाकर जानकी लिखा था। म तबाल बलकत चल दिया। ठहरा भी अन्होव यहाँ। वहाँ मुय खान-मानका कोअी खच नहा करना पता था। फिर राजनीतिकी चचा भी वहाँ खूब होनी था। अूम वातावरणम लाम अठाकर मन मन्हाहमें तीन दिन अम्पारायल लायबरी (जब नगनल लायबरी)में जाना औरम किया। चार महीन बाद मुय अूमका स्वायो पाम मिग गया। जा कुछ मन पढा अिगा बीच पण। घरपर त्रियामक राजना तिका चचा और लायबरीम सदानिक तान दोना प्रकारम मरा मानिक गठन प्रौढना प्राप्त करन लग। देवसुकरजीका आनकवात्तियामे ना सम्भव था। अिनलिख मरा भी अूनम मणक हा गया। यह मन १९०६ की खान है। दजुमकरका अूम समय बगाल

नदानल बाल्जिममें अतिहास पढाये थ। अन्हान मनये वहा मराठी पत्रनक लिख कृत्। बगवासा क प्रबचकान अिसपर आपतित करते हुआ कहा कि बगवासीमें रहन हुआ अंसा नहा हो सकता। मन अिसपर त्याग पन द दिया और दूसरे ही दिन हितवाता का मन्पादक हो गया। हिन्दी समाचार-पत्रोंमें गनीर राजनानिका समावग हितवाता से हा हुआ। प्रताप में गणगता तब अच्छा काय कर रह थ। सन १९१० म म दनिक भारत मित्र म गया जहाँ श्री अम्बिकाप्रसाद वाज पयोस मेरा माय हुआ।

सन १९२० में कापीन था गिवप्रसाद गुप्तन आज निकाला और मुय अूमका सम्पादक बनाया। फन्स्वरूप म बलकता छोडकर कागी आया। कागी आनक दो कारण थ— अक तो कागी मरी जमभूमि था और दूसरे बाबू गिवप्रसाद गुप्तका यह कहना था कि हिन्दीक पत्र नगाल्य ही निकलन ह यू पी स नहीं। यू पी हिन्दीका पत्र है अत वहम पत्र निकल और सफलतापुवक चल यह नितात आवश्यक है। 'आज' में आनपर अक मित्रन कहा— 'यदि तुम पाँच वष यहाँ त्रिक जाओ तो मेरी नाक काट लेना। दम-पद्रह वष बाद जब म अूनस मिला तो मन अूनस कहा— दक्षिण अभीतक म आज म हू और आपकी नाक ना अपन म्यानपर है।' अिसपर व लिक्रत हो गय। यह मेरे पत्रकार जीवनका बहागी है पर म यह मानता हूँ कि बोअी अदय गतिन ही मुय अिम और सीच ल गयी और राजनानिमें गाधोजीके आनक बा' तो पत्रकारिता ही मरा जीवनपाधार बन गयी।

लकिन देवसुकरजीक अतिरिक्त आपक पत्रकारके निर्माणमें किन किन व्यक्तिपाका हाय रहा? मन पूछा।

व बा'— देवसुकरजीक अनिरिक्त मवथी गादिन्दनारायण मिथ दुाप्रसाद मिथ और अम्बिका प्रसाद वाजपया प्रमुख ह। गादिन्दनारायण मिथन भाया तथा साहित्यका दृष्टिकोण और वाजपयीजान परिश्रमका जो दान दिया वह मेरे जीवनकी मवन बनी सम्पत्ति है। वाजपयीजान ता मरे भाआका हा नाति ह। आपकी आचय हागा कि जब म आनकवात्तियामे मन्पादक रगनक

कारण जेल गया तो बाजोयीजीके पिता कूट पत्रकार रोये थे। यही नहीं मरते समय भी अन्होंने मेरे विषयमें पूछा था।”

पत्रकार बला और सफ़्ट पत्रकार बननेका प्रसंग क्या हो वे कहने लगे— सफ़्ट पत्रकार बननेके रिश्ते सबसे पहली बात तो यह है कि पत्रकारमें कामकी लगन हो। ब्रुसका हृदय काममें होना चाहिये। केवल नौकरीकी भावनासे काम करने कीओ सफ़्ट पत्रकार नहीं बन सकता। गी बाओ, चिन्तामणि, अमृतलाज चक्रवर्ती, श्री निधाराण असो प्रमाण हैं कि कामकी लगन पत्रकार बननेमें कितनी महामय होनी है। अमोलिअे जब कीओ युवक मेरे पास पत्रकार बननेकी अभिलाषा लिये आता है तब मैं अुससे कहता हूँ कि यदि तुममें कामकी लगन होनी तो नौकरी तुमका कूडनी आश्रीणी, तुम्हें नौकरी नहीं कूडनी पडेगी। काम करो, फल कभी न कभी अवश्य मिलेगा। दूमरी बात पत्रकारकी भाषाकी है। अुसकी भाषा दृढ़ और मुहावरदार होनी चाहिये। (पहले मेरा आदर्श श्री गोविन्दनारायण मिश्रकी भाषा थी पर वह जीवित भाषा न थी अिसलिअे मैंने अुसे छोड़ दिया और अपनी शैली स्वयं बना ली।) मेरा विचार है कि भाषा हृदयके भावोंके अनुकूल होनी चाहिये क्योंकि भाषा वही अच्छी है जिनके मन्त्र कानाकी घुरे न लयें। शैली निर्माणमें आदसनकी भाँति में भी यही मानता हूँ कि परिश्रमशीलता ही प्रतिभा है। तीसरी बात कभी शान्त न होनेवाली अधिकांशक जाननेकी भूख है। मुझे स्वयं पढ़नेकी बड़ी आदत रही है। अच्छी विचार शक्ति और मुझे दो तीन रात नींद नहीं आयी, अुमे ही पडता रहा। देअुमकरजो मुझे रोगने थे पर अब मैं अनुभव करता हूँ कि पत्रकारके लिअे जव्यपन अत्यन्त आवश्यक है। और पत्रकारको थोडा-थोडा मक जानना चाहिये तथा अुमे यह पता होना चाहिय कि अमुक विषय कहाँ मिलेगा। अिस प्रवृत्तिके बसोभूत होकर ही मैं 'मधुन-सहिना' भी पत्र पड गया था। 'आज' में आनेपर अमोलिअे मेरा सबसे पहला कार्य यह किया कि 'अेसासत्रोपीडिया ब्रिटानिका सरोडवाया। कहनका अभिप्राय यह है कि पत्रकारको 'स्वॉलर' नहीं होना

चाहिये। यदि अंसा होगा तो वह जनसाधारण की रुचिकी चीज न लिख सकेगा। लेकिन थोडा जाननेके साथ अुसमें अितनी कला अवश्य होनी चाहिये कि कीओ अुमकी कमगोरी न पड सके। कीवी यान यह है कि अनुवाद करते समय जिस भाषाम वह अनुवाद कर रहा है अुमकी अुमे पूरी जानकारी होनी चाहिये। अिसका मुझे निजी अनुभव है। मेरी मातृभाषा मराठी है हिंदी नहीं, अिसलिअे पहले बहुत दिन तक मेरे अनुवादक मराठीका प्रभाव आ जाता था। वर्षों में अनुवादकी सही करनेके लिअे दूमरोमे पूछता रहा और अनुवाद दूमरोसे कराता रहा। मेरा विचार है कि अिन बानोकी ध्यानामें रखनेवाला अवश्य सफल पत्रकार ही सकता है।

आपने लिखनेका ढग क्या है ?” मैंने चर्चा आगे बढ़ायी।

अुन्होंने कहा— मैं आज तक होल्डर-दावातेसे लिखता हूँ। फाअुटेन पेनसे विचार बिभूत हो जाते हैं। लिखनेके लिअे डेस्क या टेबुल होना आवश्यक है। अदरकेल और टिपणगी लिखनेके लिअे डिमाश्री गाअिअेके बागअेके आठव हिस्सेवाले स्लिप बहुत अच्छे लगे हैं। मैं लाअिनदार बागअेपर नहीं लिख सकता क्योंकि मुझे अंसा लगता है कि लाअिन अेन बाधा बनकर पडी है। बहुधा मैं रातकी लिखता है और दिनकी पडा है लेकिन आवश्यकता पडनेपर रात और दिन दोनोंमें भी लिखता है। सन् २३-२४ में चरमा लिया है तबमे रातकी लिखना बन्द कर दिया है। लिखने समय जब मरिन्क कुहासेमे डबा जान पडता है तब मैं कीओ अच्छी पुस्तक अुठा लेता हूँ और पडने लग जाता हूँ। पृष्ठ-भाषा पृष्ठ पडनेही मरिन्क स्वच्छ हो जाता है और मैं लिखनेकी स्फूर्ति अजित कर लेता हूँ। अिसके लिअे यह आवश्यक नहीं कि पुस्तक हिन्दीकीही हो, वह किसी भी भाषाकी हो सकती है। यह देअुमकरजोका मक है जो बडा लाभ-प्रद सिद्ध हुआ।”

पत्रकारकी आर्थिक स्थितिकर बातचीत होने लगी तो मैंने अुमे हिन्दी पत्रकारके ट्रेड यूनियनके आधारपर अुझे सगठनका जिक्र किया और कहा कि

अस समय मुझे तो यही अर्थ मार्ग पत्रकारोंके हितोंकी रखाया दिनायी देता है। पराटकरजी जिसमें अपनी असहमति प्रकट करने हुआ बोले— 'ट्रेड ही तो ट्रेड यूनियनकी जरूरत है। हिन्दीमें पत्र लाभकी दृष्टिसे नहीं निकाले गये। अनेक पत्र घाटेमें चले हैं और आज भी चल रहे हैं। अमेरिका और ब्रिटेनकी-सी स्थिति यहाँ नहीं है। वहाँ ट्रेड है अथवा अथवा ट्रेड यूनियन भी है। मेरा निजी अनुभव है, जिसके आधारपर मैं कह सकता हूँ कि मालिकोंकी कुछ भी नहीं मिलना। मुझे खराब स्थिति बहुतोंकी नहीं है पर मैं ट्रेड यूनियनके विरुद्ध हूँ। मेरी दृष्टिमें पत्रकारिता अथवा मिशन है। मिशन मानता हूँ अथवा अथवा वृद्धावस्था में भी मेरी यह दशा है कि मैं बिना पत्रका काम किये बीमार हो जाता हूँ। मुझे लगता है कि जब तक मैं यह काम कर रहा हूँ तभी तक जीवित हूँ।"

यहाँ वे कुछ रके और सहज आवेगमें आकर कहने लगे— "पत्रकारोंकी जो स्थिति खराब है उसका कारण है और वह यह कि वे वेकारोंके कारण अस पत्रोंकी अपनाते हैं। पहले अंसी बात नहीं थी। पहले योग नामके लिखे आने थे। दूसरी बात यह है कि अधिक पत्रोंका प्रकाशन भी बन्द होना चाहिये। चुनावोंके जमानेमें तो बरमाती मेटकी भाँति पत्र निकलने हैं और पत्रकार-कलाकी कलकित करते हैं। यदि अिमी प्रकारकी स्थिति रहेगी तो पत्रों और पत्रकारोंका स्तर कैसे अँचा होगा। बीस वर्ष पहले पत्र-मालिकों और पत्रकारोंके सम्बन्धका पता अिसमें लगता है कि 'आज' में रहने हुआ मैंने अपना वेतन घटाया था, क्योंकि 'आज' की स्थिति खराब हो गयी थी। अिसपर बाबू शिवप्रसाद गुप्तके आँसू आ गये थे।"

"लेकिन आजके अनेक पूजोपनि पत्र-मालिक बाबू शिवप्रसाद गुप्त नहीं हैं और अुनकी दृष्टि शोषण की है। अुनमें कैसे भृगता आयेगा?"

"अिस सम्बन्धमें मैं यही कहूँगा कि पत्रकारोंकी अपनी योग्यता और परिश्रम तथा 'मिशनरी स्ट्रिट' से पत्र मालिकोंको यह अनुभव कर देना चाहिये कि बिना अुनके काम चलाया कठिन है।"

जब मैंने अुनसे हिन्दी समाचार-पत्रोंकी वर्तमान दशा और भविष्यकी सम्भावनाओंके विषयमें पूछा तो अुन्होंने कहा— "हमारे आजके पत्रोंका स्तर बगला, मराठी और गुजरातीके पत्रोंसे अच्छा है। यह 'प्रताप' तथा 'आज' जैसे मिशनरी पत्रोंके कारण ही हुआ है। 'आज' का विश्वास तो अंग्रेजी पत्रोंमें भी अधिक किया जाता है और विरोधी तब अुसकी प्रशंसा करते हैं। भविष्य भी पत्रोंका बड़ा अुज्ज्वल है। कारण, राजनीतियोंमें ८० प्रतिशत अंग्रेजी न जाननेवाले हैं और हिन्दी पत्रोंको ही अपनाते हैं। पाठकोंकी संख्या भी बराबर बढ़ रही है। यह अुन चिन्ह है।"

अुनमें चाय पीने समय कम्प्युनिग्मका अिज आ गया। अिस विषयमें अुनका मन था कि म्पुनिग्मसे मनुष्य मधीन बनता जा रहा है, जिसमें मेरा विश्वास नहीं है। अयंसास्त्रकी अित्तसे, अिसका मानववाद हमी है, नैतिकताका हास अवश्यम्भावी है। यदि अँसी व्यवस्था आती तो बादमें जादमी न रहेगा। अिससे आर्थिक नियमोंको मानवीय नियमोंपर आधारित करना अिस देशके लिखे नितांत आवश्यक है।

जब मैं चलने लगा तो अपनी अिन्द्रादिकीका मवृत्त देन हुआ मत्राकमें अुन्होंने कहा— "आपने मुझे दोनों रूपोंमें देख लिया। कल शारी मँछके साथ देखा था, आज मफाचट। शायद आपको पता नहीं कि टाग टूट जानेंम पिउठे ६-७ महीने अिसपर पर पटा रहना था। हजारमत बनवानेमें कठिनायी होती थी अिसलिखे बनवाना ही न था। अब अच्छा हुआ तो अुनसे साक करा दिया।"

अिसपर मैं हँस पडा और प्रसन्न हृदयसे नमस्कार कर चला आया।

मेरी दक्षिण-भारत-यात्राके दस दिन

प्राध्यापक विनयमोहन शर्मा अेम अे

दक्षिणके सम्बन्धम हमारा ज्ञान कितना सीमित है कितना अबूरा है ! हम हर दक्षिणवासीको जिसकी आकृतिपर श्याम उग दोष पड़नी है मद्रासी कह देते ह और हर द्राविड भाषाको मद्रासी । वजी भाषा विज्ञानकी पुस्तका तक्रम तमिळको तामिळ लिखा मिलता है । दक्षिणकी भाषायाका सुद्ध नामोन्चार तम हम नहीं कर पाते और हम कहते ह भारत अक है जविभाष्य है । जिस दक्षिण भारतके आचार्याँन अतुर भारतम पवित्र वणव धमका सचार किया जिम्के कारण हिंदीका भविनकाल स्वण युग कहनाया असो दक्षिणके प्रति हमारा अितनी बुदामी नता चितनीय है । पुरानी सरस्वतीकी फाअिलोम राजा रविवर्माके चित्रकी बडी प्रतिष्ठा थी अूनपर हिंदी कवि भावमयी कविताअ लिखते थ । मनम बात भूछती थी— रविवर्माका वह कोन देग होगा जहाँ अितनी मोहक कला पनपती है कोनसे दुग्य चित्रकारके अ तरमनपर अनु-आसपूण प्रणामूर्ति अकित करते होंग ? लोयासे मुना, वह केरळ है । फिर जब दानकी और थोडी रचि हुअी तो गकराचावकी जमभूमिकी जिगासा बडी । अुसके सम्बन्धम भी मुना— वह केरळ ह । वर्षोमे मन केरलके दशनकोके लिअ भीतरही भीतर आकुल था । अिम थप परिस्थितिधोन केरळ दानका अवसर ला लिया—

जो अिच्छा करिहोँ मन माहोँ ।

रामकृपा कछु दुलभ माहोँ ॥

हाँ तो १३ अप्रकके मद्रास अवसप्रसेमे श्रीमन्जीजी सहित दक्षिण जा रहा हूँ—गाडी चलो जा रही है गर्मा रग ला रही है फूलाने पेडोको देखकर पचावरकी पक्ति याद आ रही है—

किमुक गुलाब कचनार औ अनारनकी

आरन प डोलत अगारनके पुत्र ह ।

यहा वहाँ आमोपर वोर उग हुआ शिवशायी देते ह और अुनम छिपा कही वीरात्री 'कवलिया की कूब भी जानम पड जानो है पर असम अपनम कमी नहा मातूम पड़नी । राम राम करते रान बीती । मवर्ता होनेही वजवाड़ा पर गाडी रुक गयी । कृष्णा नदीका पुल काफी बग है नहर भी बडी है । छीर (खजूर)के पेड चारा और नजर आते ह । बांस या खजूरकी छनवाली झोपडियाँ खडी शिवायी देनी ह । खनोकी काली मिट्टी अुवरा प्रदेशकी गहादन देनी है । ओगके पक्के मकान बहुत कम दष्टिगोचर होते ह । प्रात वाउ स्टेशनपर फूटाकी वेणी (माउअ) विक रही ह । सधना स्त्रियाँ अु ह खरीदकर अन केनोको सवार रही ह । रेल्वे स्टानापर गड हिनीम विज्ञप्तियाँ लिथी हुअी ह ।

Veg tarian Refreshment room के नीचे शाक अुगाहार गृह अकित है । हमारे साथ अक तमिल सञ्जन भी यात्रा कर रहे ह । टनी फूटी हिंदी बोल लेते ह । यातथोनके मिलमिठेमे जब मन अिनसे कहा कि यावनकोर नीचीन राज्यमे हिंदीके प्रति जनताका बडा अुगाह है । वहाँ युनिवर्सिटीम भी बहुत बनी सम्बाम छात्र हिंदी पढते ह । अिमपर वे थोत्रे—

आप जानते ह व हिन्दी विषय क्यों लते ह ? हिंदीम अुत्तीण होना बहुत आसान है । दूसरे विषयोम अधिक श्रम करना पड़ना है । तो मन कहा हिन्दा सीखना कठिन नहीं है । रेविन मलयाली हिंदी मौलकर भी बोल नहीं पाते केवल लिख लेते ह । य महाशय मलियालियोका श्रय दनमे बड कृपण जान पड । अिनके द्वारा दक्षिणके नजी स्वानो और व्यक्तियोका ज्ञान हुआ । वजवागसे समुद्रसे दा मौलके अ तरमे गाडी जा रही है । अिधर अुधर बाजूके मगान ह । खनोमें कुअ ह । नजनीक पानी है । स्त्रियाँ अुतरपर अपनी गगरी गर उठी ह । यह आ अका सम्पन्न भाग कहा

जाता है। गाड़ी किसी स्टेशनपर रुक गयी। अंक भिखारी गाता चला जा रहा है—

“संसारम् भ्रम सुधा नवजोवन सारम्, संसारम्”

यह तेलुगु भाषी भाग है। सस्कृत प्रचुर दण्डवालीसे भिखारीके स्वरवा भाव हृदयगम हो जाता है। बड़ी लोच है अुसके कठमें। अिस ओर बच्चे और पके काजू प्लेटफार्मपर बिकने दिखायी देते हैं। गोल काजू, रसदार, कुछ मीठा पर अधिक कर्मला होना है। चूसकर खाया जाता है। भुंजा हुआ काजू सौंघा और स्वादिष्ट लगता है। यद्यपि अिस हिस्सेमें यह बहुत पैदा होता है तो भी सस्ता नहीं है। अिस प्रकार नागपुरमें सतरे खूब पैदा होते हैं, परन्तु बाहर नियांत होनेके कारण मंहगे बिकते हैं, वही हाल यहाँके काजूओका है। विदेशी अेजेंट सब ढो ले जाते हैं। स्टेशनोपर छोटे पीले केलोकी छौर भी बहुत दिखलायी देती है। सूर्यास्त होनेके पूर्व ही गाड़ी मद्रास स्टेशनपर खडी हो गयी। हमें त्रिवेन्द्रम जाना था। अतः हम यहाँसे अनुरकर मद्रासके भीटर रोजके स्टेशन अेगमोर पहुँचे। मद्रास स्टेशनपर अंक अपरिचित तरणने बडा सीजन्य प्रदर्शित किया। वह हमें टेवमी कराकर अेगमोर ले गया। टिकटघरमें प्राय सभी महिला कर्मचारिणी थी। अेकने टिकटकी चिट्ठी काटी, दूसरीने टिकिट दी, तीसरीने टिकिट नम्बर नोट बिये और टिकिट क्लेक्टरके नाम अंक चिट दी जिससे वह हमें सुरविपत स्थानपर आसीन कर दे। प्लेटफार्मपर बहुत देरतक त्रिवेन्द्रम अेवसप्रेस नहीं आयी। हम प्रतीक्या कर ही रहे थे कि अंक लुगी धारी गौर वर्ण महाशय मेरे पास आकर पूछने लगे कि 'आप ही धर्मा हैं न?' मने कहा, 'जी हाँ'। 'मेरी साली मीनाबयीने आपके यहाँ आनेकी सूचना दी थी, मेरे कायक बोओ वाम हो तो वनाथिये'। मने कहा, 'विशेष तो कुछ नहीं है'। फिर भी वे दीडे-दीडे दो चार वपानियाँ, दाव और फल ले ही आये। बडी आत्मीयता प्रदर्शित की। अुनकी सागी मीनाबयी मेमूरमें रहती हैं। अुन्होंने नागपुरसे हिन्दीमें अेम. अे अुत्तीर्ण किया है। यही अुनकी आत्मीयताका कारण था।

रातभर त्रिवेन्द्रमकी ओर गाडी बढ़ती गयी। प्राण मधुराय (मदुरा) आया। चारा ओर मदिरोके दर्शन हुअे। मदुराय मदिरोका नगर ही बहलाना है। वेजवाडाके पूर्व जहाँ घरती सूती और नूकी दिखायी देती थी, वहाँ अुसके वादमे वह हरी-भरी हो जाती है। क्योकि यहाँ तो—

“मेहा बरतिवो करे रे।

नाहो नाहो बूंद मेघ घन बरसे
सुखे सरवर भरे रे।”

अंसे मनोरम दृश्योको देखकर मनमें अुन-अनकी सीमा नहीं रह जाती। पर जब यह कल्पना अुठती है कि यह सुन्दरता सीध ही आँखोसे अोसल हो जायेगी, तब ये पकित्या स्मरण हो आती है—

“बहुत दिना पं पीतम पायो
विष्टरनको मोहि डर रे।”

त्रावणकोरकी सीमा लगते ही भूमि तृण और जनसकुल हो जाती है। पग-पगपर खेत, खलिहान और छोटे बडे घर दिखलायी देने लगते हैं। हरे पहाड-पहाडियाँ और मैदानोको देखकर जी हरा ही जाता है। नारियल, कदली और खजूरके बडे-बडे वन खडे हुअे हैं। हर मकानके आंगनमें नारियलके दम-पाँच पेड लगे हुअे हैं। ताड तमालकी जोडी भी भली लगती है। त्रावणकोरको दक्षिणका कर्मीर कहा जाता है। यहाँ नारियलके पेडके विभिन्न अगोमे पूरा मकान बना लिया जाता है। कोलन स्टेशनने बडी दूरतक समुद्रका जल पूर्ववर्ति भीतर प्रविष्ट होकर कोचीन 'हारवर' तब जाता है, जिसे 'बेक वाटर्न' कहने हैं। अिनके दोनो ओर नारियलके पेडोकी कतारे लगी हुअी हैं। लोग नीका और छोटे जहाजोंमें कोचीन तककी याथा कर सक्ते हैं। गसार्के रमणीक स्थानोंमें अिनकी गणना है।

मलयाली श्रियाँ इवेन अुज्ज्वल रगकी साडियाँ अपिच पसद करती हैं और तमिल श्रियाँ लाल और हरे रगकी। अिम प्रदेशके अधिकाग स्त्री पुण्याका देन-कर अंगा जान पडता है मानो अुन्होंने अपना समस्त सौंदर्य प्रहृति देयीका प्रदान कर दिया है। अिमोतिअे

तो प्रवृत्ति यहाँ अिननी अधिक मनमोहक बन गयी है कि—

ज्यों ज्यों निहारिय नरे हूँ ननन
त्यों धी खरो निसर सुनिकाभी ।

असा जान पडता है कि यगोतक देवनपर भी हमारे नत्रोकी तति नही होनी ।

जनम अवधि हम रूप निहारल
नयन न तिरपत भल विद्यापति ।

गामको गाँधी विविद्रम पहुच गयी यहाँ हिंदीके पुरान राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचारक प्राध्यापक बंधुआमे भट हुआ। अनुम मक्श्री च द्रहासन चिदम्बरम कुमारी जो आशा विलासुधन पो के केशवन नायर अय्यर अब्रहम आदि तो प्राय हमारे साथ ही रहे अिनकी हिंदीके प्रति निष्ठा प्रशमनीय है। अिन अपन मनास हिंदी प्रचार सभाम हिंदी भीखनके मरुर अनुभव गुनाय। अिनम कभी तो राष्ट्रभारती के सम्पादक श्री हृषीकेश शर्माके निष्पथ जो अपन गुरके प्रति बडी श्रद्धा भावना रखते थ। आजसे ३५ वष पूव अत्तर भारतके अिन सज्जनान राष्ट्र सेवा भावनासे प्ररित होकर दक्षिण भारतम हिंदी प्रचार काय किया अनुम अिनकी बडी ख्याति है—प प्रतापनारायण बाजपेयी प हृषीकेश शर्मा प अवधन दन प देवदून विद्यार्थी प रघुवरदयालु मित्र प रामान दगर्मा प वजनदन गर्मा श्री जमुनाप्रसाद । म यप्रदेगके दो ही व्यनित थ —अव हृषीकेशजी और दूसरे जमुनाप्रसादजी (अिनका देहान्त हो गया है) । अिनके साथ दक्षिणके प हरिहर शर्मा शिवराम शर्माकी भी हिंदी सेवाअ अत्यंत मूल्यवान ह। यहाँ लोगोन बतलाया कि या तो अत्तरसे बहुतमे सज्जन दक्षिणम हिंदी कायके सम्बन्धम आय पर वे अधिक समय तक ठहर नही सके। प रघुवरदयालजी और अवधनदनजी तो अब तमिळ प्रांतमे अितन अधिक अकाकार हो गय ह कि अह अिन प्रांतीय मानना ही अपस्सुत सा है। दोनोका तमिळ भाषापर अठ्ठा अधिकार है।

विविद्रमम दक्षिण भारत हिंदी प्रचार-सभाका काय बडी विपन्नतिसे चल रहा है। केरलके ६०२

हाथीस्कूठ और अिनर कातेजोम हिंदी पत्रायो जानी है। नावणकोर विश्वविद्यालयम यो अ तक हिंदी विषयका अ दायन होता है वहा अिमवप नेवल अिनर-मोजियट परीक्षाम उगभग पाँच हजार छात्र छात्राअ अचित्तक रूपम हिंदी विषय लेकर बडी थी। यो अ म पाँच सौ से अधिक विद्यार्थी हिंदी लेकर थ। यहाँ बी काम और बी अम-मी म भी हिंदीका अक प्रशन पत्र अनिवाय है। केरलम सुदूर कयाकुमारी तक हिंदीके प्रति जनताम वहद अु साह है। हिंदीका सत्कार सत्त्वनिसे सम्बद्ध हो गया है।

सभ्रात परिवारमें स्त्रियोका हिंदी सीखना अनुना ही आवश्यक है जिनना सगीन और न थ। अिन अिन विनोदम यहाँ कहा जाता है— हिंदी ? अरे यह ता लडकियोका विषय है। नावणकोर विश्वविद्यालयम सम्बद्ध प्राय पत्रोम श्री चद्रहामन हिंदीके पुरान लेखक ह स्व प्रमचद और श्री कन्हैयलाळ मुन्शी द्वारा सम्पादित हस म अिनके लेख छपते रहे ह। अिनर दिल्लीके देवनागर म भी अिनके मलयाळम साहित्यक परिचया मक लेख छप रहे ह। अि हान केरलम हिंदी प्रचारका बग मुय काय किया है कुमारी जोगाजी विश्वविद्यालयके महिला महाविद्यालयकी वरिष्ठ प्राध्यापिका ह। पूण लागीधारी ओर गांधीवाणी ह। यधाम गांधीओके आरमम कान्ती सपय तक रह चुकी ह। हिंदीम अम अ ह। अिहोन श्री जिलाचन्द्रजीके सयामी थी रामकुमार वमकि रेगमी टात्री और श्री पथ्वीनाय शमकि अपराजी का मलय लमम अनवाय किया है। मलयाळमम अिहोन सेवासय नामक अुपयाम भी लिखा है। आप भीमात्री महिा ह और सयया निरामिय भोजी ह। केरलम कओ भीमात्री परिवार ब्राह्मणकी नाआ सात्त्विक आहारी ह।

प्रा विन्म्बरमून कजी तमिल कहानियोका हिंदी अनुवाद किया है। राष्ट्रभारती म राष्ट्रकवि तमिळके सुब्रह्मण्य भारताके बाहा गीत छप रहे हें। और प्रतिमा में तमिलकी कहानी क्रमग आ रही है। श्री अय्यरन भी कभी छात्रोपयोगी रचनाअ की हें। श्री विलासुधनम भी लिखनकी प्रवृत्ति है।

त्रिविन्दमके बाजारोंमें आपकी बहुतसे स्त्री-पुरुष नगरे पर चलते दिखलायी देते हैं। इसका कारण यह है कि यहाँ प्रायः बारहो महीने बून्दा-बाँदी होनी रहनी है। इसलिये कीचड़से बचनेके लिये लोग प्राकृतिक ढगसेही नगरे पाँव चलते हैं। लुंगी, कुर्ता पुरपोका और अधिकांश शुभ्र साडी स्त्रियोंका परिधान है। विश्व-विद्यालयके कार्यामें निवृत्त होकर सबसे पहिले मने समुद्र दर्शनकी बिच्छा की। प्राध्यापक चंद्रहासन और विलायुधनके साथ हम हवाअी अड्डेकी छूने हूअे समुद्र तटपर गये। यहाँ समुद्र बड़ा अग्र है। खूब आवाज करता है। सामने दूरसे लहरे छोटी-छोटी क्विस्तिपोंके समान हिलती-डुलती चली आ रही हैं। अँके बाद अँके अपूर अुटनी जा रही हैं, पहाड-मा बना रही हैं। अँकेही समयमें न जाने कितने पर्वत बन रहे हैं—मिट रहे हैं। लहरे दौड़नी हुअी चली आ रही हैं, हमारे पैरोंकी छूकर न जाने कितनी दूर पीछे चली गयी। हम अुनमें घिर गये। वे हमें बहाना चाहती हैं, पैर जमीनसे अुखडना चाहते हैं, हम प्रयत्न कर अुन्हे जमाये हुअे हैं, बम बपणभरहीमें लहरे हमें छोडकर भाग गयी, हमारे गीले पैर पानीसे दूर हो गये—लगना है लहरे अब नही आँअँगी पर कुछही बपणोंमें फिर टकराकर डोका आया और हमारे पैरोंपर बिखरकर हमें पुनः घेरकर पीछे ओर फिर तेजीसे आग वीड गया। हम लहरे लेनेमें अभ्यस्त हो गये। पैर जमे रहते हैं। लहरे आती हैं—जाती हैं। अब भय नहीं लगता, आनन्द आता है। कुछ फामलेपर मछुअे अपनी नौका लहरोमें डाल रहे हैं। वह देखो, दो मछुअोंने अपनी बरती लहरोमें फँक दी, वे भयंकर समुद्रमें जाना चाहते हैं। लहरे बरतीको बार-बार अपूर नीचे कर रही हैं। लगता है, डूब गये। बडे सपयँके बाद मछुअे समुद्रकी सनहपर नौका खेते दिखलायी दिये। प्रकृतिपर विजय पाकर ही मनुष्य दम लेता है। सामने बहुतसे मछुअोंकी नावे समुद्रमें तैर रही हैं। समुद्र जब कुपित होता है तब न जाने कितने मछुअोंकी बह ममाधि बन जाता है। थो अब प्रातः मछुअों धरमे निकलना है, बह शामकी वापस लौटनेकी शाय नहीं ले सकता। वह समुद्रके गर्भमें निपतिनी लहरोमें गेलना है जो अुमके मरपर मोड बनकर नाचनी रहनी है।

समुद्र-दर्शनके पदचाव हम लोग अुस अजापद-घरमें गये जहाँ समुद्रकी तरह-तरहकी मछलियों, सर्पों, केकडों आदि प्राणियोंको रविपंत रखा गया है। कहा जाता है कि भारतमें यह मद्रहालय अने ढगका अँक ही है। यहाँसि हम 'अनन्त शयनम्'का मंदिर देखने गये। मंदिरमें मिला हुआ वस्त्र या जूता पहनकर जाना निषिद्ध है। महिलाओंकी साडी सिला वस्त्र न होनेके कारण मंदिरमें प्रवेश पा सकती है। मंदिरमें मूर्तिकी विशालता दर्शनीय थी। वहाँ बडा नारी 'हाल' था जहाँ पहिले हजारों ब्राह्मण मोब्रन किया करते थे। दक्षिणके विशाल मंदिरोंकी कला अपना अलग ही वैशिष्ट्य रखती है।

त्रिविन्दममें कन्या कुमारीतक लगातार बन्नी होनेसे अँसा जान पडता है मानो त्रिविन्दमही पचाम मीलतक चला गया हो। अितनी पनी आबाशी मररतके किसी भागमें नहीं। मार्गमें गाडोंके पचर हो जानेसे हम अँके निकटवर्ती कुबेरर गये जहाँ तमिल स्त्रियाँ ताडकी बनी हुअी बाल्टीसे पानी खीच रही थी। अुन्होंने हमें प्यासा अनुमान कर स्वयं पानी रिलाया। अुन्हे हम अजनबियोंको देख कर कुन्हल होता था और हमें अुनके नीचेतक लटके फटे कानोंमें सोनेके कर्णकूल देखकर आश्चर्य होता था। अँसा जान पडता था कि कान अब अधिक भार न सहकर फटही पडेँगे। दक्षिणमें मामूली स्त्रियाँ सोनेके आभूषण पहनती हैं। मध्रान्त परिवारकी स्त्रियाँ हीरे, मोनी, जवाहरातको चाममें लाती हैं। सोना अुनके लिये हलकी धातु है।

हम मूरज डूबनेके पहिले कन्या कुमारी पहुँच गये। समुद्रतीरपर भव्य दृश्य देखकर आनदिन हो गये। तीन समुद्रोंका मिलन ! हमारे मनुष्य हिन्द महासागर, दायी ओर अरब सागर और बायी ओर बंगालकी खाडीका जल अुछल अुछलकर तरंगिन हो रहा था। बटुने नर-नारी समुद्रमें मूर्धाल देखनेके लिये अुन्मुख थे, पर बादल मूर्धको रहहरकर ढीर लेते थे। मंश्राममें यही स्थान है जहाँ मूर्ध समुद्रमें डूबता और ममूद्रसे अुगता है। हम मूर्धालका दृश्य देखनेके लिये अस्त-दिगाकी ओर अंगव गश्ये रहे, पर बादलोंने मूर्धकी अपने आचलसे मुक्त

नहीं लिया धीरे धीरे आकाशमें चंद्रनी रेखा चमकने लगी। बादल सूर्यको ढुंकाकर ही छटे। निराश लोटकर हम कुमारी मंदिरमें पार्वतीके दर्शनके लिये गये। यहाँ भी 'अधारे बदन जाना पटना था। यहाँकी पार्वतीके सम्बन्धमें अंक कथा है कि जब अिनना शिवसे परिणय होनेवाला था, शिवजीकी बरात वहाँ तर नहीं पहुँच पायी। कुमारी पार्वती अनन्नी योजनमें चली गयी पर अनन्ना पना नहीं चला। मरेरा होनेपर ज्ञात हुआ कि शिवजी शुचिद्रम् तब आ गये हैं। पर विवाहका मुहुर्न रात ही में था। अत पार्वतीजीको अुदास होकर अपने निवास-स्थानपर लोट आना पडा और तभीमे वे 'कन्या-कुमारी' कहलाकर अिस मन्दिरमें 'बाम' करनी हैं। मन्दिर समुद्रने बिनारे है, जहाँ समुद्रनी गोभा अवर्ण्य है। रातको दूरमे आने हुअे जहाजोका प्रकाश समुद्रपर तरला हुआ दीपन-सा जान पचना है। कन्याकुमारीमे लोटते समय हमने शुचिद्रम्के भव्य मन्दिरके दर्शन किये। अिसका 'गोपुरम्' (मन्दिरद्वार) काफी अँचा है। भीतर काले पत्थरनी विशाल हनुमानकी मूर्ति है। यह मण्यत शिवमंदिर है। शिवका सजीव नादिया भी दर्शनीय है। मन्दिरने अेक प्रस्तर स्तभनी मट विणोपता है कि अुमे हावसे ठोकनेपर दीमी दीमी सुनीनी आवाज निकलनी है 'सरगम' के समान।

त्रिचिद्रम् जिसे तिसअनन्तपुरम् भी कहने हे रातको लोट आये। त्रिचिद्रम् और कन्याकुमारीके बीचकी भूमि सुपारी काजू केला, नारियल, धान आदिने अुबंरा है। समय कम होनेसे मलयालमके कअी साहित्यकारोमे भेंट नहीं हो पायी। पर यह जानकर हर्ष हुआ कि मलयालम् भाषामें भी तुलसी-दूत रामायणका अनुवाद हो चुका है। मलयालम साहित्यमें यौन-विपयक कृतियोका चलन अतिक बडा है प्रगति-वादकी भी लहर है।

दूसरे दिन विश्राम कर रातको मदुरा रवाना हो गये। हमारे मित्र प्रा चिदम्बरम्ने वहाँके हिन्दी प्रचार सभाके कार्यकर्ताओका हमारे आनेको सूचना दे दी थी। त्रिचिद्रम्में चन्द्रहामनके अतिरिक्त श्री पी के वेशधन नायर, कुमारी जोनुआ, चिदम्बरम्

मारदाज और अेन्नाहम्ने हमारे लिअे बहुत बट्ट अुठाया, जिसके लिअे हम अुनके दूतल हैं। मदुरामें या मयुराश्रीमें श्री मुस्वामी और अुनके सहयोगी श्री रत्नमभापतिने हम वहाँके दर्शनीय स्थल दिखलाये जिनमें मोनाकपीका मन्दिर देश प्रसिद्ध है। यह बहुत विस्तोर्न है जो कअी गोपुरम्ने घिरा हुआ है। गोपुरम् अँचा गुबदके गमान द्वार है जिसमें अनेक मूर्तियोमें पीराणिक गायअें अविन हैं। मन्दिरके प्रत्येक खम्भेपर मिह हाथीने अूपर मवार दिखलाया है। ये बडी सजीव मूर्तियाँ हैं। यहाँ अेक हजार खम्भोआला बडा 'हॉल' है, जहाँ हजारो तर मारी प्रसाद-पान कर सकते हैं। मन्दिरको कलामें प्राचीन भारतीय सभृति बोलती है। दक्षिणके मंदिरामें कुछ दक्षिणप्राय सनाकी प्रतिमाअें हैं, जो मय्याम कदाचित ६३ हैं। मन्दिरोंमें अिनकी वाणिषोका अ ययन, मनन होता रहता है।

शामको मदुरामें हिन्दी प्रचार सभामें स्थानीय साहित्यिकी अेर गोष्ठी भी हुअी जिनमें तमिल साहित्यके विद्वानोने भी भाग लिया। ज्ञात हुआ तमिलके कवि कम्बरकी तुलना तुलसीके साथ हो सकती है। तमिल भाषा सर्वथा अपने पंगेपर खडी हो सरनी है, अुमे सभृतकी बेसागी लेनकी बिलकुल आवश्यकता नहीं। हिन्दीके प्रति यहाँ बडा अुन्साह पाया गया। नगरके कअी स्थानोंमें पुण्य जीर स्थो-वर्ण चल रहे हैं, जहाँ शक्तिपता महिआअें पडगी पडानी है।

वहामे रामेश्वरम् धनुष कोटि भी गये। धनुष कोटिने लका घोडे ही फासलेपर रह जाना है। 'अगिन वोट' अानी अानी है। यहाँ तीर्थयात्री समुद्रकी लहरोंमें स्नान करते हैं। रामेश्वरम्में मंदिर तो विशाल है पर स्वच्छता नहीं। कअी तीर्थ-क्षुप है, जिनका पानी मीठा है। यहाँ भी हिन्दी जाननेवालोकी कमी नहीं है। अेर होटलके स्वामी तो घराकेके साथ हिन्दी बोले थे। वे कअी भाषाओके जानकार मात्रुम हुअे। रामेश्वरम् लोटने हुअे हम त्रिचिद्रम्को गये। यहाँ हमने तमिल-नाड हिन्दी प्रचार सभामें श्री अयनन्दनश्रीका आतिथ्य ग्रहण किया। यहाँ सभाका हिन्दी कार्य बहुत प्रगतिपर है।

त्रिचिनापल्लके निवृत्त श्री रामका मंदिर दृग्गम्य है। वह कावरा नदीके द्वीपमें बना हुआ है। त्रिचिनापल्लयम सह्या मीथिया चम्पक बाद बहुत बूचाआपर अक विशालका मन्दिर है। यहां नगर और नदीका दृश्य बड़ा सुन्दर दिखायी जाता है। यहाँका घरती गस्थायामला है। घानकी सलमें तीन फसल होती है। यह तमिलनाडका प्रमुख नगर है। यहाँ भी चर्चाम लागल कहा तमिल साहित्य बहुत प्राचीन है अूनका धारा अखण्ड रूपसे चली आ रहा है। संहृतके सम्पकमें आनस अिसम ससृहन गद्य आ गय है। पर अब अूट चुन चुनकर बहिष्कृत किया जा रहा है। अबयनदनश्री तमिल भाषा, साहित्य और सभृतिका विन्तुत क्रितिहास लिख रहे हैं। अिहासे पात हुआ कि तमिलका जो ध्याकरण बीसाका चार सताल्यूपूव लिखा गया था वह आज तक चल रहा है। तमिलका अक ही रूप सभी जगह बोला जाता है अमकी अूप नापाअें लहा है।

त्रिचिनारवास मद्रान आय। यहाँ हमन हिन्दा प्रचारभाषाके सयुक्त मश्री श्री पृथ्वरपालु मिथके यहाँ अक दिन ठहरकर आतिथ्य प्राप्त किया। सनामें श्री बकाषल गमने जो साहित्य विभागमें काम कर रहे हैं और जो दक्षिणी भाषाअंकि अतिरिक्त हिन्दीके अछ अध्ययनगाल विद्वान ह अट हुआ। अिनके कभी निबन्धान अिनकी हिन्दी साहित्यमें गतिका परिचय मिलना है। श्री मयनारायणजीको जो सभाके मश्री ह काय कुगलठा सभा का दक्षिणमें हिन्दीक प्रमुख विद्याप ठका रूप प्रदान कर रहा है। यहां हिन्दाक कअों सों अध्यापक अध्यापिकाअें प्रतिपद्य शिष्या ग्रहण कर दक्षिणका अक गालाआ नया विश्वविद्यालयक कालेजोंमें हिन्दी अध्यापनकाय कर रहे हैं। यहांर था गार्गजी तथा मिडनाय पतक दान हुआ जा सनाकी विभिन्न प्रवर्तिथाम नि बाध भावस सहमा द रहे हैं। श्री रघुवरदयालु मिथ सों श्री मयनारायणक दहित रूप हा है। महानाजान जब मद्र समें हिन्दा प्रचारका नाव रना तब हृयकेगार्गक साधनाय रघुवरपालुका भी 'मना में पहुँचे थे। तबसे अाजक हिन्दीका राष्ट्रभाषाका आ मानकर य मना में काय कर रहे हैं। मद्रानमें मिथकाकी गृहनालय ही अिनकर की और रामानाथयस अें हुआ। अिनकाका मुख

हँसी बड़ी मघर लगे अूनकी अ्विगतके समान हा। दक्षिणमें कभी जहिन्दी भाषामापी सज्जन अिन्दीका सेवा कर रहे हैं। तनाअेंके श्री अररुरी बरणा चंचरी हिन्दीमें अछठी कविताअ लिखत हैं। अूनका पल्लयन कविता सभृ प्रकाशित गे चुका है। अिन समय प्रसिद्ध बालसाहित्यके पत्र 'अल्लामाना के नागदकाय विनामें काय कर रहे हैं। श्री अ रमण चौधरान "नावान मला क" नामक कहानी सभृ ना प्रकाशित किया है। य कहानिया अाकी अलिम अूची है। था रघुवरदयालुकी मिथय वनगाया कि कि त्रकार पुत्र कालपमें पणि प्रवाल नामक बभूत पुराना हन्त लिखित ग्रंथ ह अिनम अन्य नापाकाऊ साद सय हिन्दीमें भी रचना है। मल्लालमक कोशो अ्वारिठि माल्ल भी हिन्दामें काय रचना की है। मद्रान नरकारकी 'दक्षिण भारती' अछठी पत्रिका निकल रहा थी, अिसके सभादक श्रीरामानन्द धर्मो य।

मद्रानमें अल्पार पुत्रकाल्य कादा सभृन है। पर आज कायका बन्द था। यहाका जाम्बिद वनकय गणीय है। अिनका लम्बाअा अूनरस दक्षिणी और २० फु और चौगाओ पूरवस पक्षिमका अर २०५ फु है। अत्रकल ४०००० वा फुस भा आपक है। अिसके नाव अना बीनान दिमासाठिकठ साया अिगाका अक महत्वपूर्ण सभाअें का है। मल्लका दृग्गका यह विधामस्थल बना हुआ है। अना वासकी मूयुके पञ्चान सामानिया निन्द्य हा गा है।

मद्रानका समुद्रतट बहुत सुन्दर है। गमकी मला-ना लग जाता है। मलानिपका रात्रके ८ बज अ मद्राअक शिष्यो अानका मयू अरना कायअम मनत्रा रहता है। अिहाल अम्बकाकी चारागा दकी हागा पुट मद्रानक समुद्र बला अूममें जनन आसमानम अन्तर शिवांग पण्य। अुधर पाञ्चाय सत्रक नरक और वनकेके नजर ह और अिधर नाचन सागाका चरम माना जा हन मुख बनाता है।

सल्लयमें अिधर नाच साहित्य कला सभृत का सम्प स्थला है। सच बात था य है कि

जिगर अर भी छानो नहीं ह
दुनिया बाकमालीम।

श्रीका ११ तो कर ले

रेलनशाला नजर अले।

सभ्यताका संकट

: श्री रघीन्द्रनाथ ठाकुर :

[एष० गुरुदेव कविके अन्तिम जन्मोत्सव समारोहपर दिने हुसे भाषणका सारांश]

आज मरी अग्रज अस्मी घरम पूर हुअे । मर जीवन वर्षेकी विरतीर्णमा आज घेरे मामने फँगे हुअी है । पूरतम दिगन्तमें जिन जीवनका आरम्भ हुआ था अग्रजें दुःखको दूरसे छोडसे आज निमूठ दुष्टिमें देन पा रहा हूँ और अनुभव कर पा रहा हूँ कि मर जीवनकी तथा सार दशकी मनोवृत्तिकी परिणति दा दुष्टताम परिणत हो गयी है । अिम विच्छिन्नताम गहर दुःखका कारण हुआ है ।

'गिविजिज्ञेदान' का—जिने हपने सभ्यता नाम देकर अज्ञेति कर लिया है--कोअी सचवा प्रतिपाद छपनी भाषामें पाना आमान नहीं । अिम सभ्यताका जो रूप हमारे देगमें प्रचलित था, मनुने अुगवा नाम दिया था सदाचार । दूमरे शब्दम वह कुछ अेक मामाजिर नियमोका वनपन था । अिन नियमोने सभ्यतामें जो धारणा पुराने समयमें प्रचलित थी वह भी अेक संकरे भूगोलवृष्टमें थावद थी । मरम्बनी और दृशनी लदियोने बीचता जो देग ब्रह्मावर्तके नामम प्रगिठ था अुसी देगम परम्परामे प्रचलित आचारको सदा सार कहा जाता था । जवनि अिम आचारकी नीच प्रवृत्ति प्रचार ही खरी थी--चाह अुम प्रवामें कितनी ही निदुरता, कितना ही अन्याय बषो न हो । सदाचारके अिम आदगरो अेर समय मनुने ब्रह्मावर्तमें प्रतिगिठ देगा था, अुसी आदर्शने प्रथम लोनाचारना सारा ब्रह्म किया । मैने अिम समय जीवन प्रारम्भ किया था, अुम समय अंग्रेजी-निग्रामने प्रभावसे अिम वाता आचारके विरुद्ध देगके विभिन्न मनमें विद्रोह फैल गया था । अिस सदाचारके स्थानपर हपने सभ्यताके आदर्शको अंग्रेज जानने चरित्रके माधमिाकर अपना किया था । हमारे परिवारमें यह परिवर्तन म्यायुद्धिके अनुशासनपर--उपा धर्ममें

और क्या गेर-परहारमें--पूर्णतया ब्रह्मण कर लिया गया था । मन अेमी ही भावनाके बीच जन्म लिया था और जिमीने मग हमार स्वाभाविक गार्हत्यानुरागने अग्रजको अुच्च आमनपर प्रतिगिठ किया था । यह हुआ जीवनका प्रथम भाग । अुसके बाद ही मे कठिन दुखके बीच परिवर्तन होना शुरू हो गया । मैने बराबर देखा नि जिहांने सभ्यताको चरित्रके अुगने निवाली हुअी वस्तुके रूपमें स्वीकार किया था, वे ही रिपुकी प्रेरणामे किम प्रकार अुमे अुत्पन्न भी कर मरने हूँ ।

जब दिन मुसे अेरान्त गाल्पिय रमके अुपभोगके अुपकरणके बरमे बाहर रिक्त आना पडा था । अुम दिन भारतवर्षके जनसाधारणकी जो निदारण दरिद्रता मैने सामने स्पष्ट हुअी, वह हृदयविदारक थी । मन्व मयारकी महिमाके ध्यानम अेरान्त चिन्तने हुआ हुआ था, तब अभी जिमी सभ्य नामधारी मानव आदर्शके अिन बडे निदुर, विग्न रूपकी वपना भी नहीं की थी । अन्तम अेर दिन अिगी विकारके भीतरमे बटुटोडि जनताके प्रति सभ्य जानिकी अपरिसीम अवज्ञा-पूर्ण अुदासीनताकी भी देवना पडा । भारतवर्द अंग्रेजोने सभ्य सामनकी भीमनाय चट्टानको छानीपर रखकर निर्याय निदचक होकर नीचे पडा रहा । अिस प्रजर यूरोपीय जातिकी स्वभावगत सभ्यताके प्रति प्रथम विश्वास गो गया, अिसीका शोचनीय अितिहास मुसे यहाँ आज दुहराना पडा ।

सभ्य सामनकी चालनासे भारतवर्षकी जो सवने बडी दुगति आज सार अुठायै है, वह केवल अंग्रेज-वस्त्र-निचया और आरोग्यका शोकावह अभाव ही नहीं है, वह है भारतवासियोने नीच अत्यन्त नृशत आत्म-विच्छेद । अिम निदेसी सभ्यताने यदि अिसे सभ्यता कहन हो, हमारा क्या कुछ छूट लिया, यह हम जानने

हैं ! खुलीके स्थानपर हाथमें दण्ड लेकर अगुने जिनकी स्थापना की है अगुना नाम दिया है Law and order, विधि और व्यवस्था—जो अंगवारगी बाहरकी चीज है, अंग किस्मकी दरबानी मात्र है । पादचात्य जातिके सम्भ्यता अभिमानके प्रति श्रद्धा बनाये रखना अमाध्य हो झूठा है । अगुने अपना शक्तिरूप हमें दिखाया, मुक्तिरूप वह नहीं दिखा सकी । अर्थात् मनुष्य मनुष्यके बीच जो सम्बन्ध मबने अधिक मूल्यवान् है, जिसे यथायं सम्भ्यता कहा जा सकता है, अगुनीकी कृपणतासे भारतीयोंकी अगुनतिका रास्ता बिलकुल बन्द कर रखा है । फिर भी अपने व्यक्तिगत जीवनमें नौभाग्यसे बीच-बीचमें महदाशय अयेजोकि माय भेरा मिलन हुआ है, जिनका परिचय मेरे जीवनमें अंग श्रेष्ठ अंश्वर्यके रूपमें सचिद रह गया है । यदि अिन्हें न देवता और न जानता तो पादचात्य जातिके सम्बन्धमें मेरी निराशा कहीं प्रतिवादही न पाती ।

भाग्यचक्रके परिवर्तनसे किसी न-किसी दिन अंग्रेजोको भारत-माम्राज्य त्याग करके जाना ही होगा । किन्तु अुम दिन वे किस भारतवर्षकी—कैनी श्रीहीन दीनताके बूडे कर्कटकी अपने पीछे छोडकर जाअेंगे ! अंकाधिक शान्तिधियोकी गामनधारा जब सूख चुकेगी, तब यह कैसी विस्तीर्ण पङ्कशय्या दुर्बिषह निष्फलताका डोनी रहेगी ! जीवनके प्रथम आरनमें समूचे मनने यूरोपीकी सम्पद-अन्तरकी अिस सम्भ्यताके दानपर विश्वास किया था । और आज अपनी विदाके दिन वही विश्वास

अंग-वारगी दिवालिया हो बैठा । आज यही आशा किने हैं कि हमारी अिनी दारिद्र्यगाडिड कुटियामे ही परिव्राणकनीका जन्म दिवस जा रहा है, प्रतीक्षा किने रहेगा कि सम्भ्यताकी देवबापीको लेकर वह आश्रय, मनुष्यके चरम आरवानकी बागीको वह मनुष्यके कान्त-तरक पहुँचाअेगा—अिनी पूर्व दिगन्तसे ही ! आज अूस पारकी ओर यात्रा शुरू कर दी है—सीछेके घाटपर क्या देख आया—क्या छोड आया—अितिशक्तसे तुच्छ अुच्छिष्ट सम्भ्यताभिमानका कंसा परिशीर्ण भलस्तु ! किन्तु मनुष्यके प्रति विश्वास को देना प्राप्त है, अुन विश्वासकी अन्ततक रक्षा कर्हेगा । आशा कर्हेगा कि महाप्रलयके पदवान् वैराग्यके मेधमूक्त आकाशमें अिति-हानका अंग निर्मल आमप्रकाश कदाचित् आरन होगा—अिनी पूर्वाचलके सूर्योदयके दिगन्तसे ! अंग दिन फिर अरराजित मानव अपनी विजय-यात्राके अभिमानमें सनन्त वापाओको लंपिता हुआ अन्नतर होगा—अरनी महान् मर्माशको वापस पानेके पथपर ! मनुष्यके अन्तहीन प्रतिवारहीन पराभवकी चरम मानकर । अुमवंग विश्वास करनेको मे अरराय समनता हैं ।

आज यही कहकर जाअेंगा—प्रबल प्रतासगालीकी क्षमता, मदन्तता और आमग्नरिता भी निरावर नहीं—अिछके प्रमापित होनेका दिन आज आ गया है, निश्चित रूपसे यह माय प्रमापित होगा ही कि -

“अथमेधधने तावन् ततो भक्षणि परयति ।

तत सपनान् जयति समूलस्तु विनश्यति ॥”

: अनुवादक—धी मोहनलाल चाजपेयी :



सरस्वती-पुत्रोंके प्रति !

श्री भद्रन्त आनन्द फोसल्यायन

यान नाही पुरानी है और यू है भी अय न माघारण । १०३७ म म लगभग अक महीना चटपावम रहा । सायद कुछ अत्रिक ही । सारा अर्मा मगरियामे पीडित । अक विहारमे कुछ स्वस्थ नोकर दूसर पासके विहारमें जाता । यहा जाकर फिर गिर पडता । मेवा मुथ्रुपायी वही भी कमी न थी । अक विहारमें ता अक श्रमणन जूत ही सवा बी ।

अक दिन मन वृत्तताभिभूत होकर रहा —

श्रमण । म तुम्हारा कुछ और तो प्रयुवकार कर नहीं सकता । पडना चाहा तो कुछ पडा सकता हूँ । प्रोगे क्या पदोग ?

‘ अग्रजी ।

म ¹⁰अग्रजी न सकता था । लेट के त्रिना पुस्तकके अग्रजी पडानी आरम्भ की । आभी और बी दो गदद मिलाय अर्थात् म और हम । जब तीसरा यू अर्थात् तुम याद कराना आरम्भ किया तबतक वह आभी और बी मेंसे अक भूत चुका था । मुझ अचंगे तरह याद है अनक वार प्रय न करनपर भी म अपन अस् श्रमण ब घुकी तीना गद अक साथ नहीं ही याद करा गया ।

जिस समय जो वात विगप रूपसे याद आ रही है वह यही कि जिसके दिमागका यह हाल था कि अग्रजीके तीन दाल भी अक साथ न दाल रख सके वह भी अग्रजी ही पडना चाहता था ।

अधर कुछ महीन पहले ‘जतवन जाना हुआ । वतमान बलरामपुर (जि गाण्डा अत्तर प्रदेश) के पास जतवन ही वह जगह है जहाँ भगवान बुद्धन अपन जीवनन ४५ वर्षात्रामोमेसे २५ वर्षावाम विनाय थ । कभी जहाँ थावसतो जसा बडा नगर बसा था वहाँ आज सहेट महेट नामने दो ग्राम मान ह । वही जन

वने पवित्र स्थानहोंमें मेरी अक वर्मा भिक्वुसे भेंट हुआ । वयावद अू महिद महास्थविरकी साधनाके परिणामस्वरूप यहा अक जतवन विहार स्थापित है । आप त्रिमोमें रह रहे थ ।

पूना— यहाँ किम अद्भुत्यमे आय ? ’

अग्रजी पडन ।

अितन दिनोंके बाद आज म वटा यह सोच रहा हू कि जतवन के खण्डहरोम भी अग्रजी ही पडन ।

यही जिस धर्मादिय विहारमें वटा म य चद सतर लिल रहा हूँ अक भिक्षु ह जो नवारी म कविता करत ह कुछ निध्वनी और खासी नपाली की बोलते ह सामाय हिंदी भी समझ और बोड ही गेते ह किन्तु वे अपन ज्ञानका अत्यंत अधूरा मयगत ह क्याकि अूह अग्रजी नहीं आता ।

पिछले वात्रीन वपमे परिचित अक दूरमे भिक्वु ह जा सिहट बोलत ह वर्मा बोगते ह तिच्यता बोलने ह कुछ पाठि तथा कुछ सस्कृत भी जानत ह अच्छी खानी हिंदी लिखने पढते ह कुछ जापानी भी जानते ह— तब भी अूह अपनी गिबपा अत्यंत अधूरी लगती है क्योंकि व अग्रजी पूरी नहीं जानत ।

सच तो यह है किमीकी भी कोत्री भापा पूरी नहीं आती अूह स्वाम तीरपर कि तु चिंता अग्रजी की ही है ।

अभ्याससे म त्रनी हूँ राष्ट्रभाषाका किन्तु आजकल मुझ यहाँ पडानी पड रही है अग्रजी ही अग्रजी !

अिसम कुछ सदेह नहीं कि अश्रेजोन भारतपर अग्रजी लडो, किन्तु लगे हुनी अग्रजी जो आतानासे अतर नहा रही है और नहीं कही तो ओग भी सिरपर चडी चलो आ रही है हम स्वीकार करना ही चाहिय कि जिसके मूलम है अग्रजीकी माहितियक शक्ति ।

अस दिन बात चलनपर 'अग्रजी' की अकदम अ वी सी डी जाननवाल अक भाभीन कहा अग्रजी जान लेनसे सब कुछ जाना जा सकता है ।

अग्रजीकी राजनीतिक-स्थितिकी यदि अपेक्षा कर भी दें तो भी अग्रजी और अग्रजी-साहित्यके बारेमें जो यह सामान्य धारणा बनी हुई है जिसस अभिभूत होकर स्वाहमस्वाह आदमी अंधर लुडक जाता है अुसका लेखा-खोखा तो लेना ही होगा । अपनी अभ्यस्त 'अग्नीम वहुँ तो अुस धारणासे तो लोहा लेना ही होगा ।

प्रश्न है कि अग्रजी भाषा और अग्रजी साहित्यकी किस ढाकके मूलम क्या है ? आप कहग अग्रजा साम्राज्यके डड मो साल । अुत्तर सही है, किंतु अंधूरा है । क्योंकि प्रश्न फिर पदा होता है कि अग्रजी-साम्राज्यक मूलमें क्या रहा है ? स्वीकार करना ही होगा कि अग्रजाका अपना चरित्र । मेरा निबदन है कि अग्रजी साहित्यका भी मूलाधार वह अग्रजी चरित्र ही है जिसे हम अग्रजी साम्राज्यका मूलकारण मानते हैं ।

प्रतिकूल परिस्थितियोंमें हिंदी सेवियों भी हिंदी की जसी सेवा की है वह किसी भी साहित्यके साहित्यिकके लिए अभिमान बरनकी चीज है । किन्तु अंधरकी अनुकूलता तो जैसे प्रतिकूलता ही बन गयी है ।

कवि अचलकी अक पवित्र याद आती है—

फूल काटोमें खिला था सेजपर कुम्हला गया

केन्द्रमें और कअी राज्य सरकारासे राष्ट्रभाषा तथा राज्य भाषा हिंदीके सम्बन्धमें जो धोपणाओं निक लती ह अुट पडकर तथीयत प्रसन्न होजाती है । बाग ! हम सबकी वह आँखें हो फूट जाँईं जो अुह वायाचित हुना देवनकी भी अिच्छा रखता ह !

स्वराज्यक छह माल बीन गय । आज भी केन्द्रीय सरकारके हर अक मन्त्रालयका लगभग सारा कारोबार अग्रजीमें ही होता है । अभी और तो वर्षोंके बाद ता अुममें धीरे धीरे परिवर्तन होना आरम्भ होगा । तबतक न जान किम राजाका राज्य होगा ।

केन्द्रीय सरकारकी वान जान दा । वही बड-बड लोगोंकी वही वही वान ह । क्या आज भी अुन राज्याकी

जो अपनी राज्य भाषा हिन्दी धोपित कर चुके ह-सरका रामसे कोअी अक भी सरकार यह कह सकता है कि अग्रजी जानसे सबया 'गुण कोअी व्यक्ति अुमक विनी भी महत्वपूर्ण पदको सुगामित कर सकता है ?

कमटियापर कमटियां बनी ह और विंगडी ह क्या आज भी हम हिन्दोके किसी अक भी टाअिप राअिटरक बारेम कह सकत ह कि यह हिंदोका टाअिप राअिटर है ?

हिन्दी टलिप्रिटरकी भी चचा बोच चीचमें होभी है । क्या आज भी हिन्दी टलिप्रिटरके अभावमें हिंदीसे अग्रजीमें और पुन अग्रजीसे हिंदीम अनुवाद होनक बाद ही दिल्लीकी किसी प्रस अर्जेशा द्वारा भजा गया अुनो समाचार भी हिन्दी पत्रामें नहा छरता ?

यह सब अु चल रहा है और 'दिनांक देवना वाच चीचमें अपुदग दे देन ह कि राष्ट्रभाषाक प्रचार कायमें ज'दवाजीमें काम नही लेना चाहिय ।

प्रान्तीय भाषाआके आग खडा करके अुनकी ओरमें अग्रजीके निहिन स्वापोंको मुरखियन रखनका अच्छा ढग निकट आया है ।

सरकारके पाम—अुमके गिनया विभागके पाम-योजनाओं ह सूचनाओं ह । कोअी अक भी वायाचित हो पाय तब न ?

गर-सरकारा साहित्यिक मत्स्याआके पाम भी योजनाओं ह किन्तु साधन नहीं । जिनो ना गहरका अक सडी मो दूकानके पाम जिनो पूजी होता है अुनता भी पूजी हमारे बर बड प्रान्तीय साहित्यिक अनुष्णताके पाम नहीं दिवायी लेती ।

जिस मध्य प्रदेशकी राजधानी नागपुरम राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मलनका पाँचवाँ अधिवेशन हान जा रहा है वहाक मध्य प्रन्ग हिंदी-साहित्य सम्मलनका पाँचवाँ मासिक विनधि मरे सामन है— बुल जमा छह पनकी ।

जिनो विनधिमें सम्मलनक प्रथम मन्त्रा श्री रामनाथराज मट्टराजका बक्तव्य पडनका मिला—

यद्यपि अर्थाभावके कारण नीचे दो महीनाम विपत्ति प्रकाशित रहा की जा सकी तथापि यह सिद्ध सिद्ध था कि प्रकाशित प्रथम विपत्ति जा रहा है

यह है हमारा अर्थ प्राचीन हिन्दी साहित्य सम्मेलनी पत्रिका !

आप यदि साहित्यकार हूँ और जानते अपनी काशी साहित्यिक वृत्ति है अथवा आपने किना मित्रों की पाठ काशी साहित्यिक रचना है तो आज आपका अंग प्रकाशित करने के नाम काशी कठिनाई का नाम प्रकाशित करना पड़ेगा। काशी व्यवसायिक पत्रिका के प्रकाशित अंग प्रकाशित नहीं प्रकाशित करना चाहता क्योंकि अंग अपनी पूँजीके ही दृष्टि जानका हर रखा रहता है और काशी साहित्यिक संस्था प्रकाशित नहीं प्रकाशित कर सकती क्योंकि अंगके पास पैसा नहीं।

साहित्यिक गौणत्वका दृष्टिमें जो वृत्ति जितनी ही अतिरिक्त है आज दिन अंग प्रकाशित करनेमें अक्षम ही कठिनाई है।

प्रश्न सम्भोज है। असा चयन व्यूहको कहाँ और कत ताजा जाय। हिन्दीको सचमुच कुछ साहित्यिक अतिम युवाका आवश्यकता है।

मरी विचार सम्मेलन हिन्दी साहित्यकी प्रगति के लिए साधक स्वरूप आकर हम स्वयं ही गये हैं अंगका अर्थ कारण यह भी कि समाजका अर्थका अर्थ सम्मेलन वर्म न हिन्दी पढ़ता है न लिखता है और यद्यत्त गरीबता तक गया। अंग यद्यत्त ही हिंस्र किये जा सकत ह—

(१) अंगका विन्तु पाठ गूँथ

(२) शांत पाठ विन्तु विवक गूँथ।

पहला वग जितने पगे पान सिपरटपर ही रख करता है अंगका जाय पग भी यदि हिन्दी समाचार पत्र गरीबकर पढ़ना रख करण रखा है हर हिन्दी समाचार पत्रका प्राणक संस्था लायाम गिनी जाय लग। आठ करोड़की आगरीदी जायनका अंगही पत्रका रण प्रथिमी रोज र पता है। चाहीस करोड़ लायाने राष्ट्रकी

राष्ट्रभाषाका कीन सा अर्थ दानि है जो अर्थ लायकी भी वात कर सक

दूसरा वग पान कात्र किन्तु सचमुच अंगक विवक गूँथ है। अंगकी वृत्ति स वल्लवत (और दूसर गहराम भी हीमा) म अर्थ विपत्ति तरहूना गि य रग गूँथानी तरहूँ खरीदा जाता है पटा जाता है पढ़ाया जाता है धीमा आत्मा अपना चेन्ना रणना ही गी अर्थ पग न करता है। अंग लायाने जानमें जा कुछ है और जितने अधि र विन्तु रणम है अंग जय र साहित्य भी देख पात ह ता असा साहित्य यदि अंग अर्थ भा लयता है तो जियम आरंभकी नीनमा रण है

अंगक यह है कि कहीं कहीं तो असा साहित्य पुस्तकालयकी सम्पत्ति बहाने लिख धाम तीरपर रण जाता है।

पैसा साध गाठ जबन अंग भय नर जविवक। गठरधन बाय रहेगा ततक अंगमें लाभ अंगनवाय साहित्यिक अंग भी प्रचुर मात्राम रण है। बद्धिमान गंग उवकूक रहत नकी अंगना अंग कणना अधि र पग न करत ह किन्तु अर्थ अंग यन नवाय वरक गंग ही नो ह।

निरन रह सभी भाषाअंग सभी तरहूना साहित्य है। कि त जो साहित्य जिय कोटया है वह अंग कोटिका ही गमना जाकर अपनी हैमियत अंगका दजा ता न पाय

अंगके हिन्दा गर्थ का अंग असा ही री वधी हूँ ही लिखि और रण रणनिकर पुजना है। अंगक रणिक मरद हूँ कि अंगका और अंगकी साहित्य साधना र भविय अंगक है कि त अंगनने लिख अंग पाय अंगी भी काशी तपना है।

अंग अंग मसित्री री र अंगका ता क्या कहा जाय जियने पाय पठनक लिख अंगनिक पुरात नहा अ ह खरीनाय लिख अंगक पना नग और जितकी आप लिखी हूँ अ पुरात छापनर। कोनी प्रकाशक तयार ही। राष्ट्रभाषाको र तीमायक व ता अंग ही अंगकी

तपस्या कर रहे ह कि कुछ न पूछो । अंस बधुआके सम्मुख तो वह सारा समाज अक्षरघायी है, जिसकी अव्यवस्थाके परिणामस्वरूप हीरे कायलाके भाव विकते ह ।

किन्तु साराका सारा साक्षर समाज अंसा ही नहीं है । निस्त-देह दंग दरिद्र है । किन्तु देगकी दरिद्रताके हिमावसे देखा जाअ तो अिस देगके बहूनस घना बहून घनी ह । अंस समय साक्षर लोगोकी कअी श्रणिया है ।

आधुनिक दृष्टिसे विचार करनपर हमारा ध्यान मरुत पदक देवे बालकके कुछ प्राप्तरकी ओर जाता है । अनुभसे अक वग ता प्रोफतर बननके साथ ही अस लिखना पठना बन्द कर देता है । अनुके पाम हर माल नय अपक नय मूख आन ही रहन ह । पठन लिखनकी क्या अक्षरत ।

जिही बधुआका अक दूसरा वग है जो अपना अधिकाग समय पाठ्य पुस्तक लिखन छपवान प्रकाशित करान तथा अूह भिन्न भिन्न परीक्षाआके लिअ स्वीकृत करानमें ही खच करता है । यहा अुसका क्या बधाया पेगा है । जिनमें काअी कोअी तो स्वय पुस्तक लिखने तक नहीं । लड सिपाही नाम मरदारका होता है । पुस्तक जिमी विद्यार्थिसे लिखायी जाती ह— कुछ मटनवाना द दिला दिया जाता है । किन्तु विनापिन नामकी पूरी कीमत जिसक भरोम पुस्तक परीक्षा विपक पाठ्य क्रममें आता है— प्रोफसर महादयका मिलती है ।

साहित्यक वपनमें जहां तिन रात यू हा सफदकी बाग किया जाता है यह अक असा मदानक बक मारुट है जिसकी मोमा नहा ।

जिन्हा समय बधुआन अनुराध है कि आपपर काअी भी दूसरा जिमी प्रचारका अहुगनही लगा सकता । अपनपर रहम कर अपन विद्याविधार रहम कर और अपन साहित्यपर रहम कर और कुछ असा कर जिस देकर हर हिंदा प्रचारक हर हिंदा विपक कुछ अक बदनक ।

पणन लिखानके पेगसे बाहर नी पण लिखे लोगोकी कमी नहा । हमारे समाजका यही अक बग दुर्भाग्य है कि जो पठन लिखानके पगमें नहा व कुछ कहन-मुनन लायक पणने लिखने ही नहा ।

अक दिन अक मित्र आपानी टकनीमें बठकर जिमीस मिलन गय । आप भीतर चले गय । टंकनी बाहर खडी रही । लौटकर देखा तो आश्रवर भारताय भवन निर्माण कलापर पुस्तक पण रहा था ।

यू यह देग सत कवीर का देग है जिस अुलाहेके व्यक्तित्वम अपनी जीविहाके साधन और अेध्यामकी अुचाम अुची माधनाका सुन्दर समन्वय हुआ था किन्तु तब भी हमारा आजका कारोबारी व्यवसायी न जान कयो क्याण मगोदकर खननर दनसे आग नहा बड पाता ?

हमारे योग्य व्यवसायशक्ति चाह तो अपन नान और हिंदी-साहित्यकी वृद्धि अक साप कर सकन ह । किन्तु समाजमें अनुक विपयमें कुछ अंसी निहृण धारणा बन गयी है कि व कुछ लिखे-परे नी तो काअी विवास ही नही करता कि अनुका अपना लिखा पडा होगा ? यह सही भी है कि कमी कमी हाता भी नहा । विचारे घन क्याअे या नान ? लकिन वह युग गया जब लक्ष्मीके वाटनका अुल्लू हाता अनिवाय माना जाता था । आज भी यदि वह अुल्लू ही बना रहगा ता अगन साथ अपन समाज और अपन देगकी ना ल दूवगा ।

तासरा वग है अनु साक्षर गगाका जिनका न तो पणना लिखना पडा हा है और न व व्यवसायो ही ह । भाग्यम अूह मभा मुविधाअे प्राण ह । साधन सम्पन्न ह । अिय वाक ल ग ना अपन देगमें यथाचित मात्रामें मरभ्वना-आराधन नहा हा करत । वयो-वयाअी नोकरी निदमित्त मासिक आय नियत निदित्त काम और मोज । सरस्वनाक चरणामें श्रद्धाक दा फूल चढानम क्या कम चतसिक आनंद है जिसन अिम रमका क्या हा अनुन पूछो । वह दताअेगा—

हाय कमवयन । नून पी ही नहीं ।

आप कल्पना कीजिये किसी देशके गवरनरकी और कल्पना कीजिये उसके पालि पढनकी और कल्पना कीजिये उसके पालिय-बोके सम्पादन और अनुवाद-कार्यकी ।

श्री चामस सिंहल (सिलोन) के अंसे ही गवरनर वे ।

पालि अग्रजी-कोस के रचयिता और 'बुद्धिस्ट जिज्ञेया' के प्रसिद्ध ललक श्री रोज रेविडम सिरोन सिविल सर्विसके अब योग्य पदाधिकारी होये ।

अपन ही देशमें तीस वषतक पुराणोका अव्ययन करके 'भारतीय ऐतिहासिक परम्परा को वैज्ञानिक अतिहासकी भित्तिपर ला खडा करनेवाले श्री इन्क्यूटी पाजिटर कलकत्तेके अक बडे न्यायाधीश ही तो थे ।

हमारे बुच्च पदम्य अधिकारी भी यदि चाहे तो क्या किमी न किसी शाखा विशेषका अध्ययन करके 'राष्ट्रभारती के चरणोंमें अनक अमूल्य रत्न समर्पित नहीं कर सकते ?

यहाँ कालिम्पोडमें प्राय रोज ही अक साठ वर्षीय महिलासे भेंट होनी है जो यूरोपकी कअी भाषाओं मान्भाषाबन् बोलने है और अिम समय चीनी, तिब्बती और संस्कृतके अूँचे साहित्यिक ग्रंथोका तुलनात्मक अध्ययन कर रही है । अस दिन अूँहे अक चीनी-कोश मिल गया । वे अंसी प्रसन्न दिलायी दी जैसे कोओ बालक कटी पतंग मिल जानपर ।

मध्यप्रदेनके भूतपूर्व गृह मंत्री प द्वारकाप्रसाद मिशने अपने अबकाशके समयमें 'कृष्णायन'की रचना कर निस्त-देह सब गोमोका मार्ग-दर्शन किया । जो अिससे कुछ भी प्ररणा लेना चाहत हो ले सकने है ।

गोसाओ तुलसीदासकी अब चीनाओके प्रचलित अर्थसे मैं किसी भी तरह सहमत नहीं हो पाया । गोसाओजी कहने हैं—

"कोनूँ प्राकृत अन गुणमाना
सिर धुनि गिरा लागि पछिताना

[साधारण जनोका गुणगान करनेसे सरस्वती अपना सर धुन पठतान लग जन्तो है ।]

मरा निवेदन है कि सरस्वतीका वरद पुत्र जब और जिनके बारेमें भी लेखनी बुढाता है वह साधारण जन रह ही नहीं जाता ।

साधारणको असाधारण बनाना ही सरस्वती पुत्रोकी विशेषता है ।

पल्लवकका गुड प्रय अक चीनी किमानकी कथा-मान ही तो है किन्तु माटोका प्रम चाहेको नहीं अ-पन अंसी तीक्ष्णताके साथ अभिव्यक्त हुआ होगा ?

हिन्दीमें क्या कुछ है अिसकी सूची भी बहुत लम्बी है, क्या कुछ नहीं है अिसकी सूची और भी लम्बी है । अस लम्बी सूचोको पूरा करनेके लिअ लेखको, प्रकाशको पुस्तकविक्रताओ मनीके सम्मिलित सहयोगी प्रयत्नोकी आवश्यकता है ।

और आवश्यकता है लक्ष्मी पुत्रोके आग आनकी ।

साहित्यकारोने अिम युगको न जान हिन्दीका कौनसा युग माना है । मुझे लगता है कि यह हिंदीका संस्था-युग है । सत्यार्थ किमी न किसी अूँचे अुद्श्यको लकर दो इन भी आग नहीं चल पाती कि अुद्श्यपीठे पड जाता है और पद तथा विचार आग आकर लडे हो जाते है ।

प्रमखद हिन्दी साहित्य सम्मलनके सभापति न हुअे न सही । वे हिन्दीके अुप-यास-सम्राट कहला गये ।

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी वहीके सभापति न बने, न सही, व हिन्दी गद्य लेखकोको बना गये ।

साहित्यिकको संस्थाका सहयोग मिल जाअ, सोनम मुहागा है । अन्यथा कोओ भी संस्था किसी न किसी की छाया-प्रात्र ही तो होनी है ।

सरस्वतीके वरद पुत्रोको ही प्रणाम है ।

कुमार दुरंजय

श्री राहुल सायन्यायन

दुनियाक बहुतन भागम सामन्तबाणका खनम
 हुअ बहुत समय बोट गया। लेकिन भारतम अुन
 अणजान बहुत पाल पोमके रण था। भारतकी
 स्वतन्त्रताके बाण अुनका टिकना मानव नहीं था जब
 कि अमली राजागणित अणब यैनीगाहाह हासने निकल
 करके भारतीय पलागाहाक हासमें आ गयी। नाटक
 सबने बड धलीगाह जिम राजस्थानम आने य वहा
 अपनी प्रजपर निरकुण गामन करनके लिअ अणजोन
 राजाओका छोट रखा था। पूजा नैटके सहार अपना
 कुछ काम धनीगाह अकर बना लन थ लेकिन आखिर
 वहाँ बानून नहा बकि अके आमीका मनमाना राज्य
 था। कमन कम पूजी लगाकर कारखाना जोलनके
 लिअ ता बाओ नेड नपार नही था अिमलिअ भारतके
 बाणबिद गामक भारतीय धलागाहोकी आखाम य
 निरकुण मुडिया राजा काटकी तरह खटवन थ।
 लेकिन जब तर अणज यण य तअनक ही नगी बमि
 अुनके बण जानके बाण भी धनीगाहाम अिननी गणित
 नहा था कि बवल अण बणपर अिन बाओकी राखन
 दूर फेंक सकन। अिमके लिअ अुनका बिला करनओ
 आणपकना नही थी क्वाकि अणजोह गामनक समय
 हा रण गामका प्रजान अनक बार गालियां खापी
 ता ना अणन मणपकी नहा छाडा। अुहाक तरह मार
 अनमें राजाओका अपना निरकुणता नहा बकि
 अणिवारकी भी छाडन पडा। जब वह मरवारके
 पणपर नर न गय अिनम गारा प्रजका बमाओपर
 पलाहार गूण बिग आ रहा है। नकण वणों
 पुरानी रिधानताका बटारि मन्सुका पाडा पलनका
 आणपकना नही पडा अुनका गण फल क गय लेकिन
 गणितुण गूण सब हण। बनी हागिणन राजा हण
 ना अणन अणन नित्री उवर और पनकी गणन
 बकि रिधानती बजानका न गण हारकर माक कर
 शिना बकारका अिधानका छुडकर बाका सना

अिनारताका निजा मणनति बना शिना। बार नहा
 नाबालिग था मूक राजा अुअ, वहा चाज सनवालेन
 लू सज मो लू' वा नारा लाणक छीउ न
 छाड दिव। कितनी ही जणाम तो चिन नर अानिअन
 अणन अमका काआ पना न रहन दनक लिअ अणन
 थप पणन बाणजाहा होनी लली—अिन हाणमें कितन
 ही अतिहासिक मह बक दम्भाअक मबणक लिअ नण
 हो गय। बलन पुजे राजाअान या अणन नमगहनन
 नौकराकी नहापतान माघाण अणनगाअान भा
 राग्यनी अणिकने अधिक मणनति अणन हापम बानी
 चाही। कितनान हुजारा अकड अणन सनेके अणन
 पाम बना लिअ और टखार मणक अणन नउी ना
 करनी गूण कर दी। मरवार ता किनानेकि हणक
 वणों ख्याल करती है जहाँ अुन अुनक लिअ नजदू
 होना पणता है।

कुमार इरजय अिना नरहक अक रिधानता
 कुमार थ। अुनके रिता -मणनन मला क्के, १९४५ ना
 आधा दवनक लिअ रह नही गय, नहा ता रिधानन
 नाप अुनका नी हाण पण हा जाता—नणके सणन
 बड निरकुण तातागाह थ अिनका क्कि-मुणन न
 तब फण हुओ या नहा अुनकने ना अणनअनकका
 नाकतक वह नहा पणवण पी। अहाण सून करवण
 सणमें बाडना भी मबा लेकिन अणन गणन
 अणन्य अकताक मन नहा गाड नन माण कणनक द।
 बासा बनी रिधानन हाणनर ना नहागणका अण अणनन
 नहा चलाथा आण वण गणन कजा नन गण थ।
 अणन हरमन नदा मुणनति गणनका गि अणन मखना
 थ। जब पहाटम अणकी मदारा अणन न गणन।
 और अणनन बणन दूर रिणक वणने रहनकान अण
 भाण गणनमान भा अणनक कण अणन वणन गणन
 रिणकअ कण गणन गणन अणन थ। अणन अिन
 ताह वण-ब गणनका कण गणनकना गणन गणन

स्वयं इव जगद्गुरुं वरुणं नदीं ज्ञानात् । परं बुद्धिं अपन
 विनये ही रमण्टी जगत् रग थे जा राज्य
 और राहरी मुन्दरियाका जमा ररना राम विद्या
 करत थे । प्रात स्मरणीय मर्वादा पुष्पाक्षम रामव विना
 प्रात स्मरणीय मर्वादा पुष्पाक्षम दशरथकी माण्ड
 हजारा रानिया थी । जिन मन्त्राराजाका रानियाकी मर्या
 गोण्ड हजारा नर ना नडा वहुँकी थी रविन हजाराग
 अपर जगत् थी । बार दजनम अपर ता रनकी राज
 कुमारियो वी और राजकुमारानी भी क्षेत्र पल्लव रन
 गवनी थी । अिन्दीमें क्षेत्र हमार चरित्रनायक कुमार
 दुरजयगिर भव थ । दगा और भाषाशान लिख ता
 वैकुण्ठवामी महागजाने अपन अन पुत्रमें चिदिशाराना
 गा वता रवा था । चाण्ड रानियाकी मर्या विननी ही
 हा और अनमें अपनी मुन्दरना और वापुके
 कारण विननी ही कुण्ड गमय तन महागजानी चहुँकी
 भी रही हा, लेखिन जहानन गनीका सवाण था, वह
 कुण्डन वनीय रानीके वडे पुत्रका ही मिल गवती थी ।
 जिन प्रकार कुमार रिपुजय जेठे शानेपर भी गट्टीमे
 वचिन रह और अनके दर्दना अनुजामें गमय वडे
 महाराज वने । लेखिन वैकुण्ठवामी अन्नदाताने अपने
 गरजयेठे पुत्रके माथ और कुमारका जंगा बज्रमावा
 वनीर नही रिया जिसमें माण्ड हागा कि मण्डुगुरीमें
 दुरजयका अन्हान दा तीन रगण और पंदावारवाणी
 वाकी जमीन पट्टे ही म द रयी था ।

कुमार दुरजयका रग सावगा बन्ध कुछ हद तक
 बाला था । वम शरीर छह पुत्रा वदुत रम्य-नगडा
 था । रग वात्री बिगड न कर सकता, यदि रूप अन्ध
 होता—यह माण्ड ही है रग मुन्दरवाकी गाण्टी नही
 है । कुमारके भारी भरकम शरीर और अमके अनुष्ण
 ही गिरमें कुण्ड पीणो मन्त्राकी वमी जकर थी, लेखिन
 अनको वेवगुण हागन नही वहा जा सकता था । वह
 सुवराज नही थे दजना तुगारामेंग अक हानेक कारण
 हाथगन भी अनका वदुत कम ही मिलता था । जब
 पिताको रियागनकी सागी जामदनी अपने ही हर्मने
 चलातेके लिख पर्वान नही होतो ता कुमार दुरजयक
 माथ यह रिननी अुदायना दिग्गज गकते थे ? वडी

रियागनके आविर कुमार व, त्रिमलित्रे वहाँ तक
 हायमें गकाच करन ? आविर वर थे भी क्षेत्र राजाके
 गाणे और दूमरन वरनाओ । दुनियामें वडे कुमारक
 मोरपर जानक वा ण विनान अनके माथ प्राग्भमें
 गण्ड्यार भी अघिन दिवगया था । अपने मुमाहिब
 और दूमर लण्ण भण्ण भी थे । राज्यम गवने लिख
 जामीर मिनी हूवी थी लेखिन अननमे अनका काम
 नडा चलनवाण था । तन भी पिता जय तक जीविन
 थ और गानकर अग्रज जव तक भारत उाडकर नही
 गय तव तक कुमार अभी वम्नुन कुमार थे ।
 मण्डुगुरीके अर और वण्डगा लेखका अनको म्याड
 आया । व वही गये । अनक माथ तलवार और बडूक
 रिय दुअ अदेंगे और मुसाहिब भी थे । पर वचनवाणी
 महिगन दूरमे जय जिन पण्डनको देखा ता वह
 मधमून ही दर गयी । दारू होनका क्याल ता अुमको
 नही हा गरता था । वराकि ाण्डुआकी वदियां जिनकी
 मन्त्रीकी नही हा गवती थी और न दिन-दहाडे व
 जिन तरह जा ही मरन व माथ ही मधुगुरीम
 टाका वया तन तक वभी चारी भी नही मुनी गयी
 थी । पीठे जय माण्ड हूआ ना वह और अुमकी
 महिगियां वदुत हंमी । यह अम समयकी वान है जय
 नि मण्डुगुरी पूरी तीरमे अग्रजाकी थी, जयनि व अुमपर
 माने रि-दुस्मानकी तरह सामन ही नही बनने थे, वरि
 अुम जियगेवरा क्षेत्र दुक्का वनाये हुअ थे । अुम वरा
 कोशी गारा या अयभारा जिन राजाओंका बाणे ह पीरो
 पडरर नही समझता था ।

(२)

रियागनकी गनीपर छाटा भात्री बंड चुका था,
 किन्तु घाडे ही समय बाद आगी आवी और अुम नी
 पण्डन लेकर जलग होना पडा । अुमके दर्दतो भाजिया
 और वरनान भी पण्डन पायी । कुमार दुरजय
 भी खापी हाथ नची रहे वरि अपनी दुनियामें पहुँ
 आनेक कारण भारत सरकारने अनके माथ वाम गिया-
 यत बरनी । जामीर अभी हायमे नही गयी थी । नये
 प्रमु यदवि विमानाका गलुण्ड करनेक लिखे जमो-
 दारियाकी तरह रियागनकी जागीरारा भा अुदातेके
 लिखे मन्त्रर थे, लेखिन जागीरदारोके माथ पूरी तीरमे

मनसा-बाचा-कर्मणा अर्थात्सात्मिक बर्तावके साथ । वर्षोंसे
 अन्नके साथ वास्तवीत हो रही है मोल तोल किया जा
 रहा है, दाम और बढ़ानेके लिये जागीरदार कितनी ही
 बार रुठ भी जाने हैं, फिर अन्धे मनाया जाता है ।—
 शासक नये महाप्रभुओंके सम्राजवादका रास्ता ज़िमी ओरसे
 है । कुमार दुरजयकी जागीर भी अभी सरकारने अपने
 हाथमें नहीं ली थी, लेकिन सरकार सुस्त थी तो किसान
 अधिक चुस्त थे । कुमारका अपनी जागीरमें अब कोअी
 रोब नहीं रह गया था । हथियारबन्द तिलगोके साथ
 भडकीली पोसाकमें जानेपर किसानोंपर रोब गांठनेकी
 तो बान बलग, वे अन्नके अुपहासके शिकार होने ।
 कागूस और बन्दूक रखते हुअे भी वे अन्नका भूँह नहीं
 बन्द कर सकते थे, शिकने लिये बेचारे हाथ मलकर रह
 जाने । यदि अन्न समय वैकुण्ठवासी पिता महाराजा
 होते । तब तो अन्न दो घून वर देनेपर कुमारका कोअी
 बाल बाबा नहीं कर सकता था । राज्य और जागीरमें
 अंशो स्थिति देखकर कुमार साहबने यही पसन्द किया
 कि अपना अधिकने-अधिक समय मधुपुरीमें बिताऊँ ।
 पहाड मकड़ी, चिचू या केकडाकी टाकलमें कैलते हैं,
 अँके वाद दूमरी टेडी मेडी बाहियाँ फूट निकलती हैं,
 और देखनेमें कुछ ही सी गजोंपरके सामने स्थानपर
 पहुँचनेके लिये मोल मोलका चक्कर काटना पड़ता है ।
 अंग्रेजोंने सवा सी वर्ष पहले जब मधुपुरीको अपने रहनेके
 लिये चुना, तो अन्न समय वह शीतलतासे आकृष्ट हुअे थे ।
 छह-साँ हजार फूट अँके पहाडोंपर शीतलताके साथ अन्न
 समय पना जगल भी था, जिसके कारण अन्नका शीतल्य
 हुना ही गया था । चार चाँद लगाते अन्नके बहुतने
 स्थानसे मनातन हिमने आच्छादित सिखर पवित्रयाँ
 दिसलायी पड़नी थी । अंग्रेज प्राय अपने वगलोंको अँसे
 स्थानपर बनाना चाहते थे, जहाँसे हिमालय श्रेणियाँ
 अधिकत अधिक दिशाधी पड़ें । लेकिन जैसा कि आम
 तौरम हाना है, पहलेवाले बाजी मार ले गये और पीछे
 आनेवाले जो जँने-जँनपर सनीय करना पडा । अंग्रेज
 दूबानों और बाजारोंके मीनो दूरक स्थानोंको अधिक
 पसन्द करने थे । बर्तौ प्राकृतिक शीतल्य भी अधिक
 था और बाले लोगोंकी परछाअी भी कम पड़ती थी ।

अकान्तकी खोजमें कितने ही अंग्रेजोंने अँसी जगहोंमें भी
 अपने बगले बनाये, जहाँसे हिमालय श्रेणियाँ नहीं दिशायी
 पडती । दूनरे नम्बरके वे बगले थे, जहाँसे हिमालय
 नहीं ता कमने कम धीम मोल दूर नीचेकी समतल
 भूमि दिशायी पडती थी । तीसरी श्रेणोके वगले अन्न
 दोनामे वचिन थे और हरियालीमे आच्छादित किन्हीं
 दो पवतवाहियोंमें पडते थे । अँक अँमा ही बगला
 कुमार दुरजयके भाग्यमें पडा था । मधुपुरीमें बगले
 बनने यद्यपि सवा सी वर्ष पहले शुरू हुअे, लेकिन अन्नकी
 बहुनायन अँक पाना-दी पहले शुरू हुअी फिर आधी
 रातादी तक तो नये वगलोंके बनानेमें होड लग गयी
 थी । अन्नकी गति रुकी जिसी समय पहला महापुड आ
 गया, जिसके वादसे तो अन्न मधुर नगरीमे लवप्तीही
 रूड गयी । बहुतसे अंग्रेज अपने बगले बेचने लगे और
 भारतीयोंने विशेषकर राजा महाराजाओ और कुछ
 सेठोंने, अुँहें खरीदना शुरू किया । कुमार दुरजयकी भी
 जिसी समय यह वगला प्राप्न हुआ था । कहा नहीं जा
 सकता पिता महाराजाने खरीदकर अँसे अपने मुपुत्रकी
 दिया था या अु-होने खुद खरीदा था । अन्नपुरमें पँदा
 होनेवाले बुद्धिके सम्बन्धमें कुछ घाटेमें रहने ही है,
 अपूरसे अपने सारे काम अपने मुमाहियों द्वारा कराने हैं,
 अन्नलिअे यदि खरीद-फरोदनमें वे और अधिक घाटेमें
 रहे, तो अन्नमें आदचय क्या ? हिमशिखरों और नीचेकी
 समतल अन्नत्यकाके मुन्दर दुश्मोमे वचित अन्न वगलेमें
 आवर अुँहें अकमोम होना ही था त्मानकर जब कि
 लारी-लारी दूध ज़ाओके आरम्भ तक सी पड़ौ दू ज़ाओ ।
 प्राय मारे दिन मूरंकी किरणोमे वचिन अन्न स्थानकी
 सदीमें अन्नको तकलीक भी होनी थी । क्या करे, अब
 ता ढोल गयेमें पड चुकी थी ।

बुँअरानीको अपने वगलेने गुण अन्नगुणकी चिन्ता
 करनेकी धूमन नहीं थी । वे अँक रियासतों राजाकी
 पुत्री थी और कुमार साहब पिताके अुनेवियन दर्जनो
 कुमारोमेंसे अँक । बुँअरानीके पान कुछ पँमा भी था,
 पीहनेम कुछ और भी मिलना रहता था, अपूरने राज-
 पुत्री होनेका अभिमान, अन्नलिअे वे अपने पतिकी बहू
 पदा करनेके लिये मजबूर नहीं थीं । दूनरी तरक कुमार
 भी मर्यादा पुरवाँतम अपने विवाअीके वदमोंपर चलनेके

लिख स्वतंत्र था, यदि अक्सर बाधा थी तो यही कि हाथ तग था और असीलिय दूर दूर तक निगाना नहीं लगा सकते थे। कुँअरानीको दुनिया जहानकी पवा हो भी नहीं सकती थी क्योंकि सबसे छोटी हाजिरीके समयही अन्नी भेजपर बोलल और चपक आ जाते फिर अन्नीके प्याठोका ताता करीब रातको मोनके बदनही खतम होना। अन्नीका दिमाग चौकीसी घट नशमें चूर रहता। शराबके प्याठोसे गम गलत बरती हुअी वचारी कुँअरानी अक दिन परलोक भिदार गयी। तब रियामत विनीत हो चुकी थी। यद्यपि कुँअरानी कहनपर कभी अिमपर विश्वास करनेके लिअ तैयार नहीं थी।

कुमारको कुँअरानीके मरनेकी फिर नहीं थी। मारे भारतके रजवाडोकी तरह अन्नीके मनुशरपर भी पाठा पड गया था, असलिअ अन्नीको आशा नहीं हो सकती थी। अपनी जो आमदनी थी अन्नीमें छोटी चादरवागी हालत थी सिर ढाक तो पर नगा पँर ढाके ता सिर नगा। अन्नीसे यह सोच सोचकर और भी दिल भरता जाता था कि आमदनीके खेत मूलते जा रहे ह और सम्पत्तिका बँचकर बहुत दिन काट नहीं जा सकते। अन्नीक साते राजा जय पहल आने तो खूब हँसी खुशीकी पान गोष्ठी रची जाती और मालूम होता अन्नीकी दुनियामें कही दुखवा पता नहीं। साते राजा अब अपनी विपत्ता पड हुआ था। खच चलानके लिअ अपनी सम्पत्ति बचनके लिअ मजबूर था। बहनोआम पहले सात्नेही अपन बगतेको बचनक लिअ दौड धूप शुरू करवायी थी। अस समय अन्नी अपन बगलक लिअ काफी रकम मिला रही थी लेकिन राजा लोग बिना मुसाहिवाके मन्गरेके अपनी सम्पत्ति बच नहीं सकते थे। खरीदारकी यदि असी सम्पत्ति लेनी है तो मुसाहिवाके अन्नीपर अच्छन फल चढाना जरूरी है। असी गडबडीम राजा साहबका बगला नहा बिक सका और कुछ ही सातो बाद यह देखकर अन्नीको और अन्नीके मुसाहिवाको बडी निराशा हुआ कि मधुपुरीके बगलों और कोठियोका दाम अन्नी समयसे अब आधा भी नहीं रहा।

कुमार दुरजय 'योग्य पिताके 'योग्य पुत्र था, फल केवल परिमाणवा था। पितान अगर अकसे अक कीमती सँको कुत पाल रत था तो पुत्र दो चार भी न पाले यह कैसे हो सकना था? अन्नीके पान यूरोपीय नमलका सबसे बड कुत पट इनका अक जोडा था और अब जोडा खूवार भीटिया कुत्तावा। घट डन लम्बाअी अचाअामें बहुत बडा होनपर भी भयकर नहा था। वे काफी समझदार थे और जानते थे कि मनुष्य हमारा अधिकार बननके लिअ नहीं है। जपरिचित व्यक्तिपर वे कभी भूक भाक देने थे। लेकिन भोटिया जाडको दान दूमरी ही थी। वे अपन लम्बे बालोके कारण घट इनसे कही अधिक भारी भरकम दिखलायी पडते, चायद ताकतमें भी घट डन अन्नीका मुकाबला नहीं कर सकते थे। पर तु बाहरी आदमियोके लिअ बाल था। अन्नी दखकर या दूरसे अन्नीकी भयकर आवाज सुनकर लोगोकी रूठ कापती थी। कुमार साहबका बगला अक सुनसानसी जगहमें छोटी सडकक किनारे था। यह अन्नी सडक थी, जिसपर बहुत कम लोगोको जानकी जरूरत पडती थी। जो भी अधरसे गजरता पडतेहीमे देख लेता कि मोटिया कुत अच्छी तरह बंध हा या नहा। कुमार अँसे बचकूप नहीं था, कि अपन अिन दरिदाको छोड रखते जो बिना काट आदमीको छाड नहीं सकते थे।

बापकी राजधानी और जागीरके गाँवमे अभी भी कुमारके महल मौजद था। मधुपुरीम भोजन बिनाकर अभी वहाँ जाना अन्नीका बन्द नहा हुआ था बिनापकर राजधानीवाले महलमें वे अन्नीसे अपन जाडाको बितान था। अन्नीके पास यही दो जोड कुत नहीं था दलिक पोड दूमरे कुत चिडिया हिरन घरपर भी मौजद था। नौकर चाकर तीना जगहोम रहने थे— खर्चीला मोदा था। अन्नीके कुमारको अपना जीवन अभी चादरके अनुसार नहा था। खान पीन और दाबनोमें सावर्ची बढती जाती थी। मधुपुरीमें कोअी जलमा या फनगन होता अन्नीमें कुमार अवश्य निमन्त्रित होने और वहाँ जाकर वह अपनी सावर्ची भी बिलकुल भूलनके लिअ तयार नहीं था। अच्छा अच्छी गरमोपर अन्नीका पच कम नहीं हुआ और न कुमार-पुत्र कम हनिपतमें रख जा मवन था। अग्रजोके जानपर भी

अप्रेजीका राज्य तो अभी हिन्दुस्तानसे गया नहीं है, जिसलिये कुमार अपने पुत्रोंको मधुपुरीके ब्रह्म अष्टे युरोपियन स्कूलमें पढ़ाने थे। पुत्रियाँ छोटी होनेसे अभी कान्वेन्टमें थीं। धीरे-धीरे पेंसेका अितना ढाला पड़ गया था, कि स्कूलकी फीस तक नहीं दे पाते थे— या यों कहना चाहिये, कि कुमार अपनी खर्चको अदा करना चाहते थे, जिसके लिये बैसा करना अनिवार्य था। खाने-पीनेकी चीजोंपर भी कुमारका काफी खर्च था, क्योंकि ब्रह्म तरफ मनी चीजें महंगी थीं और दूसरी तरफ मेहमानोंका आवागमन कम नहीं था। अपने और अपनी नयी प्रियतमाओंके लिये कपड़ों और जेवकों भी जन्त पड़ती थी। सभी चीजें अधारपर आनी थी। बनिसे अिम बातकी हिम्मत नहीं करने थे, कि अधार देना बन्द कर दें, क्योंकि अिससे सालमें कुछ रुपये लीट जाते थे। अिम तरहके अधार और जेवकों कुमारके यहाँ चलती ही रहती थीं और बितने ही बनिसे तो पना नहीं पाते थे, कि कर्जेकी तमादी लग चुकी है।

लाडूराम मनमाने दामपर कुमारको चीजें दिया करते थे। कमी-कमी नगद रकम भी अधार दे देते थे, क्योंकि कुमार मनमाना मूढ़ देनेके लिये तैयार थे। लाडूराम बेचारे १५-२० हजारके आमानी थे। अर्थात् पहिलेके चार-पाँच हजारके। कुमारपर चार हजार रुपया अधार हो गया। सवाजा करनेका यहीं फल हुआ, कि कुमारने मुनके यहाँ चौर परोदनी छोड़ दी। कुछ दिनों तक नगद दाम और फिर अधारपर, अूरोंने लाडूरामके किसी दूसरे पडोसीको पकड़ा। आदमियोंके साथ सवाजा करनेसे कौआ फायदा न होने देव लाडूराम अेक दिन स्वयं कुमारके बगलपर पहुँचे। जाँक नूँककर दूले ही जच्छी तरह देखा। दोनों मोटिया बुल्ले आज बगलसे सामने नहीं सघे थे। दिल अब भी डर रहा था, लेकिन अेक पुराने परिचित नोकरने अूरुँहें किन्नास दिलाया, कि बुल्ले पीछेकी तरफ है। लाडूरामके जानपें जान आयी। बटे आदमियोंकी मनमाने दामपर यो ही सौदा बेचा नहीं जा सकता, अिसके लिये नोकर चाकरोंको मुट्ठी गरम करनी पडती है, अथ कुमार साहबके नोकर यदि लाडूरामके साथ सहृदयता दिख-

लानेके लिये तैयार थे तो वाजिब ही था। लाडूरामके कहनेपर अेक नोकरने जाकर कुमार साहबके पास अरज की—सरकार, अेक आदमी आया है ?

—कौन-या आदमी, बगलका खरीदार ?

—नहीं दूजर लाडूराम बनिया, पेंसेके लिये।

लाडूरामका नाम मुनने ही कुमारकी स्त्रीसे बदल गयी। अूरुँहोंने अपने नोकरको पुकारकर कहा :

—खियाली, मोटियेकी छांड दे।

कुमारने कुछ अँधी आवाजने कहा था, जिसकी जहमत भी नहीं थी, क्योंकि लाडूराम कुमारके बनरसे बहुत दूर नहीं थे। मोटियेका नाम मुनने ही लाडूरामके प्राण हवा हो गये। वे अूरुँहें पर अपना नौद हिलाते बाहरकी तरफ लपके तुरन्त ही कुछ गजको चडासी गुरू हो जाती थी, लाडूरामको न जाने कहीं अितनी तारत पंदा हो गयी, कि दीडकर घट गये और फिर सडक पकडकर तब तक बुल्लेकी ही भागने रहे, जब तक कि बंगला ओटमें नहीं चला गया। लाडूरामको अपनी वेवकफीपर झंनलाहट हुआ। वकीलने पूछकर अूरुँहें मालूम हो गया था, कि नालिया करनेकी मियाद खतम हो चुकी है। कुमार अिम तरह तकाजेके मारे किसीका ऋण चुका देनेके लिये तैयार नहीं थे। ज्यादानी-ज्यादा बह यही कृपा कर सकते थे, कि आगेके लिये अधार चीजें न मगायें। जिनको नालिया करनी है तो नालिया करना फिर। कुमारके अूर पर समनता मील होना समब नहीं था। लाडूरामको घर लौटनेपर लुस दिन १०२ टिपी बुझार जा गया।

(४)

कुमार दुरजयको अब अधार भी मधुपुरीमें बोझी देनेवाला नहीं था। सभी जानते थे, कि जूनको अधार देना रुपयेको पानीमें पेंचना है। मधुपुरीमें रहनेपर कुमारका खर्च भी अधिक बढ जाता था। अूरुँहें अपने खर्चको बम करनेकी फिर पंदा हुआ। जातिगके महलकी अब अेक तरह अूरुँहोंने छोड़ दिया था और अधिक्तर गजबानोंके महलमें ही रहने थे। वे जानते थे, कि पड़ोनेमें तग होने लडू और जूमयमें दिन बानना मेरे लिये बटून मुदिकल हागा, लेकिन मधुपुरीके छर्चें

त्रि अरु पमा कर्त्तम आय ? मधुपुरा जी क्या राज धानीर महुंम भा रहकर सब चगना अनक त्रि मुक्ति था । कितनी ती जगम और स्वावर सम्पति बच चुक थ अरु मधुपुरा अरु रत्नवा उगना भी वचनक त्रि नया थ । त्रिन अरु अम वाञ्छा मिट्टीक मात्पर भा रत्नवा नहा था । तान वध पत्त जब अछा ताम मि रत्न था तबनो मयात्रिका तिकामम पुत्तन भा सात्का तरह अम नया वचा । मुसाहिव मर और वर ताना हा तरहक जाने ह अरु मया ताना गमकी चाञ्छा ना वहवमा क्या न वन ? कुमार अरु कारीनरा वन जाअ ना अहु रोन पूछगा अरुना ता गता क म चरम ? रियातनाके सुटनम मभी जगह मुसाहिया गवाना गीहियाकी जवाब मि रत्न व और अक ग अक गना रोक तान हा गय थ ।

कुमार पमाक त्रि वद चिन्तन थ और अिम वानक त्रि और भी चिन्तन थ कि जब मागी मरुन्ति वचकर ता जाअम तो फिर कमे मुञ्जारा गगा ? आगिर कुमार अरु अरु ५० तर नही पटुचा थी । त्रन वचाकी फिर न भी करें ना अरुनी फिर ता अरु थी हा । अक त्रिनमवत्तगा मयात्रिन कुमारका संग दी कि मधुपुरीवांग काकीका जमक मन्ताराज कुमारक पारमम वत्त त्रिया जाअ । कुमार अिम समय जाशम राजधानावा अरु मत्तम व जब कि मुगा त्रिन यह संगह दी । अमी समय दरजयक रिन्तार अरु नगर महाराजकुमार भी नगर म आय हुअ थ । मन्ताराजक्रमन रियातनर जानक समय रियातना लूम हाव उदाया था और अरु त्रि ना हजार अरुना फाम भी बना त्रिया था । यह कहनका आव श्यवना नही कि पात्रियामे अिस अमीनकी जेतनवा गरीब विनातार खताकी छीन करर हा व फाम बना था । वधिया गसनका पाव अय य ऐपनका फुमन नया था क्यानि यह तो मभी जगह अिमी तरह चर रत्ना था । फिर व पुरा मरुन्ना न कुकी मर्या भी गिरन रत्ना नही चाहता था । महाराज कुमारन जब अरुना फाम बनाया ता अरुने फाम पम

वाकी थ । अरु हान दा टुकर मगवा त्रिय और फामवर अरुन रहन त्रिय अक वमगा भी मयात्र करा त्रिया । अग समय त्रिनना अरुमा था कि माका रमीर और पत् पहन रत्त त्रिया व स्वय टुकर चरान थ । आगिर जब मोर अ टा तर चगा सनन थ ना टुकर चगना क्या मक्ति था ? फामक मवपम अमरिका और त्रिगत्तरी कितना ही विनाय पदा मत्तम मत्त गवाज और रत्न भा मगवायो । तथा किमी मुसात्रिक कहनर अमर मन्वाका कृति विगपन बनाकर भी गय त्रिया । तानीन म त्रनक फाम अिया तर चरता रहा । पमा कर्त्तम कितना आ रहा है और किम तरह मच हा रहा ? त्रिमका रचना महाराजकुमार अरुना प्रत्तनाके विरुद समझन थ । टुकर भी वगवर विग रत्न लग । अरुमर काजा नको प्रजा टट जाना महाराजकुमार पातर डामिव कर सकन थ अिस त्रि टुकर भी अगा तरह चगा रत्न थ त्रिन मरमन और प्रजा वत्तन अने वमकी बात नया थी तामगा वध रोनन रातते फामकी म्बिदि ऐगकर अरु मात् मत् हा गया । चौथ मात्तम ना अरु मत्त सामन त्रियायी पदन लगा । त्रिनकी कामना ताना मच अमम अरु क करना पटना और अम पुग करनक त्रि कज रत्ना पत्ता या कोशी चाञ्छा उचनी पत्ती । मन्ताराजक्रम रतो फामम विरुद छडाना मुक्ति हा गया और रत्नवाज खनिहरका ज उन कत्वा गन गया ।

फाम चगन समय भा मन्ताराजकुमार अरुना कुञ्जानी और त्रम भागुशक माय गर्मी विनाय मरपुगा था किमा नूर पहा स्वातपर चर जाण करत व वहाँ अरुना अरुना काअ रत्ना नही था विनाका जा था अरु बह भाञ्छा न त्रिया था । पग और अरु जमी वन हुआ । महाराजकुमार फामम विरुद नुड ना चाहत व और मरपुगा त्रम स्वातम अरु जगगा रत्ना चाहते थ । कुमार दरजय अरुनी कागी वचना चाहत थ । पहेल अरुना म्याल नकत्त वचनका था त्रिन स्वाभिसल मुगा हुवन मुञ्जारा त्रिया कि वचनेफा जगह अग फामम वत्त रत्ना वत्ता हागा । वचनके त्रि मन्तारा भा नहा था और फाम कामनाका त्रिया

था। कुमारको अपन मोटर और जीप चलानेके बीगल पर अभिमान था। अनेके मनमें अमृग पैदा हुआ म भी खाकी वर्दी पहनकर अमेरिकन किसान बन जाभू। कुमारके मुसाहिबन महाराजकुमारके वानचीत की। महाराज कुमारन पूछा मधुपुरीमें कोठी कैसी और किस जगह है।

कुमारके मुसाहिबन बड़े अदबक साथ बतलाया—सरकार वह मधुपुराके अूस भूहल्लेमें है जहाँ केवल साहब लोग रहा करते थ। बाय कम ह डाअिंग और डाअिनिंग हाल ह। चाहर भी चार कमराका प्राअिवेट सेक्रेटरी या महमानाके रहनेके अिअ एाटा मा बगला है। चारा तरफ हरियाली है बडी मु दर जगह है।

और वहानक माटर भा जाती है ? — महाराज कुमारन पूछा।

मुसाहिबन नम्रतापूर्वक कहा—हुजर बिल्कुल बगलके भीतर तक जीप जाती है, थोडा रास्ता ठीक करनेमे मोटर भी वहाँ तक पहुँच जाअगी।

यह कहनकी आवश्यकता नही कि कुमार और महाराजकुमार दोनोक मुसाहिवान पहटहीमे वानचीत कर सोरेमें अपना हिस्सा नी निश्चित कर लिया था कुमार दुरजयक पता भी महाराजा थ अिसलिअ अहूँ महाराजकुमार कहना चाहिय किन्तु सक्पके लिअ हमने यहाँ अहूँ कुमार कहा है। महाराजकुमारके मुसाहिबन बीचमें बालत हुआ कहा

सरकार, मधुपुरीमें यदि जाप चली जाअ तो वही बहुत है। वहाँके बगल आग देनेने ही है आराम अवाप्तता और मुदरताको दबकर बनाय गय ह। जीप जाती है यहा गनामन है।

महाराजकुमारन विचार करके दो दिन बाद जवाब देन लिअ कहा। विचार क्या करना था वह व जानन ही थ कि कुमार दुरजयको फाम क्या अक बनामिलगा। अिनना बडा बगला मधुपुरीमें अमृग चीजके बदन मिला रहा है अिस म किमा दामनर नी पँचनक लिअ सघार था। अम मरीदनके लिप क्या न अमुक हा जान? अमी जाडामे अहूँन अान मुसाहिबको बगला दय आनब लिअ मधुपुरी भजा अिनन अमकी प्रगमाअ पकडका भारी

रखते हुअ भी अिस बातको साफ कह दिया था कि मोटर वहा हूअिंग नही जा सक्ती। बगलेकी ओर वतें सुनकर महाराजकुमारके मुँहमें पानी भर आया। कुमारन नी फामको जाकर देख लिया। व मन ही मन कहन लग कि महाराजकुमार अपनी नातजबेकारासे अिस मोनकी चिडियाको हायसे खो रह हँ।

अमी जाडमें फामको मबुराकी कोठीमे बदलनकी बात ही नही तय हा गयी बल्कि लिखा पट्टी नी हा गयी। अब कुमार दुरजय फामके माअिक थ। अनकी माटर महलसे सत्तर मोल दूरपर अवमिनयन फामकी ओर दीडन लगी। अपन मुसाहिवाने साथ मिलकर वह भविष्यका प्राशाम बनान लग। अहूँ अिस बातकी प्रननता होनी ही चाहिय थी कि सडी-गली काठीम पिड छूटा और अमकी जगह सोनकी चिडिया हाप आयी। मत्रसे अधिक प्रननता अहूँ अिस बातकी थी कि अब मधुपुरीक कज देनवान्कोके तकाअसे पिड छूटा। मनमें यह ख्याल करके और भी प्रनन होन लग कि फामकी प्राप्तिके साथ साथकजके बीस हजार रुपये भी अमी बोठीके दाममें है।

महागजकुमारके अर दो आदमी पल ही आकर मधुपुराक नय बगलकी तैयार करनेमें लग गय थ। बस होता ता दा चार हज्ज बाद महाराजकुमार मधुपुरी पहुँचन किन्तु जबकी अहूँ अपन नय मकानके देखनकी पकरारी भी थी, अिसलिअ अत्दी आ पहुँच। अथवाके गासनमें मधुपुरीमें अडुपरहा मोटराको रक जाना पडता था और एाट साहब नया दा चार और ब अधिकारियाकोहा मोटरन अनुकूल सडकारन मुअन दिया जाता था। लेकिन अजी राज्मेके हूँ जानमे अब यह सुमीठा हो गया कि काअी नी कुछ रूप्य दकर माटर-लायन मरकाअ अपनी माटर ल आनक लिख स्वनर है। महा राजकुमारकी माअूम था कि वाअ तक माटर नरी जाती अिनोअिअ अपनी जाप लान थ। परमित लेहर बगलकी तरफ चल अकिन चार फाँग पकडही जीपको रक जाना पडता। शोगान बतलाया कि आग जीपका गस्ता नी है। महाराजकुमारका कुछ मुसलहट पदा हूअी लेकिन यह ममपानपर कि जीपक जानमें कुछ मरगमन करनेकी जरूरत है अनका टम्परवर डाक ही

गया। अन्तरङ्ग अपने बगलेकी और पैरवही बड़े। बगलेको नीररोने ठीकठाकर दिया था। अुमने अुनका अुतनी सिवायन नहीं हुआ। सभी चीजें वहाँ पुरानी थी और पर्नीचर भी सन्ध्यामें कम थे, तो अुनका फार्म भी तो कुछ इसी तरहका था। दो चार दिन रहने बाद महाराजकुमारकी बुँरानी और लडने जगलके भीतर दम घुटनी सी जगहके जिस मुतसान बगलेमें अुनता गये। अुन्हाने सिवायन करने शुरू की। महाराजकुमारका भी अुन मन भर गया। सगे वडी सिवायन अुनकी अिग यानकी थी कि यहाँ जीव भी नहीं आ सकती। किसी समय अपने टूट फूट घाडको मधुपुरीकी गुन्दर कोठीम बदलकर वह फूड न समाने प, समझने थे, मने दुरजयका खूब अुत्तू बनाया। उदिन अब अुन्हें अिग वडी कोठी और अुमने आसपामहा स्थान देखकर मातूम हुआ कि दुरजय बाजी मार ले गया।

महाराजकुमारको अब यह चिन्ता होने लगी, कि अिग कोठीको बेंचकर कोश्री और जगह ली जाये। मधुपुरीमें अुन्होंने कुछ जगहापर स्वय घूमकर पना लगाया, तो मातूम हुआ कि २० २१ हजारमें जिसम कही अधिक अच्छी कोठी मिड सन्नी है और बेनी जगहापर जहाँ मोटर भी पहुँक सकती है। अुन्हान भारी कमीशनका लोभ दे अजेन्टको कह रखा है कि कोठी रिक्वाइर है। लेकिन मधुरीका काश्री निवासी आशा नहीं रख सकता, कि जिस बाडीको कोश्री मिट्टीने मोल्पर भी लदेने लिये तैयार होगा। हजार पाँच सौ पर्नीचरके आ मरने हैं किबाँ और जगल थलगसे अुखाडकर वधे जायें तो अुमसे भी कुछ पैसा मिड सकता है लेकिन अिममें मन्दह है कि वह कामपर लाये गये मजुराकी मजुरीके लिअ भी पर्याप्त हाया।



ब्रिटेनकी सांस्कृतिक विरासत—

सामाजिक प्रगतिके प्रणेता विश्वविद्यालय और शिक्षाशास्त्री

• श्री ओम्प्रकाश जार्य

अस लक्ष्मणमाल्य हमन अभी तक संस्कृति और श्रमका संबंध मसृष्टिके दो तत्व कला और विधानकी मूलस्थान कल्पनाकी स्यापना और कलाकृतियों अब कल्पनिक अुपादान का अतिहासिक पार्श्वभूमि दली है । परन्तु म समयता है कि ब्रिटेनकी सांस्कृतिक विरासतका यह रूपरचामक चित्र महाकी शिक्षा सस्यावाका चर्चाके बिना पूरा नहीं कहा जा सकेगा । हर देशका मसृष्टिमें बर्हाकी शिक्षा-सम्पादाक एक अपना ही स्थान हाता है । हम जब अनन देशकी प्राचीन मसृष्टिकी चर्चा करते ह ता गुरुकुलों और ऋषियोंके आश्रमोंकी बात किया करत ह और सही तराकेन किया करत ह । म समयता है कि कुछ बैसी ही बात ब्रिटेनक साथ भी लागू होती है । और वन भी मसृष्टिकी चर्चामें यदि शिक्षाको निकाल दिया जात्र तो रहहा क्या जाता है । अतिहास अन बातका साखी ह कि हर विगिला मसृष्टिका प्रगति शिक्षाक विद्यामके साथ और अुत्तकी अवनति शिक्षाके हासके साथ संबद्ध रही ह ।

जब में शिक्षाका वान करना है ना बुदरता तरीकन अुन साखपरतान नित मान लेता ह । यह बनलाना मत अिनलिअ आवाजक समयता कि आज अनन देशमें किना हा दका लाग साखयता और शिक्षामें नद करना मूल जान है । अिनका माषा परिणाम यह हाता है कि विचारामय षषयपर अब अनावाजक धुब पत्र जाता है । म मान्यन ही अुनन अला रहना चाहता ह ।

अिनता मान लनक वाद अब शिक्षा विश्वविद्या लयाका चर्चा का जा सकेता है । अविश्वतर लाग माका बन है कि शिक्षा विश्वविद्यालय अन विचारधारा अ म अनुशास, कट्टर और परपराजामें बष हान ह और

अिनलिअ अुनक द्वारा अिन शिक्षाका प्रसार हाता है वह नवीन युाक लिहाजन नय ममाजकी प्रगति विचारन वाउनीप नही । मं स्वम अिनविचारका नहा म्नाकर करता । जो लोग अुत्त विचार रदन ह व यह मूल जान है कि विश्वविद्यालय कवन सामाजिक म्पात्रे हा नहीं जा कि आजकी आमक श्रमाकी मान्यताओका दरानाय बन रहनमें हा अनन कायकी अिति घा समयतो हा । अिनमें जो लोग काम करत है अुनका कर्तव्य जानना रक्या और अुनका प्रसार भर हा न हाकर नय जानका अुपलब्धि हुआ करता है । नय जानकी वाजका मह तत्व ही विश्वविद्यालयोंका सांस्कृतिक जीवनमें बह अनिवाप स्थान दिखवा पाना है जिसहा अिन पूरर आया है ।

अितिहासक मकरमय बषामें अानकी अुदृष्टतम परपराजामें रक्या, जानका प्रवार और प्रसार तथा नय जानकी खोज म अम अुदय ह अिनक म्पार कलाविद और बनानिकाष ममाजकी साधिका गक्तिवाके माय मयम आ पान ह । बनाकि यदि व अनन मानवीप अुदयवाके प्रति मत्त्व ह तो चह शिक्षाम मामलमें विषय बगाधिक रका, गैरवर्षिक स्वयंसेवाओंके मोमाकरणका औ खोजके अुनर लानवाले गैरनापत्रक प्रतिबन्धका निराय हर हालनमें करना ही चला । हमन दका है कि बराबर अुन लागान अंता किया । अिन अुनके कतन रही म्पात्र नहा हा अउ । अु ह यत्र ना दचना पडता है कि अुनक द्वारा जा नय जान प्राप्त किा म ह अुनका बैना और बना अुनका म्पात्रमें किया जा रहा है । बनाकि बिना अिनक नया साजका नेत्रन कायन नहा ह यकता । अिस बराबर विश्वविद्यालयामें पदानवाक बह-अ साध्यायक भा अक अननर सामाजिक मयपक दापरम अत्र जान ह म्पा अवनन रूपन हा

क्यों न हो। आखिर तो अह यह देखना पड़ता है कि अन्तके अपन कामके स्वाय किस ओर रहनेसे पूरे किय जा सकत ह। यह ब्रिटनम जितना आज मही है अनना ही पिछले युगम भी सही था।

यह अग्रणी क्रातिके समय १७ वीं सदीम लोगान जाना कि ज्ञानका अथ प्रकृतपर मनुष्यकी विजय अथवा फ्रांसिस बकनके शब्दीम मनुष्यकी जायदादका आराम। मिल्टन अग्रजीका नामो कवि हो गया है। पर तु असका नाम और मान केवल अमकी कवितके कारण ही नहीं वरन् अमकी प्रगतिशील राजनीतिक विचारधारके कारण भी है। एक नौजवान विद्यार्थिके रूपम ही असके कर्मिजम मध्ययुगीन अव्ययनवाकके विरुद्ध और असके अपर आश्रित शिक्षाक विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द की थी क्योंकि असके सच्चाओपर पर्दा पड़ता था और आम जनताको सघमसे दूर किया जाता था। कर्मिज-विद्वविद्यालयसे शिक्षा प्राप्त करनेके बाद निकलने समय अपन विद्यार्थी जीवनके अन्तिम भाषणम मिल्टनन अक समयकी कल्पना की थी और वह यो थी “ अक समय आजागा जब कि मनुष्यकी चेतना अजनी अधिक अ नन हो जाअगी कि असकी आत्मा सितारे तक मानन लगग असके हुबमपर जमीन और समुद्र गान लगेँ और असकी सेवामें वायु और तूफानतक लग रहग और अन्तमें माँ प्रकृतिन असके सामन अिस प्रकार आत्म समर्पण कर दिया होभा जमे कि मानो परमात्मान विरवना सिंहासन अपनी त्रिच्छामे छोड दिया हो और विभवके अधिकार बानन और प्रगासन मनुष्यके हाथम दे दिय गय हो यह ठीक है कि मिल्टनका यह अच्च विचार ब्रिटनके विद्वविद्यालयम पूरी तरहसे घर नहीं कर पाया परन्तु असकी आ तरिक प्रतिष्ठा बनी रही। अमीके सहारे रायल सोसाइटीकी स्थापना हुअी। आधुनिक विज्ञानके अतिहासकी नीचे पडा। पीछ अब नय मुधारक लोगाने लिअ अनुदारपण भावनाआके सहारे और धार्मिक परस्वाके कारण ओक्मफोड और कर्मिजके दरवाज बंद हो गय तब अुही लोगान गय रूपमें बकनकी परपराओकी कायम रखनके लिअ और आप बढानके लिअ नयी शिक्षा सस्थाअ ग्योली।

ब्रिटनकी रिस्सिटिंग अकेडमीके नौनकौनफीमिस्ट सस्थापक लोग जसेही थ जिनका १८ वीं मदीमें खूब बोलबाला था। अमके साथ अस समयके अधिकतर प्रगतिशील विचारक सबद्ध थे। अिहीम अिरेस्मस डार्विन थे—कवि चिकित्सक वचानिक और शिक्षा शास्त्री। अि हीकी जनोमिया नामक पुस्तकन विवासावादके सिद्धांतकी सबप्रथम स्थापना की। अिहीम पर्सिवल थे। मचेरटरक अक डाक्टर और समाज शास्त्री मचेस्टर साहित्यिक और दार्शनिक समाजके सस्थापक जिहान मचेस्टरमें अक विश्वविद्यालय खोलनका पहला प्रस्ताव रखा था। अि हीम जौन डाल्टन थे—मचेस्टरके ही जिहान रसायनशास्त्रमें अणु सिद्धांतकी नींव डाली। बसे ही जोसेफ प्रोस्टले थे शिक्षक दार्शनिक और व्यवहारिक वैज्ञानिक जिनका घर बरगिधमके चक्को माननवाग और राजाके भक्तान असलिअ जला दिया था और वज्ञानिक अपकरणको असलिअ तो फो दिया था क्योंकि अक चेतन विचारकके माने अि होन प्रासीसी क्रातिके समयन किया था।

जिन व्यक्तिगण जिनका जम नय औद्योगिक के श्राव अ दर हुआ था अपनी आँख सदा मविष्यपर रखी। य अपन समयके सब अन विचारोसे केवल महमत या अवगत ही नहीं थे वरन अन्तम भाग लेनवाले थे अि हे हम आजकी भाषामें क्रातिकारी कह सकते ह। अुहीन फ्रासीसी क्रातिका खुले हाथों स्वागत किया। अुहीन सब विचारो और खोजकी स्वतंत्रताके लिअ सघर्ष किया और असका सदा विरोध किया कि परपरागत विचारोंको बिना सवाल किय ही स्वीकृत कर लिया जाअ। असलिअ अिगम बोअी गक नहीं रह जाना है कि शासक बग अिन मस्थाओसे और अिन मस्थाआको चठानवाले व्यक्तिगणो बपुव्य हो गया। बकन टैकनी कालकके अन्तरनाक घोषित कर दिया क्योंकि अस कालके विद्यार्थिगण टोमपेन जस क्रातिकारोको अपन कालेजम सम्मानके साथ भोजन करवाया था और अपन लिअ स्वयं मोचनके अधिकारका खुले-आम प्रतिपादन किया था।

अिमी प्रकार स्वाटलेडमें नी उनवादी और बुदागवादी शिक्षाकी परंपराओं कायम हुआ। स्वाटलेडके शान्तिनिक स्कूल और चिम्बिन्साके स्कूल अपने जमानेमें बड़े मशहूर हुए जो पीछे जाकर आजकी स्कौटिंग यूनिवर्सिटीके बड़े-बड़े विभाग बन गये। यदि आप इस जमानेके बुदारवादी ब्रिटिश नमाजमें शिक्षाकी ओर देखें तो आपको पना चलेगा कि ब्रिटिश शिक्षा शान्ती लीग स्कौटिंग विरवविद्यालयोंको, जर्मिग्वानें जैफरसन द्वारा मोले वर्जीनियाके नये विरवविद्यालयकी ओर बर्लिन और बौनके महान जर्मन विरवविद्यालयोंको जो १८१३ के बाद जर्मन जनताके मधुपर्क फलम्बन्धन स्थापित हुए थे, अपने सामने रखकर देखा करते थे। कहना न होगा कि अपना लन्दनका यूनिवर्सिटी कालेज १८२८ में स्थापित करने समय उनके सामने जुक्त सम्पाओं ही थीं, जो अपनी कहानी आप कहती हैं।

लन्दनके यूनिवर्सिटी कालेजका मन्थान बोओ आमान काम नहीं था। जिनके छिन्ने सम्पापकोंकी काफी राजनीतिक जटोवहद करनी पटी। जुसका परिणाम यह हुआ कि १८३२ के शिक्षा नुसार विनियमके पारित हुआे बिना अिने रीजल चार्टर नहीं मिल पाया। ब्रिटेनमें सामाजिक प्रगतिके प्रयोजन रूपमें यूनिवर्सिटी कालेज, लन्दनका बहुत बड़ा स्थान रहा है। यहाँपर ही पहली दफे अेक कालेजमें कला, विज्ञान, शिल्प, प्रोद्योग आदिकी शिक्षा बिना धार्मिक आघारके ही जाने लगी। ब्रिटेनके अतिहासमें पहली दफे अेक कालेजमें दर्शनके प्राध्यापकका पद अेक अेसे आदमीकी दिया गया जो कि पादरी नहीं था। अिहीं मत्र कारपोने अिमाने गणितज्ञ डि मोगन, रसायनज्ञ विलियमसन, साहित्यिक मंगन, कवि मिल्टन, समाजशास्त्री क्लेयम, स्टुअर्ट मिल और जोर्डे ओटकी मानसिक विश्राम पानेका अवसर दिया। ब्रिटेनकी शासक श्रेणियोंकी घोर टांरी विचारधारापर यह बुदागवादी हमारा अिमी बगैरने महान प्राध्यापकोंके कारण संभव हो सका।

लन्दनके यूनिवर्सिटी कालेजमें शिक्षा यहापर अुर्न्मन्वी मदीके अुनगर्द्धमें ब्रिटेनके नयेपर बड़े औद्योगिक केन्द्रोंमें नये-नये विरवविद्यालय स्थापित किये

गये। अिनके प्राध्यापक अेक बदम जोर बागे दटे। अिनमेंसे बहुतांसे नमाजवादी आन्दोलनके साथ जानेही देखा। प्रोफेसर वांजली काले मार्क्सेके शोम्ब थे। मैकेस्टर विरवविद्यालयके मशहूर प्रोफेसर गार्डेनर, जिन्होंने अेरेन्सको रसायन-शास्त्र पढाया था, स्वयं अेम् बड़े प्रगतिवादी विचारक थे। मार्क्सेकी मृत्युके बाद जेरेन्सनने कहा था ' मार्क्सेके बाद नि सदेह शील्डनर ही यूरोपीय सोशलिस्ट पार्टीमें सबसे प्रमुख व्यक्ति हैं। मैंने जब आजमे बीस साल पहले अुन्हें जाना था तो वे पहल्ले ही कम्युनिस्ट हो चुके थे ' कहना न होगा कि आज ब्रिटेनके विरवविद्यालयोंमें अेक नहीं बरन कजो गार्डेनर नोजूद हैं। प्रोफेसर जे टी. बर्नॉल, प्रोफेसर हाजीमन लेवी, डाक्टर मोरिस बेंब, प्रोफेसर जे बी बेन. हान्डेन आदि महान विचारक शील्डनरकी सुन्दर और स्वस्थ परम्पराके ही अनुगामी हैं। आजके ब्रिटेनमें जो मानवृत्तिक प्रगतिकी अविच्छिन्नता नजर आती है, जो सामाजिक बुद्बोध दिग्दर्शनी देता है, अुनका अधिकतर श्रेय अुक्त धेनोके ब्रिटिश अध्यापकोंकी ही है, जिन्होंने अपनी पदकी सुरक्षापर अुतरा नोड लेनग नी, शासक धेनोके बर कृके भी, श्रमिक जनतामें नये ज्ञानकी जग्य अगाने रचनेका पूरा जोर भरवक प्रयत्न किया।

विछले बीस सालोंमें जो ब्रिटेनमें शास्य सामाजिक-वाग्नि हुआ है अुमने ब्रिटेनकी श्रमिक धेनोके बेटे-बेटियोंको विरवविद्यालयोंके दरवाजे खटपटानेकी ओर मकेत किया। और आज अुनके अन्दर भी ज्ञानकी गिराना जेव मानवृत्तिक अुसादानोंको भोगनेकी नोड अिच्छा पायी जाती है। ब्रिटेनकी मजदूर मरगारने युद्धोत्तर कालमें यहाँके विद्यालयोंका और विद्यालयी शिक्षाका पुन सघटन किया है, अिनके अनुसार गरीब धरोंके भी प्रतिभागीय नोडकानोंको विरवविद्यालयोंमें जानेका मौका मिल सका है, और फिर बड़ी-बड़ी ट्रेड यूनियनोंने अपने सदस्योंके बेटे-बेटियोंके लिये भी कुछ विशेष छात्रवृत्तियोंका अिच्छजान किया है। अुनके साथ विच्छे दस सालोंमें रासन के अनेकाडे प्रोद्योगिक और अणुमूलक स्कूल और वाग्जोकी अजग्यापित बुद्धि भी यहा हुआ है, अिनमें लाको कमकर अरुचित धरने

फुरतके समय विशिष्ट गिन्याओके लिअ आन जाते ह । घसे ही कभी बी बड़ी सस्वाअ बनी ह जम बकस अजूबेक्षणल असोसियेशन' जिनका काम औद्योगिक केन्द्रोम समाजगमन राजनीति अरु शासन प्रोद्योग आदि विषयोपर बन् बने विगपनो द्वारा भावणो और कोसोका आयोजन करना है । अिनम भी श्रमिअ जनता बड अु साहके साथ भाग लनी है ।

अिन मबके सश्रेपन अरु असो स्थिति मदा कर दी है जिससे यहाँकी वृजआ श्रमिणी काकी भयभीत होती जाती ह । वे पान और मस्कृतिक प्रसारके अिन माओका कम करना चाओी ह । टोरी सरकारन और अधिकतर टोरी नीतियाओ प्रणाओी रूपम कमकर जन ताकी अिन नयी यामतापर हमण करना गन कर दिया है । सरकारकी आरस गिन्यापर विदा जानवाला सच कम किया जा रहा है । नय स्कूलाओ निमाण ग्यभग टप है । हरसाल नय नय विद्यार्थी स्कूलाओ आन जाते ह परंतु अुनक लिअ नय स्थान नहीं जिस लिअ जिस श्रमीम चालीमको जगह मिलनी चाहिय असम पचाम शिक्षणार्थी बडभय जाते ह । कहना न हांगा कि ब्रिटनकी प्रगतिगीन विचारधाराआन अिस प्रवृत्तिओ जमकर विराओ किया है ।

जाम जनताम पानके अिस प्रगतरन और मस्कृतिके अिम विस्तारन अुनका पुरानी और दकि यानूमी विचारधाराओ छोटकर स्वस्थ और जनवादी तफवादी विचारधाराओकी ओर पुरस्सर किया ह । यहाँपर भी टोरी विरोध बहुत पक्का है । आज यह सबविन्ति है कि पजीवादक गड अमरिकाम कवन राज नीतिम ही नहीं बरु विज्ञानाम भी प्रतिप्रियादानी विचारधाराओ बोडबाला है । ब्रिटिण टोरी समाजका अुद्दय यह है कि पूजीवाओ व्यवस्थाको वचानम अुन विचारधाराओका खुल आम अुपयोग होना चाहिय ।

अिमिअ आज ब्रिटनके विश्वविद्यालयोम प्रनोका गिकार' प्रारभ हा गया है । प्रगतिगील विचारधारा रचनवाल गओकी नियुक्ति भुक्तिवलम ही होती है । क्योंकि आज भी विश्वविद्यालयाकी गामिका मस्वाओम टोरी विचारधाराके लोकोका गडों ओर नरके तितार गान्योका ही बोडबाला है । वे ही नय प्राध्यापक चुना कर ह । परंतु ब्रिटनमें प्रताका शिकार' जग लिप टुकर हाता है । खुल आम नहा जसा आज अमरिकाम देणनको मिठता है ।

अिमन भी विश्वविद्यालयोम अरु सधपकी स्थिति पन कर दी है जिसके अन्साओ अन्म बटलोके लिअ राजनीतिक विचारधाराओकी परख अनावश्यक करार दी जान गयी है । केवल बोध्यताके हा आदारपर नियुक्तिका नारा आज ब्रिटनके मत्र विश्वविद्यालयोम गज रहा है । क्योंकि यन मन्प भी विचारकी स्वन नताका धोजकी स्वत व्रताना मधप है जिमक सहारे पन निक गोध व यपर गापनीयताका पनी न गालनकी पात कही जानी है । कहना न होगा कि आजके प्रगति गील प्राध्यापकगण ही अिस आदोन्नका नतत्व भी कर रहा ह । और वे जानते ह कि अह यदि अपन मधपय किमीस महयाग मिनेगा तो श्रमिक श्रमीमे ही जोकि स्वय टोरी नीतिपाके विरुड है ।

अिस तरह हम देखते ह कि आजके ब्रिटिण विश्वविद्यालय ओर अिसके महान गिनपाशास्त्रो अपनी स्वर्णिम परम्पराओके अन्कूल ही ब्रिटिण मस्कृतिकी स्वपओ और अमके गिन्यामम असो तरह दसचिन्त ह अमे अने पुरषा १८ वी और १९ वी नदीम थ । यह अम स्वास्थ्यकी निश ना है जिमन सहारे ब्रिटनके आग आज भी प्रुट [बहन] का विगपण गगाया जाता है और म नमजता हू कि मही तरोकेसे गगाया जाता है ।



अकताका अंत

श्री शाण्डिल्यन्

“बदमास और बहादुरमें कौनसा फरक है? दोनों दूसराको मारते-पीटते ही तो हैं न?”

वैद्यलिंगमजी पिल्लैन् ‘बड़ी हवली’ के मालिकसे जो छोटे मालिक’ के नामसे मगहूर था, सवाल किया। गावोंमें नित्य प्रति होनवाली चर्चाआमसे यह भी अक है।

यहापर जिस बातका स्पष्टीकरण जरूरी है कि छोटे मालिक सचमुच छोटे मालिक या बच्चे नहीं थे। अनेकी अन्न लगभग छियालीस सार्की होगी। वे अनदानपुरमके सबसे बड़े रकीस थे। यही कारण है कि अन्नका घर भी ‘बड़ी हवली’ के नामसे पुकारा जाता था।

अनदानपुरमकी अन्न बड़ी हवलीके मालिक अर्थात् ‘छोटे मालिक’ के पिता जब तक जीवित था, नव तक अन्नक मुय्य मुन्दरेण ‘छोटे मालिक’ के नामसे पुकारे जाते थे। अतः बड़े मालिककी मृत्युके बाद भी अन्नका वही ‘छोटे मालिक’ नाम स्थायी हो गया। केवल वैद्यलिंगम पिल्लैन्जीके लिअ ही नहीं, वरन् मारे गाववागैके लिअ भी वे ‘छोटे मालिक’ ही बन गये थे।

वैद्यलिंगम पिल्लैन् जब कभी बड़ी हवलीके बड़े मालिकसे मिलन जान, तब यही प्रश्न किया करते थे कि ‘छोटे मालिक’ बरम-कुगल-न तो हैं न? अब वही छोटे मालिक मुन्दरेण बड़े हो गये और मुन्दरेण अय्यरके नामसे हस्ताक्षर भी करने लग गये, फिर भी ‘छोटे मालिक’ की अपाधि अन्नसे अमी चिपट गयी कि निकाल नहीं निकलती। हालाँकि छात्रके अक छोटा पैदा होकर अन्न छात्रके भी बहू भा आ गयी, फिर अय्यर अन्न गाववालाकी दृष्टिके आग माहण्डकी तरह नियन्त्रितर ‘छात्र मालिक’ ही बन रहे। गावकी दही दूध बचनवागै ग्वालिन भी ‘छोटे मालिक’ ही कहा करती थी।

वैद्यलिंगमजी पिल्लैन्के सवालका जवाब छोटे मालिक नरत नहीं दे पाय। अतः, आराम कुर्सीपर पड़े ही पड़े अन्नान अक बरबट बदली और पूछा, क्या पिल्लैन्जी ‘आपका अन्नमें अंना क्या सदेह हो गया?’ फिर निकटवर्ती पानानको हाथमें ठुठा लिया और दो चार पान निकाले तथा अन्नमें चूना लगा अन्नकी नम निकालकर घड़ी की और मुहमें दबा लिया। यह किन्नी बातका अन्तर देते न वन पड़ा तो अय्यर अंसी ही कोभी तरकीब निकाल लेन कि जवाब देनेके पिछ छत्र जाय। जिस प्रकार चूनी साधनके लिअ स्वयं अन्नपर दफा १४४ जारी करनेसे अय्यरका ख्याल था कि पिल्लैन्जीको हृमन घोखा दे दिया और अन्नर देनेसे हृम नाक-साफ बच गय। हँ, अँछ अवसरो पर व सचमुच छोटे अर्थात् बच्चे ही बन जाते थे और जवान नहा खोलते थे। अगर मजबूर होकर किसी हालतमें बोलना भी पड़े तो अंसी नातकी बोली बोचते कि मुन्ननवाल्की समयमें कुछ न जाता। अने मौहापर अन्नका साम्बूल चवण सच्चा मददार साबित होता।

अय्यरका तो वैद्यलिंगम पिल्लैन्के बचपनसे जानन था। क्या जिस हालतमें व आसानान अन्न वानामें पडकर घोवा कंन था सन्ने थे? पिल्लैन्जी फिर भी अन्ना बातपर अड रह और पूछा ‘छोटे मालिक’ मरे सवालका जवाब दिय बिना आप पन्न खानमें गय गय। यह क्या?

छोटे मालिकन अपन होठामें आधा हँसा लाकर जिस प्रकार दवाया मानों अन्नक मवाल्का तो अन्नर मौजूद है परन्तु मुहके अन्दर पानकी पीक अडचन डाल रही है। फिर हू करत हूअ कुर्सीपरन बूड और बाहरा बँडकी अक ओर जाकर मुहका पीक पूकी और अदरकी ओर मुह करके आवाज लगाया, ‘अजी, मुन्नमी तो ही!’ जरा अक लोग पानी लगना बुल्ला कर ल।

वर्षाणम पि उन्नानो यद् समझन देर न ल्या
 पि अय्यर अपनरा जवाव दनस पि छानवे लिअ
 अिम भुपायका प्रयोग कर रह ह । अय्यरकी यह दूमरा
 तरनीव थी जर पि उन्नाना मह बर करनम पन्गी
 तरनीव वारगर न हुमी ता रिमो बहान अपनी देनाजाका
 पुनार और गानचानरा गद दूमरा आर मानकी
 चाटा करन ग

अिगपर भी पि उन्नाने अुनका आमानोम नही
 एणा और क्ता छात्र मालिन अद्य ता अत्र अिननी
 वीत गयी मागकिनका क्या नाहक नग करते ह ?
 पागण ॐ अिअ बहूतो अुसत मायववाल् गनर गड
 गय ह न ? अुनम कहिय तो व पानी ग द ।

पिअजी जाना र पि अय्यर अना वहुय बात
 नही करग । अत अुहान सावा पि अनका वाताम
 वषन न और पिसे बहान वाताम पया ग ।

अय्यर और पि अिम प्रनार वाताम एग
 पि अय्यरवाचनपन्नाम साठा चउता वहाँ आ पहुचा ।
 अुमका मून दगन ही दाना जरा ठिठके अय्यरका
 मंह अुद्रिगता और चिनाम पक ग गया । ल्पनेन ची
 मायस गूमकी बारा बह रहई थी । ल्पना अपन हाथस
 मायपरकी अुम चाटका दबाव हुअ था । अिमअिअ
 अय्यरका यत् गमपने ने न एमी कि चाट वहाँ ग्या
 है ? ल्पना हाथ ह्पकर चीट लेखनके बाट ही
 अय्यरने गेग ह्पस टिकान आय । अर ग्या निवाम
 ल्कर चीट परम माका घ यवाल् पि ल्पकेका चाट
 बाल वचा गिया । चीट जरा नीच जपर ग गयी हाथी
 ता क्या जाना ?

घोडा देर अम चाटकी गोरोमे देलनपर अय्यरन
 पूछा क्या बन्नाम । मन् क्या बात है ? यह चीट
 कस ल्या ?

अमकर गनानिना हा दूमरा नाम पोगड है । अुम
 दिन यतम नवा अनात्र एग ह और अुमीकी
 पनाकर गाने ह । अर तरहम कहा जाअ ता यह पन्गी
 पोहार Harvest Festival माना जाता है ।

बन्नाम अन्तर गिया बाथी बडी वात न थी
 पिताजा । मन्तर पुजारा न ? अुनका क्या अम्ना
 रनात गध्याने निव न होकर भगवानकी पूजाके हनु जा
 रहा था । तब पि उन्नाना पाना मारिमतु अमम जवर
 दम्ना अगगा करन उगा । म अम रोजन गया तो मरो
 यत् दगा गे गया

किन अना किया ? वद्य णम पि उन्नाने ?
 यत् प्र न अय्यरक महम और किमन ? मारिमतु ?
 यह मनात्र वद्यणम पि उन्नाने अर मय निकड ।

अ रामका मा ल्पका घाव घाकर अदि
 मन्तर क्तापना आगम मकर ग्याटाघावपर अपनी
 पनारा गुलाकर अय्यरन आग गिया और वद्यणम
 पि उन्नाने अिम ग्ताकर अक्कक लेगन ग यत् पिहावाय
 पिहा दूमर घरन ल्पकेन किया हुना ता अमका पन्
 पन्म वधवाकर अय्यरन अमम मग्मन की हाथी कि
 अमकी घमनी अघ गता । अकिन पिअ ता अरसे
 अन्तर वुडके मित्र तथा द्विचिनर य अन्ते प्रति
 अगा यवहार कम कर मकन य अिमअिअ अुनपर
 अक आनय दूदि परन्तर अय्यरन क्ता पिअजी
 अक म आपक मवाल्का जवाव दे सकता ह । वन्नानकी
 वगन ल्पनारनगाता अम्माग है । अपनी जानपर पर
 वन्नान भी रनवा करनवाग बन्नार है । जाअकड
 हमारे गविम प्रथम अणोअ गुणाकी मग्ना गिया अिन
 बढनी जा रही है ।

अिनता कहकर अय्यर जयत पुनोम अन्तर
 चर गय । अय्यरका घ वषन रक्क अुनर गवि या
 अय गवाक डूरी विपर । नहा अिन मार भारतके
 गियम सय प्रमाणित । मकता है ।

बनी हवडास मीनी अुनरने हुअ वद्यणम
 पि उन्न अपन गविपर अक बार दिल् दीगया अुनका
 आवाकी दाना वाराम दा बूल् अीसू छत्रटाग आय ।
 ओह ! कितना अठ्ठा गीव वा और जाअकमी दगाका

अदि मन्तर अक तरहना पीया है अिमके पन्
 गामन बाग ही विअन और पने घावपर मरहमका
 वाव करते ह ।

प्राप्त हो रहा है ।" यह विचार जातेही अन्नको नाकने अंक गरम निरवधान निकल पडी ।

मचमुच अन्नदानपुरम् बहुत बड़ा सुन्दर गांव था । प्रकृति माताने वहाँ खुले हाथो अपना सोदर्य-भण्डार बितेर रखा था । गांवके पूरवमें अंक बड़ा तालाब था, जिसके चारो किनारोपर केतकी केवडेके पेड लगे थे । तालाबके किनारे भिवजीका अंक मन्दिर था । पश्चिमकी दिसामें, कुमुदके पत्तो और फूलोंके ढका अंक तालाब था । अन्नके तटपर भगवान विष्णुका मन्दिर और अन्नमें ग्रामदेवता पिठारीका मन्दिर था । दक्षिणके अंक कोनेमें 'मारि अम्नन' आर्षात 'महामाया का मन्दिर था । गांवके चारो तरफ हरे लहलहाते खेत थे । बरमानके दिनोमें गांव अंमा नजर आता था कि जैसे कोश्री ग्रामवाला हरे रंगकी मखमली चादर आटे मुक्की मोठी नींद ले रही हो । कानिक्की खेती अन्न ग्रामवालाको सुन्दर मुतहरी साडी पहना देती । पीपके शुरु होनेके पहलूही खेतके चारो तरफ फनलके ढेर लग जाते । अन्न समय अंमा मालूम होना कि मार्गशीर्षकी ठिठुरती मरसि बचनेके लिअे, वह ग्रामवाला, शोटी चादरको अडा, अंक और फक्कर अन्नराजके नूपके गले लग गयी ताकि धूप लेकर सर्दीकी भगा दे । अन्न मंगलमय कार्यके शुभा-गमनका स्वागत करने हुअे ग्रामवासी मयं पालमे शर्करान्न बनाकर सूर्य भगवानको चढाने, दावने अडाते और आनन्दमगल मनाने । आनन्दोत्सवके अुपलक्ष्यमें बडी धूमधामने मन्दिरोंमें अन्नपेक-आराधना की जाती । किनातके माघी गाढ-बैल भी अन्न आनन्दमें शरीक होने और अपने गलेकी कलकडी घटियोंके कल-कल निनादने आकाशको भी गुआ देने । कहनेका मतलब कि 'पोगल'के त्योहारके दिनोमें गांवोमें हंसो-बुगोआ अंमा दौर चल पड़ता कि कुछ न पूछो !

अंमे आनन्दमय पोगल-त्योहार बहुत दूर होने हुअे भी गांव, अरनी मुग्नी भगा देने और अगडाभी लेकर अड बंठने तथा बडी मुम्तदीअेव चुन्नीके साथ आनेवाले पोगलका त्योहारका स्वागत करनेके लिअे तैयार हो जाते । गावोमें मन्नीका अंमा आत्म छा आना कि बडे जोर और शोरसे खेनोंमें फनल बाटना शुरु हो जाता

और खिल्लानोमें अनाजके ढेर लगने लग जाते । यह देखो, कामन अंमे धूल-धूमरत हृषक ही देखनेको मिलने । गांवके ननी मन्दिर साक जिन्हे जाते और मन्दिरोंकी दीवारें चूनेसे सज्जे की जाती ।

सब प्रकारके जमिपेकके मानान और खर्चेके लिअे रुपये बडी हवेली' हीने सब मन्दिरोंकी भजे जाते । "बडी हवेली"के मालिक जातिके अम्नर है—अन्न कारपने विष्णुका मन्दिर या पिठारीका मन्दिर अपना मारियम्ननका मन्दिर किसी मुविशामें अंक रनीनी बचित नहीं रहता । अन्नपक और अन्नसब सबधो सारा प्रदन्न बँचालगम पिल्लेजीके देख-रेख हीं में होता । अम्नर या पिल्लेके मनमें बनी यह नेद भावना नहीं अुठी जि हन जातिके अम्नर है या पिल्ले ।

अम्नर अपने आचार-व्यवहारके विषयमें चिन्तने बट्टर थे कि पिल्लेजीके साथ नामने बैठकर भोजन नहीं करते और दृष्टि-दोषने बचते । पिल्लेजी भी पित बातको बुरा नहीं मानते तथा अपने मनमें अन्न दानके लिअे जगह भी न देते कि हमारे साथ अन्न प्रकारका व्यवहार बनी विचा आना ।

आहार-व्यवहारकी छोड अन्य सभी कार्योंमें पिल्लेजी अम्नरके अने धरके और अम्नर पिल्लेके धरके आदमी थे । पिल्लेजीके घरमें किमीकी आर बरा भी तकीपत खराब हाती, अम्नर सहायताके लिअे दीड पडने । अनी प्रकार अम्नरके घरमें कुछ हो जाता तो पिल्लेजी तबतक खेतकी नांन न लेते जबतक अम्नर अुसने पूपरूपसे छुटकारा न पा जावे । यद्यपि अम्नर और पिल्लेमें अन्न बढर अूपरी नेदभाव था कि अम्नर पिल्लेका छुआ हीं नहीं, देखा भी नहीं खाने थे और अन्नके सशोमें छुआछून अनुभव करने फिर भी अन्न दोनोमें अितना विगुड प्रेन था कि किनी भी प्रकारकी विषमताका विष न पडने पाता था । कहनेका मतलब कि दोनो दो शरीर अंक प्राण थे ।

लेकिन आजकल हम देखते क्या है कि वर्तमान पीडी बदल रहा है । पुराने जमानेके विषरीत जाज अूपरी अंकता बड गयी है और अन्दरकी अंकता घट गयी है । जिमे देखो, अमीने चोटीने बाल कटवा टाले है,

और मित्रक-हीन सुख मध्यवर्ती ही गन्धवाकी नितान्त माने हूँ है, जैसे-जैसे यह बाहरी श्रेयता बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे भीतरी श्रेयमय विभिन्नता भी बढ़ती जा रही है।

यही हाथ अग्रदानपुरुषका भी हाथ। किसीकी सम्प्रति न आया कि आपसका यह जगसा और मनमुटाव क्या? 'योग श्रिय दुविधामें पर गये कि क्या करे, क्या न करे?' का प्रसवालोने जटा पट्टाकर मन्त्रों की नौ विषयों 'योगो नो कुटुंबलवान् शक्तिमोको अपनी तरफ करने लगे-चौटे भाषण दिखवाये। 'जिहा बन्धुता और तर्ही उदारगोने गाँवके मुत्तियों और पटवारियोंका सहयोग प्राप्त किया और भिन्न-भिन्न प्रकारके प्रकारके चित्तपट दिखाने गाँवकी जनताको अपनी सरकारकी और आहूट करनेका भरपूर प्रयत्न किया। श्रिय प्रकारके विभिन्न मनोनि चतुर्दश पडकर जनता चित्तव्यथामुद्र हो गयी तथा अपनी बुद्धिके अनुसार दण्ड वाँचकर जगहे-फिसाद और हाथापाशीपर खुला हो गयी। प्राचीन जोड़विक प्रेम-पुत्र तथा गाँवकी मान-मर्दाना आदि श्रेय-श्रेय करके गाँवके धर्ममय होने लगे और अन्तके स्थानपर बदमागी तथा गुन्धानोने अपना आसन जमाया।

मारिमुत्त और उदरगमेके मनमुटाव और हाथा-पाशीकी गहराशीमें जुरकर देगा जाहे ता स्पष्टतया विदित होगा कि अकल भावनाका अन्त्य प्राप्त था। लेकिन अन्तमें अन्त आदर्शपर चतुर्दशके चतुर्दशम पिन्डोके मनमें श्रिय विषयने बरी गहरी चोट पहुँचा दी। अग्र पानेकी आशासे आनेवाले सभी लोकोको जा अन्न दान-पुरम अन्न बाँटनेमें कोशी बनकर अटान रखना था, वही दण्डकी और गुटरदीके दण्डमें फँसकर, कच-शरियोंके आश्रयमें जा, पानीकी तरहूँ में बहाए और जगके दानके दिशे दूरदोका मूँहाज बन जाये तो क्या ही?— यह विचार बर्धांगम् पिन्डोके मनको दोमर्की तरहूँ माने लगा। आज 'वही श्रेय'के श्रिय छोटेमें फिसारमें श्रेयमन्त्री पिन्डोको अच्छे लक्षण नहीं दिवायी दिये थे। वे भिन्न-भिन्न प्रकारके विचारामें

दुबने-अनुपाने और लवी-लवी ब्रूमि लेने हूँ अपने घरकी ओर चले।

+ + +

गुम्मेसे भरे हूँ कुट्टिमें अन्दर गये तो छोटे माणिक देखने ह कि बरगम जाँगनमें वंटा अपना धाव 'नो रहा है। अन्तोंने अग्रमे पाव जाकर बड़े प्यारमे गर्दामें पूछा, 'बरोँ गामु, चोट ग्यादा नो नहीं लगी?'

बरगम अन्तर देखके उल्लेख मूँह चोट-श्रियने पहुँचे, अन्तरकी मद्दामिगी, जो अन्तने वेदोको पात्र पानेम पानी अद्देउर मदद कर रहे थे, बोले अट्टी, 'म पूछती हूँ कि अग्र दुष्ट लटकेको जिनका माहम कहीम था गया? श्रिय विषयमें आपने पिन्डोको पूछा?'

'जब पात्रा जिनका दुष्ट है, तो पिन्डोको बंधारे क्या करने?'—अन्तर पिन्डोका पक्ष लिया।

अन्तकी पन्नीन अग्रका कोशी जवाब न दिया और मौन धारण कर लिया।

"चोट नो ग्यादा नहीं लगी। वह जाने गगा तो श्रेय कबल अट्टाकर फेंक दिया, नहीं नो चोट भी न लगी।"—बरगमने अपने पिन्डोको समझाया।

अग्रपर अन्तर बिना मुवाक जिने, मीठी चटकर अग्र चले गये। जब बरगम अपना हाथ-मूँह तथा पाव धो चुका तो अग्रकी माजाने अदिमन्तारे' का पला चिरागपर मंत्रा और चोटपर लगा दिया। चोटोही देगमें सृजना बहना बन्द हो गया।

अगर यही चोट मद्दरमें किमोके लगी होनी तो चार-पाँच बार लाकटर आने, पगटोकी भाँति गिरपर मरहूम पट्टोका 'बाँटेज' वाँचने, दो चार 'बैंटो टिटानीम' जिन्जेकान देने और श्रेय बडा-भा विड वनाकर भेज देने और श्रिय हाथ द, अग्र हान के, का नीचिमे श्रेय अच्छी खाना रकम अँट लेने। पर यही गाँवमें ना जिनका अिजाज जिनकी आधानोमे हो गया कि जेवमे श्रेय पैसा जिबाउनेकी भी जगहन न पटी।

बरगम फिर यह कहकर कि आज मुने भूख नहीं है, बाहरी वंटासे मटा जो बघरा था, अग्रमें मोने चला गया।

'अच्छा ! भूस न हों तो जाओ और लेट रहो । मैं अभी दूध गरम करके लाती हूँ ।' यह कहती हुई उसको माँ भी रसोत्रीघरकी तरफ चली गयी ।

बलरामका दिल अब चोट या चोटके दर्दसे हट गया और वहाँ चला गया, जहाँमें 'सन सन सनन' करके चूड़ियोंकी आवाज आ रही थी । वह बूड़ीवाली रसोत्रीघरके द्वारपर धुपलकेमें खड़ी थी । बलरामके दिलके साथ-साथ उसके नेत्र भी अँस ओग लग गये ।

कमरेमें बैठनेके बाद बलरामने अचूच स्वर्ण पुकारा, "कोश्री दरवाजा तो बंद करो !"

बलरामने यद्यपि 'कोश्री' शब्दकाही अस्तिमात्र किया था, फिर भी अमृ चूड़ियालीनें नमस्त लिया कि अमृ 'कोश्री' शब्दका आशय किसे है ? अमृने हसिनीको मन्द चालसे चलकर अमृकी आजाका पालन किया और वैसेही चालसे बापन चली गयी । जब अमृके पैरोंकी नूपुरध्वनि धीरे-धीरे मन्द पड़कर रसोत्रीघरकी तरफने जायी तथा थोड़ी देरमें एक मी गयी तो बलरामने अटकलमे जान लिया कि वह रसोत्रीघरमें चली गयी है और मित्र पकड़कर अक लपि निरवास छोडी ।

+ + +

'बड़ी हवेली' का परिवार अमृना घडा न था । 'बड़े मालिक' के अकलीनें बेटे थे, 'छोटे मालिक' । बड़े लोगोकी जायदाद बँटकर छोटे-छोटे टुकडे न हो जाये-अस कारण, अमृने प्रवृत्तिको नियति बहिये था और कुछ । बलराम 'छोटे मालिक' का अकलीना बेटा था । बड़े मालिक और अमृकी देवीजीकी मृत्यु हो जानेसे, 'छोटे मालिक', अमृकी पत्नी और बलरामको छोड परिवारमें कोश्री चौथा व्यक्ति नहीं था ।

बलरामको अभी-अभी नयी पारी हुई थी । लडकपु संस्कृतका बरतन चटानेके लिये अक हफ्ते पढ़ते हैं के लियेके अनुशासक आ गयी थी । [तमिल-भाषका एक प्रकाशक है कि अमृ प्रकारके तीक्ष्णहारीमें वधु अमृ प्रकाशकें अमृ अनुशासक आ जाये] वधु तो अक-कलके दर्शन मन्दनमे चली थी । लडका चालकेकी अमृ अमृ कहूँ था । पर अमृना बड़ा था कि

नवीन दम्पती आसानीसे लुक्-छिपकर मिलते । अमृनामृ बलरामके मनमें प्रेम-मिलनकी लहरें और विरह-वेदनाकी हूक अक साथ अमृने लगी तो आदर्चय करनेकी बीनतो बात ?

मनुष्योंकी रोक-धाम या विघ्न-बाधाओं यद्यपि अमृ धरमें जधिक न थी तथापि प्राचीन सम्प्रदायमें पनी अमृकी महधर्मिणी जपनी बहूकी आँवोंकी अोट न होने देती थीं । अमृना यह खयाल था कि मुद्गारनामका मूहर्त चार जनोके मध्य, जग धूम-धामके साथ हो तथा बहूके मायकेसे कुछ वर्तन-भाडे और करके-दममें नी मिल जायें । यही कारण था कि देवीजी बेटे और एतोके दोष दीवार बनी रहती ।

कमरेका दरवाजा खुला तो बलरामने देखा कि हमेशाकी तरह माँ अन्दर आ रही है । अमृके मुँहपर वेदनाकी रेखा खिच गयी । वह करे तो क्या करे !

माँ बलरामके पाम आकर बँड गयी जीर बोदी, "अभी दूध गरम नहीं हुआ है । पार्वतीनें कहा है कि दूध गरम कर जाओ ।" यह वाक्य बलरामको अमृ दूधमें भी मोठा लगा जो बादमें जानेवाला था ।

'मोर होते, तो * भोगी' का त्योहार है । आज तुम फिर फोड़कर आये हो ! क्या बहूँ, तुम्हारी बधिकों ।" माँने अमृना अमृना हीकर कहा ।

'क्या किया जाये, माँ ? क्या तुम चाहती हो कि पुजारीजीके घरका लडका मारिमनुके हाथों निटे और मैं चुपचाप हाथ बाँधे खडा देखता रहूँ ? यह सप्तमें नहीं हो सक्ता, माँ !"

'हम लोगोको अमृ प्रकारके लडाओ लगदोमें नहीं पढ़ना चाहिये । आज-कलका जमाना बहुत खराब है । चोट लगी लगी अमृने बचे ! नहीं तो क्या हुआ होता ? त्योहारके दिन तुम विग्नरक पड़े रहते । दुखकी मारी अमृने मैं तुम्हारी मुद्रणा करूँ या

* 'भोगी' वह त्योहार है, जो मरानि दानों पोगलके पढ़के दिन मनाया जाता है । अमृ दिन लेग लेल अमृना मान्य ज्ञाने बरते हैं और मुखाडु मिच्छा बनावर आनन्दमें भोजन बरते हैं ।

त्योहारका काम समाप्त । भगवानको गत गत ध यवा
है कि तुमको बाल पात्र बचा दिया ।

त्योहार-व्योहारकी बात छोणे माँ ! तुमको
मात्र है कि हमार दाम कितन गग अन्के जिनको
तरम रहू ? अगो ह्यात्तम बवल हमी त्योहार मनाअ
तो बसे अच्छा योग ?

अर र ! वम बस ! तू फिर अपना बही पुराना
देगभक्तिका पचना मुनान बठ गया । मुझ नेरी यह
बनवास गवाग नहीं । क्या हमारे घर-द्वार नहीं जनीन
जायगा नहीं ? हम चार जनाने मध्य बमतवकी
बनवास क्या किया कर ? तुम्हारी यह उक्तरवासी
निरी जिन आसन दा दगी ।

हम कब अपना ही काम देख दूसराका जो
द, अिमको क्या अ ठा समझती हो माँ ? बलरामन
माम प्रश्न किया ।

हाँ अच्छा क्या नहीं ? यान रखो तुमन किमोका
हाथ पचना है । अगर मरी बात नहीं मानते तो जाओ
जग जाओ पुगीमे जाओ । म तुम्ह रोक्षतवाकी बीन
होनी हू ? मन गानी करायी मरे सिर धुम ठाँ जाओ ।
त्रिवका फल मुनीनो भोगना है न ? मानि ब्रूकर
बहा ।

अिसी समय पावतीन दाथ हाथम दूबका ठाटा
और बायें हाथम मानीका गटफटा दामन ठीक करते
बमरेके अदर प्रवेग किया ।

कयो पावती ! दूब बहून गरम तो नहीं है ?
सासन सवाठ किया तो बहून अ मतव मिर हिनाया
और दूबका बरतन सामके हाथम दिया ।

अरे ! बहून गरम है जरा और ठगा करो
न ! सासन बहूने दूबम दिया ।

बहून लख हा लख दूबको जरा ठगा करनके लिये
अिस नोटसे अूस लोटम और अम नोटसे अिम लाटम
अुडलना गुरू कर दिया । अिसी समय बाहरमे किसीन
आवाज उगायी मौजी मौजी ! पुकार मुनकर
देवाजी बाहरकी ओर गयी ।

मानि अलान मामनन ओझल होने ही बरामने
बहा वम बस ! और ठगा करनको काशी जन्तर
नहा लाआ अिधर ।

नवबधू गजाम जरा कठिन हुनी । फिर अक
बन्ध आग बडी और दूबका योग पनिकी तरफ बडाया ।
बाहरी बन्धम देवोजी और आदमीम किनी वानपर
गरभागरम बिवाद खडा हुआ और यहाँ कमरके अदर
नवन्धीम प्रमकी जो अतरग बात हुआ वे बाहर
मुनायी नहीं दी ।

दूसरे दिन और अुसके दूसरे पोगलने जिन नव
दपनीकी पनिल्लना और भी बड गयी । मद्रातिके दिन
समरे जब बलरामन घरक अय ओषाकी अौख बचाकर
अपनी पत्नीसे कुछ छान्खानी गुरू की ता अुमन कहा
गी गी । न न मने ता स्नान कर दिया है । छओग
तो सोला विग जाअगा । मानि आज मुझ पोगलकी
हाडी चगनको कहा है ।

असी चेनावनोमे अुसन बररामको यह प्रकट कर
किया कि अिम घरकी भावी मालकिन म हू ।

❀ ❀ ❀

बदल्लिगम पिन्ड अुम जिन अकबनीय दुख और
बडनके साथ घरकी तरफ बड । अन्के निमागमें भिन
भिन प्रकारक विचार आय और गय । छोः मालिक जो
अुनको अपन पनासे भी बकर मानते थ और बिना
अुनकी राय किय कोशी काम न करते थ वे ही अुनपर
गुस्ता अुनारकर अर चर गय तो बदल्लिगमकी पिलके
मनमें दुपका कोशी पारवार न रहा । वे असहनीय
वेन मे तिरुभिया अु । मरी ही गोदीम खेनने
छोः मालिक के महेशे अने ग बमे निकते ? -अिम
वानका दित्रम आना था कि अुनके मन चक्कुके सामने
चित्रपटकी नाओ अनभवजय वे दुश्य अुमर आय जिनमें
अपनी और बडी हवेकी कीवीनपोडियाके अट सम्बध
का दय माफ शलकना था । जबअिस विचार गृपलाकी
बडा दूनी तो बदल्लिगम पिन्ड अपने निन्डो यह
कहकर समवाया कि जब हमारे ही घरका लडका असा
आवारा बना फिरता है, तो दूसरको दोष क्या दिया

विश्वेश्वरके मूढ़ लगने या मुक्तावस्था करनेकी हिम्मत खुगे न पड़ी। विश्वेश्वरके अंगुठे मुफपरसे भात्र पढ़ गिरने यात्राकी दशा देखी, ता ताउ गये कि मारिमत्तुने हृदयमें भी उन्मादावस्था भुंझि अंगुठ रहा है। न जान क्या पट पड़े।

“क्यों वे ! मैंने तुझसे बितनी चार कटा वि गिरने यात्र अितन छत्र न रखा कर। कटवाकर छोटा बाता दे। कुछ सुना ही नहीं ? क्या बात है ?” वैद्य लिगम विरतन पूछा।

वैद्यलिगम विश्वेश्वर जय कभी अिम प्रचार चिद्ध जाती तय मारिमत्तुके घोर विरुत स्वस्वपता धर्मान छेड़ा करने। भारतकी प्राचीन मस्वृति तथा सम्भ्याकी गिमाकी चोटीका कटाकर अिम प्रकार बाल कटवाना अन्ह जरा भी पमन्द न था। बडी ह्वेरी के बलरामने भी जब अिम तरह बाल कटवा लिये तय विषय होकर अुह मारिमत्तुको कपमा करना पडा।

अन दिन सहरके बात्रेजेमे बलराम जब बाल कटवाकर लया जुटा पढ़ने पर आया तो अयपरकी सहधमिणी अुगता यह भेप देखकर आग बपुटा हा गयी और कता “क्यों कटभूँडे ! यह क्या भेप बनाया है, जिन बात्रेजे नेग क्या जिगाटा कि जिनको अिम प्रकार कटवा दिया ?” तय अयपरने बलरामका पक ठेकर कहा कि “माहक कयो जबान चलाती हा ? जब ‘वीर शैव’ * वैद्यलिगम विश्वेश्वर को मारिमत्तुने ही बाल कटवाकर ‘त्राय’ रग लिया, तो तुम्हारा लाडला, जो गन्ध्या-वन्दननन टीक तरह नहीं करना, बाउ कटवा ले तो धर्म कैसे बिगडगा ? अिम प्रकार यदि परलपिच अर्थात् और औरत बदनबाले अुग कोने कृटुवाके बीच बग गिरानेवाला कात्री नाम हो ता वैद्यलिगम विश्वेश्वरको मुहता क्या न आता ?

विश्वेश्वरके अुपरोर पूर्व-पीठिकाक बाद गीधा बात्रमण करना धुल कर दिया, “क्यों भेमा ! मातूम

* ‘वीर शैव’ के है जो गिवशीके भवन हैं और अिने अपने धर्ममें कट्टर हैं कि अुत्तर भी अपने मूढ़मे विष्णुका नाम नहीं ले। वीर दैत्यन भी जिनो प्रकारके है।

होता है कि तुम्हारे हाथ आजकल लने होने जा रहे हैं। क्या यह सब चित्रनबिके पहावे पाठ है ?”

मारिमत्तुको अुनकी बात गमझने देर न लगी। बोला, “मैं पुजारीके घरने लडनेमे बात कर रहा था तो ‘चित्र कुटम्भे’ [छोटा बच्चा] को धीचम पडनेकी क्या जरूरत थी ?”

गायमें बलराम चित्र कुल-देके नामगे प्रमिड था। वही नाम मारिमत्तुने लिया।

‘तुम्हारी हिम्मत जितनी बढ़ गयी ? तुम अिम धर्ममें रहता चाहते हो या कृत्की भीत मरना चाहते हो ? जानते हो, हमारा कुटुब कंता या और कंता हो रहा है ?’

वैद्यलिगम विश्वेश्वर जिन बातना मारिमत्तुने बोली जबाब न दिया, “क्यों, चुप खडे हो ? मातूम होना है कि तुम्हारा दिमाग पाराज होना जा रहा है।’

‘मैं कहता हूँ, बबवास बन्द कीजिये !’ मारिमत्तुने मूढ़मे यह बाय मुनकर विश्वेश्वर हक्के बबने रह गये। अु-हानि स्वप्नमें भी नहीं गोचा था कि मारिमत्तुने मूढ़मे अंगा बाय निबल सक्ता है। वे अयगत कुपी दुःख। भला लडका बिगड रहा है—अिम विचारने अुनका मुग्धा और भी अुमाड दिया। वे बोडे, “क्यों, वे ! भर साधने जंगी यार्ने करने तुने शरम नहीं आती ? ‘बडी ह्वेरी’ का लडना कंता पडता है, मातूम है ? कंता पडता तो दूर रहा, बाने करना बहूँसे भीत गया ?’

यह बहने दुःखे वे अुत्तर लपने और मारिमत्तुके गालपर जोरका भेव तमाचा माउ दिया। मारिमत्तुने तय भी बोली अुत्तर न दिया। अुगको विश्वेश्वरके वदले बलरामपर कोष आया, जिसने पढ़े अुगके हाथी मार गायी थी। मारिमत्तुने गालपर हाथ फेरने दुःखे कहा, “हाँ, हाँ, मुने मातूम है कि यह कंता पडता है और क्या पडता है ? अय मे देरूंगा कि अुगकी पडाकी कंता होनी है ?”

अितना बहकर यह ‘पडापड’ गीठी अुनगता ज-दीगे बही चला गया।

विश्वेश्वरकी पत्नीने द्वाखी ओटये दाँवकर देगा और कहा, “लडका तो खाने आया या। अुनको अिम

तरह खरो-खोटी सुनाकर निकाल दिया। यह आपन क्या कर दिया ?

अतना सुनना था कि पिल्लैन रौद्र-रूप धारण कर लिया और कड़ककर बोले क्या यहाँ नी स्त्री राज चलन ग्या। अदर जानी हो कि भरमभत हो ? तुम्हारा लाडला कहीं जानका नहा, कुत्तकी तरह दुम हिलाकर फिर जा जाग्या।

लेकिन पिल्लैन जो सोचा वह नहीं हुआ। यानी वह भूख कुत्तकी तरह दुम हिलाता नहीं थाया। दो दिनसे पोंगलका त्योहार गावमें बड़ ठाठ बाटसे मनाया जा रहा था। किन्तु पिल्लैजीके घरमें कालाहल था कौनहल नहीं था। अतना घर गोभा-भूय दिखायी दे रहा था। वहाँ त्योहारके कोअे आमार न था।

पिल्लैजी घरसे बाहर ही नहीं निकल। 'बड़ी हवेलीके छोट मालिक न दो बार चादमी नो भज। फिर भी पिल्लैजी टसत मम न हुआ। मारिमन्तुकी याद अतकी हृदय सतानी रही। पिल्लैजीको यानी वानपर पदचालनाप हान ल्या कि हमन अपना भुह नाहक क्या खोला ? वह अँसा चाहे रहे। हमें बूसत क्या ? हम तो जीवनकी सध्यामें पदापण कर चुके ह। पिल्लैजीकी पत्नीकी अँखें लडकके बियोगसे बराबर अँतू बहानी रहा और अपना धोलीमें कह रही थी कि फूल जँने सुतुमार बालकको घरसे भगाकर हम बूड त्योहार क्या मनाव ? दुखददस भरे अपनी पत्नीक मुहको पिल्लैजीसे सीपी अँखें देखन न बन पडा तो वे भी अतकी आँखें छिपा भुह ढाँपकर बाठ आठ अँतू बहान ल।

× × ×

सत्रानि आयी। माफ-मुपरे गाँवकी शोभाकः बढ़ाकर और भी आभोग जगया करनेके लिअ जुतरायन का मूय पूर्व दिगामें आया। अल्लगानपुरम अतु दिन अलौबिक मोदपन मोभावमान था। अतु गाँवमें तीन ही पक्क घर अये य जिनम चूना पाया जा सकता था। अब तो बड़ी हवेली' था दूसरा बडालिगम पिल्लैजीका घर और तीसरा चिन्तुदिका मकान। बाकी समूक घर मिट्टी और पत्तरे ही थ। लेकिन अतकी सजावटमें भी बिना प्रकारका सुटि नहीं थी। जहा-

जहा फग या दीवारकी मिट्टी जुबडा बहेती हा-वती चाली मिट्टी कोपल और गोबर तीनाको मिलाकर, अच्छी तरह पीनकर, घरकी बन्नी दूनी स्त्रियाँ भरमभत कर दता। अँना करनपर फगकी गोभा चितनी बड ताता कि बडपाके बहुमूल्य पापर नी अतक सामन फीक मालूम होत।

घर मिट्टीके वन हान थ और अतकी छत ना देसी खपरलाकी थी। - जिनलिअ व बड आरामनेहू थ। अँसे घरामें न तपती गरमी पडती थी और न ठिठुरता सरदी। घराम कूहा ना कूडा-ककक देखनका न मिलता था। घरकी बड़ी बूडी औरन जब कोपी फाम न रहता तत्र खुदग पा-बुहार दता। अगर कभी अतक यह काम न हो पाता ता अतनी बहुआ और पालियाको आदेगपर आदग देकर करवाकर छोडती।

घरका बड़ी-बूडी स्त्रियाका यह आदन थी कि अपन अवकाशक अवनरातर अपनी पीतो बच्चियाकी 'माककल-से-तरह-तरहकी चीक पूरना मिलाव और राज शाम-सवरे गाँवकी बाधियामें जनन घरक सानन चावकके आत्से चीक पूर। सजाति जने गुन दिनामें अपनी सिखायी चीक बड पमानपर पुरवना।

अनदानपुरमकी बड़ी दूना स्त्रियाँ अतना पाता बच्चियाको आदगपर आदेग द रही था कि चीक पूरो। जब तक चीक पूरो न हो जानी तत्र तक नाका दम करनी। लडकिया नी गुन दिन आया जानकर, ब० हों।

ॐ मावकल' अब असा पापर है जा अमानपर धितनम त्रिडिया तसा बुबला रा पदा करता है। अतक वरतन नी वनन ह। सामार और रमम जती खाय सानधियाँ जनमें बनाश जाता ह। सिन्ना नैदू जनी सट्टा चाजें दूसर वरतनामें पवानन दिाड जाती ह। पर मावकल'के वरतनामें वनानन व चीजें बिाडती नहीं। य वरतन ना मिट्टीक वरतनाहा तरह नाके गिरनपर टूट जानवा ह न ह। टूट वरतनाक अतु टुबडाम घरका बडो-बडा चिन्ता बच्चियाका लकोर सावकर चीक पूरना मिलाता ह।

कौनूहूक साथ द्वारपर द्वारकी चौखटपर नेहलीपर मुदर मुत्त चौक पूर रही था ।

अन्नदानपुरमकी अम मु दरताम चार चौखट लवानक प्रयनम अल्लरायणका मरीचिमागी अपनी मुत्तहरी किरण रमिवा बिखरता हुआ आकाशपर चान लगा । पक्षी-ममह अपन नाना प्रकारक बल्लरबोम गाँवको गजा रहे थ । पंचिमके तालाबम वाक कदने तरत हुआ किआत कर रहे थ । कुम्हकी बगिया लकोकी असि हमालगीको देखकर अपनी पक्षडिया खोल खोलकर हम रही श्री और अनकी हमी-न्वल्म भाग भी ल रही था ।

कवच वर्धागम पिल्लके घरम कोजी कौनूहूक नहा था । यह बात बनी हुवेला के मालिकके कानो तक पहुँची ता के खन् पिल्लजीक घरकी तरफ चल पन् ।

छोटे मालिक जब पराम जता पहन हाथम छडी लिय और कबपर अगाग डाले बाहर चढ पड थ तब किसान यह नही सोचा कि वे पिल्लजीक घरकी तरफ जा रहे हे ।

बडी हवलीके छोटे मात्तिक तो अक प्रकारसे जुम गाँवक छान मोने राजा थ । वे किमीके घर नही जान थ । कोजी काम जा पडा ता गावके योग हा अनके पाम आय । असिअसि छोट मालिक जब वर्धागम पिन्के घरम दाखिल हुआ ता माराका सारा गाव भीचकना हा गया । किसी किमीको ता अपनी आँखापर भी बिश्वास नहा हो रहा था । आमन मामनके ओर अहोम पनेसके लोग बाहर मिर निवालकर देखन लग कि क्या सबमच छोटे मालिक हा आय ह ?

अुम वकन वर्धागम पिन् वाहगी बठकम बठ पान चवा रहे थ । छोटे मालिक को दखते ही पिल्लजी जपना अगोठा कालिम दबाय झटपट अठ बठ ।

पिन्की आप बगिय । सड क्या होने ह ? बठिय न ! कहने हुआ छोटे मालिक अक ओर बठ गय । पिल्लजी बठ नहा मोन खन् रह ।

म तो कह रहा हू कि बठिय । पर आप सड ह ? जब अय्यरन बल्ल आग्रह किया ता पिन्की बठ गय पर जवान नही खोनी ।

अय्यरन वान ममज नी और स्वय अिम प्रकार गन् किया क्या पिन्की ? बादको तो आप अम और आय ही नही ?

अय्यरक बात्का गन्का अथ पिन्की समज नही अमा नहा हो सकता ? अिमलिअ बु हान धारसे जवाब दिया क्या कर ? मनमान तभी ना जा सकता हू ।

असा क्या हा गया कि आपका मन बडा चक्क हा अठा ? हा बत्का अगडा हुआ वह तो अमी दम भल जानकी वान है । अमका लकर हम विराय ठान ल यह हम असोका गोभा नही ला ? छोट मालिक न पूडा

वान तो अब बढन थ गयी छान मालिक ! वह अब छोटी न रही ।

मारिमनुके मववम ही न आप कहन ह ? हाँ वह ता मझ मात्तम है । पर पिन्की अक बात है । वह तो अवोध बच्चा है अनजानम असन कुछ कर दिया ता अमके लिअ आपको ! अतना नूठ मचाना अचिन तथा ? - अय्यरन मारिमनुका पत्र लेकर यह प्र न किया ।

अय्यरक महने निकनी अिम वानन वर्धागम पिल्लके लिलको बनी गानि प्रदान की अिम झणड और फिनान छोटे मालिक का पिन् नहा अिगडा यह जानकर पिन्की मन हा मन बल्ल सनुत्त हुआ फिर भी अिम वानन जनक लिलकी वेदनाक फोडका खरन पिन्का कि पोंगलक अिम पत्रक पिन् घरका अतराधिकारी घरम न । रहा । अुनकी आँस छठठला आया । फिर व लान मालिक की वानाका अनुमोदन करते हथ बात् हाँ म ता दडा हा गया हू न छान मालिक ! अिपत्रिअ कब किमस क्या कहना चाहिय और क्या न कहता चाहिय ? अियरा विवक ही जाता रहा ।

यह मुने हा छान मालिक का भा लिल पिघल गया । वर्धागम पिल्लजीक आँसुन अय्यरक हृत्पका हिल्ल गिया कि अुनकी आँस भी बत्वा आया । फिर भी अुन्होंने लिलम हिम्मत लाकर कहा पिन्की ! अिमके

लिख आप रज न कीजिय । आपका ओग हमारा कुटुब क्या अलग अलग या दो श है ? आपका दुख हमारा दुख है । आपका दुख मुझसे देखा नहीं जाता । चिंता त्यागिय । मारिमुलुको बुला गनवा मैंन बंदोबस्त कर दिया है । परलमन सब अस्वप्नको भी खबर द दी है । मारिमुलु आ जाअगा जरूर आ जाअगा जरूर आ जाअगा । जहाँ नी हा भुस यहाँ लाकर खडा कर देंग । आप दुख कर और हमारे परम दूष युफन— * यह कही हो सकता है ।'

अधरन मुहस निकले अिन चाकपोकी मत्पता वादको घटी घटनाओन प्रमाणिन कर दिया । अधरन और पिल्ल दोना बात करन हुआ वहासे चले और बनी हुवेली की ओर आप नो देखने क्या ह कि पुलिसवे दरगा वरामको गिरफ्तार कर हथकडा पहना रह ह और मारिमुलु कुछ किताब हाथम लिय जरा हत्कर खडा है । अधरनकी घमपनी, पताहू दानो घाँ मारकर रो रहा ह ।

यह दृश्य देखा तो दानोका जीलाक सामन अधरा छा गया । बंदागिम पिल्लजी ता अंम पत्थर बन खडे हो गय कि बागो तो खून नहा । अधरन अपनको किमी तरह सभाल लिया और जरा हिम्मतके साथ दरोगाका तरफ बत्कर सवाल किया क्या, दरोगा माहब ! माजरा क्या है ? फिर अहान बलरामकी तरफ आखें फरा ता देखा कि बलरामक चहुरपर कवल बुदासा छापी है और डरका लेग भी नहीं ।

छोट मालिक ! आपको मालूम हो या न हो मरकारन यह घोषिन किया है कि कुछ असी किताबें

० पागल टोन्गके दिन सबन पहल तामिल-गृहस्पक परसे चूटार दूषका हीठा हा चपायी जानी है और दूष भुवनकर अूपर आन सब गरम करन ह । दूषका भुपनना गुन गकुन माना जाता है । लग आपमसे पागलक तिन मिलन जुलन ह ता आपमसे कुगल प्रदन जिनी सवालसे कान ह कि क्या आपक परसे दूर भुपना ? अिससे स्पष्ट है कि पागलक दिनक महु अरर अदर घन घायम गपुन हा जाना है और अुमी गुगामे यह जानदो सब मनाया जाता है ।

ह जिह अपन पास रचना बडा भारी जुन है । असी कुछ किताबें आपके लडकेके पास मिली । अिसलिख अुहें गिरफ्तार किया है । दरोगान अपन वापका कारण स्पष्ट करते हुए बहा ।

अधरन अपन मनकी पीडा और भीतिको अदर ही अदर दधान हुआ मारिमुलुके हायाकी किताबें देखी । अक बार देहरीकी आडमें गवडी अपनी पनाहकी भी देवा । अूनवो लगा कि बुद्धि चकरान लगी है और अपनी आखें अुस ओरन फर गी । फिर दरोगाकी तरफ मुडकर अुहोना पृछा क्या दरोगा माहब ! जाब अक दिनके लिख लडकेका बाहर छाड रखनवा कोअी माग नहा ?

'मालिक ? आप तो सब जानते है ? क्या आपको नी कुछ कहना पन्गा ? अिस विषयमें जाप जानन है कि मरा काजी बस नहा । आर मरे वपकी बान होती तो आपका खातिर अुसे अवश्य करता । मारिमुलुन अगर यह पता न दिया होता ता क्या मून स्वन्नमें भी यह ख्याल हाता कि आपके घरमें असी किताबें भी हो सकती ह ? मरी क्या मजाल कि अंमा विचार मनमें गता ।'—दरोगान अपनी विवगता दर्शायो ।

अुमी ममय बर्छालगम पिल्लजीके जामें जी आया हीग हवाम ठिकान हुआ । अूनक दुपका काअी पागवार न रहा । अुनके हाथपर ही नहा सारा गरीर दुख और ओषके भावावगमें असे कांप अुगा मानो आँधमें केलके पन्ने हा । अुनक हाठ फडक अुठ । ओगस कांपत स्वरमें अपना पूरा वल लगाकर व गरज अुठ, पाजी ! पापी ! कुट ! आखिर तुम्हा अिनका कारण बना । अितना कहनक बाद वे मारिमुलुका अंमा पूरन ला जंन अुम कच्चा ही चवा जाअग ।

मारिमुलुक अिन कथनक अय, कि हाँ, हाँ ! मून मागूम है कि वह कसा पडना है और क्या पन्ता है ? जब म दखूगा कि अुसकी बह पडाओ कस होती है ? स्पष्ट रूपम पिल्लजीके सामन आ गया ।

बलरामन अपन पिताको दिलासादिया रिताओी वाप क्या अियकी चिन्ता करन ह ? दगाकी खातिर चिन्ता छाड दाजिय । जय मन दग-भवाका वन ठाना

या तप मली भाति जानकर हा टाना था कि यह सब जिम वायम अवश्यम्भावी है। और जरा गौर करके देखा जाय तो हमारा यह देग ही अब प्रकारका कंद खाना है। यहाँ तो यह नये बोल सक्ते वह नहीं बोल सक्ते। जिम देगमें अिनत कड कानून हं वहाँ कौडी घरमें रह या जलमें दोना बराबर ह।

जितना सुनना था कि अय्यरकी घमपना अघत दुपमे आहत हा गयी और आशोमें आँसू बरकर भराय स्वरमें बोला क्या बटा ! तुम्हारी दुद्धि फिर गयी क्या जो ग्रीमी यात महम निवालय हो ? पिताजीके सामन भा ता तुमन अपनी ँक्करवाजा गुण कर दी ? त्योहारके गुम दिन अँमा हो गया—जिस विचारम हमारा हृदय टुडड-क्क होना जा रहा है। अँसी अवस्थामें भी तुम अपनी मनक नहीं छोडने। क्या यह सुह्द सोभा देता है ?

बलराम देला कि अुसकी पत्नी भी माँके पीठ मुह् डीपकर विरख विलय रोन गयी तो अुमन दारोनास कया अिस्येक्टर माह्व। पाच मिनटकी मोहूलन दोजिय जिससे म जिम लोगोको समझा-बुझाकर जा जायूँ।

अिम प्रायनको अिनकार कर देनका साह्य अिस्येक्टरका न हुआ। कयोकि वे जानते थ कि अुस हलनेमें छोँ माथिक की कँसी धाक है। छोँ मालिक न यदि टान ँिया तो अुनका अुम हलकेसे तवादाश करवावे अँमे जिसी नरकम धकैँ मकने थ जहाँके गुनाके चुलभ बचना और अपनी जानरी मर नचना असभव हो जाना। अरु अुँ गँ बलरामको अनुमति दे दी।

बलराम शील सकोष छोँ सीध अपनी पत्नीके पास गया और बोला अरे ! क्या तुम भी मूर्खोंकी तरह रोन गयी ! मरी अनुपस्थितिक अवसरपर जब कि माँको समझा बुझाकर सातवना दनना भार तुमपर हा अिस तरह रोनसे काम कम चलगा ? तुमन तो बचन ँिया था कि देगकी खातिर हर प्रकारके त्यागक लिअ म भी तैयार रहूँगी। क्या तुम अपनी वह बात

भूँ गयी ? तुमको तो दृँ प्रसिद्ध बोग्पत्नी बननाही शामा दगा। जिम प्रकार रान उगना

यह मनकर अुमका राना और भी बढ गया। वह मिमकिया भग्नी हुअी राली मुअ अिमी बातका वँग दुग हो रया है कि त्याहारके अिम गुम दिनमें बिना भोजन बिय आपने

बलरामन अुमका वह वाक्य पुरा बग्ग न दिया और बीचहीमें टोककर बोला आज त्योहार है ता अुमन क्या हुआ ? तुम जानती हो आज किननोके घरमें दूँ अुफनगा पोगँ यान मवा मिगजी पनी खिचडी पकेगी ? अिम दगमें अँग किनन ल लो करोडो घर ह जिनको यहा पँमें कटोराभँ गजी (भाका माँँ) भी मयस्मँ नहीं होनी माँस है ? कँँ पमे काँक पराम दूँ अुफन पागँ बन और नवद्य ँग तो क्या वह काफी होगा ? अरी पगँ ! म तो कँता हूँ रि जिमका नाम पागल नहीं। किमीँिन हमारे ँगकी समूची जनताका दिँ जोशमे भरकर जमा अुफनगा और अुमनगा कि गुलामीकी जँरी ताड पीड डँटेगा और देगकी आजाद कर देगा। तभी मजब मानम हम पागँ मना सकेंगे। स्वँँँनाकी अुफनकी अुमगनी भावना भरनके हर घरम नि य प्रति पोगल अर्वािन खाना बनानका साधन जुटा दगी। सब भाँारणको भरपेँ खाना मिँे—देगम अम पोगलकी स्थापना करनेके लिअ ही हम जैसे लाला—करोडा व्यक्ति देग सेवामें जुँने ह। तुम दुव करागो तो मुअ जिम कामम अुनाह कमे प्राँन होगा ? तुम अिम काममें अु माहम मेरा हाथ बँगओ तभी म दुगुन अुत्याँसे अुमे कर सकूँगा ? क्यादामे ज्यादा दो सालकी जल होगी। अुसके बँँ ता हथ आँँँ होकर जँर मिँग।

अिनना कहकर अुमन अपनी पत्नीके गँँापर प्रममे हाथ फरा तो पास ही खँी अुमकी माँन अुस देखा अनदेखा करके अपना मँँ कर ँिया।

बलराम वाँको बाहर आया और ँगँगामे बोला, म तयार हूँ। फिर अयन पिताकी आर मुडकर वँँ। रिताजी आपन अुम दिन कहा था न कि मुअमें और

पिल्में अंक वातका तर्क वितर्क हो रहा था। अस्का जवाब आज मुझे मिल गया। वह यह है कि देश सेवकोसे झूठी दोस्ती कर जो अन मोकेपर पुलिसके हाथमें, पकडवा देता है वह बदमाश है। बहादुर कौन हो सकता है—अिम वातका आप स्वय निर्णय कर लें।”

यह कहकर वह आंग बडा। दूसरे वपण वंछालि-गम् पिल्लेजीके मनकी गहराअीसे यह विचार भुफन-कर अपर अुठा कि बलराम जैसा मच्चा देशनेवक ही सचमुच बडा बहादुर है, दूरवीर है। अुमके मनमें अुठने-अुमगनेवाला अुत्माह ही देशका सच्चा पीगल' है।

बस, मनमें अिम विचारका अुमरना था कि वेंच-लिंग्म् पिल्लेकी नम फूल गयी और अुनके दिलमें अेक प्रकारके जाशकी लहरें अुठने लगी थी वे मारिमुलुकी और अुगल्यीका निर्दोशकर गरज अुठे, “अरे, तू ही बद-माश है। मेरे कुलके नामपर बट्टा लगानेवाला कुला-

गार है। मेरी आँखोंके सामनेसे हट जा। निकल जा यहाँने।”

अितना कहना था कि अुनका मिर चकराने लगा, आँखें अ्योतिहीन हो गयी और अुनकी वृद्ध जर्जर देह लडखडाकर गिरनेकी ही थी कि पाम मडे छोटे मालिकने अुनका यह हाल देखा और झट लपककर अपने हाथोंका सहारा देकर पकड लिया। अुन दोनोंके अुस आलिंगन-पागकी, प्रेम-अुग्धनकी दूर ही दूर खडा अेक खतिहर देख रहा था। अुमने दही बेचनेवाली ग्वालिनसे जो पास ही खडी यह दृश्य देख रही थी, कहा—

“अिन दोनोंके जीवनके साथ-साथ गाँवकी अेवनाका अत समझो। अिनके बाद हमारा गाँव कभी अेकताके सूत्रमें न बधेगा और आपसमें झगडा-फिमाद करके मर-मिटेंगा।”

अुसका वह कथन सत्य हो गया। मुख शांतिमय अुस गाँवमें झगडा-फिमाद फैला और अुम आधीमें वह गाँव नष्टप्राय हो गया।

(तमिलसे अनुवादक—श्री रा. धीन्दिनाथन)



सन्त-साहित्यकी अमूल्य विभूति-गुरु ग्रन्थ साहिब

डॉ. हरदेव चाहरी

गुरु ग्रन्थ साहिब के साथ गुरु शब्द सम्बन्धित अत्रिलिखित है कि अत्रिसमें अनक सत सम्प्रदायोके गुरुआकी वाणिर्पा सग्रहीन ह । यन् ग्रथ स्वय भी गुरु है । गुरु नानन (ज म मन १८६९ औ०) से लवर गुरु गोविन्दसिंह (मत्स्य मन १७०८ औ०) तक दम गुरु हूअ है । अतिम गुरुन ग्रथ साहिबको ही अपना अुतराधिकारी नियुक्त किया—' सब सिक्खनको हुक्म है गुरु मायो ग्रथ । तबमे ग्रन्थ साहिबकी गुरुवन पूजा-मुधूपा होती है । अुसरा दरवार लयता है असे मिहासनपर बिराजमान किया जाता है और रेगमी कपड ओढाय जाने ह—रूमाल चादर दुपट्ट तकिय अित्यादि । साथ प्रात सिक्ख अुसके चरणामें पत्ते ह और अुसके आग 'अरदास' (अनुनय विनय) करते ह । अुसे कडाह प्रसाद सपया-मसा पल फूठ और अम्ब वस्नकी भेंट दी जाती है । सब सिक्ख गुरु ग्रथ साहिबका आगीर्वादि और वरद हाय चारते हैं । समय समयपर आनंद वायोंम अव सवट कालम—अुसवा आश्रय ग्रहण करते ह । अुसकी आजासे काम हाता है । बच्चेका नाम रखना ही कोओ काय प्रारंभ करना ही श्रद्धापूर्वक भेंट नजराना लेकर गुरु ग्रथके द्वारपर आने हैं चंवर झलन ह सिंहासनके चरण दाबते हैं और गुरु मानवा आप करते हुअ कोओ पना खोल देने ह । अिस पत्रका पहला अक्षर पहला शब्द अथवा पहली पवित गुरु आज्ञाने रूपमें ग्रहण की जाती है । सिक्खोका विश्वास है कि दमो गुरुओकी आत्मा ग्रथ साहिबम वास करती है ।

गुरु ग्रथ या आदि ग्रथका सकलन पांचवे सिक्ख गुरु अजन देव (१५६३-१६०६ औ०) न किया था । अुहोन प्रथम चार गुरुओकी वाणिर्पा बड़ी खोज और साधनासे सग्रहीत की । अुनका यथाक्रम सम्पादन किया और अुनके साथ अपनी वाणी भी जाड़ी । आदि ग्रथमें सबमे अधिक पद गुरु अजन देवके ही हैं । अुन्होम भारत रा भा. ८

भरके मन्तोकी वाणिर्योकी छानबीन की और केवल अुन वाणिर्योको अपन सकलनम स्थान दिया जो निगुणिया मतक अनुकूल था । अिन भक्त कवियोकी वाणी अिस आदशसे हीन समयी गयी अुमे नही लिया गया । अुदाहरण स्वरूप—पजावहीके काह छजू ग्राह हुसन पीलू आदिकी वाणिर्पा गुरु अजनदेवके विचाराधीन रही पर आदि ग्रथमें नही आ पायी क्यकि वा हन अपनको परमेश्वर कहा छजून स्थियोकी निष्ठा की अथ ग्राह हुसन और पीलू निराशावादी थ । गुरु ग्रथ साहिबम छह सिक्ख गुफ्रो और १६ भक्तोकी वाणिर्पा ह । अिनका विवरण अिस प्रकार है—

गुरुओमें—प्रथम गुरु नानक वे	२९४९ बन्द
द्वितीय गुरु अंगद वे	५७ बन्द
तृतीय गुरु अमरदास वे	२५२२ बन्द
चतुर्थ गुरु रामदास के	१७३० बन्द
पंचम गुरु अजन देव वे	६२०४ बन्द
नवम गुरु तेगबहादुर के	१९७ बन्द
भक्तोंमें—बबीर के	११४६ बन्द
नामदेव ^१ के	२३९ बन्द
रविदास के	१३४ बन्द
जयदेव के	२ पद
वेणी के	३ पद
त्रिलोचन के	४ पद
रामानन्द का	१ पद
सेन का	१ पद
परमानन्द का	१ पद
सदना का	१ पद

१ नामदेव दो हुअ थ—अक महाराष्ट्रके दूसरे पजावके । दोनोकी वाणिर्योको अलग अलग करना अत्यन्त कठिन है ।

धना के	४ पद
पीपा का	१ पद
भांखन के	२ पद
फरीद के	१३० सलोक, ४ पद
मीरा २	१ पद
सुरदास	२ पद

सिक्ख गुरुओंकी कृतियोंको 'गुरु-वाणी' और अन्य सन्तोंकी कृतियोंको 'भगत वाणी' कहा जाता है। इनके अतिरिक्त सुन्दरजीका श्रेक सद् है जिसके छह पद हैं। राय बलबडकी श्रेक चार और भाजी मरदानाका श्रेक 'शब्द' है। अन्तिम भागमें ११ नट्टोंके १२३ सवये हैं जो सिख-गुरुओंको स्तुतिमें लिखे गये हैं।

अपरिलिखित सूचीमें नवे सिक्ख गुरु, तो बहा-दुरजीका नाम देखकर पूछा जा सकता है कि पाँचवे गुरुके बाद नीचे गुरु ही की वाणी क्यों ली गयी, दूसरे गुरुओंकी वाणीको क्यों स्थान नहीं मिला? जिस सम्बन्धमें किबन्दती है कि गुरु अर्जुनदेवने स्वयं भविष्य-वाणी की थी कि हमारे सत्कर्ममें केवल गुरु तेग बहा-दुरकी कृतियोंको स्थान मिलेगा। ६ ठे, ७ वे और ८ वे गुरुकी वाणियाँ मिलनी ही नहीं। १० वे गुरु गोविन्दसिंह बहुत अच्छे कवि थे, लेकिन अजुनकी वाणी भी आदि ग्रन्थमें नहीं है। अजुनका सग्रह 'दशम ग्रन्थ' के नामसे प्रसिद्ध है।

मन् १६०४ ओ में गुरु अर्जुनदेव द्वारा सत्कर्म आदि प्रपत्ती हस्तलिखित प्रति हरिमन्दिर, अमृतसर, में रख दी गयी थी। पर प्रति अब करतारपुर (जिला जालन्धर) में पडी है। वर्षमें श्रेक बार अिनके दर्शनके लिखे लामो सिक्ख यहाँ जमा होते और चढावे चढाने हैं। महाराजा रणजीतसिंहने दर्शन करते समय श्रेक बडी जागीर चढावेके रूपमें श्रेक की थी जिसका अुपभोग आज भी गुरु अर्जुनदेवके वंशज कर रहे हैं। अिन प्रतिमें भीराका पद बरतसे षाटा हुआ है।

२ मीराका पर मुद्रित प्रतिमें अुपलब्ध नहीं होता।

मूल ग्रन्थकी दो प्रतिलिपियाँ और भी पौं जिन-पर गुरु अर्जुनदेवके हस्ताक्षर ले लिये गये थे—श्रेक भागट (जिला गुजरात) में और दूसरी दमदमा साहबमें। भागटवाली प्रति-लिपिका देराके बँटवारे (१९४७) के बाद क्या हुआ, कुछ ज्ञात नहीं, दमदमावाली प्रतिलिपि अहमदशाह पन्थानोंके समयसे अुपलब्ध नहीं, परन्तु जो मुद्रित ग्रन्थ अिन समय प्रचलित है वह अिसीका सत्करण है।

गुरु ग्रन्थ साहित्यका नाम अिन प्रकार है—

- १ जपुजी—गुरु नानक-कृत—अिनमें अिसाँका मूलमन्त्र, १ ओंकार सतनाम करता पुरवु निरभु निरबँह अकाल मूरति अजुनी सँन गुरु प्रसादि भी है।
- २ सोदर—गुरु नानक कृत। अिनमें पाँच शब्द (पद) हैं।
- ३ सो पुरखु—गुरु रामदास-कृत। अिनमें चार पद हैं। जपुजीका पाठ प्रात तपा सोदर अँव सोपुरखुका पाठ मायनालमें करते हैं।
- ४ सोहिला—गुरु नानक-कृत। अिनमें चार पद हैं। पाठ रातमें सोनेसे पहले किया जाता है।
- ५ राग, निम्नलिखित ३१ राग प्रयुक्त हुअे हैं—सिरो, भात, गजुडी, आसा, गुरी, देवाधारी, बिहागडा, बडहनु, सोरडि, घनासरो, अँतसिरी, टोडी, बँराडी, तिलग, मूडी, बिलावजु, गौड, रामकली, नटनाराअिन, माली गडडा, मारु, सुधारी, बेदारा, भँरजु, बनजु, सारगु, मलार, वानडा, कलिआन, प्रसाणी, जँजावनी।

अिनके अतिरिक्त छह राग ससुरत हाकर प्रधान रागोंके साथ आय है—अलिन, आनावरो, हिंडोल, नोगानी, विनास, दीपकी।

अिन रागोंमें निम्नलिखित बाधक्य मिलते हैं—सबद, अष्टपदियाँ, छन्द और वार। अन्य कर्तियोंके नाम ये हैं—पहरे, वाजारा, वारहमासा, दिन रँग, बरतने, बावन अकसरी, सुयमनी, पिडी, बिरहडे, पट्टी, पौंअियाँ,

अंगारुणियाँ आरसा कुचञ्जी मुखञ्जा गुणवता वार
सत अनहु, सह ओअकाए मिदगाटो अजत्रियाँ
मोहित । य वाणियाँ प्राय अष्टपदियाँ बाद आनी ह ।

रामामें गुन्नाणी पहेँ और भगत वाणी अुसके
परघात आनी है । सिक्क गुरु समी अपन गदाके अतमें
नानक नाम लिखत ह अन अनकी वाणीक साथ
क्रम ग महेला १ महेला २ महेला ३ महेला ४
महेला ५ और महेला ९ का संकेत रहता है । भगत
वाणीमें प्रथम भवतया अपना नाम आता है ।

- ६ भाग जिनक अतगत सत्रो (१४३) गाथा
पुनहू और चञ्चुवाह ह ।
- ७ सत्रोक पराद ।
- ८ समय सिरीमुखवाक ।
- ९ नट्टाक सवय—पहेँ पाँच गुन्नाकी स्तुतिम ।
- १० अनिरिक्त मत्तव ।
- ११ सत्रोक महेला ९ ।
- १२ मूगवाणी ।
- १३ रागमाग ।

पुष्पाकी कुत्त सख्या १४३० है । मुद्रित ग्रथ
साहित्य हिन्दीम हो चाहे गुरुमुखीमें २०×३०/८ हो
१८×२२/८ हो २०×३०/४ हो २२×२९/४ हो और
चाहे १८×२२/२ हो काभी साहित्य हो पुष्पो और
पवित्रयाकी सख्या बही रहनी है— टाडिपका अतरजिम
हिंसावस रहना है कि प्रत्येक संस्करणका कोभी पुष्प ले
गे अक ही गल्प प्रारंभ होगा ।

विस भावको प्रगट करनक त्रिभ किम रागका
प्रयोग हुआ अभी जिम विषयपर विगप खोज नहीं
हुआ । रागमागाम ६ प्रधान राग, ३० रागिनियाँ और
४८ अिन पत्र = कुल ८४ राग गिनयें गय ह । पर
गुरु ग्रथम कवच ३० रागोके प्रयोग हुआ ह । असका
कारण अवश्य होगा । पुरानके रागोम मय दीपक
मात्रकौस, जोग आदि अरथ न प्रसिद्ध रागमा वाणियाँ
नहा ह । असका कारण यह जान पडता है कि अिनसे
असाम गानि ताप अुत्तमी अथवा आल्हादकी अुत्तति
होनी है । य गुरु ग्रथके भाव मण्डलके अनुकूत्त नहीं
पडते । जोगियोको सम्बोधन करनवाल पद रामक्रीम
और धनत्रमानोको अुपदेश देनवाह पद आसा गूही
अथवा तिलममें लिप गय ह । असका कारण यह है कि
असे ही राग क्रम ग जागिया और मुखलमान फकोरा
द्वारा अधिक प्रयुक्त होते थ ।

गुरु ग्रथकी रचनामें संगीत गानका बहुत ध्यान
रखा गया है और घर, ताग स्यायो, अथ्यायी
अन्तरा गन जत धुन आदिके मवधमें पूरे-पूरे
संकेत दिय गय ह । काव्यमें संगीतकी मूर्त्तमात्राके
महत्त्वकी आज बहुत कम लोग समझते ह ।

यह बात विगपतया अुत्तखनीय है कि गुरुग्रणी
तया भगत वाणीमें प्रयुक्त छन्दाम गक-छन्दाका देव
कर यत् प्रथम अुठ सकता है कि जिह्वाज साहित्यिक
छन्द कहेते ह क्या व भी मूत्रम और विगपतया अुम
समय त्रोक गीता ही के छन्द तो नहीं थ ? गुरु ग्रथमें
प्रयुक्त सिठणियाँ मोहाग घोडी आदि आज भी विवा
होमवापर पजात्र भरम गाय जाने ह । मत्स्यपर वण
और अंगारुणिया आज भी गक-प्रचलित ह । वारहभासा,
बिती वार सह आदि पजावके प्रसिद्ध लोक छन्द ह ।
सोहित्र प्रयक गुभ अवसरपर गाया जाता है । दुपदे,
चञ्चुत्त अष्टपदियाँ दोहरा आदि छन्मो पुरान लोक
गीताम मिलत ह । सत साहित्य लोक साहित्यका ही अक
विगिष्ट रूप माना जाअ तो अनचिन न होगा । अत
जिमम त्रोक छदा लोकाठकारो जोर लोकमापाका
व्यवहार स्वाभाविक ही है । हमारा विश्वास है कि
सवया अुत्तमा कवित दोहा सोरठा चीपाओ आदि
छन् त्रोक-साहित्यकी देन ह— वहामे थ छन्द गुन्नाओ
और गवनोंको प्राप्त हुआ ह ।

गुरु ग्रथ साहित्यकी भाषा अक रूप नहीं है—
अकल्पता थी भी अमभव । जपदेव बगालके नामदेव
सेन जोर त्रिजोचन महाराष्ट्रके कवीरदास और रविनास
भोजपुरी प्रदेशके भीलनजी अवधके धन्त राजस्थानके
नानक अगद और फरीत्त लहदी प्रदेशके अब अय सिख
गुरु पजावी प्रदेशक थ । अिनकी वाणियाम प्रादेगिकता
स्पष्ट है । परन्तु अिम विविधनाक बीचमें भाषाकी
अकता देखकर अश्चय हाता है । गुरुनानक और भक्त
करीरकी भाषामें विगप अन्तर नहीं निजोचन और
गुरु अजनकी भाषा अकन्नी उगनी है । अिससे कटा जा
सकता है कि कम-से-कम १५ वा- १६ वी
गनाग्ने तक राष्ट्रभाषाका स्वरूप प्रतिष्ठित हो गया
था— और वह राष्ट्रभाषा हिन्दी ही थी जिनमें मराठी
बंगाली भोजपुरी अवधो गुजराती राजस्थानी,
पजावीवा पुग हाते हुए भी स्वरूपकी अकता निदिचन
थी । गुरु ग्रथ साहित्यम सन १६०८ से सुरकिन चकी
आयी हुओ भारत भरके लोक-नायकाकी वाणियाँ हिन्दीकी

व्यापक मान्यता और सर्वशाह्यताका जोरदार प्रमाण
श्रुपस्थित कर रही हैं ।

श्रुद्धरण —

अतर मलि निरमलु नहीं कीना बाहरि भेय अदाती ।
हिरदै कमल घटि बहान चोन्हा काहे भजिआ सनिआसी ॥
भरमे भूली रे जंचदा । नहीं नहीं चोन्हिआ परमानदा ॥
(जिलोचन)

अेक अनेक बिआपक पूरक जत देपअु तत सोओ ।
माझिया चित्र विचित्र विमोहित, बिरला अुनै कोओ ॥
सभु गोविंदु है, सभु गोविंदु है, गोविन्दु बिन नहि कोओ ।
सुतु अेकु मणि सत सहस जैसे, ओत पोत प्रभु सोओ ॥
(नामदेव)

ना भे जोग धिआन चितु लाझिआ ।
बिन बैराग न छूटसि माझिआ ॥
कैसे जीवनु होअि हमारा ।
जब न होअि राम नाम अघारा ॥
कहु कबोर खोजअु असमान ।
राम समान न देखअु आन ॥

(धमीर)

तुम चदन हम अिरड बापुरे, सगि तुमारे वासा ।
नोच रूप ते अंच भजे है, गघ सुगघ निवासा ॥
मापअु सत सगति सरनि तुम्हारी ।
हम अग्रगन तुम अघचारी ॥

(खिदास)

बेडा बधि न सकिओ धपने की बेला ।
भर सरवर जब अछले तब तरन दुहेला ॥

(फरीद)

अेक अुद जल बारने, धात्रिक रुपु पावं ।
प्राण गअे सागर मिले, कूनि कामि न आवं ॥
प्राण जु पावे पिय नहीं, कैसे बिरमावअु ।
अुदि मूअे नअुका मिले, कहु काहि चडावअु ॥
भे नाहीं कछु हअु नहीं बिछु आहि न मोरा ।
अभुसर सजा रापि लेहु सपना जनु तोरा ॥

(सटना)

दुख गुल दोअु सम करि जानं, बुरा भला ससार ।
मुधि अुधि मुरति नामि हरि पाझिअं,
सन्सगनि गुरु विआर ॥
अहिनिजि लाहा हरि नामु परापति गुरु दाता देवणहाद ।

गुरुमुखि सिख सोअि जनु पाअे,
जिसनो नदरि करे करताद ॥
काझिया महलु मदद घर हरि का,
तिस महि राखी जोति अघार ॥
नानक गुरुमुखि महलि बुलाझिअं, हरि मेले मेलणहार ॥
(नानक)

अंसा नामु रतनु निरमोलकु पुअि पदारथ पाझिआ ।
अनिक जतन करि हिरदै रापिआ,
रतनु न छपै छपाझिआ ॥
हारिगुन कहते कहनु न जाओ । जैसे गूमे की मिठिआओ ।
रसना रमत सुनत सुधु स्रवना, चित चेत सुपु दोओ ।
कहु भोपन कुअि नन सजोवे, जहें देखा नहें सोओ ॥
(भोखन)

हरि दरसन कअु मेरा मनु बहु तपने
जिहु त्रिषावतु विनु मोर ।
मेरे मनि प्रेमु लगे हरि तीर ।
हमरी वेदन हरि प्रभु जानै, मेरे मन अतर की पीर ।
मेरे हरि प्रीतम की कोओ बात सुनावे, सो भाओ सो बीर ॥
मिलु मिलु सदी गुण बहु मेरे प्रभु के,
सतिगुर मति की पीर ।
अन नानक की हरि आस पुजावहु
हरि दरसन साति सरीर ॥

(रामदास)

बिसरि गओ सभ तात पराओ,
जबने साध सबति मोहि पाओ ।
ना को बंदी नाहीं विगाना
सगल सगि हम कअु बनि आओ ॥
जो प्रभु कोनो सो भल मानिअु, अेह सुपति साधु ते पाओ ।
सभ महि रमि रहिआ प्रभु अंक,
पेपि पेपि नानक विगनाओ ॥

(अर्जनदेव)

मनकी मनहो माहि रही ।
ना हरि भजे न तीरथ सेवे, चोटी काल गही ॥
दारा भोन पून रथ सपनि, पन पूरन सभ मही ।
अवर सगल मिथिआ अे जानहु भजन रामको सही ॥
श्रित फिरत बढ़ते जग हारिअु मानस देह लही ।
नानक कहन मिलन की बिरिआ, सिसरत कहा नही ॥
(नेग नहादुर)

हिन्दीमें नगरवर्णनात्मक साहित्य

• मुनि श्री कान्ति सागर :

गजल अरवी भाषावा शब्द है। अिमका अर्थ छदका अेक प्रकारका न होकर, काव्यका अेक प्रकार है। फारसीमें अिम शब्दका प्रयोग प्रेम-वर्णन-ररक काव्यके साथ अक विनिगट प्रकारसे सम्बद्ध जान पडता है। यहाँपर जिन नगरवर्णनात्मक गजलोका अुल्लेख किया जा रहा है वे छद विशेषके रूपमें आ अुपस्थित हुआ है। तापर्य यह कि वर्णनका जो तरीना अग्नितयार किया गया, वह सर्वथा गजल शब्दके अुपयुक्त है। वर्णनात्मक काव्योके लिखे अिम छद का डगना सर्वप्रथम प्रयोग जैन कवि जटमल नाह्ग्ने अपनी लाहोरकी गजलमें किया है और परचर्ची अन्य कवियोने अिसका अनुकरण किया। अिस प्रकारकी रचनाअें हमें दो रूपामें मिलती हैं। अेक तो स्वतंत्र नगरवर्णनात्मक काव्योके रूपमें तथा पुरानन आचार्योंकी विशेष प्रसंगपर प्रेषित विज्ञापित-पत्रोंमें। अुपलब्ध साहित्यमें तो यही प्रकट होता है कि प्रथम अिम प्रकारकी रचनाअें स्वतंत्र हुआ करती थी, बादमें विज्ञापित पत्र लेखकान अिस परम्पराकी अपनाया, क्योंकि वेसे पत्रोंमें अिसकी आवश्यकता अधिक रहती थी। छद, राग और सितिका आदि शब्दान्तर्गत नगरवर्णनात्मक साहित्य भी प्रचुर परिमाणमें अुपलब्ध होता है।

गजलाकी पूर्ब परम्परापर प्रकाश डालने हुआ पुरानतयाचार्य मुनि श्री जिन विजयजी लिखते हैं —

‘ अिस प्रकारके स्थलाके वर्णनकी पद्धति भारतमें बहुत प्राचीन कालसे चली आ रही है। पुराणकारोंने अिमका माहात्म्य नामसे व्यवहार किया है और जैन ग्रन्थकाराने अिसका कल्प नामसे व्यवहार किया है। काशी-माहात्म्य, प्रयाग-माहात्म्य, गया माहात्म्य, श्री-स्थल माहात्म्य अित्यादि नामसे संकटोही स्थानोके अैसे माहात्म्य वर्णन पुराणीम लिखे हुआ मिलते हैं। पुराणोकी दृष्टि धार्मिक है, अिसलिअे अुनके वर्णनमें प्रधानतया

स्थानका देवी-माहात्म्य बतलाया गया है और अुनके अगभूत जो नदी, सरोवर, देवस्थान और पूजनीय वृक्षपादि हैं अुनकाही विशेष वर्णन किया गया है। अिन माहात्म्य-वर्णनोंमें कही-कही कुछ प्राकृतिक वर्णन और कुछ अैतिहासिक स्मरणका भी पोना बहुत अुल्लेख मिल जाता है। जैन ग्रन्थकारोके कथात्मक स्थान वर्णन भी प्राय अिसी धार्मिक दृष्टिको सामने रखकर लिखे हुआ हाते हैं और अुनमें भी विशेषतया स्थान या तीर्थका माहात्म्य बतलाया गया है परन्तु साथमें अुनमें कुछ अैतिहासिक अुल्लेखोकी अुपलब्धि भी अधिक परिमाणमें पायी जाती है। जिनप्रभामूरिका ‘विषय तोर्थ कल्प नामका ग्रंथ अिस विषयका मुख्य अुदाहरण भूत है। पुराणोकी और कल्पग्रन्थोकी पद्धतिना अनुकरण पिछले देशी भाषाके कवियोन भी किया। अुनहान ती लोक भाषामें अैसी स्थल-वर्णनात्मक और तीर्थमाहात्म्य विषयक अनेक रचनाअें की। अिही रचनाओकी जैसी वे गजलात्मक कृतिमा समझनी चाहिय। अन्तर अिनमें अितना है कि ये कृतिमा माहात्म्यकी दृष्टिसे नहीं चिन्तु केवल मनोरजन और स्थल परिचयकी दृष्टिसे लिखी गयी हैं।

या तो पुरानन कथात्मक ग्रन्थामें और कविपय अैतिहासिक ग्रन्थोंमें नगर वर्णन विस्तृत रूपमें पाया जाता है। पर अुनकी सीमा है। कवि अपविपन रस सृष्टिका ही ध्यान रखता है। गजलके लेखकोन सांप्र-वपत अपना दृष्टिकोण बहुत ही व्यापक तथा सार्वजनिक रखा है। अपेक्षयाहून भले ही नूतन जात होनी हो पर वर्णनात्मक परम्परा बहुत प्राचीन है।

गजलोंकी अुपलब्धि •

आजसे १४ वर्ष पूर्वकी बात है। मुझे चातुर्मास बन्धुश्रीमें करना था। अुम समय अनतनाथजीके पुरानन हस्तलिखित ग्रन्थ व्यवस्थित किये जा रहे थे। मुझे भी कुछ योग देना पडा था। अुम समय मैं अैतिहासिक

कृतियोंपर विशेष रूपसे ध्यान दिया। जो महत्त्वकी लगती अनुकी प्रतिलिपि भी कर लेता था। चित्तौड़, अजमेरपुर, बगाल, मूरत और बड़ोदाकी गजले तथा बोटाराका छन्द आदि रचनाओं वहीपर प्राप्त हुआ। अिनमेंसे कुछ मने भारतीय विद्याभवनके तात्कालिक सर्वेसर्वा मुनि श्री जिनविजयजीको बतायी। वे भी प्रसन्न हुअे। जैसी रचनाके सप्रहका महत्त्व मुझे समझाकर प्रोत्साहित किया। बम्बयीसे अुन्होंने मुझे अपने पूज्य गुरुमहाराज श्री अुपाध्याय सुवसागरजी महाराजके साथ नागपुर आना पडा। चातुर्मास वही हुआ। यहाँके धीर कामठीके ज्ञान-भंडारोकी जाँच करनेपर मुझे अेक गुटका मिल गया। जो वि स १८३५ का था और अिसके लेखक यति दीलतराम थे, जो कामठीके अिति हास-प्रेमी यति थे। अिसमें अुपलक्ष गजलाकी नबले थी ही, साथ ही नागार मरोट, बीकानेरकी गजल और पालनपुर छद अुपलक्ष हुआ। नागपुरके वावू पारसप्रताप बीठारीके और बालापुरनिवासिनी श्राविका चदन बटनेके सग्रहके फुटकर पत्रोंमें गजलोकी प्रतिमाओं मिल गयी है। प्राप्त गजलोमेंसे 'अुदयपुर, 'बगाल, 'राहौर और 'चित्तौड़की गजले मने प्रकाशित करवा दी थी। मूरतही गजल स्व० मोहनलालभाभी देसाभी 'जैनयुग' (वर्ष ४) में तथा बड़ोदाकी गजल प० लालचन्दभाभी गाधी 'मुमान' में प्रकट कर चुके हैं।

बीकानेरवासी श्री अगरचन्दजी नाहटाने लिखनेपर अपने सग्रहकी वृत्तिपय गजले मुझे भेजी। बादमें अिन्ही दिनों मने लाहौर, सींगोर, बीकानेर, अुदयपुर, गिरनार, आगरा, चित्तौड़, मरोट, बगाल, पाटन, बड़ोदा, डीसा मूरत कापरडा आदिनी गजलोंके आदि अिन भाग तथा अुनपर कुछ आवश्यक विवेचन लिख "जैनोनु गजल साहित्य" नामक निबन्ध लिखा, जो पारस गुजरानी

- १ भारतीय विद्या भा. १ अंक ४ पृष्ठ ४१३
- २ भारतीय विद्या भा. १ अंक ४ पृष्ठ ४१३
- ३ जैन विद्या भा अंक १ पृष्ठ २५-३१
- ४ पारस गुजरानी सभा प्रामाणिक भा. ५ अ ४ पृष्ठ ४५८-४७७

सभाके प्रामाणिकमें प्रकट हुआ था। आगे चलकर प्राप्त गजलामेंसे चुनी हुआ, मेरे द्वारा सम्पादित गजले धीतनगर वर्णनात्मक हिन्दी-पद्य संग्रहमें प्रकट हुआ। अिम बीच बुद्धिक्राशामे मेवाडपर अेक प्रवासित प्रकट हुआ थी जो वर्णनकी दृष्टिसे बहुत ही सुन्दर तथा भावपूर्ण थी। नाहटा वधुओंने अिस बीच अपनी खोज जारी रखी थीर जो-जो गजले अुन्हें नवीन मिलनी गयी वे मुझे बराबर भेजने रहे, क्योंकि मेरा विचार था कि अुनका सामूहिक प्रकाशन होना चाहिये, मने प्रारम्भ तो किया था, पर अर्धके अभावमें वह कार्य जागे न चल सका।

गजलोकी शैलीसे प्रभावित होकर अिनकी जैसी चालमें नगरवर्णनके अतिरिक्त अन्य प्रकारकी रचनाओं भी बनी अेव अिस चालसे भिन्न अन्य छन्दोंमें नगर-वर्णनात्मक गजले बनी। अुन छदोंमें—पदरी, कवित्त, छप्पय आदि तो गजलके अन्तमें प्रायः मिलते हैं। अुपलक्षक पक्ति वर्णित रचनाओंके अुदाहरणस्वरूप क्रमश अिन रचनाओंको रखा जा सकता है, सुन्दरी गजल, हनुमान गजल, पालनपुर छद, मेवाडका छंद, जैसलमेरका सिलोका, गुजरात वर्णन, धलीवाकी अुत्तमता और नीचता, बीठारा^१ (कच्छ) का छद, पूर्वदेश वर्णन छद, देशान्तरी छद, फलवदिका छद आदि-आदि।

प्रस्तुत गजलोंका अैतिहासिक महत्त्व :

श्रमण परम्पराका अितिहास तथा कला विषयक प्रेम वितना व्यापक था, वह आजके युगमें सायद ही बतानेकी आवश्यकता रहती ही। जैन साहित्यकी विभिन्न शाखाओंके अवगाहनसे स्पष्ट ज्ञात हा जाता है कि अुसके प्रणेताओंने आरम्भकयी मस्तिनि पोषक विचारोंको स्वात्म अनुभवसे लिपिवद्ध तो किया ही, साथ ही साथ लोक चेतनाको अुद्बुद्ध करनेवाले लौकिक तत्त्वोंकी भी अुपेक्षया नहीं की। यही कारण है कि आज जैन-साहित्यके प्रथामें,

१ किमी यतिने घनघोर अप्रसन्न वायुमंडलमें अिसवी रचना की है। अिममें वहाँके जैनोको खूब गालियाँ दी हैं। बीठाराका छद अप्रसन्नोका वीर है।

ज्ञान भंडारामें अतिहासकी बहुमूल्य सामग्री प्रचुर परिमाणमें उपलब्ध होती है। प्रायः प्रत्येक शताब्दीमें जनमुनियान् अतिहासिक साहित्यकी भी रचना की। १६वां शताब्दी पूर्वकी अंभी रचनाओं सस्वृत प्राकृत और अपभ्रंशमें मिलती हैं—अनु दिने अन्न भाषाओंका अतिना व्यापक प्रचार था कि मामांय जनता भी कुछ न कुछ तो समझ ही लेती थी। तदनंतर भाषान् बरबट बदली। कवियाने भी अपने माध्यम परिवर्तन किया। अज्ञान विषय भी बदला। मृगशोके समगम पूर्व सचिन अतिहास केवल पुनः जाग्रत ही नहीं हुआ अपितु अस्मिन् नवीन मस्कार भी प्रविष्ट हुआ। फलस्वरूप गजराकी सृष्टि होन लगी। भन्नेही अन्न गजलोका वण्य विषय मनोरंजनात्मक ही क्या न हो पर अन्नमें अतिहासिक तथ्य भी है। अमलिअ माया और साहित्यिका मोदय न होने हुए भी मधेपणाके क्षणमें अिह स्थापन प्राप्त है। अन्न नगर-वर्णनात्मक मृगशोके अस्मिन् पूरा अतिहास भलेही न आता हो पर साधन सामग्रीकी दृष्टिके अन्नका महत्व विगप है।

समुपलब्ध गजलाको मैन अपन दृष्टि-कोणसे पठन समझनकी चेष्टा की और गजलक्षणित स्थान तथा विषयका समथन, तात्कालिक अयाय अतिहासिक साधनो द्वारा किस सीमा तक होना है अन्न तुलनामूलक पद्धतिका भी अपनानका लघु प्रयास किया कारण सिद्धाचल गिरिनार और पाटन आदिकी गजलोमें जिन जिन महत्वपूर्ण मैन अन्न स्थानाके अल्लेख आय ह अन्नका समर्थन तीथमालाओमे तो होना ही है कुछ अन्न स्थानोका समथन पुराण तक करते ह। कतिपय पद्योंमें त्रिवर्षिताया भी अपुत्रय होती ह।

गजलोमें शूद्र अतिहास भले ही उपलब्ध न होता हो पर अतिहासिक तथ्याका सग्रह अवश्य रहना है। अन्न स्थानपर अन्न समय कौन राजा था ? शानित प्रदेशकी सीमा किनकी विस्तृत थी ? अस्मिन् कौन कौनसे नगर मूरय थ ? अन्नके तात्कालिक क्या नाम थे और बालमें कैसे परिवर्तन हुआ ? नगर और देशमें किन किन वस्तुओंका व्यापार होना था ? स्थानीय कौनसे वस्तु प्रसिद्ध थी ? बहोपर दगातीय तथा

अतिहासिक अब धार्मिक कौन-कौनसे स्थान थ और अन्नके साथ किस प्रकारकी जनमुनियान् जुड़ी हुई ह आदि। नगरक रूप वापिका और जलमय प्रधान वाद्य नगरके प्रमुख नागरिक और राजकमचारी बाजार राजा तथा अन्नके परिवारके मध्य बहोके मृगशोके परिचय बहा वसनवाली जातिदा और अन्नके व्यवसाय तथा मामांजिक प्रथाओं आदि अन्नक महत्वपूर्ण वातोका सग्रह असी गजलोमें रहना है जो अन्नक शायद उपलब्ध न हो। भौगोलिक दृष्टिके भी अन्नका अपना महत्व है। अनी कृतियोंको यदि नगरोका गजटियर कह तो अत्युक्ति न होगी।

अन्विकाश गजशोके रचयिता प्रायः जैन या यति ह। १७ वीं शताब्दीमें २० वीं शताब्दी तक अन्न प्रकारकी पद्यनिर्माण पद्धति सुरक्षित रही। धार्मिक नियमानुसार जैन मनि अन्नक समय तक अन्न स्थानपर, बिना विगप कारणके नहीं रह सकने। वे पदल चलने के किसी भी स्थितिमें वाहनका अ्युपयोग नहीं करने अतः पाद विहार अनिवाय है। सांस्कृतिक प्रचारकी विशुद्ध भावनामें अिहे भारतके सब प्रदेशमें भ्रमण करना पडता था जहा जनोका निवास हो। अतः वे नगर देश ग्रामोसे अन्न परिचित थ। अन्न अतिहासिक दृष्टिकोण था प्रथम वस्तुको दृष्टिके अन्नसे दखकर समुचित मूयांकनकी बधमता थी वे प्रकृति सुपमाके मौलिक तत्वाका अन्नक द्वारा जीवनमें आत्मसात कर चुके थ, जनक-याग और सांस्कृतिक शोक-वेचना कैसे जाग्रत हो यह अन्नक जीवनका दृष्टि बिन्दु था। अि ही अन्नक भावनाओं अन्वें अन्न और आकृष्ट किया। अन्नभूतिके कविताने द्वारा व्यक्त करनको अन्न प्रेरित किया। रचयिता जन मुनि थ। परन्तु अन्नकी दृष्टि विस्तार अन्नक और समरवकी भावनापर प्रतिष्ठित होनके कारण प्रथमक साम्प्रदायके साधन माय किया गया। गिरिनारकी गजलोमें दखें कि अन्न तीथस्थानोका अन्नक भी जनयति अन्नक सम्मानके साधन करता है। प्रथम अन्नभवजय ज्ञानका परिपाक गजशो द्वारा हुआ है। य विराम्त साधन ह। हिंदी राजस्थानी भाषाके अतिहासिक साहित्यमें जैन अन्नको यह मौलिक वेन है।

गजलका पूरा चित्र पाठक तथा अन्वयकके खयालम आ सब जिनलिख आगरा और वाकानरकी गजल ज्या की त्या द रहा हू। आठरिनके आदिम तथा अन्त ना अवनिहासिक परिचयस ही सतोष करना पड रहा है।

गजलका प्रान्तवार विभाजन यिन प्रकार किया जा सकता है —

- (१) पञ्जाब—आहार निगार।
- (२) अउतर प्रदेश—आगरा।
- (३) सिध—मरोठ गजल।
- (४) राजस्थान—अुदयपुर, चित्तौड वाकानर सापत नागर मडता जाधपुर वापरडा पाली और आवू।
- (५) गजराज—डाना पाग्न मूरत खमायन अबूसर सितार बडोदा बम्बरी अहमदाबाद।
- (६) सोराष्ट्र—पोरबन्तर सिद्धकवथ पालोडाना, भावनगर गिरिनार मागरोल।
- (७) बगाल—बगालकी गजल पूरब दक्षका वपन।
- (८) मध्य भारत—अिलौर।

अपयुक्त विभाजनम नो स्पष्ट है कि वष्य गजलका मुख्य स्थान पश्चिम भारत ही रहा है। दूरवर्ती जिन नारापर जिन विद्वान पतियान गजल लिखीं व भी पश्चिम भारतीय यति थ। ववल चानुमास ध्यनात करनक लिख व यहीं पद्य थ। तात्कालिक कवप्रदेश पट्टान ना अुनमस कुटुंबका तात्कालिक भौगोलिक अतिरिक्त सिद्ध होत्रा है।

जिन कवियान रचनाकाल सूचिन किया है और जिनका नहा है अुनका आनुमानिक रूपस स्थिर किया जा सका है। सब रचनाओं क्रमिक टगस दो ह पर जिनम १-४ रचनाय अक्षी ह जिनम न रचकन अपना नाम दिया। और न रचनाकाल हा निर्दिष्ट है—असा रचनाअ अन्तमें दो रथा ह।

य १-२ गजल आग्राक विजय घन रचकनो-अन नशारम कविह हापकी लिखी विद्यमान ह।

भाषा

गजलकी भाषामें फारसी भाषाके आदाको प्रचुरता है अब राजस्थानाका भा खूब सम्मिश्रण है, जो स्वाभाविक है। सोराष्ट्रस सम्बद्ध रचनाओंमें कहीं बहा ठठ काठियावाडी गूढ नी मिल जात ह तो कहीं कहीं ठठ खडाबालीक प्रयोग भी अुपलान ह। रचनाग ग अुदु-साहित्यसे मिलना तुलता है, ती अुद भाषाका प्रभाव पडना नो अम्बवाभाविक नही। जुदाहरणाय अरोठकी गजलका ही र, भारतीय साहित्यमें रचना अन्तमें लखनकाल देनका विधान है और अरवा फारसीमें रचना काल प्रथके पूव। द्वितीय टाका प्रभाव स्वल्प मरोठ गजलम विद्यमान है। अिसमें लखन रचनाकाल गुल्म दे दिया अब कि भारतीय परम्परानुसार अन्तमें देना चाहिय था। अहा भाषाका विचार किया जाता है वहाँ छंद ना अनुपवनीय नहीं। मुगलसे सम्पक बनन पर गजल निर्माताओन फारसी गूढ परम्पराक साप छदाको ना अपनाया जसे देखता और गजल। गजलमें आप दक्षग दाह, चौसब्री आदि भारतीय छंद मिले। अंसा लाता है कि कवियों विषय तथा भाषामूलक छानको अपनाया।

हिन्दी राजस्थानी और अु मिश्रित य रचनाओं भाषा विधानकी दष्टिसे या गूढ साहित्यकी दृष्टिसे कुठ भा महव नहा। रचती पर लाक-साहित्य और अतिरिक्तित नरवका दष्टिसे अतुरक्षणीय ह। ही किन्ना किन्ना रचनामें भाषाक साप नावमूलक सौत्प ह पर कवि अिस परम्पराका अन्त तक निना नहा सका। किन्ती रचनामें अन्द अुद मुदर रदनस बह रच-मूर्च्छि नहा हो सकती अिसके लिख ता अुनमें प्रचड प्रवाह लायित और पायित्य चाहिय। म नगी समपता कि गजलक अधिकास प्रणता स्यातिशाल साहित्य-अवी रह हा।

ममालोचकोंसे मरा जिनअ दिक्कन है कि व गजलका भाषापर अधिक ध्यान न कर अुनक वष्य विषयपर ध्यान दे।

(६) गिरनार गजल—

गिरनारकी गजलकी प्रति नाहटाजीके सग्रहकी है। प्रति अनि सामान्य है और कुछ खडित भी थी। क्याकि नाहटाजीन कुठ पकितया स्वहस्तस लिखकर प्रति पूण की है। पत्र २ ह।

(७) पाटनकी गजल—

पाटन गजलका अक प्रति अभी अभी मुच वाला पुरवासा चान वहनके कुछ खचिन पत्रामें प्राण हुआ। लखन प्रगति जिस प्रकार है—

॥ मदन १८९४ अमन विद्ययन लिपिहृत बालापुर ॥

जिमक लख वालापुरम ही रहने थ। जापन वहाँपर रहकर सकडा प्रयाका अपन हाथसे लखनकर चान नडार स्थापित किया। बालापुरमें पाटनवाले ही अधिकतर ह अन पाटनके प्रति प्रम होना स्वाभाविक है। बाबू अगारचंद नाहटाके सग्रहमें भी पाटनकी गजलका ३ प्रतिपों ह जिनका पत्रिचय जिस प्रकार है—

प्रति १— पत्र सप्त्या १० प्रगति—

अति थी नरसमुद्र पाटनकी गजल सपुण थी रस्तु ॥ थी ॥ स १८७५ मिन माह बदि ४ लिखत ॥

प्रति २— पत्र स ५ जिसकी लिपि वहन नान स्वठ और मुपास्य है। जिसका लखन नी पट्ट जान पडता है। अत्र प्रतिका मवन बडी विपता यह है कि हासियम पचामा पाठान्तर लिख हुआ ह। वहाँ कहा ता मूल प्रतिके पागमें ह। परिवतन किय गय ह। अिन मगा पनास ता मू यही लाता है कि जिसकी प्रतिलिपि बनवाना या ता कबिका ही परम्पराका गिण्य या निकटवर्ती कोभी अनि रहा होगा जब ता वह जितना अधिकारपूा मगायन कर सका। जा भा हा मप्याकका बन्दनया प्रम लखन हलका कर लिया। अन्तिम प्रगति जिस प्रकार ३—

॥ अति थी नरसमुद्र परगनी गजल सम्पुण ॥

स १८७२ वर्षे मा सु १० गुट्यामरे ससोरी ॥

मरा तो रपाल है भुपयुक्त प्रतिका आदस यही प्रति है।

प्रति ३— यह प्रति भी भुपयुक्त प्रतिन समान है। पत्र स ६ है। ताना प्रतियाकी लिपि ता प्राय समान है। मभवत अक ही परम्पराक लेखकाका भिन भिन लिपियां हा तो क्या चारचय ।

(८) टीसानी गजल—

जिसकी भी अक प्रति नाहटाजीके सग्रहमें प्राप्त हुयी है। प्रति बडी मुदर और छट पत्राकी है। जिसमें भी पाठान्तर प्रचुर है। मूलमें नी पाठान्तर परिवर्तित किय गय ह। पाटन और डीमाके पाठांतरका लेखक भिन्न नहीं मान जाना कारण लिपि-नाम्य स्वय है। जिसके अनिखित जो छोटे मोठे बान ह वे नी फुटकर पत्राम लिपिणाकार कुशलियाके रूपमें मिटे ह, कुछक लम्ब चौड विगलि पत्रामें सग्रहीन ह। अन अुनया विम्वत परिवचय दना समुचित प्रतीत नहीं होता।

भापा विषयक परिवतन जितना साध लक नाम्य साहित्य विषयक कृतियोंमें जाना है अुनना माहित्यमें नहीं। उजल अक प्रकारका लोक-साहित्य ही ह पर निमाण हानक बाद बहुत गीम्र व लिखिबद हो गयीं— कभी तो कबिका हा लिखी हुयी ह—अत्र भापा विषयक अवि परिवतन न हो सका। भापा विज्ञानके आधारपर हिदाक वार गाथाकालीन ग्रन्थके अध्वयन तथा अनुक सभयक विद्वाना दाय को सारी मूल हुयीं, जिनका अक पट भी कारण है कि जब जो रचना बनी वह तत्काल या अुनी गता-योग न लिखी जाकर कया वर्षों तक मौखिक परम्पराक रूपमें जाविठ रही कि बादमें लिखिबद का गया। घिसी घिसी भाषाका मूल जाना न मना जाता ता पाटन अिनकी मूल न जाता। जिसका कल यह हुआ कि भापा विषयक परिवतन अिनक अधिक हो गय कि मौखिकता सोजना कठिन हो गया। पर अन माहित्यका रचनाआर लिख यह बात बनी है। उजल ता विज्ञान अरवात ह।

व्यासका आक्रोश

: आचार्य श्री स ज भागवत :

अध्वंवाहुविरोग्यं न च कश्चिच्छृणाति माम् ।
धर्मादर्शश्च कामश्च स धर्मं किं न सेष्यते ॥

—महाभारत

ममाजके आरम्भमे ही समाजके प्रतिभाशाली
पुरुष सतत यह स्वप्न देखने आये हैं कि आदर्श ममाजकी
रचना किम प्रकार की जाये । कवियाने आदर्शका चित्र
लीखा, मुधारकोंने आदर्शकी ओर ले जानेवाले आचार
बनगये, वीरोंने आदर्शकी मूर्तताके लिये अपने
प्राणोत्सर्ग भी बलिदान कर दिया, ता भी आदर्श अभी
प्रत्यक्षसे अनिदम दूर-नल्पनाके अन्तरालमें ही रहने
आये हैं ।

भारतीय सभृतिके पवित्र काव्य रामायण और
महाभारतमें जीवनके दो आदर्श दिखलाये गये हैं ।
आदर्श-मानव चित्रित करनेमें रामायणमें वात्सीकिनी
प्रतिभा ध्वं हुआ है और महाभारतमें व्यासने अपनी
समस्त बुद्धिका अुपयोग करके जीवनका सामाजिक
आदर्श अुपस्थित किया है । वस्तुतः अिन दोनों आदर्शोंका
परस्पर दृढ सम्बन्ध है, क्योंकि यद्यपि आदर्शभूत समाजके
निर्माणके लिये असामान्य व्यक्तियोंकी आवश्यकता है,
तो भी आदर्श-समाजमें ही आदर्श-मानव निमित्त होना
सम्भव है । अिस कारण ममाजके स्र व्यवहार आदर्श-
जीवन निर्माण करनेकी दृष्टिसे अज्ञानके लिये आदर्शोंकी
व्यावहारिक साधनाकी प्रधान रूपसे आवश्यकता है ।

अध्वहारके निय और महत्वके प्रस्त अर्थ तथा
काम है । मानवी-जीवनकी पूर्णताके लिये भारतीय
ऋषियोंने 'मोक्ष' शब्दका अुपयोग किया है । जीवनका
प्रत्यक्ष स्वल्प अर्थ-काममें है और अुसका परोक्ष
स्वरूप मोक्षमय-आनन्दमय है । भारतीय द्रष्टाओं तथा
समाज मुधारकोंका यह परम्परागत विश्वास है कि
जीवनके अिन प्रत्यक्ष और परोक्ष स्वरूपोंमें चाहे कुछ
भी विरोधका आभास क्यों न हो, परन्तु अुनमें वर

नही है और अुन्होंने अर्थ-काम अेव मात्र अिन द्विविध
अगाके साधनके रूपमें केवल अेक धर्मकी माधनाकी
प्राधान्य दिया है । 'धर्म' शब्दमे जीवनकी सर्वांगीण
साधनाका बोध होता है । प्रस्तुत लेखने आरम्भमें अुद्-
भूत किये गये महाभारतके प्रसिद्ध श्लोकमें भी 'धर्म'
शब्दका यही अर्थ सूचित किया गया है । धर्म-साधनासे
मोक्षसिद्धि होती है, अिस विषयमें अभी किसीन समय
प्रकट नहीं किया, फिर भी अर्थ-कामकी जो सिद्धि
धर्माचरणमे होती है अुसके विषयमें बहुत मतभेद
दर्शाया जाता है । परन्तु भारतीय विचार-मरणमें यह
मिथ्या सर्वमान्य समझा गया है कि धर्मसे ही अर्थ-
कामकी सिद्धि होती है । यदि यह ध्यानमें रख लिया जाये
कि 'धर्म' का अर्थ 'न्याय' है तो यह विदित होगा कि
भारतका अुन्न सिद्धांत प्रायः जगत्मान्य है । यदि
समाजके व्यवहार कभी भी सक्ने लिये सुलभ होना है,
तो यह आवश्यक होगा कि अिन स्र व्यवहाराका
आधार न्यायसिद्धि हो । अुल और न्यायमें तत्त्व विरोध
नहीं । परन्तु जब अुलका स्वरूप नकुचित हो जाता है
अुस समय अुस सकुचित अुल अर्थात् स्वार्थका न्यायसे
विरोध हो जाता है । अर्थात् अिस्वार्थकी अुलका अस्तवर्ध,
न्यायसे कभी विरोध नहीं । परन्तु सामाजिक अिनित्यासके
अध्ययनमे यह प्रकट होता है कि समाजम अभी भी यह
न्यायविच्छेद सुदृढ रूपसे स्थापित नहीं हुआ, अिसीलिये
न्यायके समान ज्ञानी और 'सर्वभूतहिते रत' महान्
पुरषोंकी अुलपूर्ण आश्रीष करना पडा है ।

समस्त महाभारतका निरीक्षण करनेसे यह बात
सहज ही ध्यानमें आ जानी है कि ध्यायका यह आक्रोश
किन्तना अर्थार्थ था । धर्मका मस्थान करनेकी प्रतिज्ञा
पूरी करनेके अुद्देशसे अवनर्ण भगवान् श्रीकृष्णने
अिस्वार्थका प्रत्यक्ष परिणाम, समाजसाधनाकी दृष्टिसे,
हमें क्या शिक्षता है ? अिन आदर्शोंके अुलमें श्रीकृष्णका

जन्म हुआ, वे लोग अन्हूँके सामने मदिरामत्त होकर नष्ट हो गये। 'यादवी' मन्द्य अुसका स्मारक है। पितामह नीपमने अपने वंयवित्तव मुखजीवनका होम करके जो कुल्सेवा की, सम्भवत अुसक ही फलस्वरूप अुन्हें अपने कुलका सर्वनास देवना पडा और विदुर जैसे स्थितप्रज्ञ ज्ञानी सतको, अपना अुपदेग निरर्थक होने देख, जगत्कल्पाणकी अिच्छा होते दूधे भी, अपने स्थान-में दुखी होकर बैठना पडा। स्वत 'महाभारत' कार व्यासके अन्तिम अुद्गार आरम्भमें दिपे ही गये हैं।

यह बात नहीं है कि यह अनुभव केवल भारतीय विचारकाको ही आया हो। योरोपीय मस्त्वितिके अग्रभागमें दीप्तिमान सान्नेटीज और प्लेटोकी भी क्या अैसी ही है। सान्नेटीजने यह आग्रहपूर्वक प्रतिपादित किया था कि जीवनका योग्य विचारोंकी मुद्धतापर अवलम्बित है। जिस कारण असे विप्र-प्याला पीना पडा। प्लेटोकी क्या तो अिगने भी करपाजनक है। अुसने अपनी विशाल प्रतिभासे सामाजिक जीवनके मपूर्ण आदर्शका निर्माण करके अपने सर्वथेष्ट ग्रन्थ 'रिपब्लिक' के द्वारा यह तथ्य तत्कालीन जगत्के सामने अुपस्थित किया कि जीवनका परमसत्य जाननेवाके ज्ञानी पुरपाके हाथोंमें ही समाजका शासनसूत्र होना चाहिये। अुसका यह सिद्धांत आज भी विरत-मान्य है। परन्तु अुसका स्वयंका अनुभव शोधनीम है। तत्त्वज्ञके राजा होनेकी अपेक्षा राजाका तत्त्वज्ञ होना मुश्किल होगा, अिस कल्पनासे अुसने सिराजूनूजके राजाको, अुसके निमग्नपर, अपना प्रथम शिष्य मान लिया। परन्तु राजाको यह प्रदीत हुआ कि तत्त्वज्ञ होना अनुविघाजनक है। अिस कारण अुसने अुम प्रसिद्ध जीवनाशोधको गुलामके रूपमें वेंच डाला। वहाँ किमी मित्रकी दशासे वह बेचारा किमी प्रकार अपने प्राण बचाकर स्वदेश वापस आया।

प्राचीन चीन देशके प्रसिद्ध ज्ञानी पुग्ग कान्-पू-से ने भी समाज-धारणाके मपूर्ण दर्शनकी रचना की थी। अुमे यह बड़ी आशा थी कि यदि कौश्री राजपुत्र मेरा शिष्य होना स्वीकार कर ले ना में अपने दर्शनके अनुसार ध्यानके जीवनकी रचना कर सकूंगा। परन्तु अुस समयके राजा धारणमें प्राणपातक युद्ध करनेमें

अिगने व्यस्त थे कि अुन्हें कान्-पू-से की और ध्यान देनेका अवकाश ही नहीं मिला। अुसकी मृत्युके समय अुसके शिष्योंने अुसस पूछा 'आपकी आन्तरिक अिच्छा क्या है?' कहा जाता है कि अुसने ये अुद्गार प्रकट किये थे कि मुझे अन्न तक अैना राजपुत्र नहीं मिला जो मुझे अपने दर्शनका प्रयोग करनेका अवसर देता। यह बात मेरे हृदयको बहुत दुख दे रही है।

प्राचीन औरानी लोगोंके धर्म सत्यापक जरदुष्टकी भी क्या अिसी प्रकार मजेदार है। अिस महापुराणमें समाज-मोक्षकी दिव्यदृष्टि थी और प्लेटोव कान्-पू-से के समान ही अुसकी बहुत दिनोंमें यह महत्वाकांक्षा थी कि वह किसी राजाका गुरुत्व करे। अेक राजाको निरुपाय होकर जरदुष्टका शिष्य बनना पडा। कारण, अुस राजाका घोडा अकस्मात बीमार पड गया। जरदुष्टको अद्विविधा माडूम थी। अिस कारण अुसने अिस अवसरका अुपयोग करके अपना गुरुत्व अुसके अुर लद दिया।

आधुनिक यूरोपके 'यूटोपिया' (आदर्श समाज) प्रयत्नकर्ता सर टामस मूरकी राजाके हाथसे मरना पडा और अुस प्रयत्नके नामसे 'यूटोपियन यहअवहेतनादर्शक विशेषण अंग्रेजी भाषामें रूढ हो गया।

आदर्श-वादिपोकौ अिस नामावलीमें अिच्छानुसार वृद्धि की जा सकती है। जगके सब माधुर्मत मदा ही यह कहते आये हैं कि मनुष्योंकी धर्मशील बनना चाहिये। बहुतमें लोगोंका विचार है कि अीसा अथवा बुद्धका अुपदेश सत्यामवादका था, परन्तु अुसके अुपदेशोका प्रत्यक्ष अवशोषण करनेपर यह कहना पडता है कि यह विचार ठीक नहीं। अीमाके 'Kingdom of Heaven' का अर्थ 'Kingdom of Righteousness' है। यह बात अुन्होंने स्पष्ट शब्दोंमें कही है। अर्थात् अुसका 'स्वर्गीय राज्य' 'धर्मराज्य' ही था। अुसका मुख्य सिद्धांत यही था कि 'अुस धर्म और न्यायके अनुसार आचरण करो। तब तुम्हें जीवनके अंहित मुभ भी मरलतापूर्वक प्राप्त हामे।' यह सिद्धान्त पूर्वांत भारतीय सिद्धान्तमें अितकुत्र मिलता है, परन्तु अिसी सिद्धान्तके लिये अीमाकी वध-अुत्पन्नपर चटना पडा ! अिसी प्रकार यह नहीं कहा जा सकता कि गौतम बुद्धका

अष्टांगमार्ग केवल सत्यास जीवनके लिये ही है। यह स्पष्ट है कि सामाजिक जीवनका वही आधार है। वैशालीके घञ्जी लोगको अन्होंने जो सान प्रसिद्ध नियम वनछाये अउनका अुपदेश अन्होंने समाजमें धर्मराज्य प्रस्थापित करनेके माधनके रूपमें ही किया।

अस्लामी धर्म स्थापक मस्मद पैगम्बर तथा यहूदी धर्माचार्य मोजेस ये दोनों महापुरुष वामदोमी ही थे। अन्होन प्रधानतः अरब और अन्धाल जानियोंके लोगकी समाज-रचना की, परन्तु अून दोनों अपने सामाजिक आदर्शकी सिद्धिके लिये धर्म-साधनाका ही अुपदेश किया। अिस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यासके अिस सिद्धातको कि "धर्म ही अर्थ-काम सिद्धिका अेकमात्र साधन है" सावंत्रिक मान्यता प्राप्त है। परन्तु अँसा होते हुअे भी प्रत्याप व्यवहारमें धर्मबुद्धिके आचरण करनेवाले व्यक्तिपका वर्ग अभीतक अल्प ही दिखता है। सामाजिक सुधारकी दृष्टिके यह अेक रहस्यमय घटना समझना चाहिये।

यदि हम आधुनिक युगके समाज सुधारकोके प्रयत्नको देखें तो अँसा नहीं मालूम होना कि यह रहस्य समझ लिया गया। आधुनिक कालम व्यापकी प्रस्थापनाके लिये राजकीय, आर्थिक, सैन्यिक अित्यादि विविध कर्षोमें अनेक नातिकारक प्रयोग हुअे हैं। अिन नाना विध प्रयोगोंमें अन्य किनने भी भेद अिछें तो भी अूनमें यह सिद्धात सर्वत्र अगीकृत किया हुआ दिखता है कि सामाजिक-व्यवहारके व्यावृद्धिपर आधारित होनेके ही समस्त समाजको मुख और सन्तोषकी प्राप्ति हो सकेगी। ता भी ये प्रयत्न अुल्लेखनीय रूपसे सफल हुअे प्रतीत नहीं होने।

यह कल्पना अति प्राचीन कालके प्रचलित रही है कि मनुष्य बुद्धिवादी प्राणी है और अूमकी बुद्धिमें सत्यका जाननेकी शक्ति है। ज्ञान ही मनुष्यका अलकार है, यह सिद्धात हमारे यहाँ मान्य था। और ज्ञान ही सद्गुण है, यही सांकेटीकता सिद्धातन था। आधुनिक कालमें पाश्चात्य देशोंमें बुद्धिपूजाका पुनह उजीवन बडे अुत्साहसे किया गया, परन्तु अिन बुद्धिपूजाकी अुद्धा प्रत्यय व्यवहारमें, अिस समय बहुत

अशोमें, विफल प्रतीत होती है। प्रत्यात अ्येज लेवक जाज वनाइ शाका अनुभव बहुत अुद्भोषक है। बुद्धिवादी अिअ्लण्डमें पठ हुअे अिस प्रतिभाशाली पुरुषको तर्णा-वस्थामें अँसा प्रतीत हुआ कि यदि समाजके सब वर्गोंमें पर्याप्त ज्ञानका प्रसार किया जाअे तो समस्त अन्धाय और विपमताका अ्पने आप अत हो जाअेगा। अिसलिये अ्पनी बाणी और कलमकी सहायताम ज्ञान अिअ्लण्डकी अखिल जनतापर ज्ञानकी मूसल गार वर्षा की। तथापि अुसे यह स्पष्ट हो गया कि समाजकी कियामूस्यता कम नहीं हुअी। अुने यह दिखा कि लोगोको विशय प्रवृत्ति व्याख्यान प्रवचन सुनन अथवा निवन्ध पढ़नेकी और न होकर रगभूमिकी ओर होती है। यह ममझनपर अुसने अ्पन विचारोका प्रचार करनेके लिये रगशाळाका आश्रय लिया और मनोरजनके लिये अेकत्रिन मव स्त्री-पुरुषोको ज्ञानी बनानेका निश्चय किया। परन्तु २४ वर्षोंमें अधिक समय तक यह नयी साधना करीपर भी शा को अिष्टसिद्धि नहीं प्राप्त हुअी। अन्तमें अुसने निराश होकर यह नाटकीय घोषणा की कि, प्रचलित मानवप्राणी आदर्श समाजके निर्माणके लिये स्वभावसेही अ्याय है और आदर्श समाजके निमित्त नवमानव, 'अतिमानव निर्माण करनेकी योजना करने चाहिये।' बुद्धिवादके पगभ्रमको यह स्पष्ट घोषणा है। अिनका निष्कर्ष यह है कि मनुष्यमें बुद्धिकी अ्पेक्षा भावनाका और विकारोका अिअ्न प्राधान्य है और तर्क बुद्धिसे प्राप्त ज्ञान मनुष्यको सकुप शक्तिका अाअन नहीं कर सकता। आजकल पाश्चात्य विचार-धाराम बुद्धिवादके विरुद्ध प्रतिक्रिया आरम्भ हुअी दिखती है। मनुष्यके जीवनपर विकारोका प्रभुत्व रहना है और अुसको बुद्धिपर भी विकारोका अधिपत्य होनेके कारण बुद्धिवाद नामके अतर्गत सत्यके अिअ्त दर्शनकाही प्रसार होना है। यह बात बहुनके विचारकोके ध्यानमें आने लगी है। अनेक लखकोने अिस आशयके विचार व्यक्त किये हैं कि यद्यपि मनुष्यको स्वयके मुखकी अिअ्ठा हाती है तो भी अुसकी सामान्य प्रेरणाअें बहुधा बुद्धिविरोधी और बहुत अशोमें दुख निर्माणका ही कारण होती हैं। अुदाहरणार्थ बट्टेण्ड रसलने अ्पने विविध प्रयोगों मुखी समाज निर्माण करनेकी अनेक कल्पनाओका विवेचन

किया, परन्तु अतर्पे हताश होकर उसने ये अद्भुत प्रकट किये हैं कि 'मनुष्य स्वयं अपने विनाशकी योजना करनेवाला प्राणी है ।'

सामाजिक ध्येयवादके विफलतापूर्ण इतिहासकी यह कहानी कितनी ही वरणाजनक क्यों न हो, फिर भी मानकी अत वरणका पूर्णताकी आरंभ विधाव मनुष्यको कभी सम्पूर्ण रूपसे निराश नहीं कर सकता और आज तकके प्रयागवीरानो किन्तीही असफलता क्यों न प्राप्त हुआ हो, नये प्रयोगवीर नये अज्ञानहमे अग्रसर हुये विना नहीं रह सकते । अतनाही नहीं, बल्कि प्रत्येक असफलता मनुष्यके ध्येयवादीको अधिकाधिक शुद्ध करती जायगी । मूर्खके अतिहासमें मानव मस्कृतिके प्रयोगका आरम्भ हुन बहुत धाडा समय हुआ है । यदि साधक्य दृष्टिमें देखा जाय तो मानव-समाज अभी बाल्यावस्थामें ही है । अपने जीवनकी आंतरिक प्रेरणाआका असे यथायथ आकलन नहीं हुआ है । अिम कारण असे मुखकी अिच्छा होने हुये भी, मुखका मार्ग स्पष्ट रूपसे नहीं दिखता और यदि असे दिखेभी तो वह अमपर स्थिर रूपसे नहीं चल सकता । मानव हृदयमें पूर्णताकी जो प्रेरणा है वह असके देवी अदाकी द्योतक है । परन्तु अभी असे देवी अदाकी अमने अखिल जीवनमें प्रभुता स्थापित नहीं हुआ है । असा कि सलील जिज्ञानने अपने 'Prophet' नामक घषमें कहा है—

'Much in you is still man,
And much in you is not yet man,
But a shapeless pigmy that
Walks asleep in the mist,
Searching for its own awakening'

मनुष्यमें अभी अमानव अश ही बडे प्रमाणमें विद्यमान है और दीर्घ तपस्याके पदचान ही यह अदा मानवताका स्वरूप ग्रहण कर सकेगा । रवीन्द्रनाथने कहा है, कि विधाताके हाथमें बाल अवन है । अमे जन्दी नहीं है ।

'प्रतीषथा वरिते जानी शतषधे घडे
अकटि पुरेरे कलि पृष्ठाशर तरे
अले तथ धोर आयोजन ।'

विधातामें विधासकी प्रतीषथा करनेकी शक्ति होती है । अक पुष्पकन्धी खिलानेके लिये अमकी नयारी संकडो वर्षोंसे मन्द गतिमें चलती है । परन्तु मनुष्यमें धर्य नहीं होता । असे फलके आस्वादकी आतुरता होती है, अिधोलिये वह अत्याचारी और अथडालु बनने लगता है । यदि ध्येयवादीको किसीका भय है तो वह स्वयं असीके हृदयकी अतावलीका है । मानकी-पूर्णताका कार्य किमी अक व्यक्तिका नहीं । वह विधाताका विरडकार्य है । वह यथा समय सफल हुये विना नहीं रह सकता । यदि ध्येयवादी पुरापने अपने हृदयको प्रेरणामे सत्यनिष्ठ रहकर अपनी शक्तिके अनुमार स्वकर्तव्य किया तो सम्भलता चाहिये कि अमका कार्य पूरा हो गया । तात्कालिक फलके मोहमे अमे अपनी श्रद्धाका नाश करना अचिन्त नहीं । अिमी अर्थमें ही अनामकित-योगका अपदेन सभी तत्वज्ञाने किया है ।

मदि न्याय तथा मुखमें नत्वन विरोध न हो, तो आज नहीं कल, सामाजिक जीवनमें अिस मिद्धातका सबको विदवास अवश्य होना चाहिये । परन्तु यह विदवास स्थापित होनेके लिये समाजको अनेक अघात सहन करने पडेगे । असके हृदयके अज्ञानो-विनाशकी विवेकाकित होनेके लिये कदाचित अनेक आपत्तियोंने गुजरना पडेगा । समाजके जानी व्यक्तियोंकी समाज-दुषके सम्बन्धमें कितनी ही दया क्यो न मालूम ही, फिर भी अवेक्षित समाज-व्यवस्था त्वरित मूर्तस्वरूप नहीं धारण करेगी । केवल साधिक अुपदेशसे विधेय कार्य नहीं होगा, अितना ही नहीं, अिधनु प्रत्यय अुदाहरणमें भी शीघ्र कोअी भारी परिवर्तन होनेकी सम्भावना नहीं । फिर भी ध्येयवादी लोगोकी कृतिमें तथा अकृतियोंमें समाजके अन्तर्गतपर मतन शुभ संस्कार होने रहने है और अन्तमें अरुणीके कारण समाजका हृदय-परिवर्तन होगा । समाज मुखके लिये समाज-शुद्धिकी आवश्यकता है, और सामाजिक शुद्धिके लिये समाजमें मगल-भावनाआके सनन आवाहनकी आवश्यकता है । अिम कारण, यद्यपि 'बुडतो हे जन न देपरे डोळा, म्हणोनी कडवळा' अुपप्र होना आवश्यक गुण है, तो भी समाज हितके लिये भी 'पिडूत वाडिती या लोका' की वृत्ति कभी भी अपकारक नहीं होगी ।

कारण निरिधी भी हिमात्मक साधनसे समाजके अन्तर्मनकी वृद्धि नहीं होती, अतः विपरीत अहंकार और अविशेषकी ही वृद्धि होती है। यह ममज्ञानका वासी कारण नहीं कि हिमाका अर्थ केवल पाशवी-गवितका अप्रयोग है। नैतिक मूल्योंकी श्रेष्ठता प्रतिपादित करनेमें यदि अवहेलना और असहिष्णुताको अंगीकार किया गया तो हिमाका ही आशय लेना हुआ। जिस कारण समाज वृद्धिके प्रयत्नोंमें दंडधारी राजा, कर्मठ शास्त्रज्ञ अथवा अज्ञानके शास्त्रज्ञ सदा विफल होने जाय है और अधोपक्षे क्रोधका, साधुनासे असाधुना अथवा अहिंसासे हिंसाका प्रतिकार करनेवाले प्रसन्न सत्तोंकी ही समाजके मानसिक जीवनमें अटल पद प्राप्त हुआ है।

सामाजिक ध्येयवादीने अतिहाममें यह श्रेक विरोधाभास नित्य देखनेमें आया है कि वृद्धिमान तथा साधनसम्पन्न वर्ग ध्येयजीवनसे धीरे-धीरे भ्रष्ट होता जाता है। असावी ध्यायवृद्धि मालिन अथवा विवृत होने लगती है और असावी जीवन-श्रद्धा भी लुप्त हो जाती है। परन्तु वृद्धिहीन तथा साधनहीन सामान्य जनताके ध्येयवादीका आचार सत्तामें न सधे फिर भी असाके हृदयमें ध्येयवादी गुणको विषयमें मक्ति रहती है और सामाजिक सत्ययुक्तकी प्रतिष्ठापनाने सम्बन्धमें श्रद्धाका दीप कभी नहीं घुसता। यह स्पष्ट है कि सामाजिक-ध्याय-प्रस्थापनापर ही व्यावहारिक गुणका निर्माण अवलम्बित होनेके कारण सामान्य जनताके लिये यह श्रद्धा अपरिहार्य है।

प्रत्यक्ष जीवनकी अर्थ-काम-प्राप्ति और परोक्ष जीवनकी मोक्ष सिद्धि अति दोनो अंगोंका साधन धर्म ही है। प्रत्यक्ष और परोक्ष ये श्रेक ही जीवनके दो अंग हैं। ये दोनो अंग तत्त्व अविरोधी ही होने चाहिये। धर्मका सशोचन तथा सस्थापन करनेवाले जीवनार्थार्थ मोक्षके अंतरणकी और स्वभावत ही

अभिमुख होनेके कारण असाके सम्बन्धमें धर्मसाधना निष्पन्न तथा निरपेक्ष जीवन-श्रुति हो जाती है। असीमें असा निरतिशय असात्मिका लाभ हाता है और असाके सहज ही यह अविच्छा असात्मन होन लगती है कि यह आनन्द अपने असात्मनो भी असात्मन्य कराया जाय। सामान्य लोगको अपने व्यावहारिक जीवनके अर्थ-काम विषयक प्रश्नोंको हल करनेके लिये धर्मका, न्यायका आशय लेना पडना है। जिस कारण व व्यावहारिक साधनके रूपमें असा जीवनार्थार्थों अप्रवेष्टका आदर करते हैं। फिर भी सम्पूर्ण अहिंसाके जीवनके सब व्यवहार सिद्ध करके दिखानेवाला श्रेष्ठ जीवनार्थार्थका असा निर्माण होना श्रेय है और व्यवहारका मोक्षसे मेल दिखलानेवाला धर्म भी असा सिद्ध होना है। असा दृष्टिके देखनेपर यह कहनेमें कोसी हाति नहीं कि सत्या-श्रद्धाका मार्ग सम्पूर्ण जीवन धर्मका श्रेक महान् प्रयोग है और म गाधी जिस धर्मके पहिले आचार्य हैं। लोकनायक असाके महा-माजीको अपरोक्ष श्रेक असात्मन अहिंसा धर्मकी विकरता सिद्ध करनेका प्रयत्न किया था। असापर म गाधीने जो असात्मन दिया वह मन्वे ध्येयवादीके द्वारा असात्मनपूर्वक हृदयमें रखा जाने योग्य है। लोग अर्थ-काम प्राप्त करनेवाले धर्मका सेवन क्यों नहीं करते ? म, गाधीने ध्यायके आक्रोशका यह अर्थ किया कि ध्यायके असात्मन धर्मनादकी आवश्यकता ही सिद्ध होती है और समाज-सन्धानकी चिन्ता करनेवाले धर्मका ही असात्मन किया जाना चाहिये। आदर्श समाज निर्माण करनेवाले प्रथम ध्येयनिष्ठ साधकों, असाके विचारके, असाके श्रद्धा जीवन रचना चाहिये तथा असाके असात्मन ध्येयवृद्धिके निमित्त मरण श्रेक श्रेक लिये भी तैयार रहना चाहिये क्योंकि असा ध्येयवादी प्रयत्न वाह्यत चाहे असात्मन दिव्य परन्तु जीवनकी असात्मन सफलताकी ओर ले जानकी शक्ति असात्मन रखता है।

(मराठीसे अनुवादक:— श्री राजेन्द्रप्रसाद भट्ट)

कहावत और न्याय

प्राध्यापक श्री कन्हैयालाल सहल अेम अे

सन १८७७ बी २१० Buhler की वास्मोर रिपोर्में 'न्याय' शब्दका प्रयोग परिचित अुदाहरणोंमें निम्नानु हुअ अनुमान के अर्थमें किया गया था। कनल जकबन 'न्याय' क पर्यायक रूपमें Maxim शब्दका ग्रहण किया था किन्तु अिस पर्यायमें वे सन्तुष्ट नहीं थ। अुहान तो केवल बड बड विद्वानों द्वारा 'न्याय' क अर्थमें गृहीत Maxim शब्दका देखकर ही अिसे अप नाया था अथवा अुनकी मायना थी कि अग्रजी नायामें 'न्याय' के अर्थका पूरण व्यक्त करनेवाला कोअी अुपयुक्त शब्द है हा नहा। अुहान न्याय के अन्तान दृष्टान्त नियम और अधिवरण तीनाका सन्निधन किया था। अग्रजीका Maxim शब्द अितना व्यापक नहीं कि वह अुक्त तीना प्रकारके अर्थोंका वाचक बन जाअ। अिमलिअ जकबके मतानुसार तो "न्याय" शब्दका अग्रजी अनुवाद न करके अग्रजी भाषामें भी अिसे ज्योका त्या ग्रहणकर लेना चाहिये। *

हिन्दी शब्द 'मागर' के सम्पादकोकी दृष्टिमें 'न्याय' वह दृष्टान्त-वाक्य है अिनका व्यवहार लाइमें कोअी प्रसंग वा पडनपर होता है। यह कोअी किल्लवप घटना सूचित करनेवाली अुक्ति है जो अुपस्थित बानपर पडती हो। 'न्याय' क पर्यायक रूपमें सम्पादकान कहावत शब्दका भा प्रयोग किया है। अंसे न्याय या दृष्टान्त वाक्य बहुत प्रचलित चर आन ह और अुनका व्यवहार प्राय हाता है।

'मस्कृतमें लौकिक' न्यायक अलगत बहुरसम्यक सूत्र अम सम्यक। या अुमन पालकी लाक-विभूत कहावतें हैं। अुममें अा युक्तिमूलक दृष्टान्त ह व किमी अक सम्यके नहा अिअ अिअ परिस्थितियोंमें पहकर बडिमानाका अा मच्च अनुभव हुअ अुदाका अुहान मृगबड कक जनताको चीर दिया। जनान अुनको

* लौकिक न्यायश्रुति तृतीया भाग पृष्ठ २

अुपयोगी समनकर अपना लिया। अिनो प्रकार मुक्त भागिमाके कितन ही सच्च हृदयोदगार लोकोक्तिनकि रूपम प्रचलित हो गय। +

मस्कृत-माहित्यमें सह्या स्थलापर न्याय का प्रयोग हुआ है। अिनका व्यवहार अधिकतर टीका लिपिणी, समालोचना व्याख्या शका मनाषान आदिमें देखा जाता है। ध्यानपूर्वक मनन करनेसे यह मवदा स्पष्ट हो जाअगा कि न्याय में किन्ती घटना, किन्ती कहानी अथवा किमा विगप अथके बृहत भाव-मूत्र रूपमें गुम्फित रहन ह। देखनमें छात्र लों, छात्र कर गम्भीर वाली अुक्ति यहा अकरण चरिताय होती है। 'न्याय' आकार प्रकारमें तो बहुत छोटा हाता है पर भाव बहुत गभीर रहता है। पूव समयमें मृदग-यत्रक अभावके कारण मूत्र पडति प्रचलित थी और अिससे लाकाकिनियां भा 'न्याय' शब्दक नामपर मूत्र रूपमें ग्रथितकर दी गयी थी। प्रयोगमें 'न्याय' शब्द भी जुटा रहता है। यथा, धुणाकरपरन्याय काकतालयन्याय पत्रप्रवदालनन्याय स्थालीपुलाकन्याय। न्याय शब्दका व्यवहार कभी अुपमा कभी नियम कभी निदान्त कभा अुक्ति कभा कहानी तथा कभी विगप वाक्य अयम होन पाया गया है। प्रमगानुसार अयव्यजना हाती है। प्रत्यक 'न्यायमें विगप भावकी व्यजना रहती है और ध्वजा तनक रूपम अिसका प्रयोग होता है।'

मस्कृतक बहुतस निबन्धोंमें 'लाकप्रमिदयुक्ति' का वाचकी मना दी गया है।^२

+ मालवी कहावतें नाग १ का प्राकरदन ९० रामनरा त्रिगणी पृष्ठ २

१ मस्कृत लाकाकित-मुषा (या जाअम्वागरन) पुस्तक परिचय (स) और (ग) पृष्ठ

२ लौकिकप्रमिदयुक्ति-न्याय (मुमिका मुवतग लौकिक न्याय साह्या)

लोकहित और न्याय दाना भेद ही हैं अथवा जिन दोनामें अन्तर है अगपर विचार करना आवश्यक है। न्यायके स्वरूपका विवेचन करनेसे निम्नलिखित तथ्योंपर प्रकाश पड़ता है—

१ अन्व न्याय अंसे हैं जो केवल पदान्मक हैं। "मात्स्य न्याय, मृत्पिण्ड न्याय" आदि बुदाहरणस्वरूप रचे जा सकने हैं। विद्वद्वर्गें दायद ही कोभी अंसी लोकहित हो जो केवल अत्र पदमें समाप्त हो जाती हो। छोटी-मे-छोटी लोकहितके लिखे भी कम स रम दो पद आवश्यक हैं। ट्रेचने मतानुसार Voll, toll जर्मन लोकहित दुनियाकी मजमे छोटी कहवत है।

२ बहुतसे न्याय अथवा अधिकांश न्याय अंसे हैं जो द्विधास्वस्मक हैं और जिनका सम्पूर्ण वाच्यता भाति प्रयोग नहीं होता। बुदाहरणार्थ कुछ न्याय लीजिये— अजातपाणी न्याय, अन्धगज न्याय कान्तात्रीय न्याय, कूपमण्डूक न्याय, जामातृ दुष्टि न्याय आदि। अन्व सभी न्यायोंन मूलमें कोओ न कोओ कथा मिलनी है जिसको जाने बिना अिन न्यायाका स्फटोत्तरण नहीं हो सकता। चहुन ही कहावत भी अंसी होती हैं जिनके पीछे कोओ न कोओ कथा पायी जाती है, किन्तु कहावत सामान्यत सम्पूर्ण वाच्यता भाति प्रयुक्त होती है, दो-दो शब्दोंके पदांशकी तरह नहीं। कहावती रूपमें क्रियाका कभी-कभी अभाव होनेपर भी क्रिया सदा गम्य रहती है।

३ कुछ न्याय अंसे हैं जिन्हें लोक-प्रसिद्ध अप-माओका नाम दिया जा सकता है। अपरवृष्टि न्याय, करस्यामलक न्याय, चन्नमण न्याय, अरण्यारोदन न्याय, अजागलस्तन न्याय आदि बुदाहरणस्वरूप रचे जा सकते हैं। कहावती अपमाओके भी बुदाहरण मिलने हैं किन्तु लौकिक न्यायोंमें जिन प्रकारकी अपमाओका प्राचुर्य दुष्टिगत होता है।

४ अनेक न्याय अंसे भी अपलब्ध हैं जिन्हें यदि लोकहित अथवा कहावतका नाम दिया जाये तो किसी प्रकारका अनौचित्य नहीं दिखलायी पड़ता। नीचे जो बुदाहरण दिये जा रहे हैं उनमें लोकहितके सभी स्वयण मिलते हैं—

रा भा १०

(क) अकं चेन्मधु विन्देत किमयं पर्वत द्रजेत् । यदि गभीर ही मधु मिलता हो तो पर्वतपर जानेसे क्या प्रयोजन ?

(ख) भयिपतेषु लघुनेन शान्ता व्याधि । लहसत सानपर भी रोग शान्त न हुआ। जँकवने जिस न्यायके लिख Maxim ताका प्रयोग न कर Proverb शब्दका प्रयोग किया है।

(ग) वर सागयिकान्तिष्कादगासयिक कार्पापण । अनिश्चित निष्पत्ती अपेक्षा निश्चित कार्पापण श्रेष्ठ है।

(घ) वरभय कपोत श्वो मयूरान् । कठके मयूर (मोर) से आजका कपोत (कबूतर) अच्छा। वात्स्यायन कामसूत्रके द्वितीय अध्यायमें ग और घ मन्त्रन्धी अुक्तिवो का प्रयोग हुआ है, जिन्हे जँकव भी proverbs कहना ही अपयुक्त समझते हैं।

(ङ) अन्धस्य बान्धलमनस्य विनिपात. पदे-पदे । जो अन्धके महारे लगा है अुने पद-पदपर गिरना पड़ता है। जिस न्यायका प्रयोग भामनीमें हुआ है जहाँ अिनका "आभाषक" शब्द द्वारा अुल्लेख किया गया है। "तथा चामाणक अन्धस्य बान्धलमनस्य विनिपात पदे-पदे ।"

(च) सर्वं पद हस्तिपदे निमग्नम् । हाथीके पैरमें सब पैर समा जाते हैं।

(छ) शीघ्रं सर्पो देवान्तरं वँद्य । सर्प मिरपर और वँद्य देवान्तरमें।

(ज) विधीने करिणि किमकुसो विवाद । हाथी बिक जानेपर अकुसता विवाद कैसा ?

(झ) पुत्रलिप्ताया देव भजन्या भर्ता वि नष्ट । पुत्र प्राप्तिकी अिच्छामें देवताकी अुपासना करती हुआका पति भी नष्ट हो गया।

(ञ) बराटका वेपणे प्रवृत्तदिचभ्नामणि लब्धवान् । कौडीकी ललाश करते हुअे चिन्तामणि हाथ लग गयी। पचीरकी साभियामें अिसका निम्नलिखित रूप अपलब्ध होता है।

"घोस्टे चिन्तामणि चढी, हाथी भारत हाथ ।"

५ कुछ न्याय अंश भी हैं जिनके कहावती रूप आज भी अपलक्ष्य होते हैं। अुदाहरणार्थ—

(क) गोमहिषीन्याय ।

अेक राजस्थानी लोकोक्तिमें कहा गया है कि “गायकी अंशके लग्नं और भंसरी गाय के लग्नं ?” अर्थात् गायका भंसरे क्या सम्बन्ध और भंसरका गायसे क्या सम्बन्ध ?

(ख) तरक्पडाविनीन्याय । इसी न्यायका प्रतिरूप “डाकण और जरख बडी” राजस्थानी भाषामें अपलक्ष्य है ।

६ जैकब द्वारा संग्रहित और सम्पादित “लौकिक न्यायाञ्जलि” में वही-वही न्यायके स्थानमें “निर्दशन” और “नियम” शब्दका प्रयोग हुआ है। यथा—

(क) तम प्रकाननिदशनम् अर्थान् अधकार और प्रकाशकी युगपत् स्थितिका दृष्टान् ।

(ख) तैलकलुपितशालिव्रीजादकुरानुदयनियम ॥ अर्थात् तैलसे कुलपित शालि बीजके अकुरित न होनेका नियम ।

७ वही-वही प्रश्नोत्तरके रूपमें भी न्यायोंके अुदाहरण मिलने हैं। जैसे—

(प्रश्न) जागति लोको ज्वलति प्रदीप
सखीजन पदपति कौतुकं मे ।
वर्णकमात्रं कुरु वात पयं
बुभुक्षितः किं द्विकरेण भुक्ते ?

(अुत्तर) जागर्तु लोको ज्वलतु प्रदीप
सखीजन पदपतु कौतुकते ।
वर्णकमात्र न करोमि पयं
बुभुक्षित न प्रतिभाति किंचिन् ॥

लौकिकन्यायाञ्जलि प्रथमो भाग ।

वही पृष्ठ ४८

भुवनेश्वरीन्याय साहस्यी पृष्ठ १८५ ।

वही पृष्ठ २३ ।

भुवनेश्वरी लौकिकन्यायमाह्वीके मपादकने “बुभुक्षितः किं द्विकरेण भुक्ते” और “बुभुक्षित न प्रतिभाति किंचिन्”की न्यायमें गणना की है ।

८ न्यायोंमें अेक आभाणक-न्यायकी गणना की गयी है । ‘वराटकान्वेषणे प्रवृत्तदिचनार्माणि लब्धान्” अिते आभाणक-न्यायके अन्तर्गत रखा गया है । आनन्द धनवृत्त कुमुनाय-मनवन भी अिस सम्बन्धमें द्रष्टव्य है, जहाँ कहा गया है—

“रजनी वासर वसती बूजडु, गयण पयाली जाय ।
साँप छाय नै मुछडूँ थोयो, अे अूरवाणो न्याय ॥”

साँप दूमरेको काटता है विन्तु अिसमें साँपका पेट नहीं भरता । अिसे “अूरवाणो-न्याय” या “आभाणक-न्याय” कहा गया है ।

९ कुछ कवियोंकी अुक्तियाँ भी अंश हैं, जिन्हें “न्याय” व अन्तर्गत कर लिया गया है । अुदाहरणार्थ—

(क) छिद्रेवचनयां बहुली भवन्ति (विष्णु शर्मा)

(ख) सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृता (श्रीमद्भगवद्गीता)

“न्याय” के अुक्त स्वरूपोंको देखनेमें स्पष्ट है कि सरवृत साहित्यमें “न्याय” शब्द अत्यन्त व्यापक है । अिसके अन्तर्गत लोक प्रचलित परदाँसों, प्रसिद्ध अुपमाओं विभूत दृष्टान्तों, सूक्तियों तथा आभाणकों अथवा लोकोक्तिओं सभीको स्थान मिल गया है । बहुतसे न्याय अंश हैं जिन्हें “कहावत”की मजा दी जा सकती है । अनेक न्याय अंश हैं जिन्हें पारिभाषिक दृष्टिसे “लाकोक्ति” तो नहीं कहा जा सकता विन्तु जो सूत्र शैलीमें अ्रथित अंश पद-अनुच्चय हैं जो अपनेमें गभीर अर्थ छिपाये हुए हैं । दार्शनिक ग्रन्थोंके भाष्योंमें अिय प्रकारके न्यायोंका प्रचुर प्रयोग हुआ है । “योगादूडिबंलीमयी” जैसे अनेक शास्त्रीय न्याय भी हैं जो कहावतीकी अपेक्षा सिद्धान्त, नियम आदि अधिक सन्निकट हैं ।

यही कारण है कि कहावत और न्यायके अनेक विवेचनमें शास्त्रीय न्यायोंकी जानबूझकर छोड़ दिया गया है ।

कलाचार्य श्री पंथे गुरुजी

: श्री रामेश्वरद्वयल दुबे, भेम. अ., साहित्यरत्न :

“यदि काशी प्राप्त-निवासी ‘लुव’ के चित्रालयकी वात नहीं जानता, या कोशी अंग्रेज लडनकी नेशनल गैलरीमें अपरिचित होता है तो वह अपने समाजमें सम्कारहीन गिना जाता है। परन्तु जिसे भारतनासी कला, कलाकार और कलासामाजिकी चर्चा करना बेवकाल नित्यले बेकार और आरामनलव मनुष्योना ही काम समझ बैठे है।”

गुजराने प्रसिद्ध कलाकार श्री रविदास रावलजीके अति शान्तिमें कलाने प्रति हमारी अपेक्षायारी करण कहानी कही गयी है।

किन्तु यह आजकी कहानी है, अतीतकी नहीं। कला और कलाने प्रति प्रेमकी दृष्टिसे हमारा अनोख ‘वम गौरवशाली’ न था। भारतीय कलाकारोंकी वे विभिन्न शक्तियाँ, जिनमें अपने हृदयका रंग छलका था, आज भी विद्यमान हैं, और यदि हम चाहें तो

अनुका रसस्वादनकर आत्मविभोर हो सकते हैं। उन महान कलाकार कवियोंके काव्य प्रथ, चतुर चित्रकारोंके चित्र चित्र पथरोमें मूढनाको अविन करनेवाले मूर्ति कारोंकी मूर्तियाँ, शीट-गन्धरवे सजारे सौन्दर्यकी मूर्ति करनेवाले शिल्पियोंके शिल्पकीशय आज भी हमारी प्रतीतना कर रहे हैं। किन्तु उन सबकी हमारी ममता नहीं, अपेक्षा मिल रही है। काम, हम सब अिनका सही-गही मृत्यावन कर पाते, उनके प्रति आदर और श्रद्धा व्यक्त करना सीख पाते !

अतीतको हम थोड़ी देरके लिये छोड़ भी दें, तो भी वर्तमानके कुछ कलाकार अैसे महान् हैं जो किसी कोनेमें पड़े रहकर अपनी अनवरत साधनाके द्वारा कलाकी भव्य सेवा करने जा रहे हैं। अित अर्थ-प्रधान युगमें भी, अिन कलाकारोंने अपना सम्पूर्ण जीवन अेकमात्र कलाकी अुगासनाने अर्पण कर रखा है। वर्तमान युगके अैसे कलाकारोंमेंसे कुछका परिचय जनताको प्राप्त हो चुका है, किन्तु अभी अनेक अैसे



कलाचार्य श्री पंथे गुरुजी

व्यक्ति हैं जिन और जिनकी कला-साधनाका ज्ञान बहुत ही थोड़े व्यक्तियोंको है। निलक राष्ट्रीय विद्यालय कामगाँव (जिला गुल्डाना मध्यप्रदेश) के आचार्य मीन साधक, कलाकार श्री पद्मगुप्ती अूनमें अेक हैं। नाँचेकी पत्नियामें अुनका सविपत परिचय-दनेका प्रयत्न किया जा रहा है।

कलाकार पद्मगुप्तीका पूरा नाम श्री मुकुन्द श्रीकृष्ण पन्थे है। आका जन्म १२ फरवरी

१९०३ को नरसिंहपुर जिला होशवाबादमें अेक मध्यम-वर्गीय ब्राह्मण परिवारमें हुआ था। पन्थेगुप्तीके पिता श्रीकृष्ण अपलाजी पन्थे बड़े ही अुदार तथा धर्मभीद व्यक्त थे। सन्त महात्माओंके प्रति वे विशेष श्रद्धा-भाव रखते थे, और हृदयसे अुनका स्वागत किया करते थे।

पन्थेजीका परिवार सुय-ममृद्धिसे सम्पन्न था। बाल-बच्योसे भरा हुआ घर अभावमें वचिन था। अैसे ही सुन्दर तथा धार्मिक वातावरणमें कलाकार पन्थे गुरुजीका दीशवकाल बीता।

पन्थेगुरुजीकी प्राथमिक शिक्षा नरसिंहपुर तथा होशंगाबादकी शालाओंमें हुई। किन्तु यदि मच कहा जाये तो उनकी सच्ची शिक्षाका प्रारम्भ प्राकृतिक सौन्दर्यसे सम्पन्न नर्मदा नदीके बसु तटपर हुआ, जहाँ की हरी-हरी लालियाँ झूम झूमकर हृदयको हरा कर देतीं और नर्मदा नदीकी लोल लहरे जीवनको सरस बना देती हैं। प्रकृति प्राणको यह रंगशाला बालक पन्थेको अिननी आकर्षक प्रतीत होती कि वह शाला न जाकर नर्मदा नदीके रेतीले तटपर बटुअे और मछलियोंके चित्र बनाना अधिक पसन्द करता था।

प्रकृति सौन्दर्यके प्रति अिन आकर्षणका अेक स्थायी प्रभाव श्री पन्थेगुरुजीके जीवनपर पडा। शहरकी भीड़-भाड़से अुन्ह अरचि है और अपने हाथो लगाये पेड़-पौधोंके बीच अपने कला भवनमें रहकर कलाकी साधनामें अुन्हें विगेष आनन्द मिलता है।

किसे ज्ञात था कि नर्मदा नदीके तटपर चिक्की मिट्टीने बटुअे और मछलियाँ बनानेवाली छोटी बुगलियाँ ही आगे चलकर मिट्टीमें सौंदर्य भरकर कलाकी प्राण-प्रतिष्ठा किया करेगी? खामगाँवके कला-भवनमें निमित्त होनेवाली सुन्दरतम कला-वृत्तियोंका आरम्भमूत्र नर्मदातटके अुन बाल-शिलीनोंमें मिलेगा, जो टूट-टूटकर भी अेक कलाकारका निर्माण कर रहे थे।

अपनी प्राथमरी शिक्षा समाप्त करनेके पश्चात अपने पिताजीके साथ बालक पन्थेकी नागपुर जाना पडा। अिनलिअे आनेकी पडाओका प्रबन्ध नागपुरमें ही हुआ। सन् १९१९ में आपने मेट्रिक पाम की। काल्जमें अिन्टरका दूसरा वर्ग चल रहा था। राष्ट्र-पिता पूज्य महात्माजीका अुत्सृपीय आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। अुपल-मुपलके अुस अंतिहासिक दिनोंकी आठ कल्पना भी नहीं की जा सकती। प्रपंच युवकके हृदयमें अेक डड अुठ गडा हुआ था। वह क्या करे? अपने स्वापीकी पूजा-आधनामें लगा रहे या देशकी अलिदेदीरग काम-अलिदान करे? श्री पन्थे गुरुजीके मनमें भी मयन अन्ता रहा। अन्तमें, जैसा अेक महृदय, भावी कला-कारके लिअे स्वाभाविक था, श्री पन्थेजीने देश-सेवाका

पथ अपनाया। वे कालेअकी ही नहीं, घर-परिवारको भी अन्तिन नमस्कार करके अुत्सृपीय आन्दोलनमें शामिल हो गये।

श्री पन्थे गुरुजीके जीवनकी यह पहली मोड थी। अिन नयी दिशाकी ओर जानेके लिअे अुन्हें दो वारोंसे प्रेरणा मिली। सन् १९२० के नागपुर काँग्रेस अधि-वेशनमें स्वयंसेवक बनकर आपने काम किया था। अुसी समय लाला लाजपतरायकी मेवा-सत्तनगला लान आनको प्राप्त हुआ। लालाजीके जीवनसे आप विगेष प्रभावित हुअे। अिनलिअे अब आप गांधीजीके अुत्सृपीय आन्दोलनमें अुडे तब आअम्न अविवाहित रहकर देश-सेवा तथा आमोअारकी दृड प्रतिज्ञाके साथ ही अुडे थे। और आज भी अुन देखते हैं कि श्री पन्थेजी अुसी तन्मयता, अुसी निष्ठा और अुसी अुद्धाके साथ दानों कापीमें लगे हुअे हैं।

युवावस्थापर भावनाओका रग्न रहना है। पंथेजीकी घासिक बातावरणका लान मिला ही था, मनमें यह विचार आया कि जीअवरी हुआ प्रसादके बिना लोक सेवा या देश-कार्य नहीं हो सकता। अुसी अुद्धेयसे आप रामहृणा मिसनमें सम्मिलित हुअे और श्रीअदर-भक्तिके साथ अत-सेवाका कार्य करने लगे। धीरे धीरे वैराग्यकी भावना हृदयमें न्यान पाती गयी। सन्यासी बनकर जीवन बितानेका निश्चय करनेका विचार हुआ। नागपुरके निकट रामटेक तीर्थमें रहकर अुठ मनपके लिअे आपने भगवा अन्त भी धारण किया था, किन्तु मनमें अन्त विचारोंकी भी आधियाँ चल ही रहीं थीं। न्वनव्रता सभामका अेक मन्थिय विगारी बनना अथवा केवल कल्पेयसव बनकर जीवन बिताना? अन्तमें देश भक्तिके प्रति आकर्षणको विजय हुआ। फलतः सुवागी मन्थारटमें आपने भाग लिया।

अुन दिनों मन्थारटही और जेलका घनिष्ठ सम्बन्ध था। घरबटा जेलमें आनको दृड संनयतक रहना पडा। यहीं आर सेनासति बाअट, शकरराव देव ओग महृन्ना गांधीके निकट सम्पर्कमें आये। सेनासति बाअटके अन्तत देअ-अेन, अुट्ट सेवा नाव तथा असीम त्यागने

आपका विचार स्वयं प्रभावित किया। पूज्य बापूत प्रवचनका शक्ति नित्य मिलता है था। जब कुछ व्यागमय नभस्यामय वातावरणमें बापूक सांनिध्यम जावनका सापना तबपर चरानका आपका स्वयं अवसर मिला। स्वयं समपणका भावना यदा पत्रवित्त प्रणित हुआ।

सन १००३ म आप घरवला जलम मुक्त हुआ। अक सन्तुष्टायाप्राक मजावर आपन विष्णु भ्रमणका विचार किया कुछ प्रयत्न ना किया किन्तु त्रिम मक पम आप मक न ही मक। त्रिपर वचनम ना कपार प्रति जा मन्त्र आरपण था वर अपना और साच र्णा हा था। वस्त्रा पदुषक आपन वस्त्रा स्कूट आफ आर मम प्रवण पाठरा प्रयत्न किया किन्तु यणी भी आपका मक न मिला।

वस्त्रा स्कूट आफ जातम प्राणम घटनवाण घटना साधारण न था। पत्र गुरुजा जमा मन्त्र कण प्रमी नवमुक्त बहा श्रद्धाक साथ अवन स्कूट प्रिमपत्रक पास प्रवण पानका जि छाम गया था। किन्तु अवनका वस भूपारा प्लक्षर हा गाण प्रमिपात्र भडक अठा। कथानि पत्रा सापारा था।

सम्भवन भारतीय हानक कारण था प र्णा ना अतुरक गाण प्रमिपात्रम मिला वह त्रिम प्रकार था—
You political lunatic! get out of my Art school otherwise I shall call my chaparasi to drive you out

स्वतंत्र भारतक नव नागरिक दामनारा अम विमोचिकाकी क र्णा भात कर मरण जा अवन त्रिना हमारा मक वर म वर ध्वनिवाक त्रि। निम्न अनुभवकी बात थी। किन्तु यह था तम गौरवका वाक न थी कि अवन दिना देणरा नव मुक्त समाज अिम तस्य भावनाक विरुद्ध अक तीव्र विद्रोहका भाव र्णक अठ सपना हुआ था और अमुका मह गुभ परिणाम है कि आज हम मुक्त गणतन्त्र नात स्वतंत्र वातावरणम मािम उ रह ह—हम स्वतंत्र ह।

श्री पत्रजीन वस्त्राक अम र्णा भवनमें फिर पर तब न रचनका नि चय किया। आप मध्य प्रणय तीव्र आप। अवन त्रिना नागरिकमें सहायक पायह चउ

रहा था। श्री पत्रजीन अमम मात त्रिया और फल स्वयं विर अवन र्णा नाता पहा। स्वानत्र मद्रामक अक निष्ठावान मिपाहा हानक कारण आन्तगतामें मन्त्रि भाग र्णा और र्णा जाना ही प्राय अवन त्रिना आरका वायक्रम रहा करता था। श्रिस्तत्रि आपका कण पिपासा अवन हा वनी र्णा।

सन १९२६ म कुठ मिवाक आपरुस आपन स्वामगाव त्रिक् राष्ट्रीय विद्यालयमें काम करनका निश्चय किया। अवन त्रिनाक स्वयंमय न वनक पत्रान अक स्थिर जावनका यणी प्रारम्भ हुआ। श्री पत्रजीन अनुभव किया कि व यहाँ अम प्रकारका अवातन वातावरण प्राप्त कर सकण निमक। आवश्यकता कण आपनाक त्रि अ हुआ करता है।

यह कहना ठाक हा हागा कि श्री पथे गुरुजीकी कण सापनाका वास्तविक प्रारम्भ स्वामगावक राष्ट्रीय विद्यालयम ही हुआ। और यहाँ वह विद्यालय है निमम अुहान अवन स्वल्पाता साकार र्ण र्णा प्रयत्न किया। श्री पत्र गुरुजीन अवनका अिम राष्ट्रीय विद्या लयमें अिम तरह र्णा त्रिया कि आज अवन और अवन विद्यालयम विमन् नहा रह गया है।

अपना सापनाक प्रारम्भ काणम था पत्र गुरुजीन भारतक प्रदान प्रदान कणकागाण परिचय प्राप्त किया तथा अवनका कला पद्धतियाका अध्ययन किया। अध्ययन और आम प्रणालि वरपर कणक विविध रूपको अुपामना चलना रहा।

सन १०३० २२ त आन्तगतम अपनी दणमन्त्रिक दस्त्वस्वय आपका फिर जल जाना पना। वहाँम मुक्त हानपर अणन दनिषण प्र ग तथा श्री र्णाकी कण याप्रा का। द्राविड गिण कणम आप विचार प्रभावित हुआ और वहाँका मूनिषाका आपन अठका अध्ययन किया। स्वामगावक कण भवनम आपक द्वारा निर्मित नन्दाजकी त्रिश्च और भव्य मूनिषा दणन भाव विमोर वनाय विना नहा रोडना।

अजना और अलोराक कला मन्त्राका ना आपन बड़ी श्रद्धाम अध्ययन किया है। आपन अतुर नारपमें नी घुम घुमकर विभिन्न स्थानाका कण इतिहाको दला

है। हिमालय-शायामें आप जुम प्रकृति देवीके निकट सम्पर्कमें आये जो कलाकाराको नव-स्फूर्ति और नव-रचनाकी मज्जुल प्रेरणा दिया करती है।

वर्तमान भारतीय कलाकारोंमें आप सबसे अधिक शान्तिनिकेतन-निवासी श्री नन्दलाल बोसमें प्रभावित हूँ। श्री पन्धेजीको अनुसे कला सम्बन्धी अनेक विमोच दृष्टि प्राप्त हुई है।

काँग्रेस अधिवेशनके साथ हीनेवाली अनेक प्रदगिनियोंमें आपने काम किया है। अन्ही मौकोंपर आप कला विषयपर बापूके निकट सम्पर्कमें आये और उनकी प्रेरणामें ग्रामीण कलाकारोंके पुनरुद्धारकी ओर आपका ध्यान गया। इस दिनामें आज तक आपने स्फूर्तीय प्रयत्न किया है। राष्ट्रीय क्षेत्रमें आपकी कलाका विमोच आदर है। हैदराबादमें हूँ काँग्रेस—प्रधिवेशनके अवसरपर आपहीने प्रदर्शनों तथा पडाल आदिके द्वाराकी अपनी कला-सृष्टिके सुन्दर रूप दिया था, जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा मनीने की थी।

सामग्रीका तिलक राष्ट्रीय विद्यालय, जिस अनेक कलाधाम की मजा दी जा सकती है, श्री पन्धेगुप्तजीकी कल्पनाओंका मूर्त रूप है। दिन प्रतिदिन अनेक आकर्षक बनानेका अनुका प्रयत्न जारी रहना है। इस विद्यालयके प्रति अनुकी समता भी सीधी नहीं है, किन्तु यह समता अनुके कर्तव्य-कार्यमें बाधा नहीं बन करती। व्यापक मानव-जीवनकी ओर दृष्टि रखने और जननी जन्म भूमिके प्रति अगाध प्रेमके वाग्म्य मन ४२के आन्दोलनमें आप सीधी वार जेल गये। इस वार जबलपुर जेलमें मेड गोविन्ददास, व्याहार राजेंद्रसिंह, लक्ष्मणसिंह चौहान आदि देगभक्त साहि यकारोंके सम्पर्कमें आये। श्री पन्धेगुप्तजी जेलमें रहे अथवा जेलके बाहर, कला सम्बन्धी अनुका अध्ययन और मनन सर्वत्र चलता रहा। 'अने भारतीय आत्मा' श्री पंडित मानलालजी चतुर्वेदीके कलाविषयक विचारोंके जाननेका मुन अवसर सामग्रीके विद्यालयमें ही आपको मिला, जहाँ वे अनिधि होकर अनेक

दिन रहे। अमरावती निवासी डाक्टर पटवर्धनजीकी सक्रिय सहानुभूति यदि आपको न मिली होती, तो आपकी कला-कृतियाँ समाजके सामने न आयी होतीं। डाक्टर साहबके द्वारा ही नेताजी मुभापचंद्र बोसका आसीर्वाद आपकी कला-साधनाको प्राप्त हुआ था।

श्री पन्धेगुप्तजीकी जीवन-प्रवृत्ति राजनीतिकी ओर नहीं है। फिर भी, जब तक देश पराधीन था, राजनैतिक सप्राप्त जीवन कार्यका अनेक अंग बन जाना अनिवार्य था। प्राणवान कला-अनुपानक अिन नक्षत्रोंसे भागकर किमी अंतर्गत कोनेमें बैठकर अपनी कला-निर्मिति कैसे कर सकता था ?

बिसीने ठीकही कहा है कि "कलाकी प्रेरणाका श्रोत जीवनके सघर्षमें है। संघर्षमें सत्, दिव और मुन्दरको हंडकर अनेक सत्य, स्वभाव, वर्ण-छटा आकार रूपमें प्रकट करना कलाकारका काम है। वह दुनियाके प्रमुख शान्ति दानोंमेंसे अनेक है। "Composer, Sculptor, painter poet, prophet—these are the peace makers of the World" अन्के हाथोंमें जन्म पायी हुई कला, अन्के हृदयमें भरी हुई अपार शान्ति प्रेमकी धारा बहती है, जो ड्रेप, मस्तर, भूरतासे जरी-भुंजी मानव-ताकी भूमिका सिचनकर असे हरी-भरी करती है।

मनुष्यके जीवनमें सकारोंका अनेक महत्वपूर्ण स्थान है। श्री पन्धेगुप्तजीको अपने प्रारम्भिक जीवनमें जो सात्विक तथा धार्मिक वातावरण मिला, अनेक आपके जीवनपर गहरी छाप डाली। कला विषयक आपके विचार असी सात्विक प्रभावकी छायामें विकसित हुअे हैं।

कलाके सम्बन्धमें आपने जो अपने स्पष्ट विचार अपने अनेक पत्रमें व्यक्त किये हैं, अनुकी यहाँ बुद्धुत करनेका लोभ सम्बरण नहीं कर पा रहा हूँ।

"कलाकी में सम्प्रदायकी चीज नहीं मानता। वह निर्मल गुड जलके समान पवित्र है। धर्म, पथ, सम्प्रदायकी अनुयायी कला अपना मनु स्वस्वर प्रकट नहीं कर सकती। कला और कलाकारके लिए देग, धर्मकी सीमा अचिन्त नहीं।

कला राष्ट्रकी अक अमूय निधि ह । समाज और राष्ट्रका हृदय कलाद्वारा पहचाना जाता है । इसलिये कलाकारको जिस अमूल्य राष्ट्रनिधिको भ्रष्ट होना नहीं देना चाहिये । "यवित समाज राष्ट्र-अनका सम्बन्ध कला द्वारा जाड़ा जाना है । इसलिये कला और राष्ट्र अभिन्न ह ।

अपनी कला-दृष्टिके सम्बन्धम आग आपन लिवा है—

सौभाग्यवश मरो जीवन ध्यय दृष्टि साविक आग तथा कला-स धना देगक महान पुण्योके प्रयत्न सानिध्यम प्राप्त हुआ है । पूय पिताजीकी दार्शनिक प्रवृत्तिका प्रभाव भी पग्य ही है ।

अक बार अिन पत्रिनयोका लेखक तिलक राष्ट्रीय विद्यालयम हा बडा श्री गम्जीमे कला चर्चा कर रहा था । कला सम्बन्धी प्रारम्भिक प्रश्नोकी वात करते हुआ अहोन बताया कि— मरी माताजी कला "दकी न जानती होगी चिन्तु वे कलाकी आमाको पहचानती थी । अक दिन म नहाकर घर पहुचा । भूल लग रही थी । इसलिये जदीम अपनी मोली घासी आगमके तारपर योही बहग गीरमे फला दी । रसाओ धरम बडी मान यह दख लिया । व घहासे अठकर आयी और बड प्रमसे मस बतलाया कि धोती अिस प्रकार तिरछी बगी नहीं डाली जाती है । फिर अ होन धोतीकी किनारीसे किनारीको मिलाकर बराबर किया और मुझसे पूछा—अब अ ठी लगती है वा पहल अरुडी लगती थी ?

कलाकी गिनपा मेरी असी दिन प्रारम्भ हुआ थी ।

श्री पद्म गुरुजी बहुमणी प्रतिभाक कलाकार ह । अविद्य मूर्ति तथा शिल्पकलाकी ओर आपकी विनय अभिरचि है । चित्रकलाक प्रति भी आप रचि रखते ह । विनयरूपसे आप अज ता पद्धतिकी कलाके अपासक ह । चित्रकलाके जितन प्रकार ह सभीम आपन कौशल प्राप्त किया है । संगीत (गीत वाद्य नय) अक प्रकारसे आपके जीवनका मानसिक साविक दैनिक आहार बन गया है । साहित्यके भी आप प्रमी ह । मराठी साहित्यके

आग जाता ह ही राष्ट्रभाषा हकीका अभ्ययन भी आपन बन्ने श्रद्धासे किया है । राष्ट्रभाषाके प्रचार कायम आप अपना सक्रिय सहयोग दिया करते ह ।

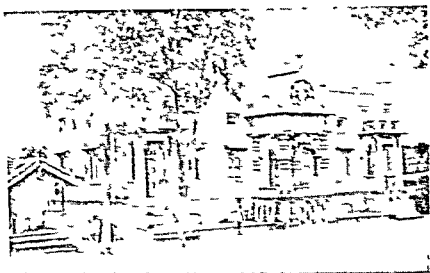
निलक राष्ट्रीय विद्यालयको कलाधाम की सजा दी जा चको है कित वास्तवम यह अक विद्यालय है और असा विद्यालय है जहा स-चरित्र राष्ट्रीय द्तिने भावी नागरिक तमार किय जाते ह श्री पद्मगुरुजी ही अिस विद्यालयके प्रधान आचार्य भी ह अ हीकी देख रेखम बालकोका शिक्षण होना है ।

वाँप्रसवे राष्ट्रीय गिनपा सम्बन्धी प्रस्तावके आधारपर तिलक राष्ट्रीय विद्यालय सामगावकी स्थापना १९२१ म हुआ थी राष्ट्रीय गिनपाका आग रखते हुआ गत ३० बधम यह मस्या राष्ट्र निर्माणका स्तु व काय करनी आ रही है । विभिन्न राष्ट्रीय आ गेन्दोम अिस मस्याके विद्याधियो और गिनपकोन भाग दिया या । जात पाँव-पब रहित प्रखर राष्ट्रीयता तथा प्रजातन्त्रकी गिनपा देकर स्वावगम्त्री मोविमान राष्ट्र सबके नागरिक निर्माण करना अिस मस्याका पावन अदृश्य है ।

विद्यालयको देशक सभी नताओन भट देकर गौरव तथा आशीर्वाद दिया है अिस मस्यामे पूय मनी मा गाधाका निकट सम्बन्ध रहा है विद्यालयको प्रातीय सरकारका भी सक्रिय सहयोग प्राप्त है ।

अिसी विद्यालयके प्राणम श्री पद्म गुरुजीका वह भव्य कलाभवन स्थित है जहाँ अक मीन साधने रूपम कलाके विविध रूपोकी अपासना वे गन ३० वयसे कर रहे ह । अिस कला भवनकी स्थापय कला बडी ही आस्यक और प्रभाव डालनव ली है स्वाक्य सम्बन्धी भारतीय विभिन्न शलियाका बडा ही मनमोहक सधनय अिस भवनम प्रस्तुत किया गया है । कला भवनम अपुरी भागम जा अक विनायक हाल है मगीन नूय वाद्य नाट्यके लिये अययोगम आना है और अमक नौबने भागम जो अक प्रकारसे गभ गहना है चित्रकला तथा मूर्तिकलाकी प्राण प्रनिष्ठा होती है ।

जिन मदनमें थी पत्र
 सुरजकी नया अनुका रथ
 'दमें अनुक गियो द्वाग
 नंदारका हूँकी अनुक नाम
 पृथ मूर्तिना नदा चित्रमूर्ती
 नित है । जिन चित्राने
 'जान और शक्ति मुकाना
 'बाम-विजय 'दोरीवका
 जम्पिदान जामा और
 शंभान, बाजूकी रत्नाकलि
 आदि बहुत ही नादरूप
 सुन्दर चित्र है ।



जान और शक्ति चित्रमें
 शक्तिका प्रतीक— मुक्ति

शरीरवाला अंक पुरुष पीछे चल रहा है अनुकी
 बायोमर पट्टी बंधी है—एक सूचित करनेके लिये कि
 शक्ति (पावक) ज्यो हाथी है । शक्तिका हाथ पकडे
 हुआ जानका प्रताप—अंक सुन्दर रमणी बायो-जो चलकर
 मार्गदर्शन कर रही है । अनुक दाहिने हाथमें दीपक है,
 जिनमें किरणमाला निकलकर पप-आलाकित कर
 रही है ।

'मुग्धा में थडा और करण, 'दोरीवका जम्पि-
 दान में 'पाका भाव साकार हा अनु है । 'बाजूकी
 रत्नाकलि' ता हृदयका हिला देनेवाला चित्र है । बाजू
 बडी ही नावमयी गम्भीर मुद्रामें बंड है । अनुकी छातीके
 नील म्पानेमें, जहाँ गयी लगी था, रक्तकी बूँद फिर
 रही है या बाजूके धातों हाथोंकी अकलिका भर रही है ।
 अनु अकल्पित अनुसंकर रक्त धपकन दुःखे विदग्धर फिर
 रहा है । विदग्धका अर्थ वृत्ताकारमें अनुस्पिन किया गया
 है, जिनमें हिजाकी गलाअं निकल रही हैं । बाजूका
 रत्नादान दिग्धकी जिन हिला गलाका घात कानका
 प्रपन कर रहा है ।

कला-भवन खानगाव

चित्रके अलावा अनेक भादमीनी मूर्तियाँ जिन
 कला-मदनमें विद्यमान है । अंक तरफ दीवारमें 'मं-
 राजका नाज्ज-मूर्त्य' बहुत ही नादरूप कलाकृति है ।

कुमी प्रकार 'किमान परिवार' कर्मी पूर्ण सुन्दर
 कृति है । जिन कला-मदनमें 'किमान परिवार' की छोटी
 मूर्ति है । अंक बडी मूर्ति ना-पुके मन्त्रालय (मूर्ति-
 पन) मुख्य द्वारके ठीक सामने रखी हुई है । मन्त्र-
 रूपमें प्रवेश कान समय दर्शक जिन मूर्तिके अंक
 नीन्दनेका देयक चित्रमद ना खडा 'हू' जग्य है ।
 पारवें मूर्तिमें 'मय' सटी है । किमान बनने अंक हारमें
 कुहाई लिये है जो दूसरे हाथकी कुलीकी पकड
 अनुका छोटा बच्चा खडा है । किमानक पैरक पान
 बकरी और बकके पान कुला खडा है । किमानके पीछे
 मिररन टाकरी जो 'मोदमें बच्चा लिये किमानका म्ती
 सगी है । अनुके पीछे किमानकी वृद्ध मी खगी है—कुट
 धुकी बमर मिररन जलपारी, हाथमें छोटी टाकरी ।
 वही पाम ही किमानकी लटकी सटी है जिनके मिरर
 पाम है । पारवें मूर्तिमें वृद्धकी अंक 'मय' दिग्धी
 देती है जिनके पाजोमें अंक पकरी अनुक रहा है ।

विमान-परिवारका यः विनया
सर्वोप-सम्पूरा गुण चित्र है। गुण
कृष्णकार्य बड़ी है तमसनाम जिस
बनाया है। इस पात्रका मुख्यभाग
शून्यका स्वाभाविक भाव प्रकट हो रहा
है। जिस लक्षक पात्रका यदि कला
नागपुर मध्यराज्य स्थलका देवपुर
मित्र नाम शून्य अनुराध कला सि
व जिस मंत्र मूर्तिका ध्यानम स्थला
न भूत।

विष्णु राक्षस विद्यालय कला
भवनम और भी श्रेष्ठ गुण मूर्तियां
रही हैं जिसमें 'गंगा' का अकार'
कला विषयम परवर नाम आदि
विषयम स्थलनाय है।

श्री पद्म गुप्ती द्वारा निर्मित श्रेष्ठ
गुण मूर्तियों का एक विभिन्न स्थानाम
स्थापना श्रेष्ठता स्वीकार कर रहे
हैं। अमरावतीका 'गंगा' नाम स्वामा
विद्यमान' का मूर्ति बड़ा व्यापार
गालाम मारतमाना का मूर्ति प्रदा
विद्यामार्गम गौतमसूक्त मूर्ति
प्रस्थापित है। नागपुर (महाराष्ट्र) म
अम्बुकर' की विद्याम मूर्ति आप ही

व द्वारा बनायी मुद्रा है। इतिहास का प्रथम स्थापित था
विष्णुभास्वीकी मूर्तिक निमाता मा श्री पद्म गुप्ती ही थे।

कलाकी श्रेष्ठतम साधनाम रूप श्री पद्म गुप्तीका
द्वारा गुण कलाशिल्पियोंतयार हानी रानी 'हानी
रहण। विश्व और मूर्तियोंका अनाम जय गुप्ती
का प्रथम ज्ञान है तम अतकी तमसना स्थल हा बनना
है। का आ कलाशिल्पि तब तयार हा जाता है तब अह
जिस आनन्दकी अनुभूति जाती है अम गालाम व्यक्त नहीं
विद्या ज्ञा मरना। अम अमरावतीर अतकी अनाम अक
अपूर चमक अिन पवित्रताक उपकन कभी बार लखा है।



अपनी प्रतिभ भाष्य कलाकार

श्री पद्म गुप्ती विनायकन दूर रहकर कलाकी
मौल मारना करनेका पात्र स्वभावक निम्न परंप
है। यह कारण है कि आपकी कलाकी विनायकता
प्रकाश नहीं मिया है।

श्री गुप्तीका स्वभाव जितना मरु और शीघ्र
है कि अन्त निकट खानपर सात्विक प्रभावका अनु
भूति स्वयं पाता है। मन्त्र अर्थोंम व मायु प्रप्य है।
कलाक जिस मोल मायकम परिचय प्राप्त कला और
शून्य कलाभयतका स्थला जावनका अक पद्म-नाम
यमयना चाहिये।

अर्खामिया रामायण

: प्रो० रंजन, अ.न. अ. :

'राष्ट्रभारती' के माध्यमसे दक्षिणका श्रेष्ठ साहित्य हिन्दी पाठकोंके सम्मुख नियमित रूपसे आने लगा है। प्रत्येक अक्षरमें तमिल अथवा तेलुगुके ललित-साहित्यको पढ़नेका सौभाग्य पाठकोंको मिलता रहता है। और अिस प्रकार दक्षिणो-साहित्य (तमिल, तेलुगु, मल्यालम और कन्नड)के अनेक अमूल्य पक्ष हिन्दीके माध्यमसे देशके अत्यन्त कोमलक पहुँच रहे हैं। प्राचीन-साहित्यकी अुच्चतम रचनाओंको अिस प्रकार विभिन्न माध्यमोंसे और विशेषकर राष्ट्रभाषाके माध्यमसे संपूर्ण देशकी मपत्ति बना देना, आजकी अ्रेक बड़ी आश्चर्यकरता है। देशकी कभी अेक अन्य भाषाओं, बंगला, गुजराती और कूडिया भी हिन्दीके सरोवोंसे जनताके सामने आयी है, परन्तु असमिया (अर्खामिया) साहित्यके विषयमें हिन्दीमें बहूत कम अवकाश कुछ भी नहीं लिखा गया। अिससे पता चलता है कि अर्खामिया भाषामें देशको देने लायक कुछ है ही नहीं। हमारे असमिया भाषियोंको यह अुदासीनता अ्यायक साहित्यके विकासमें बड़ी बाधक निष्ठ हुई है। अिस बार अजने असम-अमणके समय में अर्खामियाके कभी अेक पंडितोंने अिस विषयमें कहा की। पर अुनकी अुदासीन अुतिकों देयकर अड़ा कपोल हुआ। अन्य भाषाओंके समानही असमियामें अनेक अमूल्य जन-ग्रन्थ अरे पड़े हैं, पर हिन्दीवाले अुनके विषयमें कुछ भी नहीं जानते। अंगे लोक-प्रचलित ग्रन्थोंमें सर्वे प्रथम अ्यात सन गजरदेव रचित 'बीर्तन' को प्राप्त है। असम प्रांतमें 'बीर्तन'का बड़ी अ्यात है जो अुत्तर प्रदेशमें तुलसी-रामायणकी और महाराष्ट्रमें सन तुकारामके अग्रगण्य है। यह पुस्तक असम प्रांतके प्रत्येक हिन्दु घरकी अत्रिबिन्दु है।

सन गजरदेव द्वारा रचित 'बीर्तन' के बाद दूसरा लोकप्रिय पक्ष सायब कन्दली द्वारा विरचित रामायण है। अहूणके अुत्तर भारतीय हिन्दी भाषियोंकी यह कल्पना है कि हिन्दीकी तुलसीवृत्त रामायणही प्राचीन

भाषाओंकी सबसे प्राचीन रामायण है, अिससे गलत धारणा दूसरी नहीं हो सकती। बाल्मीकि रामायणके बाद प्राचीन भाषाओं में सर्वप्रथम तमिलमें रामायणकी रचना हुई थी। अिसके पश्चात् जसम प्रांतमें आजसे लगभग १२०० वर्ष पूर्व अर्खामियामें सायब कन्दलीने बाल्मीकि रामायणके आधारपर असमिया रामायणकी रचना की।

भारतीय साहित्यकी दो प्रधान मण्डियाँ महाभारत और रामायण किमी-न-किमी रूपमें आज प्रत्येक प्राचीन साहित्यमें अुपलब्ध हैं। अनेक कारणोंसे अपनी दार्शनिक प्रतिष्ठाके बावजूद महाभारत अुत्तम लोक-प्रिय नहीं हो सका अित्तो कि रामायण। यों रामायणकी क्या भारतीय प्राचीन साहित्यमें बाल्मीकि द्वारा रचित सृष्ट रामायणसे ही आयी, परन्तु अपनी भावना, परंपरा और प्रांतके अनुकूल प्राचीन रामायणकी क्या भी मूल्य बहूत अित्त हो गयी है। असमी लोक-जीवनमें राम, कृष्ण जैसे ही गुण पड़े हैं जैसे अुत्तर प्रदेशमें। योडा अुत्तर अवश्य है और वह यह कि वर्तमान अकित-पद्धतिके अुत्पायक हैं सत गजरदेव और अुनके अिष्ट देव हैं कृष्ण। अिसलिये असममें आज अकितके प्रति अि प्रभावतया कृष्ण माने जाते हैं। परन्तु अजने कर्तव्यमें स्वयं सत गजरदेवने कृष्णको रामका ही रूप बजाकर रामकृष्णके अ्रेक होनेकी घोषणाकर कृष्णके साथ रामके प्रति भी अकितकी प्रतिष्ठा कर दी है।

भारतीय सभृति और परंपराका प्रतिनिधित्व करनेवाली कभी अेक रामायणमें आज असमिया भाषामें अुपलब्ध है। रामायणके अित्तने प्रकार सायब क्विती प्रांतमें देखनेकी नहीं मिलेगी। ३-४ पद्य-रामायणोंके अलावा जनताके विचार अेक रामायण केवल गद्यमें है। नाटकके रूपमें जो अेक रामायणकी रचना असमिया अिद्वानोंने की है। अंसा कि अुत्तर अुन्नेय अिया गया है, अर्थ भाषाओंमें असमिया-रामायणसे पूर्वकी रचना

कोश्री भी नहीं। तुलसीदास रामायणसे अछिने निर्माणका
 १५० वर्ष पूर्व हैं। अर्धमियाकी जिस 'रामायनी',
 (रामायण) के रचयिता श्री माधव बन्दरी थे, जिन्होंने
 अर्धमिया छन्दमें बान्मोकि रामायणका आन्तर सा
 किया है। तुलसीदासने जिसमें १५० वर्ष बाद अपनी
 रामायण जनताको भेंट की। श्री माधव बन्दरीके बाद
 अमममें रामायण लिखनेकी एक वाङ्-मी जाती है।
 विभिन्न कवियोंने कवितामें, गद्यमें, गीतोंमें, कीर्तनमें,
 रामायणकी रचना की। परिणामस्वरूप आज अर्धमियामें
 रामायणने पाँच रूप प्राप्त हैं। और प्रत्येककी शैली,
 कथा और छन्द अलग-अलग हैं। परन्तु मूल कथाका
 श्रोत सबने बान्मोकिका ही माना है।

१४ वीं शताब्दीमें जब स्वामी रामानन्दने राम-
 भक्तिका प्रचार देसमें शुरू किया तबसे अमममें रामायण
 लेखन द्वारा राम-भक्तिकी प्रतिष्ठाकी लहर फैली।
 रामानन्दके शिष्योंने अउत्तरी भारत और मध्यभारतमें
 रामभक्तिका प्रचार किया। यही लहर देसमें घूमनकाले
 आगामी धार्मिक व्यक्तियोंके द्वारा अमममें पहुँची। और
 जिस प्रकार अमममें रामायणके प्रथम रचयिता कविवर
 माधव बन्दरीका काल १४ वीं शताब्दीका अन्तिम भाग
 माना जा सकता है। अतः समकालीन राजा महा-
 मणिकचन्दकी प्राथनापर अन्होंने रामायणकी रचना
 शुरू की। सत शरकरदेवने अपने अउत्तर काण्डमें
 अन्हें अपना पूर्वगामी और दांपगुण्य कवि माना
 है। श्री वारपने द्वारा लिखित 'कथा गुह
 चरित' में एक स्थानपर अंशा अल्लेख है जिससे पता
 चलता है कि श्री राघवाचार्य सत शरकरदेवके सिष्यक
 श्री महेंद्र बन्दरीके समकालीन थे और महेंद्रबन्दरी
 श्री माधवबन्दरीने शिष्य थे।

जिस समय श्री माधवने अमसियामें रामायण
 लिखना आरम्भ किया, अम समय देसकी किसी दूसरी
 भाषामें कोश्री रचना अुपलब्ध नहीं थी जिसके
 आधारपर वे अर्धमिया भाषामें अपनी रचना करते।
 जिसलिये अन्होंने सीधे महेंद्रके 'आदि काव्य'में व्यवहृत
 छन्दका ही अपनी रचनाका आधार माना। जिस विषय
 में स्वयं श्री बन्दरीका कथन है कि महाकवि बान्मोकिने

अनेक छन्दोंमें रचना की। मने वही सावधानीसे अन्हें
 पढा और अपने ढंगसे जो कुछ समझ सका, उसे सविपत्
 रूपमें जिस रामायणमें लिया है। अंसा कौन है जो
 अुनके समस्त रसोंको समझ सके? और जिसलिये
 'रामायनी' में कवि माधव बन्दरी आवदरकतानुसार
 कुछ जोड़ देते हैं, कभी कुछ कम कर देते हैं। कवि
 अंक स्थानपर कहता है कि आदि काव्यके शब्द अीदरके
 वाक्य नहीं बनूँ वह भी अंक मानव-कृति ही है, अत
 यदि में अपनी रचनामें कोश्री हेर-फेर करता हूँ तो
 लोभोंको नाराज नहीं होना चाहिये।

माधव बन्दरीकी रामायणमें केवल ५ काण्ड
 थे—अयोध्यासे लेकर लकाकाण्ड तक। आदि काण्ड
 और अउत्तर काण्डके बारेमें कहा जाता है कि वे मायद
 खी गये हैं। और बहुत बादमें महादेव और सत शरकर-
 देवने आदि और अउत्तर काण्डोंको माधव रचित
 रामायणमें जोड़ा है। अदुनमें लोभोंका विचार है कि
 माधव बन्दरीने जान-बूझकर ये दो काण्ड छोड़ दिये,
 लेकिन अुनकी रचनामें कभी स्वानोतर मात काण्डोंका
 अुल्लेख मित्रता है, जिससे पता चलता है कि मायद
 अुन्होंने मातों काण्डोंकी रचना की है। अर्धमिया
 भाषामें अुपलब्ध अन्य रामायणोंमें भी जिस दो काण्डोंका
 समावेश नहीं किया गया।

माधव बन्दरी द्वारा लिखित रामायणकी विरो-
 धताओंको सन्नेहमें जिस प्रकार रखा जा सकता है—

(१) प्रकृतिके वर्णनमें अन्होंने स्थानीय दृश्योंको,
 व्यक्तियोंके कार्योंका विशेष वर्णन किया है।
 अुनको भाषामें वेग है और अुसमें अुचिन स्थानीय
 मुहावरों, कहावतों, रूपकों और अलंकारोंका वर्णन
 वडे सम्यक ढंगसे किया गया है। कुछ अलंकार अुन्होंने
 मूलसे लिखे हैं, कुछ स्थानीय भाषासे और कुछ अपने
 आन बनाये हैं। दृश्योंका वर्णन वडा सजीव और नाटकीय
 है। भिन्न-भिन्न वर्णनोंके अनुसार अुन्होंने अलग-अलग
 छन्दोंकी चूना है। रूपक और अुपमाके विषयमें
 वे कभी कभी मूलमें दूर चले जाते हैं। और
 अंसे अुल्लेखोंमें अुनके युगका प्रभाव स्पष्ट झलकता है।
 अुदाहरणके लिये वे राम और अुनके राजमहलकी तुलना

कैलास वृत्ते है। माधव बन्द्योके समथमें असममें राव विचार धाराकी प्रधानता थी, जिमोलिअ वंशुठके स्थानपर लुहाने कैलासकी चुना। जिसके अलावा कत्री अंसे स्थान है जहाँ अनुका वर्णन बादिकाव्य 'स निज है। चित्रकूटका वर्णन, मुद्रावके आदेशपर सोलाकी खोज, मनुष्यमें हनुमानकी राक्षसपत्ति मुठभेड और लका-दहनके वर्णन अंस ही है।

कुछ स्थलोंके वर्णन बड़े मार्मिक और सुन्दर हैं -
 कवि भरतक चित्रकूट जात समय निपादके मनकी राकाको बड़े स्वभाविक ढंगसे प्रस्तुत करता है—

“ जितो घज दण्ड पताका देखिया,
 जानी लोहो सरपत,
 अनहतु नहि रामाक मारिते
 असिला भाजो भरत । ’
 ‘कैकेयो मातार हते राघवर
 करिला राज्य नैरास । ”

अर्थात्—जितने अश्वघोषसे सज्जन मेना और स्वयं-दण्डाका दसकर निपाद साधना है कि निदरूप ही रामकी भारतके लिये भरतन अिलनी बना सजायी है। कैकेयो माता रामकी भारतकर निष्पटक राज्य करना चाहती है।

जिसी प्रकार परगुणम-रामसवाद तुलसीकी रामायण सवंधा भिन्न है। यहाँ परगुणमके प्रायकी पंक्तने और लक्ष्मणके प्रायका पनपनेका कोत्री अवसर ही नहीं आया।

“ ऋषियमें अनुसरि आछा महानाग,
 आमान तोमार केन अंत महाराग ।
 बधमासे भुविन धर्म होवम तोमार,
 शिसक करिला मुनि ताक परिहार । ’
 “ धर्म अेरी अपमं करय जिनो नर,
 ताक दण्ड करिये लाय बधप्रियर ।

अर्थात्—नाम बहूत है कि ह महानाग ऋषियमेंका अनुसरण करना आदका धर्म है। अंसी अयमयामें मरे और आदक वीधमें अपके लिये काशी स्थान ही नहीं। आदके धर्मकी गाना बधमा है। अण अण कंस छाड महान है? अपने धर्मका उपकार जा अश्विन बधमें जाता है अने दण्ड देना कानियका धर्म है।

रामके दन चले जानेपर दगरधका विलग बटा करण हुआ है—

‘मरन कालत रामने देबिलो तोह ।
 यम कबलको गंले नेराजि बोहोशोक ।
 गूना बाण्यं कौगन्या नकरां हृदिलेद ।
 तोमार आमार अंवे भेल परिच्छेद ।
 चौधय बरवि रामे बनवास तरि
 पुनरपि असिबन्त अयोध्या नगरी ।
 स्वामं हन्ते येहेन आसिव सुरराजे ।
 लोके बटिबेक जे देवता ममाजे ।
 ताक देखिवाक बपालत भाग्य नासि ।
 पुत्रशोके हेरा मोर प्राण फुटि यासि । ”

अर्थात्—मरते समय रामकी देउनेकी जिच्छा लेकर मे जाअूंगा। मेरी अिम जिच्छाका यम-लोकमें चले जानेके कारण शोकमें बदलना पड़ेगा। अंसा मुनकर पत्नी कौगिन्या अुनच गोक न करनेकी प्रार्थना की और कहा कि तुम्हारी और हमारी जीवन-याथा अब पूरी हो चुकी। १४ वर्षके पश्चात् राम अब दनसे लौटकर आवो तो अयाध्याके नरनारी अून्हे अपने बीच पुन दसकर स्वामं आन समय अंस सुरराजकी देवता धर लज है वैसे अून्हे घेर लगे। अंस अवस्थामें रामका देल सक्नेक माग्य अने नहीं है अंसा दगरध करते हैं और कहत हैं कि पुन-मोवच मरे प्राण रोप नहीं रहेंगे।

(२) गीतरामायण

गीताचरने निबानी श्री दुर्गावरने मुक्तिरूपमें गीत रामायणकी रचना की। यह कवि कूच विहारके विद्वंसिद्धके राज्यकालमें (१५१५-४०) में हुआ है। अिम गीत रामायणमें २० रागाका समावध है। कुछ छन्दोंमें माधव बन्द्योका प्रभाव चलकता है।

परन्तु दुर्गाके चपन और तप्याकी जन-मनो-विशानके अनुकूल भावनेमें अिमकी अनी मौलिकता है। डा की गायने अपने प्राचीन अनमिया माहिधमें अिम रचनाका बान्नीकिकी रामायणका जन-मन्करा बटा है। अिम रचनाके भी आदि और अन्त १६ नहीं हैं। यह रचना स्वयंसे विषयचन्द्र टाग ३०

वर्ष पूर्व प्रनाशित हुआ थी और आज यह अप्राप्य है। जिस रचनामें स्थल स्थलपर कविकी मौलिकता झलकती है —

(१) जगलमें राम सीता अपना समय पासर दोलकर व्यतीत करते हैं। (२) इसी समय सीताजी स्वर्ण हिरन देखती हैं और असे जीवित पकड़कर लानेके लिअे रामसे आग्रह करती हैं ताकि वे असे अपने पास पाल सने। (३) चित्रकूटमें राम अज्ञात रहते हैं लेकिन सीताने जगलमें अयोध्याका निर्माण कर दिया है। राम, सीता और लक्ष्मण ससतोत्सवमें डूब जाते हैं और होनी खेलने हैं। ठीक इसी समय रावण आकर सीताको ले जाता है।

गीत रामायण आरंभिक असमिया साहित्यका अंक नमूना है। जिसे वेबलागीतकी श्रेणीमें रखा जा सकता है।

अनन्त कन्दलीकी 'रामायण'

दुर्गावरकै पदवात् अनन्त कन्दलीन रामायणकी रचना थी। ये सत शकरदेवके विषय और समवालीन थे। अनन्त कन्दलीने माधव-कन्दलीकी रचनाको ही हाथमें लिया और अधिकांशमें अनुकी रचनासे ही वचन और छन्दको अधार लिया है। कही-कही अन्ध सन्निपात कर दिया है कही-कही विस्तार दे दिया है। अन्होंने अपने काव्यमें भगवती-तन्त्रका विशेष रूपसे अल्लेख किया है, अन्होंने स्पष्ट कहा है —

“माधव-कन्दली विरचिला रामायण
ताक मुनि आमार कौतिक करे मन
रामार सामान्य सत कथा यथायत्
भाजन्य गुनजत न भेला सेकत।

अर्थात्— माधव कन्दलीने रामायणकी रचना की। असे मुनकर मेरा मन भी कुछ लिखनको अल्पाहित होता है। रामने जीवनेके सभी तत्वापर कौन प्रकाश डाल सकता है? परन्तु अभी तक अन्ने भक्ति पक्षपर विस्तारसे नहीं लिखा गया इसलिअे भक्ति पक्षके वर्णनके लिये मैं प्रयत्न करता हूँ।

अनन्त कन्दली और अन्नेने गुह शकरदेवके लिअे रामरूपणसे भिन्न और कुछ नहीं थे। जिस प्रकार जिसमें भक्ति पक्षका समावेशपर अिसे समयके अनुरूप अेक धार्मिक ग्रथका रूप दे दिया है। जिसमें कभी स्पानोपर अन्होंने अपनी विशेषता प्रदर्शित की है —

“रामायण कथा पदे निबन्धिलो
भगवत सरचा, करी
हृरि कथा बिने दुघोर कलित
तरि तेके हो रवारो।”

मंने रामायणके तत्वोका वर्णन छन्दोमें किया है और असा करनेमें मंने भागवतका अल्लेख किया है क्योंकि कलि-कालमें बिना हरि-नामके कौअी मुक्ति नहीं पा सकता।

अनन्त कन्दली तुलसीके समान रामको अीश्वर मानने हैं। वन जाते समय वे सीतासे कहते हैं —

“भारत हैबेक राजा
पालबेक सर्वे प्रजा
तातो मोरकिछो चित्रा नाम
घटेकेसे मार सोक तजिलो माकत लोक
सुभरग्ये प्राण फुटि जाय
यहेन अयोध्यापुरी अर याता नर-नारी
सब मोर परम भक्त।”

अर्थात्—भरत राजा होकर प्रजाकी रक्षा करेंगे। मुझे अिनकी चिन्ता नहीं। मेरे दुःखका कारण यह है कि मंने अपने भवनेको छोड़ दिया यह विचार मेरे हृदयको विदीर्ण कर देता है। अयोध्याके ममस्त नर-नारी मेरे भक्त हैं।

माधव कन्दलीस भिन्न अनन्तकन्दलीने राम महलकी अपुमा वैकुण्ठने दी है। जिस रामायणमें कही-कही व्यक्तिगत अल्लेख भी मिलने हैं। कविने अपन जन्म और ग्रामके विषयमें भी कुछ छन्द लिखे हैं।

अपुरोक्त तीन रामायणोका असमिया-साहित्यमें विशय महत्व है, परन्तु राम-चरित कहनेकी प्यास आताममें बड़ जोरसे प्रकट हुआ थी। अिनलिअे अिन तीन रामायणोके अतिरिक्त भी कुछ अन्य रचनाअें अिस दिशामें हुआ जिनमें खास-खासके नाम अिस प्रकार हैं —

(४) 'श्रीरामकीर्तन' जिसके रचयिता श्री अनन्त ठाकुर थे। अिनका जन्म शकरदेवके बाद चौवी पीढ़ीमें हुआ था। भाषा, पद्धति अदिकी दृष्टिसे यह रामायण अपुरोक्त रामायणोसे भिन्न है। 'रामकीर्तन' का रचना-काल १५७४ शाक शकत माना जाता है।

(५) कथा-रामायण— यह रामायण शुद्ध गद्यमें लिखी गयी है। अिसका रचनाकाल १६ वीं शताब्दीका मध्य माना जाता है। श्री रघुनाथ महान अिसके लेखक थे। इसी लेखकने अेक दूसरी रामायण अवभूत-रामायण' भी, लिखी है। अिमकी भाषा बिल्कुल जनताकी बोली है।

(६) नाट्य रामायण— लोक अिच्छा और जन-प्रचारकी दृष्टिसे सत शकरदेवने सर्वप्रथम रामायणको नाटकका रूप दिया। 'मीनास्वयंवर' और 'रामविजय' नामसे अन्होंने रामायणके अनेक प्रसंगोको लेकर नाटक लिखे हैं।

बंगलाका पहला उपन्यास

: श्री मन्मथनाथ गुप्त :

बंगालमें अंग्रेजी शिक्षाके प्रबर्तनके साथही साथ उपन्यास साहित्यका आविर्भाव हुआ। यो तो कहनेके लिये यह कहा जा सकता है कि भारतमें भी पहले उपन्यास होके थे, पर सच्ची बात यह है कि न केवल भारतमें, बल्कि सभी देशोंमें पूँजीवाद और छापाखानेके साथ-साथ आधुनिक अर्थमें उपन्यासका आरम्भ हुआ।

यो तो रामायण, महाभारतमें भी उपन्यासका मजा आता है, पर वे पद्यमें हैं। यदि हम संस्कृत गद्य साहित्यकी ओर दृष्टिपान करें, तो क्या सगिर्तसागर, वेताल पर्वविदाति, दशकुमार चरित, कादम्बरी तथा बौद्ध जातकोमें उपन्यासके कभी उपोदान मौजूद है। अवश्य जिन ग्रन्थोंमें वर्णनके आडम्बरके नीचे अन्तर कहानी दबकर रह गयी है। बौद्ध जातकोमें फिर भी कुछ गनीमत है, क्योंकि उनमें राजाश्रीसु अतर्कर माहिषकी वस्तुको बहुत कुछ मध्यमवर्गमें लाया गया है और वर्णोंका भेद अज्ञाना स्पष्ट नहीं है। फिर भी जिन सबकी कहानियोंमें अलजलूल बानोंके साथ-साथ वास्तविक घटनाओं अिस प्रकार मिलयी गयी हैं कि आधुनिक पाठक असे सहन नहीं कर सकता। अर्न्तसंगिक अप्राकृतिक या अतिप्राकृतिक बातोंकी भरमार है।

पंचतन्त्र अिनने बिच्युल भिन्न प्रकारका साहित्य है। यदि कहा जाय कि पंचतन्त्र मारे विद्व-साहित्यमें अनोखा है, तो कौश्री अत्यन्त न होगी। केवल औसापकी कहानियाँ अमके कुछ पान पटकनी हैं, यद्यपि यह भी अंध मत है कि औसापकी कहानियाँ पंचतन्त्रमेंही अत्यन्त हैं। पशुविक्रयोंकी बातचाँउके अरियेमें जीवन सम्बन्धी मोटी-मोटी बातें बताने देनी औरही लेखका ध्यान है, अममें चरित्र चित्रण या नाटकीय गुण-अुत्पादनका कौश्री प्रयास नहीं। कहानी तो मूह्र अंध बहाना है, लेखका अुरेय नीतिकी शिक्षा देना है। अतय बिन्धु दामनके अिये अथिब कुछ दावा भी नहीं किया। अुहोंने

तो माफ कह दिया है कि कथाके मियेमें बालकके लिये नीतिशिक्षादानही अुनका अुद्देश्य है। बाल साहित्यके रूपमें पंचतन्त्र हमेशा आदर प्राप्त करेगा, पर अुन्यास-साहित्यसे जो रस मिलता है, अममें अुसकी आशा करना सर्वथा अ्यर्थ है।

अंमा कि पहले बताया जा चुका है, हमारे प्राचीन साहित्यमें जातक साहित्यही अुपन्यासके सबसे नजदीक है। अुस अुगकी बहू-सी घटनाओंका जिससे परिचय प्राप्त होता है। अममें अतिरजन और कपोल कल्पनाकी मात्रा अनेवपाकृत कम है।

जब बंगलाका निजी अस्तित्व कायम हो गया, तो अममें भी बहू-कुछ मसूतबाही मिलमिला चला, पर बंगलामें अम प्रकार म्दाअम्बरपूर्ा समाभवदूल रचनाकी गुजाअिषा नहीं थी। अिसके अलावा बंगलाकी रचनाओं पहिलीके लिये न होकर साधारण लोगोके लिये थी, अतअेव रचना कुछ मरल अवयव हो गयी, फिर भी ठीका तो वही रहा और अुपान्यासोंका रच भी अामिकही रहा।

महाअम अंतन्यपर जो पुस्तके लिखी गयीं, अममें रामचरणाकी जगह अंतन्यको बैठाया गया, फिर भी बाँते वही रहें। अिस सम्बन्धमें वक्ति कल्पना विरविद्यालयके द्वारा अग्रहीन मंमनासहके गीत आधुनिक अुपन्यासके अधिब निबट है। अिन गीतोंका रचनाकाल सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी माना गया है। अिन गीतोंके आविष्कारने बंगला-साहित्यकी अेकलुत्त बडीका पना लगा है। अितिवास, बाघोराम, मुकुन्दराम और भारतचन्द्रमें जो खाश्री हैं, वह अिनके आविष्कारके बहुत कुछ पाटी जा चुकी हैं। अिन गीतोंमें छोटे-छोटे अुपान्यास भी आते हैं। अिनमें अम समयके समाजके वदूत मजौब चित्र मिलते हैं। अिन गीतोंके मन्वपमें सबसे बडी बात यह है कि अिनमें परम्परागत वर्णवर्गीकी

बापूवन हटारर जो चीज जमा है अुमे अुभी रूपमें देरनकी चेष्टा है । प्रमिन्न प्रमिन्नाओंकी बातचीत या व्यवहारमें श्रुतिभता लानकी चेष्टान कर अु हे अधिन्नमे अधिक् स्वाभाविक बनानकी चेष्टा की गयी है । यदि बगला माहियमें अन्नजीसे स्वन्नत्र कीओ अंसा साहिय है जो आधुनिक अुप यास साहित्यके बहून करीब है तो वह भमनसिहके गीत ह ।

अिनन अतिरिक्त बगला साहित्यम अरवी फारसी सूत्रम आय ह्रुअ हातिमतात्रीकी कहानी लत्रा मजनू पहारदरयेग गुत्र वकावत्री आदि कहानियाँ भी मीजूद थी । अिन वहानियोका प्रचार हि दू मुसलमान सभी घरामें था ।

बगलामें ममाचारपत्रोका आरम्भ हुआ अुसीवे साय साय अुप यास साहित्यका भी सूत्रपात हुआ । १८२१ में समाचार दपणमें बावू नामसे अक् रेखा चित्र छया । दो अक्ामें यान २४ फरवरी और ९ अूनरे अक्ामें यह रेखा चित्र सम्पूण हुआ । अिसमें अुस युगवे अक् भनीपुत्र तिलकचन्द्रका चित्रण था । यह घनीपुत्र मुसाहबोसे घिरे रहने ह अु हे न तो कोओ शिक्पा मित्री और न अुनमें कोओ चरित्र बल है । तिलकचन्द्र अपन अत्तरकी शू यताओ बाहरी आडम्बरमे ढक्नकी चेष्टा करते रहते ह । अुनकी अक् चिन्ता यह भी है कि मुसाहबोमें अुनकी जिज्जत बनी रहे । नतीजा यह है कि वे धरुसे आखिरतक हामयास्पन्न बन रहते ह । यह रेखा चित्र पाठकोवे मनोरजन और साय ही नसीहतवे लिअे लिखा गया था ।

मालूम होना है बावू रेखाचित्र बहुत प्रसिद्ध हुआ अिसलिअ १८२३ म प्रमथनाथ शर्मा नवबावू विलास नामसे अक् रचना प्रकाशित की अिसवे सम्ब धमें यह बताया जाता है कि यह बगलाका पहला अुप यास है । प्रमथनाथ शर्माका अत्तली नाम भवानो चरण वक्षोपाध्याय था । असा भी अनुमान है कि शायद बावू के भी यही लेखक थ । वे समाचारचन्द्रिका और सम्वाद कीमुदी नामक दो पत्रोवे सम्पादक थ और हिदू समाजके स्तम्भ मान जाते थ । नवबावू

वित्रास की बावू का ही अक् परिवर्द्धित सस्करण कहा जा सकता है । अिसमें भी अु ही वानोका चित्रण था अिनका चित्रण बावू में था । अिसका अुद्ग्य भी समाजसुधारमूलक था ।

अिन दोनो रचनाओमें चित्रित बावू अुम समयवे समाजकी अक् विगप अुपज थी । अुसकी सारी शामदनी जमीदारीसे आनी घी पर पहलेके युगमें जमी दारोपर जो थोडा बहुत रीब था वह अुमके गहरमें आ कर बस जानसे मिट गया था । घन अुडानवे अुपाय पहलेके मुकाबलेमें अधिक् थ अिसीसे बावू चरित्र बना ।

१८५७ में प्यारेबांद मिश्रका अलालेर घरेर दुलाल प्रकाशित हुआ । मजकी वान यह है कि यह भी अुभी विषयको लेकर चला । १८६२ में कालीप्रसन्न सिहन हुनोम पत्तार नवगा लिखा वह भी अिसी विषयपर था । मालूम होता है कि अुस युगके बुद्धिजीवी घनियोकी अुच्छलतासे बहुत परेगान थ ।

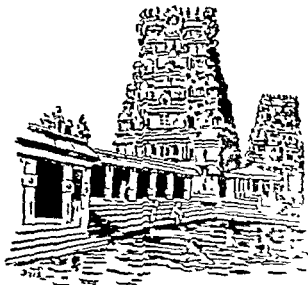
अत्राकर घरेर दुलाल पहलेके धनी पुत्रीसे विगिष्ट अिस अधम था कि अुनका नायक मिस्टर गर वीनके स्कूलमें गया था अिसलिअ अुसन कुत्र अन्नजी दाद और टीमटाम अपनायी । अुम समयका सुदर चित्र अुसमें आ जाता है । चरित्र चित्रणकी दृष्टिसे वह अुपयास बावूके अनक् अुपयासोमे अच्चा है । अिमसे अक् चरित्र ठग चाचा है । झूठ वादे करनमें और चालाकीमें वह अक् असा चरित्र बन जाता है अिसे भूलाना असभव है । कीओ चरित्र नाकसे बोलना है तो कोओ किसी ढगमे वाक्योकी रचना करता है । कोओ गवासे पीडित है अिन प्रकार यह अक् सफन्न व्यग्यात्मक रचना है । अिस अुपयासकी सबसे बडी विषयता यह है कि अिसमें वानाडम्बरपूण भाषा छोडकर बोल चालकी भाषा अपनायी गयी । अिमसे भी बडी वान अिस अुपयासके वारेमें यह है कि यह बगलाका पहला अुपयास है । अतिहासिक दृष्टिसे कुछ भी कहा जाअ साहित्यिक दृष्टिसे यहीने बगला अुपयासका भूतपान होता है । फिर तो वह अक् अनवरत धारामें चलन लगता है ।

"अलालेर घरेर दुलाल" में अंग्रेजी शिल्पशास्त्री प्रथम प्रतिक्रियाके चित्र मिलते हैं। श्री श्रीकुमार बनर्जीके अनुसार ग्रिम पुस्तकमें १७७५ से लेकर १८२५ तकके बंगाली समाजका चित्र मिलता है। अभी तक अंग्रेजी-शिल्पशास्त्रीय जीवनमें मज्जापत नहीं हुआ थी, अभी तक जिस बानका प्रवल सपने चल रहा था कि यह रहे या वह रहे। ग्रिम कारण ये अस्वास्थ्य पछाड़का बानावरण था और चूंकि अभी तक यह तप नहीं हुआ था कि बिनना रहेगा और बिनना जायेगा, अमलिये बानावरणमें विकसोभ और आलोडन मचा हुआ था। अतः समय यह तो निर्णीत-मा हो चुका था कि पाश्चात्य रण-डम और विचारधारा चिक विचारशीलीकी विजय होगी, पर अभी न तो प्राचीन और अर्वाचीनका कौसी समन्वय होने दिखायी पडा था और न दोनों अंक हमनेपर पूरी तरहसे हावी हो सके थे।

महापर यह बात स्पष्ट कर दी जाये कि जिन लोगोंने पाश्चात्य सभ्यताकी चकाचौंधमें आकर अस्वी वृत्ति-मली सब बातें अपना ली, स्वाभाविक रूपसे उन लोगोंने बगला छोड़कर अंग्रेजी अपनायी, नतीजा यह कि बगला-साहित्यमें वे अपनी कोठी निगानी नहीं छोड

गये। हा, अंसे लोगोंमें मासिकेल मधुसूदन थे, जिन्होंने श्रीमती धर्म ग्रहण किया और अंग्रेजीमें काव्य रचना करनेकी ठानी, पर कुछ अंता सयोग हुआ कि भीतर-भीतर वे बगलासे प्रेम करते थे और अल्प तन अन्होंने अंग्रेजीको तिलाजलि देकर बगला अपना ली। जिनो प्रकार श्री राजनारायण बघुको बूडापेमें होया आया और अन्होंने अपने यौवनकी आग प्रभावित लीलाओंकी कहानी व्यंग्यात्मक रूपसे लिखी। पर जिनोंने अुप-न्यासमें लुम धाराका प्रतिनिधित्व नहीं किया, जिसने पाश्चात्य सभ्यताके सामने साष्टांग दण्डवतकर आत्म-समर्पण कर दिया था। अुपन्यास-साहित्यमें यह पहलू अज्ञान ही रह गया।

किन्ती श्री "अलालेर घरेर दुलाल" और बादके बहुतने अुपन्यासोंमें ग्रिम सपनेका चित्र हमारे सामने आता है, अुससे हम अुस युगके सामाजिक सभ्यताका बहुत अच्छी तरह अनुमान कर सकते हैं। यह बात बही गयी है कि "अलालेर घरेर दुलाल" के लेखक जीवनके बहुत व्यापक संपर्क अपनी सत्तामें प्ररफुटित नहीं कर पाये, पर अन्होंने जो सामाजिक चित्र हमारे सम्मुख पेश किया है, वह बहुमूल्य है।



कन्नड़-लिपिकी उत्पत्ति और वर्णमाला

: श्री गुन्नाथ जोशी :

भारतमें अति प्राचीन काण्य लिपिका प्रयोग कया जा रहा है। ता० बनर्जोने महामाहम कयके हृष्या और महेंजोदाडोका पता लगाया। वहाँ जो अवशेष मिले हैं, अतपर जो लिपि अक्षित है वह चित्र-लिपि है। अम चित्र-लिपि मिलनी-जुगनी कोश्री लिपि भाग्यमें अत तक अण्यत्त नहीं हुआ। यहाँ भारतकी मयने प्राचीन लिपि है। अिस लिपिका कोश्री अयापि अच्छी तरहसे नहीं पढ़ सका। अिस चित्र लिपिके अरर छोड दे तो भारतमें मवय प्राचीन लिपियाँ दो हैं — (१) ब्राह्मी, (२) खरोष्ठी। खरोष्ठी अयमय्य लिपि है और अिसने गिण्येय्य अतुन कम मिलत है। ब्राह्मी लिपिके लेख ही अथित मिलत हैं। यह गुनकर मवको आरक्षयं होगा कि यह ब्राह्मी लिपि ही अततर और दक्षिणकी सभी भायाओंकी लिपियाँकी जननी है। यह वान तय स्पष्ट मातुम ही जायेगी जब अततर और दक्षिणकी लिपियाँका अध्ययन किया जायेगा। यह भी विदित होगा कि अततरकी ब्राह्मी लिपि और दक्षिणकी ब्राह्मी लिपिमें योय-मा अतर है।

हा० गायोने धारवाड आकाशवाणी केन्द्रपर १९५३ माचंकी ५ वीं को दक्षिण भारतकी लिपियोपर भाषण देने हुआ कया कि अी० पूवं ४५ वीं मदीमे अी० मन् ८ वीं मदी तक भारत मरमें ब्राह्मी लिपि ही प्रचारमें थी। अुसक अुपरत अुममें स्पूय रूपमे दो भाग किये गये—अुतारी और दक्षिणी। लिपि विदारदाने दक्षिणकी लिपियाँकी ६ या ७ भागोमें विभक्त किया है — पश्चिम शैलीकी लिपि, मध्यपदेवकी लिपि, कर्णिक लिपि कन्नड तैयुगु लिपि तमिळ और वट्टिटुत्तु लिपि। ये लिपियाँ काण्यमगे परिचरित होतीं यहीं और विदोषताअें प्राप्त करतीं गयीं। कन्नड तैयुगु लिपिका यवकी, कर्नाट, हैदराबाद (दक्षिण) का दक्षिण भाग, मैसूर, मद्रासका पूर्वोत्तर भाग अिन प्रदेशोंमें अी० मय

ग मा १३

५ वीं मदीम प्रचारमें था। अिसक विकासमें ३ या ४ अवस्थाअें है — ५ से ८ वीं मदी तक, ८ से ११-१२ वीं मदी तक, अुमय अुपरत विजयनगरके राजाअिके काठ तक। ८ वीं मदीय १८-१५ वीं मदी तक कन्नड-तैयुगु लिपिका प्रयाग कन्नड अर तैयुगु दाना भायाओंके लिपि किया गया है। अिसलिपि अिसका कन्नड-तैयुगु लिपि नाम पडा। विजयनगर साम्राज्यके पश्चात् कन्नड और तैयुगु लिपि अलग अलग लिपि बन गयी। पर आनुनिक कन्नड लिपिमें विरकुल थोडा-मा अतर है। तैयुगु-कन्नड लिपि अेक दूसरेके निकट है।

मैसूर गियामतमें हृमिडि नामक अेक ग्राममें अेक गिण्येय्य मिग है जा अवनक अुपरत कन्नड शिला-त्तमामें मवय प्राचीन माना जाता है। हा दयामास्तीके अनुमार अिस गिण्येय्यका मयय अी मन् २८० है, पर अुश्री विमसुके अनुमार ४ वीं मदीका अत है और हा अेय्य अर कृष्णके अनुमार अी मन् ४५० है। अिस गिण्येय्यकी प्रथम कन्नड पश्चितयामें गुहालिपिका अर्वा-चीन रूप दिनायी पडना है। अिस गिण्येय्यकी लिपिके बारेमें मैसूर अर्वाकियाणजिकल' विभागके अतिकारीने कहा है—*The Writing of the inscription at least in the first fifteen lines is in a very late form of the cave alphabet which has not yet fully developed into the early Kannada of the Chyalukyan and Ganga inscriptions.*

अुपरोक्त वागोसे हम अिस परिणामपर पहुँचत है कि कन्नड लिपिकी अुत्पत्ति ब्राह्मी लिपिमे हुआ और वह अुत्पत्ति अी मन् २८० म ८५० के बीचमें हुआ होगी। कन्नड लिपिका विकास अर भागके चित्रमें देख सकते हैं।

५ ६ ७ ८ ९	ॐ = अ
० १ २ ३ ४	ॠ = इ
५ ६ ७ ८ ९	ॡ = ई
० १ २ ३ ४	ॢ = ए
५ ६ ७ ८ ९	ॣ = आ
० १ २ ३ ४	। = क
५ ६ ७ ८ ९	॥ = च
० १ २ ३ ४	० = ज
५ ६ ७ ८ ९	१ = ङ
० १ २ ३ ४	२ = ञ
५ ६ ७ ८ ९	३ = ष
० १ २ ३ ४	४ = म
५ ६ ७ ८ ९	५ = य
० १ २ ३ ४	६ = र

वर्णमाला

बन्धकी वर्णमाला भी नागरी वर्णमालाके अनुसार ही है, पर घोडा सा अनर है। स्वर और व्यंजन पूर्ण है, स्वरा में ह्रस्व तथा दीर्घक भेदको दिखानेवाला संकेत भी है, जिह्वामूलीय, अणुध्मानीय, अनुम्भार, विसर्ग और दसो वर्णोंको सूचित करनेवाला चिह्न भी है, व्यंजना धराते स्वरोंका सुन्दर समुह है और आर्य अक्षे द्राविड भाषावाकी ध्वनिको अच्छी तरह व्यक्त भा किया जा सकता है।

बन्ध वर्णमालाका परिचय दवनागरी लिपिमें प्राप्त करानेका प्रयत्न कर ल।

बन्धमें कुल १४ स्वर हैं जिनमें ९ ह्रस्व हैं और ८ दीर्घ।

ह्रस्व स्वर — अ इ उ ऋ, ए, ओ

दीर्घस्वर — आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ओ

व्यंजनोंमें दो प्रकार हैं—वर्गीय व्यंजन और अवर्गीय व्यंजन और प्रत्या जिनकी संख्या २१ और १३।

वर्गीय व्यंजन — (स्वराका मिलाकर) —

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

अवर्गीय व्यंजन— (स्वरके साथ) —

य, र, ल, व, ण, ष, ह, ळ

अयोगवाह—अयोगवाह २ है — अनुम्भार और विसर्ग। बन्धमें अनुम्भारको बिन्दी अक्षरके आगे दी जाती है, जैसे क०=क अ०=अ। विसर्गकी दो बिन्दीयों जंत हिन्दीमें लिखी जाती हैं जैसे ही बन्धमें भी लिखी जाती हैं, जैसे क०=क व०=व।

बन्ध वर्णमालामें १४ स्वर २४ व्यंजन, २ अयोगवाह, कुल ५० मूलक्षर हैं। पर क ल व वन्धमें प्रयोग किये जानेवाले सङ्घट्ट धर्तोंमें जाते हैं। मत्प्राप्तिके मिले ह्रस्व और ण, पकाके ण्ध बन्धमें कम प्रयुक्त क्षिप जाते हैं। पर आजकलकी आधिक सङ्घट्ट मिश्रित णोंमें अिनका वासा मात्राओं अपयोग किया जाता है। न तो बन्धमें उन की तरह और न तो क्य की तरह ही लिखा जाता है।

व्यंजनोंके आगे स्वर चिह्न मिलाकर हिन्दीको तरह गुणित्वाक्षर या वारहवडी भी बनाने जाती है।

स्वरोंका छाटकर व्यंजन लिखनका तरीका भी है, जैसे क=क, ग=ग।

बन्धमें अपरोष्ठ 'ए' ह्रस्व स्वरका द्वुच्चारण अक्षी प्रकार किया जाता है, जैसे 'एक्का' छन्दमें एका किया जाता है पन् 'एक्के' एकारका। ह्रस्वस्वर 'ओ' का द्वुच्चारण अक्षी प्रकार किया जाता है, जैसे बाउवाल मोहमल, मागल 'ओ'के आकारका किया जाता है। ए दीर्घस्वरका द्वुच्चारण अक्षी प्रकार किया जाता है, जैसे 'एक' छन्दमें ए का किया जाता है और दीर्घस्वर ओ का द्वुच्चारण अक्षी प्रकार किया जाता है जैसे मोदल, मोय आदि छन्दोंमें आ का किया जाता है।

असवा तात्पर्य यह है कि ह्रस्व 'ए' और 'ओ' का अच्चारण अेक मानिक और दीर्घ ए और ओ का अच्चारण प्लुत (त्रिमात्रिक) होता है और कन्नडमें यह भेद दिखानेके लिये अलग अलग स्वर-वर्ण हैं ।

“कन्नड सतोऽन सस्या” (Kannada Research Institute) के तत्वावधानमें कन्नड पंडित श्री म. प्र. पूजारने कन्नड व्याकरणपर जो दो व्याख्यान दिये, वे कहते हैं कि कन्नड व्याकरणो केशिराजने 'शब्दमणिदर्पण' में अक्षर प्रकरणमें कहा है कि कन्नड भाषाके स्वरूपकी कल्पना देनेके लिये अे (ह्रस्व) ओ (ह्रस्व) स्वर, महाप्राण अक्षर, र, ङ ल आदि सहायक होते हैं ।

केशिराजने अक्षररोत्पत्तिके बारेमें कहा है कि शब्द अेक द्रव्य है वह क्षुभ्र रगका है वह तुरहीका सा होता है, हमारे कंठमें बाहर निकलनेवाली ध्वनि अुस शब्दद्रव्यका कार्यरूप है । किन्तु शब्द सामान्य ध्वनि-रूपका हो या अक्षररूपका, यह यहाँ विचारणीय है कि शब्द द्रव्य कैसे ? अगर शब्द द्रव्य हो तो गुण चाहिये । श्वेत रूप अुसका गुण है । जैनेकी राग्य है कि पुद्गलस्वघोके आघातसे ध्वनि पैदा होनी है । अुनके अनुसार बरमें केवल त्रिषा नहीं, पुद्गलरूप है । 'ज्ञानावरणीय' आदि पुद्गलबर्न आत्माको घेरते हैं । अिन विचाराने जैनेके पहले जो हुआ है, वे कहते हैं कि शब्द अेक गुण है और वह द्रव्याथित है । शब्दगुणक आकाशम् । आकाश शब्द गुणका है । जैसे गंध पृथ्वीका गुण है जैसे शीतस्पर्श जलका गुण है वैसे शब्द आकाशका गुण है । आधुनिक वैज्ञानिक भी शब्दको द्रव्य (Matter) नहीं कहते । पर यह तो चर्चितक विषय है ।

केशिराज अक्षररोमें दो प्रकार करते हैं— श्रावण और चाक्षुष । चाक्षुष अक्षर कैसे ? यह भी विचारणीय है । क्योंकि चाक्षुष अक्षर जो है वे अक्षर-चित्र हैं, न कि अक्षर । केशिराजके अनुसार अक्षरोंकी संख्या ५२ है और अुनमें ९ प्लुत और र (ङ) ल (देशी अक्षर) जोड़ दें तो ६३ अक्षर होते हैं । अगर प्लुतोंको छोड़ दें तो ५७ अक्षर हो जाने है । पर कालानुक्रममें कुछ अक्षर हट गये और अब अुपर दिये हुअे ५० मूलाक्षर कन्नडमें है ।

पंडित पूजारजीका कहना है कि निम्नलिखित विषयोका कन्नड शिष्या ग्रयमें समावेश होना चाहिये—

(१) अकारका अच्चारण सामान्यत शब्दोंके अतमें यदि वह हो तो विस्तृत होता है— अुदाहरणार्थ— वद, हाद माडिद । अिमलिअे कुछ लोग वदा, होदा, माडिदा लिखते हैं । यह गलत है । शब्दोंके मध्यमें अकारका अच्चारण सकुचित होता है । (२) क और लु का अच्चारण भी कभी लोग क और लु की तरह करते हैं । (३) जिहामूलीय (अुदा—प्रात काल), अुपध्मानीय (अुदा—पय पान) का ठीक अच्चारण । (४) महाप्राणोंका अच्चारण । (५) सामान्यतक यवल घटित शब्दोंका अच्चारण । (६) ह्य, ह्य ह्य ह्य आदिका अच्चारण । (७) द्वित्वाक्षर रोक लिलना । (८) शिषिल द्वित्वाक्षरवाले शब्दोंका अच्चारण । (९) नित्य शिषिल द्वित्वाक्षरके शब्दोंका अच्चारण ।

कुछ अक्षर, फारसी अक्षरोंके लिये भी कन्नड लिपिमें सनेतोंकी आवश्यकता है । अिनकी आवश्यकताके बावजूद भी तमिळ और बट्टिळ्ळुको छोड़, शिषिलकी सभी लिपियाँ सर्वोत्तम हैं जिनमें अेक कन्नड लिपि भी है ।



परकीया

: धी पी. वें. राजमन्नार :

‘पात्र’

ब्रह्मानन्द . अके अध्यापक
प्रभा . ब्रह्मानन्दकी पत्नी
सत्यं और मोहनराव : ब्रह्मानन्दके मित्र
कृष्णराव डाक्टर
गाडोवान

(अलुरमें ब्रह्मानन्दके घरका अके कमरा जो
ट्राइगटम कहला सकता है) बीचमें अके भेज है,
जिमके चारो ओर चार कुत्तियाँ पडी हैं। अके कोनेमें
पल्ला दिछा हुआ है। दूसरे कोनेमें अदर जानेका द्वार।
दाहिनी ओर बाहर जानेका द्वार।

ब्रह्मानन्द और सत्यं बैठे वार्ते कर रहे हैं।
ब्रह्मानन्द अके स्कूलमें अध्यापक है। अग्र लगभग ३०
है। मुगठित शरीर है। लेकिन मुख तेजोहीन, दुजे-दुजे
चूहेके सघान। सत्य भी अउसका समवयस्क है। कुशल
स्वव्यहारिक-सा दीखता है। मद्रासमें किसी कम्पनीका
अेजेंट है। किसी वामसे अलुर जाया हुआ है। सिग-
रेटका धुंजा छोड रहा है।)

ब्रह्मानन्द :—बनो माओ सत्य ! ता तुमको यहाँ
आये तीन दिन हो गये। अब मेरी याद आयी ?

सत्यं —नहीं भाओ ! जिस दिन आया था अउम
दिन अित्रना यका था कि वहाँ हिलनेकी अिच्छा नी
नहीं हुआ। कल वाम पूरा करने जब यहाँ आनेको
निबला कि रास्तेमें अचानक मोहनराव मिला। अउसे
देगे बहुत दिन ह्य गये थं। मने कटा, “वाह माओ,
जितने दिनों बाद मिले।” “हाँ माओ ! आज नी
अच्छा दिन है। अिमलिजे अुचित रीतिसे आदर स्कार
करना चाहिये। चणो होटलमें चले। बडी भूख लगी
है। दावत होमे ?” अुमने कहा।

अज अुसने जिस प्रकार भोलेपनके साथ पूछा तो
मै कैसे रोकता। खैर, होटलमें गये। अुसके बाद
गपगप.....आज तुम्हारे स्कूलमें छुट्टी है, जिसलिजे
अहदी चला आया।

ब्रह्मानन्द :—अरे ! मोहन जिस शहरमें है।
यहाँ रहने दुअे अके दिन भी भुमसे मिलने नहीं आया।
बडी गहरी दोस्ती थी।

सत्यं :—या तो किसी शहरमें। आज नी रहेगा
शायद। लेकिन क्या ठिकाना ! दम दिन वहाँ अके
जाह रहना पडे तो प्राण छोड देगा।

ब्रह्मानन्द :—अके ही दिन सही। अुसको मालूम है
कि मै अिन शहरमें हूँ। तीन महीने पहले अुसने
अपना सड-काब्योका अके सग्रह नी भेजा था।

सत्यं :—(कुछ सोचकर) क्या अुसे मालूम है
कि तुम्हारा विवाह हो गया ?

ब्रह्मानन्द —बनो नहीं, मेरी स्त्री भी तो
मछलीपट्टामुकी है। अुसीके शहरकी।

सत्यं —तो मुने अके कारण दिखायी देता है।
अुमने सोचा होगा कि तुम अरनी पत्नीके साथ सुखमय
जीवन बिताते हो फिर अुसका अंता आदमी नद्गृहस्थके
यहाँ बनो जाओ।

ब्रह्मानन्द :—अरे ! माओ ! तुम नी अजीब
बात करने हो। हाँ, मुने मालूम है कि अुने शराव
पीनेकी आदत कालेजके दिनोंसे ही है, लेकिन अित्रनी-
सी बातके लिजे—

सत्यं :—(हँसकर) तो तुम अुसका पूरा अितिहास
नहीं जानते। तुमको मालूम है कि अुमकी गाडो हुआ ?

ब्रह्मा :—(नकारानक रूपसे सिर हिलता है।)

सत्य — बचपनमें ही हो गयी। पत्नीके आनके तीसरे दिन ही असन कहा तुम्हारे साथ जीवन विताना मृत्युके समान है। तुमन कोभी अपराध नहीं किया। तुम चाहो ता किसी दूसरेमे शादी कर लो। मुझे कोभी अजु नहीं। म पिताजीसे कह दूगा कि मेरी जायजाद तुमको अिय दें।

असन पिताजीसे भी यही कहा और अक महीनके अदर ही अदर निश्चकवालीकी * बहूको भगा ले गया। असके पिताजी बड बट्टर सनातनी विचारके ह। यह देखकर मारे शोधके जल अुठ और अपनी जाय जादका आधा हिस्सा बहूको दे दिया। वाकी ट्रुम्टियोकी सौपकर महावार सौ रुपय मोहनरावको देना प्रबध किया। असके बाद वचारेन स्वगकी राह गी।

अह्या — अितना काण्ड हुआ ! तो मोहन अब अुसीके साथ

सत्य — भाग्य अच्छा था कि सीप्रही अुम बहूकी भी मृत्यु हा गयी। वचारीन न जान कितनी तकलीफें अुठायी। लेकिन मोहन तो कहता है कि असको बडा गुल था।

अह्या — असके बाद ?

सत्य — निर तर भ्रमण। होटलामें खाना और स्टगनावे छपरोंमें सोना। हाथमें पसा रहनपर मदि राग्य या वेदयाग्यमें असका ठिकाना रहता। अस हालतमें अुमने यदि यह समझा हो कि तुम्हारे समान प्रतिष्ठिन जीवन वितानवालेके यहाँ जाअू तो तुम्हे न जान कैसा लग तो आश्चय क्या ?

अह्या — वचारा रोनी कमे कमाता है ?

सत्य — कहा न पिताजीके वसीयतनामेके अनुसार ट्रस्टीचाके माहवार असको सी रुपय देते ह जो दस बारह दिनमें ही अुड जात ह। असके बाद जीवन अक दैनिक समस्या है। किसी तरह महीना पूरा

हो जाता है। वः मेरे साथ होटलमें थाया। हो सजता है कि अब तक फाका ही कर रहा हो। वुद्धि ठिकामें रही तो लिखता अदमुत है। असका हमारे समाजमें कोभी स्थान नहीं। क्या ? क्या सोच रहे हो ?

अह्या — कितना विलियेंट या कालेजमें। वचारेपर तरस आता है। असका भूखा रहना मुझसे नहीं देखा जाना। जानने हो अब कहाँ होगा ?

सत्य — निश्चित रूपसे नहीं, क्या ?

अह्या — मरा होटल जाना अच्छा न होगा। असको यहाँ ले आओग तो अक दिन हमारे साथ रहेगा। पेटमर वा पी लेगा। मुझ भी अक तरहका सन्तोष होगा ?

सत्य — म कोगिग करूंगा (अठकर) लेकिन तुम्हारी प नी क्या कहेगी। यह भी सोचा ह ? मेरी माँ अपनी बहूसे कहा करती है कि तुम्हारी स्त्री बडी पतिव्रता ह। असे लफगको घरमें देखकर न जान वह क्या कह बड। और तो और सारा अपराध मेरे निर पडगा।

अह्या — कोभी डर नहीं। मेरी अच्छा ही असकी अच्छा है।

सत्य — (हँसना और कुठ गुनगुनाता है।) यद्यपि दो ह तन तो भी मन अक ह मन— अच्छा भात्री अब जाता हूँ।

अह्या — हाँ भात्री। असको लिवा लाना भूलना नहीं।

सत्य — अच्छा। (जाता ह।)

अह्या — (पुपचाप कुछ सोचना रहना ह।)

(प्रभाका प्रवेश। अह्यानन्दकी पत्नीका पूरा नाम प्रभावती है। गहुँआ रग अुमर बीस वषकी ह लेकिन प्रौढ़ास्त्री दीखती है। बडी-बडी अँखिं जिनमें बडी गम्भीरता है जिसको अुमका पति भी नहीं देख सकता। पतिसे—)

प्रभा — क्या सोच रहे हो ?

अह्या — क्या ? तुम्हारे ही बारेमें ?

* वश या घरना नाम है जिसने किसी परिवारकी पहिचान हाती है।

प्रभा — (हँसकर) सच ? मुझे मालूम नहीं था कि आप मेरे बारेमें सोचेंगे। बीमारीके समयके सिवाय..

ब्रह्मा — मतलब ?

प्रभा — कुछ नहीं। आश्चर्यकी कोअी बात नहीं। रोज़ हम जिस खाटपर सोते हैं, उसके बारेमें कभी सोचन हैं, क्या ? जब उसकी भरमत्तकी ज़रूरत पड़ता है तना हम उसके सम्बन्धमें साचते हैं न। (प्रभा बाते करती हुआ कोअी न कोअी काम करती रहती है। मजपर जोअें ठीक करती है। कंलेण्डरमें तारीख बदलती है और रद्दी बागज टोकरीमें डालती है।)

ब्रह्मा — तुम भूलनी हो। तुम्हारे ही सम्बन्धमें मैं सोच रहा हूँ।

प्रभा — मेरा हृदय घबड़ाता है। कहिये न क्या है।

ब्रह्मा — मेरे सहपाठी मोहनरावको जानती हो ? तुम्हारेही गाँवका है।

प्रभा — (चौंक्ती है, फिर सम्भल जाती है।) हाँ।

ब्रह्मा — बड़ा बुद्धिमान है। कला-प्रमी और कवि भी।

प्रभा — पत्रिकाओंमें कभी-कभी उसकी कविता देखा करती हूँ। लेकिन आप किसलिअे पूछ रहे हैं ?

ब्रह्मा — उसके जीवनकी मारो बहाना क्या तुम जानती हो ? पत्नीकी त्याग देना, किमीके साथ भाग जाना, भयपान और भ्रमण जिस प्रकार उसका मारा जीवन विचित्र और निकम्मा बन गया है। बँसा होनहार था परन्तु बँसा गुण्डा-भा बनकर बदनाम हा गया है वह बचारा— (अबदम हक्कर) प्रभा ! क्या तुम दरती हो कि मैं भी अँमा ही बन जाऊँगा ?

प्रभा — नहीं।

ब्रह्मा — क्यों ?

प्रभा — (जरा हैपानीमे) बदनाम होना भी क्या सबके लिअे आमान है ?

ब्रह्मा — (तमाचा लगा-भा ठहवडाना है। फिर सम्भल जाता है।) मोहन अब किसी तरहमें है।

प्रभा — (गुस्सेसे) जाने भी दीजिये जिस पचडको। (जरा शान्तिते) यही आप मेरे बारेमें सोच रहे थे ?

ब्रह्मा — जितनी जल्दी क्यों ?

प्रभा — अच्छा। माफ कीजिये।

ब्रह्मा — मोहनको लिवा नानेके लिअे सत्यकी भंजा है कुछ खिलाने-पिलानेके विचारसे। अब मोचमें हूँ कि तुम हँमी अूडाओगी। सत्यने कहा शायद तुम्हारी स्त्री आपत्ति करे, जिसपर मैंने कह दिया कोअी डर नहीं, मेरी अिच्छाही उसकी अिच्छा है। अब देखें देवीजीकी क्या आज्ञा है।

प्रभा — आपने कह दिया न, अब मुझे क्यों पूछते हैं। आप अपने मित्रोंके साथ सा-पीकर सुकने रहें तो मुझे क्या आपत्ति होगी ?

ब्रह्मा — अच्छा, अब तो जान बची। (घोड़ी देर धान्ति रहती है।) प्रभा। मोहन मछलीपट्टणमें भी पीता था ना। अब तो और अधिक पीता होगा। बहुत बुरी आदत है।

प्रभा — (घुप रहती है।)

ब्रह्मा — निरसाबवालोंकी लडकीको तुम जानती हो ना। उनक कष्टोंके बाद बेचारीने जान दे दी। तबम सेकर वह बहुत बेर्यालोलुप हो गया है। उसका पिता कितना कट्टर सनातनी था। कितना धर्मपरायण था। अँस पिताका बेटा न जाने अँमा क्या निकला ?

प्रभा — (अस्पष्ट रूपसे) शायद अिसीलिअे अच्छा अब अन्दर जाना है, बटून काम पडा है। (जाता है।) (ब्रह्मानन्द अूठकर टहलने लगता है। अदर जाकर अँस नया टबिल-न्याप लाकर मजपर बिठाता है। अूमके चारों ओर तीन बुझियाँ रखकर अँस और कुर्सी जरा दूर रखता है। फिर न जान क्या मोचकर अूम भी मेजके पास रखता है।)

(सत्यका प्रवेश)

ब्रह्मा — अरे ! अरे ! क्यों आये ? क्या मोहन लापना हो गया ?

सत्य — (चिन्तित स्वरसे) नहीं। इसी गहरमें है। लेकिन वह यहाँ तक आनेकी परिस्थितिमें नहीं है।

ब्रह्मा — क्या बीमार है ?

सत्य — हाँ बीमारी ही है। थोड़ा पिपपण्ड है। अब वह अतना बेधा है कि किसीको पहचान भी नहीं सकता। या तो न्यून दृष्टिसे देखता है या आँसू यद कर लेता है। सारा शरीर अिनना गर्म है मानो बुगार पड़ा हो। मेरी समझमें नहीं आता कि क्या किया जाये। यही श्रम होटलमें पेश है।

ब्रह्मा — यह सब कैसे हुआ ?

सत्य — तुम बि'कुल भोत्रे हो, ब्रह्मानन्द ! अंगे लोभाकी हरफसे तुम नहीं समझ सकते। किसी पत्रिका-वालेने पैसा भेजा होगा। वस ! ओर क्या ? पैसा पतम होनेलक पिया होगा।

ब्रह्मा — तो फिर क्या किया जाये ?

सत्य — डाक्टरको दिखाना चाहिये। किसी अच्छे स्थानमें सुरक्षित रूपसे रखनेका प्रयत्न करना चाहिये बेचारेको देखने दया आती है। हमारा गाँव होता तो सीधे अपने ही घर ले जाना। लेकिन वह रैड-पर सफर करनेकी हालतमें नहीं है।

ब्रह्मा — यदि यहाँ ले आयेँ तो ?

सत्य — जिससे और क्या अच्छा होगा ?

ब्रह्मा — गाँवमें ले आओ।

सत्य — नहीं क्या तो गन्धेपर ले आना होगा पलग तैयार रमो।

ब्रह्मा — हाँ, हाँ। (जोरसे) प्रभा ! जो प्रभा !

(सत्य चला जाता है। प्रभाका प्रवेश बाण्डिल लये हाथोंसे)

प्रभा — चाय लाओ ? (ओर किसीको न पाकर) अकेले खेने ही जिंजे ना ?

ब्रह्मा — देखो प्रभा ! सत्य बहूना है कि मोहन बड़े सतरेमें है। सुनारसे बेहोश हो गया है। बड़ी बुरी आदम है।

प्रभा — साराव पीनेकी ?

ब्रह्मा — हाँ। मुझे दया आती है, प्रभा, जिस गहरमें खुमका अपना कोश्री नहीं।

प्रभा — तो टीन है। जाकर देखिये। चाय पीकर जाशिये। काजू ?

ब्रह्मा — मेरे देखनेकी क्या जरूरत ? अपने घरमें ही बुला लें, टीक हो जानेके बाद चला जायेगा।

प्रभा :— (बठोरतासे) इरगिज नहीं।

ब्रह्मा :— (आदचर्यसे) क्यों ?

प्रभा — अस्पतालमें मर्नी करवा दीजिये; नहीं तो ओर बड़ी रविये।

ब्रह्मा :— प्रभा ! तुम यह क्या कह रही हो ? आज नौगनीको यहाँ रखो। यदि तुम नहीं चाहती तो बन्द ठीक हो जानेके बाद भेज दूंगा।

प्रभा — (बठोरताकी जगह कानरतासे) नहीं जी ! मैं प्रार्थना करती हूँ। नहीं ! मेरी बात मानिये। आप जाकर देख आशिये। चाहे तो कुछ रुपये दे दीजिये। सत्यनारायणजी भी हैं। अूनको लौकिक व्यवहार अच्छी तरह मालूम हैं।

ब्रह्मा — (गुस्सेसे) मुझे भी मालूम है। मैं निराला भौंडू नहीं हूँ। क्या समझती हो तुम ? खुदका मास्टर हूँ तो भी अपने घरका मालिक मैं भी हूँ। यह मेरा घर है। मेरा आँगन है। क्या अपने घरमें अपने दोस्तको अेक दिन रखनेका भी मुझे अधिकार नहीं ? तुम लो पतिव्रता होकर मेरे अधिकारकी अबहेलना करती हो।

प्रभा — (बहुत कानरतासे) राम ! राम ! अपनी जवानपर अंगी बात ला सकती हूँ ? मैंने तो प्रार्थना की। क्या पतिसे प्रार्थना करनेका भी पत्नीको अधिकार नहीं ? फिर प्रार्थना करनी है यह विचार छोड़ दीजिये ?

ब्रह्मा — नहीं छोड़ूंगा। नहीं छोड़ूंगा। तुम जो कुछ भी कहो, जितनी ही प्रार्थना करो, नहीं मानूंगा।

प्रभा — (निरासतासे) तो टीक है। जहाँ तक हो सका, कोशिश की। मेरी बात नहीं मानने, अब मैं क्या करूँ। समझूंगी दुर्भाग्य है।

ब्रह्मा — कुछ भी समझो । ले आनेको सत्यको मन्त्र है । डाक्टर भी आओ । प्रभा ! बरबिकर काम समयकर खानाकानो तो नहीं करोगी ?

प्रभा — क्या मुझपर अतिना विदवास नहीं ।

ब्रह्मा — (कंधार हाथ रखकर) क्या नहीं मंने ता यही कहा था । तो फिर देखो अुत्ती पलगपर लिटाओ ।

प्रभा — अच्छा । (अन्दर जाकर तकिचे, चादर वारह लालक रंग्या रंगार करती है) (ब्रह्मानन्द मेजको अक ओर सरकाकर पलगके पास दो कुत्तियो डालना है ।)

(सत्य और गाडीवान दोनो तरफने पकडकर मोहनरावको अन्दर लाते हैं । मोहनको आँखें मुंदी हुआ है । लम्ब लम्ब काले बाल भालपर बिखरे हुअे हैं । लम्बा चेहरा और मुकीली नाक, धनी भीहें पतले और मूल कपोल । होठ बार-बार टेडा हिलता है । कुछ मंला महीन जुब्बा और पाजामा पहने हैं ।)

सत्य — ब्रह्मानन्द ! क्या अुत्ती पलगपर ?

ब्रह्मा — (आदरधमे देखता हुआ) हाँ । (सिर हिलाना है)

(सत्य और गाडीवान दोनों माहनका पलगपर लिटाने हैं । प्रभा अन्दरने अक साल लालक आगती है)

गाडीवान — सरकार ! मैं आओ ?

सत्य — (पंसे देकर) हाँ आओ । जान समय अक बार डाक्टर माहकको याद दिना दो ।

गाडी — जी हाँ ! (जाता है ।)

(सत्य और ब्रह्मानन्द विना कुछ बाल अक-दूरको दखत हैं । बादमें दाना पत्ताका ओर दखत ह । प्रभा, माहनक बिगर बाल डीक करती है ।)

प्रभा — (माहकर हाथ रखकर) बापरे ! कितना लम्ब है ! बहुत सुमार है । मुडकुलोनमें निगाकर कमाल मस्तकरर लम्बे ?

(कोत्री जवाब नहीं देता । प्रभा अन्दर जाकर अक कमाल मुडकुलोनमें निगाकर मोहनक मस्तकरर रखती है । चित्रनेमें डाक्टर आता है ।)

कृष्णराव — हलो ब्रह्मानन्द ! गुडओविनिग सत्य !

ब्रह्मा — डाक्टर ! (पलगकी ओर दिखाने हुअे) मोहनराव हमारा मित्र है । मय अिन हालतमें देखकर अुसे यहाँ ले आया है ।

(डाक्टर पलगके पास जाकर मोहनकी परीक्षा करता है । यमामीन्दसे देखकर)

डाक्टर — कोत्री खास बीमारी नहीं । बुखार तो है, लेकिन वह भी अक लक्षणा है । ऑलकोहॉल ज्यादा पी जानेसे कभी-कभी सन्निसात भी हो जाता है । रातभर पानीके सिवाय और कुछ भी खानेको मत दीजिय । सत्यम् ! मेरे साथ आओ । दवा दूंगा । अक डोब अमी देना और अक डोब मुबह देना । यदि ज्यादा वक्क हो तो नौदके लिअ स्लीपींग ड्रान्ग भेजूंगा सो देना, कलतक बिन्दुल ठाक हो जायेगा । गुटनाशित ।

(डाक्टर और सत्य जान हैं ।)

(प्रभा पलक पासवाली कुर्सीपर बंठती है ।)

ब्रह्मा — (धीरसे) प्रभा !

प्रभा — क्या ?

ब्रह्मा — जा तोव सो मार जान ! बड़ी दयाके माय घरमें रखनको कह दिया । लेकिन तबलेक अुजानवाली तुम हो । मैंन भावा नहीं ! मैंने क्या करो प्रभा !

प्रभा — नहीं-नहीं, आप मूलने हैं ! कामकी वजहसे मैंन नहीं मना किया था । यह भी कोत्री काम है, मेरे लिअे ? जब आपका टाकिनाशित हो गया था तो बीस दिन तक नमंन ममान काम किया था— दण्ड नहीं है ? (जब य बातें हो रहा थीं अुत्ती बीच माहन कान-हन हुआ कुछ बहबदाता हुआ हाथ हिलाना है । बायें करती हुअी प्रभा माहनका हाथ दबाता है ।)

ब्रह्मा --कुछ ठीक होनेपर किसी तरह भेज दूंगा।

प्रभा --वे भी क्या रहेंगे जी ?

ब्रह्मा --(शुत्तर जंचा नहीं। लेकिन कुछ भी नहीं कह पाता)

प्रभा --अन्धेरा हो रहा है। जरा दीपक जलाविये।

ब्रह्मा --(दीपक जलाना है) प्रभा ! तुम मोहनको अच्छी तरह जानती हो ?

प्रभा :-मनलब ?

ब्रह्मा --तुम्हारे ही गांवका है न। जाननी भर हो या कुछ परिचय भी है।

प्रभा --कभी कभी हमारे घर आया करते थे। मेरे पिताजी अिनसे कविता पढ़नेको कहा करते थे।

ब्रह्मा --हाँ। अच्छा पढता था। होस्टलमें----(कुछ मोचता है, चुप रहता है) तुमको पहचानता है।

प्रभा --(सूखी हँसी हँसकर) अिम प्रश्नका जवाब मैं कैसे दे सकती हूँ।

ब्रह्मा --हाँ ठीक है।

(वातचीत रुक जाती है। ब्रह्मानन्द टहलता रहना है। अितनेमें सत्य दवाकी शीशियाँ लेकर आता है। शीशियाँ मेजपर रखते हुआ।)

सत्य --देखो, अिस शीशीकी दवा अेक डोज अभी देनेकी कहा। दूसरा डोज कउ सुबह दे सकते हैं। अिस शीशीमें अेक डोज है। सो आये तो देनेकी जरूरत नहीं। नहीं तो बकझक करनेपर देनेकी कहा है। (प्रभा अुठकर पहली शीशी लेकर अेक ग्लासमें दवा अुडेलती और पिलाती है।)

सत्य --अब्वल दर्जेकी नसं हैं !

ब्रह्मा --देर हो गयी। सत्यं ! अब तुम जाओ।

सत्य --कल सुबहकी गाडीसे मुझे जाना है। विदा। मोहनकी शाश्रुत लिखिअंगा।

ब्रह्मा --हाँ, जरूर।

(सत्य जाता है)

रा भा. १३

प्रभा --जाकर भोजन कर आविये।

ब्रह्मा --और तुम ?

प्रभा --अपवास तो नहीं करूंगी। मैं बादमें पाऊंगी।

ब्रह्मा --ठीक है। (अदर जाना है।)

प्रभा --(सदर दरवाजा बन्द कर आती है)

(मचपर दीपक बुझाकर फिर जलाअें कुछ व्यवधानकी सूचना देनेके लिये)

+ + +

(आधी रातका समय। मोहन पलंगपर सोया हुआ है। और कोभी नहीं है। पढ़ते अस्पष्ट रूपसे बाने मुन पडती है और बादमें स्पष्ट हो जाती है।)

मोहन --ओह ! प्यास ! ज्वाला, रक्त ज्वाला, रक्तकी धारा, होम-कुण्डमें रक्तधाराअें। लाल लाल जीभके समान लपटें। खून। ओह ! दर्द ! (अबिँ खोलकर देखता है।)

(प्रभाका प्रवेश जो मोहनकी आवाज सुनकर आयी है। वह पलंगके पाम खडी हो जाती है।)

मोहन --(अबिँ बन्दकर) देखो प्रभा ! राक्षसोंने क्या किया है ?

प्रभा :--(चोंक पडती है।)

मोहन :-मेरे सीनेमें बछीं मार दी, प्रभा। मेरी हृदयेश्वरी ! अब मेरे हृदयमें मून नहीं। असे कुडमें अुडेल दिया गया है। लो देखो ! अुनको भगा दो। अपने हाथोमे वह खून मेरे हृदयमें भर दो। (अबिँ खोलता है। अेक वपणतक प्रभापर दृष्टि गडाकर देखता है।) कौन हो तुम ?

प्रभा --प्रभा। आपकी हृदयेश्वरी !

मोहन --(पागलके समान देखने और हसते हुआ) राक्षसी ! तुम्हें मालूम नहीं, मेरी प्रभा मर गयी। मुझे मातूम है, तुम्हीने मार डाला। देखो मैं पुलिसमें रिपोर्ट करता हूँ। (अुठना चाहता है।)

प्रभा --(फिरसे लिटाकर) प्रभा मर नहीं गयी। आर सो जाविये।

मोहन — (बाप मुमनेकी हालत नहीं है।) प्यास,
प्यास, दावान्तिकी ज्वालामुखी, रुपटें ।।।

प्रभा — (पानी पिलाने है।)

मोहन — आज्ञी हो। फिर आज्ञी हो? अच्छी
तरह देख लेने दो। (आँखें बंद कर लेता है।) दो-अंक
चुम्बन। (होटोंमें चुम्बनेकी आवाज करता है।) ओह !
निजनी मधुरता ! सुधा मधुर है मधु मधुर है, दधि
मधुर है तुम्हारे हाठ मधुरानिमधुर है। (ओरसे)
हाप ! मेरी प्रभाको वह रावधम बलात्कारसे.....ओह !
किनना भाव किया है। (हाथसे अपनी छाती पकड
लेता है।)

प्रभा — (हाप खोलकर भुजाओं पकडती है) कोश्री
नहीं है। आप डरिये नहीं। गो जाअिय।

मोहन — (आँखें खोलकर) रावधसी ! अब भी
है। मुसपर नजर लगी है ? मेरी प्रभाका खून बरके
मुससे गादी करेगी ? जा-आ। (आँखें बंद कर लेता है।)

प्रभा — (बुछ स्मरण करते बूछकर दूधरी
शोभीकी दवा पिलानी है।)

मोहन — विष, विष हलाहल है। नीलकण्ठके
गलेका हलाहल। तुमको कंस मिला डाक्टर ! (आँखें
खोलकर) मुझे मालूम है, डाक्टर ! शिवको मारकर
अनका विष लाये हो ? अब तो शिव ताण्डव नृत्य नहीं
करेगा ? (पागलके ममान हँसना हुआ) हिम ! हमारा
मुचु भी शिवका ताण्डव-नृत्य करता है तमिल गानेके
माथ। गाऊ ? “कालं नृकि निरादुम दैव मे” बाकी
शेष गाना नहीं माना। कपो हँसता है वे ? तेरा गिर
पीडकर टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा। पेट चीर दूँगा।
(अग्राओ लेता है।) बरी मिये ! मेघोवर क्या चली
जाती हा ? धूमगोत्रि चल्ल मरता— (गिर
जम्हाओ। आँखें झपक जाती है।)

प्रभा — (भालपर बिन्दरे बाल टोक करती है।
घोरी देर देगकर घोरे घोरे दूध हो चुमनी है और
बहिन्ना-बहिन्ना चली जाती है।)

(फिर मकर अर्धरात्रि)

(इसरे दिन सुबह लगभग साडे नौ बजेका समय ।
मोहन अमी सोपा हुआ है।)

प्रभा — (प्रवेश करते पलके पास सडी होकर
असके भालपर हाप रखकर देखती है। भरती नहीं
है।)

मोहन :- (जागता है) कौन है ? कहाँ हूँ मैं ?

प्रभा :- यहीं। धीरे-धीरे नव कहौं। जो
कंस है ?

मोहन — कुछ नहीं, ठीक है (गिर हिलकर)
सिरमें पोटा सा दर्द है। क्या यह अस्पताल है और तुम
नर्स हो ?

प्रभा — (हँसकर) अंक तरहने नर्स ही हूँ। यह,
आपके बचपनके मित्र ब्रह्मानन्दजी रावका मकान है।

मोहन — (अंकटक देखता है अमकी ओर।
सट कुछ पाद पाता है।) देखो ! तुम बकटसान्नीजीकी
बेटी प्रभा हो न ?

प्रभा — हाँ ! अब अिनकी पत्नी हूँ।

मोहन — हाँ ! ब्रह्मासे गादी की है न। कहां
है ब्रह्मानन्द ?

प्रभा — स्कूलका समय हो गया है। मोहन
करके कपडे पहन रहे हूँ। अमी आओ।

मोहन — मास्टर है ? कालिजके दिनोंमें ही हम
लोग अूनको मास्टर माहब कहते थे। बहुत अच्छा है।

प्रभा :- (मुम्कराओ हुआ) खूब ! पत्नीने
पतिका मटिफिकेट स्वीकृत कराना चाहते है ?

मोहन — अब भी अूनकी ही नदखत हा (अंक
टक देखता हुआ) बचपनमें जब अधिक् मुन्दर चीवनी हो।

प्रभा — मेँ कंसे जानू ?

मोहन — क्या ब्रह्मानन्द नहीं कहता।

प्रभा — स्कूलके मास्टर बना हर रोज अपनी
पन्थियोंका वर्णन करते है ?

मोहन — (अच्छा घोरे-घोरे बूछकर दीवारके
महारे बँडता है।) मैंने रातमें बडा धूमित कर्वाव किया
होगा। लेकिन मेँ जिन दुनियामें पा ही नहीं। माक
बरो। गराड बहुत रदी चीज है।

प्रभा — हाथ मुँह धोकर काफी पीजिये। बेमिनमें पानी लाती हूँ।

मोहन — ना में ही आ जाऊँगा। (बुटनेका प्रयत्न करता है।)

प्रभा — नहीं! आप बहुत कमजोर हैं। (मोहनकी भुजाओं पर पकड़कर बँटानी है।) मोहन झट प्रभामें हाथ पकड़कर अपने नजदीन गीचकर घूम लेता है।)

मोहन — पाप किया है। बपमा करो, प्रभा!

प्रभा — (सब कुछ भूल जाती है।) नहीं-नहीं। (मोहनका सिर पकड़कर घूम लती है।) उसी समय ब्रह्माराव प्रवेश करता है। जा कुछ हुआ है वह मर देखा तो नहीं लेकिन बोजी सम्बेह हृदयमें अथल अथल मचाने लगता है जिसे प्रकट नहीं होन देता।)

ब्रह्मा — क्या मोहन जगा है? कैसा है।

प्रभा — (अपनी घबराहट छुगाती हुनी) हाँ। अभी जागे है। सिरमें दद बनात है। अउठते गिर पडे।

ब्रह्मा — मोहन! आज कुछ आरामकी जरूरत है। लेट ही रहो।

मोहन — ब्रह्मानन्द! मेरे ओर आरामके बीचम काफी दूरो है। बहुत धन्यवाद अनायकी रक्या की जो तुमने!

ब्रह्मा — सरयन वताया तुम बडी बुरी हालतमें हो, जिसलिअे झट यहाँ लाननो कहा।

मोहन — क्या अब सत्य यहाँ आयेगा?

ब्रह्मा — नहीं! वह सुबह ही चला गया।

मोहन — धन्यवाद। लेकिन मुझे बिदा दो भाओ। काफी पीकर चला जाऊँगा।

ब्रह्मा — नो, नो। (तुछ सोचकर) खैर, मेरे खू उसे लोटनने बाद देखा जायेगा। अच्छा में जाता हूँ। तुम प्रभाको नहीं जानते?

मोहन — हाँ, बचपनका थोडा परिचय है। हम दानो मछलीपट्टणमके है।

ब्रह्मा — हाँ, वही तो। मरा समय हो गया है, में जाता हूँ। (जाता है।)

प्रभा — मैं पानी, नेस्ट आदि लाती हूँ। (जानी है।)

मोहन — (दोना हाथाने सिर पकड़कर आँखें बंद कर जाता है।)

(पर्दा गिरता है)

+ + +

(पर्दा अउठता है शामके चार बजेका समय। प्रभा पलगपर बँटी है। मोहन अधर-जुधर टहलता है।)

मोहन — हो गया! चाहसे ज्यादा भी हो गया। स्वप्नलोको अब यथार्थकी दुनियामें अुतरना चाहिये। प्रभा! अब अेक घटेमें जा रहा हूँ।

प्रभा — हाँ, घटेमें जा रहे हैं?

मोहन — (पहले नहीं समझना लेकिन बादमें समझकर झट) क्या कहा?

प्रभा — यही कि अेक घटेमें जा रहे हैं।

मोहन — मतलब?

प्रभा — बचियाकी सीधी-मादी भाषा मालूम नहीं हाती। अेक घटेमें हम तुम दोना जा रहे हैं, यही मेरे कहनेका मतलब है।

मोहन — प्रभा! पगली-मी बात करती हो! तुम स्वप्न ससारमे अभी बाहर नहीं आयो?

प्रभा — स्वप्न-गेव और यथार्थ ससारका निर्णय करनेकी मुझे जरूरत नहीं। मैं आपके साथ-साथ चर रही हूँ। मैंने अपना सब सामान ठीक कर लिया है। अुनके बनवाये जो गहने हैं यही, छोड दिये हैं। क्या यह सब सपना है?

मोहन —:—नहीं, प्रभा नहीं!

प्रभा — क्या? पापका काम समझकर?

मोहन — नहीं!

प्रभा — सगाजके डरसे।

मोहन — नहीं!

प्रभा — मित्र-ब्रोहके डरसे?

मोहन — नहीं!

प्रभा — ता क्या यह समझकर कि मुझे तकलीफ होगी? क्या यह समझकर कि बिना घर वारके कभी-कभी खाने पीनेकी भी मुझे तकलीफ अुठानी पड़ेगी? मुझे अिसका डर नहीं!

मोहन — नहीं!

प्रभा — क्या यह समझकर कि आपकी आजादीमें बाधा डालूंगी?

मोहन —:—नहीं, प्रभा, नहीं।

प्रभा — (तीखेसे) तो मालूम हो गया। भुवने प्रम नहीं। (खड़ी हो जाती है।)

मोहन — हाय ! कितना भूलती हो ? प्रमके कारण ही मैं प्राधना करता हूँ कि अंसा न करो।

प्रभा — (सूनी हूँगी हँसकर) प्रेमके कारण ?

मोहन :— (जल्दीम प्रभाके नजदीक आकर) हाँ, प्रेमके कारण ही। वह प्रम असाधारण है, अपूर्व है, पवित्र है वृष्णसे राधाका-सा प्रम है। प्रभा ! मोह और वासनामें पडकर अस् प्रेमको मलिन न हान दें ? माह् वपणिक है। प्रम अमर है।

प्रभा — प्रेमके कारण ही मैं आपके साथ आ रही हूँ। मोहके कारण नहीं।

मोहन — मैं नहीं मानना। क्योंकि मोह फल चाहता है। प्रेम फलातीन है। सफलतामें मोह नष्ट होता है। प्रमके अनुभवक लिख सफलता हैही नहीं। जिसलिख अस्सका नाम बभी नहीं होता।

प्रभा — निरुपकवालोकी पतौहू कमलाने आपके साथ आकर क्या आनन्दका अनुभव नहीं किया ?

मोहन — नहीं ! मोहकी आपमें भस्म हा गयी। थोडेसे मुखका अनुभव किया होगा लेकिन आनन्दका अनुभव नहा किया। आनन्दकी सीमा नहीं है। अस्समें न अंधाश्री है और न निचाश्री।

प्रभा — अपन प्रमीको देह और आत्माना सम पंग करनेसे अधिक् क्या कोश्री आनन्द स्त्रीके लिख है ?

मोहन — फिर भूलनी हो। आत्मापण करो। ये मना नहीं करता। जिस वपण तुम देखो नी अर्पित करामी अस्ती वपण अस्सका मूप कम हा आश्रमा। प्रभा, तुम मेरी देवी हो। अपना दह मुप अर्पित करके साधारण स्त्री बन जाआमी ?

प्रभा — तो जिस प्रमका अनुभव कँने किया जाअ ?

मोहन — प्रमका अनुभव निरुपम कार्य है। प्रेम जिन्द्या नहा, जो पूरी हो। प्रम और नक्विके अत्र तृप्ति नहा है। अनुभव करजन अस्समें वृद्धि हाती है। यही असिवा रहस्य है।

प्रभा — मुप कुछ नहीं मालूम। बडी व्यया हो रहा है।

मोहन — मुझे मालूम है। किसीकी भारतके समय दर्द जरूर होना है। तुम मोहनको मारनेका प्रयत्न करती हो, अिनलिखे तुमको क्षमा होती है।

प्रभा — (आवाज मुनकर) वे आ रहे हैं।

(ब्रह्मानन्दका प्रवेश)

ब्रह्मा — (शरीरका रंग-रंग देखकर घबराता है।)
मोहन ! कँसे हो ?

मोहन — देखन हो ना ! बिल्कुलश्री के अब तक तुम्हारी स्त्रीको अपन लेक्चरने हरान करता रहा। अब बिदा दो। मुझे समयमें नहीं आता कि तुम दोनोंको ध-यवाद कँसे दिया जाअ ?

ब्रह्मा — अरे ! बस इसीके लिखे - - तो जाशोग ?

मोहन — तुम्हारे स्कूलसे लौटनतन मैंने रूमको कहा न। जिसलिख अवतक रहा।

ब्रह्मा — तब ता ठीक है। जबसे बडुआ निकालकर एक दिन सपयका नाउ देता है।

मोहन — नहीं ! माफ करो।

ब्रह्मा — तुम्हारी मजों। (नोट जेबमें रख लेता है।)

मोहन — (प्रभासे) अब बिदा दीजिये। आपकी दया और प्रम नहीं भूल सकता। ब्रह्मानन्द ! बिदा ! फिर न जान कब मिले ?

ब्रह्मा — (प्रभासे) दरवाजतक पहुँचा आता हूँ।
(मोहन और ब्रह्मानन्द जाते हैं।)

प्रभा — (पहले निश्चेष्ट हावर खडी रहती है। बादमें पलगपर बैठकर हापोन अपना मुँह डँक लती है।)

(ब्रह्मानन्दका प्रवेश)

ब्रह्मा — (प्रभाके पास आकर पलगपर बैठता है और अस्सके कंधपर हाय रखकर) प्रभा, तुम्हारी बात नहीं मानी। तुमको बहुत लक्लीफ दी।

प्रभा — (फूटफूटकर रानकी आवाज मुन पडती है। सब निस्तब्ध।)

[पटनापेप]

(निगुलसे अनुवादक - श्री चा. सूर्यनारायण मूर्ति, श्री अ. साहित्यरत्न)

सन्यासी कवि लोष्ठक भट्ट

श्री प्रभात शास्त्री साहित्याचार्य, साहित्यरत्न

महाकवि मन्खन १ न श्रीकण्ठचरित नामका एक महाकाव्य रचिता था। अिम काव्यका पञ्चीसवाँ सर्ग अनिहासिक दृष्टिसे बड़ा महत्वपूर्ण है। जिस सर्गमें कविने अपन भाभी लकवकी सभाको मुगोभित करनेवाले विभिन्न शास्त्रने प्रकाण्ड पण्डिताका बणन बड़ मनोरंजक ढंगसे किया है। लकव काश्मारके तर्काश्रीन राजा जयसिंहके साहित्यप्रहिक मंत्री थ। वाङ्के दुःप्रभावसे जिस काव्यम वर्णन नन्दन रम्यदेव रच्यव श्रीगभ मण्णन श्रीकण्ठ गण देवधर नाग त्रयोत्थय दामोदर जि दुक जहूण श्रीगोविन्द कल्याण भुट्ट श्रीवस श्यामद पञ्चराज श्रीगुन लक्ष्मीदेव जनकराज प्रवट गुप्त आनंद सुहृत् महाकवि गम्भ गोविन्दचन्द्र, जोगराज अपरादिय आत्मिने कुछ ही प्रवकारोके नाम और कृतियोसे हम अिस समय परिचित ह।

मन्खकन अिसी परम्पराम कविवर लोष्ठक देवका बणन किया है। अिहीका दूसरा नाम लोष्ठक भट्ट है। अिनके सम्बन्धम अिहोन केवल तीन अनष्टप लिख ह जिससे पता चलता है कि २ ऋष्टक सस्कृतके सिद्धहस्त कवि और छह भापाओके अधिकारी विद्वान थ। अिहोन सस्कृतम व्युत्पत्तिपूण कवी प्रधोकी

१ निणयमागर प्रस बम्बशीस मद्रिन

२ देखिय—

वाण्वयतालनीलोलामृतपन्थतिचातुरीम ।
बदनाम्बुद हे यस्य यत्रिभाषाऽधिधारते ॥
खलानां पप्रवन्धु दुडधु पतिवमसु ।
प्रोष्ट ऋचोद्यमया दूरे कुण्डिता अिव पत्रिण ।
कतिचित्लोष्टवस्य तस्यतिमुखतोऽश्रणोत ।
शीलकक प्रतिप्रोतचारचाट्टरसा गिर ॥

श्रीकण्ठचरित २५ सर्ग

रचना की थी। समयके कुचनमे बीजापाणि वाणीके अिम वरद पुत्र कविके सारे थ य लुप्त हो गय। अिस समय अकमात्र कृति ३ दीनाक दनस्तोत्र प्राप्य है।

कविकी जन्मभूमि प्रकृतिकी विलासस्थली काश्मीर थी। अिनके पिताका नाम रम्यदेव अथवा देवरम्य था। अपन पिताकी चर्चा अिहोन दीनाकदन स्तोत्र म की है। अक रम्यदेवका अठ्ठल श्रीकण्ठ चरितके पञ्चोदमे ४ सर्गम है। य ही रम्यदेव अिनके पिता थ अथवा अिमने अिन वीजी रम्यदेव थ यह निणय करना कठिन है। अिनके नामके साथ भट्ट लगा रहनेसे प्रतीत होता है कि य जातिके ब्राह्मण थ।

दीनाक दन स्तोत्र शिवजाके सम्बन्धम लिखा गया है। अिमसे यह सिद्ध होता है कि य शव मनके अनुयायी थ। अनीने तरुणाओ काश्मीरकी सुरम्य भूमिमें बितकर अन्तिम समयम सयामी होकर काशीवासी हो गय थ। ऋकके सभापणितोम अिनका नाम अचित होनके कारण अिम कथिका जन्मकाल १०८० ओ के आन्वपास सिद्ध होता है क्योंकि लकव काश्मीरके राजा सुस्सलदेव तथा अुनके पुत्र जयसिंहके साहित्य

३ निणय मागर प्रस बम्बशीने काव्यमाला गच्छकने छठवे भागम प्रकाशित।

४ देखिय—

निस्तुषीकृतवदुष्य स्मयमासयसहृते ।

घत प्रणनिवारम्य रम्यदेव तमशयत ॥

श्रीकण्ठचरित २५ सर्ग

५—देखिय—

निवेशिने सुस्सलभूविडोजसा

स्वय गरीयस्वपि साधिविग्रहे ।

विधाय चक स्वयशोमयीं लिपि

स लेखयगस्य विमुद्रमाननम ॥

श्रीकण्ठचरित ३ सर्ग

विग्रहिक मन्त्री थे। इतिहासकार जर्वासहका शासन-काल ११२९ बी से ५० तक मानते हैं।

अिन्हें अपनी कृतिपर अत्यधिक आत्मविश्वास था। अिनकी रचनाओं अत्यधिक दुर्लभ होती थी। मद् सवने अिनका परिचय देने हूँ अिनके ग्रन्थोंके सङ्घमें 'यत्प्रबन्धेषु दृढव्युत्पत्तिवर्मसु' लिखा है—अर्थात् अिनके ग्रन्थ सुदृढ ज्ञानरूपी कवचके समान हैं। बड़े दुर्भाग्यकी बात है कि अिनके वे सब ग्रन्थ अिस मय नहीं मिलते, अिनके महारे साहित्य-जगत् अिनके पाण्डित्य और प्रतिभासे पूर्णरूपेण परिचित होता। अिनका शास्त्रीय ज्ञान बड़ा व्यापक था।^१ महान् सभ्रान्त परिवारमें जन्म लेकर अिन्होंने भी वाङ्मय रूपी विशाल पारावारका हनुमान्के समान मन्त्रण किया था। अिसीसे अिन्हें कुछ लोग लोप्ट सर्वज्ञ कहते थे। 'सूक्तिमुक्तावली' प्रणना-दाविषणान्य जन्मणने तो 'लोप्टक मट्टकी अपेक्षा 'लोप्ट सर्वज्ञ'के नामसे ही कवि-काव्य-प्रदाता प्रकरणमें अिनके दो श्लोक अुद्धृत किये हैं, अुनमेंस अेक अिनकी दर्पिकित है—

प्रकृत्येवातिवश्रंण, गुणदंध्यं वितन्वता ।
मया शासनेनेव, बाणो दूरं निरस्पते ॥

स्वभावसे ही टेढ़े और डोरीकी फँसले हूँ अिनके द्वारा जैसे बाण दूर फँक दिया जाता है, अुमी तरह प्रकृतिसे ही वशोक्तिपूर्ण रचनाका अभ्यासी तथा काव्यमें गुणके महत्वका अिनोपनपसे विस्तारक मने भी (अपनी 'कृतिषोडश अट्टकवि') बाणको, दूर रकेरु दिया है।

अिससे प्रतीत होता है, कि कविवर बाणके समान लोप्टक अोज, माधुर्य और प्रमाद अिन तीनों गुणकी अभिव्यक्ति-पूर्ण रचनामें अन्वधिक दक्ष थे। सम्भवत बाणकी कादम्बरीके समान अिन्होंने कौभी गद्य काव्य लिखा हो।

१— अश्रमो जन्मवमो सुमहति विहिनी
वाङ्मयावधौ हनुम—
ससम्भो..... ।

दीनाश्रन्दने

सूक्तिमुक्तावलीके अूसी प्रकरणमें अरिसक श्रोताओंमें मन्वित अिनकी व्यथाभरी दूसरी रचना देखिये—

वेचिदुर्गलप्रहेण विषमद्वेषज्वरेणापरे,
वेचिमोहर्यमलेन सतततममोलनि शान्तोत्तरा ।
तद्भो! मन्दिरभित्तयो, भवन नस्मूक्तेषु सभ्यापुनः
तत्पाठे वरमस्तिवो 'धम्' 'धम्' प्राय किमप्युत्तरम् ॥

कुछ श्रोतागण गर्वरूपी गन्धर्वमें ग्रसित हैं और कुँछ भीषण विद्वेष-ज्वरसे प्रपीडित हैं, हमारे अपनी निन्दनीय मूर्खताके कारण विवश हैं। अिसीसे ये लोग (सूक्ति-सुननेके बाद) मदा मोन रहते हैं और अुनर देनेमें अिन्हें सकोच होता है। जत मन्दिरके दीवाली; मेरी सूक्तिमेंके श्रोता तुम्हीं हो आओ। फिर तो सूक्ति-पाठके समय तुम्हारा (प्रतिध्वन्यात्मक) धम्, धम् अँसा कुछ अुत्तर तो (मोनावलम्बनकी अपेक्षा) अच्छा रहेगा।

अपनी कृतिमेंकी विदम्बना करनेवाड़े अिन व्यक्तिमेंके प्रति अिन्होंने किना तीव्र और मोठा ध्यय किया है। जान पड़ता है कि अिस कविको अपने जीवन-कालमें तत्कालीन विद्वत्समाज द्वारा अच्छा सम्मान नहीं मिला।

लोप्टकका व्यक्तिगत जीवन भी दुःख दर्द भरी कहानीसे ओत प्रोत है। अिन्होंने 'दीनाश्रन्दन श्रोत्र'की रचना यद्यपि भगवान् शंकरकी स्तुतिमें की है, किन्तु अिससे अिनकी आत्मकथा कहीं तो अत्युक्ति न होगी। अन्ते मम, पाठकके यत्नो, के, स्पष्ट, शो, रा, की, दे, है, जहाँपर कवि अपने व्यक्तिगत जीवनके मन्वषमें कुछ कहने लगता है—

मोहाकृत परिणमोप्यनयो महोपान्,
मूल समस्तभवकधनदुर्गनीनाम् ।
परमाहुदेव्य दुरपत्यजननेन सृष्ट.
स्नेहोर्पतिम धेष्टित अिसोन्वटनागपारी ॥
तन्वोदणाय विदुषाम्पि मया समस्तमी-
चित्तमृष्टितवताऽस्तवता कुष्टपम् ।
इति द्रवत्ताश्रन्दनेव कदीश्वराणाम् ।
सोदावमानानविश्वत्रमानसेन ॥

'दीनाश्रन्दन' से

मैने मोहवरा सामारिज मांने वन्यन और दुर्गतिका प्रघान
कारण अनीतिपूर्ण विवाह भी कर लिया, जिनमें अल्पन्न
दृष्टे दुष्ट पुत्रोंके स्नेह जालन मुझे मयकर नामपायकी
तरह घेर लिया है ।

अन दुष्ट (पुत्रों)के पावन-गोपणके लिये विद्वान्
होंने दृष्टे भी मैने अचिन और अनुचिनका परित्याग
करके तथा निन्दनाय वृत्तोंका सहारा लेकर संकडा
अपमानागे विषपुष्ट हृदय होनेपर भी दूरे राजाओंके
दग्धाजोपर कुत्तेकी तरह पूछ लिया है ।

कविने अिन दरबारोंमें काटपूण अपने घनेदू
जीवनके सवन्धमें मैनेन मात्र किया है । लोटकने अपने
विवाहको 'अनीतिपूर्ण' घननाया है । जिसमें आभास
होता है, कि अिन्होंने किसी तरणीके प्रयागमें फँसकर
अन्नजातीय अथवा पारिवारिक अभिभावकोंकी अिच्छाके
विरुद्ध प्रेम विवाह कर लिया हो । मेरी समझमें अनीति-
पूर्ण विवाहका यही अभिप्राय ही सरना है । यह बात
सत्य है कि कवि* की कजी प्रेमिकाओं थी । अन्होंने
कवनरमें अिनका कुछ समय व्यतीत हुआ ; अिनके
सङ्गे भी अयोध में, जिनके भरण-गोपणके लिये
अिन्होंने दूरे राजाओंके राजदरबारकी धरण लेनी पडी ।
'कदीदवराणाम्' में जिन राजाकी और अिनका अिद्वारा
है, अिसका निर्णय करना कठिन है । 'कदीदवराणाम्' के
बहुवचनसे यह भी ध्वनित होता है, कि अिन दरबामि-
मानी कविको अपने परिवारके पालन-गोपणके लिये
अेन हो नहीं, कभी राजाओंके यहाँ जाकर दग्धारदारी
करनी पडी और अन्नमें अिनकी निमीमे नहीं बनी ।
यह तो निश्चिन है, कि ये मट्ठकने भात्री लक्ष्मकी
सभामें जाने थे । उरक राजा ता नहीं किन्तु राजमथी
थे । अिन्होंने लक्ष्मकी चाटुकारीमें कुछ दण्डके लिये
हैं, जिनकी मग्धा ग्यारह है । अून दण्डोंकी 'धीरच्छ
चरित' काव्यके पञ्चमीगने मगमें मट्ठकने अुदपुत
किया है । अुदाहरणार्थ—

*— देनिये—

'वैशद्यान्छुटिन चिर चरणयो रम्रीणां गुहणां न तु ।
'दीनाक्रन्दन' के

मार्ग परस्य पयि वाष्यकयाप्रधानाम्,
मानस्य वरमनि च कन्दलितानिषेक ।
राज्ञेव मन्त्रिवरलक्षक । सुशितदेव्या
सर्वाधिग्यपदयोमधिरोपिनोऽसि ॥

दीनाक्रन्दन'म

व्याकरणमें न्यायशास्त्रकी तर्रपूर्ण वाक्यावलीमें तथा
मन्मानके कपेत्रमें हे मन्त्रिवर लक्षक । देनी सरस्वती
द्वारा राजाके ममान अभिषिक्त होकर (आप) प्रत्येक
कपेत्रमें अधिकारपूर्ण स्थानपर बैठना दिये गये है ।

कविको जिन प्रकार कुछ अर्थलाभके लिये अपने
स्वामिमानको निलाजलि देकर 'लक्षक सन दास्मने
पठिन हें" अिनकी घोषणा कर देनी पडी । हालांकि
मसृहन माहित्यमें अिनका वनाया हुआ अेक अनुष्टुप् भी
नहीं पाया जाता । जिनकी अपक्या अिनके भात्रीकी
गणना मसृहत्तके अच्छे कवियोंमें होनी है ।

पर मानवको मरान्मन बना देता है । लक्षक
मथी थे । मथीभी प्राचीनकालमें अेक ठोठा-मोठा राजा
होना था । मसृहनकी अेक कथावतने अनुसार 'स्तुतिप्रिया
सनि च मन्त्रिणोऽ' अर्थात् मथी लोग खुदामद पसन्द
होते हैं । अिन परिस्थितिमें मसृहनके स्तुतिवादी तथा
लोचनोंके जिन वाणभट्टके मन्त्र्यमें "कुछ लोग
दण्डपातमन रचनामें, कुछ दण्डोंके गुम्फनमें, कुछ अिनकी
अभिच्यक्तिमें, कुछ अलवारकी भरमारमें, कुछ मुन्दर
अर्थके प्रसटीकरणमें तथा कुछ कथाके वर्णनमें कुपण्ड
रते हैं, किन्तु अडे आदचयोंकी बात है कि महाकवि
वाणभट्ट तो गम्भीर कवितारूपी विन्ध्य-वनमें चनुरताके
साथ भ्रमण करनेवाले तथा महान्कवि कुजरीके मस्तकको
विदीर्णकर्ता, वज्ररूपी मिट्टके ममान हैं" लिखकर
वाणको कविकुजराके पराजिता बताया— अुगी वाणको
अपने आगे कुछ न समझनेवाले तथा छट् छट्

१-देनियेकेचन दास्य गुम्फ विषये केचिदसे चापरेऽ-
लक्षारे कतिविन् सवर्थ विषये चाग्ये कथावर्णने ।
आ । सर्वप्रगभीरधीरकविताविन्ध्याटवो धानुरी-
सचारी कविगुम्भिकुम्भभिदुरो वाणस्तु पचानन ॥

भाषाओंके प्रकाण्ड पण्डित लोप्टककी लकसे अन्तमें अनबन हो गयी। जो कुछ भी हो जिस कविका जीवन महान् सघर्षात्मक था, जिसमें अगुमात्र भी सदैव नहीं। सम्भवतः जीवनके अिन्ही सघर्षोंने अिह अपनी जन्मभूमि काश्मीर छोड़कर काशीमें सन्ध्यासौका जीवन व्यतीत करनेके लिये विवश किया हो।

मेरी तो धारणा है, कि यदि ये काशी न आये होते तो साहित्य-क्षेत्रमें अिनके अस्तित्वकी पूर्णरूपण समाप्ति थी। अिन्होंने काश्मीरमें अिनन प्रय लिये, अुनमेंसे अिस समय अेक भी नहीं मिला। काश्मीर सदियोंमें राजनीतिक अुचल-अुचलका मुख्य केन्द्र रहा। अयम्भव नहीं, कि वहाँकी बहुधराने अिनके रत्नप्रयोगकी भी अपने अन्दर धारणकर लिया हो। 'दीनाश्रन्दन स्तोत्र' की रचना तो अिन्होंने काशीमें रहकर की थी। अिमोसे यह प्रय वच भी गया।

अव अिस कविकी कुछ रचनाओंका आनन्द लें। वच आदातोप शररसे निवेदन कर रहा है—

दुर्बारससुतिदजा भुशकादिश्रीक—

स्वामोषधिपतिभूत सुकृतरवाप्य।

आवेदधामि यहह तवतप्रिदान

तत्राश्रयर्षेहि मृग्मा कुश मप्यवताम् ॥

'दीनाश्रन्दन' स्तोत्रसे

कठिन नासारिक रोगसे (अत्यधिक परेशान होकर) भयके माष तेजीसे भगा हुआ मैं औषधिपति ('चन्द्रमा') धारी तुमको पूर्वजन्मके पुष्य प्रभावमें प्राप्त करके (तुमसे) जो निवेदन कर रहा हूँ, तुम्हारा अुमके निदान (मूलकारण) की ओर ध्यान जाना चाहिये। हे भगवान् (शरणगत) जिस (जन) का त्रिस्कार न करें।

अिस श्लोकमें 'औषधिपति' शब्दमें अत्यधिक चमस्कार है। मन्त्रमें औषधिपति बँदकी भी कहते हैं। रोगी परेशान होकर बँदके पास रोगके निदानके लिये जाना है और आशा करता है कि वह अुमे रोगमें मुक्त कर दे। अिनी प्रारर यदि सान्सारिक रोगमें परेशान होकर लाप्टक भट्ट औषधिपतिधारी

शररसे मुक्ति प्राप्ति करनेकी अिच्छा करता है तो यह अनुचिन माँग नहीं।

अेक श्लोकका और रस लें। सारी तरगात्री तरहियोंके कोमल भुजपादाकी छायामें व्यतीत करनेवाला अतयेव नैतिक दृष्टिसे समाजके सामने महान् अपराधी यह कवि सन्धात्रीके साथ अपने अिस अपराधको स्वीकार करता हुआ शररसे सहायताकी धारणा कर रहा है —

अ्रष्टोऽस्मि यद्यपि सता चरितततयापि।

मां प्रातुमर्हसि कृतान्तनिषा श्रयन्तम्।

भो साधवो विदधते सदमद्विवेकम्,

प्रह्वेयु विह्वलतया शरणगतयेषु ॥

'दीनाश्रन्दन' स्तोत्रसे

हे भगवान् यद्यपि मैं माधुजनोंके चरित्रमें गिर गया हूँ अिनपर भी यमराजके भयसे आपकी शरणमें मैं आया हूँ। आप मेरी रक्षा करनेमें समर्थ हैं, क्योंकि परेशान होकर आये हूँ अिनमें शरणगतके विषयमें बड़े लोग सज्जन और दुर्जनका विचार नहीं करते।

कवि कितनी सीधी-सीधी भाषाके सहारे तर्कपूर्ण शैलीमें अपनी महायुगाके लिये भगवान् शररसे हठ कर रहा है। अंसा प्रतीत होता है कि बोधी बकील जजके समक्ष अपने अनियुक्तकी छुड़ानेके लिये बचाव कर रहा हो।

राजदरबारोंकी चमक दमक, साहित्यिक-साधना तथा घरेलू अय समस्यारोमें सर्वदा व्यग्न रहनेके कारण कविकी कभी भी भगवान् शिवकी सेवाका मुश्रवण तो मिला नहीं। अिस दशामें कर्णिक सेवाके बल्पर किसीसे कुछ कामकी आशा करना कहीं तक युक्तिमय है— अिने कवि अपनी आलवारिक शैलीमें दृष्टान्त देकर युक्तिपूर्ण मित्र करनेका प्रयत्न कर रहा है—

पूयं न चेद्विरचिता तव देव। सेवा,

तेनैव मैत्र इत्येते श्रपनी मनगतिम्।

कि प्रायसस्तुन अिति प्रनिपन्नभूत-

च्छाय गनधमदत्र न तत्र करोति ॥

'दीनाश्रन्दन' स्तोत्रसे।

हे देव मैंने (जिसके) पूर्व तुम्हारी सेवा नहीं की । सम्भवतः किसीसे सकटमें पड़े हुअे जिस व्यक्तिनी (तुम) रक्षा नहीं करते (यह अर्थात् नहीं है) । क्या वृषभ, पहलेमे स्तुति न किये जानेपर अपने तजे छायाके लिये धाये हुअे (यद्यही) जनकी वक्राशक्तो दूर नहीं करता ?

अिम दलाकमें भट्टजीने अेन वृषभका दृष्टान्त अधिक विचारके पश्चात् दिया है । यदि चेतनाहीन तर पहलेमे अपरिचित पयिकाको शीतल टाया प्रदान करके अुमकी सहायता करता है, तो भगवान् । आप तो तर्की अपेक्षा चेतनाशील है और आपका नाम आशुतोष (शीघ्र सन्नुष्ट हानेवाला) भी है—अतः यातनामय जीवनयापन करनवाले अिम दीनहीन जनकी प्रार्थना सुनकर अिसके कष्टको अवश्य दूर कर ।

कवि भगवान् शरके प्रेममें अपने मुध-बुधको भूलकर विनया तन्मय हो जाता है और अुसके मनकी क्या स्थिति है ?

द्वारे लुटाभि करणं प्रलपामि शभो !
वाचछामि चूमितमयो परिरभ्यचत्वाम् ।
वानूलतामुपगतोऽस्मि तवानुरागात्,
हा दुःसहस्त्वयि ममेष दुःशोऽनुराग ॥
'दीनाश्रयन' स्तोत्रसे ।

हे भगवन् ! मैं (तुम्हारे) दरवाजपर लाट रहा हूँ, (बडी) काशिक रिशतिमें विलख रहा हूँ और अुसके बाद तुम्ह पकडकर चूमनेकी अिच्छा करता हूँ । (अिस तरह) तुम्हारे प्रेममें मैं वानूनी-सा हो गया हूँ । क्या कर्त्तुं तुममें मेरा यह घनिष्ठ प्रेम तो अधिक असह्य होता जा रहा है । अंसा आभास होता है, कि कवि अपने आराध्य देव भगवान् शरके प्रेममें अर्धं विविपत्त-सा हो गया है । अिष्टदेवके घनिष्ठ प्रेममें विविपत्त होना सच्चे भक्तता लक्षण है । अिस दशामें कवि वानूनी हो जाना स्वाभाविकही है ।

राजसी शान शौकसे रहनेवाले भगवान् विष्णुकी अुपासनाकी छोडकर यह राजदरवारी कवि दिग्म्बर शरका अनन्य भक्त कयो हो गया—अिसे पढ़िये—
रा भा १५

विद्योत्तरीयभूति कौस्तुभरत्नभाजि,
देवेऽपरे दधतु लुब्धधियोऽनुबन्धम् ।
रूप दिग्म्बर मलज्जम्मुच्च
भावात्कमेव तु षतेन मम स्पृहायं ॥

'दीनाश्रयन' स्तोत्रसे ।

सुन्दर दुपट्टा और कौस्तुभमणिकी मालाधारी भगवान् विष्णुका (कुछ प्राप्तिकी आशासे) अन्य लोभी जन (भले ही) अनुसरण करे, (पर) दिग्म्बर धारका रूप जो अखण्डित नरमुण्डकी मालासे सुशोभित है—बडी प्रसन्नताके साथ मैं अुसीकी अिच्छा करता हूँ ।

भट्टजीका यह स्तोत्र शिवजीके प्रति अिनकी अिमी प्रवारकी असीम-भक्ति और अटूट भाव धाराके शोचक भावनाओसे ओतप्रोत है । सस्त्रुनमें स्तोत्रका भी विशाल साहित्य है । अिम कविके प्रदेशके निवासी जगद्वर भट्ट केवल "स्तुति कुमुमाजलि" लिखकर सस्त्रुतके महा-कवियोंमें परिगणित किये जाते हैं । लोटकका यह स्तोत्र भी अपने सफल शब्द विन्यास तथा हृदयस्पर्शी, स्वामाविक अर्थगरिमाके बलपर सम्कृत-साहित्यका अमूल्य रत्न है ।

अिनकी कुछ फुटवल् रचनाअें भी सुभाषित ग्रन्थोंमें पायी जाती है । काश्मीरी विद्वान् बल्लभदेव द्वारा मकलित 'सुभाषितावली' में अुपर्युक्त स्तोत्रसे अेक श्लोक 'कस्यापि' करके अुद्धृत है । वगात्री पंडित श्रीधरदाराके सद्बुक्तिकर्णामृतम् नामक सप्रहात्मक सुभाषित पुस्तकमें भी अिनका अेक श्लोक मिलता है । साहित्यिक दृष्टिसे सद्बुक्तिकर्णामृतम् सप्रहीत अिनके अेक ही श्लोकका अत्यधिक महत्त्व है । श्रीधरदास बगालके विद्याप्रेमी राजा लक्ष्मण सेनके दरबारसे

१ निर्णय सागर प्रेम बम्बयीसे प्रकाशित ।

२ अेजुवेशन सोसायटी प्रेस बाकुला बम्बयीसे प्रकाशित ।

३—देखिये—

सुभाषितावलीका तीन हजार पाँच सौ छम्भीमदी श्लोक तथा दीनाश्रयनस्तोत्रका वाजीसर्वा ।

४ मोतीलाल बनारसीदास (काशी) के यहाँसे प्रकाशित ।

सवधित ये । 'सदुक्त्तकर्णामृतम्'का" रचनाकाल १२०५
 ओ है । जिस ग्रन्थमें अिनकी कृति आ जानेसे यह सिद्ध
 होता है कि भट्टजी अपने जीवनमें ही अखिल भारतीय
 स्यातिके कवि हो गये थे । यदि यह बात न होती तो
 १०८० ओ के आस-पास समुत्पन्न जिस कविकी कृति
 वैज्ञानिक यातायात तथा मुद्रणालय सवधी सुविधाओंसे
 रहित प्राचीन कालमें कश्मीरसे बगाल अिननी जन्दी कंसे
 पहुंच गयी ? सदुक्त्तकर्णामृतम् सप्रहीत अिनका दलोक
 जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है । विन्तु जिस कर्णामृतम्की
 अप्रेजी भूमिकामें जिसके विद्वान् सपादक डा० हरदत्त
 शर्मा अंम अं, पी-अं च डॉ. द्वारा जिस कविके बारेमें
 "नो अिनकारयेदान" लिखा हुआ देखकर मुझे महान्
 आश्चर्य हुआ ।

डा महोदयकी जिस प्रकारकी विज्ञापिकी जिस
 प्रेस-युगमें देखकर अुनकी परिश्रमशीलतापर तरस आता
 है । यदि अुन्होंने तनिक भी श्रम किया होता तो जिस
 प्रकारकी प्रमादपूर्ण बात न कहते ।

लेख समाप्ति करनेके पूर्व पाठरुग्ण कश्मीरसे
 बगालकी सान्यश्यामला भूमिमें पहुंची हुआ वर्षा वर्णन
 विषयक अुस वृत्तिके पढनेका कष्ट करे ।

ध्याप्यान्तरीषवककुभावनुभूमृदग,
 सान्द्रान्धकारगहनासु निशासु गर्जन् ।
 संशोषयते विरहिण क अिह ध्रियन्ते
 वर्षासु विद्युद्बुधोपिकयेव मेघ ॥

'सदुक्त्तकर्णामृतम्' से ।

५ शाकेऽत्र सप्तविंशत्यधिकशतोपेतदशशते शरदाम् ।
 श्रीमल्लशष्मणसेनप्रियतिपस्य रसैकविंशब्दे ॥
 सवितुर्गत्या फाल्गुनविशेष परार्थहेतवेऽनुत्तुकात् ।
 श्रीशरदासेन 'सदुक्त्तकर्णामृतम्' चके ॥

—सदुक्त्तकर्णामृतम्; ३२८ पृष्ठ ।

वर्षाकी ऋतुमें पहाडकी चोटियोंके पास आकार और
 दिशाओंकी धेरकर घने अन्धकारसे भरी हुआ रातमें
 गरजते अुंसे मेघ अुद् प्रदेशमें दीपवर्षे समान चमकती
 हुआ बिजुलीके सहारे दिखलायी पड रहे हैं । अंसे समयमें
 (शायद ही) कोअी विद्योगी जीवित रह सक्ता ।



प्रेसका भूत

श्री प्रो हरिमोहन झा अेम अे

अुस दिन पडिन मोनोर झाको अस दशम देसकर म आश्चयचकित रह गया। यही वे पडितजी ह जो सदा गानसे लाल धोतीपर रेशमी चादर और महम पानका बीडा रख चलते थ। वही आज फटी धोतीपर मला कुचला गमछा रख हुआ ह ओठ सूख हुआ ह। जिन बालाग चमेलीका तेल चपचप करता रहता था अुहीसे अभी धूल अुड रही है।

मन पूछा—पडितजी आप तो बहुआशिन-साहिबाकी डबोडीम रहते ह न ?

पडितजी बोले—रहता था। पर तु अब नही।

मन पूछा—सो क्यों ?

वे बोले—भाग्य !

मन कहा—आपकी तो खूब चलती थी। बाक अुस जगहके बर्ना घर्ना विधाता सब कुठ आप ही थ। फिर असी हालत क्यों ?

पडितजी बोले—यह सब ठीक है। बहुआशिन साहिबाकी मुझपर अनीम कृपा रहती थी। यहातक वि स्टटकी तरफम लाखराज ब्रह्मोतर भी मिला था। मेरे रहने और भी कितन लोगोंकी बरित मिला करती थी। परतु अब कुछ नही —

बाहिर्याति यदा लवणी

गजभुक्त कपित्थवत।

मन पूछा—सो क्यों पडितजी ? कुछ न कुछ कारण तो अब य होगा।

पडितजी बोले—कारण सोचिय तो कुछ नही और नही तो है बहुत कुछ। परन्तु अिस जगह बाते करना ठीक नही होगा। अुस घाटपर थलिय।

हम लोग गंगाजीके अकात घाटपर आय। पडित जीन गमछसे चबूतरा माफ किया। फिर मुझ नजदीक बिठाकर कहने लग—बात यह हुआ कि बहुआशिन साहिबाको अपनी बणावली छपानकी अिच्छा हुआ।

यह काम मुझ सौपा गया। मन अपन जानते जहाँतक हो सका खूब बडा चढाकर अुनकी प्रशंसा लिखी। अुनके कुल परिवारम जो जो हो गय ह सबका गुणानुवाद किया। पढकर सुनाया तो बहुत प्रसन्न हुआ। आगा थी कि प्रय छप जानपर दरबारसे अितना पुरस्वार मिनेगा कि ज म भरके लिअ सारा दुख दारि ग्य मिट जाअगा। परतु हुआ ठीक अियके विपरीत !

मेरी अुस्तुकता और गढ गयी।

पूछा—मो कैसे ?

पडितजी बोले—मन वह सब अक प्रममें ठापनके लिअ दिया। आप तो जानते ही ह कि हम लोग पडिन आदमी ह। कल-गुजकी बान विषय समझते नही। अुमन कहा कि—अक महीनम छापकर भिजवा दूगा। (५००) रुपय लगय।

रुपय दरवारसे मिले ही थ। मन अिस ह्यालसे कि अन्ी तरहसे छाप देगा रुपय अग्रिम हो दे दिय।

सोचा कि जबतक यह छपता है तबतक जरा व दाबनकी ओर धूम आअू। मूलनका समय था। मनम हुआ जरा कृष्णका रास देख आअू। परतु भाजी ! वही मरा काल बन गया।

मन पूछा—क्या पडितजी ! क्या प्रसन्न घोला दिया ? समयपर नही छापा ? पडितजी बोले—आह ! यह बात होनी तो क्या था। परन्तु म जबतक बदाबनसे लौटकर आअू-आअू तबतक पुस्तक छपकर दरवारमें पहुच गयी।

मन कहा—नब कसी चिन्ता ? पडितजी बोले—अरे बाप ! मुनग भी तब न ? म दरवारमें पहुँचा नही कि अदर हवेलीम वुलाया गया। अक ओर बहु आशिन साहिबा बठी थी दूसरी तरफ अुनकी माँ। दोनोका चेहरा श्रोषसे तमतमाया हुआ। यह दस्य देखने ही मेरा तो प्राण सूख गया !

बहुआश्रित कड़ककर बोली—आप जिस पत्तेमें छाते हैं खुसीमें छेद करते हैं ? अिसीलिये दरवारसे वृत्ति मिलती थी ?

मंने हाय जोडकर कहा—सरकार, मुससे कौनसा अपराध हुआ है ?

वे डाँटकर बोली—हम लोगोके बारेमें जैसी-तैसी बातें छपवा आये और अब अनजान बन रहे हैं ?

मंने भयका भाव बतलाते हुये पूछा—कौनसी बात सरकार ? वे बोली—मेरे नामके पहले "वारागना" पत्र जोडते हुये आपको शर्म नहीं आयी ?

तबतक अनुकी माँ डाँट-फटकार करने लगी—क्यों जी ! मेरे पिताजी 'बहलमान' (गाडीवान) थे ?

बहुआश्रित चमकती हुयी बोली—और मेरे पिताजी मुगके प्रेमी थे ? रण्डीकी अपासना करते थे ?

अितनेमें न जाने कियरसे मंनेजर साहेब फट पडे—क्यों जी ! मैं स्टेटको "लाहेब" (सत्यानास) करता हूँ ? आपपर मुकदमा क्यों नहीं चलाया जाअं ?

मेरी तो सिट्टी-पिट्टी गुम ! मूंहेमे आवाज ही न निक्की ।

बहुआश्रित बोली—अितने दिनोंमे जिस दरवारका नमक खाते रहे, उसके प्रति यह कर्तव्य अदा किया ? जात्रिये, आजसे आप बरखास्त !

मंनेजर बोले—और आपरसे मानहानिका दावा भी आपपर किया जाअेगा । हर्जानाकी नालिश भी !

मं बहुत रोया-घोया । परन्तु सब व्यर्थ । बहुआश्रित साहिवाने मेरे आगे किताब पटक दी और कहा—देखिये तो, डण्डीके बारेमें आपने क्या लिखा है ? जिनसे जो भी पडेगा क्या कहेगा ?

जो कुछ छपा था वह देखकर मं भी काँप अडा ! मंने पूछा—क्या सब छप गया ?

पडितजी बोले—क्या बहूँ ? अंसा खेबकूप छापाना था, कि पवित्र-पवित्र अणुद छाप दी । "वारागना" को 'वारागना', 'पहलवान' को 'बहलमान', 'दुर्गा' को 'मुर्गा', 'चर्दी' को 'रडी' । मंने लिखा था—"स्टेटको तरकरी मंनेजर साहेब करते है ।" सो "साहेब" को "शाहेब" कर दिया । बुच्चिकी प्रणसामं लिखा था कि "दुर्गाके बुच्चिकी शोभा देयकर लोग मृत्यु हो जाते है ।" अज जगह अंसी सबकोकी बात छप गयी कि क्या बहूँ ?

मेरे भाग्यका ही दोष !

मंने पूछा—तब क्या हुआ ?

पडितजी बोले—मंने कहा कि मैं अपने खर्चेमे सुद्धि-पत्र लगा देता हूँ । परन्तु यह अज लोगोको मजूर नहीं हुआ । क्योंकि अनेक स्थानोपर अचन्त अश्लील बातें छप गयी थी ।

मंने पूछा—बह क्या ?

पडितजी बोले—सभी बातें बोलने योग्य नहीं । मंने अेक जगह लिखा था पडित-गुणीको 'केरा' मिलता है । सो 'केरा' (केला) छप गया । अेक जगह था कि मंनेजर साहेब महिला विद्यालयके लिखे चढा जमा कर रहे हैं । परन्तु मेरे पूटे भाग्यसे छप गया 'फदा', जिनमे अनर्थ कर दिया ।

मंने पूछा—तब अन्तमे क्या हुआ ?

पडितजी बोले—होगा क्या ? विधवाका दरवार ! लोगोने बटा-चटा दिया । मुझे जो कुछ मिला था सब छीन लिया गया । बहुत हाय-नीर पटकने-पर मुकदमा वापिस ले लिया गया ।

मंने पूछा—तो अब क्या कर रहे हैं ?

पडित गोनीर झा नम्य लेने हुये सिर पीटकर बोले—कर्त्तव्य क्या ? अेक प्रेममें प्रूफ सतीषकका काम मिल रहा है, सो कर्त्तव्य नहीं यही सोच रहा हूँ । आपको क्या राय है ?

मंने कहा—पडितजी, और जो चाहे कुछ कौत्रिये, परन्तु यह काम तो नहीं कौत्रिये । नहीं तो आपको वृपासे कितने 'साहेब' 'लाहेब' हो जाअेंगे, 'पडित' 'खडित' हो जाअेंगे, 'अबला' 'प्रबला' हो जाअेंगे, 'अमृता' 'प्रमृता' बन जाअेंगे । 'वेद्य' को 'वेद्य' और 'वर-वधू' को 'वार-वधू' होने क्या देर लगेगी ? कितनी 'मुन्दरी' 'छट्टुदरी' बन जाअेंगी । यदि आपको दया हो तो यह काम न कौत्रिये ।

पडितजी बोले—ठीक बहने हैं । जहाँ जरा भी जाँखें चुकीं कि 'मूत्र' मे 'मूत्र' हो जाअेंगा । यह काम हम लोगोके लायक नहीं । जिनको चावलका पत्र चुननेका बम्मान हो वही प्रूफ-रोडरी करे ।

मंने कहा—अच्छा तो अब आना भिजे । मेरी भी अेक पुस्तक प्रेममें छप रही है, श्रीमान नाटक साहबकी प्रणसामं लेय है । नहीं आन्की वनाबरीवाणी गवि हो गयी तो अनर्थ ही हो जाअेगा ।

[मैथिलीसे अनुयादिका—श्रीमती सीता सिन्हा]

अनीइकर

बंगला : श्री काजी नजरल अस्ताम :

हिन्दी : श्री कैलासविहारी सहाय :

के तुमि खूँजिछ जगदीये भाभि आकारा पाताल जूडे
के तुमि फिरिछ बने जगले, के तुमि पाहाड चूडे ?
हायःऋषि-दरवेश,

चूकेर मानिक चूके धरे तुमि खोज तारे देश-देश ।
सृष्टि स्वेछे तोमा पाने चेये तुमि आछ चोख चूजे,
सप्टार खोजे—आपनारे तुमि आपनि फिरिछ खूँजे,
भिच्छा-अन्ध ! भौंलि खोडो, देख दर्पणे निज काया,
देसिबे, तोमारि सब अवयवे पडे छे तौंहार छाया ।
शिहरी सुडोना, शास्त्रविदेर करोनाक धीर, भय—
ताहारा खोदार खोडू “प्राभिवेट सेक्रेटारी” तनय !
सकलेर मौंसे प्रकाश तौंहार, सकलेर मौंसे तिमि !
आमारे देखिया आमार अदेसा जन्मदातारे घिमि !
रत्न लभिया बेचा केना करे वणिक सिन्धु झूले—
रत्नाकरेर खयर ता बले पूछे ना ओदेर भूले
सुहारा रत्न बेने,
रत्न घिमिया मने करे ओरा रत्ना करे ओ चेने !
दूबे नाभी तारा अतल गभीर रत्नमिन्धुतले,
शास्त्रना घेठे दूब दाओ सत्ता, सत्यसिन्धु-जले ।

कौन खोजते तुम भीरवरको भटक-भटक अम्बर-पाताल ?
दूँड दूँड जगल-पर्वतमें, सखे, हुबे तुम ब्यर्थ बेहाल ।
हाय ऋषि दरवेश !

शुक्रा मानिक शुरमें ही या खोज रहे थे देश-विदेश ।
सृष्टि तुम्हारी ओर देखती, अँध मूँद तुम करते ध्यान ।
सप्टाका कर खोज, हाय, तुम निजका ही करते सधान ।
जिच्छा-अन्ध ! अँध तो खोलो, देखो दर्पणमें काया,
देखोगे अपने सर्वांगोंपर पडती सुसकी छाया ।
सिहरो मत, मत डरो देख शास्त्रज्ञोंका हुजैय प्रभाव,
अरे, सुडाके ‘प्राभिवेट सेक्रेटरी’ हैं क्या ये महाबुभाव !
सबमें है आलोक शुभीका, सबमें वह सरता है प्राप्त
मुझे देख मेरे सप्टाका परिचय प्राप्त करो पर्याप्त ।
मिन्धु किनारे रत्न वणिक रत्नोंका करते ब्रय विव्रय
किन्तु भूलकर भी मत पूछो रत्नाकरका तुम परिचय ।
रत्न बेचते हैं ये सब—बस रत्नोंकी करते पहचान,
और समझते हैं वे मनमें, रत्नाकरका हमको ज्ञान ।
दूबे हैं वे नहीं कभी रे अतल रत्न-सागर तलमें,
शास्त्रोंको मत मथो, सखे, दुबकी लो सत्यसिन्धु-अलमें !

गीत

: श्री गिरधर गोपाल, अेम. अे. :

तुमने मुझको देखा मेरा भाग विल गया ।
मेघ छूटे सूरज निकला हिल सुटीं दिरागें,
दूर हुआँ पयसे बाधा मनसे चिन्ताओं,
तुमने अंक लगाया मेरा शाप धुल गया ।
केचुल छूटी आज नया मैं रूप रदा धर

ज्योति हृदयके भीतर ज्योति हृदयके बाहर,
तुम मुझको सपनोंको आकार मिल गया ।
धरतीके नूरु नभकी बँसुरिया बाजे,
मेरे आगे खुलतेसे जाते दरवाजे,
तुम कुछ बोले मुझको जीवन सार मिल गया ।

रश्मि

: धी 'नीरज', अेम. अे. :

परस तुम्हारा प्राण बन गया, दरस तुम्हारा श्वास बन गया ।
युग-युगसे निर्जोर शिला बन लेटी थी मिट्टीकी काया,
पयराभी सी चपल पुतलियों, ओठों पर हिम था जम आया,
फिर भी सुस दिन धड़कन बन छू गया हृदय जब प्यार तुम्हारा
विरह बिखरकर भ्रू बन गया, मिलन विहँसकर हास बन गया ।
परस तुम्हारा प्राण बन गया, दरस तुम्हारा श्वास बन गया ॥

मुदाँ या साहित्य, कलाओं पर थी मौन खुदासी छापी,
जब तक ओ ! मेरे करणाकर ! तुमको याद न मेरी आयी,
आधीरात मगर जिस दिन तुम मेरे लिजे सिसककर रोये
सब कवियोंका काव्य रच गया, सब जगका जितिहास बन गया ।
तुम सोये सो गयी निशा तब, तुम जागे सो हुआ सनेरा,
सूरज भाल-मिन्दूर बन गया, अंजन-बन हो गया अंधेरा,
अधरों पर जो काल-फूल था खिला, वही जीवन-मुपवनमें—
झरझर कर पतझर बन गया, खिल-खिलकर मधुमास बन गया ।
परस तुम्हारा प्राण बन गया, दरस तुम्हारा श्वास बन गया ॥

जेक वायुके शोंके सा बन भटक रहा जग-जीवन सारा,
कहीं न कोभी नीड़ मिला विभ्रान, न कोभी संग-सहारा,
पर जिस दिन अतृप्त संसृतिकी सूनी प्यासी युग-बाहोंमें—
सिमट गये तुम धरा बन गयी, बिखर गये आकाश बन गया ।
परस तुम्हारा प्राण बन गया, दरस तुम्हारा श्वास बन गया ॥

तुमने क्या कर दिया कि गाने लगा आज मिट्टीका देला,
लगा दिया क्यों जिस नदिया पर अितनी नौकाओंका मेला,
तुम क्या हो, कैसे हो—दूँ कुछ ज्ञात नहीं, धम यही पता है—
जन्म दे गया मोह तुम्हारा, और मरण मन्वास बन गया ।
परस तुम्हारा प्राण बन गया, दरस तुम्हारा श्वास बन गया ॥



मोहिनी अक्तार

श्री लहरी, धेम अे

चिर सुदयके भोरये
 अमित आभाका सरल
 निरख नूतन, प्रति निमिष धुलता हुआ—
 रूप लेकर, वण लेकर
 सुधा लेकर, स्वर्ण लेकर
 सृष्टिके प्रति प्राणम धुलता हुआ—
 अेक निर्मल सय लेकर,
 चिर अपावन, नि य पावनके बहकते—
 दो चरण धर—
 आ गयीं अुय क्षीरसे;
 मर्यके वैपम्यमें रमती हुआ, धमती हुआ,
 अधरपर टुक हँसीके छद-सी
 अरुणिमामें झूमती, गोपूक्तिमें जमती हुआ,
 टहलती आयी अमावस मद सी,
 झरझरित, अुफनते, फेनिल, धुमड़ते,
 ज्वार पूरित, अचल, अस्थिर, गहन-स्वरमें अुमड़ते,
 निरसीम लहरोकी हिकोरोम, धपेड़ोंमें,
 अुनरती आयी विहँसती-सी, विलसती-सी,
 री चिरन्तन, केजिमयि ।
 गरजने जीवन अुदधिके तीरपर
 आय चिर-अकल्पित प्रेयसी ।
 नृ-यमें डूबी, टुमुकती-सी,
 कटि किंकिणीमें गमकनी-सी,
 नूपुरोंमें सुँपुरभोंमें छमकनी सी
 कौन ? हो तुम दधि, दानवि, रूपसी, रमणी,
 विधात्री, वारणी, वैश्या कि दुर्गा हो ?
 कि निपट निर्लज्जा, छलाकुश राश्यसी,
 छद्मके सौन्दर्यकी साकार प्रतिभा ?
 ओ ! अपरिचिते ! कुछ तो कहो !
 हास-रोदनके बदलते रागमें,
 प्रीति, मिदनेके, विरहकी आगमें,

नैराश्यके नीरख तमावृत विननमें,
 चोटकी बौद्धारपर स्वप्निल, सनल
 मंदिर आशाके लहकते बागमें,
 कौन हो ? कविते, कलामयि ! नरंकी ?
 शिवा ? अक्षला ? निध्वसनी प्रलयकरी हो ?
 आन वाणीका हुआ है रुद स्वर !
 कहती नहीं बयो ? बोल दो !
 प्रभजनके अुध्वंगामी वेगमें
 अधके विकराल ताडवमें,
 ज्वारमें, ज्वरमें, निपट भूचालमें,
 गाज-सी गिरती सतीकी लाजमें,
 टिटुरी, बुभुक्षिपत, दलित, धूर्मित
 अस्थिकी सुसकारती, भभरी हुआ आवाजमें
 कौन हो ? मगलमयी ! लाडला जननी !
 सुद्री, कल्याणि, कल्पना-मरसी !
 सहज सरला हो कि क्या हो—
 कदो तो—
 गुन्हारा ध्यान में कैसे करूँ ?
 अधर जीवन है, अुधर वह मरण भी,
 दुख भरा है—
 लहरता है यह—
 कि जीवन धुल रहा है ।
 घहरता है यह—
 कि जीवन धुल रहा है ।
 ठहरता है यह—
 कि जीवन तुल रहा है ।
 फहरता है यह—
 कि जीवन खुल रहा है ।
 सौम आती है—
 कि भिसका दश भाता है ।
 सौंस जाती है—

कि जिनका बरा दाता है ।
 सौतेके आधानमें निर्गतमें
 मैं तुम्हारी भरा मुद्राका,
 वरा मुद्राका
 करण मुद्राका
 तुम्हारी नटकती-सी मणिनाका,
 तुम्हारी चटकती-सी रणिनाका,
 कुदहल-पूर्ण कौतुकका
 बनाहत वरद चितवनका
 अनृत पीता हूँ,
 विय नहीं पीता ! कहाँ ?
 जब अभावोंमें निरजन आन जीता हूँ ।
 कभी मइसा परस पाकर
 लिप्य जाता हूँ—
 जियाँ दुखसे कि नो भरपूर है ।
 पूर है सुखका—
 कि सुख, दुखसे हरा है—
 दुखकता है ये—
 कि जीवन पल रहा है ।

दलकता है ये—
 कि जीवन जल रहा है ।
 ललकता है ये—
 कि जीवन खल रहा है ।
 झलकता है ये—
 कि जीवन जल रहा है ।
 सौतेके टुक तानहरेपर
 नृपकी हर झलका, हर ललका,
 हर भावके मँवरे, मजे
 धिरक, धमे, गूँने, बने,
 धनधनाने—
 दोलते—
 हर रंगलका,
 शक्तिघात पाता हूँ कि गाता, गुनगुनाता-या,
 मेवके अतर-अवलमें,
 लहरने मन्त्रकी सवेदनाका
 राग टरता है कि नृपके स्वरोमें—
 मैं तुम्हारे नृपके भुषकरण-या,
 लुनकता हूँ नित्य मेरे वर-या ।

गीत जरूके !

: श्री भवानीप्रसाद तिवारी, जेन. जे .

दूबकर मैंने लिखे हैं गीत जदके ।
 मनप अमनपक, प्रपके, लय प्रलयके ।

* * *

चल पढी पत्रवार लट झुग मुदावन
 मेक मुधि-अग्बल महेवे परम पावन
 क नहों पाये लगन-अन्धन टदपक
 दूबकर मैंने लिखे हैं गीत जदके

* * *

लहर पर दानग ली, पय है अजाना
 पवनक झोंके बने तो पल वाना

पल गया मधयं दोँ पलमें चिनरके
 दूबकर मैंने लिखे हैं गीत जदके

* * *

सुा विनाये हुँने जीवन-महापि
 नहीं मिल पाये नगीक ओ किनारे
 सुन पडे मन्त्रधरने तब म्दर अमपक
 दूबकर मैंने लिखे हैं गीत जदके ।

* * *

मनप अमनपक, प्रपके लयप्रलयके
 दूबकर मैंने लिखे हैं गीत जदके ।

सीद्धिका पत्थर

: श्री रामकृष्ण श्रीवास्तव, अेम. धे :

जिम पत्थरसे देव बने तुम
शुभ पत्थरका मैं दुकदा हूँ ।

मेरी छातीपर चढ़कर तुमियाँ पैरोंकी धूल झाड़नी,
लोट तुम्हारे चरणोंमें आँसू से भीगे वृत्त चढ़ाती
आँसू मूँदर मानवकी परवशता गीत्र तुम्हारे गाती,
मन्दिरके आगे मेरी ममता अपना मुँह खोल न पाती ।
कंचोंपर बैभवकी सत्ता लेकर
मैं चुपचाप गड़ा हूँ ।

जिम दिनसे मानवने मानवका शासन स्वीकार किया है,
पत्थरने पत्थरसे निर्मित अपना कारागार किया है ।
जिम दिनसे मानवने अपनी जड़ताको साकार किया है,
पत्थरने पत्थरपर चढ़कर मन्दिरमें अवतार किया है ।
अंधकारमें पढ़कर तुम कुछ बने
और कुछ मैं बिगड़ा हूँ ।

मानव मनमाना है चाहे जिमको वह भगवान बनाये,
वह शरीर केवल पत्थर है जिमके घरमें प्राण न आये ।
मैंने अपने जीवनमें तुमसे कोभी वरदान न पाये,
पत्थर होकर भी तुम अपने पत्थरको पहचान न पाये ।
टूट फूटकर 'बिस्ती लिभे
अज्जामे अपनी स्वय गदा हूँ ।

स्याम असुन्दरता-अपनापन तुम चाहे जितने सुन्दर हो,
अरे अनश्वरता-अभिनेता, आखिर तो तुम भी नश्वर हो !
बाहरसे मैं जो कुछ हूँ तुम दिपे तुझे मेरे भीतर हो,
मैं पत्थरका पत्थर हूँ, पर तुम पत्थरके आडम्बर हो ।
चिन्नोंही बनकर मैं किगनी चार
सीदियोंसे झुलदा हूँ !

पहाड़ी तूदी

: श्री आरिफ :

१. नेरे पोशन छुप छुलित, सुलि आभे दुरदानिभे,
विगनी वनतुन साज, यन्दरातुन छुक्खे वायानिभे ।
२. तार कोज़मह डह रावधि, जूनि नॉविथ यान मैज़,
मौरकन मैज़ सूनि, जिर-जिर आश्री-ख अस्मानिभे ।
३. बोलि रग-२ छुप कनस, मैज़ सोज़ नौ-२ मैज़ मनम,
मैज़ वनस हेरि शबनमम, सपय ज्ञानी-खै पद्मानिभे ।
४. रेरा त गुपने विरह कयम, सुनज़ बेराह धानिये हरि धीठ,
मीपठ करि करि नियेठ नरि बोना डियड्ये तम्बलानिभे ।
५. सोत कदम तुल, कोत गसुन छुभी, बोज़खे वनै फेर बुप,
गयमम धुभी सदरस जु छुल, दोनवन छुहन दीवानिभे ।
६. नाजनीमी दीन कम छुक, कीन रोम छुभी सीन मारु,
छुक बेयन हुन्द मल छलान, छुभी दाग मा खारानिभे ।
७. तह दी हेयन आवम, मपर वॅनी खोत मद्र किरम अन्दर,
रावह रावल क्याज़ी बैँल, आसुन पननु जानानिभे ।

अनुवाद :-

[अं प्रियतमा, तुम जंगली फूलोंका मुँह धोकर सबेर-सबेर ही आ गयी हो । तुम अफ़राजोंके गीन गाने हो और अिटका स्वर्गीय मगीत हो ।

तारोने अपनी किरणोंसे चन्द्रमाको स्नान कराया और तू नाचती-गाती पृथ्वीपर प्रवृत्त हूँ ।

भिन्न भिन्न बोलियोंकी गूँज तेरे कानोंमें गूँज रही है और हृदयमें नित नयी पीड़ाओंको समोचे हुए तू बहती रहती है । तूने शबनमके साथ ही बीच जगलमें जन्म लिया ।

ऋषि और गवालने क्यो अर्भानक तेरे अपरो किनारा पर मौजूद हैं ? मैदानो प्रदेशोंमें तुमने पुन्यआना स्थानियोंको अपने पानीको चूमने दया और तुम्हारा सयम टूट गया ।

धीरेसे पग बढ़ाओ, तुम्हें जाना बड़ा है ? अच्छा ता यह है कि तुम लौट आओ । समुद्र दो भागोंमें बँट गया है, और दोनो भागोंपर मन्त्री छाओ हूँ ।

तुम्हारा विचार कितने निर्मल है ? डाह और ड्रेपस रहित तुम्हारा हृदय कितना सुकोमल है ! तुम खीराकी मलिनता दूर करनी हो, किन्तु तुम्हारा आँचल पर काँची धव्वा नहीं है ।

पानीको तहमें बँठ लेने दो । अपनी ज़िम्मे बड़ी तीव्रता है । अिन भँवरोंमें कनों पठना चाहती हा ? अं प्रियतमा, तुम अपना स्थितिच कनों मिटाना चाहती हो ?]

अनुवादक — घनश्याम सेठी

(बापाश पृष्ठ ७९६ के आग)

त्रिपदी नामक छन्द नीति धर्मकी अनूठी बाते सुनाकर क नई साहित्यका भण्डार अलंकृत किया । सवज्ञ आश कवि य और अनूठी अुविनया आकौविनयोकी भाति आजकल भी जनताकी जीभपर नाचनी रहती ह ।

कर्नाटकका शोकजीवन त्रितना मुमदृत और मघर है अिमका परिचय क नडके ग्राम गीतोके द्वारा मिलता है । यद्यपि रचयिताओके नाम नाम आदिका पता नहीं चलता ता भी ग्रामगीत बड़ी ही प्रचर मात्राम मिलते ह । भाषाकी सरसता रचना चातुय विषयकी विविधताकी दृष्टिसे कन्नडके ग्राम्यगीत अतम साहित्यके अतमत आ जाते ह । अिन गीतोकी महत्ताको समझकर अब कभी तेलकान अिस निचाम काम करना आरम्भ किया है और अिस लोक साहित्यकी आलाचना और मू याँवनके लिअ सामग्री जुटानका बौडा अठाया है ।

कर्नाटकके राजाआके दरबारीम क नडके कवियो का सदा आदर रहा और प्रो साहन भी मिलता रहा । माध्ययुगके राष्ट्रकूट राजा व विजयनगरके राजा कन्नडकी श्रीवद्विमें भरपूर योग देने रहे । राष्ट्रकूट राजा नपतग स्वय कवि थ । तल्प और अरिक्केसरी प्रभतिन कवियोकी प्रो साहन देकर काव्य रचनाकी परम्परा चल यी । चाञ्चण्डराय अने सेनापतियोन भी प्रय रचकर साहित्य प्रमका परिचय दिया । वसव भी कुछ समयतक विजयज्ज नामक राजाके यहाँ सेनापति थ—अभी जनश्रुति है । विजयनगरके राजाओन अपन पासन वालम अलिन कलाओकी वद्विके लिअ कसा प्रो साहन दिया था यह बात अितिहास प्रसिद्ध है ही तिअणन विजयनगरके दरवारम रहवर ही भारत अने अिन लोकप्रिय काव्यकी रचना की । चिन्तु जसे ही विजयनगरका वभव मूप डूब गया वने ही बहुत मे छोट मोट राजा जहाँ-नहाँ सिर अुठान लग और कन्नड श्रेष्ठ छिन भिन होकर बट गया तथा देगम सवन अर्गाति बड़ी जो साहित्यके विकासम बाधक सिद्ध हुआ ।

मसूरके नरेशोके अश्वदयके साथ साथ फिरसे कन्नड साहित्यका नपन हाराभरा होन लगा । मसूरके चिक्कदेवराय स्वय कवि थ और अहान गीत गोपाल नामक भक्ति रसपूण प्रय रचकर कर्नाटकम भक्ति साहित्यकी परम्परा फिरसे चलायी चिक्कदेवरायके दरबारी कवियोम निरुमालाय प्रमुख थ जि होन

कन्नडसे अनुयादक—श्री प्रो हिरण्मय अेम अे सा र.

— १०२ —

चिक्कदेवरायकी वणावली नामक अक प्रय मघमें और अप्रनिमवीर चरिते नामक अलकार प्रय पद्यम रचकर अपनी बहुमखी प्रतिभाका परिचय दिया । अिनके अतिरिक्त अिस कालके कवियोम सिगराय और चिक्कटुपाध्यायके नाम अुल्लेखनीय ह । सिगरायका लिवा हुआ मिश्रविदगोविद अपन ही ढगकी अेक सुन्दर कलाकृति है । चिक्कटुपाध्यायकी प्रतिभा बडी ही प्रखर थी । अु होन जितन प्रय लिख ह अुतन शायद ही अवतक और किसी कन्नडके कविन लिख हों । अिनके सभी प्रथोम वण्णव सप्रदायोके तत्वाका प्रतिपादन हुआ है । विष्णु पुराण दिव्य सूरि चरिते अिनके रचे हुए प्रथोम अति मूय ह । चिक्कदेव रायके अन्न पुरमें होतम्मा नामक अक दासी थी जो महलके साहित्यक वातावरणम रहनके कारण स्वय बडी भावक बन गयी थी । असन हृदिबधेय धम नामक अक रसपूण काव्य सागाय छन्द रचा अिमम स्थी पुरुषके सम्बन्धका अनूठे ढगमे निरूपण किया गया है । अिस प्रकार चिक्कदेव रायके कालमें कन्नड साहित्यको अक नयी स्फूर्ति मिली । अिम कालकी अक विसयता यह थी कि या तो अधिकाश कवि ब्राह्मण थ या ब्राह्मण धममे प्रभावित थ । अिस लिअ सन १६०० से सन १९०० तकका काल ब्राह्मण कालके नामसे प्रख्यात हुआ । चिक्कदेव ओडेयरके अपु रात मुम्मडि कृष्णदेवराय गद्दीपर बठ । अिनके समयम पूववन ही कन्नडके लिअ प्रो साहन मिलता रहा । स्वय कृष्णदेवरायन श्रीकृष्ण बाणी विलास भारत नामक अक वृद्ध काव्यका निर्माण किया । अिसी राजाके दर बारम केम्पुनारायण नामक अक कवि थ जि होन जन प्रिय मुद्राराक्षस का कन्नडम अनुवाद किया । चाम राज आडयरके प्रो साहनने फलस्वरूप कभी ससृष्ट नाटकोका अनुवाद हुआ । वसवशाली जो चामराज ओडयरके दरबारी कवि थ ससृष्ट नाटकोका अनुवाद करनके कारण अशिनव कालिदासके नामसे मसूर हुआ । अिनका अनूदित शाकुतल नाटक अति लोक प्रिय है । अिनकी देखा देवी कवियोन ससृष्ट नाटकोका कन्नडम अनुवाद करनका काय शुरू किया ।

अुन्नीसवी गताश्टीक अतम कन्नडका आधुनिक काल शुरू होना है । अग्रजी भाषा और साहित्यके सम्पर्कम आनके कारण कन्नड साहित्यकी सवनीयुषी अभिवृद्धि हुआ । आधुनिक कन्नड साहित्यके विकासकी गतिविधिका अितिहास काकी रोचक और बडा है ।

देशभक्त मारवी

: श्री दौलतराम शर्मा :

भारतवर्षने अँसे-अँसे अनोखे रत्न पैदा किये हँ जिनकी मिसाल सत्सारमें दूँडनेसे बहुत कम मिलती है । मारवी भी अउन रत्नोंमेंसे अँक थी । जिनकी गाथा प्रेम, तप, त्याग, रूप-लावण्य और शील आदि सद्गुणोंसे पूर्ण है । हम भारतवासी अुपरोक्त गुणोंके लिअे स्त्री जातिकी गिरीमणि सीताका स्मरण करते हँ । मारवी भी पुण्य-स्मरण योग्य है । दोनामें अन्तर अिनना ही है कि अँक राजा मिथिलेशकी राजकन्या, दशरथकी राजकन्या और राजा रामचन्द्रकी राजरानी, तो दूसरी अँक गरीब किसानकी बँटी, गरीबकी भँगतर और अँक अँयाचारी नवाब द्वारा कुअँपर पानी भरने समय अपहरण की हुअी अबला थी । दोनोको बन्दी जीवन बिताना पडा । रात्रपकी अणोक वाटिकामें अँककी, तो दूसरीको जालिम नवाबकी कैदमें । अँकको मुक्ति मिली असस्य चानरोकी सेनाके सरदारो हनुमान, सुभीब, अणद आदि द्वारा तो दूसरीको बन्दी जीवनसे छुटकारा मिला अपने त्याग, तप और शान्तिने ।

विजय पा लेनेके बाद, जहाँ राजा रामचन्द्रने सीताको अँक घोबीके बधन माप्तसे त्याग दिया था, तब रात्रण अँवित न था, जो अूस घोबीके गालपर जोरका पत्थर जमाता और बनाता कि मीठा सती है, निर्दोष है, वहाँ मारवीके पतिने अुमपर गका की और जब यह बात नवाबके बानात्रक पहुँची तो, वह मेनाको लेकर पट्टेचा और मारुने सबके सामने अुमकी अरनी पूज्य वहन बनाया ।

रमणी रत्न मारवीके चरित्रको सिन्धके अनेक कविषा और लेखकानें गद्य-पद्यबद्ध किया है । मीर जाहिर मुहम्मदने भी जिनने सिन्धका अितिहास १६२१ में लिखा, अिम पटनाका अुल्लेख किया है । बादके लेखकोंने, जा कुछ लिखा, जान पडता है, अिमी अितिहासका आषार लेकर लिया । यह बात भी प्रसिद्ध है कि

नवाब खान-खानान जब सिन्धके अँक मुख्य नगर ठठ्ठाकी अपने अधिकारमें कर लिया, जो वह कभी सरदारोंकी लेकर अकबरके दरबारमें पहुँचा । वहाँ मारवीका अिक आया । तब खानखानाने अँक कविते कहा कि बादशाहको मारवीका चरित्र सुनाओ । कविने बादशाहको खुश करनके लिअे कुछ मनगडन्त बाने शुरू की, अिमपर अकबर सल्ल नाराज हुआ । तब आये हुअे सरदारोंमेंगे मिरजा जानीबेग नामक सरदारने बादशाहको सारी मस्ची घटना कह सुनायी, जिसे सुनकर अुमकी अँखोंमें अँसू भर आये ।

कहते हँ कि शा अिनाश्रित पहले कवि थे, जिन्होंने अिम घटनाको सिन्धीमें अवनरित किया और शा अबदुल लनीफको सुनाकर अुममें प्रेरणा भरी कि वे 'मारवीके गीत' कहँ । ये गीत आज समूचे सिन्धमें बडे प्रेम और दर्द भरे दिलके माप गाये जात है । अुमकी वह रचना 'शाजो रकालो' के नामसे प्रख्यात है और अिसमें 'नुर मारवी' नामक अँक बाब (अध्याय) है, जिनमें सारी घटना बडे ही भासिक ढगने वर्णित है । घटना अिम प्रकार है —

अुमर मूमरो नामका अँके नवाब अमरकोटमें राज्य करता था । अुषके राज्यके मलीर नामक अँक गाँवमें पालन नामका अँक पतिहार रहता था । माँडवी नामकी अुमकी स्त्री थी । दोनो पति-पत्नी पशुपालनका काम करते थ । आज भी प्रायः अुम अिल्लाहेके बागिन्दोंका घण्टा पशुपालन ही है । मागपडे अुमके अँक पुत्री हुअी, जो कविके घाटोंमें अितनी सुन्दर थी कि अुमका वहाँ अम्मब है । पतिनीके समान शरीरका रण, विजलीकी तरह, प्रकाश सूबें जँसा, अँनी परम सुंदर लडकी पाकर मारु लाग प्रसन्न थे और अूस बलिकामे प्रेम करने लगे, अिमलिअे अुमका नाम मारवी पड गया । वह मपानी हुअी ।

पालनका नौकर मारवीपर मोहित हो गया। वह चाहता था कि मारवीकी दादी अमनमें कर दी जाऊ। मगर पालनको यह मजूर न था और लड़कीकी मँगनी अपन अक स्वजातीय नौजवानके साथ कर दी। फोग जिससे नाराज होकर अमरकोटके अमर सुमरोके दरवारमें पहुँचा और प्रायना की कि वह अमरसे अर्वातम कुछ अज करना चाहता है। दरवार बरखास्त किया गया और फोगन अमरके आग मारवीकी अपूण मुदरताका वणन किया और असे जिस बालके लिअ तयार किया कि वह मारवीको भगा लाऊ। अमर जो प्रजाका रक्वक बना हुआ था भक्वक बन गया। वह अपन साथियो और फोगको साथ लेकर गुरू टुटरोकी तरह अूस किसान गुदरीका अपहरण करन चल पया।

+ + + +

प्रात कालका समय था। शीतल हवा बह रही थी। सूरज आसमानकी सीदियोंपर चदनको अभी अग डालियाँ ले रहा था। मलीर गावके किसान अभी जाग न था। अूस समय दो औरते बुअपर पानी भर रही थी। अुनमेंसे अक परम मुदरी मारवी थी। अितनम कुछ दूरसे कुछ ओठी (राहगीर) अूम तरफ आने दिवायी दिय।

मारवी कुछ डरी तो सहलीन डाढस बँधाया कि डरती क्यों हो ज्यादासे ज्यादा वे लोग हमसे पानी माँगें। हम अुनमें देश देशातरके समाधार पूछें। अिननमें वे लोग बुअके पास आ पहुँचे। फोग बडा कमीना था। औरताको अकैला पाकर अुसन नवाबको अिशास किया। नवाबन असा सुदर रूप योवन कभी जीवनमें देखा न था। कुछ वपण तक वह अक टक मारवीके रूपरसका पान करता रहा। फिर अुसन अपनको सँभाला। मारवीसे पानी मागा और पानी पीनके लिअ अपने अूटको जमीनपर बटाया। जो ही मारवी पानी पित्रान पाम आयी कि नवाबन अपनो बाजुओंमें पकडकर अूटपर बटा किया और अमरकोट लाकर अपन राजमहलाम बंद कर दिया।

+ + +

अिधर जब यह मारुअोन सुना कि अुनकी अिअजत आकरूपर अिस प्रकार हमला हो रहा है तो वे ददमें चीख अूठ, कोअी बराबरीका होता तो दो दो हाथ निपट लेते पर अब बाड ही खनीको खाना गुरू कर दे

तो वचारी खती क्या करे। प्रजाका रक्वक ही भक्वक भस्मानुर बन गया। गरीब किसान लाचारपस्त हिम्मत होकर पर पर बठ गय। लाज भी गयी और लोकहँसो भी हुअी।

अुवर मारवी जब राजमहलमें बंद हुअी तो अुसन सत्याग्रह किया। अमर रोज समशाता लालच दिवाता पर अूम लड़कीपर कुछ भी प्रभाव न पडा। वह हर वकत घरकी मिट्टी घरके पंगु घरके लीग सखी-गायिनोको यादकर-करके रोती रहती। कअी दिन कअी महीन गुजर गये। दगा बहुत बुरी होती गयी। बालोम कधी नहीं की नहाया नहीं। कपड फट विथन हो रहे ह। कपड बदलनको कहा जाता है तो अूमका अक ही जवाब होता है कि जो कपड अुमके देगमें नहीं बन अु हे पहनना ना दूर वह हाथ भी न लगाअगी।

खान पीनकी बडिया चीजें चादी मोनके थालमें सजाकर अुसे ललचाया जाना है मगर वह अूम मीठ मिष्टानसे जहरको लाख अच्छा समझती है और रोकर कहती—मेरे माता पिताका घोर अपमान हुआ है। म मर गयी होनी तो अुनकी बअिअजनी न होना।

+ + +

वह मेघोकी वीछार द्वारा पविपया द्वारा और हवाओ द्वारा अपन मारुओको नदेशा भअनी है। पर अुसकी हाथ पुकार कोअी नहीं सुनता।

अुमर मारवीको महलसे जलम डाल देता है। काराकी नाना याननाअ सहनी है आशाअें टूट जानी ह। अुसे आशा थी वह दिन आअगा। अुमर अपनी बग्नीपर पछताअगा तब म अपनी अिन आँवोमें अपना गाँव घर कुटुब-कबीला और प्यारी सहैलियोको देखगी। अुसने अन्न जल तक छोड लिया और अुसका चीन ना भूखडा पीला प गया। अिस तरह मरु गयापर पडी मारवीको देखकर अुमरका हृदय पिपल अूठा। अुमका जो भअ आया। वह पश्चाताप करन लगा कि मन बग नीच काम किया—अक बगुनह औरतको मतया। अुम नीच पोगके कहे म आअर अपनी प्रजा अवलाका सताया।

प्रक दिनकी भी देर न कर नवाब अुमर न मारवीको अुमके मँगनरको खुनी खुनी सीव लिया और अुमन अुन दोनोमें माफी माँगी।

शुक्लका—'यात्रा, पाला, गोटिपुआ और दासकाठिया'

: श्री अनुसूयाप्रसाद पाठक :

यह देखा जाता है कि आनन्दका अपभोग करना मसारमें जीव मात्रके निम्न अंक जहरी वस्तु बन गयी है। यहाँ तक कि पड पोषातनमें भी अिम विषयके रमको रमास्वादन करनेकी वयमता है। मुख दुख व्यक्त करनेके भाव हैं—और अूनकी भाषा भी है। रात और दिनके प्रवृत्ति परिचालित वार्य-कलापके अन्दर, कौन किससे प्रेम करता है, कौन किसे देखकर खूब होना है और किसे देखकर दुखी— यह कमल बी कुमुदिनीके भावोंसे जाना जा सकता है। अेक सूर्यको देखकर हँसता है, खुश होना है तो दूसरा दुखी होता है। जो दिनमें सूर्यको देखकर दुखी होता है वही रातको चन्द्रमाको देखकर खुश भी होता है। अूस समय सूर्य प्रेमी अपना मुख लटवा लेता है। चकोडे आदिके पत्ते शाम होने ही मुरझा आते हैं। तरोओ आदिके फूल शामको ही खिलते हैं, मुस्काने हैं। अूसको 'वह चितवन कुछ और है जेहि वस होत मुजान'—अिम प्रकारके आनन्द और गान्ति-पूर्ण वायुमण्डलमें नीरव-रव करने जो अपना जीवन बिताते हैं, अुनका भी समाज है और साहित्य है। शाम-अधरे चिड़ियोंकी चहक और चींगुरोंकी शकार, अुनके वार्य कलापका निदर्शन नहीं तो और क्या है ? और व्यक्ति तथा समाजके वार्य कलापका चित्रण ही तो साहित्य है।

साहि-यक जीवन बिगानेके लिअे यहाँ जम्हरी नहीं, कि जो मावपर हो, साहित्यिक रमका रमास्वादन करनेके वे ही अधिकारी हो। अिमके लिअे दिल, दिमाग और अनुभूतिकी भी आवश्यकता है।

जब पेट-पीछी तकमें अित प्रकार साहित्य चर्चा होती है, तो नरामें और नी अधिक क्यों न होगी ?

अिम प्रकारका लोच-साहित्य भारतके प्रत्येक प्रान्तमें, गाँव तथा नगरोंमें है। गाँवोंमें रामायण, महा-भारत, भागवत तथा मत्स्यनारायणकी कथा, देवी-देविका पूजन-गायन तथा अुनके वार्योंकी चर्चा और आलाचना अक प्रकारकी साहित्य-चर्चा है।

शुक्ल प्रान्त अन्य प्रान्तोंकी अनेकता अित कलामें अरुण्ड निपुण अूतरेगा, कम नहीं। वारण, भजन-पूजन, संगीत-वाद्य और पुराण पाठ आदिके अलावा यहाँ साहित्य-चर्चा करनेके अनेक माधन गाँव-गाँवमें हैं। और फिर अंगी चर्चामें अंगे व्यक्तिपक्षके जरिये को जाती है अिनको मामूली अवर-जान है, अधिकाशको तो वह भी नहीं। "यात्रा, पाला, गोटिपुआ और दास काठिया" शुक्लकी अपनी बसोपताअं हैं। यात्राको हम रामलीलाके साथ जोड़ सकते हैं। लेकिन साधारण यह भिन्न है। किमी अेक राजाके चरित्रको लेकर अुनके जीवनकी घटनाओंको, अुसकी भाषामें व्यक्त किया जाता है। यह रातके ९-१० बजेमे शुरू होती है, तो सबरे ४ से ७ तक खतम होती है। प्रीअ-अुतु अिसका मय है। अिमके लिअे खाम किमी मचकी आवश्यकता नहीं होती यह तो आवाग-विगत-नये, प्रकृतिकी गोदमें हुआ करता है। कभी-कभी चन्द्रमा अिन अुत्सवको देखकर हँसता है तो कभी घनाअ्वकार। अुन समय आकाशमें चमकनेवाले अनअ्य तारा-गणोंको देख-कर तम और अिअ तया गीतममूतिके मन्वादकी माहि अियक या पौराणिक कथाकी कल्पना की जा सकती है। लेकिन जब यात्राकरियोंकी डोलकी और मृदग बजते हैं, तो दर्शकोंकी अणना अुधर घोडे ही जाती है। वह तो तिलअ्व अंधेरी निशाके शान्त वातावरणमें निकलने अूजे अदनिदूर विपनिअसे टकराकर समा जाती है—अेक कपीण गमक गमका कर।

यात्राके कलकार अधिकाश 'वाअुरी' होते हैं, जो हरिअनोकी जानियामें अेक है। बालकमे वृडे तक अिममें भाग लेते हैं। ये खाग स्त्री-मुरयोका अभिनय बडे ही अुन्दर ढगसे करते हैं। ये अगन अपने वार्यमें अंगे दरप होते हैं कि अूमोंमें तल्लीन हो जाते हैं। नारीका अभि-नय करते-करते नारीमय बन जाते हैं। अार अुन्हें साधारण कालमें भी किमी औरतके साथ बातचीत करते

देतोंगे, तो वेदने ही पहचानोगे कि रानी है या पुण्य। यह व्यवहार, चालढाल और भाव-भंगीमे सभी जगह न गरीबे-वि यह चीज है।

बाल-गतिमे दिवार बनकर खेपाये कुछ नारीदेव धारण कर बालकसे आदि नगरोंमें होलीकी यज्ञाकर माघने, गाने और अपनी जीविका अर्थात् जिन करते हैं।

पाप्ता—यात्रामे भिन्न है। जिनमें ५-७ ब्राह्मणों होते हैं, जिनके वेद भी विविध होते हैं। वेद मुनिवा (गणक) होता है, जो वाच्य छन्दवा नाता प्रकारसे धर्म करता और अर्द्ध गाना है। बाकी भुगये सहायक होते हैं। कुछ बाजा बजाने और बोग लम्बास्वर बनाकर भुग गायामें धधुर ध्वनि तथा मुनिवाके अर्धमें हुंकारी भरते हैं। यात्राकी अंगेवपा जिनमें साहित्यिक जालो-पनाकी आवश्यकता अधिक होती है। अर्धकी व्यजना, शब्दाहस्वर, बलात्मक भुजिन-चतुर्थ मुग्धकर होता है। ये छन्दोंके अर्थ करनेमें विपुण होते हैं। जिनका यह धर्म नहीं, कि जिनकी आलोचना साहित्य-अण्डाङ्की घिरतयामी प्रागाणि बस्तु समझी जाती है, फिर भी भुजकी मजेदार हास्य रसात्मक वाच्य चर्चा सुननेके लिये अच्छे-अच्छे साहित्यिक लालायित रहते हैं। समय समयपर अिस बलाके लिये जिनकी बद्ध भी होती है।

जिन दलका गहारा और धया कुछ नहीं है। जगह-जगह घुलाये जाते हैं और धन पानेपर जाते हैं। धर्म और त्यागका अर्पदेव अितने सामने जीविका-निर्वाहका प्रदन होता है। जिनका कार्य ४-६ घंटेमे अधिक नहीं होता।

आरम्भिक अर्थात् जिनकी अपनी कला है। साहित्य जिन प्रकार समूह और तबला मिलाने-मिलाने योग्याओं, दर्शनोके लय रीत करत है और अर्धकी अण्डा अितकी आरम्भिक प्रार्थनाका हाथ है। प्रार्थनाके अन्तमें शठ मुनिवा भा जाता है और वहीमे भाषाके पद्यको पकड़कर अर्थ मान शुरू कर देता है।

मोटिपुआ—मोटिपुआ अथवा प्रचारका बालकका समीपगम नाच है। भुगमें बालक नाता प्रकारके तृप्य करते हैं अथवा जनताका मनोरंजन करते हैं। दिन भरके

धमे यदि कर्म-बलान् व्ययित विप्र मन लिये जीवन-यापन किया करते हैं और कभी-कभी मनोरंजनार्थ 'मोटिपुआ' नाचका आयोजन करते हैं। जिनमें गीत-बला, वाद्ययंत्र तथा नृत्यरत्ना प्रधान बस्तु मानी जाती है। जिनकी मूर्च्छनाके दिखने हरा करती है। योड़ी देरके लिये बलान् दूर होकर मनमें हरिवाली लहराने लगती है। आरम्भ मान दर्शन बृद्ध अर्ध-अर्ध पर लोपत है। जिन हम ललित बलात्मक साहित्य चर्चा कह सकते हैं।

दासकाटिया—ये अथवा प्रारम्भे कला वाच्य है। पात्र दाहो है। अथवा गायन दूरका भुगका सहायक। ओटिया गारला महाभारत १६ अर्थात् जिनके, सस्त्रन महा-भारतमें नहीं है, जिनकी गायनकी मुख्य वस्तु है। आरम्भनाको रोचक बनानेके लिये अर्थात् कविगीकी गुणक कथितार्थ भी जिनमें जोड़ी जाती है। महा-भारतकी अथवा विशेषता है, कि भुगमें अथवा गुन्दर मौलिक कहानियाँ हैं। दासकाटिया दल जिनके तिकीड़े बाजा बजाकर रोचक बगने माना है। जिनके ताल, राग और साज बाज आकर्षक होते हैं। यीर-वीचमें विश्राम हास्योपादक सामाजिक कथा भी कहने जाते हैं। जय केवल गायक गुम्मानेका अिनारा करना है, तथ भुगका सहायक लोकीडा बजा बजाकर—'जे हरि हरि राम नहीं गुन्दर इयाम'—भजन गायक जनता तथा भजन-गण्डरीका मनोरंजन करता है।

जिनका सम्मान सभी श्रेणीके लोगोंमें होता है, लेकिन अथवा लये ग्रामोमे ये बहुत सम्मान और धन पाने हैं।

अथवा यात्रा, पाप्ता, मोटिपुआ और दासकाटियाका जो अथवा ललित तृप्यके रित्त गण है वह अथवा लये ग्रामोकी देन है। यात्रा और बालकका नाच तो मेजोंमें भी हुआ करता है लेकिन जिते भी अथवा लरी देन मान लेना अुदारता और गण्यता सम्मान ही समझा जावेगा।

मेरा तो विचार है—अथवा प्रचारके मनोरंजन गायकोंका भारतके सभी प्रांशमें प्रचार होता पाहिये।



तुच्छ !

: श्री प्रबोध सान्याल :

[बंगला]

माझरात्रे दिदिमार पाडा पाओआ याप ।
 तारं घुम नेत्रि, घुम तार आते ना ।
 तिजि डाबेन, जगे आछो मा, विगु ?
 अेरिक धेके अुत्तर आते बेन, मा ?
 तोमार मने आछे ओ मटलेर कोनेर घरे सेत्रि
 बोष्टमदेर ? को गान्त्रि गात्रितो तारा ।
 अेखनो काने धुनछि ।
 मा बलेन, सब मने ब्राछे ।
 दिदिमा बलेन सेत्रि मेपेटाके कोत्येके येन घरे
 अेनेछिल । की मारपरत्रि करतो ।
 मेपेटार आषार ब्याभार किन्तु भालोत्रि छिल ।
 मा बलेन पोडारमुन्विर जानबुडि छिलना किछु ।

ओत्रि पर्यन्त्रि । दिदिमाओ चुप, मापेर ओ
 आर कोतो माश नेत्रि । पोडारमुन्विर कपाटा आमिओ
 किन्तु मुल्लिजि । मेपेटार नाचे किल्लक, हाने अुन्किर लेखा
 हरे कृष्ण, माषार सोगय वेन्कुलेर माला, कोख दुष्टोप
 येन घुमेर भाव, परणे पान बगड, मेपेटार माश-ओना
 गा, नेत्रि गा धेके चन्दनेर गण्य केतुन । कोनेनेर कलि
 पाकनो तार मुग्ने दिनरान, आर से गान गात्रिले बामा-
 देर अेदिने मकलेर हात धेके काज पडे येतो । अेकदिन

बाडी छेडे तारा चले गेल, किन्तु तार मापुदेर गान
 सेत्रि धेके अेत्रि बाडोर बुनेर तलाटाके टनटनिये तुलतो ।
 कोनेनेर नेत्रि कान्ना रेखे गेछे ओत्रि कोनेर परेर हाओ-
 याप ।

ओरत्रि पातोरे घरेर सेत्रि वेपुन कलेजे पडा फमी
 मेपे दुटोके मने पडे । तारा बपसे अनेक बडु । तादेर
 बापेर नाम रमाकान्त वाकाटिया । तारा आसामेर
 लोक, अेवाने अेनेछिउ लेखापडार मुविधेर जन्प । मने
 पडछे कोनो दिन कया बलेनि तारा । तारा सम्भ्रान्त
 तारा विविपन, तादेर पोपाकेर आनिजाप । काछा-
 काछि गिने दाडिधेछि दयार चोखे देखे सर गेछे
 निबेदेर मध्ये विदुपेर हासि हेवेछे निबेदेर भाषाय,
 किन्तु सम्भ्रमेर बचमे ओदेर देखेछि । बुधने पारनुम की
 पूषाकी कृपा आमादेर ओपर । की कठिन हासि मायानो
 पाकतो ओदेर मुखे । गोलान फुलेर वनन बैहारा,
 किन्तु येन मुकनो रगीन कागजेर फुन । ओदेर
 कोख दिपे आमरा निबेदेरत्रि देखनुम, आमरा की कागल,
 की अकिचन, की निबोय । पतदिन तारा छिल ओत्रि
 बड घरे, तनदिन ओदेर पूषा बपे वेदिनेछि ।

[हिन्दी]

अनुयादक : श्री मन्मथनाथ गुप्त

[श्री प्रबोध सान्याल बगलके प्रसिद्ध बुग्ग्यान-
 वार हे । अुहोंने बहूने बुग्ग्यान लिखे हे । कओके

पिन् भी वन चुके हैं। नीचनी पवित्रां तुच्छ नामके
अंग सग्रहमे हैं जिनमें दा तिरापेदाराना वगन है।]

आधी रातके समय नानीनी आहट मिलनी थी ।
अनकी नीद नहीं नीद नहीं आती थी वह पुनारनी थी—
बेटी विद्यु जाग रही हो ?

विद्युग्ने अततर जाता था—तया मां वात क्या है?

—तुम्हें याद है अज्ञ हिस्मके धोनवे कमरेमें जा
बेष्णव रहते थे ? क्या पुव गाने गाने थ । अब भी
जंमे गुन रही हूँ ।

मां कहती थी—मज याद है ।

नानी कहती थी—न जाने कहासे अज्ञ लक्ष्मीको
पकड़ लाये थे । और अज्ञ पर कितनी माणपीठ करने
थे । पर लडकीकी चालचलन अच्छी ही थी ।

मां कहती थी—जन्महीमें ज्ञानमुद्रिका प्रभाव
था ।

यही तक (वान होकर रह जाती थी) । नानी
भी चुप हो जाती थी, और मां की भी काशी आहट
नहीं मिलनी थी । (कथित) जन्महीनी वात में भी
नहीं भूठ सका था । अज्ञ स्त्री की नाचपर तिठन बना
रहता था, हाथ पर हरेवृण गुदना गुदा था, जूटम
बेलाकी मांग लणनी रहती थी अज्ञकी आँखोंमें जंग
(हर समय) नीद बनी रहती थी, बिना बिनाकी सपद
साडी पहननी थी अज्ञना बदन गाधा-गाधा (लावण्य
युक्त) था और अज्ञमे चन्दनकी (भीनी-भीनी) गंध आती

रहती थी । अज्ञनी जीभपर हर समय कीर्तनकी श्रेण
कचि बनी रहती थी और वह जब गा अज्ञनी थी तो
हमारे अघरके आंग काम छोड़ कर खचे हो जान थे ।
अंक दिन वे मदान छाडकर चनेमत्रे पर (अथसे तया)
अज्ञ गाने तरसे अज्ञ मदानके अन्वयलमें बगपर अक
टुक भी पैदा करत है । कोनक कमरेकी हवामें वे नानी
कीर्तनकी अज्ञ टीमको छाड़ गये हैं ।

अज्ञीके बगत्रके कमरेमें रहनगानी वयून काजेजनी
छाया-दा गारी लटकिया भी याद आनी । अज्ञनी अज्ञ
बहुत बाफी थी । अज्ञके पिताका नाम रमावानका काटिया
था । वे आमाग की थी और यहाँ पडने-लिवने की
गुविधाने लिअ आयी थी । स्मरण आ रहा है कि किसी
भी दिन अज्ञ लोयाने हमस बातचीत नहीं की । वे
सम्भ्रात और शिक्रिया थी, (तिमपर) कपडे लोका
आभिशाल्य था । कभी कभी मे पाम जाकर खडा हुआ,
तो वे अनुकम्पाकी दृष्टिसे देखकर दूर टट जाती थी ।
वे आपमें अपनी भावामें बिद्रूपकी हँसी हँगती थी, फिर
भी हम अन्ह अज्ञनकी दिगाहमे देगने थे । हम समय
पाने थ कि टमार व कितनी धृणा और कितनी दुपा
रखनी थी । अज्ञन चहरेपर कँसी कटोर हँगी रहनी
थी । मृगावने फूटनी तरह वेहरे थ पर (जंसे बनाअ
रहती थी कि) मूधे रगोन कागजने फूट मालूम होने
थ । अज्ञकी अँगामे हम अपनकी ही देपने थे हम
कितने बगाल कितन अकिचन दिग्ने निर्वाप थ ।
जबतक वे अज्ञ वड कमरेमें थी, तत्रतक हम अज्ञकी
धृणाके नाहन बने रहे ।





संपादकीय

अस अंकके मन्वन्धमें :

'राष्ट्रभारती'का यह "सम्मेलन विशेषांक" हम अपने प्रेमी पाठकोकी सेवामें अत्यन्त विनय और आदर पुरस्सर अल्पस्थित करते हैं। जिन अकमें जो कुछ भी अच्छाभी आ सकी है, वह 'राष्ट्रभारती' के श्रेष्ठ सहृदय-समर्थ लेखको अथवा सुरक्षित-सम्पन्न पाठकोकी सद्भिलाषा और हार्दिक सहयोगका फल है। सन्त तुलसीके शब्दोंमें कहें—'राम निकाजी रावरी है सब ही को नोक'। जो कुछ बुरियाँ रह गयी हैं वे हमारी अयोग्यताके ही कारण रह गयी। हम जैसा विशेषांक निकालना चाहते थे, हमें खेद है, वैसा नहीं निकाल सके। क्षमध्वम्! 'राष्ट्रभारती' लोकप्रिय अन्तरप्रान्तीय समग्र भारतीय साहित्यका प्रतिनिधित्व करनेवाली पत्रिका है। प्रत्येक सुरक्षितके द्वािष्ट पाठकोको अमुकी अपनी सुरक्षितकी नामश्री जिनमें पढ़नेको मिलती है।

'राष्ट्रभारती' को पढ़नेसे पाठक अन्दाज लगा सकते हैं कि किस नीति-रीतिमें, किस भावनासे, हम भारतकी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, हिन्दीकी सेवा करना चाहते हैं। जिन हिन्दीको अमीर सुमरो, कबीर, तुलसी, मूर, नानक, रहीम और रमणानकी अमृतमयी वाणीका बल मिला हो; और जिनमें भारतेन्दु, हरिदचन्द्र, दयानन्द, गान्धी, महावीर प्रसाद और प्रेमचन्दकी समस्त चेतना और जीवन-साधनाकी शक्ति मिली हो—

अथ हिन्दीमें हम कविकुलगुरु रवीन्द्र गुरुदेव, बल्लात्तोल, मुन्नहाण्य भारती, खाटेकर, विद्वनाय सत्यनारायण, कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, मेघाणी, वेन्द्रे, जोश मलीहाबादी, अमृताप्रोतम, वरुआ, अडियाके अपने कुत्रविहारीदास आदि-आदि महानुभाव, जो गद्यो और अर्थोंमें युगकी चेतना व्यक्त करते हैं; जिन-जिन भाषाओंका प्रतिनिधित्व करते हैं, भारतके जन-जनकी बोली बँगला, मराठी, गुजराती, अमरिन्दा, बुडिया, अर्द, काश्मीरी, पञ्जाबी, तेलुगु, तमिल, कन्नड, मलयालम आदि भारतीय भाषाओंका सम्पूर्ण मूल लेकर समूचे समग्र राष्ट्रकी अथवा भाषाका रूप देना चाहते हैं। 'राष्ट्रभारती' को राष्ट्रका हम जैसा स्वच्छ सुन्दर दर्पण बनाना चाहते हैं, जिसमें राष्ट्रभाषा अपना श्वन्ध अथवा सुन्दर मुखविम्ब निहार सके।

हमारा विश्वास है, अथ राष्ट्र-भाषाके विना, सारे राष्ट्रकी अथवा हो नहीं सकती, भारत अग्रत राष्ट्र बन नहीं सकता, मुन, शान्ति और शोभा राष्ट्रमें नहीं आ सकती।

जिन अकमें, श्री वानुगाव विष्णु पराटकरजीका, काका साहब गाडगोलजीका मविपत्त परिचय हम दे सके हैं, जो भारतकी विभूतियोंमेंसे हैं। अथ भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलनके अधिवेशनमें श्रेष्ठ पराटकरजीका सम्मान और माननीय काका साहब गाडगोलजीकी अथवापता,

—दोनो प्रते, देशना और हिन्दीका, महान् सम्मान करना है। राष्ट्रभक्त बाबू श्रीप्रनाशजी और डॉ० पट्टाभि सीतारामय्या असि आयोजन, राष्ट्रीय-यज्ञ समारम्भने बुद्धघाटक, बुद्धोपक है। समस्त हिन्दी जगत् अनपर अपना स्नहादर सिचन करता है।

जिम महत्माने, जिस राष्ट्रपिताने हमें यह धन्य-दिवस दिया, हमें दृष्टि दी, हमारी आँखें ग्योली हम उनके ऋणसे अरुण कदापि नही हो सक्ते।

चर्चाका स्वागत :

गत सितम्बरकी 'राष्ट्रभारती' के अन्तम भाषा विज्ञानाचार्य डॉ० सिद्धस्वर वर्माजीका अत्र पत्र हमने प्रकाशित किया था। वह पत्र "साहित्यावलोकन" (साहित्य भवन लिमिटेड प्रकाश द्वारा प्रकाशित पुस्तक) के लेखक श्री विनयमोहन शर्माको लिखा गया था। वह पत्र हमारे पास श्री सिद्धस्वरजी द्वारा दिल्लीसे सीध ही प्रकाशनार्थ प्राप्त हुआ था। अन्तम साहित्य सम्बन्धी कुछ प्रश्न अुठाने गये हैं, जिनपर पाठवाने मतका हम सहर्ष स्वागत करेगे।

स्पष्टीकरण :

श्री अनिलकुमार 'साहित्य रत्न' ने अुक्त अवर्षमें प्रकाशित सम्पादकीयमें ऋषि दयानन्द सरस्वतीके सम्बन्धमें लिखी हुआ पत्रित्री ओर हमारा ध्यान खीचा है। स्पष्टीकरण यही, नि ऋषिना जन्म गुजरात सीराष्ट्रके अेक छोटेसे देहान टकारा नामक गावमें हुआ था। अिललिअे वे जन्मना गुजराती, मातृभाषा अुनकी गुजराती, देश गुजरात, कर्मभूमि यो अुनकी सारा भारत ही, किन्तु पञ्जाब और अुत्तर प्रदेश तो विषय रूप में।

ह० श०

अंग्रेजीका मोह :

अभी पटनामें भारतीय हिन्दी-परिपक्के अधिवेशनमें दिये गये अपने अध्यक्षीय भाषणमें अुत्तर प्रदेशके राज्यपाल साहित्य वाचस्पति श्री कन्हैयालाल मा मुन्शीने अंग्रेजीको अति शीघ्रतासे दूर करनेकी प्रवृत्तिके विरुद्ध चेतावनी दी है। अुनका कहना है कि अिससे भाषा सम्बन्धी प्रान्तीय भावनाओको अुत्तेजन मिलेगा, हमारी राष्ट्रीय भावनाअें दुबल होगी और विज्ञान आदि विषयोका शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करनेमें असुविधाअें तथा अडचनें पंदा होंगी। अिसका अर्थ यह नही कि वे हिन्दीका प्रचार नही चाहते। वे कहते हैं कि हिन्दीका प्रचार अुत्साहपूर्वक किया जाअे, साहित्य तथा अुसकी शास्त्रीय ग्रथ समृद्धि बढ़ायी जाअे और अिसके लिये जितना भी बन पडे, प्रयत्न किया जाअ, परन्तु अंग्रेजीको निकाल बाहर करनेकी बात करना अुपयुक्त नही।

अंग्रेजीके पत्रमें श्री मुन्शीजीका अिस तरहका कथन कोअी नयी बात नही है, परन्तु अिस समय अुन्होंने जिन जोरदार शब्दोंमें यह कहा है, अुससे अुनका यह विचार बड़ी चर्चाका विषय बन गया है। यह स्वाभाविक है कि अुनका अिस तरह अंग्रेजीका पत्र लेना, किसी भी राष्ट्रभाषा-हिन्दीके प्रेमीको अखरेगा। यह नही, नि अुनकी दलीलोमें कुछ तथ्य नही, बहूत कुछ तथ्य है। अंग्रेजी त्रिटिश साम्राज्यकी भाषा थी और वह साम्राज्यकी भाषाके रूपमें ही हिन्दपर लादी गयी थी। अिसलिअे जन्म हम यह कहते हैं कि भारतके स्वतन्त्र हो जानेके बाद, अब जहाँ पहले अंग्रेजी चलती थी, वहाँ राष्ट्रभाषा हिन्दी चलनी चाहिय, पहले हाअीस्कूल तथा बालेजोमें अंग्रेजीमें पढ़ाअी होती थी, तो अब हिन्दीमें होनी चाहिये,

अदालत तथा कचहरियोमे भी अँग्रेजीका स्थान हिन्दीको मिले, तो असका परिणाम यह होता है कि लोग अँग्रेजीके साथ जिस प्रकार साम्राज्यवादका सम्बन्ध जोडा करते थे, उसी प्रकार हिन्दीके साथ भी साम्राज्यवादका सम्बन्ध जोडने लगते हैं। अिससे हिन्दीको हानि पहुँचनेकी सम्भावना है।

प्रान्तीय भाषाओंके साहित्यिको तथा राजनीतिक पुरुषोको अपनी-अपनी भाषाओंको समृद्ध बनानेका और अुन्हे अँचा-ने-अँचे पद दिलानेका मोह हो, तो अुसे हम अनुचित नहीं कहेगे। अिन लोगोको भय है कि यदि सब स्थानोपर हिन्दी ही का अुपयोग होने लगा तो अुनकी मातृभाषाको अुचित स्थान नहीं प्राप्त हो सकेगा और वह समृद्ध न बन सकेगी। अिस भयके कारण भाषाकीय प्रान्तीय भावनाअे जोर पकडती जा रही है, जो हमारी अेक राष्ट्रीयताके लिअे बडी ही खतरनाक चीज है, अिसमें सदेह नहीं।

हिन्दी अँग्रेजीकी तरह अितनी समृद्ध भी नहीं कि अुसके द्वारा सभी प्रकारके विषयोका सम्पूर्ण अध्ययन किया या कराया जा सके। अिसके लिअे हमें किसी विदेशी भाषाकी सहायता लेनी ही पडेगी और क्योंकि हमारे शिष्यपत वर्गकी शिक्षा अवतक अँग्रेजीमें हुअी है, अिसलिअे अँग्रेजी ही हमारे लिअे विशेष अुपयोगी हो सकती है—यह बात भी निर्विवाद मानी जाअेगी।

हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि हम अेक मत्रातिवालयमें हैं। सत्रातिवालयमें अैसी अनेक षठिनाश्रियाँ और ममस्याअें अुपस्थित होती हैं, जिनका मुल्लज्ञाना बठिन ही नहीं, अमम्भव प्रतीत होता है। कभी तो अैसा लगता है कि अुन्हे जितना मुल्लज्ञानेन प्रयत्न किया जाअेगा, वे अुतनी ही अधिक अुल्लक्षने पँदा बरेगी। श्री मुन्गीजीका

यह सुझाव अवश्य स्वागत करने योग्य है कि हमें हिन्दीके प्रचारपर, अुसको समृद्ध बनानेपर ही अधिक जोर देना चाहिये। किसी भी रचनात्मक कार्य प्रवृत्तिमें 'यह नहीं करना चाहिये' कहनेके बदले 'यह करना चाहिये', कहना ही अधिक अुपयोगी होता है। अुससे कार्य करनेकी प्रेरणा मिलती है और नाहक विरोध नहीं पँदा होता।

परन्तु आजकल बार-बार अँग्रेजीकी प्रशसा सुननेको मिलती है और मनमें सदेह होता है। श्री मुन्गीजीके भाषणने भी अिसी प्रकारका सदेह पँदा किया है। अँग्रेजीकी अितनी प्रशसा और अुसको रखनेके आग्रहके पीछे क्या भावनाअें कामकर रही हैं—अिसका अनुमान किया जा सकता है। अँग्रेजी भारतकी राष्ट्रभाषा, आतर-प्रान्तीय व्यवहारकी भाषा नहीं बन सकती—अिसे स्वीकार कर लेनेके वाद भी जब बार-बार अँग्रेजीके महत्वकी बात कही जाती है, अुसे बनाये रखनेकी चर्चा भी कुछ लोग करते हैं, तब यही शका होती है कि वे केवल अपना या अपने स्तरके लोगोका ही विचार करते हैं, राष्ट्र या राष्ट्रकी जनताका वे विचार नहीं करते। जनता, जनताकी गिबपा, जनताके हृदयके भाव—अिन सबका यदि विचार किया जाअे, तो अँग्रेजीकी प्रशसा और अुसके बनाये रखनेकी दलीले केवल सारहीन ही नहीं, विकृत दृष्टिकी भी प्रतीत होगी।

भारतीय संघके राज्योंका पुनर्निभाजन :

मद्रासमें भाषानुसार प्रान्त रचनाके प्रश्नपर भारतके प्रधान-मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरूने अपने विचार बडी स्पष्टता पूर्वक प्रजाके ममत्प रख दिये। काँग्रेसने कभी कपोंसे भाषानुसार प्रान्त रचनाके मिद्धान्तको स्वीकार किया

हुआ है। परन्तु आज इसके लिये जिस प्रकार आन्दोलन चलाया जा रहा है और अंसी पुनर्रचना बहुत जल्दी करनेपर जो जोर दिया जा रहा है, वह अवश्य चिन्ताका विषय है। श्री नेहरूने स्पष्ट कहा है— 'मेरे केवल भाषानुवृत्त प्रान्तोंका ही विचार करनेके लिये तैयार नहीं हूँ। लेकिन मैं इसी वक्त मारे भारतका विचार करनेके लिये तैयार हूँ— सारी बातोंको ध्यानमें रखकर और भाषा सम्बन्धी सांस्कृतिक और अन्य बातोंको दृष्टिमें रखकर विभिन्न राज्योंका पुनर्गठन कैसे किया जाये—यह सोचना है, जिससे कमीशन भारतके लोगोंके सामने पूरी तमवीर पेश कर सके।"

'भाषानुसार प्रान्तरचनाका सिद्धान्त हमारी दृष्टिको सन्तुष्ट बना देता है और हमें भारतके प्रति कम तथा अपने राज्यों या प्रान्तोंके प्रति अधिक सजग बनाता है। अगर इसका यही नतीजा हो, तो यह बुरा नतीजा है। हम सबसे पहले और सबसे ज्यादा ध्यान सम्पूर्ण राष्ट्रका होना चाहिये। इसे ही राष्ट्रीय चेतना कहते हैं, वरना आम लोग सन्तुष्ट और प्रान्तीय दृष्टिवाले बन जाते हैं। भले हम भारतके विभी भी हिस्सेसे बयो न हो, जब हम भारतके बाहर जाते हैं, तब हममें भारतका ख्याल ही ज्यादा मजबूत होता है। लेकिन अगर आप अपने राज्य, जिले या शहरका विचार करते रहे तो देशकी भावना अतनी मजबूत नहीं हो सकती। मैंने हमेशा यह महसूस किया है कि भारतकी स्वतंत्रता प्राप्त करनेके बाद दूसरी मजिल-भावना और मनो-वैज्ञानिक आधारपर इस अंकताकी सिद्धि होगी।

'मेरे भारतके लोगोंको अनेके दिमागों, आदतों या विचारोंको अके सांचिम ढालनेकी

जरा भी अच्छा नहीं रखता। अंसा करना घातक होगा। मैं चाहता हूँ कि भारतकी समृद्ध-विविधता कायम रहे और भारतका हर हिस्सा अपनी आदतों और जीवन तथा विचारोंकी विविध पद्धतियोंके अनुसार अपना विकास करे। लेकिन असे भारतीय अंकताके नकशेका खतरा ख्याल रखना चाहिये। अगर हम अके दृष्टिमें अके महत्वपूर्ण समस्यापर विचार नहीं करेंगे, तो अके मजबूत राष्ट्रके रूपमें आगे नहीं बढ़ सकेंगे। अके फलस्वरूप अतीतमें हमने जो बुरे दिन देखे हैं, वैसे ही फिर देखने पड़ सकते हैं।

अके से अधिक लिपि सीखो :

बम्बयीम हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके अक्सरमे भाषण करते हुअे राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र-प्रसादने कहा कि भारतीय मविधानमें अके लिपि-नागरी लिपिको स्वीकार किया है, फिर भी अर्द्ध लिपि सीख ली जाये, तो अच्छा है और दक्षिण भारतकी भी को सी अके लिपि सीख लेनी चाहिये।

आज हमारे यहाँ अनेक लिपियाँ प्रचलित हैं, अकेको स्वीकार करना होगा। बलपूर्वक हम किसी लिपिको हटा भी नहीं सकते हैं। अंमी परिस्थितिमें जो लोग जनतामें काम करना चाहते हैं, अन्हे नागरीके अलावा दूसरी लिपियाँ भी सीखनी पड़ेंगी और जो लोग स्वेच्छासे अंसा करेंगे, वे अन्यवादके शत्रु होंगे। परन्तु प्रश्न यह है कि सविधानके केवल नागरी लिपि स्वीकार की गयी है तो असीका सर्वत्र प्रचार कयो न किया जाये ? कुछ समय पहले प० जवाहरलाल नेहरूने भी, आसाममें अन्हे जो अनुभव हुआ, अुमपरसे यह कहा था कि भाषाके विभिन्न प्रदेशोंकी विभिन्न रहनेपर भी, यदि अुन सबकी अके लिपि हो, वे अके नागरी लिपिमें लिखी जाये, तो बहुत

सुविधा होगी। यदि अंसा हो तो जिनका अक्षर परिणाम यह भी होगा कि विभिन्न भाषा भाषी जनताका अक्षर द्मरेम मम्पकं बटेना और वह अक्षर द्मरेके अति निकट आ सकेगी। जिस दिशामें कुछ प्रयत्न भी हो रहे हैं, लेकिन ये प्रयत्न बहुत ही नगण्य हैं। जिनके लिये मगठिन और बड़े पैमानेपर प्रयत्न करनेकी आवश्यकता है। परन्तु ज्वनत्र सभी प्रान्तके लोग अपनी-अपनी लिपिका माह छोड़कर केवल भागरी लिपिको अपनाके लिये तैयार नही होने, तबतक हमे दूसरी लिपियाके सोखनेका कुछ-न-कुछ प्रयत्न करना ही होगा—जिनमें मन्देह नही।

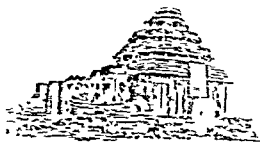
हिन्दी-भवन-दिल्ली :

यह हृषंका विषय है कि दिल्लीमें हिन्दी-भवनकी स्थापना हो गयी। हम अजुनका स्वागत करते हैं। कओ दिनामि जिसको चर्चा हो रही थी, परन्तु अब अजुनकी नीव पड गयी और वह नीव डाली गयी है भारतके केन्द्रीय-नगर दिल्लीमें। दिल्लीमें हिन्दीके विद्वानो तथा प्रेमियोकी कमी नही और दिन दिन पार्लामेंट या विधान-महाली बैठक होती है, अजुन समय वहाँ भारतके अच्छे-ने-अच्छे हिन्दीके विद्वान तथा हिन्दी प्रेमियोकी अजुमिन्ति रहती है। हिन्दीका प्रचार और अजुनको ममूद बनानेके लिये माहित्य-निर्माण-कार्य दोनो प्रकारके कार्य आज अपन्य आवश्यक है।

हिन्दी-भवन द्वारा ये दोनो मुचार रूपसे सपादि हो सकेगे। हम आगा करते हैं कि हिन्दी-भवन जिन दोनो प्रकारके कार्योंमें मार्गदर्शकता काम करेगी। प्रचारका कार्य तो कुछ सम्पामें अच्छी तरहसे कर ही रही है। परन्तु सबकी अपनी-अपनी मर्यादा होती है। प्रचार-कार्य अंसा कार्य है, जिनसे छोटे-बड़े सब योग दे सकते हैं, परन्तु अजुनमें काम लेनेवाला कौजी हो। १५ वर्षों केन्द्रीय मरकारके नव विभागोंमें हिन्दीको अक्षर अक्षिन् स्थान दिखाना हो, तो दिल्लीमें ही बहुत काम है। ३५००० में अधिक भाग्य मरकारके हिन्दीतर-भाषी कर्मचारी हैं, जिन्हें हिन्दी सिखानेकी आवश्यकता है। हिन्दी-भवन जिन दिशामें बहुत कुछ कर सकता है।

परन्तु प्रचार कार्यसे वही अधिक महत्वका कार्य है 'साहित्य-निर्माणका' और यह कार्य अंसा है कि अजुने सब लोग कर भी नही सकते। जिन कार्यको तो हिन्दीके गण्यमान्य साहित्यिक हो कर सकते हैं और हिन्दी-भवनको तो लेने ही लोगोका विगेष सहयोग मिलेगा। यह भी कह सकते हैं कि यह मन्षा लेने लोगोकी ही होगी। यदि वे नव राष्ट्रके नामपर, हिन्दी तथा हिन्दीके समृद्धिके नामपर कुछ अपने धनका तथा प्रतिभा का दान करे, जो यह सब कर्जे जापानासे नकल हो सकता है।

— मी० म०



भारतम विद्यमानम्-जैकट महिन मखिन ।
 "आजकी परिस्थितिक आरुक्खन राष्ट्र निर्माण
 सरी बंध देव टाम विचाराम भरे स्वामीजी द्वारा
 भारतमें दिखे गये भावयुक्त स्फुटिप्रद भाषण ।"

दिवेकानन्दजीके मगमें-आरुपन जैकटमह ५।
 'स्वामीजीक आध्यात्मिक, राष्ट्रीय कलाविषयक
 तथा भक्ति मय सौ मभाषणारा 'रोचक' महान
 शिक्षाप्रद तथा पथप्रदर्शक मयह ।"

पत्रावली-दो भागोंमें, प्रथम भागका मू० २२-
 'स्वामीजीके भक्ति सम्पन्न पत्राका मन्त्रन ।"

देववाणी-मखिन, २२) अमृतमुन्य आध्या
 त्मिक अन्त प्रेरणात्मक भरे हुअे अरुपदम ।" भक्तिदाया
 विचार ॥२), भाग्यनीय नारी ॥) व्यावहारिक
 जीवनमें ददात १२) मरे गुददव ॥२), निवृत्त-
 मन्दजीकी कथायें १), कवितापत्री ॥२)

गोसायनत्व-स्वामी विवेकानन्दजीके गुरुभाओ
 स्वामी सारदानन्द ऋत, मु दर जैकट महिन २२)

विवेकानन्द-चरित-हिंदीमें स्वामीजीकी अक-
 मात्र प्रामाणिक विस्तृत जीवनी जायक जैकट ६)

विस्तृत सूचीपत्रके तिसरे लिखिरे श्रीरामरुण आश्रम धन्तोत्री (रा) नामपुर-१, (म० २०)

श्रीरामरुणशोधालय- विस्तृत जीवनी दा
 भागामें, महात्मा गांधी मूमिका महिन प्रत्येक
 का ५)

श्रीरामरुणशोधालय-तीन भागामें, समाजकी
 प्राय सभी प्रमुख भाषाशामें प्रकाशित सजिदर,
 जैकट महिन प्र भा ६), द्वि भा, ६), तृ भा ७)

स्वामीजीकी लोकप्रिय पुस्तके

मये प्रकाशन-जाति, सफुति और समाजवाद
 १) चिन्तनीय बात १), विविध प्रमा १२)

योग वर-ज्ञानयोग २) भक्तियोग १२),
 राजयोग १२) उभयोग १॥२), प्रेमदाग १२),

हिन्दू धर्म सवधो-हिन्दू धर्म १॥), धर्मरहस्य
 १), उभविज्ञान १॥२), हिन्दू धर्मक पथममें ॥२),

सिखाया त्रयुता ॥२), आ धानुमुनि तथा अमक
 मार्ग १।)

भारत वर-हमारा भारत ॥), वर्तमान भारत
 ॥), स्वाधीन भारत जय हो १२), प्राच्य और

गायपाल्य १।)

आलोचनाके तृतीय वर्षका पहला अंक
 "आलोचना अंक"

के नामसे लगभग २५० पृष्ठोंका विशेष अंक होगा । अिम अन्का मूल्य ५)
 मात्र होगा, लेखित वार्षिक ग्राहकोंको यह अंक साधारण मूल्यमें ही मिलेगा ।

अिम अन्कमें दार्शनिक-चिन्तन और समीक्षा-पद्धतियोंके मूलाधार, मनोविज्ञान, सौन्दर्य-
 शास्त्र और साहित्य शास्त्र आदिका समीक्षा-पद्धतिपर प्रभाव, यूनानी, यूरोपीय
 मास्सवादी, चीनी, ओरगनी अत्यादिके साहित्य-शास्त्रोंका भारतीय साहित्यपर प्रभाव,
 भारतीय समीक्षा व साहित्य शास्त्रके आधार, आदर्श व तमिक विकास, हिन्दीकी मध्य-
 कालीन आचार्य-परम्परा, द्विवेदा-यसके समीक्षणत्मक मानदण्ड, शुभलक्ष्मी परम्परा,
 वायु गुलाबराय, आचार्य हजारीप्रसाद, विभिन्न "वादों"की समीक्षात्मक प्रवृत्तिया,
 अिन्दिष्ट, रिचर्ड ज. मानन, वाउवेल और अरविन्द, रमजान्, भविष्यत्-साहित्य-
 दर्शन, आदि आदि विषयोंपर अध्ययन और अनुगुलीलतपूर्ण निरन्वीका मयह रहेगा ।

सम्पादक-समिति.— ३० धर्मवीर भारती, ३० रघुवत्, ३० वनेतर वमी, श्री विजयेश
 नारायण साहू । सरकारी सम्पादक श्री धर्मचन्द्र मुयन ।

वार्षिक मूल्य १२) मात्र मनीआर्डर द्वारा भेजिये

प्रकाशक:— राजकमल प्रकाशन, १ कैज बाजार, दिल्ली

नयी धारा

याद रखिये पत्रिकाके लिखे } १ अेरु निदिघत अुददेइय चाहिये !
 } २ अुसता अपना व्यक्तित्व चाहिये !

अैसी ही अेक मामिक पत्रिका है। कहानियाँ, कविताअें, शब्द चित्र, मस्मरण, नाटक, आलोचना, निबन्ध आदि। हिन्दीमें नयी धाराके प्रतीक श्री रामकृष्ण बेनीपुरी जिनका सम्पादन कर रहे हैं। जिनकी सहायताके लिखे साहित्य-महारथियोका अेक सम्पादक-मण्डल सगठित किया गया है। प्रादेशिक सरकारोके शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत।

नयी धाराके पुराने प्राप्य अक आपो कोमतमें प्राप्त होंगे। पोस्टेज फ्री। रगमंच अककी थोडोथी प्रतिर्या शेष हैं। ग्राहक शीघ्रता करें।

डिमाथी आठ पेजीके १०० पृष्ठ, पन्की जिल्द, आकर्षक कवर, सचित्र, सुसज्जित।
 अेक अंक १) रु.] [वार्षिक १०) रु.

पता:— प्रबंधक, नयी धारा, अशोक प्रेस, पटना ६

साहित्यिक-त्रैमासिक-पत्रिका

“राष्ट्रवीणा”

संपादक:— जेठालाल जोषी

विद्वानोंने प्रथमा प्राप्त राष्ट्रवीणामें—

विद्वानोके चितनप्रधान लेख अेव गुजरातीके साहित्यिक, मास्त्रिक, कला विषयक लेख, कविताअें, प्रवास वचन परीक्षयोपयोग लेख, गुजराती, मगडी, बगाली तथा हिन्दीकी समानार्थी शब्दावली आदि सामग्री, चपनिका, सन्धुति खोन, साहित्य समीक्षा, गुजरात, सोराष्ट्र और कच्छके राष्ट्रनागा प्रचार समाचार आदि कअो स्तम प्रकाशित होंने है।

वार्षिक मूल्य ४)

अेक प्रति १)

वर्धा समितिके माथिय प्रचारको और केन्द्र-व्यवस्थापकोको पत्रिका आधे मूल्यमें भेजी जानी है।

— व्यवस्थापक 'राष्ट्रवीणा'

गुजरात प्रा ग मा प्र समिति काण्पुर, सजुरीकी पारु, अहमदाबाद।

जिस घरमे आरोग्य प्रकाश नहीं, वहाँ सुख गान्ति कहाँ ?

आरोग्य स्वच्छता आर चिन्मिता सर्वश्रेष्ठ प्र-२

भारत प्रसिद्ध श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेडके अध्यक्ष वरदराज पं० रामनाथपण्डित
वयसाम्प्रीन ५६ वर्ष तथा महान्तरे मृत्यु शि शरीरको लक्षण ३ प्रकारका अर्क-अर्क वाक्य हजारों
स्वयंका नाम देता है। व्यायाम ब्रह्मचर्य भाजन सन्धार अतम विचार आदि पृथाद् विषयाका
पढकर और तदनन्तर चरकर सत्त श्रम कर रहनवाता रोगी विना प्यास नीराग (तन्मन्त) हो
जाता है। यवन अुत्तगद्म शरीरमे पदात् नवात् यमा रागास अपति कारण निम्न रागके
उत्तरण चिन्मिता पस्थाप य आदि वशी जो मन्त भाषाम लिख ह जो पत्तर विद्वानस लख साधा
रण पत् लिख दोनो गमान भागम लाभ अता मन्त ह जिममे देवादाक जा नरम लिख गय ह व
बहुत बार परोक्षित नभी भी कत् न हानवाठ जाग शास्त्रानमोहित ह गत्त ह या दान सब
जगह जिस पुस्तकके घरमे रहतम रोगीका नकाठ लाभ प्नुत्ताया जा सकता ह। औषध तयार
करनका विमान ता जिम पुस्तकमे गूठ ह उदाकि लखक जिम विषय निणवामक जाना ह। जिस
आठ मन्तरणाम ७१००० प्रतिघा उपकर शिर्षक की ह यत् नवा मन्तरण १५ हजारका अभी
रूप रहा है। अिगरे जिमका जोर प्रियता और श्रयामित स्पष्ट माउम हाकी है। हिन्दी अमी
अुत्तम पुस्तक दूसरी नहीं ह यह बड़ा जाय ता अनचिद न हागा प्रचारकी दृष्टिमे मय भी बहुत
कम रया गया है। २१५ पन्नी पुस्तकका मय सिफ १।।) ताफ नक १-) हमारी चार
निमाणगात्रा १० विनी के १५०० अजनिवान प्र यक्य ररीत्तपर ताक मन नहा ल्यागा।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड, बनरसा पटना धामी नागपुर।

-: अद्यम :-

हिन्दा आर मराठा भाषामें प्रकाशित होता ह।

प्रतिमास १५ वी ताराखरो पलिय।

अद्यममें निम्न विषयाके लय छपने ह —

तमनाथक अद्योगधराना जानकारी अनात नया मजोरा खनी व रोगीका निवारण
पणपालन दुःखयवगाय व श्रामोद्योग सबी उष विद्याविद्याक लिख वज्ञानिक व अन्य जानकारा
आराध्य घरतू औपयिया मन्वी लेख विदुस्वानके वज्ञानिक और औद्योगिक उपनकी अपवागी
जानकारी कृषि औद्योगिक और व्यापारिक वपनम काम परतनवाके तागाकी मुतागत नया परिचय।

अद्यमके विशेष स्तम

मन्त्राजाके विभ अपववन रचितर खाद्यपण्य वनानकी विधि धरेठ मित वयिना
अद्यमना पत्र यवहाग र्वाज्ञपूण पत्तर आर्विक तथा औद्योगिक परिवनन जिनामु जयन व्यापारिक
हलचलोकी मामिन ममाओचना निधोपवागी वस्तुन स्वय मधार व जिय।

वारिक व २१ ७ र और प्रति अक १२ आना

पता — 'अद्यम' मामिक वमपठ, नागपुर (म प्र)

‘मेघदूत’ के महत्वपूर्ण प्रकाशनके बाद ‘प्रेरणा’ का छठा-सातवाँ अंक

: प्रेमचन्दके पात्र :

विशेषांक होगा

- ★ इस अंकमें प्रेमचन्दके अपुन्यासों और कहानियोंके सभी महत्वपूर्ण पात्रोंपर अधिकारपूर्ण लेख होंगे। ★ विशेषांकका मूल्य लगभग ४) होगा।
- ★ प्रेरणाके स्थायी ग्राहकोंके लिये वही मूल्य रहेगा। अग्रिम आर्डर भेजिये।

शीघ्र ही वार्षिक ग्राहक बनकर इस सुविधाका लाभ उठावें। वा. १४) रु.

सम्पादक : कोमल कोठारी,
सोजनीगेट, जोधपुर (राजस्थान)

पुस्तक-परिचय

अुत्कल साहित्य और साहित्यिकोंसे परिचय प्राप्त करना चाहते हैं तो निम्नलिखित पुस्तकें पढ़िये—

१—प्रतिभा—लेखक डा. श्री हरेकृष्ण महताव । प्रतिभा जो अुत्कल विश्वविद्यालयकी वी. अे परीक्षाके पाठ्यक्रममें है, अुत्कल यह हिन्दी अनुवाद है।

२—अुत्कल माणि पं० गोपबन्धु दास—पं० गोपबन्धु दासकी जीवनी है। मूल अुत्कल भाषाके लेखक पं० लिंगराज मिश्र अेम पी० हैं।

३—धर्मपद—पं० अुत्कलमाणि गोपबन्धु दासका लिखित अुत्कल भाषाका गण्ड काव्य है।

४—अुत्कल साहित्यकी श्रेष्ठ कहानियाँ—अिसमें अुत्कल भाषाके प्रसिद्ध भाठ लेखकोंकी कहानियाँ मसहीत हैं।

५—राष्ट्रभाषा वन्धु और राष्ट्रभाषा सुवोधिनी—

अुत्कल भाषा सीखनेमें महापक

६—क्या यह सुनी कहानी—लेखक पं० रामेश्वर दयालजी दुवे हैं।

प्रकाशक—अुत्कल प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, कटक—१

हिन्दीका स्वस्थ, सात्विक एवं सस्ता मासिक पत्र

‘जीवन-साहित्य’

वार्षिक शुल्क केवल ४)

चाह तो पहले अंक कांड भेजकर नमूना मगानकर देख ले।

जुलाबी और जनररीसे ग्राहक बनाये जाते हैं।

पता:-- सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली

नव निर्माण

[सम्पादक - नेमिचन्द्र जैन 'भावुक']

+ साहित्य शिष्या, संस्कृति और कलाका सगम + राजनीति विज्ञान + तारोकी छायामें
+ चना जोर गरम + अमनक आलोकमें + आप भी कहें हम भी कहे + कसौटीपर + ये धूल
भरे हीरे आदि स्थायी स्तम्भोंसे युक्त अपनी ही विशेषताओंसे प्रेरित प्रभावित नयी पीढ़ीका
साच्चि प्रमासिक अंक प्रति १) विधापाक युवा वा ४)

कुमार साहित्य परिषद, जोधपुर

विशेष.— मार्च अंककी प्रतिधा अप्राप्य जूनकी प्राप्य। निशुल्क प्रति भेजनमें असमय।

मद्रास तथा पंजाब सरकार द्वारा

सम्मान शिष्या मस्थाओंके लिये स्वीकृत

देशव्यु पुस्तकालय मद्रासका प्रथम साहित्यिक
मासिक-पत्र

देशबन्धु

प्रधान स रूपादत्त वाजपेयी, अम अ

सम्पादक ज्यो० राधेश्याम द्विवेदी

सम्पादक वज्रनाथ दाणी

वार्षिक मूल्य ४) * अंक प्रति १२)

देशबन्धु अगस्त ५३ से अपने द्वितीय वर्षमें
प्रवेश कर चुका है अमकी खुरीमें ३० सितम्बर-
तक करल ३) १० में वार्षिक ग्राहक बनाये जा
रहे हैं और अमका प्रथम अंक अज सस्टति
अंक निकल रहा है जो मद्रासीय बन्तु होगी।

पत्र विक्री [अज्ञेनी] तथा विनापक लिये
भाज ही लिये।

पता—व्यवस्थापक, “देशबन्धु”

मथुरा (यू० पी०)

सुन्दर टाइप और कार्डर

अस कारखानेके सुन्दर और मज-
बूत टाइपको अनेक छापखानेवाले पसन्द
करते हैं। हमारे यहाँ अंग्रेजी, मराठी,
गुजराती तथा कानडी टाइप और अनेक
प्रकारके कार्डर तथा अिलेक्ट्रो ब्लान्स हमेशा
तैयार मिलते हैं।

असी प्रकार हमारे यहाँ मोनो सुपर
वास्टरसे तैयार किये हुअे १२ पाइंट
हिन्दी और मराठी टाइप भी तैयार हैं।
वेटलाग जरूर मंगावे।

पता—मैनेजर, निर्णय सागर प्रेस,
बम्बयी नं० २

रानी

आपके मनोरंजनके लिये

नाना प्रकारके सचित्र लेख, कहानियां, छाया लोक और आलोचनायें आदि-आदि। वर्षमें हान्दिकाक और दीपावला-अथ मुपन।

रानीका वार्षिक चन्दा केवल चार रुपये है। रानी १५ वर्षसे हिन्दी पाठकोको निरन्तर नवीन पाठ्य-सामग्री देती आ रही है।

“रानी” कार्यालय,
१२१ चित्तरंजन अवेन्यू,
कलकत्ता ७

महाराष्ट्र रा.भा प्रचार समिति, पुणेके सहायकमानमें राष्ट्रभाषा प्रचारकों अंत्र परीक्षार्थियोंके सुपयोगकी हिन्दीकी अभिनव साहित्यिक मासिक पत्रिका

“जयभारती”

सम्पादक अंत्र प्रकाशक — श्री पं. सु. टांगरे

प्रारम्भिकने लेखक अथवा परीक्षाआगतकी परीक्षायोगी मामरी, माहिज, परपरा, मस्त्रुति विषयक लेख, अथवा समाधान, माहिज परिचय, मयुगकल्पन, हिन्दी जगत, परीक्षा विषयक सूचनाअंत्र, आवश्यक जानकारी, रहांतर कौन क्या पढे ? आदि मासिकपत्रमें अथ समपोचित रचनाआ और विरोधनाअंत्रमें भरपुर।

मनिआर्डरमें वार्षिक मूल्य १) अंक न्यया मित्रराकट नीत्र प्राहक वन जाअिये।

पता.—८९६ मदानिय, पा वा न ५५८, पुणे २.

जल्दी ही आर्डर दीजिये

राष्ट्रभाषा-डायरी

१९५४

असमें राष्ट्रभाषा प्रचार समितिको परीक्षा आदि प्रवृत्तियोंके सम्बन्धमें विभिन्न जानकारीयेंके साथ दैनिक व्यवहारमें आनेवाली भुपयोगी बातें संप्रदीत है।

राष्ट्रभाषा प्रेमी प्रचारक वर्ग छात्र वर्ग तथा सभी बोटिके लोगोंके लिये यह डायरी बहुत ही भुपयोगी होगी।

सुन्दर कागज, आकर्षक छपाओ तथा कपडोंकी पक्की ब्रिन्द।

साअिन—४" + ६"
लागत मूल्य—१) अंक रुपया, डाक खर्च अलग।

प्रकाशक—राष्ट्रभाषा प्रचार समिति. धर्मा

गुजराती भाषाका निराला साप्ताहिक-पत्र

निर्माण

[सम्पादक : हरिलाल पंत्या]

समस्त भारतकी नैवर्णिक, मास्त्रुतिव और प्रजाजीवनके नव निमाणकी प्रवृत्तियोंका ग्यातिधर।

निर्माणमें आप देखेंगे :—

आनंद, अस्नाह और चेतनाप्रद लेख, कहानियां अथवा अपने ही डगते चुने हुअे समाचार। राष्ट्रभाषान सम्बन्धित सभी प्रवृत्तियोंका विवरण और त्रियों भी वादन पर रहकर तन्म्य और स्पष्ट मन्थ प्रकट करना निर्माणका ध्येय है।

निमाणका अन्युत्तम माधन।

आज ही पत्र लिखकर नमूनायें प्रति भगवाअिये।

वार्षिक मूल्य ५) 'निर्माण' कार्यालय छ. माही ३) स्वस्तिक प्रिन्टरी अंक प्रति दो आना धर्मन्द्र मार्ग

राजकोट (भीराष्ट्र)

❀ सुपमा ❀

सम्पादन कुन्लराय मोहंर

या मासिकाचीं त्रैशिष्ठ्ये—

★ मुदर शुद्ध्या ★ नामान्त उक्वाच ल्पिणाण ★ जीवन कण
माहि य अि यादि विपयानर जुपयुक्त मजदूर ★ या शिवाय चताहारा चित्र

नियमित वाचण्यामाठा आजच वगणी पाठवन ग्राहक हाण फायद्याच आहे

रापिर् पर्मणी ६ रुप्ये रिस्कोट अमाम जाठ आणे

सुपमा : पराग विल्डिगज, धरमपेठ, नागपुर (म प्र)

“दक्षिण भारत”

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाका
साह्यतिर मासिक पत्र

अस पत्रके द्वारा -दक्षिणती प्राचान और
आधुनिक मरुति मर्या जानकारा दक्षिणत
माहि य राजनीति निववा कण रचनामर
कोय उपचाने विवरण और अनते अ नायकारा
परिचय दक्षिणती तेग तमिड तन्द
मळयातम भाषाकार और अतरर विद्वानाका
माहि य मूजनता परिचय पात्रिय

वर्षिक चदार् ६०० अधवार्षिक ३८०

अक प्रति ६०१००

अस पतेपर लिपे

यउस्थापन पत्रिका त्रिभाग

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा

ध्यानरायनगर मद्रास १७

गात्रध नन्द करनंके लिअे

३१ करोड हिन्दुओनी माग !
यातिनारी विचारोंने माथ ।

❀ गोरकपण ❀

मासिक पत्रमें पडिये

गासवामें भाग तेनक त्रिअ आज ही

१। र वार्षिक भजकर ग्राहक बनिय ।

नमूनावके लिअ पाच आनता टिकट अवश्य
भजिय । धार्मिक सभ्याओको मफल ।

गारकपा प्रचारक त्रिअ हर प्रचारकी
सहायता तथा दान नीचने पतेपर भजिय ।

व्यउस्थापन — गोरकपण साहि य मन्डिर
रामनगर ननारम (म प्र)

आपके, आपके परिवार के प्रत्येक सदस्य के, प्रत्येक शिक्षा-संस्था तथा पुस्तकालय के लिये उपयोगी

हिन्दीका अपने ढंगका पहला पत्र

वार्षिक मूल्य १०)
पृष्ठ संख्या १२५

गुलदस्ता

(हिन्दी डाबिजैस्ट)
३९३८ पीपलमंडी. आगरा

नमूने की प्रति
अंक रपया

अजन्ता

सम्पादक—

श्री बशीर विद्यालंकार श्री धोराम शर्मा

प्रकाशक — हैदराबाद राज्य हिन्दी
प्रचार मभा, हैदराबाद टकसिपाण

१. अक्षर कोटिक। साहित्य, २. सुन्दर और
स्वच्छ छपाई ३. कलापूर्ण चित्र

वार्षिक मूल्य ९ रुपया

किसी भी माससे ग्राहक बना
जा सकता है।

“नया पथ”

हिन्दीकी नयी साहित्यिक चेतनाका
प्रतिनिधि मासिक पत्र।

विशेष स्तम्भ— सांस्कृतिक लिपिगणियों, व्यंग्य
और प्रहसन, आजकी राजनीति साहित्यवादकी
पाठशाला, आर्थिक लेखाजोबा, कथा-कहानी और
कविताओं, विज्ञान और हम, मिनेमा-जगन, हमारी
संस्कृति, पुस्तक परिचय आदि।

सम्पादक:— श्री शिव वर्मा
वार्षिक चन्द्रा ६ रु. : छ. माही ३ रु.
अंकप्रतिका मू. ८ आना पृष्ठ संख्या ४८
अंजेली लनेवालाका २५% वसुीगन
और डाकसंचं मुफ्त।

“नया पथ” कार्यालय,
३१४ बल्दभभाओ पटेल रोड, बम्बयी

हिन्दीका स्वतंत्र मासिक

“नया समाज”

संचालक: नया समाज-ट्रस्ट ★ संपादक: मोहनसिंह सेंगर
वार्षिक चन्द्रा ८) : अंक प्रति 11) : विशेषांश १०) वार्षिक

आप यदि ग्राहक नहीं है तो आज ही बन जाइये। यदि है तो अपने विप्रमियाक।
भा बनाइये। यदि किसी कारण आप ग्राहक नहीं बन सकन तो नया
कोडिये कि नया समाज आपक पडावके पुस्तकालयमें मंगाया जाय।

आज ही नमूनेके लिडे लिखिये:—

एक रुपयाके 'नया समाज', ३३, नेताजी सुभाष रोड, बनकला-१

कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन
भारतीय वाङ्मय भाग १, २, ३.

प्रथम भागम सङ्गन पाकि प्राकृत अपभ्रंश तथा द्वितीय भागमें हिन्दी, अर्द्ध और तृतीय भागमें उगगा कुट्टिप्रा अममिया भाषाशास्त्र सविप्ल अत्रिनिहास सप्रहीन हैं। मूल्य भाग १ तथा ३ प्रत्येक २) रु भाग दूसरा १॥)

फ्रेंच स्वयं शिक्पक

लेखक— डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार

जिम पुस्तककी महायत्नामे विद्यार्थी महत्वहीमें फ्रेंच भाषाका ज्ञान प्राप्त कर सकन हैं। मूल्य १)

मराठीका वर्णनात्मक व्याकरण

लेखक.— प्रो. न. चि. जोगळेकर, धेम दे

मराठी भाषाकी बृ पति, विनाम तथा मराठी साहित्यिक सविप्ल अत्रिनिहासके साथ साथ अमुके व्याकरणका राचक शैलीमें समझाया गया है। मूल्य २।)

संक्षिप्त राष्ट्रभाषा कोश

(सम्पादक— महापंडित राहुल सांकृत्यायन)

शब्दसंख्या— २५००० [मूल्य ५] डाक व्यय अलग]

राष्ट्रभाषा प्रेमियों, विद्यार्थियों, संस्था तथा सरकारी कार्यालयों अदिके लिखे यह कोश बहुत उपयोगी अर्थें संग्रहणीय है।

विशेष जानकारीके लिखे लिख—

पुस्तक-विक्री विभाग,

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर, वर्धा

राष्ट्रभारती-विज्ञापन दर

साधारण पृष्ठ	पूरा -- ४०)	प्रतिवार
"	आधा -- २५)	"
द्वितीय कवर पृष्ठ	पूरा -- १००)	"
"	आधा -- ५५)	"
तृतीय कवर पृष्ठ	पूरा -- ८०)	"
"	आधा -- ६५)	"
चतुर्थ कवर पृष्ठ	पूरा -- १२०)	"
"	आधा -- ७०)	"

राष्ट्रभारतीकी साजिज— १३"×७"

छपे पृष्ठकी साजिज— ८"×५३"

तीनसे अधिक चार विज्ञापन देनेवालोंको सुविधा दी जायगी।

‘राष्ट्रभारती’ में अपने व्यापारका विज्ञापन देकर लाभ
 अठाविये। क्योंकि यह कश्मीरसे लेकर रामेश्वरतक
 और अगन्नाथपुरीसे डारकापुरीतक
 हजारों पाठकोंके हाथोंमें पहुँचती है।



राष्ट्रभारती-अजेन्सी

१. प्रतिमान कम से-कम पाँच प्रतियां लेनेपर ही अजेन्सी दी जायगी।
२. पाँच प्रतियां लेनेपर २०) प्रतिगन कमीशन दिया जायगा।
३. छहसे अधिक प्रतियां लेनेपर २५) प्रतिगन कमीशन दिया जायगा।
४. पाँचसे अधिक प्राप्क बना देनेवालोंको भी विशेष सुविधा दी जायगी।

विशेष जानकारिके लिभे आज ही लिगिये —

श्री प्रबन्धक, “राष्ट्रभारती” पो० हिन्दीनगर (वर्धा, म. प्र.)

२. कहानी :

१ कुमार दुरजय	राहुत मातृवापन	८२०
२ अन्तारा अत (नमिऽ)	{ श्री गान्धिनन्दन अनु०-श्री रा धीरनाथन	८३२
३ प्रसन्न भूत (मथिऽ)	{ श्री प्रो हरिमोहन सा अनु०-श्रीमती माता मिऽ	८०५
४ नेगभक्त माऽश्री (मिऽ)	श्री दीनराम गर्मा	९०४

३. जेनामी :

१ परकाया (तेऽगु)	{ श्री चीफ़जिस्ट्रम पा वे राजमगार अनु०-श्री चा मूयनारायण मूर्ति	८८०
------------------	--	-----

४. कविता :

१ ओदर (वगऽ)	{ श्री बाजी नज्ज्जिस्ट्रम अनु०-श्री वऽगऽ विहारी राह्य	८०७
२ गीत	श्री गिरधर गाऽर	८९७
३ गीत	श्री नीरज	८९८
४ मोहिनी अन्तार	श्री लऽरी	८०९
५ गीत जयवे	श्री भवानी प्रसाद निवारी	९००
६ गीऽनीना पत्थर	श्री रामऽण श्रीवास्तव	९०१
७ पहाडी नऽी (राऽमीरी)	{ श्री आरिष अनु० घनऽयाम गऽी	९०२

५. ड्रेननागर :

१ तुच्छ (वगऽ)	{ श्री प्ररोध सा वाऽ अनु०-श्री म मवगाव गुऽ	९०८
---------------	---	-----

६. सम्पादनीय

९१०

वार्षिक चऽदा २) मनीआर्टऽमे

अर्धवार्षिक ३।)

ओक अऽका मूऽय १० आना

पता:—राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर, वर्धा (म० प्र०)

हम आपसे कुछ कहना चाहते हैं !

‘राष्ट्रभागी’ का तीसरा वर्ष जनवरी ५३ में ही शुरू हो चुका है। तीसरे वर्षका यह ग्यारहवाँ (नवम्बर मासका) अंक आपके हाथमें है।

‘राष्ट्रभारती’ के जिन प्रेमी ग्राहकोंका वार्षिक चन्दा जिन अंकके माप पूरा हो जाता है उनमें हमारा वृद्ध निवेदन है कि वे अपना अगले वर्षका चन्दा ६ रु मनीआर्डर द्वारा तुरन्त भेजनेकी कृपा करें। वार्षिक या छहमाही चन्दा हर हालतमें मनीआर्डर द्वारा भेजना ही ठीक होगा। जिनमें हमको और आपको सुविधा होगी। जानकी अंक समयपर मिलेगा। बी पी और रजिस्ट्री चार्जकी सहायता आप और हम दोनों बचेंगे। आशा है, जाद हमारी जिन प्रायश्चातपर जल्द ध्यान देंगे।

हमारा निवेदन यह भी है कि कल्पे-कल्पे अपने जिनो अंके-दो पड़ोसों मित्रोंकी भी सहाय अवसर बना दें और उनका सालाना चन्दा मनीआर्डरसे भिजवा दें। यह ‘राष्ट्रभारती’ सबमें सस्ती सुन्दर साहित्यिक, सांस्कृतिक पत्रिका है, जो ठीक समयपर हर १ ली० ता० की निकलती है।

जिन-पत्रिकाके प्रचारमें आप अवसर अपना सहयोग बढ़ावें।

मनीआर्डरसे वार्षिक चन्दा ६ रु. और छहमाही चन्दा ३ रु. ८ आ.

नमूना अंकके लिभे दस्त आना मात्र।

पता— व्यवस्थापक—‘राष्ट्रभारती’, पो०—हिन्दीनगर (वर्धा, म० प्र०)

राष्ट्रभारतीके लेखकोंसे निवेदन !

(१) ‘राष्ट्रभारती’ में प्रकाशनायें रचना आदि सामग्री स्वच्छ सुदाय्य लिखावटमें अथवा अच्छी टाइपिंग की हुई भेजनी चाहिये। प्रकाशन योग्य सामग्री जो कुछ भी आप भेजें वह बहुत भारी-बोझिल और धूब लबी चीजों नहीं होनी चाहिये, कृपा भित्तिका खपाल रखें। आपने हादिक महयोगके लिये राष्ट्रभारती बहुत आनारी होगी।

(२) यह अच्छी तरह ध्यानमें रहे कि राष्ट्रभारतीमें प्रकाशनायें भेजी हुई आपकी रचना जिनके पूर्व किसी हिन्दी पत्र-पत्रिकामें प्रकाशित न हो चुकी हो, और जो कुछ सामग्री भेजें वह ‘राष्ट्रभारती’ के लिये ही भेजें।

(३) अनुवादक महाशय किसी अनूदित रचनाको भेजनेसे पूर्व अपने मूल-लेखकसे पत्रद्वारा अनुमति अवसर प्राप्त कर लें; तभी अनूदित रचना हमारे यहाँ भेजें।

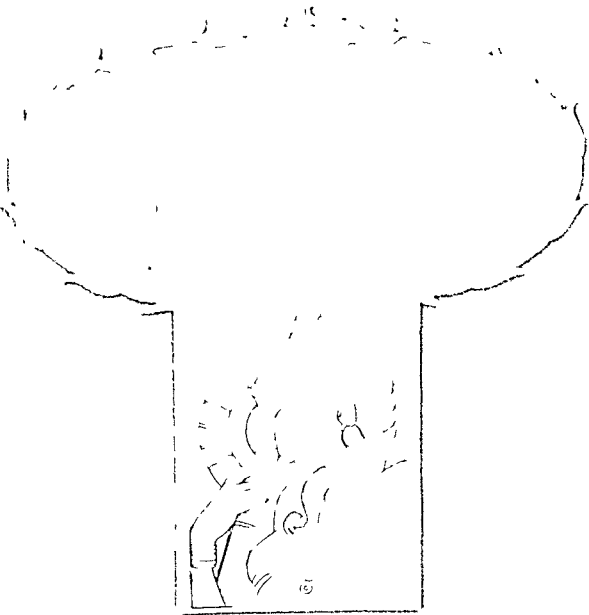
(४) आपको स्वीकृत रचना सबकी सूचना संपादक द्वारा आपको दी जावेगी और उपनेत्रक आपको पनीक्या करनी होगी।

(५) अपनी अस्वीकृत रचनाको वापस मंगानेके लिये टाक-टिफ्ट अवसर भेजें अथवा आप कुमकी प्रतिनिधि अपने पास मुद्रितपत्र रखें।

(६) लेख, रचना आदि प्रकाशन योग्य सम्पादकीय माग्य व्यवहार जिन पत्रपर करें—

संपादक : ‘राष्ट्रभागी’

पोस्ट—हिन्दीनगर (वर्धा, मध्यप्रदेश)



दिसम्बर, १९५३

श्रीगुरुदेवकी आराधना प्रत्येक दिन सुप्रतिष्ठित होनी चाहिए।

'राष्ट्रभारती बिहार, राजस्थान मध्यभारत हृदराबाद और नोपाल राज्यके गिख्या विभागों द्वारा स्कूलों, कालेजों और वाचनालयोंके लिए स्वीकृत हो चुकी है।

[सूचना — राष्ट्रभारतीमें सर्वश्री डा बाबुराम सकुमरा आचार्य काका बालकृष्ण, महामहोपाध्याय दत्ता वामन पानदार स्वर्गीय किणोर्गलाल मंगेशचाला और अन्तर प्रदेशके वनमान राज्यपाल श्री क०मा०मु०गुाजा यादि विभाषनाया अक ममिति द्वारा १०२६म निर्णान नगरी लिपिका प्रयाग हाता है —अि आ बु बू प्र, अँ (इ इ उ ऊ ए और ए की जगह) और व ष और वष (अ ग और क्ष अक्षरोंके स्थानपर) —न०]

—:विषय-सूची:—

१. लेख :	लेखक	पृ० म०
१ राष्ट्रभाषा हिंदी बहुता नीर	श्री डा बलदेवप्रसाद मिश्र	९१५
२ कूर्पासक	श्री आचार्य चंद्रबाला पांडे	९१७
३ म य और रीति रिवाज	श्री महात्मा भगवानदीन	९२०
४ स्व मुद्राध्यय भारतीके काहा-गीत— काहा मरे सदगुर (तमिळ साहित्य)	{ श्री प्रो० क अम विदम्बरम	९२८
५ नीमाडी मन्त मिगाजा और अुनका साहित्य	श्री कृष्णलाल हम	९३१
६ गद्दार (अक मनावैनातिक विस्लेषण)	श्री रामराजसिंह	९३५
७ तक्कयागप्परणी (तमिळ साहित्य)	श्री ति गपादि	९४०
८ जनश्रुति—अमत्पर सय	श्री ब्रह्मानंद श्रीवास्तव	९४७
९ अकक नाटकाम युग-मत्य	{ श्री गणपालकृष्ण कौल श्री रामगोपालसिंह चौहान	९६३
२. कहानी :		
१ जुम्मा भिन्डी (गुजराती)	{ श्री घूमवेतु	
२ निराश्रयकी जीत (लघुकथा)	{ अनु०—श्री अि द्र वमावडा	९३७
३ अनुभवतिका आनोक	श्री रावी	९५०
४ अन्तमनिका आनोक	श्री रत्नलाल बमल	९७७
३. आलोचना :		
१ तिनकर जीका कुरुक्षत्र	श्री गिरिजाशान गुल 'गिरीश'	९५२
४ कविता :		
१ म पागल प्राण तुम आया	श्री विद्याधर द्विवेदी बिन	९३०
२ गिगिरकी राज	श्री प्रो० महेंद्र भटनगर	९८०
३ चार चुतुपन्डिया	श्री अजितकुमार	९५१
४ स्वप्न-सय माकार करा तुम !	श्री प्रभुचान्द अमिहोषी	९६८
५ टैवनागर :		
१ आडिया (अडिया)	श्री निरप	९६९
२ राष्ट्रानतिके नियम (मराठी)	श्री निरप	९८६
६. साहित्यालोचन :
७. मस्युद्रकीय		
८ राष्ट्रभारता वर कृपा करनवालासे विवरन	...	९७४
९ अक्षय टण्डनजीका धला	...	९७२
		९८१

राष्ट्रभारती

[भारतीय साहित्य और संस्कृतिको मासिक पत्रिका]

— : सम्पादक : —

मोहनलाल भट्ट : हृषीकेश शर्मा

* वर्ष ३ *

वर्धा, दिसम्बर १९५३

* अंक १२ *

राष्ट्रभाषा हिन्दी : “बहुता नीर”

: डॉ. बलदेवप्रसाद मिश्र, डी. लि.द. *

जबसे हिन्दी राजभाषा घोषित हो चुकी है, नबसे विचारकोका ध्यान बिसपर और अधिक केन्द्रित हो गया है। वस्तुतः वह राष्ट्रभाषा तो थी ही, भन्ने ही राज्यकी ओरसे शुभकी अधिकृत घोषणा न हुआ है। परन्तु घोषणा हो जानेके बाद अब शुभकी ओर प्रत्येक प्राणके विचारकोका ध्यान बिसोप आर्कषित हो गया है।

पहिले तो हिन्दी और शुभकी खीचतान थी और भारतीय राष्ट्रभाषाके अिन दो रूपको अंकमें मिलानेके लिअे हिन्दुस्तानीके सृजनकी ओर विचारकोका ध्यान गया था। परन्तु वह बात कुछ चल न पायी। बात यह है कि लोकभाषा कोअी “कृप जल” ना है नहीं, वह तो “बहुता नीर” है। अिमलिअे वह तो नैसर्गिक गति ही से आगे बड़ेगी। जन-साधारण जिसे चला दे, वही भाषा है। लोकभाषा कही किमी बिसोपजोकी गमितिमें गढी नहीं जाती। यदि कुछ लोगोंने भगीरथ प्रयत्न करके शुभे गढ लिया, तो जन साधारणपर शुभका मडना और भी कठिन व्यापार समझिअे। गढी हुआ भाषा शब्द कोशोमें अपनी बहार भलेही दिवाती फिरे, परन्तु कोअी विधान, कोअी व्याकरण, कोअी कोश, शुभे जन-

साधारणपर मड नहीं सक्ता, जबतक कि जन-साधारणकी र्शध स्वन शुभ आर प्रवृत्त न हो जाअे। शुभकी शब्दावलीके बहुतेमे बिदेशी शब्द असे थे, जो अपने साथ बिदेशी संस्कार भी लिपे हुअे थे, अनअेव “हिन्दुस्तानी” के नामसे शुभ शब्दको प्रहण कर लेना, शुभकी शुभ अन्वेष पैदा कर सकना था। गुरु वशिष्ठ कभी अस्ताद वशिष्ठ नहीं हो सक्ते और न महाराणी मीना कभी वेगम मीता हो सक्ती है। विचारकोने यह बात समझी, अिमोलिअे अुन्होंने अपना वह हठ छोड दिया और यह निश्चय कर दिया कि हिन्दीका वही रूप राज-भाषा और राष्ट्रभाषाके रूपमें मान्य होगा जो शुभका परम्परागत रूप है और शुभकी खास प्रवृत्ति तथा प्रवृत्तिके अनुकूल है।

अिस निर्णयकी अेक प्रतिक्रिया भी हुआ। कुछ लोगोंने अिमोलिअे अब संस्कृत निष्ठापर अरुतसे ज्यादा जोर देना शुभ किया और संस्कृतके आचारपर अनेकानेक अप्रचलित नये-नये शब्द गढने प्रारभ किये। हिन्दी केवच संस्कृतके व्याकरण अथवा संस्कृतके कोशका ही आधार लेकर नहीं चली है। वह देशज बोलिपों

और द्रविड भाषाओंमें भी तो प्रभावित है। वह वास्तविक अर्थमें राष्ट्रभाषा है। अतः अत्र जिस प्रकारके अंशका गठे हुए शब्द भी जन-साधारणपर पूरी तरह गठे नहीं जा सकेंगे। नये-नये भाव, नये-नये सूक्ष्म विचार, नयी-नयी परिस्थितियोंके अनुकूल नये-नये व्यक्तीकरण, नये-नये शब्दोंकी अपेक्षा अवश्य रखते हैं। अतः अत्र जिनके लिये नये-नये शब्द अवश्य गठे जायें, परन्तु जिस प्रकारकी गठनेके लिये हिन्दीकी प्रवृत्ति और प्रवृत्तिका ध्यान अवश्य रखा जायें तभी वे शब्द जनता द्वारा ग्राह्य होंगे। जिस प्रवृत्ति और प्रवृत्तिका अमली निर्णय होना है जनता जनार्दन द्वारा, न कि कोशकारों, वैद्याकरणों अथवा शब्द-निर्माताओं द्वारा। ये लोग नये-नये शब्द बनाकर जन-साधारणके सम्मुख रख दें, जनता अथवा शब्दावलीमेंसे लोक-भाषाके अनुकूल शब्दोंकी आप ही ग्रहण कर लेगी और शेषको विस्मृतिके गर्भमें डकेल देगी।

प्रत्येक प्रातःकाली राष्ट्रभाषामें अपनी-अपनी भाषाओंका योगदान देनेको अस्तुक्त हो रहे हैं। यह भी स्वामाविकही है। राष्ट्रभाषा सभीकी भाषा है, जिसलिये प्रातः-भाषाओं अपनी-अपनी अभिव्यक्तिका सुंदरमें सुन्दर शब्द और प्रयोग क्यों न जिस भाषाकी अपित करे। हमारा तो अनुमान है कि जिसमें किसी प्रकारके डक्की कोभी बात नहीं। भगवती भारतीके मदिरमें प्रत्येक भारतीय अपनी श्रद्धाके पुष्प अर्पित करनेको स्वतंत्र है। देवताको जो फूल ग्राह्य होंगे, वे ही वहाँ टिके रहेंगे, शेष कुम्हलाकर अलग ही जायेंगे। वरक्षानों बाउमें सभी दिशाओंमें सभी तरहकी चीजें प्रवाहमें बहकर जानी हैं। परन्तु कुछ दिनोंके बाद "बहना नीर" अवश्यक सुरसको आराममान करता हुआ अपनी नैसर्गिक निर्मलता फिर धारण कर लेता है और वादकी अनावश्यक वस्तुओं आप-ही-आप त्रिधर-त्रुधर विगिन हों जानी हैं।

बसोन्का दोहा जिस मीठेपर बिनना चुम्ब बंड रहा है। वे बहने हैं—

"भक्ति भाव भादों नदी सबे चलो घहराय,
सरिता सोमि सराहिये जो जेठ मान टहराय।"

हिन्दीमें भी जिस समय विदेशी शब्दोंकी सम्मूहनी कोश और सम्मूहनी व्याकरण द्वारा गठे हुए शब्दोंकी, प्रादेशिक शब्दों तथा प्रयोगोंकी वाट आ रही है। यह स्वामाविक ही है। जिनमें ध्वरानेकी कोशो जन्म नहीं। यह तो समयका तकाजा है। परन्तु आगामी बल्के जिसके स्वरूपमें जिस मर्दनी वादका गंदलापन आप-ही-आप दूर हो जायेगा और अथवा वादके स्वल्प नत्वोंकी आत्ममान करते हुए यह अपनी स्वामाविक प्रवृत्ति और स्वामाविक प्रवृत्तिके अनुसार जेठमातकी मरिताकी तरह निर्मल कल्याणकारो रूप प्रदशित करेगी, जिसमें कोशो संदेह नहीं।

बहने नीरकी धाराको अक्षय, अलुटना अक्षय कार्य है। अथवा विधिप्रति प्रवृत्ति असीको होकर रहेगी। अथवा बहावकी प्रवृत्तिको भी न पहचानना, अथवा वास्तविक लाभने अपनेको बचिन रखनाही है। चतुर विमान वही है जो अथवा विधिप्रति शक्ति और अथवा बहावका विचार रखता हुआ, अथवा यत्र-तत्र संगोषण करता जाता है, जिससे वह देगते विविध-वर्णोंकी और अच्छी तरह हरा-भरा करती चले। जो लोग राज-भाषाके विषयमें परिचयन और संगोषणकी विच्छा रखते हैं, उन्हें जिस विद्वानका ध्यान अवश्य रखा जायें। राजभाषा हिन्दी जीवनी शक्तिसे ओठ-प्रोत है। वह निम्नदेह अक्षय जीवित भाषा है। जीवितका अर्थही है कि अनुकूल शब्दावलीका संग्रह किया जायें और अनुपयुक्त शब्दावलीका त्याग किया जायें। जीवित शरीर अर्थात् पोषणके लिये अनुकूल साध लेताही रहना है और अनुपयुक्त वस्तुओं त्यागता ही रहता है। हिन्दी भाषा नूतन शब्दावलीकी विरोधिनी न होगी, चाहे वे देशज हों या विदेशज। यही नो अथवा जीवितके लक्षण है। परन्तु अथवा अवश्य ध्यान रखा जायें कि अथवा प्रवृत्ति और प्रवृत्तिके विरुद्ध नयी नयी गठे हुआ या शीघ्र-शीघ्र अथवा कोशो शब्दावलीको बोज अथवा लदा न जायें। यदि वहाँ कोशो अथवा चेष्टा की गयी, जिसके कारण अथवा स्वल्प ही बदल जानेकी सुभावना हो, तो निश्चय है कि अथवा शब्दावली अथवा प्रयोगावलीका बोज शीघ्र ही बरखानी बूटे-बूटे-की तरह कुछ ही दिनोंमें आप-ही-आप बदल ही जायेगा।

[राजनादगाँव]

कूर्पासक

आचार्य चन्द्रवली पाटे, अम अ

अतीतके अध्ययनका जिह्व चसका है अुहे जिन वातका पता है कि कूर्पासक का ठीक ठीक रूप अभी हमारी आँखके सामन न आ सका और आया भी ता यह कहना अ यत् कठिन हो गया कि वास्तवम पही जिसका वास्तविक रूप है। विचारके निज नीजिअ डा मोतीचद्रजी जसे वेप ममज्ञकी यह वाणी—

अमरकोण और अनुसंहारमें तो यह गद स्त्रियोकी चालीके लिअ आया है, पर यहा तो अुसे योडा पहनते थ। उगता है कूर्पासक आष बाँहवागी मिजअी अथवा कोअी गजीनुमा वस्त्र रहा हा। अजताके भिनि चित्रोंमें वद्घा सिपाही अँसा वस्त्र पहन दिखाय गय ह। ॐ

स २००७ विज्रमकी यह मीमामा अपन विषयम बहुत कुछ आप ही बोअ रही है। कूर्पासक का ठीक पता नहीं अनुमानमे जो मिद्ध होता है वह सामन है। अुसको दृष्टिमें रखकर देयें यह कि अतीतन दूमरे विचारक डा वामुदेवगरण अत्रवालका विचार क्या है। आप वडी खोजके वाद लिखते ह—

कूर्पासकका पहनावा गन्त वात्रम खूब प्रचलित रहा हागा। अमरकोण कूर्पासकका अथ चोल किया है। कूर्पासक थोः मदसे स्त्री और पुरय दानोका पहनावा था। स्त्रियोके लिअ यह चोल क डगका था और पुरुषाके लिअ फनुओ या मिजजीके डगका। अिमकी दो विगपनाअँ थी—अथ ना यह कटिमे अूबा रहता था जोर दूमरे प्राय बिना आस्तीनका होता था। यन्तुअ कूर्पासक नाम अिसीलिअ पडा क्योंकि अिसम आस्तीन कोहनियामे अूपर ही रहती थी। मूलम कूर्पासक भी चीनखोलकका तरह मध्य-अगियाकी वेशभूषाम ही प्रचलिन था और वहीसे अिम दशमें आया। कूर्पासक जोडकी आधुनिक पोशाक वास्कट है। अगियाक शिष्टाचारक अनुसार

वास्कट सबसे अूपर पहननका वस्त्र माना जाता है जब कि पश्चिमी नियममें वास्कट भीतर पहननका वस्त्र है। समस्त मग लिया प्रदेग चीनी तुकिस्तान और पगून प्रदेगोम भी फनुओ पहननका रिवाज मावैगिक था और वह अपन आपम पूण ओर सम्मानित पहननका माना जाना था। फनुओ या फितूरी उद या कज्जा अथ चागी अक ही मूअ पन्नावके नाम और भन् ह। वही पहनावा गृत्स्वात्रम कूर्पासक नाममे प्रसिद्ध था। ४

कूर्पासक के प्रसगम डा अयवात्रन बहुत कुत्र कह दिया। क्या कुअ कह लिया ? अिमका समारान ठीक ठीक कर पाना खल नहीं। आपहीका कयन अिसी प्रसगम यह भी है—

‘जसा कहा जा चुका है कूर्पासक स्त्री और पुरुष दोनोका पहनावा था। अजताक लगभग आः दजन चित्रोम स्त्रिया बिना आम्तीनकी या आधी बाँहकी चालिया पहन ह जिनम कअी रगोका मल लिखाया गया है। अक ही खोत्रीम पीठका रग कुछ और है और सामनका कुछ और। औवनरेगकन अजता प्रस्तकके फकक ७२ म यगोषरा बिना आम्तीनका कूर्पासक पहने ह जिसपर दाँनूकी बुदकियाँ पडी ह। फकक ७७ म रानी और कअी अय स्त्रियाँ कूर्पासक पहन ह। अक चित्रमें पाठकी आर क यअी और सामन लाल रगम कूर्पासक रगा गया है और अुसपर भी वडी बुदकियाँ डाकी गयी ह। फलक ७५ (गुका १)के चित्रम नतकी पूरी बाहका डुरगा कूर्पासक पहन है। फलक ७७ (गुका १७ दपतीका मनुषान दश्य) में शारी लिय हुआ यवन स्त्री आधी बाँहका नबुर कूर्पासक पहन है। (पृष्ठ ३२७)। अत्र समझ तो उ कि कूर्पासक वस्तुन है क्या। वास्तवम वह बिना बाँह का पहनावा है या ‘पूरा बाँह

• (नागरी प्रचारिणी पत्रिका स २००० वि पृष्ठ ३२६-७)

अथवा 'आधी बांह' का ? डा अग्रवाल तो तीनोंको ही 'कूर्पासक' कहने हैं न ? उनका मुख्य कथन है—

“अेक तो यह नमरते अँचा रहता था और दूसरे प्राय बिना आस्तीनका होता था ।”

और किसीके साथ है टिप्पणी भी—

“‘चोली दामनका साथ है’ इस मुहाबरेका तात्पर्य यही है कि कटिभागमें जहाँस नीचे दामन या लहँगा मरू होता है, वहीमें अूपर चोली प्रारभ होती है । चाली और दामन दोनों मिलकर पूरा वेश बनता है, अत दोनोंका साथ अनिवार्य है ।”

स्थिति कुछ भी हो । डा अग्रवालका यह कथन मननीय है—

“वस्तुतः कूर्पासक नाम जिसीलिअे पडा, बयोकि अिसमें आस्तीन कोहनिथोसे अूपर ही रहती थी ।”

तो फिर 'कूर्पासक' के विवेचन और प्रयोगमें जिसकी अपेक्षा क्या की जाये ? स्मरण रहे । अुदीच्य कवि आर्यश्यामिलकका कथन है—

कण्ठश्यामनतकेश्चनतालपत्रा

शेष्यन्तलग्नमणिभित्तहेमगुच्छा ।

कूर्पासकोक्वचित्तस्तनबाहुमूला

लाटो नितम्बपरिवृत्तदशान्तनोवि ॥ १०३ ॥

—(पादनाटिनक भाण, सन् १९२२ ओ)

जी । 'कूर्पासकोक्वचित्तस्तनबाहुमूला' से स्वयं स्फुट है कि 'कूर्पासक' वस्तुतः है क्या वस्तु जो अुमकी खोजमें अितनी मनमानी व्याख्या हो रही है । 'स्तनबाहुमूला' से स्पष्ट ही है कि वह श्यामपंमें किसी प्रदेशका आच्छादन है । अुमे सशेषपंमें वक्षस्पथलका वक्ष्य कह सपने हैं । नाभिप्रदेश तक अुमकी गति नहीं । कवि-कुलगुरु कालिदास कहत हैं—

मनोत्कूर्पासकपोहितस्तना

सरागकोशेवकभूपितोत्त ।

निवेदितान्त्र कुमुमे शिरोरहं

विभूषयन्तीष हिमामप स्त्रिय ॥८॥

—(अनुवहार, पचम सर्ग) । अर्थात्—

श्री सीताराम चतुर्वेदीजीका जिसका 'नागरी' अनुवाद है—

“सुन्दर चोलियोसे अपने स्तन कसे ढुबे, जाँघोंपर रेशमी कपडे पहने ढुबे और बालोंमें फूल गुंथे ढुबे स्त्रियाँ अँसी लग रही हैं, मानी जाडेके स्वागतका अुत्सव मनानेके लिअे मिंगार कर रही हो ॥८॥” (कालिदास ग्रन्थावली) ।

आर्यश्यामिलकने 'कूर्पासकोक्वचित्तस्तनबाहुमूला' में 'कूर्पासक' का जो अुपयोग किया है वह सर्वथा कविकुलगुरुके 'मनोत्कूर्पासकपोहितस्तना' के साथ है और खूलकर बता रहा है कि यह कसा-कसाया परिधान है कुछ ढीलाढाला पहनावा नहीं । कविकुलगुरुने पहले भी कहा था—

कूर्पासक परिदद्याति नखकपताङ्गी व्यालम्बिनी-
ललितालककुञ्चितशायी । अुनका पूरा श्लोक है—

अग्या प्रियेण परिभुक्तमवेशव्यगात्रं

हर्षान्विता विरचिताघरचारशोभा ।

कूर्पासकं परिदद्याति नखकपताङ्गी

व्यालम्बिनीललितालककुञ्चितशायी ॥

यह हेमन्त' की स्थिति है । जिसका अर्थ है—

“नखोंके पात्रोंमें भरे ढुबे अगावाली और लटकती ढुबरी सुन्दर अलकासे ढकी ढुबी आँखोंवाली अेक दूसरी स्त्री, अपने प्यारेसे अुपभाग किये ढुबे शरीरका देव देवकर बडी मगन होती ढुबरी अपने अघरोंको फिर पहलेकी नात्री सुन्दर बनाकर अपनी चोरी पहनने लगी है ॥१७॥” (वही) ।

ध्यान देनेकी बात है कि कालिदासने 'हेमन्त' और 'मिंगार' अर्थात् जाडेके दिनोंमें ही 'कूर्पासक' का व्यवहार किया है । अग्यया 'वसत' की स्थिति तो अुनके यहाँ यह है—

कुसुम्भरागाद्यणितर्दुकूल

निनम्बविन्ध्यानि विलासिनोनाम् ।

तन्व्यंशुकं कुडकुमरागणोरं

श्लशियन्ते स्तनमण्डलानि ॥५॥

“ कामिनिथोने अपने गोल-गोल नितम्बोपर कुमुमवे लाल लाल कूत्रोने रंगी रेसमी साडी पहन ली है और स्तनापर केदारमें रंगी हुआ महीन कपड़ेकी चोली पहन ली है ॥५॥ ”

चिन्तु यह आवश्यक नहीं कि 'अशुक का अर्थ 'चोली' ही किया जाये। वह केवल वस्त्रत्व मात्र भी हो सकता है। 'कूर्पासक' की भाँति यह 'अशुकचिन्तन-स्तनबाहुमूला' का रूप किसी रमणीको नहीं दे सकता। नहीं 'कूर्पासक' कवच' का काम करता और 'रतिरण' वे योग्य ठहरता है। यही कारण है कि जिसे रणवीर भी धारण करते हैं। डा मोतीचन्द्रहीना यह भी कथन है—

“ अजताके सिंहल युद्ध नामक चित्रमें घुड़सवार आधी बाहोवाले कूर्पासक और जाँघिया पहन हैं। जिस कूर्पासकने गले और मुहुरियोपर मोटें लगी मालूम पड़ती हैं (आ ३१२) । ” (वही, पृष्ठ १९१) ।

और सच तो यह है कि डा वामुदेवशरण अग्रवालकी खोजका विषय ही है यही पुरुषधारी कूर्पासक'। आप लिखते हैं—

“ राजाओना अंक वर्ग नामा रगोसे रग हुआ चित्तवरे कूर्पासक पहने हुआ था (नामावपायनचूर्ण कूर्पासक, २०६) । ” (वही, पृष्ठ ३२६) ।

जिसे आग बुझाने जो कुछ कहा है अमुका बहुत कुछ अज्ञ पहले आ गया है। अमुसे 'कूर्पासक' की स्थिति वहाँ तक स्पष्ट होती है, जिसे पाठक स्वयं देख सकते हैं। हमारी समझमें तो 'कूर्पासक' का सच्चा सन्देश वही है, जिसका पता आपस्यामिलकने अपने 'भाव' में दिया है। अमुसे आज 'अंगिया' कहना कर्हातक ठीक होगा वह नहीं सकता। हाँ जितना विदित अवश्य है कि अमुका अप्रयोग है 'स्तनगद्गुल' को 'कवचित' करनेमें, फिर वह चाहे स्त्रीका यह प्रदेश हो, चाहे पुरुषका ।

[काशी ।

सहनशीलता

“ सहनशीलता अच्च स्वभावका भूषण है। सहनशीलता सबको नहीं मिलती। 'कुशब्द' को केवल सहनशील सत्पुरुष ही सहन कर सकते हैं। दूसरे नहीं सहन कर सकते। सहनशीलता अहकारको त्यागने और दीनताको ग्रहण करनेसे प्राप्त होती है। जो दम और अहकारका त्यागकर दीन तथा सहनशील बन जाता है, अमुकीको भगवान सफलता देते हैं। जिस प्रकार धुत्तम पुरुष विनीत होते हैं, अमुसी प्रकार दुष्टजन अद्भुत दुर्विनीत होते हैं। अच्छे लोग सबके कवचोको अंसे निर्विकार भावसे सहते रहते हैं, जैसे पर्वत बर्फकी बूदोके आघात सहते रहते हैं। कपमा जो सबसे अच्छा धर्म है, सहनशीलताकी महचरी है। सत्पुरुष सहनशीलता और कपमाको कभी नहीं छोडते और निन्दासे हर हालतमें भी विचलित नहीं होते । ”

—“ संतवाणी ”

सत्य और रीति-रिवाज

: महात्मा भगवानदीन :

दिलकुल छोटे बच्चेका पता नहीं, पर बच्चे बच्चेने लेकर बूढ़ तक अक खास कमजोरी लिये हुअे हे। यह कमजोरी मत्यको महन नहा। यह कमजोरी अिननी फल गयी है कि मत्यकी लाख महनत करनेपर भी कम नहीं हो पाती। रिजका नामकी अक घास होती है। जान वरकि लिअे अुसे बोत हे। अुन अेक तरफसे काटे तो दूसरी तरफसे बढन लगती है। यह कमजोरी अिसी घानकी तरह अक तरफ बढती और दूसरी तरफ अुग धाती है। अिस कमजोरीका नाम है सहज विश्वास। रीति रिवाज अिम सहज विश्वासकी मन्तान है।

न कभी सहज विश्वास आदमीको छोड सकेगा और न रीति-रिवाज। सयकी यह वासिा नही कि रीति रिवाज खतम हा। रीति रिवाजके बढनसे सयका कोअी नुकसान नहीं। सयकी घबका पहुँचना है अुम समय, जब रीति-रिवाजको यह कहकर अयनाया जाना है कि अगर ये न किये जाअे तो कोअी अंभी आफन कुटुम्ब या समाजपर आ जाअगी जा हटाये न हू सकगी। सत्य अिस बहमका दूर कर देना चाहता है। बहम अघेरा है सत्य प्रकाग है। ये दानों अक जगह नही रह मवने। सय जीवनमें प्रमन्नता लाना है बहम अुस प्रसन्नताका रस चूम लेना है फिर जो कुछ आदमीके हाथ पडता है, वह छूँट होती है। गन्नेकी खाअी और बादामकी मन्की तरह अुम छूँटमें मिठास और चिक नाअी रहती तो है पर अितनी नहीं अिनसे आदमी पूरा पूरा लान अुठा सके। अगर अुमकी वृ खाअी और खड बिलकुल न मिळी तो कुछ बुरा ता हागा, पर अितना बुरा न हागा अितना खाअी और खल मिल जानम हागा है। क्वाकि अुनक मिलनम अुन मिठास और चिकनाअीका स्वाद आता है नबोपड नही भर पानो नूणा जाग अुठती है। वह अुसे पहलम ग्यादा दुबला कर देती है। सयकी कासिा है अुमके सहज

विश्वानको ठीक करे और रीति रिवाजको पूरा मिठास और पूरी चिकनाअी आदमीको मिलने दे।

जब रीति शुरू हाती है नव अुसे रीति नहीं कहा जाता। वह किनी रीतिकी जगह लेनी है, अिमलिअे रीति कहा जाता है। रीतिके माने हे किनी कामके ढाको बहुतीका अपना लेना और बढन दिनीतक अपनाये रखना। जो ढग आज निचला है अुसे रीति रिवाज कैसे कहा जा सकता है? नये ढगको अेकदम रीति-रिवाज नाम क्पो दिया जाने लगा? अिम सवालका जवाब मोषा है। मगठित समाजमें कोअी ढग कानूनक जरिये अेक दिनमें आरु किया जा सकता है। अिस तरह आमनीरसे लम्बे लिफाफे चलते थे, अेकदम चौकोर चल पडे तब चौकोर लिफाफेके बारेमें यह कह देना बेजा नही कि आजसे चौकोर लिफाफाका रिवाज हो गया। रीति-रिवाजक माने बदल गये। रीति रिवाज अिस वकत शुरू हुअे थे, अुम वकत समाज मगठित न था, या था तो अितना मगठित न था कि अपने हुबमसे काम करनेके किसी ढगको अेकदम बदल सके। होता यह था कि किंभीने अेक ढग अयनाया, अुसका समाजमें फलनेमें समय लगता था, दिनामें ढग रीति रिवाज नाम पाना था।

किसी देगना समाज आजकल कुछ वाताकी छोड-अिनका सरकारी कानूनसे सम्बन्ध है, किसी बानम साराका सारा अेक रीति रिवाजमें बधा मिलेगा। हर देसका समाज अनेक टुकडोंमें बँटा हुआ है।

चार दगोंकी बान पहलेस चली आ रही है, अुनमें ता समाज बँटा है ही, पर अुन चारमेंसे हर अेक चार-चार और काठ आठमें बँटा हुआ है। आज अितना जातिदी हे सबके अलग-अलग रिवाज हे। यानी सबके रहन महनके अलग-अलग ढग हे। समाजी मामलाको छोड दिया जाअे, सिर सरकारी मामलाको लिया जाअे, अुमके भी ढग सब जगह अेक-से नहीं हे। हर प्रान्त अपने ढाँके

लिखे स्वाधीन है। कुछ बातोंमें श्रेय ही प्रांतका हरशक जिला अपने ढंगके लिखे स्वाधीन है। यही हाउ तह-गील तालुको, परगना और गांवना है।

समाप्ती और सरकारकी कामोत्तर अलग-अलग ढंग यह गाहित करता है कि हर जगहके रीति रिवाज अलग-अलग हों। अलग अलग यो हों कि हर जगहना हवा-पानी अलग-अलग है। श्रेय ढंग दूसरा जगह नहीं बैठ सकता। राजपूतानेमें जहाँ रेतने टीले हैं और दूर दूरतक रेत फैला हुआ है, काम करनेके जा ढंग सोचे जायेंगे ये पजाबमें नहीं सोचे जा सकते। पजाबमें बड़ी और कभी छोटी नदियाँ बहती हैं। यही हाल अन्तर-प्रदेशना है। वहाँ भी नदियोंकी कमी नहीं। पजाब और अन्तरप्रदेशमें काम करनेके ढंग बिल्कुल अलग रहेंगे। अब राजपूतानेके ढंग, पजाब या अन्तरप्रदेशके ढंगमें मेल न लायें और राजपूतानाके आदमी अपने सहज विद्वानकी लेजर पजाब और अन्तरप्रदेशवालोंसे झगड़ बैठें या समझें कि ये अन्तरे विपरीत ढंगोंको अपनाकर कौओ अनीति कर रहे हैं तो यह नितनी बुरी बात होगी? किन्तु ही रहा है अंसा ही। सत्य अिस आपसी झगड़नेको मिटा देना चाहता है। झगडा मिटानेका नुस्खा बडा अच्छा जाता है पर लागु अुस नुस्खेके अिस्नमालमें बड़ी गडबडी कर जाते हैं। नुस्खा अुम कागजके परचेको कहा जाता है अिगर कौओ हकीम कुछ दवाकी लिख देता है और यह भी लिख देता है कि यह दवा तिम तरह तैयार की जायेंगी और किस तरह काममें लायी जायेंगी। अब अगर कौओ आदमी नुस्खेके अुत कागजकी ही दवा समझकर ला ले तो अिसमें हकीमका क्या दोष? ठीक अिसी तरह सत्य श्रेय रिवाजके ढंगको बदलना है और अुसकी असलियत समझा देना है पर लोग अुस ढंगको अपना लेते हैं और अपने सहज विद्वानकी अुमने साथ नदवी कर देते हैं। वही ढंग नया हीनपर पुरान ढंगकी तरह मिटात और पिचनानी सो बैठना है।

सत्य अिस बातपर जोर नहीं देना कि रीति-रिवाज बदल डालो। अुसका जोर अिस बातपर है कि रीति रिवाजकी असलियत जान लो। यह ठीक है जैसे

ही आदमीको किमी रिवाजकी असलियतका पता चला वैसे ही वह अुमे छोड़ बैठेगा। क्वाकि बहुत कम रिवाज अुमे हैं जिनकी असलियत आज कायम रह गयी है। अुदाहरणके अिअे अगर कौओ रिवाज अुस वक्त बना था तिस वक्त हमारे देशमें रेल न थी ता वह रिवाज आज कैसे रह सकेगा अगर अुमकी असलियतको लोग समझ जायें। साथ जबदरती नहीं करता। सत्य हमें बल देता है हमें जगता है हमारे मतकको विचारकी आजवी देना है हमारे ज्ञानको माफ करता है और हम गच्छा ढंग सोचने, अुमपर असल करनेकी हिम्मत देता है।

सारे रीति रिवाज जन्म, विवाह और मोतके चारा तरफ घूमते हैं। अगर अिन सीनोंको ठीक ठीक समझ लिया जायें तो रीतिरिवाजके पीछे रहनेवाले जित सज्जन विद्वानसे मिथ्या और अण्यविद्वानका रूप ले लिया है वह ठीक ही जायें और फिर र निरिवाज, जो आदमीपर सवारी गाँठे हुए हैं, आदमीकी सवारीमें आ जायें, और जीवन-यात्रामें गति और प्रगतिता आ जायें।

जन्म अिसमें ज्यादा कुछ नहीं कि वह आदमी जो अभी तक वीरकी तरह जमीने अदरने बाहर निकलनेके अिअे जोर लगा रहा था अकुरने रूपमें बाहर निकल आया। पेडका जमीनेसे रिदात बना रहता है। यानी अुमकी जड़ अकुर निकलनेर बादसे बडे होने तक जमीनके अदर रहती है। आदमीके मामलेमें अंसा नहीं जाना। आदमी या अुमो जैसे प्राणी अपनी मति श्रेयदम सम्बन्ध छोड़ दन हैं पर अुनकी भी आगे बढ़नेके लिये भोजन पानेकी खातिर मति सम्बन्ध जोडना पडता है। अिसलिये किनी अणमें आदमी पेडमें मिलना है। बहुत पेड अंसा हैं जो अपने फूल और फल गिरा देने र पर अुनके पत्त फूल गिरानकी जन्म नाम नहीं दिया जाना, क्वाकि यह गिरकर बडने नहीं। पडने अकुरको जन्म नाम दिया जाना है क्वाकि वह बडना है। पेडासे लेकर आदमी तक सबके जन्मपर नजर डाली जायें तो अंसा मातृम होगा, प्रकृतिने अुनकी कीमलतानी ध्यान रक्कर अुनकी बचाये रखनेके लिये क्वाकी प्रवन्ध किया

है, बाहरी आपत्तोंसे बचानेके लिये सब प्राणियोंमें अमी भावना पैदा कर दी है जिसकी वजहसे वह अन्न कोमल देहधारियोंको कमसे कम सतानेकी सोचते हैं। सत्य चाहता है, प्रकृतिके अन्न कोमल देहधारियोंकी रक्षा करनेमें मदद की जाये, और आदमी जिस वारेमें अपने सहज विश्वासको पैला न होने दे। जन्मके कोमल-पनको ध्यानमें रखकर जो कुछ किया जाये, ठीक है; और जो किया जायेगा वह सत्य होगा।

विवाह जिसके सिवाय और कुछ नहीं कि प्राणिके अन्दर जो अंक विरोधता है कि वह अपने पीछे अपने जैसे प्राणी छोड़ जाता है, अन्न विरोधताको बनाये रखे, सृष्टि रचनाको सुखमें चलनेमें प्रकृतिकी मदद करे। विवाह अंक अंसी रस्म है जो आदमीकी अपनी मूझ है, क्योंकि और प्राणियोंमें विवाह जैसी रस्म नहीं पायी जाती। आदमी पशुओंको पालता है और जो पशु पूरी तरह आजाद नहीं है अन्नके गर्भाधानका प्रबन्ध करता है। अन्न गर्भाधानको विवाह नाम दिया जा सकता है। वैदिक कालके शुरू-शुरूमें या मानव समाजके बालपनमें विवाह नामकी कोठी चीज न थी। विवाहका सम्बन्ध गुलामीमें है। विवाह आदमीकी दासताकी निशानी है, आदमीके पत्नका चिह्न है। जैसे-जैसे आदमी समाजके बन्धनामें ज्यादा-ज्यादाह जकड़ता गया, वैसे वैसे विवाहके बायदे सख्त होने गये और वैसे वैसे आदमीका वामनापरसे बाध हटना गया। आज भी जिन्हे-जगली जाति नाममें पुकारा जाता है, वह बातनाके लिहाजसे अद्वैत ज्ञानियोंके कहते हैं, 'मनुष्य समाजके अद्वैत आजादी छोकर जब सामाजिक बन्धनमें पैसा तब वह अितना आजाद था कि उसे किसी तरहके विवाहकी जरूरत न थी, अन्नकी वामनाओं बाधमें थी पर समाजके माथ रहकर खाने पीनेका सुभीता हो जानेसे वह अपनी वामनाका समुल्लस हो बैठा।

समाजकी अन्नके बन्धन सख्त करने पड़े। सबमें पहले समाजने आदमीका बाधनेके लिये अन्नके यह आजादी छोटी कि वह गर्भाधानके मामलेमें पूरा स्वाधीन न होगा। आजके पालतू पशु भी कहाँ आजाद हैं ? गर्भाधानका विवाह बढ़कर विवाह नाम हो बैठा। यह है विवाहकी अमलियत।

गर्भाधान नामी विवाह आज सुहाग-रान नामसे मौजूद है। गर्भाधानके अन्न वक्तके रिवाज जब अन्नका संस्कार नाम था, वमीके नष्ट हो गये। सुहाग-रानकी रीतियाँ अब वे नहीं रही। सुहाग-रान खतम हो रही है। यह खतम हुआ कि गर्भाधान नामी विवाह अकदम खतम। गर्भाधान संस्कार अन्न दिनों ज्यादा जोर पकड़ गया था। जब दो-दो तीन-तीन बरसकी लड़कियोंकी शादी चल पड़ी थी। अन्न वक्त जिसकी जरूरत थी, अब नहीं। सौ, दो सौ, पाच सौ बरसमें, अगर मनुष्य समाज अितना समझदार हो गया कि वह अपनी वासना-ओपर काबू रख सके और अितना आजाद हो गया कि वह दुनियाभरसे अपना नाता जोड़ ले और मेल मुहब्बतसे रहने लगे, तो विवाहकी रस्म खतम हो जाये। हमारा खयाल है, मनुष्य समाज जिस जगलीपनमें निकलकर आजकी सम्यता तक पहुँचा है, अंक दिन पूरा सम्य होकर अन्नी जगलीपनको अपना लेगा जहाँमें वह चला था। यह अंक अलग विषय है, पर यहाँ अितना साफ कर देना जरूरी है कि मनुष्य जब फिर जगली बनेगा तब वह जगली न होगा। बहुत संस्कृत और मध्य होगा, अन्नका आत्मा समझकर साफ हो चुका होगा। वह जिन जगलीपनको भूखंतावदा अपनाये था, नुकसान कर रहा था, आगे बटनेमें हका हुआ था, अब अन्नी जगलीपनको सोच-नमसझकर अपनायेगा और मेल मोहब्बतके साथ दूसरे चत्रकी तैयारी करेगा। अन्न चत्रकी अगली मञ्जिल क्या होगी, अन्नके वारेमें कुछ कहना बेकार है। हमारे कामकी अिननी बात है कि विवाहकी अमलियत सिर्फ अितनी है कि मनुष्य जैसा प्राणी अपने पीछे, अपने जैसे और अपनेमें अन्न प्राणी छोड़ सके। वन, अितनी बातको ध्यानमें रखकर हमें विवाह करनेके ढग अपनाये चाहिये।

मौतका मतलब है, शरीरका बेकार हो जाना। मनुष्य समाज जब बालक था, तब किसीके मर जानेपर न रोता था, न अन्न मरे हुये आदमीके वारेमें कुछ सोचता था। बदरमें अपने छोटे बच्चेके जिसे मोह है, मादा अपने मरे बच्चेके सख्तकी छह-छह महीने गलेसे लगाये फिरती है, पर बड़े बदरकी मौत हो जानेपर बदर समाज मरे बदरके लिये न रोता है, न कुछ और

करनकी सोचता है। कभी कितानोमें हमन पडा है कि कहीं-कहीं कुछ खास तरहके बदर किमीके घर जानका सोक मनावे हैं। हो सक्ता है यह बात ठीक हो, पर शोक मनाववाले बदर अम मरे दूध बदरके धानेम और ज्यादा नहीं सोच सकते।

मनुष्य समाजमें मुर्दोंको दफन करन जमानका रिवाज बहुत पीछ चला। कुछ रिवाज असे ह जो पहले य, पीछे बद हो गय फिर चल पड फिर बन्द हो गय। कुछ रिवाज असे हैं जो कहीं कहीं बद हो गये कहीं कहीं जारी ह। वे रिवाज य ह — मुर्दोंको बहा देना मुर्दोंको जठाकर बहा देना मुर्दोंको जानवरोंको मिठा देना। बहा देनका रिवाज जलान और दफन करनके पहलेका है। अमको आदमीन प्रकृतिसे मोखा। दूबनपर आदमी मरकर अूपर तैरन लगता था। अुसको जानवर खा जाने थ। बहा देनका रिवाज मुर्दोंके प्रति माह होनम जंचा नहीं। अुसे दफन करने और जलानका रिवाज अपना लिया गया। जलानके रिवाजके बाद और नय तजुबें हुआ। और अुन तजुबोंके बलपर अुमने गर्भवती औरता जहर खाय हुआ साँपके काठोको जलानकी जगह बहानका रिवाज शुरू किया। जानवरोंको बिलानका रिवाज पारसियोंका छोड और कहीं नहीं रह गया। अुनमें यह रिवाज किन मना भावोंको लकर मौजूद है अुनको हम यहाँ नहीं लिखना चाहते। यहाँ सिफ अितना कहना चाहते ह कि मरनके बाद आदमीका जिस्म मिट्टी हो जाता है अुम जिस्ममें और मिट्टीमें कोअी अंतर नहीं करना चाहिये। यह अ तर रहेगा हो कि आदमीके देहकी मिट्टी सभन लगती है आदमियामें बीमारी पैदा करती है पर यह बात तो गाय भम बुल्ब लि की देहके साथ भी है। आदमी जिस तरह कुल बिल्लियोंकी देहके जिजे सोचना है वैसे ही आदमीकी देहके लिए सोचे। सत्य चाहता है आदमी मुर्दोंकी देहको मिट्टी समझ। अंसा ममसकर अुमको फेंकना या ठिकाने लगानके तरीके सोचे। अुमके साथ अेमतलबकी भावना जोअर तरह-तरहकी बेतुकी बातें सोचकर, अपना मन गदला न करे। सहज विस्वासको अविस्वास और मिथ्या विस्वासके जालमें न पँगाय।

रा भा २

सत्य और सुख दुख' अन्वयमें कहा जा चुका है कि दुख कोअी वरी चीज नहीं। दुनियाके कम दुख दर्द अंसे ह जिनमे बचनकी जन्मरत है। बहुत नो आदमीको सुख पहुँचानके लिए ह। बन्चा पैदा होनसे पहले जा नद माँकी होता है वह अुहीको ज्यादा तकलीफ देता है जो तददृश्य नहीं होती। जिनका जीवन प्राकृतिक होता है अुनको बहुत मामूली तकलीफ होती है। अम मामूली और प्राकृतिक तकलीफको ठेकर समाजम सबको बहम खन हा गय ह। जहा जरा तकलीफ हुआ कि घर बाँके दौड किमी ओपाने पाम और लग अममे आड फून्को प्राथना करन। अगर वहु सामकी प्यारी हुआ तो वह भी अुपारा अुनारती है देवनाओंके नामपर अठावा अुठाकर रखती है और अगर कहीं वह पहुँचती गभवाली हुआ नब तो न जान क्या क्या तूफान खड हो जने ह। बहुत तकलीफ हानपर दवा शुरु कम चलत ह मतर जतर ज्यादा। हम जन जोअ थ तब मोहलमें आय लिन आड फून्का तमाशा लेखनको मिलता था। अब बार अक औरतको वहुद तकलीफ थी अुमके लिए अक पडितन यह किया—

अक कमिकी यात्री भगयी थोडा गरू मगाया, अुम गरूको पानीमें घोत्रा। गरूके रगमे वालीमें अरू चत्रब्यूह बनाया और थालीमें बाडा पानी डालकर अुस औरतको पित्रा दिया जिसको दद हो रहा था। पीनके कुछ देर बाद दद कम हुआ और थोडी देरमें अुसे बच्चा हो गया।

चत्रब्यूह बनाना हमन मोख लिया। और अन्ने ज्यादा बार हम भी अम कामके लिए धुत्राया गया और सफलता मिली। जब हम कुछ बन् हुआ और जन्म मत्रमे हमारा बिश्वास अुठ गया तब हमन अुम कामको छोड दिया। तीम घरसका अुपरमें हम किमी वदवकी कितानवमें यह लिखा मिला कि कामकी थालीम गरू पिला दनमे दद कम हो जात ह और बच्चा पैदा होनमें आसानी होती है। रहा चत्रब्यूह अुमके बारेमें ममाजन यह बिश्वास फ़ैला रखा कि अुमके देवनसे बच्चा पैदा होनमें आसानी हानी है। यह मिथ्या बिश्वास और दवा मिलकर कभी कभी कुछ काम कर जात ह, कभी-कभी बिलकुल नटा।

चक्रव्यूहके मिथ्या विद्वानस समाजको यह नुकसान हुआ कि गरु, जो दवा थी, चुसकी तरफसे लगाकरा नजर हटकर चक्रव्यूहकी तरफ चली गयी। और गेरुकी शोध अक्षयम पीछ पड गयी। बार चक्रव्यूहका मिथ्या विद्वान न हाता तो गरुपर वैज्ञानिक खोजबीन की जाती और अन्न खाखीनसे हो सकना है समाजका लाम पहुँचा होता।

अिमी मिलसिलमें यह लिख देना ठीक होगा कि मारुतिया बुखारमें पीपलके पत्तपर गरुन कोअी जन्तर लिखकर दूखार अनुारनेका रिवाज आजतक मौजूद है। कोअी-काअी नाममय जन्तरको महत्व दकर गरुकी बजाय केगरसे जन्तर लिख देने हैं। आर मिथ्या विद्वानको महत्व न मिला हाता तो अिस तरहकी भूल कमी न होनी।

मिथ्या विद्वानकी मददसे अँसे मीकरपर दाअियाँ खूब फायदा बुझाती हैं, और अँसे मीकरपर घरके मनी लोफ बबराय हुअ हात है और वह सब करनेके लिअे तैयार होत है, जो अँसे करनेके लिअे कहा जाअे। दाअी जो बच्चा जनानक कामकी मुखिया होती है, बसकी बान बँस टाली जा सकनी है। अन्न बकत जो बुखारा, बुखादा बनाया जाता है किया जाता है।

बच्चा पैदा करनका काम औरत करती है, अँसा नही मार पगु करते है। पगुअके बच्चे जल्दमें हीउ है और आदमीक बच्चेम कअी गुना तदुस्त हाते है। कअी जगली जातिया अँसी है जिनक बच्चे जल्दमें पैदा होत है व मी दहरी बच्चासे ज्यादा तन्दुरुस्त हात है।

जमके रीतिरिवाजोवे बारेमें अब ग्यादा बहनकी जहूरत नही, मिर्क अिनना समय लेना बारी है कि हर जनर-मनरक सोडे काअी-न-कोअी विधानकी सवाअी छिरी रहता है। अितना सवाअी हाती है अुनना पाअण हाता है, अिनना अुनक साथ मिथ्या विद्वान रहता है अुनना नुकसान हाता है। अुस नुकसानसे न बचत बचना है न समाज। अिमी मिलसिलमें अक्ष आखीती मनिअ —

मन १९२३ में नागपुरमें अण-मरुतियाह आरसे चल रहा था। स्वयंसेवकोंका अक्ष गिविरसुना हुआ था।

वहाँ किसी स्वयंसेवकको बिच्छूक डक मार दिया। किसीन कह दिया, हम बिच्छूका मत्र जानते है। हमारे पास खबर पहुँची। हम मत्र नहीं जानते थे,— पर स्वयंसेवकके सरदार होनेके नात हम अुनके साथ चल दिए, जो हमें दुलान आया था। डिपार्में पहुँचकर हम बिच्छूकाट स्वयंसेवककी अुसो तरह नाउ-दूँक करने ला जैन मत्रवादी करत है। हमन कअी बार बिच्छूका जहर बुखारसे मत्रवादिआको देला था। हमें अप आया मिनिअ न हुआ था कि अक्ष मत्रवादी आ पहुँचे। अँस ही लागेन अुनके आनकी खबर दा हमने छुडी ली। वह काम नय आउ हुअेका मुनद कर दिया। जब हम जान लगे तो नय सज्जन बोले, आप ठीक जर रहे थे, मरी क्या जररत थी। हम हेरान हुअ कअीकि हम मत्र जानते न थे। हमने अब यह किया कि नाउ दूँकका काम नय आदमीके मुनद किया और हम खडे-खडे दवने लगे। घोडी दे-में जहर अुतर गया। हम नये मत्रवादीके साथ-साथ बाहर आये, बोले, हम मत्र नहीं जानते, आपने बँस कहा ठीक कर रहे थे। वह मल आदमी थे। बाल, मत्र कुज नहीं होता, हात यह है कि अब बिच्छूक डक मारता है तब अुसके जहर चडनेकी, कोअी दवा मल राक नके मत्र हागिअ नही राक सगता। मत्र जहर अुनार सकना है। जहरको पूरो तरह चडने दना ही हागा। मत्रवादी अगनी अिस कमधारीने बचनक लिअ किमीन किसी तरह अितनी देर जरर कर दत है कि वह अुस बकन पहुँचे जब जहर पूरा चड चुका हो। अुनके लिअ अुनारनेका काम रह जाता है। अुनारनेके लिअ यह करना पडता है कि पहल अुस आदमीका ध्यान अगनी तरक करे अिते बिच्छूने काग हो। फिर अन्न मनमें कुज गुन-गुनाअर अुससे बहना होता है, अिस आह काग है अुनको दिलके खिलार पडका दा अिनने दिलका मून आर भारकर नीचेकी तरक आनकी जल्दी करे। अुस पडकका नतीजा यह हाता है कि तबलाकया जहर नीचे अुतरना शुरू हा जाता है। दस-तीब बार अिस तरह करनेसे तबलीक अुस जह-तक आ जाती है जहाँ बिच्छूने डक मारा होता है। अुस तबलीकको मिठायेक लिअे मत्रवादी

गरम नमकसे सननेकी सलाह दे देता है। वताअिअे मत्र क्या रहा? मत्रवादी जहर न अुतारता तो जहर अपने आप नीचे अुतरता, हाँ, थोडी देर लगनी। प्रवृत्तिने हर प्राणीमें दिखे खिलाफ हाथ-पाव जटवनका प्रवन्ध कर रता है। आप देख सनने हँ। जैसेही बच्चेने हाथमें कोअी भिण्ड डक मार दे वनेही वह बच्चा अेकदम हाथ झटपना शुरू कर देता है। यही है बच्चेका अपना अिलाज आप करना।

मत्रवादी पैसे कमानेकी खातिर लोगमें मत्रकी श्रद्धा जगाते रहते हैं, अुसकी वंशानिक्तताको छिपाये रगते हैं। यह बात आपसे छिपी हुअी नहीं कि हर मत्रवादी जब किसीको मत्र सिखाता है तब अुसकी शन होती है कि वह अुग मत्रको किसीको न बताये। अिस सिलसिलेमें अेक ओर मुन लीजअे।

फोरोशावादमें अक आदमी था। वह हमपर बडी श्रद्धा रखता था, हमको गुरु मानता था। अेक दिन हम मत्रोवे खिलाफ बोल रहे थ। वह आदमी मौजूद था। जब हम अपने कट चुने ओर सब चले गये, वह बडी श्रद्धावे साथ बोश, महाराज, आपकी बात मैंने सुन ली, पर मैं खुद अेक मत्र जानता हूँ अुसका चमत्कार मैं आपको दिता सकता हूँ। हमन कहा, दियाओ। अुसन मत्र पठना शुरू किया ओर अपने अिधमें अेक जगह सुओी खोप दी। बोला, देखअिअे, यह है कि नहीं मत्रका चमत्कार, भेरे खून नहीं निरगला। हम बोले, क्या तुम हमारे कहनेसे मत्र पठे बिना सुओी खोप सजत हो? वह याला जरूर, हमने कहा पाओ। अुसने वंसा ही किया ओर खून नहीं निकला। यह तमाशा देखकर यह अेकदम भविनमें आवर हमार पावपर गिर पडा। बोला, ठीक है मत्र कुछ नहीं होते ओर पूछ वंठा फिर यह मामला क्या है? गून क्यों नहीं निकलता? हमने अुसे बताया जब तुम अपने हाथमे पालको तींच लेते हो तो खूनकी नलें नीचे रह जाती हैं ओर सुओी अुस जगह जाती है जहाँ नस नडी है, फिर खून कहूमि निशलेगा?

यह बात हमने अिसलिले लिख दी कि हर रीति-रिवाज ओर मत्रके पीछे धड्डाके घटाटोपमें विज्ञानका

अन छिप जाता है ओर अुससे बहुत नुकसान होता है। अिसम वचना हरेकका काम है।

विवाहकी रस्में अिसी तरहनी है। निसी रस्मेंमें कोअी अरुत छिपी हुअी है किसीमें कोअी वंशानिकता ओर कुछ अंसी रस्में है जिनमें दोनोमें अन नहीं। वह लोगोंने पैसा कमानेके लिये गड ली है। आदमीके विश्वासकी वमजोरीसे आदमी खून पायदा अुठा रहा है।

विवाहमें आरनीकी रस्मको ले लीजअे। यह रस्म मदिरोंमें खूब चरती है। अिसमें होना यह है कि षालीमें ओर चौजेके साथ साथ अेक जलता दीपक रहना है। अुसको वाली समेत दो तीन वार 'अुम आदमीने दापें-त्राप करने है जिसका आरता करना होता है। अिम रस्मकी तहमें जरूरत छिपी हुअी है। अब यह रस्म बिलगुल बेकार है। जरूरत यह है कि जिलने पुरान मदिर ह, अुनकी वेदियाँ अंभी जगह बनी हुअी हैं जहा वरीर-वरीर चौनीसो घट अ-धेरा रहता है पुजारी दिवेकी रोशनोमें मूतिवा शृगार करता है। अुसे कभी-कभी अपने शृगारको जांचनेके लिये दीपकको आँवके सामनसे हटाकर दापें-त्राप करना हाना है। अंसा त्रिये बगर वह मूतिवे दोनो तरफके शृगारकी पूरी जांच नहीं कर सकता। विवाह शादियामें आम तीरसे रस्में रातको होती हैं ओर दुन्दे-दुन्देनको सजानेका काम भी अुमी वकन होता है। आरतीकी रस्म हमेशा सजानेके बाद की जाती है जब यह रस्म चली थी तब वह रस्म न थी, कलाकारकी जरूरत थी। अब वह रस्म है ओर सिवाय नुकसानके कोअी फायदा नहीं। अब दिनमें खुले मंदानमें आरता किया जाता है ओर अुसी तरह दिया जलाकर किया जाता है जिस तरह अन्धरेमें पा रातमें।

रस्मोके सिलसिलेका सिलसिला अंसा है कि अुसके लिये अेक अलग किताबकी जरूरत है। पर दो-अेक रस्मोका जिक वरके हम पढ़नेवालीमें अंसी भावना जगा देना चाहते हैं कि वे अपने आप ही रस्मोकी परत कर सकें।

विवाहने अवसरपर कूडी यानी घृता पूजनेका रिवाज है। वह भी अेक जरूरत है। गर्बमें शायद

आज भी अक्सर ज़रूरत हो। शहरोंमें वह विलकुल बेकार चीज है। कूड़ी या घूरा अम जगहका नाम है, जहाँ मूह्लेभरका कूड़ा जमा रहता है। अमकी पूजनेका रिवाज है। पूजाके और काम छोड़कर असली काम यह होता है, वहाँ अक जलना हुआ दिया रखा जाता है। यह दिया ही अमली ज़रूरत है। यह असलिये होता है कि रातके वक़्त बाहरसे आये बराती यह जान ल कि यहाँ कूड़ा पड़ा है और भूलसे अपने पाँव अमपर न रखें। दिनमें दियेकी ज़रूरत नहीं, पर, अगर घूरेकी पूजा दिनमें हूँगी, तब भी दिया रखा जायेगा। दिया रखना कभी ज़रूरी और अकल-मदीका काम था, आज गैरज़रूरी और बेवकूफीका काम है।

यो तो शूगार रोज ही मच करते हैं, पर विवाहके अवसरपर वह रस्मके तौरपर किया जाता है और आजकल वह अतना भद्दा मालूम होता है कि शहरमें रहनेवालोंकी आँखें असे देखना पसन्द नहीं करती। जिस तरह मँहदी रचाना, काजल लगाना, रालीसि चेहरेकी रगना, हाथमें कलावा बाधना जित्यादि कुछ रस्में ज़रूरतसे हैं, कुछमें वैज्ञानिकता छिपी है, कुछ लोभकी बीजाद है, कुछमें ये तीनों मौजूद हैं। काजलको ले लीजिये, अममें वैज्ञानिकता ना यह है कि वह दबा है, आँखोंको रोगनी देना है। अमके लगानेकी बात बँधकके हर घुघमें मिल सक्ती है। ज़रूरत यह है कि वह शूगारका अग बन गया है और वाली आँखें ख़ुबमूरतीकी और बढा देती हैं। यह दूसरी बात है कि काजल बेवकूफीसे लगाकर खूब-मूरतीकी बढानेकी जगह पडा दिया जाये। काजलकी बजाय मुरमा ज़्यादा ठीक रहेगा। क्योंकि वह सलाज़ीमे लगाया जाता है। वह अगना ही लगना है जिनका ज़रूरी होता है। कामकी बीजाद यो है कि काजल लगानेवालीको कुछ पैसे मिलते हैं। असलिये वह दिनमें लगाया जाने लगा। ज़रूरतके लिये दवाके तौरपर काजल रातकी लगाया जाता है। काजल लगाकर मो जाना ज़रूरी है, तभी वह फायदा करता है। पर रस्ममें और फायदेम क्या लेना-देना ? रस्मके माने है अंम काम जहाँ अकलको दखल

न हो। अब रह गया अिम रस्मका धोखा, वाली आँखें तन्दुरुस्तीकी पहचान है। पूरे तन्दुरुस्त आदमीकी आँखें कम कात्री होगी। बीमार आदमीकी आँखें अपना कालापन अेकदम खो बँठती है। काजल अिमलिये भी लगाया जाना है कि लोगोंको धोका दिया जा सके। और बीमार आँखोंको तन्दुरुस्त आँखोंका रूप दिया जा सके। अिम सिलसिलेमें पढनेवालोंके मनमें कुछ और सवालगत अ़ुठ सक्ते हैं। पर अगर वे ज़रा कोशिश करें तो अपने मवालका जबाब ख़ुद सोच सक्ते हैं। अ़ुदाहरणके लिये कुछ आँखें नीची होती हैं, कुछ पीली। पर हिन्दुस्तानमें वैसे आँखें बहुत कम मिलती हैं। अ़ुन आँखोंके पलक काटे होने हैं। वह भी वाली अच्छी लगती है। हिन्दुस्तानी आँखोंकी वंसी आदत है, अिमलिये अ़ुन आँखोंको काजल सुन्दर बना देता है।

रीति रिवाज़ोंने हमारी अकलको अेकदम पीछे डाल दिया है। कुछ नावमश जादमियोंके हाथोंमें अैसी सत्ता दे दी है कि वह समझदारोंपर शासन करने लगते हैं। रीति-रिवाज़के मामलेमें विरादरीके अनपद और मूर्ख लोग रस्मोंकी याददातके बलपर किसीपर रोव जमा बँठते हैं। कभी-कभी अिम रस्मोंको लेकर तरह-तरहके झगडे खड़े हो जाते हैं। कभी रस्में अैसी हैं जो घर-घरमें अलग-अलग तरह मनायी जाती हैं। अ़ुम वक़्त तो बड़ी मुश्किल हो जाती है, जब किनी विवाहमें अेक ही रस्म लडकेवालके यहाँ अेक तरह मनायी जाती हो और लडकीवाठेने यहाँ दूसरी तरह। दोनोंमें, जो जोरदार होना है, अ़ुधीकी रस्म चलती है। अगर दोनों बराबरके हूँगे तो या तो दोनों रस्में होनी हैं या दोनोंकी कौसी निचडो तैयार कर ली जानी है।

विवाहकी अनगिनत रस्में हैं। अ़ुन सबपर यहाँ लिखा आ सक्ता, पर अितना ही याद रखना काफी है कि रस्में हमारे अ़ुपर अविशकार न जमा पायें, अ़ुनपर हमारा अविशकार रहे। वे ज़रूरत लिहाज़मे बदलती रहें। अिसमें शक नहीं कि रस्में बदलती रहनी हैं, बदलती रहीं हैं, और बदलती रहेंगी। पर क्या ही अच्छा हो अगर अ़ुन रस्मोंको हम मोच-ममसवर बदडें। मोच-ममसवर बदलनेसे रस्में हमारे कामकी चीज बन सकेगी, अपने आप बदली हूँगी रस्में हमारे काममें अडचन बनी रहेंगी।

सन् १९०३ का जिव है। हमारे अंक दोस्तके घुने बापकी मीत हुआ। अमका बाप अितना बूढा था कि शोध मनानेकी जरूरत न थी। अघर हमारा दोस्त रस्मके मामलेमें अितना अद्वार था कि किमी रस्मको अपनानेके लिये तैयार। ये दो बातें मिलकर अंक अजब रूप ले बैठी। मुर्देकी रथी बनानेने जलानतक बरम बरम रस्मोका सवाल अूठा। हमारे पढ़नेवाले अक बात और नोट कर ले कि हमारे दोस्तके बापकी रथी ले जानेमें जितने आदमी शामिल थ उनमें अंक भी अंसा न था जिसकी अमर ३०-३५ मे अूपर हो। हमारे दोस्तके घरमें कोअी बुढिया न थी। कोअी अंसा न था जो किसी दास रस्मपर जोर देता। नर्तीजा यह हुआ कि जो रस्म जितने बतानी हमारे दोस्तने की और करीब करीब सय निभ गयी। अब मुर्देको चितापर रखनेकी घडी आयी। यहाँ मुदिबल पडी। हमने बहा, हमारे यहाँ मुर्देको चितापर लिटाया जाता है यानी पेटके बल। कुछ लोग बोले नही चित लिटानेकी रस्म है। यह सुनकर हमारा दोस्त हँस पडा और बोला, भाअी अब भेरे बाप तुम सबके बाप, तुम जैसा चाही करो। रस्मपर चल पडी बहस, हमारी दलील थी कि पेटके बल लिटानेमें बुदिघमानी है, मूल-वृक्ष है, वैज्ञानिकता है और शिष्टता, चित लिटानेमें हमें कोअी अंसी बात नजर नही आती। पटके बल लिटानेमें मूल वृक्ष यह है कि पेटकी तरफका हिस्सा मुलायम है, जल्दी आग पकडेगा और आदमीका चेहरा जो आग जलनेमे बुरा रूप लेगा वह लोगाकी नजरोंमें न आ सकेगा। शिष्टता यह है कि वह अग नीचे रहने हैं जिनको आम तौरसे छिपाय रखनका रिवाज है। वैज्ञानिकता यह है कि मुर्दा आग लगनेपर जो अूपरकी तरफ उठता है, अब नीचेकी तरफ आयेगा। और चिताके विघडनेका डर न रहेगा। टांगोका घुटनेसे नीचेका भाग अूपरको अूठगा और वट अपने आप आगमें जा पडेगा। अिसलिअे यह रस्म ठीक है। पर अिस रस्मवाले हम अनेके थे और बाकी गव थे चित लिटानेकी रस्मवाले। हम हार गये। आद्विर यह तय हुआ कि पहले पट लिटाया जाअे और फिर चित, बैसा ही किया गया।

मुर्देकी मिट्टीको ढिकाने लगानेकी रस्में अतगिनत है। नयी-नयी रस्में भी चउ पडी हैं। कलकत्तेमें अिअनमें जलानेकी रस्म है। बही-बही विजलीमे जलानेकी रस्म है, पर अमीतक मुर्दम अितना मोहनही छूटा कि अमका कुछ अुपयोग नर लिया जाअे, अिम तरह गाय-भेमीक। अिस मामलेमें मुनार होनेमें सैकडो बरम लगगे। जो मुधार अवतक हुअे हैं अुन गवमें अरररके लिहाजसे अोग कानी आग बडे हैं पर मोहने लिहाजमे बहीब वही है। मुना था, लडाओके मौजेपर किमी डॉक्टरको मुर्दाक अुपयोगकी बात सूत्री थी, अुपमम बैसा करनेसे रोक दिया गया। अुने यह डर दिवाया गया कि अरर अंसा किया गया तो अिस अुपयोगकी खातिर आदमी अंसे ही मारे जाने लगगे जैसे पशु पवपी। मुर्देका अुपयोग न हो सका।

अिमी सिलसिलेमें कपाल क्रिया नामकी रस्मका घोडा जिव कर देना ठीक होगा। अिस रस्ममें यह होता है कि जब मुर्दा काफी जल चुका होता है तब बैससे अुसकी खोपडी फोड देने हैं। अिसकी तहमें मूज वृक्ष है, जरूरत भी है। अुम वकन अिसकी बहुत जयादा अरररत है जब चिताके आसपास औरनें या बच्चे हो। गर्भवती औरतको जलानेका रिवाज नही है। वजह यह है कि कभी-कभी गर्मी पाकर पटमेंसे बच्चा निकडरर चितामे डूर जा पडता है। अुससे लागेके घबरा जानेका डर रहता है। ठीक जितो तरह आदमीके खोपडीक अदरका भेजा कभी कभी अितना गर्म हो जाता है कि वह खोपडीको आवाजक साथ तोडता है और अुसके टुकटोको दूरतक फेंकना है, अिसलिअे खोपडीको जान वृक्षकर तोड दिया जाता है ताकि भाप निकलवने लिअे रास्ता बन जाअे और खोपडी अिअर-अुधर अिअरकेका डर न रहे। अिसीका नाम कपाल क्रिया है।

रस्म रिवाजाको अपनी सीमामे बाहर नही जाने देना चाहिये। चाहिये यह कि समय समयपर रस्म रिवाजोकी जांच पडताल होनी रहे, अुनमें कमी बेसी होती रहे और वे कभी अंमी न बन पाअें जो हमारे विदवासपर अंधविदवाम बनकर अमी रहे।

स्व० सुब्रह्मण्य भारतीके कान्हा-गीत

• प्रो के असे. विद्वन्मरम, अेम. अे, 'माख्जाजन' •

६. कान्हा मेरे सद्गुरु

पुनाग-वराळि रागम (तिस्रजाति अेकताल)
गय अिम गीतमें, राष्ट्रके महाकवि भारतीने अदभुत तथा
भक्ति रसका आश्रय लेकर अपन आराध्य कृष्णका वर्णन,
नदगुरुक रूपमें किया है। अूनका कहना है—

शास्त्रिगळ पल तेडिनेन् अगु
शर्केंयिल्लादन शर्केंयाम् पळ
गोस्त्रिगळ शोल्ह मूडरतम्-भोय्मं-
क्कूडयिल् अण्मं किडेक्कुमा ?—नेयिअल
शास्त्रि अन्द वहेंयिनु-जा
माय अूर्गन्दडल् वेण्डमे-अेम्
आस्त्रि मिर्दनिडे-निवत
आयिर तोल्ह्ळ शूण्दम ॥ १ ॥

‘मैं कभी गास्त्राकी खाज कर डाला। अूनमें
अेनी बोअी वात नही दिवायी दी, जो शकास्पद न हा।
निष्क निवारण कर लनकी बोअी वात अूनमें हा—
अियोमें शक है। आस्त्रि व हे कथा ? प्रावान गोत्राकी
गेवा बघारनेवान मूटाकी पूठ-मूठकी बाठा रूपी कू
बरकनका दोहरी ही ता है। अूनक जरिये
सचकी प्राप्ति कैसे समभव है ? अिम अत्रपणमें ला
रह्ण हज ना मर हृदयमें हमगा यह अुन्युक्ता प्रबल
हा रहा है कि यनवन प्रकारेण,अगकी मायाकी पहचान
पा लनी चाहिस। अिम प्रयत्नमें लक्ष्म हा मूय
नित्य ह्त्रारा मुनायान आ घरा।”

नाडु मूळविल्लु अडि नान्-पल
नाट्क्ळ अलेडिडु शोडिनिल्-निर्-
न्दोडु यमुनेक्करैयिल्-तडि
अुडिक्केडार आरु कियवनारु ओळ
कूडु मूरुन् तडिपुनान्-कुडि
शोण्ड विणियु अडेक्ळ-वेक्क

ताडियु कण्डु कर्णाये-पल
सगति पेडि वरहेंयिल्, . ॥ २ ॥

दुनिया भरका चक्कर लाते हुअे, कभी दिन
भटकते बीत। अेकवार दक्षा, अल प्रवाह-भोमित यमुनाक
किनारे-किनारे, अेक बूड सज्जन, लाठी टेकन हुअे चले
जा रह्ण थे। मैं अूनक पास गमा। अूनका अुज्ज्वल
मुख, स्वच्छताके आगार रूपी नयन, “अ अण्-अण्” तथा
सन्द साठी आदि दल, अुहें प्रणाम किया। मैं फिर,
अूनसे कभी बातें क्हाया चला। अितन ही में, . . .”

अेम्पुत्तायं आरिन्दवर्-मिह
अिन्धुर् रैतिडलायिनर्-“तन्धि,
निन्दुत्तिक्कुत्तुदवन् चुडर्
नितिय मोनस्त्रिपवन् अुनर्
मभर् कुलत्तिल् पिरन्दवन्-वड
मायपुरैपति आडुडिन्गान् कण्न्
तर्पेच्चरणेड पोवेवेल् अवन
मत्तिय कूरवन्” अङ्गनर् ॥ ३ ॥

“अुन्गान मेर मनकी चाह नाप ली बीर प्रेनपूयं
स्वरमें क्हा— ‘रे भाअी अुत्तरमें, महान् मवृषपुरीका
गायन कर रहा है अक ‘नाहा’—नामधारा राजा।
वह वक्क, तुम्हार विचारके अनुकूल है। वह अुंचे
राजकुलमें पैदा हुआ था पर अब वह अुज्ज्वल नित्य
नमाधिमें लान है। तुम अूनकी गरपमें जाका ता वह
तुम्हें सचका परिचय करा देगा।”

मा मयुरैपति शोन् नान् अगु
बाय्हिडु कण्नेप्याडिय अेन्डुन्
नाममु अूध करत्तुने शोत्तिल्
नन्मं तरहेन वेण्डिनन्-अदन्

कामर्नप्पोण्ड वडिवन अडि
काळिपर नटपु पवकम कुट्ट
भूमिषकावकु तोयिल्ले अेद-
प्पोवु भोलुत्तडु चित्तं ॥ ४ ॥

‘ मैं सुरन्त अस सवमे वडी मयुरापुरीमें जा
पूँचा । काहाके दशन किय । अपना नाम घाम
बताकर मनोरथ व्यक्त किया और कुशल प्रदान करनेकी
प्राथना की । पर कामदेव जैसा उसका सुंदर रूप
नवयुवकीके साथ अमकी मैत्री और चाल चलन विगनी
हुथी भूमिके शासन करनेका अमका काम, उसकी
चित्तानीलना

आडलु पाडलु कण्डु नान्-मुन्नर्
आडुकरयिनिल कण्डुवीर् मुनि
वेडु धरित्त कियवरंक् कोल्ल
वेण्डु अन्नुळ्ळत्तिल्ल ओण्णनेन्-विह
नाडु पुर्नरिन्दु मन्नवन् कण्णन्
नाळु कवल्लियिल्ल मूयहिनेन् तवप्-
पाडु पट्टीक्कुं विळ्ळगडा अण्णे
पायिवन अेडुडन कूचवान् ? ॥ ५ ॥

(तथा) नाचन गानमें कौगल देखने ही
भरे मनमें हुआ कि यमनाके किनारे मुनि वेपधारी जो
बूढ़े मिले अुटे मार ही डागना चाहिस- मैं मन-ही
मन सोचा ‘ अिम छोऩे देशका शासक यह काहा, जो
कि हमेदा चित्ता मग्न ही बोलना है कैसे मुझे सत्यका
परिचय दे सकेगा ? जो बड़ बड़ तपस्विना तपके
लिख अजात है तत्सवधी जाने यह पायिब कैसे बता
पायेगा ?

अेन्नु करवि अिर्नददुन् पिन्नर्
अन्नत्तनि अिड कोण्डु पोय्-‘ निने
नन्डु महवुह । मेन्वन । -पर
ज्ञान अरुत्तडवकेटयनी नेज्जिल्ल
ओण्डु कवल्ल अिल्लामले चित्तं
अन्नु निरत्तवकळिप्पुट्टे तन्नं
वे डु मरुत्तडु पोय्दिल्ल अणु
विण्णे अळक्कु अरिवु तान् ! ॥ ६ ॥

‘ मैं यह मोचना ही रहा कि वे मूज कही अकान्तमें
ले चले और कहन लग- वटा वेग कुगल हो ।
अम परम ज्ञानकी वान मुने । हृदयको चित्ताने अडूता
रखकर विलकुल निश्चिन हो । वडी अकाप्रनामें मनको
स्थापित कर आनन्द मग्न हो अपन आपको जीवनकर,
जब तुम सुध बुध भूल ज ओ, तमय हो जाओ तभी
अुधर विद्वन्त आकाश भरको नापनवागी बुद्धि हो
जाती है ।

“ चन्दिरन् ओति अडेपशम अडु
सत्तिय नित्तिय वस्तुवाम्-अदंच्
चिन्निक्कु पोदिनिलवडु तान-निनेच्
वेडु तपवि अरळ शेयु-अदन्
मत्तिरत्ताल्ल अिव् अल्लेला-वद
मायक्कळिप्पेर क्तवकण- अदंच्
वन्तत पोय्-अेन्नुत्तडु-मठच्
वात्तिर पोय्’ अेन्नु तळ्ळडा । ॥ ७ ॥

‘ अद्व ज्योतिष्मान है । वह मत्य है अक नित्य
वस्तु है । अभी तुम अमका मोचो तवयग वह तुम्हारे
पास आ जाता और तुम्हे गले लगाकर टूपाकी वपा
कर देना है । अिम विदवभरम अमकी मय शक्तिने
दृश्यमान मायाके तत्र तमाग देवो । जो अज्ञानमय
शासन कहते ह कि यह दुनिया मनन मिथ्या है वे
शास्त्र ही सचमुच असत्य है, अुट तुम दुत्कार दो ।

आदिमत्तिप्पोरळ आहु ओर-कडल्
आह कुमिवि अुयिहळाम्-अदच्
चोदियारिवेनु शायिद-तन्नंच्
चण्ड कदिर्हळ अुयिहळाम्-अिणु
मोदिप्पोरळ्ळ अेवैयूमे-अदन्
मेनियिल् तोण्डुडु वण्णगळ्-वण्ण
नोति अरिन्दि वम् ओदिये-ओर
नेमत्तोपिल्लि अियणुवार् ॥ ८ ॥

आदिम अट्ट वस्तु जो समुद्र है अममें अमउते
हुअ बुद बुद भी जीव है । ज्योतिकी धान अुस सूयक ।
चारो ओरसे बिपर पडनवाली विरण भी तो जीव हैं ।
अिअर दूसरी ओ जो चीजें विद्यमान हैं अुनकी अादिति
पर चमकनेवाले रगविधान कमी प्रकारके ह । अुनकी

रीति-नीति समझकर आनन्दित हो, किसी सोचे-भाड़े काममें लगकर जो प्रयत्नशील होने हैं .. "

'चित्तचित्ते शिव माडुवार—अग्नि
शब्दं कञ्चित्तुलहाडुवार—नेल्ल
मत्त मदवेकञ्चिद पोल्—नडे
वाग्दरमान्डु तिरिदुवार—अग्नि
नित्त निहृत्त्वदन्तुमे—अन्ते
नीण्ड तिरवळ्ळाल् वरु—अन्व
शुद्ध मुल्ल तनि आनन्दम्—अन्व
चन्दु कवल्लहळ् तञ्चिदये .. ॥ ९ ॥

' (वे ही) अपने चित्तमें शिवको पाते हैं । अघर वे भिल्लजुलकर सानन्द विद्वभरका शासन करते हैं । मदमस्त हाथीकोनी चाल अपनाकर वे गर्बसे घूमते फिरते हैं । वे समयने हैं—'अघर विद्वभमें दिन-ब-दिन जो कुछ होता है, वह सब कुछ हमारे परम पिताकी अनन्त कृपाके फलस्वरूप, मधुर शुद्ध सुख व श्रेष्ठ आनन्द मात्र है । जिसल्लिअे वे दूसरी समग्र चिन्ताओको दूर कर डालने हैं ।'

' जोति अरिविल् विळगवु—अघर्
शुल्लिच्च मतिमिल् विळगवु—अर
नीति मूर्ने वयुवामले—अन्व
भरम् भूमितोयिल् श्येदु—कल्ल
ओदिप्पोरळियल् कण्डु ताम—पिरर्
मुट्टिदु तोल्लहळ् मारुदिये—अन्व
मोदि विविशु विविशिवार्—वेण्म
मोहृत्तिल्, शस्वत्तिल्, कोनियिल् .. ॥ १० ॥

' तब अन्की वडि वरी अज्जल हा जाती है । नय-तत्रयुक्त मतिमान हो जाते हैं वे । धर्म-नीतिकी रीतिम अविचल वे हर हनगा लौकिक कामोंमें लगे रहते हैं भी वलाका अध्यायनकर, स्वय अर्थशास्त्र-विनयन हो दूसराकी समग्र दुख बाधाओको दूर

करनेमें लग जाते हैं । कामकी लहर मारनेवाली दृष्टि युक्त हो, वे स्त्री, मोह मपत्ति, कौति... .. "

'आडुदल् पाडुदल् चित्तिर—कवि
आदि अनेय कल्लहळिल्—अडुळ्ळ
ओडुपट्टेडु नडप्पवर्—पिरर
ओन निल्ले कण्डु तुळ्ळुवार्—अवर्
माडु पोहळ्ळहळ् अनेत्तियु—चित्त
नाळिनिल् अय्यप्पोरहुवार्—अवर्
काडु पुदरिल् वळरिनु—देव्यक्
कावनमेडुदंपोडुलाम ॥ ११ ॥

" नृत्य, गीत, चित्रकला, कविता आदि अतिरेत कलाओमें मन लगाये रहते हैं । दूसराकी हीन दया देत तडप अडते और अन्की चाहकी समग्र सपत्तिकी प्राप्ति कुछही दिनोंमें करा देनेके अुपाय कर देने हैं । चाहे वे किसी जगल या ज्ञाओमें गुजरने हा, वे प्रदश देवो नन्दन-वन जैसे आदरणीय हो जाते हैं । "

" ज्ञानियर् तम् अयिल कूरिनेन्—अन्व
ज्ञान विरंविनिल् अयुवाम्—अन
त्तेनिल्लिनिय कुरलिले—अण्णन्
दोय्यवु अशुमें निल्ले कण्डेन्—पण्डे
ओनमागदक्क नवेलाम्—अडुडुन्
अहि मरन्दुदु कण्डिलेन्—अदि
धान तनिच्चुडर् मान् कण्डेन् !—अदन्
आडल् अल्लेन नान् कण्डेन् ! ॥ १२ ॥

" मेने ज्ञानियाके स्वभावकी बातें वहीं । अन्का वही ज्ञान तुम्हमी शीघ्र अुपलब्ध हो जायें ! " कान्हाने, मधु मधुर स्वरमें जो कुछ कहा, अन्के मुनने मात्रसे मे सत्यकी असली स्थिति समन गया । पुराने हीन मनुष्योंके स्वप्नका जो कुछ प्रभाव मेरे मनपर पडा हुआ था, वह अब जाने क्या हुआ, कहाँ गया । बुद्धिका येष्ट प्रकाश मात्र मंन अब देखा । और दया विद्व भरमें अुषवे नृपका ।'

नीमाड़ी सन्त सिंगाजी और उनका साहित्य

: श्री कृष्णलाल 'हेस', अेम अे, साहित्यरत्न :

सन्त सिंगाजी जन्म १५७८ वि म चं मजूरी नामक ग्राममें हुआ था, जो मध्यभारतीय नीमाण्ड्रिलेमें है। अिनके पिताका नाम भीमा तथा माताका नाम गोरीबात्री था। ये जानिके गोती थे। कुछ दिनोंके पदचान् अिनके पिता पध्यपदनीय नीमाण्ड्रके हरमूद नामक ग्राममें बसे। अेक दिन जब य अग्न किमी सम्बन्धीके निमन्त्रणपर जा रहे य तप मार्गमें अिनकी सन्त मनरगीरसे भेंट हो गयी और अुनकी बाणीसे प्रभावित होकर अिन्होंने अुनसे दीक्षया देना आग्रह किया। पर अुन्होंने अुम समय दीक्षया देना स्वीकार न किया। अन्तमें रामनगर जाकर अिन्होंने अुनका नियन्त्र स्वीकार किया। य अपने गुरुके बट आज्ञाकारी थे। बिना अुनकी आज्ञाके कोशी कायं न करते थे। आरम्भमें अिन्होंने सयाम लेनेका हठ किया, पर गुरु मनरगीरने कहा कि "अेक सच्चे भक्तको सयाम लेनेकी आवश्यकता नहीं वह अपने पर, अपने परिवारके माय रहकर भी बीदवरको पा सकता है। तुम गृहस्थ रहने हूअे भी अपनेकी समारमें विरक्त समझो और घर, स्त्री, पुत्रादिकी ओद्वरकी वस्तु समझते हूअे आत्मदेवता ध्यान करो।" सिंगाजी अपने घर आ गये, और अुगी दिनसे समारमें विरक्त होकर आराममें निवास करनेवाडे प्रमुके ध्यानमें मग्न हो गये।

सन्त सिंगाजे जीवनमें मर्धावन अनेक अयकार-पूर्ण घटनाअें सुनी जाती हैं। वेमदासने ' सिंगाजीकी परचुरी "में लिखा है कि अेकवार अिनकी भंमें चोर चुरा ले गये। घरभरते अिहू अुनका पना लगानेको कहा, पर अिन्होंने काशी ध्यान न दिया। अन्तमें माताके नाराज होनेपर ये चुरापी गयी भंसोके बडे और केडिया (भंसने बच्च) लेकर जगलकी ओर चले गये और कुछ ही समयके पश्चात् भंसोके साथ घर लौट आये।

रा भा ३

अेक बार अिनके परिवारने अिहू मायापानी पाया करनेके त्रिअे अउने साथ बलीको कहा। अिन्होंने अुनर दिया कि 'आदि बोकार' तो हमारे घटमें ही निगम करते हैं अुनके दर्शनको माघाता जानेकी आवश्यकता नहीं। अन्तमें अिनका परिवार अिनने नाराज होकर मायापाना चगा गया और तीमरे दिन वहाँ पहुँचा। वहाँ पहुँचनेपर परिवारवालोंने देखा कि सिंगाजी अेक तावमें बैठे नर्मदामें विहार कर रहे थे। वेमदासने अिणी प्रकारकी ओर भी कुछ घटनाअें अुनकी 'परचुरी'में लिखी हैं।

बहुत दिनान्तक हरमूदमें रहनेके पदवान सिंगाजी पीपण्या ग्रामको चडे गये। वहाँ वागत हरजू नामक अेक पटेने अिनके निवासकी व्यवस्था कर दी। वेमदासने लिखा है कि यही भगवानने अिहू अेक सयामीव रूपमें दर्शन दिये और सिंगाजीने अुनसे पुन जन्म ग्रहण न करनेका वरदान प्राप्त किया। यत् पीपण्या ग्राम बाणगगाके तटपर बना बतलाया गया है। आदरल अिम ग्रामक समीप जो वेण नदी बहती है, वही अुम समय बाणगगा वही जाती थी।

'परचुरी'में लिखा है कि अेक दिन अिनके पाम कुछ सयामी वाये और अिनने दूध पिगनेको कहनेपर अिन्होंने कहा कि स्त्री दूध दुङ्कर लानेके लिये गयी है, आप कुछ समयतक बैठें। पर सयामी बहुत भूले थे, वे वही चले गये, जहाँ अिनकी स्त्री दूध दुङ् रही थी। अिन्होंने दुहा हुआ सत्र दूध पी लिया और सिंगाजीकी स्त्री जभोदा रीता बर्तन त्रिये घर आ गयी, पर अुमने जैसे ही रीता बर्तन अपने निरमे अुनारकर नीचे रखा, दूधमें भर पाया।

सत सिंगाजे अपने जीवनके अन्तिम दिन पीपण्यामें ही बिताये। जब अिनका मृत्युकाल समीप आया, तब अिन्होंने अक सिष्यको रामनगर भेजकर गुरु मनरगीरसे

गरीर त्याग परमधाम जानकी आज्ञा मागी । आपा प्राप्त होते ही बिन्दुन अपन परिवार और शिष्य मडलको सूचना दे दी । शिहान स्नान किया और अपन मस्तकपर चन्दनवा तिलक लगा ध्यानस्थ हो गय और जिस प्रकार अपनी आत्मामें स्थित निराकार ब्रह्मका ध्यान करत हुअ थावण गुवल १ को परमधाम सिधारे ।

खमदासन सवन १७८८ वि में बुह सिगाजी द्वारा दान देन तथा अपना सब चरित्र मुनानका अल्लेख किया है । तदनुसार खमदास लिखित "सिगा जीकी परचुरा सिगाजी द्वारा बतलायी गयी बातापर आधारित कही गयी है ।

सिगाजीका साहित्य

बाव्य रचनाकी दृष्टिसे सत सिगा नीमाडी लोक साहित्यके अक सवश्रेष्ठ लोककवि ह । य वास्तवमें 'लोककवि ह । जिनके पद नीमाडी भाषी वषत्रके अति रिक्त मध्य प्रदेशके होगंगावाढ वैतूल छिदवाडा जिलो और मध्यभारतके भी कुछ मालवी भाषा वषत्रमें सुन जाते हैं । सत सिगा और अनेके पदोंके प्रति जिस वषत्र की धामीण जनताकी अटूट श्रद्धा है । वे प्रत्यक अुप याम व्रत और त्योहारके अवसरपर गाय जानवाले नजनामें अिनके पदोंको प्रमुख स्थान देने और घूम घूम कर गाते हुअ भक्ति विमोर हो जाते ह । हम सत सिगाके पदाकी विषयनी दृष्टिसे निगुण स्वल्प-वर्णन ब्रह्म और जीवकी अकता पाखड-वडन, अुलवानी रहस्यवाय रूपक विरचत भाषना, सनगुरु महिमा तथा विनयके पदोंमें विभाजित कर सकतै ह । बुदाहरणाय प्रत्यक विषयसे सवधित अक-अक पद देखिय —

निर्गुण ब्रह्म —

निरगुन ब्रह्म हें पारा, जोअी समसो समजन हारा ॥
सोजत ब्रह्म अलमें १ सिरासो २, मुनिब्रत पार न पावे ।
सोजन-सोजत निबजो धाके असो अपरम्पारा ॥ १ ॥
वेद कहे अक अगम खानी सुरता ३ करो यिकारा ।
काम अोप मद, मसर ध्याप, शूडा कल्प ४ पमारा ॥ २ ॥

१ अम २ बीत गया ३ मयस्यार, ४ सवार ।

त्रिकुटी महल ५ में अनहद ६ बाजे होत सबद अनकारा ।
सुकमन * सेज सुत्र ८ में शूले,

सोहम ९ पुष्य हमारा ॥ ३ ॥

सहस्रअी १० निरदिन रटे, रैन दिवस अिक सारा ।
रिखि-मुनि और सिद्ध चौरासी

तेतित कोटि पविहारा ॥ ४ ॥

अेक ब्रह्मकी रचना सारो जाका सकल पसारा ।
सिगाजी भर नजरो देखें, बी हो गुरु हमारा ॥ ५ ॥

जिस पदकी विचार धारा हिन्दीके सत-साहित्यकी ही विचारधारा है । कबीरकी त्रिकुटी महल, अनहद सुकमन सेज आदिकी रचना हमें सिगाजीके जिस पदमें भी अुवी रूपमें मिलती है । भाषा-नाम्य भी स्पष्ट है ।

ब्रह्म-जीवनी अेकता

'मे तो जानू सार्थी दूर हें, मुचे पाया हो नेदा ११ ।
रैनी रही सामरत १२ भअी, मुझ आसरा तेरा ॥
तुम तो सोना हम गहना मुझ लगा ट हाका ।
तुम बोले हम देह धरो, बोले कअी रण भाका १३ ॥
तुम घदा हम चादनी १४, रैनी १५ अुजियाला ।
तुम मूरज हम घामला १६, सार्थी चौजग १७ पुरिया ॥
तुम तरवर हम पेंछडा १८, बंठे अकही डाला ।
चोच मार फलभाजिया १९, फल अमूनतारा ॥
तुम दरियाव हम माछली बिम्बास २०का रहना ।
देह गली मट्टी भअी, तेरा तुज-भें २१ समाना ॥
तुम बिरछ २२ हम बेल ह, मूलके लपगना ।
कहे सिगा पहिचान ले, दरियाव ठिकाना २३ ॥'

यही भाव व्यक्त करनेवाला मत मदारका अक पद देखिय—

५ दोना भौहिके वीचका स्थान (आज्ञाचक्रका मध्य भाग) ६ ब्रह्माध्रमें होनवाला अन्द, ७ मुपुम्ना, ८ गुन्य (ब्रह्माड), ९ जो हमारी आत्मामें है, १० गप-नाम ११ अमीय १२ अामम्य १३ भाषा १४ चादनी, १५ रात्रि १६ घूप १७ चारा मुग १८ पवरी १९ फोडा २० हुनेगा २१ तुगमें, २२ वृकर, २३ मकार रूपी समुद्रमें रहना स्थान ।

'माधव जलपी पियाम न जाजि ।
जल महि अगनि अठी अधिकाजि ॥
तू जलनिवि हजु^१ जलका मोनु ।
जल महि रहअु अलहिबिनु खीनु^२ ॥
तू पिजर हअु सूअटा तोर ।
जमु मजाण^३ कहा कर मोर ॥
तू तरवर हअु पखी आहि ।
मव भागी तेरो वरसन नाहि ॥
तू सतगुरु हअु मअुतनु बेला^४ ।
काहि कवीर भिल्ल अतकी बला ।

दोनों सत कवियोंकी अपन आराध्यके प्रति अनयता प्रगप्तनीय है। भक्त और भगवानकी यह अक रूपता हिन्दीके अय भक्त कवियोंके काव्यम भी विद्यमान है।

पाखण्ड खडन

कवीरकी तरह सत सिगान भी बुपासना और भक्तिके नामपर किय जानबाले आडम्बरीको पाखण्डकी सजा दी है।

सत सिगाजीने कौन देव-पूजा तुलादान शिव लिंगपूजा आदि सनातन कमकाडोका ही नहीं पर नाय पयियोंकी धार्मिक क्रियाओंकी भी निंदा कर अुद्धे पाखण्ड बतलाया है। सिगाकी दृष्टिम अपनी आत्मा म निवास करनवाले बिनादेहीके साट्ठ को पहिचाननका प्रयत्न ही मुक्तिका साधन है।

अुलटवासी —

कवीरकी तरह सिगान भी कुछ अुलटवासी पद रचे ह। अनका निराकार ब्रह्मपर रचित अेक पद जिस प्रकारका है—

'फूल नजरवीक नजर नहि आवे
सतगुरु बिन कौन बताये ॥
बिना पाल^१ को लखर कहिय
लहरी अुठकर आवे ।

१ म २ अुदास ३ बिल्ली (नीमाडीम माजर मराठीमें माजर और मस्तूममें मार्जार कहने हे।), ४ नया शिष्य ५ तट ।

बिना चौंचको हसा कहिय
मोती चुग चुग छावे ॥
बिना बीअको बीरछ^१ कहिय
डाल नवी नवी^२ प्रावे ।
बिना पल्लको पछी कहिये
अुडि अकामको जावे ॥
बिना पत्रकी बली कहिय
छाव नजर नहीं आवे ।
बिना फूल फल लागा अनको
कोअी साधुजन पावे ॥
अुलट जान कोअी धिरला बस
और न अुसे कोअी ॥
कहे जन सिगा सुन भाअी साधु,
चौरासी छुट जावे ॥

जिस अकही पदमें अिम लोत्रगायक सत कविन कितनी स दरतासे अदुत्य अजमा और निराकार ब्रह्म तथा अुसकी आश्चयमयी विविध लीलाअें अुपस्थित कर दी ह ।

रहस्यवाद —

कवीर हिन्दी काय जगन्म रहस्यवादके प्रथम स्रष्टाके रूपम प्रसिद्ध ह। अुहोन निगण ब्रह्मोपासनाक विस्तारके साथ जिम रहस्यवादको जन्म दिया अुसके प्रभावस्वरूप तत्कालीन अनेक सत कवियोंका आविर्भाव हुआ। अुन सभीने निगुण काव्य धाराको मूल्यवान योग प्रदान किया पर अुनमसे अधिकां कवीरकी तरह अपन काव्यम रहस्यवाङ्को स्थान देनम पूण सफल न हो सके। मध्यप्रदेशके अक अनुनन कौनम निगुण भक्तिकी मस्तीम मस्त सत सिगाके अनेक असे पद प्राप्त ह जिनम कवीरकालीन अनेक कवियोंके कही अधिव स्पष्ट और प्रीअरूपमें रहस्यवाङ्के दर्शन होने ह। अुदाहरणाय अनका अक पद देखिअे—

कोअी देखो दरियावकी लहरी
सतगुरु सौदा हेरी^३ ॥

१ वृक्ष, २ नयी ३ दूडना ।

अस दरियावमें सात समुन्दर^१,
 बीच गवेंब^२की डेरी^३ ।
 डेरी अन्दर अलस^४ बिराजे,
 जहाँ सुरत^५ लाग रही मेरी ॥
 अस दरियावमें बाजा^६ बाजे,
 बाजे आठों पहरी ।
 ताल पखावज बाजे क्षाजरी,
 बसो बाजे गयरी^७ ॥
 बिना पेड़की^८ वृष्य कहिये,
 डाल पल ना फेरी ।
 रूप रेल वाकी कछु नाहीं,
 फिरी रह्यो चहुफेरी ॥
 अगम अगोचर पद पाया भाओ,
 क्या पूछोरे मेरी ।
 कहे जन सिगा सुनो भाओ साधू,
 निरभय माला^९ फेरी ॥

रूपकः—

सत सिगाके पदोंमें कुछ बड़े सुन्दर रूपक भी मिलते हैं। कबीर तथा तत्कालीन सन्त कवियोंने भी कुछ रूपकोकी रचना की है। सत सिगाका अेक खेती विषयक रूपक देखिए—

“ खेती खेडो^{१०} हरिनामकी
 जा में^{११} घासे^{१२} सान ॥
 पापका पालवा फाटजे,
 बाडो बाहेर राल ।
 कर्मकी कासीमें खाडजो^{१३}
 खेती चोखी भाय ।^{१४}
 मन पवन दोओ बलदिया^{१५}
 सुरती^{१६} रास लगाय

१ समुद्र, २ अदृश्य ब्रह्म, ३ निवास, ४ न
 दिसलायी देनेवाला, ५ ध्यान, ६ अनहद नाद, ७
 गहरी, ८ पीड, ९ ब्रह्मकी माला जिसे परनेनर कीओ
 मय नहीं रहजा, १० कपड़े, ११ जिसमें, १२ हागा, १३
 निवाल दो, १४ होना, १५ बँल, १६ ध्यान ।
 नागपुर]

प्रेम पिराणो^{१७} कर धरचो,
 ज्ञान आर लगाय ॥
 ओटग^{१८} बरबर जूपजो,^{१९}
 सोह्य^{२०} सरतो^{२१} लगाय ।
 मूल मत्र^{२२} बीज बोवजो^{२३}
 लड मुमडु^{२४} पाय ॥
 सतको माल्यो^{२५} रोपजो,
 धरम पँडो^{२६} लगाय ।
 ज्ञान गोला चलावजो,
 सूवा अडि जाय ॥
 दयाकी दावण रालजे,
 भवरो^{२७} फेरा^{२८} न होय ।
 मृगता^{२९} बिचारो सिगा आपणो,
 आवागमन नी होय ॥

अस पदमें सन्त सिगाने खेतीके रूपक द्वारा
 मुक्तिकी साधना बतलायी है। वे कहते हैं “हरि-नामकी
 खेती करनेमें ही लाभ होगा। सिगाकी यह खेती बड़ी
 विचित्र है। अच्छी फसल होनेके लिये खेतमें भूगा-
 नीदा पहिले साफ कर देना पडता है। बिना अुसे
 अुखाडकर वाहर फेंके नैन बोने योग्य नहीं होना।
 सिगाजी कहत हैं—“ पापरूपी घास-पात अुखाडकर
 वाहर फेंक दो।” घास-पातके सिवाय खेतमें काँस
 नामक अेक गहरी जडावाली घाम भी होनी है।
 कर्मकाडकी ही सिगा काँस कहते हैं। वे कहते हैं
 “कर्मकाड रूपी काँस भी जडसे अुखाडकर निवाल दो,
 तब जडी अच्छी खेती हो सकेगी। मन और द्वास हीं
 दोनो बँल हैं, जिन्हू आत्माकी रस्तीसे चाँपकर प्रेमके
 पिरानेसे हाकी। लेकिन प्रेमका पिराना अँसा बँसा न
 हो; अुममें ज्ञानकी आर (लोहकी पनली नुकीली कोल)
 लगी हा।” कितनी सुन्दर है अस अण्ड लोक-वदिकी
 कल्पना। अुमकी अस कल्पनामें जो महान अध्यात्म
 भरा हुआ है, बड़े-बड़े दर्शन शास्त्रियोंने लिये भी
 दुर्लभ है।

१७ रँल हाकनकी लकड़ी (पिराना), १८ निर-
 ह्वार, १९ जोतना, २० ब्रह्ममय आमा, २१ सरदा
 (खेतीके काममें आनेवाला अेक औजार), २२ बीज मत्र
 (आम्), २३ बीजो, २४ हरी मरी शाखें, २५ मन्दा
 (क्यारिनी), २६ मेड २७ भमार, २८ आवागमन,
 २९ मुनिन, मोक्ष ।

गद्दार

: श्री रामराजसिंह :

गद्दारके अमली माने होते हैं—भेदिना, पाट करनेवाला अथवा समयपर खिसकनेवाला। जेकिन जहाँ तक गद्दारके अपने काम गद्दारीस तात्पर्य है वहाँ द्रोहात्मक और हिंसात्मक नहीं और क्रोधात्मकभी नहीं, बल्कि वहाँ गद्दारकी कायरता, काहिरी और अवयम-तामे है। गद्दार असलिये गद्दारी नहीं करता कि अग्रे मजा मिलता है, या कौमी विशेष लाभ होता है, परन्तु वह गद्दारी असलिये करता है कि वह अवयम है, अग्रेमें दुष्टप्रतिज्ञा नहीं, वह बूट सहन नहीं करे सक्ता, अतः अग्रेकी आत्मा गवाही दे देती है। जब कभी अक विश्वसनीय व्यक्ति गद्दारी करते देखा या पाया जाता है, तो अग्रेके अन्याय बन्धु-बान्धवों और स्वजनों तथा प्रिय जनोंको अक अपत्यागित घना-सा लगता है। लेकिन कभी-कभी तो असा देशमें आया है कि स्वयं गद्दारभी अपनी करतूतसे अनभिन्न और अपरिचित रहता है, यहाँ तक कि गद्दारी करनेके पहले तक वह नहीं जानता कि वह क्या करने जा रहा है। किन्तु करतीये पश्चात् अग्रे कम दुःख, संवेदना और पश्चात्ताप नहीं होता।

मनुष्य अन्याय प्राणियोगे जिन प्रकार अधिक विवेकी और चिन्तनशील है, अग्रे प्रकार वह पोर पापी, अन्यायी और नोधीभी है। 'नोध पाप कर मल' का मन्त्र जगत्केवाले जिन सानने शोककी सीमाभी पार कर दी है। कहनकी तो पशुओम हिंस्रता और कर्करताका दुर्गुण प्रचुर मात्रामें है, लेकिन अहिंसाके पुजारी बननेवाले मानवने और सहिष्णुताका आडम्बर दिखानेवाले जिन मर्मत नरोने अपनी सारी कलजी खोल कर रखा दी है। जब जब अतिहास बदलता है वद अपने पीछेकी तरहही बिना किसी प्रकारके रहोवदके अक नये रूपमें मार्ग प्रशस्त करता हुआ आगे बढ़ता है। (History repeats itself) और जिस राजा (क्याकि अतिहासमें राजा अथवा राज्यसम्बन्धी

वणन रहता है) ने किस अवसरपर कसे धोखा खाया था, अग्रेने दूसरेको अपने जालमें तिन तिन अयायोसे फँसाया आदिको जानते और अग्रेसे गिनका प्राप्त करते अथवा लाभ या हानिनी जानकारी रखते अग्रेभी मनुष्य धोखा खाता, अमफ्र होता है और मुहुरी खाना है। यथा अक पक्षके लोग दूसरेके किसी विशेष व्यक्तिको फोड़ लेते हैं और किस प्रकारसे अग्रेका अचित अचित लाभ अठाने हैं। कौमी कहता है कि अग्रेको गद्दारी की, लेकिन गद्दार अपनी स्थितिकी अवश्य समझनेकी कोशिस करता है।

गद्दारने समय समयपर अक माने जाने हैं। अग्रे चुगलखोर, द्रोही, भेदिना बान करनेवाला और हाँ हनुरी करनेवालाभी कह सकते हैं। दासो मन्वरा गद्दारिन गुटनी थी, विभीषण गद्दार अपने पक्षका भेदिना था, मानसिंह अपनी जातिका गद्दार (द्रोही) था और ध्रुवका पिता अज्ञानपाद भी गद्दार (विषय) था। अग्रे तरह विभिन्न स्थलोपर अग्रेके माना रूप मिलते हैं। गद्दारी करनेसे कुछ लाभ तो जरूरही होता है। लेकिन अग्रे कारण बंधकित जितना सुख मिलना है, प्राय अग्रेका कौमी गुना सामूहिक रूपसे बिनष्ट होता है। और अग्रेकर यह होता है कि गद्दार किसी अक दो को नहीं ले बैठता बल्कि समूचे का समूचा दल और जातिही वह बिनष्ट करने छोड़ता है। यह कितना संभव है यह तो गद्दारको अग्रे हिंस्र भावनाओपर आधारित है। जिनकीही अग्रेकी बदलेकी भावना शीघ्रतर होमी, अग्रेनाहा अधिक सकारा वह कर सकता है। गद्दार निम्नलिखित कारणोसे प्रति होता है।

मानसिक दुर्बलता

कही कही यह देसनमें आता है कि किसी गुण या दल विशेषमेंसे कौमी अक असलिये अलग हो जाना है कि अग्रेका मानस स्थिर नहीं रह पाता। अग्रेने दलकी

गुप्त बानोका रहस्यभी विपक्षवालोंके सामने प्रकट करनेमें वह कुछ हानि नहीं समझता। बैसा कर देनेके बाद वह भलेही पश्चात्ताप करे, लेकिन अस्थिर बुद्धिके कारण कुत्सर्प होनेवाली आपदाओंसे वह लाख चेष्टा करनेपरभी नहीं बच पाता। वह अपनी अंक मानसिक कमजोरीको छिपानेके लिये नाना प्रकारका मिथ्या प्रयास करता है।

प्रलोभन

रघुवंशसे, जमीन-जायदाद और पदका प्रलोभन पानेसे भी अंक पत्रका कोअी मनुष्य किमी समय गद्दारी कर सकता है। अूस समय अपनी स्वार्थ-मिद्धिके अलने अूसकी अपनी सस्या, जाति, अपने देश या अपने राष्ट्रके हितका ध्यानभी नहीं रहना। और वह यह भी नहीं समझता कि अिम प्रलोभनसे वह कितने लोगोंके हितोका गला घोट रहा है। अिस आर्थिक-युगमें साधारणतया अिसी किस्मके गद्दार पाये जाते हैं, जो बहुजनहितायको तिलाजलि देकर और दूसरोंके हितोका गला घोटकर अपने सुखके लिये, स्वार्थके लिये, सबकुछ करनेके निमित्त अपना नैतिक स्तर पतित करनेमें नहीं सिझकते। प्रलोभनकी बात विरुद्धेद्वारा पहले अुठायी गयी, यह तो गद्दार और विपक्षवालोंके मनकी अवस्थितिपर निर्भर है। किन्तु गद्दारकी मन स्थिति तो अुसी समय विचलित हो जाती है, जब अिस किस्मकी कोअी बात अुठ भर जाती है।

प्रताड़ना

घो तो चोर पकड़े जाने और पुलिसके हवालातमें कोठे-पर-कोठे खानेपरभी अपने हनराहियोंका भेद और माम नहीं बनाता, किन्तु यहभी सत्य है कि मारने आगे भूतभी भागता है। अत यह निविवाद है कि प्राणांकी परवाह करनेवाले अिम गद्दारीकी बातको ध्यानमें भी नहीं लाते। प्राणका सोदा अिनना सस्ता नहीं है। बँत-पर-बँत बसकर जमा देने और सरचारियोंके खींचे जानेकी पीडा पकने चोरोंका भी भुँह धोलवा देनी है। बहनेका तात्पर्य यह है कि वह ध्यक्षि नहीं बोलना, बरन् सारीरिव पीडा और यातनाओंसे वह बोलनेपर बाध्य किया जाता है। किन्तु साध-ही-साध, अिममें कुछ सन्देह नहीं, कुछ अँकमी

जीव हैं, जो अपनी गुरता और महानताको अपने प्राणोंसे अधिक मूल्यवान समझते हैं।

अनबन

कभी-कभी किमी दलमेंसे कोअी अंक व्यक्ति न घटनेके कारण अलग हो जाता है अथवा दलके अन्य व्यक्ति अूसको किसी कमजोरीसे अूसको निकाल देते हैं। अिसका प्रभाव अूसके मानमपर बहुत बुरा होता है; वह बदला लेनेको सोचता है। अतः स्वभावतया वह अपने विपक्षियोंकी शरण जाता और अपनी पोल-भट्टी खोल देता है। अिस प्रकारकी घटनामें आर्थिक बाँट-बँटावकी खींचातानीसे ही अधिक होती है। बड़े-बड़े डाकुओंका दल अिसी कारण पकड़में आ जाता है।

सहानुभूति

विद्रोहियों और ध्वंसक-क्रान्तिकारियोंसे अपने विपक्षोंके किसी अंकके प्रति जब सहानुभूतिकी भावना भर कर लेती है, तो वह अूसको रचपाय पत्र या अन्य किसी साधनसे सूचना दे देता है। फिर क्या पूछना, सहानुभूतिका पान वह व्यक्ति अपने दलों या अपने पक्षमें अिसकी जानकारी करा देता है। परिणाम-स्वरूप अूसके प्रतिपक्षियोंकी सारी योजनाओं निष्फल हो जाती हैं और वे पकड़में भी आ जाते हैं। अिन्हेंके कंधोंकोका १९०५ अी० के 'गुप्त प्लाट'का भेद अंतेही खुला और वे विरुद्ध तो हुअे ही; पकड़कर मारभी डाले गये।

अिसके अनिश्चित कुछ गद्दार स्वभावतया अुब प्रकृतिके होने हैं। किनने तो अपना हित हो, या न हो दूसरोंका अहित करनेके लियेही गद्दारी करते हैं। मंदरा बँसेही घी। कुछ नेकनाम गद्दार अपने पक्षकी कुरोनियो-दुर्भावितियों और अजाचारोंको पसन्द न कर विपक्षियोंको अपने सारे अट्टे बना देते हैं। किमीपक्ष अिसी प्रकारके भेदिये घे।

बहनेका मतलब यह है कि वास्तविक गद्दारी भी है जो अपने राष्ट्र, जाति, और समाज-देदने हितोंका गला घोट दे, जो अपना अुन्नू मीधा बहनेके लिये अपने स्वजन-प्रियजनोको घोषा दे, और जो केवल मजा लेनेके लिये दो पक्षोंकी मिठा दे।

[कलकत्ता।

जुम्मा भिश्ती

श्री 'धमकतु'

['धूमकेतु' गुजरातके श्रेष्ठ कहानीकार — कहानी सत्तारके धरणा हँ । भावात्मक मर्मस्पर्शी गलीमें आधुनिक कहानियोंका सूत्रपात कर्तृने किया — राजनैतिक, अतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी प्रकारकी कहाँनियोंका । इनकी बजनों कहानियोंके अन्तर्गत भावात्मके अनुपाद हुआ । इनकी 'पीछ' आकित कहानी बड़ी ही हृदयस्पर्शी मानी गयी हँ । अक छिद्रहस्त सफल उपपातकार हँ वे और निवृत्तकार भी । धूमकेतुकी 'जुम्मा भिश्ती' अक सर्वभरी छोटी-सी कहानी हँ । कलाकरन अपने भिश्ती और धूमके जीवन साथी प्यारे भैसेके सच्चे प्रेमको बड़े मानिक तथा कलात्मक ढंगसे सभी देणों और सभी कालोंके लिये अक्षर बना लिया हँ । — स्त]

बान-दपुर गाँवके अमर छोटावर अक बोनमें तान शोषणियाँ चन्ने फिटल राहणीरोडा ध्यान अपनी ओर खींचनी थी । पुरान अँच-अँच धन त्रिमलीक वृषपाती धुरमूट छाया इनपर पडती थी । पामहामें गदी गटर दुर्गचकी चारा ओर फँलाता ओर कमी कमी तज हवा घून्ने गुन्वारे खुदानी । वषोंसे बमगम्भन शापणियोंकी खिडकियाँ हवाके चपड खानी—जा फट पुरान टाँके टुकडी ओर पुरान बाँसकी लपणियाँसे बणी हुअी हमेशा खुनी रहती ।

अदर अक टूटी हुअी पुरानी चन्नीपर बँटा हुआ जुम्मा भिश्ती अपना हुक्का गुडगुगुआ करता । दुनियाके बदलते रंग देख य अमन । मोन चाणक बतनासे तेकर टूटी फूनी हूडिया तकके दिन देख य । अपनी बचपनकी यादके धनी माता पिताके लाडल्यारके वे दिन अमर याद य । हुक्का गुडगुगुआने वह सोच रहा था अमर दिनाकी चानें जब वह शून्ने हाथीपर बँट कर धादीमें हुलहित तेन समुदाल गया था । और काय ?

गौकके लिये अमरनी जवानीमें जुम्मान अक भसा पाछा था । दहेजमें मिली हुअी बन्नुआमसे वह अक था । वह असे वेणु कटकर फुकारता था ।

दुनियाँ बितानी अँकी चढ़ी और कितनी नीचे गिरी आज छिद्र दो खीच ही बचे य—जुम्मा और वेणु दो जीवन-साथी—पक्की दोस्तीके नमून । हाँ, वेणुका

नाम कठ विचित्र जरूर लगगा पर जब लकामो और योवन जुम्मापर प्रसन्न य कभी दोस्त य धूमके दोस्तोंमें अक साहित्य गमिक हिन्दू मित्रन मसिका नाम वणु रच दिया था और जुम्मान अमर अपना लिया था ।

जुम्मा अमर गरीब है । धूमके पाम निर बचे हँ य क्षाण्ड और अमरका इमशाका साथी वणु ।

अक पापडमें वणु बाँधा जाता । दोचक द्वारस जुम्मा अपन वेणुमे बान करता और हुक्का गुडगुगुआ करता । तीमरे क्षाण्डमें पास भरी रहती ।

धूमके अक मित्र सगी-भायी साथ और गय, पर अिन दानाकी बान्नी अवणित बनी रनी ।



राजका कायक्रम । अिन निकलने ही जुम्मा वणुकी पाठपर सगक रचकर अपन गाहकके घरामें पानी भरन चल देना । भमके गलेमें त्रधा हुअी धनी बजन लगनी । जुम्मा पीछ पाछ अकाय गर, गबल गीन गाता हुआ चलता । दापहर तक वह अपन क्षाण्डमें गैर आता । गीटत समय वर अक-दो पैसेका गाजर मूनीका साथ अपन लिय और घामका भारी गन्गा अपन वणुके लिय बाजारमे ले आता । यही था धूमका रोजका काम और यही था रोजका बाजार ।

दोपहरमे गामतक वह अपन क्षोपनमें बठा हुक्का गुडगुगुआ करता और हुक्केके सगीवमें लीन वेणु अपन कर्म-संचालनमे टाल दिया करता और अँखें

मूदे या खोले पडा रहता । दोनों अंक दूरसे, भागो मूक भाषामें बाते किया करते ।

सध्या होते ही दोनों दोस्त नदीके किनारे धूमने जाते । कभी-कभी अिच्छा हुआ तो भिनसारे ही हवा-खोरीको चल निकलने ।

अंक दिन बहुत सबरे, पांच बजे दोनों धूमनेके लिये चल निकले । जूमने सोचा, अिस ठडी वेलामें, वेणु कुछ चरकर पट भर ले तो अच्छा । पर यह बात वेणुको पसद न आयी । धूमने जाते समय राहमें कुछ खाना मले मानुमोका लवण थोडे ही है । अत वेणुने स्पष्ट आवाज कर दिया ।

थोडी देर बाद जुम्मा वेणुसे बोला-‘चल भैया’ अब तो धूम लिये पर जाकर, कुछ खा-पीकर, अपने कामपर चले ।

अुसकी अिस दिनपर खुदा होकर वेणुने हुकार किया, अपनी पूंछ पीठपर पछाडी, और जुम्माके सामने देव, वान फटकार, आनन्दसे दौडने लगा ।

“अरे कहां दौडा जा रहा है ? दौडनेकी क्या जरूरत है ?” जुम्माने कहा, पर वेणुने अुसकी न मुनी । वह दौडा चला जा रहा था । सामने ही बी बी अेण्ड मी आथी रेलवेकी लाइन थी । वह रेलकी पातकि अूपर दौड रहा था कि अगली लाइनके जोडके ओंन अुनका पंर सन गया और वह अेरर सारर रहरी फिर पडा । फिर वह पंसे पंरकी निकालनेकी कोशिस करने लगा । पर ज्यो-ज्यो वह पंर निकालनेकी कोशिस करता था, त्यो त्यो अुमवा पंर ज्यादा फंमता जाता था । जुम्माने दूरसे यह देखा और वह पामलकी नाथी दौडा । ‘या खुदा ! यह क्या हो गया !!’ वह बोला और वेणुके पाम वंडकर अुनका पंर खीच अुने रेल-यातोंमें निकालनेकी कोशिस करने लगा ।

कुछ-कुछ अुत्रेण होने लगा था । सामनेसे संर-साटनेके पीकीन दो नीरवान धूमन आ रहे थे, जिनके अंक हापमें छडी थी जिसे वे धुमा रहे थे । दूरसे ही दोनी, या सिरपरसे अुतारकर हापमें रख ली

थी, ताकि ठडी हवा खोपडीको लगे और दिमाग तक पहुँच जाये । जुम्मा दौडा अुनके पास । बोला—

“सुनिअे, भाओ साहब ! मेरा, मेरा, वेणु .. फंग गया है, रेलमें बट जायेगा । देखअे, देखअे ।”

दोनोने अुम और दृष्टिपान करनेकी कृपा की । देखा, कोअी काली-काली चीज तडप रही है ।

‘पर है क्या ?’

“मेरा वेण—मेरा पाडा”

“ओह ! दौड, दौड, फाटकवालेके पास । यहाँ क्या खडा है ?”

“भैया । कुछ मदद करो, हाथका सहारा दो तो अुमे निकाल लूं । वह बच जायेगा ।”

“मदद ? हम ? अरे बेवकूफ दौडकर फाटक-वालेके पास जा । दौड, दौड ।” और यो परअुपकारका अुपदेश देकर वे आगे हवाखोरीको चल दिये ।

जुम्मा फाटकवालेकी ओर दौडा । घरके अंदर चक्की चल रही थी, अुसकी घरपर ध्वनिमें किसीने अुत्तर नहीं दिया । दूरने गाडीकी व्हिस्ल सुनायी थी । निराशाभरी दृष्टिसे जुम्माने चारों ओर देखा । कोअी दिखायी नहीं दिया । वह सिगनलकी ओर दौडा । वह साबिल खोचने लगा और जोरोंसे चिल्लाने लगा । पर चक्कीकी घरपराहटने अुमकी आवाज ही दबा दी । कोअी न आया । वह फिरसे किवाडकी ओर लपका और लाते लगाकर बहने लगा ।

“अरे बहन, देखो, नुनो, मिगनल अूंवा करो, मेरा वेणु बट जायेगा ।”

“घरपर कोअी मरद नहीं है, लापरवाही मेरा अुत्तर मिला, और फिर चक्की चलने लगी ।

अब गाडी बहून नजदीक आ चुडी थी । अंक बार वह फिर बीच मारकर पुषार अुठा—

“अरे कोअी दौडो, दौडो मेरा वेणु बट जायेगा । अरे बचाओ, बचाओ ।” पर अुपकी आवाज, अुमीकी प्रतिध्वनिमें डूब गयी ।

जुम्मान आकाशतः आरब्धा । आकाशका प्रतिम
 तारा त्रयनका वा । चारा आर पुत्रा वा त्रया म ।
 वासा धरुपत वरगा उरुत तत्राक नो सदा थी ।
 जुम्मान शयका तन्त्री अर आर पक नो और चिन्ताया
 या मरुपरिगात्र

किं वत् उगुहो वत् लपता ।

उगु पछाह मा मारर धर गया था हीन रग
 था । जुम्मा अगुका गारम आरर त्रिय गया अमका
 पात्र मन्त्रात लगा श्रीर प्राण—

प्यार शम्भ भया भर वगु ! हृम गन्ध गाय
 हू और मन्त्र गावा रग और जुम्मा भयन पाग
 नी रर गया ।

धर-धर ररता गात्र आषा । मोन तत्राक
 आ रहा थी । जुम्मान जीव मन्त्रा । वजन भी मोनका

आन रसा । अत्रात्रव अगु भयन अनी पूरा तात्रेय
 माया अचा त्रिया और अत्रहा मरुम जुम्माका अगुका
 नेत्री मोनके पात्र पक त्रिया । जुम्माका धण रग्गाटीका
 पत्रिया वगुपर फिर गया । आत्रव पन्धार उर और
 अत्र पन्धारान जुम्माक वपनाका रग त्रिया ।

उत्र जुम्मा हाणमें आया मा रग्गा पात्र मन्त्र
 वगुत वत् रग त्रिवर त्रिवर पत्र हू । अमका वात्री
 नामानिगान न वा ।

आज भी त्रिय गुरुत् मरुत जुम्मा अत्राक और
 अगान हाशाम उत्रा मागररक पत्र पत्रक र्णा आता है
 और अम मरुत पात्र पन्धारपर त्रिन पन्धार अत्रने
 त्रिवरकर चिन्ताका है—

या व उह ! वगु वगु वगु ! और फिर
 वनीम चरग जाता है ।

(गुनदाभीमे अनुशास्त्रः आ जिद्र उमाउडा)

मैं पागल, प्राण लुटा आया

श्री त्रियाधर डिरेने 'त्रि'

दुनियात करन स्वर मोंगा
 मैं पागल प्राण लुटा आया ॥
 मनका धन कृता कृता धा,
 मर्मांस मर्मम इला या
 प्राणोर्षी ररतीपर त्रिय
 माररका यौन भूला धा,
 तब ठेक न सका मैं अरुतावन
 भर मय मुरभिय धरा गगन
 त्रियत्रिने दि स्वरकी र्शांशिय
 कूर्त् मा गान उगु आया ॥
 दुनियात केवल स्वर मोंगा,
 मैं पागल प्राण लुटा आया ।
 किं चिन्ताके दा वपण आय
 पग धर दगरपर भरमाध
 मन श्रुत गया मूनेपनर्म

अँवामें वागल भर आय
 तब मैं मन वहुतान लिया
 त्रियत्रिन धुममें दृषा भी
 कूर्त् मा गान लुटा आया ॥
 दुनियात करन स्वर मोंगा
 मैं पागल, प्राण लुटा आया ।
 गुग्ने मा मरुत पगग त्रिया
 लुपन छानीपर त्रिय त्रिया
 फिर भी तब त्रियाकात्रने
 मरा धर लुपन मोंग लिया
 तब वररका धरारा मैं
 अरुनी मन्त्रिय हारा म
 अमहाय पद करगावान
 पधरा आहान लुटा आया ॥

तक्कयागप्परणी

: श्री ति. शेपाद्रि, वेम. वे. :

तमिल भाषाके साहित्यका वह भागभी काफ़ी लंबा है जो जन्मानका विषय न रहकर प्रत्यक्ष अुपलब्ध है। लगभग ढाबो-तीन हजार सालोंका साहित्य है वह।

जिस साहित्यमें आरम्भसे ही अेक प्रवृत्ति साफ़ दृष्टिगोचर हो रही है। वह है सामञ्जसकी प्रवृत्ति, विषयके लिये गंभीर तथा सनातन सत्य चुननेकी प्रवृत्ति; भावोंमें विचालना तथा बिरादवा सानेकी प्रवृत्ति, जिससे भारतीय विचारोक्तौ वह संकथन बिलम्बपणता अवशुण रहें। स्पष्ट रूपसे कहें तो तमिलके साहित्य-संस्थाओंने लगातार यही कोशिस की कि साहित्यमें वह सर्वप्रही विद्यालता बनी रहे, ताकि देशवासी अुते अपना सके। प्रायद धुन्होंने सनातन सत्यमें विभिन्नता नही देखी। सचका अेक ही रूप हो सकता था।

गुरुमें प्रायद तमिल साहित्य अपनी विधिप्यता तथा बिलम्बपणता अधिक लिये हुअे था। लेकिन धीरे-धीरे देखी सदीतक-जिस कालको ये कान्यकाल कहना चाहेंगा-साहित्य सिर्फ़ तमिलनाडका न रहकर भारतीय बन गया। मत्रलब यह कि अुमका बाहरी रूप तथा वेधनूपा तमिलका अपना रहा, अुमकी आत्मा पूर्ण भारतीय हो गयी।

कम्बनकी रामायण अेक अंसि दृष्टि है। बार अुतर भारतके लोग नाम सुनकर समथ ले कि रामायण अुतर भारतकी कहानी है, कम्बनकी रामायण अुसका अनुवाद होगा, वो यह अम है। कम्बनकी रामायण पढ़िअे तो पता चलेगा कि उमकयाने तमिल भाषाका आवरण तथा तमिलनाडका शान पाकर जितना सुंदर रूप धारण कर लिया है। यह तमिलवालाकी विधेयता थी कि वे तोडा कहीअे पकड साने लेकिन अुमके लिअे अपना पित्रता अुला अपने अुगसे तंकार किया तथा अुसे

अपनी बोली जित्वा दी। सरसूने कावेरीका रूप धारण कर लिया, राम ठेठ तमिलवाले बन गये, स्वयं अयोध्या नारीमी शीअ राबाकी कोअी मुन्दर पुरी बन गयी। काव्य-शैली तमिलकी परिपाटीके सचिमें ढल गयी।

यह प्रयास म्बुत्प है। लेकिन बार अुत्तरनारत-वाले यह समनते हैं कि देखो तमिल भाषामें नीलिम्बता नही रही तो दक्किय मारतवाले अपनी परंपराकोअने लानते हैं और अपनी अुला खडे होनेकी कपनताके प्रदर्शनके लिअे छटपगते हैं। जिअीलिअे तमिलनाडके विद्वान दूरदर्शी लोग चाहते हैं कि यह परंपरा जारी रखनेका प्रयास दोनो ओरसे सञ्चि रहे।

संर, अुअी परंपरा सदीकी अेक सुंदर मंगिसे परिचय करानेका ही मेरा जिस लेखसे अुद्देश्य है। पाठकोंकी अेक नवीन चीअ मिलेगी, जो नवीन होते दूअे भी बिलकुल अजरिचित नही रहेगी यानी "अेक परिचित नवीनता" का रसास्वाद मिलेगा।

जिन अुपका नाम "तक्कयागप्परणी" है। नाममेंही जान जिस विधिय सामञ्जसका अुदाहरण लीअिअे। यह अुद्भ्य संमृतके 'दक्कयण भरणी' का नाक तमिन म्य है (विहृत रूप नहीं)। जो हं, यह दक्कयणकीही कहानी है जिसे स्वयं तुलसीदासजीने बडे चावके साथ रामचरित-मानसमें दखाना है। लेकिन जिस अुपमें वह कहानी जिस ढाअे कही गयी है अुसमें कलाशौष्ठव है; और अुस कहानीकी पेशीके अंदर जितनेही भावमंगि बटोरकर रखे गये हैं, अुनीमें चमत्कार है।

कवि

अुसके अुनेअा कवि अीअटकूत्तर है। 'कूत्तर' नटराअका तमिल नाम है, कूत्तर कम्बनके समकालीन

रौतिका रचनाकी विशेषताओं मुख्यतः ये हैं— जन्ममें किसी प्रसिद्ध मुद्रका वर्णन किया जाता है। मुद्रके विजयी वीरको नायक बनाकर यह रचा जाता है। कभी-कभी आचार्य या कौश्री देवता भी काव्यनायक बनावे जा सकते हैं।

अस काव्यमें प्रधानतया, ओदर-वन्दना, कडे-तुरप्पु (द्वार खोलना), दुर्गाको भेंट चढाना आदि अंग होने हैं। (असका सविस्तर वर्णन आगे किया जावेगा)।

यह क्यों भरणी कही गयी? अिसके भी विदोष कारण हैं। भरणी नामक नक्षत्रके बाद ही असका नामकरण हुआ है।

भरणीक दिनमें ही भूतगण भोजन बनाकर काली देवीका भाग लगाने हैं। भरणी दुर्गा-देवीका नक्षत्र है तथा यमराजका भी। जिस तरहके काव्यमें दुर्गादेवीका वर्णन, दुर्गादेवीके भोजनका वर्णन तथा यमराजके कार्य विस्तारका वर्णन अवश्य रहता है। जिस कारण अस प्रवचका नाम भरणी पडा।

भरणी नक्षत्र विजयका मूलक भी है। तमिलमें यह मसल मगहर है भरणीका जात-धरणीका राजा। किसी वीर विजयीको वह कथा है, अत असका नाम भरणी हुआ है।

दक्ष-यज्ञ भरणी

जिस रौतिका वीर अंक विवेचना है कि जिस प्रवचके शीर्षमें हारे हुआका नाम जुटा रहता है। कथाके अनुसार दक्षप्रजापतिके मन्त्राजिन घमण्डको नोडकर, अुनकी अन्धकार चेट्या, जनीति सम्मन कार्य तथा अदृष्टताकी मजा दी जाती है। अत दक्षका नाम ही शीर्षक है। अन्तमें वारवाहुदेवने दक्षका ही नहीं दक्षके महात्म्य देवाका भी गर्व जम्बर तोडा था, अत अुनका नाम भी कर दिया था। तो भी असका नाम 'वीरवाहु भरणी' नहीं रखा गया।

अस प्रसिद्ध भरणीमें कलिगन्धुपरणी, हिण्ड्य-बदपरणी, मोहबदपरणी आदि अन्तर्वेचनीय हैं। अत अस काव्य विषयका अध्यायका मसलेमें देगिअे —

१ ओदर वन्दना। असमें व्रमदा अुमापति, गणनायक (विष्णुहर) मुरगन (मुद्रहमप्प) आदि देवी की वन्दनाके साथ श्री ज्ञानमवधकी भी महिमा गायी गयी है। ज्ञानमवध अैव भक्तियोंमें प्रसिद्ध चार मत्रोंमें बहुत प्रसिद्ध बाल सत है। अुनका नाम असलिअे चिर-स्मरणीय है कि अुन्होंने अैवमनकी स्थापनाकर, अुने दृष्ट किया। अुनके तेवारम (ओदर-भजन) तमिलनाडुके शैबके कथाभरण हैं और मन्दिरोंमें अुनके साथ पूजा-अर्चनाके समय गाये जाते हैं। अुनकी जनोंके नाथ जो मुठभेड हुआ अुसका वर्णन अिनी भरणीके अंतर्गत किया जाता है।

अिस अध्यायका आविरी पद्य है:—

"अिरे वाळि तरैवाळि, अियल वाळि, अिर्ना वाळिअे।

मरे वाळि, मनु वाळि, मदि वाळि, रवि वाळि, मळै वाळिअे।"

व्रमदा अंदर, भूमि, रक्षासक्ति, चरित्र, यश, वेद, मनु नायक, शौळ राजा, चद्र, सूर्य, वर्षा सब चिर-जीवी हो।

२. असके बाद दूसरा अध्याय "कडेतिरप्पु" है। असमें कौश्री देवियोंके द्वार खोलनेकी प्रार्थना की जाती है। यह भाग अस ग्रथका विशिष्ट भाग है तथा कोमल भावसे पुष्ट होनेके कारण सबसे रसवान् भी। गायद असका आसय है कि देवियोंकी कृपाने कविताका द्वार खुलेगा।

यह भाग सरस्वतीदेवी तथा लक्ष्मीदेवीने की गयी प्रार्थनाके साथ शुरू होता है। व्रमदा मुर म्बिर्दा, जलदेवियाँ, पर्वतकुमारियाँ, वनदेवियाँ तथा नगरवासिनी-देवियाँ सबोपित की जानी हैं। अुनमेंसे दो-अेक पद्य देगिअे —

शूरु शूरुलियरुण्डन अुणवुण्डन योयुग।

निरुडु कुळल भेगपर तिरमिन् कडे निरमिन।

अिसमें अुन मुरवालाओंकी सबोपित किया जाता है, जो स्नान करनेके बाद अपनी केस गणिका अुमैअर अुनसे पानी निकाल रही हैं। बेवारियोंका पता नहीं

कि जिन वेद्योको अंत रहा है, अन्के अन्दर विषं पानी नहीं है, बिना देव युवकाकी जानें तथा स्मृतिया भी हैं। अन्के केशोने देवनेवाले युवकोकी जान तथा मु. समत रखी थी। अब वह भी अंतन रा रही है।

दूमरा अब पर लीजिने —

अरनुमेनें अिमय वध मुष्वरन
अजि नजु - अमृदमु मृडन् ।
तिरे महोवधिमे विड विरन्दनेय
देव मादरु वडे तिरमिनो ।

समुद्रमें विप तथा अपृत टिपे रूपमे विप्रमान है। यह सबको मात्रूम है। पौराणिक कथाअे वताती है कि विपने भरपन शिवजी है तथा अमृतके देव। अपने दुस्मनोसे डरकर अमृत तथा विप अिन सुन्दरियामें शरण पा गये हैं। अन्से कवि कहता है— “अेनो सुन्दरियो, बिबाड गोलो ।”

टीनाकारने समझनेमें सहायता देनेके लिये विपको अन्की आँसामें तथा अमृतको कृचोमे टिपा हुआ बतलाया है। बिज तथा रसिन पाठकगण वरुपना तथा अपने-अपने अनुभवके आधारपर अिमका अर्थ-गामोय समझ ले।

तदनन्तर (३) दुर्गापरमेस्वरीका वामस्यान-स्मरानका भयकर वर्णन हाता है। वहाँ बालमुख भैरव आदि घूमने हैं। पिशाचगण भूतगण आदि भी अपने भयकर रूप लिये त्रिचर रहे हैं। रविके घोडे भी अूम ओरमे जाते डरते हैं, फिर मयाका क्या पूटना। कटोले झाडोकी छोडकर वहाँ कोओ और चीज नहीं अुगनी। “Ancient Manner” पुरातन समुद्र-यात्रीके जहाजोके समान रेखा रथोमे भून दिखायी देते हैं। भूताना शोर तथा मृतकोके साथ बजते आनेवाले भयकर घोओकी आवाजे अिनती तुमुल है कि दबोके कान भी फट जाते हैं।

अिम पृष्ठ भूमिमें (४) दुर्गादेवीका वर्णन होता है। मरकत-जाता देवीका वर्णन आपादमस्तक किया गया है। अन्की सनिधिमें दृष्ट अुपासक है जो होम आदि विधिसे अूम देवीका प्रनाद पानेके लिये सतत अ्यन है।

अिस भागमें श्यामला देवीकी अुरासनाके साम्प्रका सम्यक् ज्ञान मिलता है। अिम भागका आविरी पड यह है —

अडिच्छट्ट नूपुरमो ? वारणगलनेतुमे
मुडिच्छट्ट मुल्लेयो ? मुश्कंभु मुल्लेये ।

पादवय वे क्या नूपुर है ? नहीं, वे अन्तवेदोके सहस्रो मत्र हैं। मिरपर क्या वह चमेठी लता है ? नहीं, सनोचकी लता है। चमेठीकी लता मनोत्वका प्रतीक मानी जाती है। और अुमादेवी सनियाकी मिर ताज है। देवीका श्रद्धाके साथ वर्णन पूरा बरतक वाद (५) पिशाचगणमें परिचय किया जाता है। अिममें पिशाचाके रूप और अन्की सर्वभक्तिणी तथा श्रद्धम भूतना वणन मिलता है।

आकाशके छु जानेमे तथा आकाशमें और भी अुंचा होनेकी शक्तिने न हानेकी वजहमे नाटे हुअे पिशाच, तथा दिगलकी तगोकी वजहसे पनले हुअे पिशाचके दाँत अगर बिबाडका वाम नहीं करते तो शयद पेटकी भूख मुखके द्वारमे बाहर निकलकर सारे विरवको निगल जाती। अुबने हाथ अिनत लम्पे हैं कि सारे समुद्रोकी चीटाओ तक फँट जाने, तथा अितने षडे त्रि सारे अिवयुममृद तथा मनुममुद्रको अेक ही चुन्लूममें लेअर पी जाते। अिनकी भूखको क्या कहा जाअे। (६) अिनकी अधिनायकी देवीके मदिरका वर्णन बादको होजा है।

यह अग बहुत ही श्रेष्ठ है, क्योंकि अिममें ज्ञान-सवधकी धर्म विजयकी कहानी सरस्वती देवीके मुग्से कहलायी गयी है। अन्वृक्प, देवीकी शंभ्याका सर्व, अन्के पचायुधके वर्णनने बाद देवीके दशरारका वर्णन होना है। देवी नारायणकी बहन समझी जाती है तथा मूल देवी। शिवजीकी पत्नी तथा नागयणकी पत्नी भी अिनके ही अश हैं। श्यामला पास्त्रमें यही सधमें अुच्च-परग्रह्य समझी जाती है।

अन्की सेवामें सत्प्रमाताअे, स्वय लक्ष्मी देवी, भूदेवी तथा सरस्वती देवी विद्यमान हैं। देवीकी कृपा दृष्टि सरस्वती देवीपर पड जाती है और देवी कहती

है—वल्लीके (Vall) प्रेमी, मेरे पुत्रकी वह क्या गात्रो जिसमें ब्रुसने अपने प्रतिस्पर्धिपोपर विजय पायी थी ।

निरज्ञानमवध मुरगनके अवतार माने जाते हैं । सरस्वती देवीने क्या मुनायी, जिनका सार यो है—

ज्ञानमवध मधुरा नगरीकी दयनीय स्थितिका पता पाकर मधुरा जाये । नगरकी चहारदीवारीके बाहर अंध मटपमें विराज रहे थे । विरायिपोको जितना ज्ञान मिला तो झुग्होंने ब्रुसमें आग लगा दी । ज्ञान-सवधने अपनी योग-शक्तितसे ब्रुस आगको आसा दी कि तुम पाह्य राजाके शरीरको ताप बन जाओ । पाह्य राजा, जो ब्रुन पाह्यनी बह्लाता था (अपनी बुद्धता के कारण) ज्वरसे पीड़ित हो गया । बहुत अपचार किये, पर कोसी लाभ नहीं हुआ । तब मन्त्री कुलधिर-यार तथा रानी मगैयर्कैसी (नारोमें रानी) ने राजासे प्रार्थना की कि ज्ञानसवध बुलाये जायें । ज्ञानसवध आये तथा ब्रुनको अञ्चवीठनर विठायी गया । ब्रुनके विरोधिपोने औप्यांश आरोग लगाया—“ यह पाह्य राजा विरोधी शोडराजाके राज्यका बालक है; वहभी शंभ बालक । जिसका यही आनाही दुन्नाहस है । और राजाके ज्वरको दूर करनेका प्रयास बूधा है । ” लेकिन मन्त्रीने ब्रुनको चुप कराया । तथा बालनन ज्ञानसवधसे प्रार्थना की कि आप राजाको ज्वरपीठने मुक्ति कौजिअे । ज्ञानसवधने राजाके शरीरपर विनूति लगायी और राजा स्वस्थ हो गया । राजाने बूठकर बालनका स्वागत किया । विरोधिपोका मन औप्यांशि राग हो रहा था । विरायिपोने बेमत्तलवकी बातें कहीं । राजाने कहा, जिस ज्वरकी चिकित्सा आप नहीं कर सके वह ज्वर जिनकी विनूतिके कारण दूर हो गया । तब मैं क्यों न जिनकी बन्दना कहूँ ?

तब विरोधिपोने शर्त लगायी कि हम दोनों अपने-अपने मन्त्र ताइके पत्रोपर लिखेंगे । जिनका पत्र आगमें नहीं जलेगा तथा वीगे नदीने पानाकी धाराके विरोध दिशामें बहेगा वे विजयी माने जायें । हारे हुअे स्वयं मूर्खीपर चढ़ेंगे । तदास्तु कहा गया । रानी बालक

ज्ञानसवधके मूसको देखकर गंजाहुल हुआ । तब बालसन्तने कहा, देवी चिन्ता नत कीजिअे:—

“ अग्नि हमारी है । ब्रुसी अग्निकी शक्तिते पानी बरसता है । धरमिही नदी बल्पन होती है । अज-नदी भी हमारी है । फिर क्या अग्नि हमारे मन्त्रको जलाअेगी ? नदी ताडपत्रको बहा ले जाअेगी ? ”

मत्तलव, अग्नि तथा बरा हमारे दिवके अचीन हैं । हमारे ही अचीन हैं । जिन तरह बोर-बचन दोलने-वाले बालकका चित्र भी देख लीजिअे, लगे हाथों—

कादिकनगश्कुलं निरिल्लात्
कमपुं बुद्धंमृगु बलन्धोपष्
चोदित्तिरत्र नेरियाल् नीरिलहष्
चुदित्ककलन् मीडु तुलगडने ।

बाभोमें कूंडल झूल रहे हैं । मुगधिन अलकं मृगसे मिलकर हिल रही है । ज्योतिर्मम ललाट-पर ममूत देदीप्मान है । ब्रुसके अपूर “ शूट्टी ” * मुघोभित हो रही है ।

क्या यह चित्र देखकर आनका मातृ या नितृ-हृदय ब्रुस बच्चेकी गोदमें बूठनेके लिअे मचल नही बूठता ? साप-साप ज्योतिर्मम ललाटकी ममूतकी देखकर आपका मक्त-हृदय श्रद्धासे झुक नहीं जाता ? खैर, ज्या-शिवि स्वर्षां शूरु हुआ । ज्ञानसवधकी जीत हुआ तथा विरोधिपोकी हार । विरोधी स्वर्ष मूर्खीपर चट गये ।

जिस कथाका सक्ति “ बीडवरवन्दना ” के अंशमें है । वहाँ ज्ञानसवधको “ स्वयं मूर्खीपर चडकर प्राण खोये विरोधिपोके समूल अमूलनकी विरुनी ” के नामसे संबोधित किया गया है ।

जिस कथा-अवगसे आनदित होकर देवीने सरस्वतीकी अपने सामने स्थान देकर सम्मानित किया ।

तभी [७] पिगाव आकर अपनी मूसका विह्वल बर्षण करने लगते हैं । कितने ही दिन हुअे

* “ शूट्टी ” मूर-सा बेक ‘ आमरा ’ है जो बच्चेके शिरपर अघभागमें लटकता रहता है ।

अनको कुछ साथे हुये । भूख नहीं मही जानी । जब यह अर्ज की जा रही है तभी अंक पिशाच आता है जो दक्षयज्ञ तथा युद्ध देखकर भाया हुआ है ।

वह पिशाच [८] देवीमे सारी कहानी कहता है । " कालिकु कूठ कूरियदु 'के सभमें सारी कहानी विस्तारके साथ बही जानी है ।

द्वपने यज्ञ शुरु किया, अन्य सभी देवताओंको निमंत्रित किया । लेकिन पुराने विद्वेषके कारण अंक शिवजीको नहीं बुलाया । पार्वती देवीने देखा कि सभी देव जा रहे ह । जानेकी अच्छा जाग्रत हुआ तो अन्होंने पतिसे अनुमति मागी । शिवजीने कुछ आग्रह किया तो देवीने पिताकी भूलके लिये माफी मागी । भविष्यद्रष्टा महेशने अनुमति दे दी ।

देवी गर्मी, पर स्वागत किमीकी ओरमे न हुआ । स्वयं मानाने भी अनदेगी कर दी । शिवा कुपित होकर लौटीं । अूनकी परिचारिकाओने कोप शमन करनेका प्रयास किया लेकिन कुछ लाभ नहीं हुआ । वे सीधे पतिके पास गयी और प्रार्थना करने लगीं कि पिताको जिस वे अदवीकी अुचित सजा दी जावे । शीघ्ररने सोचा, आखिर पिताकी पुत्री है क्या पता कि सजा देनेपर शिकायत करने लग जाये । वे शूनपी साथ गये ।

देवीके गुस्तेका पारा और भी चढ गया । वे पतिसे अलग हो गयी और वही दूर जाकर बैठ गयी । शिवजीको भी गुस्सा था गया । अन्होंने वीरबाहुको बुलाया और आजा दी कि जाके यज्ञसहित दक्षका नाश कर दो और अूनके सहायक देव भी छूट न जायें ।

वीरभद्रदेव भूतगणोंको लेकर युद्धमें गये । दशके दलमें विष्णु, ब्रह्म, अिन्द्र, इन्द्राशान्दित्य, अंकादश मरदण थे, समुद्र था, पर्वत थे, वायु थे ।

बारी-बारीसे सबका नाश होता गया । लेकिन ब्रह्माने सबकी पुन सृष्टि कर दी । जिस युद्धके विरुद्ध तथा सजीव वर्णनके बाद हम देखते हैं कि वीरभद्रदेवन भद्रकालीकी महायत्ना लेकर सबका नाश कर दिया । विष्णु, दस ब्रह्मदेव आदि सब मरकर भूत बन गये ।

यह प्रकरण लबा प्रकरण है । जिसमे हमको कभी बातोंका ज्ञान होना है । हमारे आजतकके देव अिति-हासमें क्तिने देव हैं, अंक-अंक देवके क्तिने अश हैं, अिन मन्त्रा ज्ञान अुपलब्ध होगा है । अंक तरहमे देव-व्यसका अितिहास पूर्णरूपेण बताया जाता है । अूनके नाम, अूनके गुण, अूनके काम, अूनको प्रकृति मन्त्रमे हम परिचिन हो जाते हैं ।

दूसरी भद्रकालीके गणामें जो मोतिनिर्वा, डाकि-निर्वा, मोतिनिर्वा आदि हैं अूनका भी परिचय हमको दिया जाता है । वीरभद्रके गणोंमें कुछ पक्वो रूपी भूत हैं । अूनके वर्णनके मिस पक्षियोंके गुणाका भी वर्णन मिल जाता है, जैसे —

चकोरोने चन्द्रकी अल्पवया किरणोंको चुग लिया । कबूतरोंने पवनोंको चुग लिया । कबूतर छोटे-छोटे ककड निगड लेनेके आदी हैं । जिस स्वभावका यहाँ प्रयोग करते बदिने पर्वनोंको कपोनकवलिन बताया है ।

मोरोंने सर्पोंको निगड लिया आदि । यह कहानी सुनकर काली पिशाचको लेकर युद्धके मैदानमें आनी है, जहाँ—

(९) कृच्छ्रदुल्लभम् उदुदुदु (भोजन बनाकर कालीकी भेंट करन)की क्रिया सप्त होती है । वह भोजन क्या है— देवमांस हृष्टिर्षा तथा अन्य सामग्रियोंका पडा हुआ माड है । अिनमें वीभन्म रसका पक्का पकथान तैयार हुआ है । पिशाच भर पेट खा खा करके राजाकी जय मनाते हैं । जिसकी अच्छासे यह काव्य प्रणयन हुआ । यह ओट्टककूतरने साहसका और अंक अुदाहरण है कि पिशाचगण जहाँ अूनको काव्य नायककी जय मनाती चाहिये थी वहाँ काव्य-सहायक राजाकी जय गा दी ।

यहाँ कहानीको समाप्त हो जाना चाहिये । लेकिन यहाँ कहानी समाप्त नहीं होनी ।

(१०) कल गाट्टल (मैदान दिखाता) में शिवजी पावनी देवीको ले आकर गमर-भूमि दिखाते हैं ।

समर भूमिमें सभी शत्रु भूत रूपमें खड़े हैं । विष्णुका भूत भूम दिनकी अूनकी छायाके समान लबा

खड़ा है जिस दिन अन्होंने त्रिविक्रमावतार लेकर ब्रह्मांड को नापा था ।

भूत गणोपर राज्य करनेवाला देवराजका भूत, पेटके अन्दर आग रखनवाला वरुणका भूत, निर्जीव घूमाकार अग्निका भूत, दूसरे भूतपर सवार निरतिका भूत (निरति भूतवाहन है), यमका भूत, कहीं तक कह सब देव भूत विचर रहे हैं ।

यह सब देवधर देवीका दुहरा कोप हवा हो गया । व अपने पतिदेवसे प्रार्थना करती है कि अिनको माफ कर दें तथा पूर्ववत् रूप तथा पद दिला दें ।

शिवजी, अपनी पत्नीका मन रख लेते हैं । सभी देव पूर्ववत होकर शिव शर्वतीका मंगल गाते हुअे चले जाते हैं । दक्ष ही जैसे थे जिनको पूर्वरूप नहीं मिल सका । अूनका शिग्रभर अजका सा हो जाता है । आखिरी (११) प्रकरणमें जयगान होता है । यहाँ भी राजाका ही जयगान है ।

अुपसंहार

पाठकोने स्थालीपुलाक न्यायमे देखा होगा कि अिस काव्यसे कविका विविध शास्त्र-ज्ञान, माहित्वाध्ययन, कवि-दानित, मौलिक प्रतिभा, अदभुत-कल्पना अिनका पूरा ज्ञान मिलना है ।

अिनके साथ-साथ कुछ विविधताओं भी हैं, जिनकी ओर ध्यान दिये बगर मन नहीं भरता । कवि अेकके बाद अक, तीन शाल राजाओंके आश्रयमें रह चुके हैं । यह थडे राज भवन थे तथा वृत्तज्ञतासे भरे कवि थे । अत, अून तीनों राजाओपर पृथक्-पृथक् अेक "अुला" गाया है । अुला अूम रचनाका नाम है जिसमें क्विमी वीरका वर्णन अूनकी महिमाने साथ किया जाता है । अूमके अावा कुन्ने तुगन् पित्तन्तमिल (शाल काव्य शैली) लिखकर बुल्लोत्तुग राजाका सम्मान किया है । अिम भरणीमें विजयनाट्यकी जय गायी गयी है । राज-

राजका भी जय-गान यन्त्र-अिमिमें पाया जाता है । अिमो वृत्तज्ञतामे प्रेरित होकर नियमके प्रतिकूल जाने हुअे भी अुन्होंने पिशाचोके मुखसे विजयका ही जय-गान कराया है । आखिरमें भी क्विने स्वय अूनका ही जय गान किया है ।

दूसरे, अूनकी ज्ञानसम्बन्धके प्रति अगाध श्रद्धा थी । अिसी कारण अुन्होंने सरस्वती देवीके मुखमे ज्ञान सम्बन्धी महिमा गवायी । अिस सारी पुस्तकका नाग हो जाअे, तथा वही अेक असा बच जाअे, तो भी वही अिसकी महिमाके परिचयके लिअे पर्याप्त हागा ।

अिन दोनों भावनाओंके मूलमें शिव-भक्तिका स्रोत नि सूत हो रहा है । वे कट्टर शिव-भक्त थे । अिसी कारण अूनको यह कथा पमद आयी । वयोकि अिसमें शिवजीकी शक्तिके सामने अन्य देव नहीं ठहर सके । अिसी शिव-भक्तिके फलस्वरूप विरोधी हारकर अत्रियमाण हुअे । शिवमतको पुन स्थापित करनेवाले ज्ञानसम्बन्धके प्रति अपनी श्रद्धाको तथा शिव राजा सोलनके प्रति अपनी वृत्तज्ञताको प्रकट करनेमें वे अितने आतुर थे कि कही-वही काव्य-लक्ष्यणके अुल्लक्षणकी भी परवाह नहीं की ।

तमिल भाषाकी प्रवृत्तिजन्य विशेषताओंको छोड दें तो भी अिस काव्यका हिन्दी ही नहीं, किसी भी भाषामें अनुवाद हो जाअे तो अुसने रसिक मुग्ध हुअे बिना नहीं रहेंगे—आमकर भारतके किसी भी कोनेका निवासी जो अपने पुराणामें आस्था रखता है अपनी धर्म मूलक देवप्रधान परंपरापर सहानुभूति (कमसे कम सहानुभूति ही) रखता है, अिने पढ़कर अिमिमें खो जाअेगा, अिसमें शक नहीं है ।

यह काव्य अपनी विषयआमाकी परिचिन्ताके कारण आकर्षक तथा अपनी नवीनताकी वजहसे रोचक मिद्ध हाकर क्विमीको भी मोहू लंगा ।

जनश्रुति—असत्यपर सत्य

: श्री ब्रह्माज्ञन्त श्रीगोस्तव, ओम ओ :

मभव ता नहीं है पर मान लिया जाय कि यदि अन्यायका जनक आकाश न होता तो मनुष्य अपना मस्तिष्क नहीं रखता ।

असि बहग प्रस्तका बहगा अततर यह है कि मनुष्य अपना मस्तिष्क भी भूमिपर रखता और वह वह चरनक अनिश्चित छेदकर चलता ।

आकाश क्या है ? कुछ नहीं । पर यह कुछ नहीं खड़े खड़े चरनके लिये आवश्यक है ।

जितना अख्यवन और रहस्यमय है वह आकाशमें ही है । आकाश स्वयं अख्यवन है । घट घटवामी नीरा प्रज्ञाही तो है ।

हमारे जीवनके चारा बार अंधी "कुठ नहीं" बस्तुओं घेरा हाते पडो हें कि खुग घेरेक ग्राह्य जातेही जीवनके बाहर जाना पत्ता है ।

यदि कोभी आधुनिक मनुष्य जारम प्रोग मबावर कहे कि पुराणकी बहानियाँ गलत हैं तो हिन्दू चाणक्य चुटिया टिकाकर बहगा 'तू नास्तिक है अज्ञ है, तू अधर्मी है ।'

धर्म ग्रन्थामें कभी अंध स्वयं ह जहाँ भगवानने स्वयं कुछ कहा है । जा रहा है वह जान लेनेके बाद पहली बात जो मनमें जानी वह यह है कि भगवान अमुक व्यक्तिके पास गये होंगे और अपनी बात कहने लगे होंगे । अमुक व्यक्ति अमुक नाट करवा गया होगा । यदि नोट न करता तो आजकी जनता क्या जानती कि भगवानने क्या कहा था ।

यदि कहा जाय कि जैय आजके क्रांतीकार अपने पाशामें ज्ञान और दर्शनकी ध्याप्या करवाने हैं, वैसे अमुक समयके राज्यकारा या बहानीकारने भगवानने जीवन और धर्मकी ध्याप्या करवा दी तो यह निरर्थक लेखक यहाँ नास्तिक माना जायेगा । धर्मकी अज्ञातीके नीचेमे

रा भा ५

भागा हुआ आधुनिक व्यक्ति 'लाग अण्टी' का समर्थक माना जाता है । अन्यायके अंधी व्यक्ति बचुर थे ।

पर यह दावके साथ कहा जा सकता है कि अमुक पुगनी बातामें अधिक पुगने काव्यकाराकी कल्पनाओं हैं जो साहित्य, धर्म और समाजमें घुम आयी हैं । ये कवच जनश्रुति हैं । धर्म-ग्रन्थामें यदि दर्शन और टोम अतिरिक्तमिक कल्पनाओं निहाय दी जायें तो जनश्रुतिही शय बचेगी ।

पर जितना यदि रणिय कि ये जन श्रुतियाँ अमुक दस्ता चीज नहीं हैं । वे अन्ध हैं पर जीवनमें साथ बनकर आ पती हैं । धर्मकी धरतीपर चरनवाते प्रगतिका मन्सक अमुकी जनश्रुति आकाशमें ही है, जो बस्तुतः है कुछ नहीं, पर अमुक कुछ नहीं' का रहना आवश्यक है । भूगोल चन्द्रकी कान्ठी छायाका चाह जमा हुआ समुद्र माने चाह रहा पर धार्मिक गीत विद्वानक साथ कहते हैं कि जब चन्द्रमा पूर्ण बनकर गीतमकी पानी अहिपाको छत्रमें अन्धकी महायना करन गया था तब गीतमने मृग चर्मसे पूर्णगामी चन्द्रका माणकर गारसे काटा कर दिया । तभीम मृग गच्छन बनी लटका है । कपानी सत्यताका निर्णय विज्ञान पाठक करे, पर साथ जितना अवश्य है कि किमीकी पानीको छत्रनेवाचका मुहू काटा हाता है ।

योगीको अतीत जितना अच्छा लगता है, वर्तमान जितना अच्छा नहीं । अज्ञान महा अतीत साथ बन गया और अमुकी अज्ञानमे मुक्त वर्तमान दुरा ही रह गया ।

गुरुमीरामजीने पुत्रकरणके विषयमें लिखा है, "भूगोलकार गरीरा ।" मानववाले आगे मूँदकर मानते हैं कि पुत्रकरणकी लुकात्री यदि शिमायक बराबर न रही होगी तो विध्यायके बराबर अवश्य रही होगी । और यदि आज कान्ठी कवि किमीकी

‘भूधराकार शरीरा’ बहूदे, तो वह अधिकमे अधिक छह या सान फीट अंचा समजा जाअेगा ।

धीवरकी पुत्री मन्थ-गन्धाकी सुगन्ध दूर तक जाती थी । अमे याजन गन्धा भी बहा गया है । अिमकी विरोध करनेवाला प्राचीन सभ्यता विरोधी और महा-भारत अविश्वामी माना जाअेगा पर ‘जानन ओषे अजाम बाले बिहारीके अस दोहम अनिमयोवित है ।

शकुन्तलाके लाल अघरको फल समझकर पत्नी अवश्य घोच मार सकता है पर आजकी ‘चन्द्रमा’ कही जानवाली नायिका केवल ‘गोरी’ मानी जाअेगी ।

जनश्रुतिका जन्म वेदतलबकी गप्पो और मतलबके तर्कोंने होता है । कुछ बातें चल पडती हैं कुछ चला दी जाती हैं । चल पडती हैं किसी अनुमानके आधारपर, और चला दी जाती हैं किसी कार्य-मिद्धिके लिअे । ये न पूर्णत सत्य होनी हैं, न असत्य । सत्य असल्लिखे होनी हैं कि अिमका आधार मूल्य नहीं होता और असत्य असल्लिखे होती हैं कि चल पडती हैं या चला दी जाती हैं ।

वस्तु या व्यक्ति या किसी भांति हमारे जीवनक्ष आ जाने हैं अुनके जीवनका वह आवश्यक अग जो खी गया है या छिप गया है वहाँ अुनके जीवनके किसी विशेष अक्षका आधार लेकर या बोरी कल्पनाकर कुछ अनुमान कर लिया जाता है । वस्तु या व्यक्तिकी महत्ताके अनुसार अनुमान भी होता है । कभी-कभी व्यक्ति और व्यक्तित्वके अनुसार बहून मो भ्रामक और जनगैल बातें चल पटती हैं । अुन बातोंके लिअे व्यक्तित्व जाहिते । मुन्दर व्यक्तित्व मुन्दर बात, अमुन्दर व्यक्तित्व अमुन्दर बात ।

जनश्रुतिसे बोअी भी समाज, सम्प्रदाय, धर्म और साहित्य वचित नहीं है । बड़ी कहीं वे आमाकी भांति जीवन शक्ति प्रदान कर रही हैं, आमा अुअी कि शरीर निर्जीव होकर गिरा ।

जनश्रुतके आधारपर यदि सृष्टिका रचना-बान मान लें, तो यह मानना ही पडेगा कि अुम सृष्टिमि निर्मित धार्मिक और सामाजिक व्यवहार स्तम्भाकी नीव रूपनेके लिअे जनश्रुतिका मसाला जमाया गया आगा ।

धर्मकी कल्पना दुअी अुअकी सीमामें सृष्टिकी रखा और त्रिन्दुमें ब्रह्मणों । ब्रह्मकी व्यापकता और अुअकी शक्तिको व्यक्त करनेके लिअे कुछ बातें चली । अुन बातोंका आधार वही त्रिन्दु है । अुम अव्यक्त शक्तिकी व्यक्त करनेके लिअे कुछ अनुमान हुआ और अनुमान सत्य होने होते आगे बढ़ गया । विकसित बुद्धिने तर्कहीन समझकर अुसे गल्प कहा, पर वे गल्प अब भी सत्य हैं ।

गीतमकी पत्नी अहन्याकी ही कीजिअे । वह पतिके शपथमे पापाण हो गयी थी और रामके चरण-रज-स्पर्श मात्रसे अपना वास्तविक स्वरूप पा गयी । पापाणको जीवन स्यो बना देना, बुद्धि अिमे कंने ग्रहण करे ? सायद बोअी पापाण हृदया अहन्या रहीं हो, जो अपने स्वभावके कारण पति-वचिना ही गयी हो और मर्यादा पुरुपोत्तम रामके प्रभावमे सुधार गयी हो । किसीको सुधार देना ही रामको भगवान बनानेमें योग नहीं द सकता, पर ज्यो-ज्यो राम भगवान होते गये, पापाण-अहल्या पापाण होनी गयी ।

अहन्याकी कथाको हम मादर ग्रहण करते ही हैं, क्योंकि वही भक्तोंकी शक्ति है ।

जब अत्यक्तने मत्ताकी नीव पडती है तब अुमके प्रचारके लिअे जनश्रुतियों द्वारा अुमका समर्थन कराया जाता है । अंभी जनश्रुतियोंका जन्म भावविशके कारण हुआ होगा ।

रावण प्रनापी था, विद्वान था और दीव था । अय राजाओंकी भांति अुममें अेक बड़ा दोष था वह कामी था । वह रामका विरोधी था और दीव था । सायद असल्लिअे वह वैष्णवोंके लिअे राक्षस था । देवताओंके अणु राक्षस होने ही । त्रिम युगमें भेवा शानेवाले राक्षस नहीं हो पाये और मनुष्योंका माम शानेवाट वतिय जगली जगली हो रह गये । दु गामनका रक्त पीनेवाग नीम महा पराक्रमी भीम हुआ । वैष्णवोंने रावणकी किसी दुर्वल्ल्ताकी उगम्या करते अुने राक्षस करार दिया हो । वह आयी अथवा देवताओंका ही मर्मलिअे, अणु था फिर अंसे दीवकी रामभक्त वैष्णव राक्षस न बहकर देवता बहने ।

नारी, गी और ब्राह्मणकी रक्षा करनेवाले रामके सामने सूपणकारी नाच बट गयी। केवल धूमने प्रेमनिवेदन किया था अस्मात्किञ्च । मन्वान बात चलायी वह रामपत्नी थी भीतारो मान्य दीडी या भगवानने माया की। कैसी माया? उठिमनहू यह मरम न जाना । बात जाग न प्रद पायी मायाम निमित्तपर बट गयी। न मालूम कितनी धार्मिक जनश्रुतियाँ माया परदेमें छिपी हुओ ह श्रु ह छडा नही कि नास्तिककी श्रुपाधि मिली ।

जनश्रुति चली वा रही हे कि रावणन दन्ताग्राम रक्षकका टैक्स लिया था और धुमी रनने भीतारो जन्म हुआ। पर रनकी होगी खननवाओ और मस्तकका टैक्स लेनवालो ब्राजकी सरकार धन्य ह ।

राम और रावणके जीवनने सम्बध रननवाओ प्रचलित जनश्रुतियाँ यदि निवाह दी जात्रें ता राम अत्र विजयी राजा हो और रावण रासपन न होकर मनुष्य हो जात्र ।

जनश्रुति यहाँ मापन यत्र वन जानी हे। अच्छा कितना अच्छा हो जोर दुरा कितने नीच गिराया जात्र ।

कामदेवको भस्म करके भगवान शंकरने रतिको शपर मुटापना बरदान दिया। 'काम यहा अक भाव है और रति है अम भावका कारण और निदान। यहाँ भाव और कारणका मानकीकरण किया गया हे। जैसी भाँति भगवान शंकरको अद्रिषोका धमन करन वात्रा घोषी वहा गया है ।

भावाका मानकीकरण अब प्रचुर मानान होता है ।

अत्रने कोपने श्रजकी रक्षा करनेवात्र भगवान श्रीकृष्णन पवन अडा लिया था ।

वर्षा लग्न होनके कारण गायद बाढ आ गयी हो और भगवान उष्णन मक्की रक्षा की हो। गेग वायु भारके कारण अ भी बहूने फिरने हे कि सिरपर पहाउ घरा है । बिगही और जालसिपाका दिन पहाउ-सा होना ही है ।

[बस्ती ।

कविता

शिशिरकी रात्

(श्री प्रो० महेन्द्र भटनागर)

शिशिर ऋतु राज, राका रश्मियाँ चंचल ।
कि फैला दिगलिंगन्तोंमें मधन कुहरा,
सजल कण कण कि मानो प्यार आ सुतरा,
प्रकृति मगीन स्वर बस गूँजता अविरल ।
शिशिर ऋतु राज, राका रश्मियाँ चंचल ।
शिशिल तर डाल सम्पुट फूल पौसुदियों,
रहीं सुषचाप गिर ये ओसकी कदियों,
धवल हैं सब दिशाओं हमनी सुगज्जल ।
शिशिर-ऋतु राज, राका रश्मियाँ चंचल ।
गगनके वक्षपर कुट्ट टिमटिमात हैं
मितारे जो नहीं फूले समान हैं,
सुपद प्रत्येक अुर हे न्ययमय झलमल ।
शिशिर ऋतु राज, राका रश्मियाँ चंचल ।

धरा-आकाश अेकाकार आर्लिगन,
प्रणयके तारपर यौवन भरा गायन,
किमलता नीलवर्णी शून्यमें आँचल ।
शिशिर ऋतु राज, राका रश्मियाँ चंचल ।
विहग तरपर अकेला वृक देता है,
त्रिसीनी यानमें बस हूक लेता है,
नयन प्रिय पवपर प्रतिपल रिठे निर्मल ।
शिशिर ऋतु राज, राका रश्मियाँ चंचल ।
सपेरा है कहीं ? ससार मब सोया,
परन सुनमानमें बहता हुआ सोया,
अमी हैं रगनके पल शेष कुट्ट कीमल ।
शिशिर ऋतु राज, राका रश्मियाँ चंचल ।

[धार ।

निराश्रयकी जीत

श्री रानी

समुद्रक वाच बसा हुआ एक छोटा सा द्वीप था। कभी कभी पामन निरालनवाल जहाज कुछ समयके लिए अमुक तटपर तार गल देव था। अब जहाजोंक द्वारा अन्न द्रापक भी कुछ निवासि द्वापर द्वीपा और महा द्वीपाम जाकर बन गय थ और जूनमेंसे कुछ कभी कभी विस द्वापम नी आकर कुछ समय रह जात थ।

अक वार अमु द्वापम अना अका पडा कि लामान भूखा मरतकी नौवन आ गयी। बाहरका जहाज ना बहून पिनान काजी नहा गया था। बाहरसे खाद्य सामग्री प्राप्त करन या द्वाप छाकर जयवथ जा बमनका अुनक पास काओ अपाय नहो था। अुनक पास जो छागी छाग नौकाथ थी व समुद्र पार करनके लिए बिकुल बकार थी।

द्वीपक मुखिया गेग अिमी चिंतामें अक्त्र होकर सोच विचार कर रह थ कि अचानक अक युवकन अुनकी सभाम आकर बहा —

समुके पार महाद्वीपम पहुँचनका प्रवध मन कर लिया है। आप सब द्वीपक सभी निवासिया सहित भर साथ चलनका तयार हा जाय।

जिस प्राण रक्षक समाचारके लिए हम दृश्ये तुम्हार इतन ह। क्या तुम अुनी महाद्वीपम आय हा? तुम्हार साथ काओ बहा जहाज आय है? या तुम अकस अधिक जहाज ला सके हो? वह महाद्वीप किम पियामें कितना दूर ह? आदि प्रन्ताका पनी अुम युवकपर बरन पडा।

‘मर पाम काओ नी कमा जहाज नहा है। म अिना द्वापका रहनवाला ह। मन समुद्र पारक महा द्वापनी कमा भी याता नहा का। म केवल जितना जानता थ कि यह अुनरका आर है फिर ना वह महा द्वाप कितना भी दूर हा मन अुन तक पहुँचनका प्रवध कर पिया है और आप सबको अरन साथ चलनका निमन्त्रा गता ह। युवकन अुतर पिया।

जिमक पास काओ बडा जल पोत नहा, जिमन महाद्वीपकी याता नहा का और जो अुनका तराका नी नहा जानता अुनका साथ अरन हम अरना आनी हुओ मनुको वृत्तान्तक गाम्रना हा कर सकत ह।’ अुहोंने बदन हुअ स्वरम युवकका अुल्लर पिया और अरना चिंताम लग गय।

फिर भी अगले दिन जब अुस युवकन द्वीपके अुतरी समुद्रमें अरना नाव छोला तब लामान दका कुछ और भा युवक अपनी अपनी नाव अरन अुनक साथ हो गय थ। व सभी नाव पारस्परिक समीपता और वातावरणकी सुविधाके विचारसे अक दूसरेक साथ रसियाम बधा हुओ था।

तट छाने ही वगका अक तुरान समुद्रमें कुठ खला हुआ और द्वाप तटपर छड देवनवागत अरन दूर वाकवण पगोअ दया व नाव अक दूनरत टकराकर और बपत विवपन होकर समुद्रमें डूबन लागी और अुछ हा घनाम जलक गनमें विगान हा गयी।

जिम मयकर दुभाग काहको अरकर द्वाक लोअ भरे हृदयस अरन पराका गे।

अुना साथ अुनक आश्रयकी मोमा नहा रही जब अुहान कुछ युवकाको अरन सामन अुपस्थित दसा। य अुहोमन कुछ थ जो अरत काल अरना नाव अरन समुद्रम अुतर गय थ और अिट नौकाशायमत्त हूवते हुअ व अरना आवास दम चुक थ।

‘समुद्रको मनुगल और निरपयान पार करनका रहस्य हमन जान लिया है। हमारा नाव जब छिनमिष होकर डूबन गयी तब अमार माधीन हमें समुद्रकी अधिकतम-अधिक गहराजाम अुतर जातका सकत पिया। हमन अरनक प्रपन्न किया अकिन अरिअ नाच नहीं अुतर मक और नाव जानक प्रत्यक प्रपन्नन हम अरन

हैं। बपण पानीके रूपमें आ फका। हमारा अनुभव है कि मनुष्य पानीमें डूबकर तभी मरता है जब वह ज़ुमकी गहराईमें जानमें बचना चाहता है। जयया समुद्रको मनुष्यका शरीर अपन भीतर रखना मवया अर्थात्कर है। हमारे अधिकांश माथी निश्चित जठ विहार पूरक अुत्तरकी ओर बढ़ चले आ रहे ह और हम कुछ ल्याग वीचसे ही असल्लिख लीट आय ह कि और भी जो जोग यहसि चलनका तैयार हो सकें व हमारे माय चठ। अुन युवकोमग अवन कहा।

+ + + + +

आगरा]

अिन कयाइर मेरे कया गुरकी गिण्णी है कि ससारकी बडीसे बडी विपत्तिया भी मनुष्यको जवन भीतर रखना अर्थात्कर समझती ह और अुनमें फमकर मनुष्य तभी अपनी कमर तोड लेता है जब अुनग बचनक लिअ व तहांगा भाग दौड करता है। अुनका यह भी सकेन है कि छोणे वणे लौकिक विपत्तिधोस ठेकर विश्वकी महामायाक्रम बचनके लिअ वासनवम मनुष्यको किमी समय, जानकार मुक्त या मिट्ट गुर के महारे और पय प्रदानकी अनिवाय आवदय कता नही है। वह अकेअ और निराश्रय होकर ही अिनपर अंतिम विजय पा सकता है।

चार चतुष्पदियाँ

श्री अजितकुमार

अेक विधान

प्यास तो अैसी लगी थी
कया समन्दर, कया मितारे
सभीको पी लूँ,
कामता अैसी जगी थी
कया तुम्हारे, कया हमारे
सभी बपण जी लूँ,
किन्तु विधिके अुन निपेधों,
अुन विरोधोको कहुँ कया
जो यही बाले,
प्रीत जो मतम रंगी थी
तोड डालूँ तिन विचारे,
होंठको भी लूँ।

दो श्रम विभाजन

दो अँखें हैं अिसल्लिख कि हम दखें ज्यादा
दा कान कि सुन लें जितना भी होअ समन

लेकिन औरअने अक खवान हमें कयो दी ?
अिसल्लिखे कि दखें सुन अधिक बालें कद कम।

तीन : आशीर्वाद

वे जो अँसूके बीज आज थोत ह
कल सुशियोके अकुर अुपन दखगे,
परतो प्रसन्नताभी फयलें काटने -
अैसी है अेक कहावत अंग्रेजीमें।

चार आग्नाश स्थिर

और सय अस्थिर
मगर आकाश स्थिर है,
अखिर सय है
शून्यका पर भाव यह चिर है,
नभ अमीम, अपारका
वैभव अट्ट अमाप
मनुज है अँचा बटुत, पर यहाँ—
बतदिर है।

[अुन्नाय।

'दिनकर' जीका 'कुरुक्षेत्र'

: श्री गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' :

हमारे दैनिक जीवनमें अब सत्यका कोभी स्वल्प नीरम प्राणगून्थ रूढ़िका का धारण कर लता है और हम स्वयं अनुभव करन लगन हैं कि हम किसी बधनमें बागगारमें पड़ गये हैं, नव कविही स्वल्प सुदर बह्यापकर तथा जीवनमें अधिक घनिष्ठता रखनवाला सरम मल्प लेकर हमारे सामन अप्रसिप्त होना है और धुन ही म्बोकाकर अग्रमें ही अनो चिन्त वृत्तियाको रमाकर हम तदनु रूप अपनेको टालने लगन हैं। भारतीय राजनीतिक बधनमें महा मा गांधी-द्वारा प्रवर्तित अहिंसा अन्के कुछ ही अनुयायियोंको छाडकर दोष अधिकांश लोगको प्रिय नहीं हुआ। अहिंसाकी निबिवाद अप्रयागिता होनेपर भी लोगाने अन्के प्रति सोहादका भाव नहीं बढाया। अंभी अवस्थामें अन्के प्रति भक्तिवै अभावका स्थान विवाग मान्यताके भावने ले लिया। क्रमस लोगामें यह विचार बल-सबह करने लगा कि अन्याय और अत्याचारके प्रतिचारके लिअे हिंसात्मक अर्थोंका अप्रयोग अनुचित नहीं है अिसी विचार धाराको वाणी प्रदान करनेके लिअे 'दिनकर' जीने 'कुरुक्षेत्र' नामक काव्यकी रचना की है। अिस दृष्टिके 'दिनकर' जीके अिम काव्यका अंतिहासिक मत्व है। अुमने अेक निर्र्द्ध मल्पके स्थानमें अेक सत्रीय मायकी स्थापनाका प्रयत्न करते हिन्दी भाषी समाजकी विचार शक्तिको प्ररणा देनक रूपमें अुमनी प्रगसनीय सवा की है। अपने अिस अुद्योगमें व कर्तविक सम्मल हुआ है, यही यहाँ विचारणीय है।

अपन नवीन सञ्चक प्रतिष्ठापनाके लिअे कविके महानारत सशाम द्वारा प्रस्तुत परिस्थितियाँ स्वभावत बडी अप्रयुक्त और सहायक प्रदान हुआ। अुमने विजय प्राप्त करके भा मुडिष्टिर अु ग्राह और अुलामस युक्त न हो सके। अनुताप और ग्गानिन अुट पर लिया। व गावन लगे कि अिस विजय अरुटा था यही हाना

कि हमन त्याग भाव स्वीकार किया होता। अपनी सवाशको लेकर वे भीष्मपितामहके पान पहुँचने हैं, और भीष्मपितामह अुनका समाधान करनेका प्रयत्न करन है। महानारतके अिसी प्रमगको लेकर दिनकरजीने अपन कुरुक्षेत्रकी वस्तु-रचना की है। अुन्होंने अपने सदाका अप्रयुक्त वाहक बनानेके अुद्देश्यके भीष्मपितामहके चिन्तनमें कुछ म्बोवकाने काम लिया है। अुनका यह चिन्तन कैसा है अिसके सम्बन्धमें आगे लिखा जाअगा, यहाँ पहले अिनना जान लेना आवश्यक है कि प्रत्यक अवस्थामें त्याग और अहिंसाका पत्र लेनेके लिअे अिस काव्यमें अेक बार मुडिष्टिर प्रस्तुत है, तो दूसरी ओर अन्यायके निराकरण अुद्देश्यको लेकर को जानेवाली हिंसाका समर्थन करनेके लिअे भीष्मपितामह अप्रसिप्त है। अिसरी वाणीमें कविकी निश्चयात्मक वाणी अपनी गज पा रही है, यह पहिचानना कठिन नहीं है। यह स्पष्ट ही है कि सम्बन्धकी स्थितमें मुडिष्टिर है और अ्याख्याका पद भीष्मपितामहका है। अंभी अवस्थामें अिस बातमें कोअी दुबिया नहीं रह जानी कि भीष्मपितामहकी विचार धारा स्वयं कविकी विचार-धारा है।

भीष्मपितामहके अपार त्याग और प्राय अमा नुपिक प्रहस्यमें सफलके कारण मानव मायकी श्रद्धा अुनकी ओर सहज ही अुमटनी है, तथापि दुर्भवनके प्रति अनुचित पक्षयान और द्वासीके महान् सक्-कालमें भी सहज कर्तव्य-पालनसम्बन्धी अुदामांतनाने अुनके चरित्रपर बलककी अक रेखा खीव दी है। 'दिनकर' जीने अुनक अ्यक्तित्व भीतर उिप हुआ अनेक मासिक स्थानका अुद्घाटन किया है, जिनन पाठकके मानने अुनका अेक पूर्ण स्वल्प अप्रसिप्त हाअ है और वह अुनके लिअे महान्नुनिमने प्रेरित हो जाता है। नीम-

पितामहकी बाणीका प्रभावगाना जनानके त्रिभुवनका
मह नयि कौनउ मराहनीय ह्जा है ।

धर्मराज अपनी विनयकी सम्प्राप्ति करने हुअे व्हने
है—

अपनेकी विनयगत हुअे भी भूमिपितामह कानन —

'विक्रि धिक् मुसे हुअे अस्वीडिन सम्पुत्र राजवधुटी

+ + +

'और रहा जीविन में धरणी फटी न दिगाज टोला
गिरा न फोअी वज, न अम्बर गरज फोधमें बोला ।'

वे अपना पवन रवय स्नातार करत ह—

सदा सुयोधनके दृष्टीमें मेरा बधुध हृदय था,

पर क्या करत? यहाँ सबलकी नीति अबउतम नय था ।

अनुशासनका स्वत्व मौनकर स्वय नीतिके कर्म ।

पराधीन सेवक बन बंटा में अपने ही घरमें ।

वीरताका पतन किस प्रकार होगा है अमिका वणन भी

भीधमपितामहने उनी ही सच्चाश्रीके माय किया है —

'धौयन चलना सदा मासे सिख ताने शर खींचे ।

झुकने लगता किन्तु बधोणबल वह विवेकके पीछे ।

किन्तु बुद्धि नित परधी साकमें रहती घात लगार्थे ।

कव औवनका उदार गिगिल हो कउ यह भुसे दबाअ ।

+ + +

"जीवनकी है श्रान्ति घोर हम त्रिस्तकी यय कहते हैं ।

यवे सिंह आवशं टंडते धमय बाण सहते हैं ।'

o o o

"घात पूछनेकी त्रिवेकमे जभी वीरता जाती ।

पी जानी अपमान पतिन ही अपना तेज गँवाती ।"

भोधमपितामहका कहना है कि विवाह न करनेके

कारण अहोंने दुयो जनकी अपना स्नेह दिया और अमी

स्नेहके प्रकाशमें अपना दीवत बाल व्यतीत कर दिया ।

वृद्धवस्थाने अरु और अुनकी वीरताकी विवरके ह्वाणे

करने अुनकी कार्यकारिणी पविन नट कर डाणे ।

अिन स्वीकारोक्तिपाने द्वारा अुनका चरित्र तप हुअे

सोनेकी तरह परा अुनर आया है ।

धर्मराज युधिष्ठिरके सम्बन्धम भी उाण प्राय

कहा करते है कि युद्धमें भाग लेना अुचित नहीं था ।

शायद जैसे ही शत्रुअोरा समायान करनेके त्रिरे कविने

अुनकी स्वीकारोक्तिपौरी भी नियोजना की है ।

" अयि विजय, धरिसे विजय वचन है तेरा

यम ह्दुसे क्या भिन्न दान है तेरा ? '

+ + +

ओ कुरकपेत्रको सम्प्राप्तिकी उगली ।

मुखपरसे तो ले पोछ धरिरेकी लाली ।'

+ + +

'घनरी परिणाम है युद्धका अतिम

तात अिने यदि जानना में—

+ + +

फिरसे कहता हू पितामह ! तो

यह युद्ध कभी नहीं टानना में ।'

युधिष्ठिर उाण वातका स्वीकार करते हे कि

राजमहारासन्के उोमहामे पाण्डव उाण युद्धमें मम्मि-

लिन हुअे । अुनता कहना है कि जउतक अुनमें यह

उाण प्रयत्न रूपम विद्यमान है, तवनक मयाममें विजेता

हानर भी उ वारतवमें विजना नहीं है, अतथेव व निर्णय

करन है कि अिण उोभकी भीतनके लिये उव और रण

करना अुनके लिये आवश्यक है—

'यह होगा महारण रागके साथ

युधिष्ठिर हो त्रिजयी निकलेगा ।

वर ससृष्टिकी रण छिन्न लतापर

शान्ति सुधाफल दिध्य फलेगा ।' ॥

फिरभी युधिष्ठिरकी स्वीकारोक्तिपामें अेक

वचन है । अु होने यह कही नहीं स्वीकार किया कि

अनथंसा उून कुउ अुतरदाश्रित अुनकी जुआ सेलनकी

दूषित प्रवृत्तिपर था । अम्तु ।

हमार जीवनमें देवपकके गाय-गाय दानव पकप

सदैव विद्यानाउ रहा है । देवपकका प्रतिनिधित्व

करनेवाले अनिवायं हानेपर ही युद्ध करते है और

युद्धमें विजयी हानेपर भी अिस वाकके उअे खेद करन

है कि अुनक द्वारा ह्य्यामक कार्य होनेके कारण

समाजमें कर्कका मत्तार हुआ । युधिष्ठिर अिनी

पत्रके प्रतिनिधि ह ।'

दानव पक्षक प्रतिनिधिगण आवश्यक्ता न हान पर भी युद्ध करनेके लिये बहाने ढूँढा करन ह। व अस्त गन्धकी पापा ही समन सकन ह। अन अमे गोगावा जीवन मय समपानके लिये युद्धकी भापाका ही प्रयाग करना पडता है। दुर्घोषन असो पक्षक प्रतिनिधि य और भाष्मपिनामह अम हा विपयगाधी दुर्घोषनके पृष्ठपापक थ।

युधिष्ठिर और भीष्मपितामहक सवादमें दोनोकी सपनिष्ठा मराहनीय है यधिष्ठिर युद्धकी निदा करते ह और भीष्मपितामह युधिष्ठिरके युद्धको ज्वलिन प्रकितोत्र पर आश्रित होनेके कारण सत्रया अचिन ठहरान ह यही नहीं वे तो यह कहते ह कि जब नृपनरे स्वयका हरण हो रहा है तब त्याग और तपमे काम लेनाही पाव है। भीष्मपितामहको लेकर कविन और भी बहून मी बात स्पष्ट रूपसे कही ह— (१) आहुका अवश्वन लेना अम व्यक्तिके लिये विचारणीय हा सकता है जा बद्ध विनलित और साधनहीन ह मुजाओम गवित रखनवालेको तो मन्ना ही टगा। (२) धम्म तप करणा वपमा आदि व्यक्तिकी गोमा ह। किन्तु ममदायका प्रन सहा होनेपर हम बूट भुनाके लिये विवाग हो जान ह। (३) मनोबल देहका गान्ध नहीं हा सकता। अमका पक्ष बह मनोमय भूमि है जहा मनुष्य अपन ज्वलन विकर म लडता है। (४) कवच प्राप्त कर्का मापन बनाकर जवन बाग दहने सपाममें विजयी नहा हा सकता क्याकि

पागविकता खरग जब लेनी अडा
आभवलका अक वग चलता नहीं।

(५) तप और त्यागकी गवितका प्रभाव व्यक्तिके मनपर तो पड सकता है किन्तु जहा ममुदायका मन्त्र्य वा जाअग वहाँ यागियाकी गवितन वह कभी पगवित नहीं हा सकता।

बुवन ममस्त म्पापनाआन विचार करनपर हम अिय परिणामपर पहुँचन ह कि शिखाक द्वारा ही शिखाका अन्तर मन्त्र्यापुवक शिखा आ सकता है। निम्नगह कविन आत्रमक शिखाका पत्र ममपन नहीं किया है—
वह हिमा जा आत्रमपशारी शनव पक्ष-समयक

दुर्घोषनकी है बुहान केवल अम हिमाका आवाहन अुचित माना है जो देवपक्ष-गोपक आमरपक्ष युधिष्ठिरकी है। कविका कवन बहानक सत्रया अुचित है जहानक आत्रमक और आत्मरपक्ष दानाही स्वाप साधनम भीतिक दष्टिकागको ही महव दन ह। दुर्घोषन अपन अधिकारके बाहर भी राज्य चाहता है जिसमे कुत् अतरकर युधिष्ठिर अपन अधिकारसे कपही राज्य चाहते ह। अिमम मन्दह नहा कि सासारिक सुखोपभोगके लिये प्रचुर भीतिक साधनोंमे मध्यम हानकी वामना दोनोहोमें है। अतअव अधिकार किसे मिते और किस न मिल अिमका निणय खतपातपूण मग्रामके द्वारा ही हो सकता है अमे अवमगपर यदि कोअी अहिंसा सिद्धातके पालनका आग्रह कर तो यह मानना पडगा कि अममें बहुत अधिक भालापन है। सासारिक विनामितानी मामग्री अकन करनके लिये अहिंसाका अपुयोग निरयक है मल ही किसीको अुसका यत्नो चित अधिकार प्राप्त हो।

सच बात यह है कि महाभारत कालम सग्रामके हिसारमक माधनाका अिननी प्रचुरता हो गयी थी कि अहिंसाक मयपकी कल्पना ही नहा की जा सकनी थी। किन्तु यदि अुसको सम्भावना होनी तो क्या अहिंसाक युद्धका यह रूप होना कि अक और कौवी सेना खनी हाती और दूसरा और अहिंसाक पाण्डव मड होन ? नहीं अहिंसात्मक सग्रामका सञ्चान अिम प्रकार नहा होना।

यदि युधिष्ठिर अहिंसाक मयपमें रन हाने तो सवम पहले आत्मगुद्विने रूपमे व अुआ चलना बद करन अुमक अनतर अुह राज्य प्राप्तिकी वामनाका त्यागकर साधारण श्रमिकका जीवन स्वाकार करना पडना मायही दुर्घोषनके प्रति व सच्चा म्मह रवन और अन मन्हक लिय कोअी बन्ना न मान। त्यागके अिम वानावरणमें यह पूण सम्भव है कि दुर्घोषनका दुःगग्रह गिदिल पडना और वट प्रमवृक अुनक मुष मय जीवन निषाहका कृष्ट प्रव व कर लता। सामान्य श्रमिकका जीवन हम स्वाकार नहा करग हम राजा ही हानर रता—अहिंसाका प्रजारा अिम प्रकारका जाग्रह नहा करता।

व्यक्ति ही अथवा समुदाय वासनामय जीवनने साधन मयत् निमित्त अबका जीवनने प्रति मोक्षमय दृष्टिकोण निर्मातेके अदृश्यम यह अहिंसात्मक साधनारा अवलम्ब कर लाभ नहीं अर्ज करता। व्यक्ति और समुदाय दोनोंहीको यह स्मरण रखनकी आवश्यकता है कि अहिंसात्मक सशामकी गती और अमके साधन हिंसात्मक सशामकी गती और अमके साधनोमे सवया भिन्न है और अहिंसा मन सशामकी सफलताके निमित्त भी अमो प्रकार तयारी करनी पडती है जिस प्रकार हिंसात्मक सशामके लिये। कहनकी आवश्यकता नहीं कि पाठशालामें अहिंसात्मक साधनकी वपमता नहा थी और आवश्यक वपमता प्राप्तिने निमित्त अहूह साधना करनी पडती। अिसके विपरीत हिंसात्मक रणव निमित्त धनुष बाणस व सदैव सज्जत रहने प। अनकी अिसी तयारीके कारण परिस्थितियाँ जिस प्रकार विरसित हुअो कि अहूह हिंसात्मक सशाममें भाग लेनके लिये वा य होना पडा। य परिस्थितियाँ जनिवाय नहीं थी सशामके अभावहीमें अहूहो भयानक रूप धारण किया। आगिर अयोध्याकी राजगद्दीपर रामच द्रका भी तो अश्रितार था। यदि लग्नमण असा समर्थव पाकर अहूहान कवपीकी अिच्छा पूरितके विरुद्ध युद्ध टान दिया होना तो क्या अहूहे कोअी दोषी ठहराना ? और अिसमें भी सदेह नहीं कि विजय अहूहीकी होनी। कि तु रामचन्द्रन अपन अधिकांशक त्याग किया और अिन त्यागके द्वारा और अधिव महान होकर ने जनताके हृदय पम्पाट बन। अहूहोत राज्यको अत मारकर बनवासीका जीवन स्वीकार किया। अमके अन्वकोटिके त्यागन राजलक्ष्मी को अमका धरण चूमनके लिये बाध कर दिया। यहाँ हमारे सामन प्रश्न यह स्या होता है कि जिस मागपर रामचन्द्र चर सके अमपर युधिष्ठिर और अमके भाअियोके पव क्या गनिगील नहीं हो सके ? अिसका असादृश्य अतर यही है कि पाठशालामें अहिंसात्मक साधन चला सरनकी वपमता नहीं थी। अमके लिये आवश्यक माश्रामें अुदारता और त्याग भावनाका अममें अभाव था। युधिष्ठिरन बात आरम्भम नहीं समनी कि तु युद्धका कुपरिणाम देखकर अहूहे अगह अघात लगा और अहूह सदेह हुआ कि अमके वही भूत हो गयी है। वे भीम पितामहसे कहते ह—

रा भा ६

कुछके अपमानके साथ पितामह

विश्व विनाशक युद्धको लोलिअे।

अिनमसे विधानक पातक कीन—

यडा है ? रहस्य विचारके लोलिअे।

कि तु कुुरुपत्रके भी मपितामह व पास युधिष्ठिरके युद्धको अुधिन ठहरानके अतिरिक्त और कोअी अतर नहीं है। सातवे सगम अहूहोत धमने महत्वकी घापणा की है कि तु अिस मश्रममें कही अक स द भी नहा कहा है कि राज्य कोअसे विरल रहकर अमिक जीवन घापन स्वीकार करना अाति मन भाअियोके प्रति युद्धकी नीति न ग्रहण कर प्रमका व्यवहार करना युधिष्ठिरके लिये अधिक अूचा और अयम्कर आरंभ होना।

युधिष्ठिर अपन प्रश्नको और भी सरठ बनाने हुन करने ह कि अिस ध्वंसक द्वारा हम जिस मुखकी अुपत्र र हुअी है व अुचित है या सातिके मागपर चलने हुअ अिसका अुपहार कर प्रस्तुत होनवाका कुन सहन करना अुचित होता ? कि तु वचिन प्रश्नको यह रूप देकर असे विकृत कर दिया है। यह क्यों मान किया जाअ कि राज्यक न मिलनपर युधिष्ठिर अमके लिये जीवनभर रोने ही रहने ? विना सतोपके सातिका मिलना संभव ही नहीं हो सकता था। जीवनभर राज्यके मोहमें मग होकर रोने रहनेकी तुलनामें तो युद्धहीका माग अुचित था। कि तु यदि युधिष्ठिरका अुदृश्य यह मान लिया जाअ कि वे सतोप और परिश्रमपूण जीवनने अधिकांशक माय युद्धकी तुलना करना चाहते ह ता स्पष्ट रूपसे यह कहना होगा कि महाभारत-सशामके अक पापका ननुत्व करने अहूहोत अुचित नहीं किया— भले ही वह मश्रम अहूहोत अपन स्वर्गीकी रम्याके लिये किया हा। और भीष्मपितामहको भी यह स्वीकार करनाम कोअी अारपित नहीं होनी चाहिय थी कि गानिका अत माग मानव सभ्यताको विकासकी ओर ले चलता है। अिस प्रकार यह देना जाअगा कि जीवनम मनोबल अहिंसा प्रम अादि आध्यात्मिक विरोध करनकी धुनम वचिन भीष्मपितामहको अम योग्यनामे वचिन कर लिया जो युधिष्ठिरको किसी अूचे लगवकी ओर ले चलती। अमन प्रस्तुत रूपमें भीष्मपितामह

युद्ध-भावनासे अभिभूत जान पड़ते हैं और युद्ध-कालमें वे युधिष्ठिर-पक्षके जितने ही बड़े विरोधी थे युद्धके अनन्तर युधिष्ठिर-पक्षके अगुने ही बड़े समर्थक हो गये। खेद है, भीष्मपितामहका यह चित्रण सतोपजनक नहीं है। अंक बहुत बड़े सिद्धातपर आक्रमण करनेके लिये सज्ज होनेपर कविके लिये युधिष्ठिरके पक्षको जितने सरल रूपमें अप्रियत करना आवश्यक था अस्का भी अभाव दिखायी पड़ता है। अनश्वेव यह कहना पड़ना है कि अपने दृष्टिकोणको सबल अभिव्यक्ति प्रदान करनेकी अग्रगण्य कविने युधिष्ठिर-पक्षके साथ पूर्ण न्याय नहीं किया और युधिष्ठिरका अंक धुंधला व्यक्तित्व ही हमारे सामने खड़ा होता है।

हमारे पाम अिम वातका कोअी प्रमाण नहीं है कि कविने अिस काव्यमें महात्मा गांधीके अहिंसात्मक सधर्ष-सम्बन्धी सिद्धान्तका विरोध करना चाहा है। किन्तु मनोबल और आत्मबलकी अुपयोगितापर जिम प्रकार आक्रमण किया गया है और काव्यके निर्माणका जिस कालमें सम्बन्ध रहा है, असे ध्यानमें रखकर विचार करनेपर अिस वातमें कोअी सदेह नहीं रह जाता कि अहिंसाके राजनैतिक प्रयोगोंमें अस्वाभाविकता देखकर अुमने विरुद्ध प्रतिजिपाको काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करना अुनका अुद्देश्य रहा है। किन्तु भीष्मपितामह और युधिष्ठिर दोनोंहीके चित्रणमें कही न कही त्रुटि होनेके कारण हम जिम सम्बन्धमें किसी परिणाम-पर पहुँच नहीं पाते, हमें जिमी प्रकारका नेतृत्व नहीं प्राप्त होता। हम यह नहीं गमस पाते कि आखिर हम क्या करें? अंक और तो हमें बनाया जाता है कि मनोबल, आत्मबल आदिमें कुञ्ज नहीं होनेका, दूसरी ओर हमसे यह कहा जाता है कि हम विज्ञानकी सहायता लेकर नये-नये शास्त्रोंका आविष्करण न करें। यदि यह सच है कि युद्ध अनिवार्य है तो यहभी सच है कि नये अस्त्रोंके अनुसन्धानके लिये अुपयोग निरतर जारी रहेगा। यदि कोअी चाहता है कि नर-महारकारी अविष्कारोंका अन् हो तो अुसे अुन साधनोंकी खोज करनी पड़ेगी, जो युद्धकी आवश्यकताको कम करें। मनोबल और आत्मबलके प्रयोगद्वारा हम अपने मन-अेद और संमन्थकी समस्याको, जितना कविने गमसा है अुगमे कही अिपर दूरनक, हल कर गकने हैं। किन्तु अँसा कि मैं कह आया हूँ, यह कदापि सम्भव नहीं

कि भौतिक वामनाओकी समस्त माँगोंकी पूतिके लिये अुम मतके माननेवाले हिंसात्मक सग्रामको सेनाअँके सामने कुरुक्षेत्रके मैदानमें खड़े किये जा सकें। देह और आत्मामें जितना अंतर है, अुतनाही अंतर हिंसात्मक और अहिंसात्मक-रणकी शैलियोंमें भी रहेगा।

छठे सर्गमें मनुष्यकी नीचताका वर्णन दिया गया है। कतिपय पक्षिर्षा अवलोकनार्थ प्रस्तुत की जाती हैं—

“अंक छोटी, अंक सोधी वात ।

विश्वमें छापी हुअी है वासनाकी रात ।

बुद्धिमें नभकी सुरभि, तनमें रचिरकी कोच ।

यह वचनसे देवता पर कमसे पसु नीच ।”

जीवनमें यदि मनोबल और आत्मबलका अुपयोग घटाया जावेगा तो मनुष्यकी यह नीचता घटेगी नहीं, बढतीही जावेगी।

यहाँ मैं यह भी कह देना चाहता हूँ कि आत्मरक्षा का कोअी साधन नोप न रह जानेपर भीष्म पात्रामें हिंसात्मक सग्रामकी अुपयोगिता सदैव बनी रहेगी। अुसे कोअी अस्वीकार नहीं कर सकेगा। सच पूछिये तो हिंसा और अहिंसामें किसी अँके अहिंसाकारकी नहीं, दानोहीके समन्वयकी आवश्यकता है। सापही हिंसाके स्थानमें अहिंसापर बल देना अधिक हितकर होगा।

देसके लिये यह बड़े दुर्भाग्यकी वात है कि महात्मा गांधीके सिद्धान्तोंको काव्यात्मक अभिव्यक्ति न प्राप्त होनेके कारण जनताका अुनके प्रति सोहार्द न बढ सका और अुम दिशामें कोअी प्रयत्न आरम होनेके पहलेही अुनके विरोधमें प्रतिजिपा शुभ हो गयी। काव्यमें अिस प्रतिजिपाका नेतृत्व ‘दिनकरजी’ ने किया है, किन्तु अहिंसा और आत्मबलपर अपना मार्ग प्रदक्षन करनेके लिये अँसा आघात अुन्ट करना चाहिये या वँसा वे नहीं कर सकें हैं।

अिम काव्यमें अोज, प्रवाह, सद्बिचार-सप्रह आदिनी कमी नहीं है। भाषा सरल और प्रभाव-शालिनी है, सत्यापके विरोधमें समाज-सेवाका सदेश, श्रम सिद्धान्त, जीवन-साधनोंका सम-वितरण आदि विचारोंकी मजाबट सुन्दर है, किन्तु अपनी मूल म्यापनानो मसकन न बना सकनेके कारण वह साहित्यके अिनिहाममें जिमी प्रकारकी क्रान्ति करनेमें असमर्थ रहेगा।

अनुभूतिका आलोक

: श्री रतनलाल बंसल :

बन्धारके बाजारोमें पूरे तीन महीनोतत्र कडी-से कडी मेहनत-मजदूरी करनेके बाद जब करीम अपन गाँव हालिमजजी चलनेको तैयार हुआ, तो अुमने दया कि हालाँकि अुमने कभी पेट भरकर खाना नहीं पाया, फिर भी जिस बीच यह केवल सत्रह रुपये बचा सका है।

‘अब सत्रह रुपयोमें मला में क्या-क्या कर लूँगा ? इसमेंसे सात रुपये तो सरदारको ही देने होंगे, जिसके सरत तराजोके डरसे मैं गाँव छोड़कर यहाँ आनेके लिये मजदूर हुआ। बचे दस, जिनसे गल्ला खरीदना है, कुछ बचड़े भी लेने हैं और हाँ, अेक मोटा-ना कम्बल भी तो चाहिये। पिछली गर्दियाँ तो मैंने और अस्मतने सिर्फ आगके सहारे काट दी थी, लेकिन अब यह कैसे हो सक्ता है। अस्मत अब अेक बच्चेकी माँ जो हो गयी है। कम्बलत अब तो मुँहपुराने लगा होगा।’ बच्चेका ध्यान आते ही करीमकी मनोदशा बदल गयी और अुन चिन्ताभरे प्रणोमें भी अुसको कल्पना कुछ जगमगा अुठी। किन्तु कुछ ही वपणोके पश्चान् अुसकी विचारधारा फिर अुन सत्रह रुपयोपर आकर अटक गयी और वह सरदारके सात रुपयोको निवालकर शेष रहे, दस रुपयोमें कम-से कम तीस रुपयेके ध्ययका व्यर्थ ही जोड़-तोड़ बैठाने लगा। अन्तमें जब अुने अपने अिम प्रयासमें किसी प्रकार भी सफलता नहीं मिली, तो अुसने न जाने किस अेन गन्दी-सी गाली दी और रुपयोकी मैली धँली अपनी सलवारकी अ्डीमें रूस, लाठी अुठा, गाँवकी ओर चल पडा।

“अगर इसी बीच सरदार साला मर गया हो, तो यह सात रुपये भी बच जायेंगे,” रास्ता चलते-चलते अेक धार करीमने मोचा और दूसरे ही वपण अुने स्वय ही अपनी अिम ध्ययकी कल्पनापर हँसी आ गयी।

“भला ये मूदपोर जितनी आगानीसे मरा करते हैं,” करीमने बड़बडाते हुअे कहा, “मुल्ला लोग फजूल बका करते हैं कि मूद लेनेसे दोजद मिलता है। मरनेके बाद दोखल मिले या कुछ और, लेकिन जिन्दगीमें तो वे पूव आराम अुठा ही लेते हैं।”

“और यह मुल्ला-मोलवी,” करीमकी विचार-धारा अब अिन लागोकी तरफ मुडी, “ये लोग हमेशा दीलतकी बुराअी करते हैं, अुमने अलग रहनेका अुपदेश देते हैं लेकिन येही लाग दीलतमदोत्री जूनियाँ चाटते और गरीबोको कुत्तोकी तरह दुनवारते हैं।” करीमकी स्मरण हो आया कि जब अुसके घरमें पुत्र जन्म हुआ था और वह गाँवके मुल्लाको बुलाने गया था, तब मुन्नाजीने जितनी वृणाके साथ मुँह बिचकाकर कहा था, ‘आज मुझे सरदारके यहाँ दावतमें जाना है। जो कुछ लाये हो, यही दे जाओ, मैं शामकी नमाजमें तुम्हारे बच्चेके त्रिअे भी दुआ माँगकर आऊँगा।’ अुम समय करीमको गुस्सा तो अँसा आया था कि मुल्लाकी गर्दनको अुमेठना ही चला जाअे, लेकिन वह अपने आनन्दमें विघ्न नहीं टालना चाहता था और दो पीसे मुल्लाकी तरफ फँकर चुपचाप घर चला आया था।

अिसी तरह न जाने क्या-क्या सोचने— विचारने करीमने अपने गाँवका कठिन रास्ता पारकर लिया और जब गाँवकी बुरी अुमे दिखायी देने लगी, तब थकावटके धूर-धूर होनेपर भी अुसके पीर अधिक तेजीसे अुठने लगे।

आखिर गाँव भी आ गया। अस्मत और बच्चेकी मूरतको आँखोंमें समाये करीम घरकी ओर लपका चला जा रहा था कि अुमके कानोसे अेक चिनीनी, कड़वी आवाज आकर टकरायी, “अवे करीमा है क्या ?

लो करीमा ! जा गया तू । न जाने कितना माल मारकर लाया होगा साहसे ? ला, हमारे रुपये तो दे आ ।" यह सरदारकी आवाज थी ।

करीमके पैर जैसे जमीनसे चिपककर रह गये और अंक नुपरिचित आनकसे प्रेरित होकर बसका हाथ अपने आप सलवारकी अंटीमें खँसी हुआ रुपयेकी पंटीपर पहुँच गया । पंजी खोलने हुअे बसने सहमे और बेबस स्वरमें कहा, 'हाँ, हाँ सरदार ! तुम भी अपना हिमाव कर लो । कितने रुपये निकलते मेरे रूपर ?"

"आठ रुपये पाँच आने ।" सरदारकी अपने सेकड़ो कजंशारीका हिसाब जबानी याद रहता था ।

'हे, सातके अब जाठ रुपये पाँच आने हो गये । सरदार ! कम-से-कम अिनना जूलम तो मत करो ।' करीमने झुंझलाहट-भरे स्वरमें कहा । शायद सरदारसे अंसे स्वरमें वह आजतक नहीं बोला था । 'बदमाशीकी बातें मत करो, ... " सरदारने डपटकर कहा, "अपना रुपया मँगना भी जूलम है । जब गया था, तब मात रुपये बताये थे, जिधरका मूद नहीं देगा । लाओ, जिधर बटाओ जाठ रुपये पाँच आने ।"

करीमने अनुभव किया कि गलती अुमकी ही थी । अुमने दो-अंक वपग कुछ सोचा और फिर सात रुपये पंटीमेंसे निकालकर सरदारकी ओर बढाने-हुअे अत्यन्त मृगामदभरे स्वरमें बोला, "माफ करना सरदार ! आप जानते हैं, हिसाब-किताब भूमें नहीं आता । कभी अिनना ले लो, बाकी फिर दे दूंगा ।"

सरदारकी यह मुनकर प्रमप्रता हुआ, कपोकि अंक रुपया पाँच आता रोप रह जानेका अये था, शीघ्र ही पुन-अिनती रकम हो जाता । अब अुमने दबो-सी मुम्बराहटके साथ कहा, "हिमाव किताब नहीं आता, दूसरेपर ही भरौना किया कर । हम बेश्रीमानकी अंक रचना भी हराम समझते हैं । चल अब घर जा, हारा-पका होगा ।" करीम अंक टडी नाँम लेकर आगे बढ गया ।

"आ गये तुम ?" करीमके दृष्टीअये धुमने ही अुमकी बीवी अम्मने कहा और दो बँद आँसू अुमकी आँसुमें बहकर गुनगुनी गाँठोकी चूमने लगे ।

"हाँ, आ गया । जिस दिन तेरी खबर फबलते मिली थी, अुमके दूसरे दिन ही मैं चल दिया । फिर तबीयत ही नहीं लगी । तू अच्छी तो है !" करीमने हापकी लाठी जमीनपर फँक अस्मतकी गोदने बच्चेकी लेते हुअे कहा और फिर बच्चेकी अुछाल-अुछालकर खिलाने लगा । अस्मत खाने-पीनेका चिन्तअाम करने परचे भीतर चली गयी ।

x

x

करीमको घर आये पूरे आठ महीने बीत गये । अब वह फिर अंक-अंक पंठेकी तंग है । सरदारके दस-वारह रुपये अुमके सर चट गये हैं और अुमके तबाजोंके भारे करीमका नाकमें दम आ गया है । लुधर कंधारने बाजारमें भी मजदूरी बेहद मुश्किल हो गयी है । गाँवके कत्री आदमी बहुते निराश होकर लौट आये हैं । अब अस्मत और करीममें प्राय-शगडा हो जाता है ।

बकस्मात् अंक दिन करीमको अुनका पुराना साथी बगीर मिला । नयी मन्डवार, कीमती कुर्ता और मखमली जाकटमें वह बिलकुल दुल्हा मालूम होता था । करीमने अुमके अंसे-आठ-आठ देखे तो औप्यप्ति अुमका दिल अुडकर रह गया । फिर नौ रूपरसे अुमने बगीरसे बडीं मूहवत भरी बातें कीं, यहाँतक कि बगीरने अुमने अपने अिम टाटवाटका रहस्य भी बता दिया । करीमकी मालूम हुआ कि बगीर दो माल पहिले अिमसे भी बुरी हालतमें हिन्दुस्तान गया था और आज अुसका हजाराँ रुपया यहाँके आनामिपोवर पंटा हुआ है । यहाँतक नहीं, बल्कि बगीरने यह भी बूह दिया कि अयर करीम अुसने साथ चलना चाहे, तो वह अपने यन्पर अंसे हिन्दुस्तान ले जा सकता है । करीम अंसे अंक मुम्बद तथा विभवस आदमीकी अुमे अम्मत भी है ।

करीमने बडी प्रमप्रता और वृत्तनासे बगीरका यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, किन्तु अम्मतकी समझाने-दुझानेमें अुसे लोहैके अने चवाने पडे । जो अम्मत अिपर अुमने दिन-रात लड़ा करती थी, यही अुमके जानेकी बात मुननेही अिनती बुरी तरह रोने लगती कि कभी-कभी करीमका निश्चयभी शगमा जाता । जातिर

बहुत समझान-बुझाने के बाद ज़मज़म ज़रनी स्वीकृति दी। झुम स्वीकृतिमें गिन बरसी ही बरसा थी।

X X X

करीम अब झुम नाम दिना आ पढ़ा। बगीचम तो झुमकी बनवन गरीबमें आ गया क्यकि वह गिक दिन गिन पैसोंपर न झुम खना चाहता थ। रकिन करीम अब झुमके गोजगारक नामा दावर्षक समय गया है। जब वह ल्यागैम गिनी चगा ना झुमके पाम गिक पचाम गये ये रकिन अब झुमके सतर समय ना झुमार में थ, तो प्रति दिन वडत जात ह। जिसक जगवा अब वड समय ना मनाता वह थोना-मा मोदा बचकर जमा लाता थ। परिवम बनमें ना वह भते जैगा है।

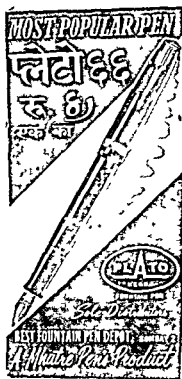
करीमना कायदा है कि बाधी रातका वह अपन तमाम बज्रदारार पगार चक्कर लगाअ और झुमसे अपना मूद गजका रात्र बमूळ कर थ। झुम समय ज्यादातर बज्रदार अपन घरपर ही गिग जात और ठुमरी मुविधा यह होना है कि झुम समय बज्रदारका टरान-धमकान मारन-गीगनमें कात्री बाधा नहीं डागता। वह बगा क्रूरतास अपना मूद बमूळ करता जोर कभा कभा पाच घान मय झुमके पाम गिक मूदकहा आ जात ह। दिनमेंस कुठ वह नय बज्रमें गत बना है और कुठका सामान विपीके गिग खरीद लाता। भय गगनपर नदुगपर थ जाकर सन्स पम्ना म्ना जाता और थक तातपर अब मन्जिदमें कुठ देरके गिगे कमर मीधी कर ेता। हाँ, कभी-कभी अम्मन और अपन बग वाजिदकी याद झुमके दिगकी जरूर बचापन लगनी लकिन तमी करीम अपना डगडा झुठा मीधे बज्रदारक घरकी और चल देता और झुममें लग चगडकर अपन दिगका बूझार निवाल जाता। जिसक अलाना यह करे भी क्या ?

जिम तरह लगानार डड साल बिदाकर जब खेक दिन झुमने अपनी पूजी गिनी ना नकद तरह सी मय झुमके पाम थे। जिमके अगवा पाँच छह मी

बज्रदारार भी बाकी थ। करामको जुन दिन न जाने क्या मूला, कि बाजार पहुँचकर जुमन बाडा आ सामान सरादा और नाया अगन बनके गिग थ थ दिना। अम्मन और वाजिदका यादन झुम बडक कर दिया था।

X X X

कराम हिन्दुस्तानक गिग ठुमरा बार चला, ता अम्मनका शारम ता किविन भी बाधा अुपस्थित नहीं हुश्री किन्तु कराम स्वय मडा बडिनामीसे या कटना चागिग कि जन थ थ हुअ बज्रको बमूळ बनक माहस ही महांक आ मका। वाजिदक कारण झुमका दिग घरम अितना दूर रहनेसे पबडागा मा है। वह जवनक घरपर रहा, बीरोमी थ वाजिदमें हा झुमका रहा। जिमालिग रामनमें ना झुमके पर बार बार परकी बार मुडन लग किन्तु बज्रके आकषण झुम दिगना पटनाकर ही गता।



* तदूर वह भट्टा जहाँ विट्ठीक बन गोल बने तबपर मोठी मोठी रागियाँ पकती ह।—सपादक

दिल्ली आकर दो-तीन दिन करीम गुम गुम मस्जिदमें पड़ा रहा। जिनके बाद अंसन दिल बड़ा करके वजहोंके धरोहर चक्कर लगाने शुरू किया।

आखिर वजह तो बनाने करना ही है। एक दिन वह किसी प्रकार वजह बनाने करने लगा तो सबसे पहले मजहबके घर पहुँचा जिसपर अमकी सबसे ज्यादा रकम थी। करीमन मजहबके दरवाजे तक पहुँचते पहुँचते हिमाब लगा लिया कि आजकी तारीख तक ठीक तिहत्तर रुपये अमकी तरफ निकलने ह। तिहत्तर रुपये यानी सत्तर और तीन करीमन मन ही मन सोचा 'अगर मजहब चाह तो जितने रुपये देना उसके लिये कोशिश मुश्किलकी बात नहीं। दस बीस रुपये के गहन अंसकी ओरतके पान जहर हाग जिनके अलावा कपड़ लाने बतन भाड़। यह हिस्तामी भी अजीब हाने ह, वजह लाने ह और गहन बनवाने ह। साला ओरतका गुलाम। करीमको रास्ता चलते गालियाँ बड़-बड़ानकी आदत पड़ गयी थी।

'मजहब हय ? मजहब ओ मजहब !' करीमन हाथकी लडाकस मजहबके बिवाहाकी ठोकते हुआ पछानी हिन्दीमें आवाज दी, किन्तु भीतरसे कोशिश आवाज नहीं आयी।

बोलना नहीं साला ! अम तम्हारा बाप खड़ा है। करीमन शीघ्रसे चीखते हुए पुन आवाज दी किन्तु अंतर फिर भी नहीं मिला।

करीमने अब दो कण कुछ नाचा और फिर बिवाहाके अब लाने जमाकर बोला— अम दरवाजा ताड़कर भीतर आ जाओ, करना चंगा बाहर।'

जिन बार करीमन अनुभव किया कि दहलीजमें कोशिश आ रहा है। कुछ ही देरमें बिवाह खुल और दीनारीकी धूनि बन हुआ मजहब करीमके पैरोंकी पकड़ कर रहा सान। आज अठ्ठासीस तारीख है परमा ताम होगी। दस दो दिनकी मुजल्ल दे दा। जिन महीनका पूरी तन्जवाह तम्हें हा दे दूंगा।

करीमन मजहबकी पाँपर तान चार धूनि जमाकर रहा बरमाग ! जब मीना है बस दा दिनकी

मुहल्लका बहाना कर देता है। हमको अनन बापकी नीकर समनता है !

मजहब धूसारी चादस बिलबिलाकर बोला— चाहे मार डालो खान लेकिन रुपये तीसकी शायकी ही मिलेगा। अम दिन न दू तो जान निगल लेना !'

दो दिन ! अच्छा दो दिनका मोहल्लत दिया। लेकिन फिर बहाना किया तो मालूम हन " करीमन मजहबके अब लात जमान हुआ कहा और आगे चल दिया। कुछ बदम चलतेपर करीमको अनुभव हुआ कि अंसन मजहबकी जितना नहीं पीटा, जितना पीटना चाहिये था। परिणाम यह हुआ कि जिस अगले कर्जदारके पास करीम पहुँचा अमपर सिफ सात जान ही अधर था फिर भी अने जितना पीटा कि अंसकी नाकसे खून बहने लगा। करीम कर्जदारोंकी पीठमें कुछ तृप्ति-सी अनुभव करने लगा था।

जिन प्रकार अंस रातकी करीम जिस कर्जदारके पास पहुँचा अंसकी जंस शायन आ गयी। किन्तु अम दिन वमूनी भी अच्छी हुआ। करीम जब लोटकर आया तो अमन मस्जिदके मुल्लाको अब रुपये दिया कि वह अंसके वाजिदके लिये पाचों कस्तकी नमाजमें दुआ माग।

किसी तरह दा दिन भी बीत गया। करीम आज सुबहसे हा सोचने लगा कि अगर मजहब आज भी टालमटोल की तो अंस बहुत जितना मारा कि बचचुकी छुकीका रूप याद आ जायगा।

शाम हुआ और करीम लागी लकर मजहबके द्वारपर जा पहुँचा। 'मजहब हय ! अंसन अनन तबनावानुसार आवाज लागी और दून हा कण अब आदमीन बिवाह खोलकर अमन पूछा 'क्या है ?'

'अम बीन है ? अमी नाकका नज !' करीमन पुछकर कहा। "म जितनी परमें बिवाहगत हैं। मजहब कहेंस मजहब, वह तो मर गया।

'अमाग बिना जिजाबत वह नहीं मर सकता। देखो वह अमी जाना है।' करीमन दरवाजेकी ओर

जिसी पड़ोसकी स्त्रीने मञ्जूकी बहूसे कहा, तो करीमने भी यह बात सुनी। जिससे पहले वह जब जिसीको अपने सम्बन्धमें 'जालिम' कहने सुनता था, तो कुछ गर्व-मा अनुभव करता था किन्तु आज जिस शब्दने उसपर दूरमा ही प्रभाव डाला। वह जिस सम्बन्धमें कुछ सोचने लगा और तभी मञ्जूकी बहू अपने छोटे-से बच्चेको गोदीमें लेकर किवाड़की ओटमें आ खड़ी हुई।

"अम अपना खया चाहता है। अबी चाहता है। विलकुल अबी।" करामने तकाजेके शोरमें कहा, लेकिन तभी उसकी निगाह मञ्जूकी बहूकी गोदमें चढ़े हुअे उससे बच्चेपर पड़ी, तो वहाँकी वही जमी रह गयी।

"वह तो चले गये सरकार। अब ।" मञ्जूकी बहूने भयमे बर्षाने हुअे कुछ कहनेका प्रयास किया ही था कि करीमने विलकुल दूरमे ही स्वरमें बच्चेकी आरे सवेत करते हुअे पूछा, "यह कौन है? तुम्हारा बेटा है? तुम्हारा वाजिद है?"

मञ्जूकी बहू कुछ समझी, कुछ नहीं समझी। आज अने पहली बार मालूम हुआ कि खूँस्वार दीख पानेदाला यह खान अिननी मोठी योली भी बोल सकता है।

"यह वाजिद तुम अमको दे दो। अम तुमको भीत खपया देगा।" यह कहकर खानने पावलकी भाँति अपने हाथ फँला दिये।

मञ्जूकी बहू खानका यह अद्भुत व्यवहार देखकर डर-सी गयी। वह कभी कदम पीछे हटकर खड़ी हो गयी और तभी न जाने क्यों उसकी गोदका बच्चा भी रोने लगा।

"ओह! यह रोता हय! अम अने वाजिदके लिअे रोता है और यह अपने वालिदके लिअे रोता हय। अिमे तुम चुप कर लो।" कहने-कहने खानकी दाढी आँसूअेति तर होने लगी। मञ्जूकी बहूने समझा कि खान पागल हो गया है। वह सहमकर भीतर भाग गयी।

"ओह, तुम भी भागता हय। अमारा वाजिद भी भाग गया और यह वाजिद भी भागता हय। अममे सब नाराज हय। अम जाता हय। तुम, अपने वाजिदको अिसका मिठाअी खिलाना। अितना कहकर खानने अपनी जाकैटकी जेबमे कुछ मोट निकाल दहलीजमें फेंक दिये और रोता हुआ वहाँसे चला गया। अिसके बाद फिर कमी जिसीने खानको अम नगरमें नहीं देखा।

[फीरोजावाद]



अशकके नाटकोंमें युग सत्य

• श्री गोपालकृष्ण कोल, श्री रामगोपालसिंह चाटान :

समाजके दृष्टांतके विकासके साहित्यका अत्यन्त उदय है। जब लाग करीबोंमें रहत थे और अन्तम वर्गकी सृष्टि नहीं हुई थी, अन्तमय मानवका प्रकृतिम सघर्ष करना पड़ता था। और जब अनुपादन और बुद्धिगत-विकारके क्रममें होनेवाले परिवर्तनाके कारण वर्ग-समाजका विकास होने लगा ता मानवका सघर्ष प्रकृति और मानवकृत शोषण दानाके विरुद्ध शुरू हुआ। जिस सघर्षकी प्रगतिके साथ-साथ वर्ग-स्वाय भी स्पष्ट होत गये। मानव समाजकी जिस सघर्षशील, इन्द्रात्मक-प्रकृतिका प्रभाव साहित्यमें किसी न किसी रूपमें सदा प्रतिबिम्बित हुआ है। जिस सघर्षके क्रममें ही घम अहम, नीति-अनीति, दाम मालिक, अर्थ नीच और पाप-पुण्यकी विविध धार्मिक सामाजिक तथा राजनैतिक आदि भाष्यताओ रीति रूढ़िया, मियया विस्वासोका जन्म हुआ जा देश कालके प्रभावाने वर्ग-समाजमें होने वाले परिवर्तनोंके प्रभावित होकर भिन्न भिन्न युगोंमें भिन्न रूप धारण करते गये। सत्य-असत्य, घम-अहम और रीति-रिवाज आदिका उदय और प्रचलन वर्ग-सामनों और वर्ग प्रभुताओंके अनुशासित होना रहा। जिस प्रकार प्रभुताधारी और शासित, शोषक और शोषित धनी और निर्धन अब श्रमिक और अवकाश भोगीके वर्ग सघर्ष भी जीवनके विविध कथाम अपने विविध रूपोंमें चलत रहते हैं। जिस मानव सघर्षका अन्त होता है वर्गहीन-समाजके निर्माण।

साहित्य मानव सघर्षकी नलात्मक अभिव्यक्ति है। यह सघर्ष चाहे आन्तरिक हो या बाह्य। जिस सघर्षका अर्थ मनोवैज्ञानिक परिणाम और लक्ष्य है—स्वार्थ आधारित अवकाशभोगी मानव मत्ताओ और ध्यक्त्वाओंका अन्त और मानवश्रमकी महत्व देनेवाले समता-आधारित, रचनात्मक वर्गहीन समाजका निर्माण। जिस सघर्षमें रचनात्मक श्रमशील मानव समुदाय अर्थ और है और अवकाशभोगी सत्तासम्पन्न नीच वर्ग

त भा ७

दूसरा थार। अर्थ शोषित है, दूसरा शोषक। मानव सघर्षके जिनदृष्टांतमें मदा दा पक्ष रू है। चाहे युवक वर्ग रूप दग काठक अनुसार बदलत रू हा। आज भी जिस सघर्षके दा पक्ष है— एक अन्तका जा अवकाश-भोगी शोषक है और मत्ताओ जैसे भी हा आन हायामें बचाये रखना चाहत है। जो जीवनके विविध रूपोंमें अपने अर्थके धर्मके पुण्यकी परम्पराका अन्तर्जालिक विस्तार किये हुए हैं व आज साम्राज्यवाद और पूँजीवादके पक्षधर हैं और अपनी अस्तित्व-रक्षामें बड़े-बड़े युद्धोंकी तैयारी करत हैं। दूसरा पक्ष अन्तका है जो जिस शोषण चरणमें पिये हुए भा नव जीवन-रक्षताक लक्ष्य धरत है और मत्ताओकी शक्ति और रचनामें विद्वान् रक्षतवाता अधिकतर मानवजातिके प्रतीक हैं। सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक भेद श्रम वर्ग स्वार्थकी शोषण परम्पराम नयी है। प्रत्येक युगके साहित्यमें जिस सघर्षका प्रतिबिम्ब किसी न किसी रूपमें दिखती पड़ता है। हमें दखना हाता है कि जिस साहित्यमें, किन ऐतिहासिक परिस्थितियोंके कारण तमाम अन्तविरोधोंके साथ, जिस पक्षका अधिक समर्थन किया गया है। जिस साहित्यमें मानव सघर्षक रचनात्मक जन-कल्याणकारी पक्षका समर्थन जितना अधिक हाता है वह युग ही अन्त युग न य का। यथार्थ अभिव्यक्ति प्रदान करता है। यह अभिव्यक्ति दा प्रकारकी होती है। अन्त जन कल्याणकारी शोषित वर्गकी शक्तिकारी शक्तिवाचक मीमा समर्थन किया जाता है और दूसरमें शोषक वर्गक जन विरोधक तत्वोंका अस्वात्त।

युग सत्यकी जिन सार्थक अभिव्यक्तिपूर्ण जिनित्त लेखकोंके धर्मगत शक्ति अन्तविरोध भी युगक साहित्यक प्रकट हात रहत हैं। वही जिन सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ वातावरणमें अपने

साहित्यका रचना करता है इनके अन्तर्गत प्रभाव भी बुनकी रचनाआपस अपनी छाप लाल है। साथ ही जन विराट्-व्यक्तिता अथ और नस्त्रुतिक माध्यमस अना परिस्थितिमा अुपल्ल करता है जिनन जनवादा गक्तिमेंक साहित्यिक और साहित्यिक पक्ष इबल हो जात्र। व पुनार मानवगता व्यक्तिवाद प्रजातक, धम और दान आिक नामपर अनेक अन सिद्धान्त गती है जो साहित्यिक जनवादा रचका कृतिन कानक प्रच्छन्न प्रगल गन है। जो लयक जिन सिद्धाताक कृतिन मानववादा रूपक आकषणमें पैस जाते है व साहित्यमें कलावाग रूपवादा और समाजविवादा व्यक्तिवाग प्रतिनिधावादक चतर गिपी वन जात है। अुनक गिपमें अत्राालिक चमकाग ता हाता है किन्तु वन्नुम युग सपका मना अमिव्यक्ति नहा हाता। अुपेकि अनेक प्रतिगामी नस्त्रार अुन जन जीवनक सम्पकमें नहा आत देन।

मानव सपस और साहित्यिक जिन अष्ट सम्बधको दखन अुत्र आजक युग-मयका साहित्यमें परलनका अक हा माध्यम है— हम दख कि साहित्यमें जल पक्षपका जिनता समधन व और जन विरोपी साकनाक सपकावा पशानाग कितना हुआ है— जिनक अनिरिकत जो लयक जिन वा-समाजमें तटस्थ-वाहान-मानववादी जमिव्यक्तिता गवा करत है व वमें सपपक युग-व्याग। सपपर पना टालकर कृतिन मानववादागिपों (मात्राचम दागिदा जी पजावागिपों) व लयपका ज्ञान रूपन समपत वान है वाह नवजन रूपन अन लयकावा यह लयन नो हा।

जिन गिपस अन्तर नाकागमें हमें अुनक सध व गिप अन्तरिमाका अनि-व्यक्ति ता मिन्ती हा है गप है अुनक जन विराट्-व्यक्तिवाका पदा वाग नो लिपता है। अ-वन मय वगैर आनका विभिन्न समादात्रका विपयक करत अुत्र जिन वाक नमाम जन्तरिवागों और अुनक प्रतिगामा लकाका सपाय अुपयान विदा है। व समादात्रा ना पात्राका बवक प्रहन रूपन अुपयानना करत। न गिपन चमकारका मका अथ कान्यक ना गकाक प्रयाग करत है

जो पात्रका और दाकौके लिपि बवक अक रत्स्यमन चमकार वन जाब और अुनते किन्ती प्रकारकी सामाजिक चतना न प्राप्त हा। अ-क, अुनके विनरीत जन गन गान और गैलीकी भी वानात सपका सरल अमि व्यक्तिका कलात्मक माध्यम बनान है।

अु ज्ञान विवाह और प्रसन्ती समन्यादा लेकर कभी नाक लिपि है जिनमें जिन समन्याक विभिन्न पट्टाकाको सपायवादी दागिप अुपमिपत्र विदा गदा है। 'दाकी पलक' में आधुनिकात्राकी पारिवारिक दागिपहीन बुजुबा पैंगनपरम्प्रीका विन्नी अुपामी है और अैनी नागिपेति अमिनूत हाववाले पतिपों और पर जनवाल मध्यवर्गीय नौजवानोंपर व्यप नो विदा गदा है। 'वहने' नामक अकाकी मा वर-नवाचनक नामपर आधुनि वापेके अुनमुत्र प्रमक स्वाका जक व्यप विद है। 'वद' नामकमें गिपिप्य, पुरान साकारके प्रभावमें जकथे अक नारीका रूप विच अकित है वा अ-अित पतिकी पारिवारिक कंद में धुनी जा रहा है। किन्तु 'अला अला राम' में कंदके अुन विचग नारा जीवनका अतमपनाक प्रति धार विदाहका स्वर है। 'दल' अला राम'में गनीका अण पतिव विरयमें यह कथन—जिच व्यक्तिके नमाम चद हजाक अक मजानका मूय अरे मानसे क्हेँ अजि है, जो मूय नहीं मजानको चाहता है में अन लाटुवकी सफल तक नहीं देउता चाहती— अुन विदाहका वाग गेता है। अब रामाना गिपि तारा चद परवर पूछता है—'तू अण पतिव पूमा करती है ? तो गदा निर्भोत्रितस अुन' दती है—'मिा राम राम अुनस धला जाता है।' वद अण पतिव कन्दा है—'जापका धम नो पुपकोका धम है।' और जिन प्रकार वद धन-लागुन पतिवा गन कर दता है।

'समूदा अकात्राकी नागिका आमनाके चरिचमें बुजुबा-न-कृतिका प्रतिगामा आधुनिक-नाराक अतर-विवादाका समावर्तिक अुपयान हाता है। अुना प्रकार अजा दादा' में बुजुबा नाराक अक अुनक पट्टाचम व्यप है और नवरमें अमिश्रण वगैर वैदिक नगिपेकी अुनन अकात्राका सपाय रूप है। जिना नागि अुनर नाकान ना विदाक अर प्रसका समादात्रोंका लयक दाद अ-वनक अकक अ-अुनकार प्रकाग हाता गदा है।

देवताकी छायाम अक्राकीम भरौका यह कहना-
'हम लडकियाँ ह। हम अपनी जिन्दासे हस नही सकनी
बोल नही सकनी हिन्ड डल नही सकनी चाहे घट
घुटकर मर जाअ। भारतीय नारी जीवनके अग्रिन्त
बचनोकी घुनभरी वरण पुकार है।

अश्वके असे सभी नाटकमें शात अनात रूपसे
सांभाजिक व्यक्तिकी हैसियतसे नारीको सामती और
पूजोवाणी बघनोसे मुक्त करनकी भावना विश्राम
दिखायी देनी है।

अुडान म जिन ब रनोकी नमाम समस्या
ओका निदान है। अिसमें मायाके चरित्रके माध्यमसे
नारीके अम रूपको अपरिचित किया गया है जो पूर्णपकी
दासताकी मात्र दाखी पूज्या या भाग्या बनकर हो स्त्री
कार नहीं परना चाहती बकि वह अक सामाजिक
अिकात्री बनकर पूर्ण मगिनी बनना चाहती है।

अश्वकी महानुभति श्रमिक वषर साथ है।
मद्यम अुहोन मजदूरोके जीवनपर कोअी नाटक नहीं
लिखा फिर भी अुनके नाटकम यम तत्र धमका
शोषण करनवात्री पूजोवादी मतोवदिका पर्नाकाश
किया गया है। देवताओकी छायाम म शोषणघ्न
मजदूर जीवनकी अक छोटी सी झाँकी अुहोन प्रस्तुत
की है। अिस नाटकके पहले दम्य विमानम ही अक
दशक सकेत देने वुअ अपनी अिस भावनाको भी प्रकट
करते ह। व लिखत है—

काबूके असो ही अक नयी आवादीके पाग
दो अडाओ सी बच्चे घरोका अक गाँव है। अक
व्यवसायी सोसाअिटीन (जो पिष्ट व्यवसायकी
बलाम निपुण है) अिमके पास तीन चार सी
अकड अूसर घरनी सस्ने दामोम मोल के ली है।
और फिर अिम अपीलपर कि अुम घनीपर अक
नय समाजकी नीव रखी जाअगी जो सप्रदायके
स्थानपर मानवको अपन प्रमका भाजन बनाअगा
और देशके दीन हीन वृपकोका मुधार करेगा
मह्य दामो प्लाट बेचकर देवनगर के नामसे
अक नयी बस्तीका मूकपात कर दिया है। निव

वनी गावोने श्रमी वहा मुयह सात आठ बजसे
गामके सात आठ प्रज तक सन्न सनी अथवा
सन्न गर्मिम काम करने ह और पाँच उह जाग
निक मजरी पान ह और वे लोम पत्र पत्रि
काअाम वड गवन्फोन स्वग्म घोषणा करेने ह वि
अु होन लावा रूप देहातम विनगण कर शिव ह
और अुनके नगरके विनगणनी गाँव सम्भन हो
रहे ह।

यह दम्य विमान शेषकी वग भन्को पहचानन
वात्री मत्रग प्रगणिगीन दष्टिका ही परिचायक है।
नाटकका दम्य विमान अिस शिषणोने मित भी पूरा हो
मरता था किन्तु पायद अम तग पाकाने सम्मुय
श्रमिकोका शोषण करनताउ पजीवाणी मानववादका
पर्नाकाश न होता। अिस शिषणोकी पेटअमिम नाटकम
दिखायी गयी गरीमीका चित्र वग भन्को पयावताओ
और भी अग्रिब स्पष्ट कर देता है।

अधिकारका स्वपक अक्राकीम पजीवा।
सहकारोपर बठोर व्यग क्रिया गया है साव ही आजक
अधमरवाणी नताअार्का पोल खोत्री गभी है। अिस
नाटकके प्रमल पान मि सेउ चुनावके त्रिअ विम प्रसार
ढाग रचन ह (जिनकी करना कुछ और कथनी वग)
वह आधुनिक नतागाहीके ढागा रूपवा ही अक चित्र
है। अक ओर ता व हरिजनन्माके मनीस दात
करन हुने पीडिता और पन्लिन्कोका अपुर अुमानका
दम भरते ह दूसरी ओर अपन नीकृती ररी तरह
गात्रियो देने ओर अपनी मेहनतानीको महीनकी पगार
मगिनपर डोग्न ह। सावजनिक रूपसे वे अक ओर ता
बच्चेको शारीरिक रूपसे दण देनका गार्तिन विगण
करने ह दूसरी ओर अपन बचको बमनअक पीटने
ह। बाहर मालिकोके अयाचारोस विरोधका ढाग
रचने ह और घरम अपन नीकृती तग्याह
मगिनपर कहते ह जा अक कौनी भी नू देन
निकल जा यहुँसे जा जाकर पुनिमम रिपोर करेने।
पाजी हगमखोर सूअर! आजतक मनीम गाम
सोम मुल्कम यहुँतक कि बाजारस आनवात्री ह अक
जीमम पने रचना रहा। हमन कभी कुछ न बग

और अब या पक्कता है। और जब अमपर नीकर यह कहता है कि सच है बाबू! जागराब लाल ओमान दाह। तो भी बार है शक है। अमीर यदि आओमें धूल पाकर हजारापर हाथ माफ कर जाओ चढ़के नामप नन्ना अन्ना द ता मि सठ अमि मयापको मुनकर अरक अरक ह और जपन नाहरकी पीटन गते ह। अरिना मव दाग रचनक बाद भा वे होजरी रनिपनके मन्त्रीम कहत ह 'म अून लोगामेमें नही जो कन्न कु ह और कन्न कु छ ह। मैं जो कहता हूँ वही करना है और जो करता हूँ वही कहता हूँ। व स्वयं पूजावादी मनोवृत्तक गुलाम होकर भी मजदूरको बहकानक शिअ, दिग्वाक रूपमें पूजापनियोंको मित्रा करत ह— य पूजापनि गराब मजदूरके कञी कञा महीनाका वनन राकक अ ह भूला मरनपर विवग कर तन ह स्वयं मात्परम मर कर्त ह शानदार हात्पाम गाना गाना ह और जब दिन-रान परिश्रम कन्नक वा य गरीब उाह पाना अकक दनके बाद अपनी मजदूरी माँगत ह तब हाथ सग हान कारो वारमें हाति हान अथवा काआ अया ही दूसरा बहाना बनाकर टाठ दते ह। 'अम प्रकार मजदूरका पवदका दाग मरनवाते नता (श्री मठ) क पाम अूनक जपवारके मयापन जब स्वाभ्यवकी खगवी और कामके अधिकवके वारप अक महाभक्ता माँग करत ह ता य अन् अक नहा दम जादमी मिल जानकी समका दत है। जिनी तरफ यह नता विद्याधिपाकी घोषा दता है। मन्त्रिअम नागे मुक्किनी बात बह कर अरत घरमें अपनी पत्नीको मनाता है। और या अरिनाका रक्षक' आधुनिक नताअके टागा जिवनपर जत करारा च्चर बन जाता है। अमस अजावा-अप मयापकी पाल पुत्र जाता है।

विद्वान और कन्नक वपयामें पूजावादी व्यवसायिकता कुदभावक अरक मयाप चित्र भी अकक नाकाम मिलन ह। आजकल किन प्रकार डाक्टरका पत्र रोग-मुक्ति नता बन्दि मया कमाता बन गया है अरिना अक चित्र अपमका समतीता अरिनामें है। अममें यो क रर रता-अरि आरररर अक दूसरे

पाम मरीज भजनका समधीता करत ह। अमके प्रधान पात्र डाक्टर मया अपनी पन्नीम कमते हैं— 'और तुम नहा जानता बाहरके रोगियासे विद्वता लाम होता है। काम खराब हो जाओ तो डर नहा अिगड जाओ ता डर नही और यदि ठीक हा जाओ तो बाहरन और भी रोपी आन लगत है। और फिर सबसे बडा वान यह है कि अनसे फीम अधिक गी जा सक्ती है। विद्वानके मान कन्नाके रसर वपयामें भी पूजावादी मनोवृत्तियाका कंमा कुप्रभाव पल गया है, अमके भी कञी चित्र मरकं वाजाका स्वयं पतरे और पक्का गाना नामक नाटकीमें मिलते ह। मरकंवाजाका स्वयं' किमी कलाकारपर लिखा गया अक प्रहसन है जिममें अक किमी अभिनेता परेग कहता है, 'यहां किसी माहि यिकके लिअ अमी जगह नहा।' अमक अन्तरमें अमका दूसरा स्वाभिमानी कथाकार मित्र हरीग कहता है— 'अच्छ साहित्यिकके लिअ अमी कही भी जगह नही।' अम नाटकके अन्तमें खुगामदपरल किमी दुनियापर हरीगका यह अन्तिम वाक्य बिलकुल फिट बैठता है— यह किमी दुनिया है—यह मरकंवाजाका स्वयं।

'पंतर में भी किसी तरह बम्बयीके किमी कपनमें काम करनवाले निर्दंगका और कलाकारोकी पतना-मुक्ती प्रवर्तियाका बडा मयाप और सुदर नाका खोचा गया ह जो पूजावाता प्रभावका भी अुदपायन करता है।

पक्का गाना अकाकीमें फिम कलाके कपयमें पनीपनियाकी घाघलीके विषयमें दापक कहता है 'पञ्जापनि अम मगानम जो कुछ पंदा करना चाहता है, वह यह आनका आन नही बन्दि रगया है। अम गानियां मयाप भी रगया मिल जाओ तो अम अमसे भी विषय न हापी। वह पडापड असा किमें बनाअगा जिनमें मरमाअदाराका गानियां मिठ और अमका जब रम हा। अरिना ज्या ही पकिअ अमस अकनायी कि अमन फिर म्प्यायी गुर की। सरमापका अधिकार अिम्प्याये ह तो कुछ हा। य अरक कलाक कपयमें पूजाका अमपदारीका विरोध कर्त ह और कलाके

सर्वशक्ति गन्दा करनेवाले पत्नीके प्रभावकी यथार्थताका अदृष्टांतित करने हैं ।

'धनमिया' नाटकमें समाजकी पूजीवादी जहनिषत और आजके ग्वायरी परिचय लूकमके त्रिम कथनमे होता है — "यह हिन्दुस्तान है । वहाँ कावचित्तकी कदर नहीं दियावेकी कदर है । जो माधु गाली दे बड़ मिद्ध, जो डाक्टर मरीजोके माय तीखेपनमे पैग जाय वह धनवन्तरीका बाप और जो बकील जिनता ही झूठा हो अतना ही सफुट । कवाकत आगिर गह ही क्या गयी । सबका सब और झूठको झूठ साबित कर दिखाना कवाकत नहीं, बल्कि हर तरोकेमे झूठका मय माधित कर देना कवालन है ।"

अदकने अपने नाटक "बुडान" में मायाके चरित्र-पर युद्धकी विभीषिकाके कुछ प्रभाव दिताकर सकेत रूपमें युद्धका विरोध करत हुआ शान्तिका पक्ष प्रदृष्ट किया है । माया कहती है "बमबारीने जहाँ मकानोके परखचे झडा दिये, जहाँ अुनके वासियोकी लज्जाको भी तार-तारकर दिया । जिनकी शर्म अु-हे शरीरमेमे क्षीनने तककी आज्ञा न देनी थी । अु-हे मेने नगे मँह नगे भँहूँ क्या, गगे शरीर सडकोपर भागने देखा है ।" युद्धकी विभीषिकाका नग्न रूप देखनेवाली माया अेक गीतके सहारे युद्धके आपातीका भूलकर बडे बडे जगल और पहाड पार करनी रहा । मायाका यह गीत मानवकी शान्ति भावनाका प्रतीक है जो युद्ध नहीं चाहता ।

अदकने धर्मके नामपर साम्प्रदायिकताको अुमा-उनवादी पूजीवादी मनोवृत्ति और अुभके पीछे साम्राजो साजिदका भण्डा-कोड "तूफानमे रहूँ" नामक अपने अेवाक्रीमें किया है । अिममें मुसलमानाकी रक्वा करत हुआ हिन्दू गुण्टेमे मारा जानेवाला प्रधान पात्र घोषू मरते समय दान पोमकर कहता है — अेक तूफान आ रहा है । जिममें ये मय दाग, ये गुण्ड ये धर्म और जाति-पान्तिके दर, गरीबोका लोहू पीनेवाले पूजीपति, ये भाडे-भोडे लोपोको लडवाकर अपना अुलू सी-ग करनेवाले नेता—मय मिट जाअेंगे । नथी दुनिया बसेगी जिममें गरीबोका, मजदूरोका राज होगा जहाँ हिन्दू-मुसलमान न हागे काले-गोरे न होगे । सब जिनसान भात्री-भात्री होगे ।" यह कथन अदकके प्रगतिशील जनवादी दृष्टिकोणका अुदापक है । अिममे यह प्रतीत हाता है कि समाजकी प्रतिनिधावादी, जन-विरोधी शक्तिगती मिटनी हुआ मला और बगहीन समाजके निर्माणके सविपके प्रति लेपन कितना जागृक है ।

अदकने अपने नाटकीय मध्यवर्गीय जीवनमें पूजीवादी प्रभावोम अुत्पन्न विशुल्लताका शीर अुच्छ-खल्लाओ तथा अुनके जीवनके अन्तर्गतरोके व्यगात्मक चित्र अपुम्यित करनेके साथसाथ जीवनके अुदात्त मानवीय भावाका चित्र भी प्रस्तुत किया है जो मानव विकासका आशावादी प्रतीक है ।

अिम प्रकार धर्म समाजके युग-सत्यको विभिन्न रूपोंमें अदकने अपने नाटकमें यथार्थवादी ढगसे अभिव्यक्त किया है ।



स्वप्न-सत्य साकार करो तुम !

श्री प्रभुदयालु अग्निहोत्री, अेम. अे. :

महज सुभग शृंगार करो तुम ।

नील निलयकी नील निवासिनि, भूतलपर अभिसार करो तुम ।

द्वार द्वारके दीप निवापित धीर तमोरेखाअें गहरी,

यौवनके सपनोंसे अधिधर किन्तु सजग अम्बरके प्रहरी,

मन्द चरण छिप-छिप पलकोंपर अुतर सकल अमनाप हरो तुम ।

विलरीं खण्ड-खण्ड प्रतिमाअें मन्दिर आज बना खण्डहर हे,

जीवन जलता पृष्ठ कि जिसका, प्यस्त-प्यस्त अक्पर-अक्पर हे,

पटाकपेप कर हे रसरगिणि, नव विज्ञान-विस्तार करो तुम ।

लघु मर अेक, अनन्त लहरियों, बहुबन्ध-बहुबन्ध सर अन्तर्मन,

लघु अुर अेक अनन्त विकल स्मृतियोंका पल-पलमें आवर्तन,

अवने शीतल मंदिर स्पर्शसे चेतननाका भार हरो तुम ।

आज प्रभजनसे कम्पित हैं स्नेह-समर्पणकी दीवारें,

और अमर विरवाम हिला है, सूप चली मधुरसकी धारें,

अव नीरस आख्यान हो चला त्रिमका शुपमंहार करो तुम ।

कषतक उहरे ज्योतिस्नेह जल चुका और धूमित है वाती,

धूम रही है स्नेपनमें अेक करग-अजनि-सी टकतानी,

युगयुगसे रीते अन्तरमें आज हृदयभर प्यार भरो तुम ।

केमा शीतल अेक कि त्रिममें तम-प्रकाश शिशुमम पलते हैं ।

औ, षट त्रिवकी डाल-डालपर जन्म-मरण ममरस फलते हैं !

आज हिरण्मय पात्र हटाकर स्वप्न-सत्य साकार करो तुम ।



ओड़िया

समग्र भारतमें प्रायः आठ भाषा प्रचलित, तन्मध्ये अधिकांश साहित्य विवर्जित केवल कथ्य भाषा। हिन्दी, बंगला, तेलुगु, तामिल, कानारिज (कन्नड), मलयालम, मरहट्टी, गुजराती, गुरुमुखी, नेपाली, थुर्दू ओ आभमानक ओड़िया प्रभृति अत्यल्प भाषा प्राचीन ओ आधुनिक साहित्य विभवरे प्रकृत भाषा नामरे अभिहित हुअे। वर्तमान युगरे ओड़िया भाषा अहि सधु परवर्ती भाषा समाजरे समान आसनर अधिकारी न हेले हे—प्राचीन विभवरे अे जे शीर्ष स्थान अधिकार करीब, अेहा अनेक भाषाविद् स्पष्टरूपे स्वीकार करि अछन्ति।

मराठी

राष्ट्रोन्नतीचे नियम

१. "जे पोटी तेच ओठी" ही हृदयशुद्धीची परीक्षा आहे
२. "चित्त शुद्ध जरी शत्रु मित्र होनी" हेच सत्य आहे
३. वाओटीला चागल्याच्या नावाखाली सपू देणे तर घोव्याचे आहेच, पण चागल्या माणमाना निष्कारण बदनाम करणे हे अधिकच हानिकारक आहे
४. दुसरा वाओटी ठरला ह्याणजे तुम्ही चागले ठरणार नाही
५. वर्तव्य—पथावर सोवती मिळण्याची वाट पाहू नका
६. स्वतः पेक्षा अधिक शाहण्यापामून शिका व कमी शाहण्यास शिकवा, संपूर्ण समाजाम वर ओढण्याचे यापेक्षा दुसरे हमखास साधन

हिन्दी

समग्र भारतमें प्रायः आठ मो प्रकारकी भाषाअे प्रचलित हैं। अुनके मध्यमेंअे अधिकांश साहित्य-विवर्जित केवल बोलचालकी (कथ्य) भाषाअे हे। हिन्दी, बंगला, तेलुगु, तामिल, मलयालम, कन्नड, मराठी, गुजराती, गुरुमुखी, नेपाली थुर्दू और हम लोगोकी ओड़िया प्रभृति अत्यल्प भाषाअे प्राचीन तथा आधुनिक साहित्य वैभवमें प्रकृत (वास्तव) भाषाओके नामसे अभिहित होती ह। वर्तमान युगमें ओड़िया भाषा अिन सब परवर्ती भाषा-समाजम समान आसनकी अधिकारी न होनेपर भी प्राचीन वैभवमें यह अवश्य शीर्ष स्थानपर अधिकार बरेगी, यह अनेक भाषाविद् स्पष्ट रूपमें स्वीकार कर चुके हे।

हिन्दी

राष्ट्रोन्नतिके नियम

१. 'जो मनमें बड़ी मुँहमें' यही हृदय-शुद्धीकी परीक्षा है।
२. 'हृदय शुद्ध हो तो शत्रु मित्र बन जाअे।' यही सत्य है।
३. बुराओकी अच्छाओका बुरवा पहननेकी अिजाजत देना नी सक्त्कारक हैही, किन्तु भलाओकी बदनामी करना अुससे भी अधिक हानिकारक है।
४. दूसरेको बुरा कह देनेस आप अच्छे नहीं मिद्ध होगे।
५. कर्तव्य पथपर साथीकी राह देखनेमें समय मत खोअिअे।
६. अपनेमें अधिक बुद्धिमानोमें पढिअे, कम बुद्धिमानोको पढाअिअे। पूरे समाजको अूपर अठानेका जिसमें अधिक सच्चा साधन सम्भव नहीं।



[सूचना—'शास्त्रभारती' में समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियाँ ही सम्पादकके पास आनी चाहिये।]

राधा आर राजन (अनुपमास) लखन-ध्रा बलभद्र ठाकुर पृष्ठ संख्या—३२६, अब काशुन, सोलह पत्रों। प्रस्तावक प्रामोपान विद्यापाठ सगरिया (राजस्थान)।

लखन-ध्रा में यह अनुपमास 'गहोदाकी कहानी' है। और 'गहोदक' रूपमें बुनका नायक राजन है। राजन 'भीर' प्रतिभागाली युवक है, बुनके हृदयमें अनुभव राष्ट्रभ्रम है और जिजीव्ख वह प्रतिभागाली हान ह्रम भी कालज छाड देना है तथा आश्री सा अन वननकी अमिलया भी। वह चरित्रवान भी है। नारा जातिव प्रति श्रद्धा रखता है अंभी हालनमें टूनपर लालके साथ जो व्योहार करता है वह अचिच नहा प्रताप हाता। 'सबका कहना है कि अिस अनुपमासम गहाद पात्राको मानव रूपमें ही अनुपस्थित किया गया है।' 'गहोद पात्र सा वचल राजन हा है, और यह घटना राजनक स्वभावके प्रतिकूल जान पटना है। राजन स्वय ही गालन कहता स्वभाविक वानावरणमें अनाचार भी मयउ रहता है जब कि वृत्रि मनाव मोहक 'देके भाउर वही अनाचर वानन्स ही अुटना है। लालके पिता पत्ति रमणकरका अनुवर आगतन होना भी विचित्र वात है।

काल युग और प्रतामनाक प्रवाहमें वहनवाला मधुवक है। यही हाल गधाका भा है परन्तु अुसकी विषया दायरा शत्रवक छाड ह्रम। अिसल्लिख वाणमें

समूह जाना है और देग-अविकाक रूपमें मानन जाती है। मानो हरिऔषके 'प्रिय प्रवास' को राधा हो। वाणी भी समूहलता है परन्तु तब जब राजन राजद्रोहके अपराधमें फासीके तल्लर चडकर हमउ हनन मृत्युका अालिन कर लेता है। अिनक पहल लदनन लौनक बादस तो वह पूरा वरिस्पर ही भा साहव पा।

लीलाका चरित्र सा प्रारम्भअ अन्ततक रहन्समय है, परन्तु अुसमें कमउता और वनव्यक प्रति जा' रकता अव'प है। अान पिता पडिन रामणकरकी वामनाम वचनक लिख लाल राजनक साथ वागोउ नाग आयी थी। अुस समय अुसन कहा था 'अुस पिताकी सामाजिक स्थितिका नुरवशाक लिख हा ता भाग चलो हू। पिताका यह रूप ना वीनन्स और अना वश्यक है। बादमें पत्ति रामणकरका भी अरनी ह्रवउतार पदधाताप ह्रम और व लालकी गरलन जा ग्य। महूत प्रताकीतिहा समावश अनुपासमें विलकुल अनावश्यक प्रतीन हाता है। राधाका माँ 'चाचा' पुरी भारताप माँ है वचिवर मयिलाउरण गुणवदा भाति 'अौचल'में दून और आत्राम वाना धिनाप।

अुपमासमें रचिया रहामसान और वतारणा न भा हात तो भी काम चल जाता परन्तु अुन चरित्राक ननाव'न अनुपासका मानयिकताकी ध्रा प्रदान की है। अिनक चरित्रका विकास भा सुन्दर है। वहिनऔष

वर्षिका स्मृति हानका मोका हा नहीं मिना । व अक घमिल छाया-नी रह गया ।

मान्य— (अर्थात् म्विनि और विकास) लेखक, श्री वरभद्र ठाकुर पृष्ठमन्दा २०२ 'व्यक्त्यात्म सोलह पत्ती । प्रकाशक ग्रामा यान विद्यापीठ मगरिया (राजस्थान) ।

लेखक दान्दम जिन छाटी मी पुस्तकमें मानव समाजका लाथा वषोंके परिवर्तन और निर्माणका कहानी है । 'पुस्तकका आरम्भ 'पृथ्वी और अमक मूठ तन्वने हाना है " फिर पृथ्वीपर मनुष्यका आगमनकी कथा घटती है । और फिर विभिन्न अत्यायामें अमक साम्प्रतिक जब सामाजिक विकासपर प्रकाश डाला जाता है । लेखकका मन है कि 'भारतीय समाज अत्यन्त विकासकी चार अवस्थाओंका दम चूका है ।' अमका यह भी मन है कि ५ हजार वर्ष पूर्व समाजका रूप आदि साम्यवादी था यह ही मकता है, परन्तु वह साम्यवाद आजके साम्यवादम भिन्न था । वर्ग-चेतना तो थी, परन्तु वर्ग-मधर्षकी भावनाका अभाव था । पुस्तकमें विद्यापिया तथा मानारण ज्ञान बढ़ानेकी चिन्ता रखनाओंकी पर्याप्त सामग्री मिल सकती है ।

राष्ट्रीयता नट [लेखक—श्री राज्याम द्विवेदी, प्रकाशक वेदाव-साहि यन्टुटीर, करग (मध्यभारत) पृष्ठ मन्दा ७२, मूल्य १।।।] बहुत अधिक मूल्य है केवल ७२ पृष्ठावाली पुस्तिकाकी ।

जिन नवादिन कविने अपनी जिन छाटी मी काय पुस्तिकाकी, सन् १९५७ के मियाही विद्रोह लकर २६ जनवरी १९५०की गणतंत्रिका स्थापनाकी घोषणा तककी आदालत पृष्ठभूमिपर यह का यका रूप देनेका प्रथम प्रयास किया है । विषयम सबधिन जिन तिवियोंका लगवने सूचीपत्रमें घटनाक्रम अनुसार अच्छे से किया है, अम जिसून कपत्रमें तो प्रतिभास्पन्न हाथोंकी समर्थ लेखनी ही विचरण कर सकती थी । नवकविने घटनाओंका नीरम तुकड़ोंमें अच्छे से मात्र कर दिया है ।

पुस्तक रावीने अम तन्म आरम्भ होती है जहाँ लाला राजपतरायके बहिदानसे शाक-आया मंडरा रही या भा ८

है और अन्तमें भारतमें स्वतंत्रता देवाक आनेपर भी गवाक तन्पर नही शाक-आया मंडरानी रहती है । राधा जिनके तन्पर राजाव-केसरी लाला राजपतरायका अन्तिम मन्कार हुआ, जिनके तन्पर ३१ दिसम्बर १९२९ की अन्तराष्ट्रिका पूर्ण स्वाधीनताका प्रस्ताव पास हुआ और २६ जनवरी सन् ३० की राष्ट्रक कर्णधारोंने स्वाधीनताकी प्रतिज्ञा दुहरायी, जिनके तन्पर कान्ति-कारी भगतसिंहका कारामुक्त करानेक हेतु वम परीक्षण करने हेतु साथी भगतसिंहपर शस्त्राद दुधे, वही राधी स्वतंत्रताके अवसरपर भारतीय द्वारा बाहर निकालिन कर दी गयी, यह भावना अन्त-आपमें जिनकी नाटकीय और प्रभाववाली है कविने अपनी रचनामें अमका अन्वयान नहीं किया ।

दुरंत अमिष्यविनि और अनुभूतिकी सिधिलानने पुस्तककी नीरस बना दिया है । कही भी पाठकोंको रममान कर देनेवाली काव्य-यत्निक दान नहीं होते । जिन कच्चे प्रयासमें अम अनेक स्थल हैं जहाँ भाषा बरम बुरी तरह लक्षणाएँ हैं और चिन् प्रयोगोंमें कविता लुप्तप्राय हा गयी है । अक अनादरण दक्षिणे-और अहिमात्मक जालेन से घबडा जाता है शान्त । हिलने लगती हैं वह अडमे वषोंकी तिष्ठिन, दृड आसन ॥

गाहंस्य जीवन और ग्राम सेवा (लेखक—श्री परदागम चतुर्वेदी, प्रकाशक—साहि्य भवन लिमिटेड, अनाहावाड, पृष्ठ मन्दा ७२, म्य बारड आना)

गाहंस्य जीवन और ग्राम सेवा दा विभिन्न कपत्र और किये हैं । प्रत्येक विषयपर प्रतिपादन अब मम-स्माओंकी मुल्लानकी दृष्टिमें वास्तवमें बृहत् प्रप लिखा जाना चाहिए था जिनमें गृह जीवनकी समस्या-आका ममप्र विवचन प्रस्तुत हा । यही बात ग्राम सेवाके सम्बन्धमें कही जा सकती है । परन्तु प्रस्तुत पुस्तिका किनी बडे प्रयकी रूपरेखा अथवा मार-मकान मात्र प्रतीत होती है ।

प्रकाशकने अपने वक्त-यमें स्वीकार किया है कि 'गाहंस्य जीवन और ग्राम सेवाके व्यवहारिक पत्रकी

और जितना कम ध्यान दिया जाता है उतना कम ध्यान साध्य ही अन्य किसी ओर दिया जाना हो।" किन्तु प्रकाशकके शब्दोंमें अमुके 'जागृक लेखक' ने भी जिस विषयकी ओर वास्तवमें जितना ध्यान देना चाहिये, नहीं दिया।

पुस्तिकाके गार्हस्थ्य जीवनवाले अंशमें पाँच परिच्छेद हैं और प्रत्येक परिच्छेद चारसे पाँच-पृष्ठकी परिमित सीमामें समाप्त किया गया है। फुटनोटकी तरह लिखे गये जिन पाँचा परिच्छेदोंका भ्रम जिस प्रकार है ... गार्हस्थ्य-जीवन, गृहवस्तु-ज्यवस्था, आय-व्यय, वेशाभूषा और वातचीत। केवल तीस पृष्ठोंमें लेखकने गार्हस्थ्य जीवन सम्बन्धी अपने व्यवहारिक मुद्दाव देकर प्रथम अंश समाप्त कर दिया है। जिन तीस पृष्ठोंमें थ्योरी अंश ही अधिक है, दृष्टान्तोंका समावेश नहींके बराबर है जिससे पुस्तकको अपुपादेयता घट गयी है। परन्तु खूबी यही है कि सवर्षपरमें सान्त्विक ढंगसे सब कुछ कह दिया गया है। ग्राम-सेवा सम्बन्धी दूसरे अंशमें यह खूबी नहीं है। ग्राम-सेवाके लिये सहरोसे गावोंमें जानेवाले युवक या अन्य सेवापरायण व्यक्तियोंके सम्मुख आनेवाली समस्याओं भी यथायं रूपमें लेखक द्वारा नहीं बूझायी गयी। सहरो अवं राजनैतिक आन्दोलनोंके प्रभावसे हमारे गावोंका स्वरूप वह नहीं रहा जैसा लेखकने बार-बार दुहराया है। न ही ग्रामीणोंकी कट्टरपथी वृत्ति अनती, तीव्र रह गयी है। ग्लोबली स्वयं, पेट्टीमें टून परिकरन्स हुआ है और बुरकी समस्याओंके रूप अब कुछ दूसरे ही हैं जिनने आजके ग्राम-सेवाकोंको सपने करना पड़ता है। "ग्राम सेवाने मूत्र" महत्वपूर्ण अध्याय हैं परन्तु अमुका सविषय रूप अमुके महत्वकी घटाना ही है। जिन मूत्रोंके प्रकाशमें कुछ तथ्योंकी चर्चा अपेक्षित है। फिर भी पुस्तिका कार्यक्रमगत जीवनमें अवकाशके समय देख लेने योग्य है। छापाई गेट-अप तथा मूल्य यथायोग्य है।

—अनिलकुमार, सा. र.

महान्मा गान्धी—जीवन कथा:—ले०—
ना. सी फडके, प्रका०—अश्लि प्रकाशन लिमि०,

फरोजनाहा मेहता रोड, बम्बयी १। पृष्ठ सं १६२
मूल्य १।।)

मराठीके ह्याननामा ललित साहित्य सप्टा थ्री प्रो० ना सी फडके द्वारा मूल मराठीमें लिखित पुस्तकका यह हिन्दी-रूपान्तर है। अनुवादक है श्री प माणिकलाल परदेशी।

जिसमें जैसा कि पुस्तकका नाम है, महात्मा गांधीजीकी जीवन कथा है किन्तु यह आत्मकथापरक नहीं है, न सस्मरणपरक, न कथात्मक है। जिसे अपु-न्यामपरक कह सकते हैं। यही कारण है कि जिसकी रोचकता बढ़ गयी है। विषय अति परिचित, अना-समजा हुआ होते हुए भी पढ़ते ही बनता है। जिसके लिये भारतके ही नहीं, समारके सरतात्र महान् पुण्य भारतके प्रधान मंत्री श्री प जवाहरलाल नेहरूकी भूमि-काने चार चाँद लगा दिये हैं। और भी जिस पुस्तकपर कवी सम्माननीय व्यक्तिधोकी सम्मनियाँ हैं। प नेहरूके शब्दोंमें जिसका हर कोश्री समर्पण करेगा कि—
"महात्मा गांधीके जीवनका सदेव प्रो. फडकेने अपनी जिस मृदुर पुस्तकमें अत्यंत प्रभावपूर्ण ढंगसे विराद किया है। मेरी हादिक कामना है कि यह चरित्र सब लोग पढ़ें और जिसपर मनन करें।"

जिस दिनामें लेखनी चलानेके लिये प्रो फडकेजी वधाओके पात्र हैं। प्रस्तुत पुस्तकमें गांधीजीकी अपुदेसा-वाणी, विशिष्ट घटनाओंका निविचार विवरण और अध्यायके लिय प्रस्त भी दिये गये हैं। पुस्तक हाजीम्बूल कथाओंमें तथा राष्ट्रनापाकी परीक्षाओंमें स्थान देने योग्य है। नापा दापगृहिन, सरल, स्वाभाविक है।

पुस्तककी छापाओ-मफाओ अच्छी है।

लडखडुते कदम—ले० प्रोकेस महेन्द्र भट-
नागर, प्रकाशक—स्वरूप प्रसन्न, अजुगी वाजार, जिनदोर।
पृष्ठ सं ७८। मूल्य अंक १५।

आज पाठक-वर्ग कहानों द्वारा मनोरंजन प्राप्त नहीं चाहता, अपनी व्यथाकी कथाको वह अग्रमें रूढ़ता है। यहाँ 'अपनी व्यथा' से मतलब व्यक्तिनी, समाजकी राष्ट्रकी और जिसमें भी अग्र अठकर मानवकी व्यथा-मजबूरीमें है। समदुखी ही अपना दुख दर्द मुनकर—मुता

कर हलवा कर भक्त ह । अिससे अुनके हृदयका अरु
कार प्रच्छन्न हा, हृदयम नान प्रकाश और प्ररणाती
यनितका सचार हाता है । ठीक जिमी दिगाम प्रस्तुत
कहानी सग्रहकी प्रत्यक्ष रचना सजद है ।

यद्यपि कदा कदा कथानकने योचकी घटनाअ अक
दम अक परिवर्तन सी ज्ञान पडती ह नयापि पाब सान
मिनटमें पकी जा सकनवाली छाटा रचनाआका होना
विगप आकपन जान पडता है । प्रथम कहानीम चप
रासी परमाका पावतीसे अ कहता कि कित्ती खूनमूरत
लग है तू पारवती । भाषाकी दृष्टिस स्वाभाविक और
मुदर प्रयोगका बताता है ।

तरुण भटनागरजी कवि कहानीकार और आता
चकन रूपमें साधना कर रह ह । यदि व बढ़ते ही चले
कदम बढ़ाकर तो हिंदीकी अुनसे बड़ुन कुठ आगा है ।

अिसमें सदेह नहीं कि पाठका द्वारा अिसका
अच्छा स्थागन होगा ।

—अभिराम, सा र

शुन्तला दर्शन — लेखक सिद्धानवाचस्पति
मृगाराम त्रिपाठी साहित्यरत्न अिसका विशारद
प्रकाशक — भारतीय साहित्य मंदिर, गोरखपुर हवा
बाग जबठपुर । पृष्ठसंख्या १२८ मूल्य १।)

महाकवि कालिदासका अभिनान शकुंतल
सस्कृत साहित्यका अक विश्वविख्यात नाटक है ।
संसारकी प्रमुख भाषाओंमें अुसके अनुवाद भी हो चुके

ह । हिंदामें राजा लक्ष्मणसिंहन अिसका मुदर
अनुवाद किया है । प्रस्तुत पुस्तक मूठ सस्कृत नाटक
और अुनसे जिसी हिंदी अनुवादकी सर्वांगीण समीक्षा
है । अिसमें लेखन शकुंतल क सम्पूर्ण विषयपर,
अुसके वेद विदु कया भाग, नाटकीय तत्व दिव्य-
तत्त्वोंका समावेश चरित्र चित्रण रम विचार अंति
हामिकता भौगोलिक तथ्य सांस्कृतिक परम्परा विश्व
व्यापी प्रभाव अष्ट अनुवाद अित्यादि पात्रह अध्यायो
द्वारा अुदृष्ट प्रकाश गला है ।

पात्राके चरित्र लेखन सबसे अदिक जागृकता
अन निष्पत्तयतासे प्रस्तुत किए ह—विगपत शकुंतलाके
चरित्र चित्रणका ती नारी जीवनक गभीर मनोवैज्ञानिक
निरीक्षणके पश्चात् ही खीचा गया प्रतीत ह ता है ।

पुस्तक छोटी हाते दुभ भी समीक्षा जगत्में
अवश्य ही अर नया और अुचा स्तर स्थापित करती
है । यदासभव सभी दृष्टियोंसे लेखकन शकुंतलाके
नाटकत्व और स्थायिककी परीक्षा का है । भारतीय
नाट्यशास्त्रकी दृष्टिस तो लेखकन नाटककी परीक्षा की
ही है साथ ही शतमपियरने कुछ नाटकामे भी अुसकी
तुलना की गयी है अन पुस्तक जहाँ अक ओर
परीक्षायिकाके विगद अन्वयनके अुपयोगकी वस्तु है
तो दूसरी ओर साहित्य ममज्ञाके लिअ भी चिन्तन
सामग्री प्रस्तुत करती है । पुस्तककी छापासी सफाअी
अच्छी ही है ।

—मूलशरर त्रिपाठी



संपादकीय

अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन
पाँचवाँ अधिवेशन, नागपुर :

अ भा राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलनका पाँचवाँ अधिवेशन जो नागपुरमें हुआ बड़े महत्त्वका था। श्री बाबासाहेब गाडगील बुसके अध्यक्ष पद और मद्रासके राज्यपाल श्री श्रीप्रकाशजीने बुसका बुद्धघाटन किया। श्री गाडगीलजीने अपने अध्यक्षीय भाषणमें राष्ट्रभाषा हिन्दीके सम्बन्धमें दो-तीन बड़े महत्त्वके प्रश्नोंकी चर्चाकी और श्री श्रीप्रकाशजीने भी कुछ नये प्रश्न उपस्थित किये। सम्मेलनमें कोसी ६०० के लगभग भिन्न-भिन्न प्रान्तोंमें राष्ट्रभाषा प्रचारका कार्य करनेवाले प्रचारक-प्रतिनिधि जितटोठे हुअे थे। मणिपुर, आनाम, बंगाल, कुन्बल, कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात, दम्ब्रजी, महाराष्ट्र, कर्नाटक, हैदराबाद, आंध्र, राजस्थान, मध्यभारत, मध्यप्रदेशमें प्रतिनिधि आवे और उनमें १० प्रतिशत हिन्दीतर भाषी थे।

जिन प्रचारकोंका प्रचार-कार्य मुख्यतः हिन्दीतर भाषी लोगोंमें ही हो रहा है। प्रचार-सम्मेलनका बुद्देश्य यही तो है कि भिन्न-भिन्न प्रान्तोंमें प्रचारक जापसमें अंक दरमें मिले, अपने कार्यका लेखा-जोखा करे, प्रचार-कार्यकी समन्वयके और उनके हृत्पर विचार करे, और यदि हो सके, तो अपने कार्यमें बड़े नेताओंने मार्ग-निर्देशन भी प्राप्त करे।

श्री श्रीप्रकाशजीने सम्मेलनका बुद्धघाटन करना स्वीकार किया, यह वास्तवमें बड़ी आगाजनक बात थी। सुन्होंने ४५ मिनटका लम्बा भाषण दिया, परन्तु नुननेवालोंको, जो अधिकतर हिन्दीतर भाषी थे, जिस बातका आश्चर्य हुआ कि सुन्होंने जो बातें कहीं वे अधिकतर हिन्दी-भाषी-जनोंके लिये थीं। सम्भवतः बुद्धघाटनकर्ता स्वयं हिन्दी भाषी थे, वन सुन्होंने जिस अवसरका उपयोग अपने हिन्दी-भाषी बन्धुओंको जाग्रत करनेके लिये करना ही अच्छा समझा।

टेंडेके बल प्रचार !

यह बार-बार नुननेमें आता है कि राष्ट्रभाषाका प्रचार जोर-जबरदस्तीसे नहीं होना चाहिये, डेंडेके बलसे नुनका प्रचार नहीं किया जा सकेगा। श्री जवाहरलाल नेह्रुने भी यह बात अंक-दो बार कही है और नागपुर-सम्मेलनके बुद्धघाटक महोदयने भी जिन बातको अपने भाषणमें दोहराया। सम्मेलनमें अंकन हुअे प्रचारक जिन बातको नुनकर हैंगन दिखायी देने थे। यह बात ही नुनकी समझमें आ सकी कि हिन्दीका प्रचार जबरदस्ती कहां किया जा रहा है, कौन कर रहा है ? और जबरदस्तीने हिन्दीका प्रचार किन प्रचार किया जा सकता है ? वे मन जानते है कि हिन्दीका प्रचार किन प्रचार किया गया है और आज भी किन प्रकारने

हो रहा है। हिन्दी-भाषी प्रान्तोंमें तो हिन्दीके प्रचारका प्रश्न ही नहीं है। हिन्दीतर भाषी प्रान्तोंमें जहाँ हिन्दीका प्रचार किया जा रहा है, वहाँ स्वराज्य मिलनेसे पहले तो सरकारके विरोधके होते हुए भी, जनताकी मीठी नजर प्राप्त कर ही अमुका प्रचार बढ़ाया गया और स्वराज्य मिलनेके बाद तो प्रान्तोंमें प्रान्तीय भावनाके प्रबल होनेके कारण विरोध बड़ा ही है, घटा नहीं। जो राज्य-सरकारे हिन्दीके काममें सहायता करना चाहती है, वे भी यदि डर-डरकर कदम रखनेकी बाध्य हो ी हैं तो प्रचारवगण तथा प्रचार-मन्थ्याके किमके बलपर जोर-जबरदस्ती कर सकती है, यह समझना अुनके लिये कठिन था। जो लोग जोर जबरदस्तीकी बातें करते हैं वे शायद वस्तुस्थितिको जानते ही नहीं, अथवा यो ही कुछ कहनेके लिये अंसी वाते कह देते हैं। शायद कुछ लोगोको अंसी वाते सुननेमें यह अच्छी भी लगती होगी, इसलिये भी सम्भव है कि कही जाती हो !

संतोंकी वाणीसे प्रभावित भाषा :

अद्घाटक महोदयने अक बात यह भी कही कि हिन्दीमें गाली गलौजकी वपमता अधिक् है और अुमम अपशब्द बहुत भरे हैं। अिसे सुनकर भी सम्मेलनके प्रतिनिधियोको बड़ा आश्चर्य हुआ था। और क्यों न होता ? आजतक तो वे यह मानते आये थे कि हिन्दीपर सन्तोंकी वाणीका ही अधिक प्रभाव है। हिन्दी राष्ट्रभाषा बनी अुसके पहले साधुओ और सन्तो द्वारा ही अुसका सारे भारतवर्षमें प्रचार हुआ। तुडसी, मूर, कबीर, मीरा, दादू, नानक आदि सन्तोंकी वाणीसे हिन्दी समृद्ध है। कभी स्थानोपर तो राष्ट्रभाषा-प्रचारका आरम्भ अिन सन्तोंका तथा अुनकी

वाणीका प्रचार करनेसे किया गया। गुजरातमें भी अिसी प्रकार अिम वार्यका आरम्भ किया था। इसलिये आज तक प्रचारकोंकी जो भावना बनी हुअी थी अुसपर आघात करने-वाला मन्तव्य सुननेसे अुन्हे खेदसहित आश्चर्य होना स्वाभाविक ही है। कभी लोग गुम्मा होनपर अग्रेजीमें गालियाँ देने लगते हैं अिमलिये अग्रेजी गालियाँ देनेकी वपमता रखनेवाली भाषा नहीं कही जा सकती, अुसी प्रकार यदि गुस्सेमें कोअी हिन्दी या अुर्दूमें गाली देने लगे तो अुममें अुस भाषाका दोष नहीं। गाली देना कोअी अच्छी बात नहीं, अिमलिये जब मनुष्यका अन्तर-मन अुसे अन्दरसे टोकता है तब वह दूमरी भाषाका प्रयोग करने लगता है, और मनसता है कि अिस तरहमें अुसने अुसपर अक बारीक सा परदा डाल दिया है। यही अिसका मनोवैज्ञानिक रहस्य है। इसलिये किसी भाषापर अिमका दोष मडना किसी प्रकार अुपयुक्त नहीं माना जा सकता।

भाषा कैसी हो ?

राष्ट्रभाषा कैसी हो अिसके सम्बन्धमें अक विवादकी आवश्यकता नहीं। प्रचलित अग्रेजी तथा अन्य भाषाओके शब्दोंको निकालकर अुनके स्थानपर सस्कृतके भारी-भरकम शब्दोंका अुपयोग किसी प्रकार भी वांछनीय नहीं। श्री प्रकाशजीका अिस सम्बन्धमें जो मन्तव्य है वह हिन्दीके अधिक्तर विद्वानोंको भी मान्य है। प्रान्तीय भाषाओ तथा हिन्दीमें परस्पर लेन-देन हो, और हिन्दी-भाषी भी अकाध दूमरी भारतीय भाषा सीखें, अुनका यह सुझाव भी अच्छा था। राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति अिसके लिये प्रयत्न भी कर रही है।

मनुष्य ही यदि हिन्दीको राष्ट्रभाषा बनना है तो यन्में सभी प्रान्तीय भाषाएँके पुनयोगी शब्दोंको आममान करनकी वयमता होनी चाहिये और भाषना नया विचारोंमें नारे भारतका प्रतिनिधित्व करनकी भी शक्ति भानी चाहिये।

गाडगीलजीकी योजना :

श्री गाडगीलजीने यन् भाषणमें कुछ महत्त्वक प्रश्नोंकी चर्चाही नहीं की, अन्तोन हिन्दी-प्रचारकी एक योजना भी दी। यह योजना नयी नहीं। यन्ने दिल्लीके एक भाषणमें अन्तोंने यह योजना सर्वप्रथम रखी थी। योजना अच्छी है परन्तु सरकारी महायन्तक बिना सफल नहीं हो सकती यही अनुभव नवम बड़ी वृष्टि है। सरकारकी ओरसे जिन कार्यमें महारता मिलेगी, अंसी जागा करके बैठे रहना कार्यको बड़ी हानि पहुँचाना है। सार्वजनिक सम्झौतों जो जिन कार्यमें लगी हूँगी है, वे सब मिलकर यदि कीजी योजनाबद्ध कार्य आरम्भ करे, तो बहुत कुछ काम हो सकता है। परन्तु यह काम सम्भव होगा, यह प्रश्न है जिनका पुनर नयी तक हमें नहीं भिन्न।

अंग्रेजीके सम्बन्धमें :

श्री गाडगीलजीने अंग्रेजीको बेकदम न हटानेकी चेतावनी भी अपने भाषणमें दी है। विधानमें अंग्रेजीके लिये १५ वर्ष दिये गये हैं और आज भी केन्द्र तथा राज्य सरकारोंका अधिकांश कार्य अंग्रेजीमें ही चल रहा है। अतना ही नहीं, बडोदा, खालियर आदि स्थानोंमें, यहाँ गुजराती या हिन्दीमें काम होता था, यहाँ यिन्ने अंग्रेजीको स्थान दिया गया है। अंसी स्थितिमें अंग्रेजीको अक्षय्य हटानेका प्रश्न अस्मिन् ही नहीं होता। प्रश्न तो यह है कि अंग्रेजी हटेगी नो, और कब

हटेगी ? श्री गाडगीलजीने श्री राजाजीके अक्षय्यकरणको देकर, अंग्रेजी भारतके अक्षय्यकरणकी देवोकी एक देन है जिन ओर हमारा ध्यान खींचा : मरम्बनी देवोकी पित्त देनको हम स्वीकार कर सकते हैं परन्तु देनका मूल्यकन भी तो मरम्बनीक पुत्रही कर सकेंगे। माधारा जनता तो शायद अनुभव मूल्य समझ भी न सकेगी। ऐतिहासिक दृष्टिमें यदि देना जाये तो कुछ लोगके मतमें भारतमें अंग्रेजी राज्य भी विधानाका एक विधान था— अर्थात् पीडितोंकी देन थी। अनुके लाभ भी गिनाये जा सकते हैं, परन्तु निनी कारण अनुके गुलामीके तौकको तो हम सदा गलेमें लटकाये नहीं रख सकते थे। यिन्नी प्रकार सरस्वती देवोकी देन अंग्रेजीको भी, हमारे लूपर सदा प्रभुत्व करने नहीं दिया जा सकता। जनताके हितके लिये राष्ट्रभाषा हिन्दीको अपना स्थान तथा प्रान्तोंमें प्रान्तीय भाषाओंकी अपना स्थान देना ही होगा और वह भी यथासम्भव शीघ्रही। यिन्ना यह अर्थ नहीं कि अंग्रेजीका बहिष्कार किया जायेगा। एक वर्ग तो अंग्रेजीका अध्ययन करताही रहेगा और अनुके द्वारा प्राप्त ज्ञानमें भारतकी सेवा भी करेगा। परन्तु अंग्रेजी पदा-लिखा वर्ग आज भारतमें तथा अन्य महत्त्वके स्थानोंपर अधिकार कर बैठा है और माधारा जनतामें अलग रहकर अपनेको अक्षय्य मानता है। यिन्ना स्थितिमें आमूल परिवर्तन नभी होगा अब हिन्दी तथा प्रान्तीय भाषाएँ, जिनको माधारा जनता भी समझती है यन्ना अनुसूक्त स्थान प्राप्त करेगी और पंजी-निर्देश तथा सामाज्य जनतामें जाज जो इतका सम्बन्ध है वह निकटका तथा निजी सम्बन्ध बन जायेगा।

भारतकी भाग्यी :

श्री वाजपय्याय गाडगील तो जाने और माने हूँगे नाहिन्त है। स्वाभाविक है कि वे

राष्ट्रभाषाको अपमान देनेका मोह गवर्ण न कर सके । अन्होंने उस पतिगृह जानेवाली अनु-तलामे अपमान दी है । जुहूँ शकुन्तला ही क्या याद आयी ? क्या जिसीरिजे कि वह भक्त जिनके प्रभाव तथा गौरव का कारण जिन दशना नाम भारत पटा है जुमकी वह माना थी ? परन्तु यदि राष्ट्रभाषा हिन्दी हमारी राष्ट्रवाणीका रूप लेनेवाली हो तो हमारी पुरानी परम्पराज अनु-सार अुमे भारती-सम्बन्धीकी जुपमा दनी चाहिये, जिनकी राष्ट्रकी पीठियापर प्रतिष्ठा की गयी है और जिनकी पूजामें भारतीकी समस्त प्रजा अुत्तममे अुत्तम भेट चढानेको अुत्सुह है ।

श्री पराटकरजीकी हिन्दीको देन :

नागपुरमें राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलनमें हिन्दीके सुप्रसिद्ध पत्रकार आजके सम्पादक श्री वावूराव पराटकरजीको (१५०१) का 'महात्मा गांधी पुरस्कार' देकर जो सम्मान दिया गया वह अपना अलग ही महत्व रखता है । अनेके जीवन तथा कार्यके सम्बन्धमें तन्मन्त्रके जसमें जो दो लेख छपे हैं, उनसे पाठकोंको पर्याप्त जानकारगी मिल गयी होगी । परन्तु राष्ट्रभाषा हिन्दीके विकासकी दृष्टिमें अन्होंने जो काम किया है, वह अनुपम है । राष्ट्रभाषा प्रचार समितिमें जब वे गत १३ नवम्बरको पधार, तो अन्होंने समितिमें कार्यकर्ताओंके समक्ष हिन्दी भाषाके रूपके सम्बन्धमें अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि अन्होंने हिन्दीमें अपनी लेखनी द्वारा कोठी २०० अंशे शब्दोंको हिन्दीमें टर-साली बना दिया, जो मराठी, बंगाली आदि भाषाओंमें लिये गये थे । आज वे अुस रूपमें पहचाने नहीं जाते और हिन्दीके ही बन गये हैं । अंश पत्रकार तथा लेखक अपनी लेखनी द्वारा क्या कर सक्ता है, अिसका यह बड़ा अच्छा अुदाहरण

है । परन्तु जिनके जिजे अुगने पाम विशाल हृदय, राष्ट्रीय भावना तथा समन्वय-दृष्टिका होना आवश्यक है । हमारी दृष्टिमें राष्ट्रभाषाके विकासकी दृष्टिमें श्री पराटकरजीका यह कार्य गदा अनकरणीय रहगा । समितिमें जुनका सम्मानकर स्वयं अपना गौरव बढाया है ।

संस्कार महानुभूति तथा सहयोग दे :

नागपुर प्रचार सम्मेलनमें अमरपर जिन वर्ष राष्ट्रभाषा प्रचार समितिमें रन्नीको मध्यप्रदेशके मुख्य मन्त्री श्री रजिंदर शुक्लजी के शुभ हाथमें प्रमाण पत्र तथा अुपाधि-माल दिये गये । श्री शुक्लजी कुछ अस्वस्थ होनेपर भी आये और अुर्दाने जुम समय जो दीयात भाषण दिया जुममें अेन वडे महत्त्वे प्रश्नकी चर्चा की । अन्होंने राष्ट्रभाषाके प्रचारकोमें अपने ही बलपर अिन कार्यको आगे बढानेका अतुरोध किया । अन्होंने कहा सरकार भी कुछ करनी है, परन्तु वह जो करती है, वह अुम कार्यके प्रति महानुभूति तथा सहयोग देनेकी दृष्टिमें करती है । अर्थात् मुख्य कार्य तो सर्व-जनित सस्था तथा प्रचारकोको ही करना होगा ।

सर्वजनित सस्था तथा प्रचार भी तो यही चाहते हैं । वे राज्य सरकारों तथा केन्द्रीय सरकारोंसे अनेक कार्यमें सहानुभूति तथा सहयोग चाहते हैं और यही कारण है कि आज प्रचार-सम्मेलनों तथा अंशे ही दूसरे मन्त्रापर राजकीय नेताओंको देनेका प्रयास किया जाता है । स्-राज्य मित्रोंसे पहले अिन सस्थाओंमें तथा सर-वागी तन्त्रोंमें जो विरोध रहता था वह आज नहीं रहा अिसका निश्चित ज्ञान भी कार्य-कर्ताओंका जुत्मा बढानेके लिये पर्याप्त है । परन्तु राजकीय नेतागण कभी-कभी अंशे मंचोंपर

आवर रचनात्मक कार्य ही दृष्टिको गौण बनाकर राजनैतिक दृष्टिको ही प्रधानता देने लगते हैं, तब बड़े विपम परिस्थिति उपस्थित होती है। परन्तु आजके त्राति-कालम यह सब होगा ही। जिसे सहन करनेके सिवा दूसरा कोई चारा नहीं। परन्तु हम यह आशा अवश्य करे कि राजनैतिक षपनके नशा भी यह शीघ्र ही समझ जाये कि अिन कार्योसे अन्ततोगत्वा अुन्हीको बल मिलनेवाला है। रचनात्मक कार्यके द्वारा ही प्रजामें भावनाका, सगठनका तथा कार्यका बल आयेगा और बलवान प्रजाका नेतृत्व ही अुम्के नेताको गौरव प्रदान करेगा।

लिपि सुधारका महत्व :

निकट भविष्यमें ही लखनभूमि अुत्तर प्रदेशके मूर्य मन्त्री श्री पतञ्जिके द्वारा निमंत्रित लिपि-परिपद होने जा रही है। हम अिस परिपदका स्वागत करते हैं। नागरी लिपिमें जो कुछ सुधार करना आवश्यक हो अुसका अब निर्णय हो जाना चाहिये। वर्षोंसे अिस सम्बन्धमें चर्चा होती आयी है विचार-विनिमय तथा विवाद भी हुआ है, परन्तु अभीतक अंतिम निर्णय नहीं हो सका। अिस अनिश्चित दशाका अंत होना चाहिये।

अिम परिपदका ध्यान हम अब विशेष बानपर दिलाना चाहते हैं। 'अ' की बाराहखडी तथा अन्य कुछ सुधारोना प्रचलन देशमें हो चुका है। हिन्दीतर भाषो प्रातोम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति आदि जो सम्याअें काम कर रही हैं अुनमें अधिमानने लिखनेमें 'अ' की बाराहखडीको स्वीकार किया है। आज लाखों लोग अिस तरहकी लिपि लिखने तथा पढ़नेके आदी हो गये हैं। अनेक मस्याजोरा मारा प्रबानन भी अिसी लिपिमें होता है।

अिन सुधारोको जनताने अपनाया है। अत परिपद यदि अिन प्रचलित सुधारोके पत्रपत्रमें अपना निर्णय दे तो वह हितकर ही होगा।

शास्त्रीय या विज्ञानिक दृष्टिसे हम यहाँ अिसपर किसी प्रकारकी चर्चा करना नहीं चाहते। सुविधाकी दृष्टिसे अिसे हिन्दीतर भाषी प्रातोमें स्वीकार किया गया है और 'अि, अु' आदिको भी अिन स्वरोका चिन्ह मानकर चलानेसे अुममें फिरमे कोई आपत्ति नहीं रहनी चाहिये। परिपद यदि विकल्प रूपसे भी अिस पद्धतिका स्वीकार कर लेगी तो भी विरोधका कारण टल जायेगा और सबको सन्तोष होगा।

आशा है, परिपद अिसपर अवश्य सहानुभूतिपूर्वक विचार करेगी और हिन्दीतर भाषी प्रातोके निवासियोकी कठिनाअियोको ध्यानमें रखकर, अिस सुझावको मान्य करनेमें किसी प्रकारका विवाद न खडा करेगी।

प्राच्य विद्या परिपद :

प्राच्य विद्या परिपदका अहमदावादका अधिवेशन आतर-राष्ट्रीय स्यातिप्राप्त विद्वान श्री सुनीतिकुमार चाटुर्ज्वकी अध्यक्षपतामें सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। देशके कोने कोनेसे प्राच्य विद्यामें दिलचस्पी रखनेवाले प्रथम पक्तिवे विद्वान अुसमें अेकत्रित हुआ थे। अुसके साथ प्राचीन हस्तलिखित ग्रथोकी अेक प्रदर्शनी भी की गयी थी। प्रदर्शनीमें अधिवारा तो जैन ग्रथोकी पाण्डुलिपियां थी। फिर भी प्रदर्शनी दर्शनीय ही नहीं, अपयोगी भी थी। परिपदके विभिन्न विभागोंमें जो निबन्ध वाचन हुआ, वे भी अुम-अुम विभागके भारतीय विद्वानोंके अध्यायन तथा योग्यताके परिचायक थे। गुजरान प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी ओरसे परिपदके विद्वान प्रतिनिधियोका अेक प्रीति-

सम्मेलन आयोजित किया गया था। अिसमें राष्ट्रभापाके सम्बन्धमें जो विचार भिन्न-भिन्न भापा-भापी विद्वानों द्वारा व्यक्त किये गये वे सचमुच ही अुत्साहवर्धक थे। अेर दोको छोडकर सभी वस्ताओं हिन्दीमें ही अपन प्रिचार प्रगट किये। अुनका यह प्रयत्न अवश्य अभिनन्दनीय था।

परिपदके बारेमें अेक बात अवश्य खटकती रहेगी। परिपदमें निबन्धाेंने ठिअे तो हिन्दी भापाको स्वीकार कर लिया, परन्तु प्रयाग विश्वविद्यालयके सुप्रसिद्ध विद्वान डा० बाबूराम सक्सेनाका 'हिन्दी' को परिपदका अेक स्थायी-विभाग बनानेका प्रस्ताव काअुंसिलकी बैठकमें बहुमतसे अस्वीकृत रहा। अिम प्रस्तावका विरोध करनेवालोंका तर्क था, कि हिन्दी अभी राष्ट्रभापा बनी नहीं, जब वह राष्ट्रभापा बन जाअेगी तब अुसपर विचार करेंगे। अिस प्रकार तर्क करना क्या ठीक है? अिसका

जनता ही विचार करेगी। विधानमें तो हिन्दीको मधीय भापाका महत्त्व दिया जा चुका है। जनता भी अुसको अपनाती जा रही है और अनेक वर्षोंसे राष्ट्रभापाके रूपमें हजारों प्रचारक अुसका प्रचार करते आ रहे हैं। अंसी स्थितिमें यदि प्राच्य विद्या परिषद् श्री सक्सेनाजीका प्रस्ताव स्वीकार कर लेनी, तो अुससे राष्ट्रभापाके कार्यमें बहुत बल मिलता। परन्तु यह प्रस्ताव वहाँ स्वीकार नहीं कराया जा सका, अुसका कारण हिन्दीके विद्वानोंकी अुदासीनता है। प्रतीत होना है कि वे प्राच्य विद्याके क्षेत्रमें भी जंमी चाहिअे वंसी दिलचस्पी नहीं लेते। यदि वे यह अुदासीनता दूर कर सकें, तो आगामी अधिवेशनमें अिम प्रश्नको फिरसे लाया जा सकता है। परन्तु यह तभी हो सकेगा जब हिन्दीके विद्वानोंपर जो अेर बहुत बडी जवाबदेही है, अुमें वे समझे।

—मो० भ०

‘राष्ट्रभारती’ पर कृपा करनेवालोंसे निवेदन

‘राष्ट्रभारती’ राष्ट्रभापामें अपने ढंगकी निराली लोकप्रिय भारतीय साहित्यकी मासिक पत्रिका है, जिसपर कलोपासक श्रेष्ठ लेखकों, कहानीकारों और कवियोंकी विशेष समत्व-भरी कृपा रही है और अुनके सहयोगका हमें आश्वासन रूपों सम्बल मिला है। दिसपरका यह अक तीसरे वर्षका अन्तिम अंश है। अिम वर्ष (१९५३) में जिन महद्दय श्रमजीवी, अुशारमता महानुभावोंने अपनी कृतिधोसे राष्ट्रभारतीको अलंकृत किया, कृपादृष्टि रखकर हमें अुत्साहित करने अुअे अपना आदर और प्यार दिया, हम अुनके अत्यन्त आभारी हैं। हमारा हाथजोड निहोरा है अुनके प्रति कि ‘राष्ट्रभारती’ पर वे सदैव पूर्ववत् कृपा रखें।

हम कृतज्ञता पूर्वक अिम वर्षके अपने प्यारे सहयोगी लेखक-वन्धुजनोके नाम यहाँ प्रकाशित करते हैं —

सर्वथी प मासनशरजी चतुर्वेदी, विपतिमोहन सेन, मो अ बलाम आजाद, डॉ वियोगी हरिजी, डॉ अमरनाथ झा, आचार्य सिद्धेश्वर वर्मा, आचार्य चन्द्रबली पाडे, विजलाल रा भा ९

द्वियाणी, मामा बरेरकर, भदन्त आनन्द कौस-
ल्यायन, मन्मथनाथ गुप्त, महाराजकुमार डॉ
रघुवीर सिंह, डॉ रामकुमार वर्मा, जगदीशचन्द्र
भापुर जाजी सी अंस, रमाप्रसन्न नायक जाजी
सी अंस, महात्मा भगवानदीन, प्रो विनयमोहन
शर्मा, प्रो मोहनलाल बाजपेयी, प्रो प्रभाकर
भाचवे अंस अ, अद्ययशकर भट्ट, भवानीप्रसाद
तिवारी अंस अ, नीरज' अंस अ, विशोरीदास
बाजपेयी, भदन्त शान्ति त्रिक्व, शिवनाथ अंस
अ, प्रो रामपूजन तिवारी अंस अ, मोहनसिंह
सेगर, अमाशकर जोशी, राजेन्द्र यादव अंस अ,
गंगाप्रसाद पाडेय अंस अ, प्रो अचल, प्रो
राममूर्ति रेणु अंस अ, शंकरदेव विद्यालकार,
श्रीमती शान्ति अंस अ, श्रीमती विद्यावती मिश्र,
प्रो रजन अंस अ, जगदीशचन्द्र, कि रा,
पितरस, नज्मुद्दिना बेगम, कु मुवारकजहाँ,
अध्यापक जहूरखटा, ओमप्रकाश आर्य, श्रीमती
कमल आर्य बी अ, मुमताज अशरफ कादरी
अंस अ, 'लहरी' अंस अ, प्रो कन्हैयालाल सहल
अंस अ, प्रो रामचरण महेन्द्र अंस अ, प्रो
शम्भुप्रसाद बहुगुणा अंस अ, अमिताभ अंस अ,
रा वीलिनाथन, वीरेन्द्र त्रिपाठी, प्रो जगदीश-
प्रसाद व्यास अंस अ, प्रो म ना अदवन्त अंस
अ, प्रो य श गोडबोले, यशपालजी, डॉ
धर्मवीर भारती, हकीम अबदुलबागी, प राम-
नरेशजी त्रिपाठी, विष्णु प्रभाकर, लक्ष्मीशंकर
व्यास अंस अ, पा ग पेशपाडे, श्रीमती कमला
चौधरी, रा कृष्णमणि, रामरत्न वडोल अंस अ,
मुनि श्रीकान्तिसागरजी, आचार्य स ज भागवत,
डॉ हरदेव बाहरी अंस अ, प्रो हरिमोहन शा
अंस अ, श्रीमती सीता मिन्हा, भावन शरण
अपाज्याय अंस अ, प्राचार्य डॉ सोमनाथ गुप्त,
बेदारनाथ मिश्र 'प्रमान', लक्ष्मीकान्त वर्मा,
रत्नलाल वसन्त देवानी, गौरीशंकर जोगी, म
म भागवत, गुग्नाथ जोगी, 'त्रिक्व', नवेंबर

दयाल नक्सेना अंस अ, गिरिधर गोपाल अंस
अ, गोपाल शर्मा अंस अ, हर्षनाथ, कु लक्ष्मी
कृष्णन, ललित महगल, गंगाधर गाडगीळ
अनिलकुमार सा र, वैकुण्ठनाथ मेहरोत्रा अंस
अ, श्रीपरशुराम, महेशकुमार मूषडा, श्रीमती
गुहप्रियं, श्रीमती मरस्वती राधनाथन, लोकनक्षु,
डॉ अ स अस्तेकर, प्रेमकपूर कचन, मुजानसिंह,
अ न कृष्णराव, राजकुमारसिंह कुमार, श्रीमती
माया गुप्त, देवराज दिनेश, जनार्दन मुक्तिदून,
प्रभातशास्त्री माहित्याचार्य, वृन्दावन नामदेव,
बालमुकुन्द मिश्र, कृष्णलाल टी जेतली, प्रो
महेन्द्र भटनागर, नीलमणि पूजन, प्रा विन्वनाथ
सत्पनारायण, श्रीनाडोडी, अमरेन्द्र, चावटि म्
ना मूर्ति बी अं सा र, देवदत्त विशार्षी,
राजेन्द्रप्रसाद भट्ट बी अं अलबेल बी, कु
मोहिनी शर्मा अंस अ मा र, महेन्द्रराज अंस
अं सा र, प्रताप विद्यालकार, प्रो आवेकर,
प्रो न चि जोगलेकर, जगदीशचन्द्र मिन्हा,
नन्दकुमार पाठक, गोपालकृष्ण कौल, रामगोपाल-
सिंह चौहान, कुमुभाकर दीक्षित, परदेगी सा
र, आसाराम वर्माना र, 'नीमु', प्रो कृष्णचंद्र
गुप्त, प्रो हिरण्मय अंस अं सा र, आनन्द-
चन्द्र, वसुध्यान 'जनल', राधप्रोल् मुचरराव, यदु-
नाथ धत्ते, धनश्याम भेटो, श्रीराम शर्मा 'राम',
मो र करदीकर, आरतीप्रसाद सिंह, रतनलाल
कमल, प्रो के अंस चिदम्बरम भारद्वाज अंस
अं, सचचत्र अचन्धी, अरविन्द जोगी, मनोहर
देशपाडे, अनुसूयाप्रसाद पाठक, जिनैन्द्रचन्द्र
चौधरी, रजन परमार, परसिंह शर्मा 'कमलेश'
अंस अं सा र, प्रो वैकारामप्पा, श्रीमती
राजशंक्पी राधवन, अहमदयूसुफ बद्र, जिब्राहीम
अली बदवी, औशनारायण जोगी, प्रो हर्गिमोहन
शा ।

श्रद्धेया टण्डनजीकी थैली

अ भा राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मन्वये पाँचवे अधिवेशन नागपुरम निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुआ है —

“यह सम्मेलन निश्चय करता है कि हिन्दी के प्राणश्रद्धेय श्री पुरपोत्तमदासजी टण्डनकी अनुकी हिन्दीकी अमूल्य सेवाओके प्रति श्रद्धा व्यक्त करनके लिअे अक अच्छी निधि अकत्रित की जाअे, और अुचित समयपर अुन्हे वह मर्मापित की जाअे।”

प्रचारक तथा केन्द्र-व्यवस्थापकान मिलकर जो यह प्रस्ताव किया है अुसकी जवाबदही वे समझते ही होंगे। अुनका अब यह कर्तव्य है कि अिस थैलीके लिअे जितना भी हो सन, धन गीघ अिनट्टा कर। यह कोअी कठिन बात भी नहीं है। पुराने तथा नये परीक्षार्थियानक पहुँचनेका ही सवाअ है। राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी परीक्षार्थिओमे लाभ अुठानेवालोकी सग्या लाखोकी है। यदि वे आठ आना मात्र भी अिस थैलीके लिअे दें, तो भी लायोकी रकम अिकट्ठी हो जाअेगी। प्रचारक केन्द्र व्यवस्थापक तथा अन्य राष्ट्रभाषा-प्रेमियोका भी तो कुछ हिस्सा अिस रकममें रहेगा। अिस प्रकार यह थैली अच्छी खानी बडी हो सकती है।

श्री टण्डनजीके सम्बन्धम यहाँ कुछ कहना मुझे आवश्यक प्रतीत नहीं होता। राष्ट्रभाषा हिन्दीका विकास, प्रचार आदि प्रवृत्तियोके वे प्राण हैं और भारतीय सविधानमें हिन्दीको राजभाषाका जो स्थान प्राप्त हुआ है, वह भी अधिकाशमे आपहीके प्रयत्नोका परिणाम है।

श्री टण्डनजी हिन्दीके कार्यको अपना जीवन-कार्य मानते हैं और राजनैतिक क्पेत्रमे अुनका बहुत अूँचा स्थान होनेपर भी, वे अपने राजनैतिक कार्यको हिन्दीके कार्यकी तुलनामें गौण स्थान देते हैं। गत चुनावके समय अुन्होंने ‘पार्लामेण्ट’ (संसद) में जानेका निश्चय किया, अुस समय भी हिन्दीका कार्य ही अुनकी दृष्टिके समकक्ष मुख्य कार्य था। श्री टण्डनजीको थैली अंपण करनेसे राष्ट्रभाषा हिन्दीके कार्यकी ही सेवा होगी। सब केन्द्र-व्यवस्थापक तथा प्रचारकोसे हम अिस कार्यम सम्पूर्ण सहयोग तथा प्रयत्नकी आशा रखते हैं। अिम थैलीके लिअे हम धनिकोंके पास जाना पसद नहीं करगे। हमारे प्रचारक, केन्द्रव्यवस्थापक तथा परीक्षार्थियो द्वारा श्रद्धापूर्वक जो भी दिया जाअे अुसीको हम श्री टण्डनजीकी सेवामें अंपण करेगे। अिमलिअे जो रकम वे अेकत्र कर सकें, मन्त्री, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्षाके पाम “टण्डनजीकी थैलीके लिअे” अिस प्रकार लिखकर मनिआर्डर या चेकके द्वारा भेज दें। जो प्रचारक तथा केन्द्र-व्यवस्थापक विशेष रूपसे प्रयत्न करके अिम थैलीके लिअे धन अेकत्र करना चाहेगे अुन्हे लिखनेपर यहाँसे रसीद बुको भेज दी जाअेगी। अिम थैलीके लिअे जो धन प्राप्त होगा वह ‘राष्ट्रभाषा’ पत्रमें नमन प्रकाशित किया जाअेगा।

मोहनलाल भट्ट,

मन्त्री,

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्षा.

नयी धारा

याद रखिये पत्रिकाके लिये

१ अरु निदिचित अुद्देश्य चाहिये ।

२ अुसका अपना व्यक्तित्व चाहिये !

नयी धारा अंनो ही अक मासिक पत्रिका है ।

नयी धाराके पुराने प्राप्य अक आधी
कीमतमें प्राप्त होंगे। पोस्टेज फ्री। रगमच अककी
थोड़ीसी प्रतिपां शेष है । प्राहक शोप्रता करें ।

डिमाजी आठ पेजीके १०० पृष्ठ, पन्की
जिल्द. आन्पक कवर, सचिव, सुसज्जित।

अेरु अंक १) रु.] [वार्षिक १०) रु.

पता — प्रबधक, नयी धारा, अशोक प्रेत, पटना ६

'मिघडूत' के महत्वपूर्ण प्रकाशनके बाद
'प्रेरणा' का छठा-सातवाँ अंक

: प्रेमचन्दके पात्र :

विशेषांक होगा

★ अिन अकमें प्रेमचन्दके अुपन्यासों
ओर कहानियोंके सभी महत्वपूर्ण
पात्रोंपर अधिकारपूर्ण लेख होंगे।

★ विशेषांकका मूल्य लगभग ४) होगा।

★ प्रेरणाके स्थायी ग्राहकोंके लिये वही
मूल्य रहेगा। अग्रिम आर्डर भेजिये।

शीघ्र ही वार्षिक ग्राहक बनकर अिम
सुविधाका लाभ अुठावें। वा. १४) रु.

सम्पादक : कोमल कोठारी,
मोजनीगेट, जोधपुर (राजस्थान)

रानी

आपके मनोरंजनके लिये

नाना प्रकारक सचित्र लेख, कहानियां,
छाया-काव्य और आलाचनाअें आदि-आदि।
बंदमें होलिकाक ओर दीपावली-अक मुपन।

रानोका वार्षिक चढा केवल चार रुपये
है। रातो १५ वर्षसे हिन्दी पाठकोंको निरन्तर
नवीन पाठ्य-सामग्री देती आ रही है।

"रानी" कार्यालय,

१२१ चित्तरंजन जेविन्पू,

कलकत्ता ७

गुजराती भाषाका निराना साप्ताहिक-पत्र

निर्माण

[सम्पादक : हरिलाल पट्टा]

समस्त भारतकी संवर्धनक, साहित्यिक
ओर प्रजाजीवनक नव-निर्माणकी प्रवृत्तियोंका
ज्यातिधर ।

निर्माणमें आप देखेंगे :—

आनंद, अुम्माह ओर चेतनाप्रद लेख, कहानियां
अेवम् अपन हा टाणे चुने हूअे समाचार । राष्ट्र-
भाषाम सन्वर्धन नमी प्रवृत्तियोंका विवरण ओर
विनी नी बादम परे रहकर तन्म्य ओर स्पष्ट
मनम्य प्रबट करना निनावा ध्येय है ।

विज्ञापनका अत्युत्तम साधन ।

आज ही पत्र लिखकर सम्नाय प्रति भगवांजने ।

वार्षिक मूल्य ५) 'निर्माण' कार्यालय
दुः माहीं ३) स्वस्तिन मिन्टरी,
अेर प्रति दो आना धमंड मा,
राजकोट (जोगाट)

साहित्यिक त्रैमासिक-पत्रिका

“राष्ट्रवीणा”

संपादक - जेठालाल जोषी

विद्वानासे प्रगमा प्राप्त राष्ट्रवीणामें—

विद्वानोके चिंतनप्रधान लेख अथ गुजरातीके साहित्यिक साम्प्रतिक, कला विषयक लेख, कविनायक प्रवास वर्णन परावसाययोगी लेख गुजराती मराठी, बंगाली तथा हिन्दीकी समानार्थी गद्यावली आदि सामग्री चयनित्वा संहृति स्वरूप साहित्य समीक्षया गुजरात सोराष्ट्र और बच्छके राष्ट्रभाषा प्रचार समाचार आदि कबो म्थभ प्रकाशित होते है ।

वार्षिक मूल्य ४) अंक प्रति १)

वर्षा समितिके सक्रिय प्रचारको और केन्द्र व्यवस्थापकोंको परिष्कार आद्ये मूल्यमें भजो जाती है ।

— व्यवस्थापक राष्ट्रवीणा

गुजरात प्रा रा सा प्र सांमिति काठूपुर,
सजुराकी पोल्, अहमदाबाद ।

महाराष्ट्र रा.भा प्रचार समिति, पुणेके तत्वावधानमें राष्ट्रभाषा प्रचारकों अर्थ परीक्षार्थियोंके सुपयोगकी हिन्दीकी अभिनव साहित्यिक मासिक पत्रिका

“जयभारती”

सम्पादक अथै प्रकाशक.—श्री प. सु. डांगरे

प्रारम्भिक लेखर अथै परीक्षयागतवकी परीक्षयोग्यागी मामग्री, साहित्य, परंपरा संहृति विषयक लेख, रक्षा समाधान, साहित्य परिचय, मध्यकाल, हिन्दा जगन्, परीक्षया विषयक मूल्यांश, आवस्यक जानकारी, कहीपर कौन क्या पदे ? आदि नाविन्यपूर्ण अथै समयोचित रचनाया अथै विवेचनाप्रति भरपूर ।

मनीआडरेसे वार्षिक मूल्य १) अंक १/२) अथै मित्रराशर शीघ्र प्राहक वन जाजिये ।

पता - ८६६ मदागिब, पो बा न ५५८, पुणे २.

जल्दी ही आर्डर दीजिये

राष्ट्रभाषा-डायरी

१९५४

असतमें राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी परीक्षया आदि प्रवृत्तियोंके सम्बन्धमें विभिन्न जातकारियोंके साथ दैनिक व्यवहारमें मानेवाली सुपयोगी वार्त्त संप्रहीत है ।

राष्ट्रभाषा प्रेमी प्रचारक वर्ग, छात्र वर्ग तथा सभी कोटिके लोकोके लिअे यह डायरी ब्रह्म ही सुपयोगी होगी ।

सुन्दर बाणक, आकर्षक छयाओ तथा कपडेकी पक्की त्रिन्द ।

साक्षिज—४' + ६१”

लागत मूल्य—१) अंक ४/२) अथै अल्प ।

प्रकाशक—राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

पुस्तक-परिचय

अुत्कल साहित्य और साहित्यिकते परिचय प्राप्त करना चाहत है तो निम्नलिखित पुस्तके पडिये—

१-प्रतिभा-लेखक डा धी हरेकृष्ण महताब । प्रतिभा जो अुत्कल विरवाविद्यालयकी वी अे परीक्षयागत पाठ्यक्रममें है अुत्कल यह हिन्दी अनुवाद है ।

२-अुत्कल मणि पं० गोपबन्धु दास-प० गोपबन्धु दासकी जीवनी है । मूल अुत्कल नापाक लेखक प. तिमिरान मिथ अेम पी है ।

३-धर्मपद-प अुत्कलमणि गोपबन्धु दास द्वारा लिखित अुत्कल भाषाका सङ्घ-काव्य है ।

४-अुत्कल साहित्यकी श्रेष्ठ कहानियाँ-अियमें अुत्कल भागक प्रसिद्ध आठ लेखकोंकी कहानियाँ संप्रहीत हैं ।

५-राष्ट्रभाषा बन्धु और राष्ट्रभाषा सुरोधिनी-अुत्कल भाषा नीवनेमें सहायक

६-क्या यह सुनी कहानी-लेखक प. रामेशर दयालजी दुबे हैं ।

प्रकाशक—अुत्कल शान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, कटक-१

हिन्दीका स्वस्थ, सात्विक अथ सस्ता मासिक पत्र

‘जीवन-साहित्य’

घाघरक शुरुक केजत थ)

चाह तो पहल अक काड भजकर नमूना मगाकर दख ल ।

जुलाभी ओर जनररीसे ग्राहक बनाये जाते है ।

पता:-- सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली

नव निर्माण

[सम्पादक - नेमिप द जन भायुक]

+ साहित्य शिक्षा संस्कृति और कलाका संगम + राजनीति विज्ञान + तारोको छायाम
+ चना ओर गरम + अमनके आलोकम + आप भी कहें हम भी कहे + कमीटोपर + य फल
भरे हीरे आदि स्वायो स्तभोये घक्त अपनी ही विशेषताओसे प्ररित प्रभावित नयो पीढीका
सचित्र समासिक अक प्रति १) विनापान यवन वा ९)

कुमार साहित्य परिषद, जोधपुर

विशेष - मास अककी प्रतिपा अत्राय जूनकी प्राप्य । निशक प्रति भजनम अममथ

मद्राय त ग पत्राव मररार द्वारा

समस्त शिक्षा संस्थाओके लिअ स्थापित

देशवधु पुस्तकालय मद्राका प्रथम साहित्यिक
मासिक पत्र

देशकन्धु

प्रधान स दृष्टान्त त घाजपेयी अम अ

सम्पादक ज्यो० राधेश्याम छिपेदी

स सम्पादक वैजनाथ दाणा

वार्षिक मूल्य थ) * अक प्राण १-)

दशव तु अगस्त ५३ से अपने द्वितीय वषरं

प्रवेश कर चुका है अिसरी खुरीम ३० नितम्बर

तक फवल ३) १० में वार्षिक ग्राहक बनाये जा

रहे हैं और अुसका प्रथम अक व्रज संस्कृति

अक निकल रहा है जो मद्राख वस्तु होगी ।

पत्र बिक्री [भिज-सी] तथा विनापनक लिअ

आज ही लिपिये ।

पता—व्यवस्थापक, “देशकन्धु”

मथुरा (यू० पी०)

सुन्दर टाजिप और घाडर

अिम कारखानक सुंदर और मज

बूत टाजिपका अनव छाखानवाठे पसद

करते ह । हमारे यहाँ अग्रजी मराठी

गजराती तथा कानडी टाजिप और जनव

प्रकारके वाडर तथा अिठेक्टो क्लास हमेगा

तयार मिन्त ह ।

असी प्रकार हमारे यहाँ मोनो सुपर

कास्टरसे तयार किय हुआ १२ पाअिन्

हिदा और मराठी टाजिप भी तयार ह ।

केटलाग जरूर मंगाव ।

पता—मैनेनर, निर्णय सागर प्रेम,

बम्बयी न० ०

हमारे सुविख्यात प्रकाशन

स्वामी विवेकानन्दजीकी सुप्रसिद्ध पुस्तकें

भारतमें विवेकानन्द-जैके सहित, सचिव ५) "आजकी परिस्थितिके अनुसृत गण्टु निर्माण सबरी देश श्रेष्ठ ठोस विचारोंमें भरे, स्वामीजी द्वारा भारतमें दिचे गये भावयुक्त स्फूर्तिप्रद भाषण ।"

विवेकानन्दजीके सगमें-आवर्षिक जैकेतसह, ५) "स्वामीजीके आध्यात्मिक राष्ट्रीय बन्धविपणन तथा भक्ति नवधर्म नभाषणोका रोचक, महान् शिक्षाप्रद तथा पदप्रदर्शक सग्रह ।"

पत्राबली-दो भागोंमें, प्रत्येक भागका मू० २०) "स्वामीजीके शक्ति सम्पन्न पत्रोंका मकलन ।"

देववाणी-सचित्र, २०) "अमृतनुत्प, आध्यात्मिक अन्नश्रेष्ठोंपासे भरे हुए अुपदेश ।" शक्तिदायी विचार (१०), भागनीय नारी (११) आबहारिक जीवनमें देवता (१२), मेरे गुरुदेव (१३), विवेकानन्दजीकी कथामें (१४), कवितावली (१५)

गौनातत्व-दामो विवेकानन्दजीके गुरुभाषी स्वामी शारदानन्द कृत, सुन्दर जैकेत सहित, २५)

विवेकानन्द-चरित-हिन्दुओंमें स्वामीजीकी अन्त-मात्र प्रामाणिक विस्तृत जीवनी, आवर्षिक जैकेत ६)

विस्तृत सूचीपत्रके लिके लिखिये श्रीरामकृष्ण आश्रम, घन्तोली, (रा.) नागपुर-१, (म० ५०)

धोरामकृष्णलोलामुन-विस्तृत जीवनी, दो भागोंमें, महात्मा गांधीकी भूमिका सहित, प्रत्येक का ५)

धोरामकृष्णवचनानु-तीन भागोंमें, ननारकी प्राय सभी प्रमुख भाषाओंमें प्रकाशित, संचिन्द, जैकेत सहित, प्र.मा ६), दि.मा. ६), त.मा ७)

स्वामीजीकी लोकप्रिय पुस्तकें

नये प्रकाशन-जाति, सृष्टि और समाजवाद १), चिन्तनीय बातें १), विविध प्रश्न १=)

योग पर-ज्ञानयोग २); नक्तियोग १(=); राजयोग १(=), ज्ञानयोग १(=); प्रेमयोग १(=);

हिन्दू धर्म संबंधी-हिन्दू धर्म १(१); धर्मरहस्य १), धर्मविज्ञान १(१); हिन्दू धर्मके पन्थमें १(२);

शिकामो वक्तृता १(२), अज्ञानानुभूति तथा अुपके मार्ग १)

भारत पर-हजार नारत १), वर्तमान नारत १); स्वाधीन नारत जब हो १(=); प्राल्च और

पापसाय १)

आलोचनाके तृतीय वर्षका पहला अंक

"आलोचना अंक"

के नामने लगनग २५० पृष्ठोंका विशेष अंक होगा । जिस अंकका मूल्य ५) मात्र होगा, लेकिन वार्षिक ग्राहकोंको यह अंक साधारण मूल्यमें ही मिलेगा ।

सम्पादक-समिति:- डा० धर्मवीर भारती, डा० रघुवंश, डा० दशरथ वर्मा, श्री विजयदेव नारायण साही । मरफारो सम्पादक श्री श्यमचन्द्र मुनन ।

या० मू० १२) मात्र मनीभांडर द्वारा भेजिये

प्रकाशक:- राजकमल प्रकाशन,

१ कैज बाजार, दिल्ली

❀ सुपमा ❀

सम्पादक : कुंडलराय मोहेकर

या मासिकाची वैशिष्ट्ये—

★ सुन्दर लघुकथा. ★ नानाविध लेखकाचे लिखाण. ★ जीवन, कला, साहित्य इत्यादि विषयांवर अुपयुक्त मजकूर. ★ या निवाय चेतोहारी चित्र.

निर्णमित वाचप्यासाठी आशुच दगंगी पाठवून आहक होणे फावद्याचें आहे.

वार्षिक वर्गणी ६ रुपये.

किरकोठे अंकाम आठ आणे.

मुयमा पताग बिर्लाबा, परमनेट, नागपुर (म ५)

राष्ट्रभारती-विज्ञापक दर

साधारण पृष्ठ	पूरा -- ४०)	प्रतिवार
"	आधा -- २५)	,
द्वितीय कवर पृष्ठ	पूरा -- १००)	,
"	आधा -- ५५)	"
तृतीय कवर पृष्ठ	पूरा -- ८०)	,
	आधा -- ४५)	"
चतुर्थ कवर पृष्ठ	पूरा -- १२०)	"
	आधा -- ७०)	

राष्ट्रभारतीकी माञ्जिज— ९" x ७'

छप पृष्ठकी माञ्जिज— ८" x ५'

तीनसे अधिक बार विज्ञापन देनेवालोंको सुविधा दी जायेगी।

'राष्ट्रभारती' में अपने व्यापारका विज्ञापन देकर लाभ
 उठाजिअे। क्योंकि यह रुस्मीसै लेखर रामेश्वरकर
 और जगन्नाथपुरीसे द्वारकापुरीतक
 हजारों पाठकोंके हाथोंमें पहुँचती है।

★

राष्ट्रभारती-ओजेन्सी

- १ प्रथमाम कम स कम पाच प्रतिवर्षा लेनपर ही अजन्सी दी जायेगी।
- २ पाँच प्रतिवर्षा लेनपर २०) प्रतिशत कमीशन दिया जाअगा।
- ३ छहमे अधिक प्रतिवर्षा लेनपर २५) प्रतिशत कमीशन दिया जाअगा।
- ४ पाँचमे अधिक शहक बना देनवालोको भी विशय सुविधा दी जाअगी।

त्रिशेव जानकारीके लिअे आज ही लिखिअे —

श्री प्रबन्धक, "राष्ट्रभारती" पो० हिन्दीनगर (वर्धा, म. प्र.)

मधु शर्मा



जनवरी १९५४

[सूचना:— राष्ट्रभारती राष्ट्रयुक्त शिक्षण-विभागों द्वारा स्कूलों, कालेजों और वाचनालयों के लिये स्वोद्धृत है। अिस अंकके साथ 'राष्ट्रभारती' का चौथा वर्ष आरम्भ हो रहा है। राष्ट्रभारती समग्र भारतीय— अन्तर-प्रान्तीय साहित्यका प्रतिनिधित्व करती है। अिसमें हिन्दीकी भासिक पत्रिकाओंमें अपना अेक प्रतिष्ठित वेध महत्वका स्थान बना लिया है। प्रेमी पाठकोंसे हमारा निवेदन है कि आप अेक नया प्राहक बनाकर अिस पत्रिकाकी प्राहक सख्यामें वृद्धि करें और अपनी राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके अुत्साहकों और भी बढाअें। 'विद्यारथ' और राष्ट्रभाषा-रत्न परोक्षधोपयोगी अुच्च आलोचनात्मक-परिचयात्मक लेख भी प्रतिमास अिसमें छपेंगे। हृषया राष्ट्रभाषा-प्रसारमें समितिका हाथ बंटाअिये।

—मो० भ०, प्रधान-मंत्री रा. भा. प्र. स. वर्धा]

—:विषय-सूची:—

१. लेख :	लेखक	पृ० सं०
१ सन्तवाणी	श्री मत दाहू	१
२ आचार्य शान्तिदेवके स्वार्थ और परमार्थपर विचार ..	श्री गान्धि भिवरु	५
३ भोगामां (पान्थका अेक महान् कहानीकार) ...	श्री परदेशी	१६
४ आधुनिक तेलगु काव्यकी प्रवृत्तियां ..	श्री वारणासि राममूर्ति 'रेणु'	२२
५ ध्येयवादी (मराठी)	{ श्री ग ध्य माहखोलकर अनु०—श्री वसु व्यान 'अनल'	२८
६ गोडोंका अितिहास	श्री प्रभाकर माववे	३०
७. 'गीता'की वैज्ञानिक दृष्टि और वैज्ञानिक ...	श्री कन्देयालाल महल	३४
८ अुपन्यास मग्नाट शरद वावूके जीवनका सलक	{ स्व० श्री यूसुफ मेहरजत्री अनु०—श्री गौरीशंकर जोगी	४२
९. हिं दी साहित्यके आदि कालका नामकरण ...	श्री महेंद्र 'राजा'	४६
१० अमम प्रदण और अुमकी भाषा ...	श्री महेशकुमार मूंधडा	४९
११ बुन्देलखण्डी लोखगीतामें धृगार-मुपमा ...	श्री कालिकाप्रसाद दीनपत 'कुमुमाकर'	५३
२. कहानी :		
१ ज्वार भाटेके शिवावमें (वमला) ...	{ श्री प्रबोधकुमार मजुमदार अनु०—श्रीमती माया गुल	८
२ घरतीका बंटा ...	श्री नन्दकुमार पाठक	३७
३. कविता :		
१ भारती ...	श्री माखनदाठ चतुर्वेदी 'भारतीय आत्मा'	२
२ गीत ...	श्री 'नीरज'	३१
४. मम्पादकके नाम अेक पत्र : ...	श्री पद्मलाल वर्मा	५९
५. देयनागर :		
मारम्बत घमं (गुजराती)	{ श्री अुमार्गंकर जोगी	६०
मारम्बतीके अुपामकाका घमं (हिं दी)	अनु०—गौरीशंकर जोगी	
६. साहित्यालोचन : ...	श्री रा० दुबे और श्री अजान मधु	६३
७. मम्पादकीय	६७

वार्षिक चन्द्रा ६) मनीआइरमे : अर्धवार्षिक ३॥) : : अेक अंरका मूल्य १० आना

पता:—राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर, वर्धा (म० प्र०)

संस्कृत-भारत

[भारतीय साहित्य और सङ्कृतिकी मासिक पत्रिका]

— सम्पादक —

मोहनलाल भट्ट हृषीकेश शर्मा



* वर्ष ४ *

वर्षा, जनवरी १९७४

* अंक १ *

सुन्त-बाणी

दादू' ये सब किसके पन्थमें धरती अरु आसमान,
पानी पवन दिन रातका चन्द सूर रहिमान ।
ब्रह्मा विष्णु महेशको कौन पन्थ गुरुदेव
साथी मिरजनहार तूं कहिअे अलख अभेय ।
महमद किसके दीनम, जवराअिल किस राह ?
अिनके मुसंद पीरको कहिअ अक अलाह ।
'दादू' य सब किमके ह वं रहे यहु मेरे मन माहि,
अलख अिठाही जगद्गुरु दूजा कोअी नाहि ।

हे दयामय, तुम्हीं बताओ यह धरती और यह आकाश, यह हवा और यह पानी, ये दिन और ये रातें, यह चाँद और यह सूरज ये सब किस पन्थ, किस सम्प्रदायके माननेवाले ह ? ब्रह्मा विष्णु और शिवके नामसे अगर पन्थ खड़े हो सकते हो, तो बताओ गुरुदेव ! ये सुब किस पन्थके माननेवाले हैं ? तुम स्वामी हो । तुम सहजकर्ता हो । तुम अलख हो । तुम भद और ज्ञानके अतीत हो, तुम्हो भित्तिका अंतर दे सकते हो । हे अक अलाह तुम्हींसे पूछता हूँ बताओ तो भला भुहम्मदका मजहब क्या था ? जिब्राअिलका पन्थ कौनसा था, अिनके मुशिद और पीर कौन थे ? ये सब किसके सम्प्रदायमें थ, किसकी सम्पत्ति थे ? यह प्रश्न निरन्तर मेरे मनमें अठता रहता हूँ वह अलख अिलाही ही अकमात्र जगद्गुरु ह समारमें दूसरा कोअी नहीं ।



भारती

: श्री माखनलाल चतुर्वेदी :

रविकी प्रथम किरण शिर धरकर निमित्तिके अभिपेक !

हिम शिखरो अँचा अठ्ठनेको ओ चमकीली साध !
घोते चरण, निछावर होते तृपितोकी सुन टेक,
अुतर अुतर गगा जमुना बनते मीठे अपराध !

धूल-कणोसे अुठनी है तू हरित प्राणकी सेज,
वृक्षपोसे विद्रोही अुठते धूल-कणोके तेज !

पग-पग, मग-मग डोल रही तू, तुझपर शत शिर डोल,
माँग रहा भू-दान, मुसाफिर लाँघ रहा भूगोल !

चरण चल रहे भूमिपृष्ठपर रच दो शिथिला रेखा,
नियति लिख रही अुस रेखापर कोटि भाग्यका लेखा !

ओ वन्या, ओ प्रतिभा धन्या, विधि कन्या री अल्प,
दिल्लीके सिंहासनपर शोभित तेरा सकल्प !

देवि, वगके शूलीपर चढते शीशोके दान,
सिद्ध करो स्वातन्त्र्य आ गया वन प्रभुका वरदान !

हिमका मुकुट पहिन लो, लो गगा जमुनाका हार.
करनफूल काश्मीर और नेपाल प्रलय शृगार !

तेरे तार-तारपर गूँजे वह निनाद वह वोल,
करनफूल हिल अुठें न जानें पर मोतीका मोल !

अुत्तरका वासी दक्षिणपर दक्षिण अुत्तर-वासी,
मीनाक्षपी पडरपुर श्र्यवक चल अुठ पूजें वासी !

जो कुछ पाया अुसपर गवित है न तरुणकी साँम,
ठडे जीनेपर न भरोमा करता है विद्वास !

कोटि-कोटि हृदयोमें धमनी घडक रही है जानो,
धमनीमें युग प्रलय गल रहे है अिसको पहचानो !

अेक हाथ अपनी घड़कनपर, अेव हाथ युगकी छातीपर,
बल्याणी, रखकर देखो अगुली जगती दीपक वानीपर !

फिर वो लो, क्या अिस जमीनपर मंडराता आदित्य वही है ?
जग-जगमें जो व्याप रहा है क्या तेरा साहित्य वही है ?

फिर कयो विज्ञक रही हो अगुलि निर्देशो फीलाद गलाते !
फिर कयो विता रही हो जीवन गीत वदनाओके गाते !

कृष्ण, बुद्ध, श्रीसा, गान्धीको तुमने पृथ्वीका वर गाया ।
जो विद्रोही हुआ असीको तुमने भी श्रीश्वर बतलाया ।

फिर कयो चाहे, आश्रय नन हो कविता बनी सिसवन निकली ?
फिर कयो वीणा हुआ कुठिता फिर कयो वाणी विकने निकली ?

'वर'-सी अुठी, हिमाचल शिखरो चमकी, देवोने यश गाया,
बनी 'महावर'-सी चरणोम, गगा बन भू-तल हरियाया ।

हृदय-हृदयमें अुतर न पाओ, अिस बिहारको हार कहूँ क्या ?
सृजनहीन कोमलताको कोमलताका सहार कहूँ क्या ?

भावोका जिनको अजीर्ण है अुनमें खेल न खेलो रानी !
भावोके भूखे शत-शत है, अुन्ह न दूर ढकेलो रानी !

जलकी हो श्रमजल्की हो, शिव तो है जिसके सिर गगा,
बाली गौरी शिवा पार्वती अुसकी है जो है अघनगा ।

महलोम भर स्वांग नृत्यकी ध्वनियाँ भर मत गूँथो बानी,
टिमकीपर डफपर, ताडवपर, चरण जमाओ लिखो कहानी ।

तरलोन्मादमयी, मनमोहनि विश्वभरी मनोरथधामा,
वशी, वीणा, धन्य प्रवीणा नृत्य गान वादन अभिरामा !

पानीपर मत खीचो रेखा, खिच खिच वे बहती जाअेंगी !
हिम शैलोपर गीत न लिक्की नश्वर वे बहती जाअेंगी !

अमर रहे युग मस्तक डोलें, तो समझो मेरी कल्याणी,
चट्टानोंमें फीलासोको तोड-भरोडकर लिखो कहानी !

बादलमें, गगा जमुनामें सागरमें रहने दो पानी,
पर तलवारोके पानीको भूलो नही वेदकी वाणी—

जिनने रसकस तुझको सौपा, जिनका कौशल तुझको भाया,
नर्तक, गायक, चित्रक, मूर्तिक, चितक—यह सब तेरी माया !

जिनने श्रमवण सौप भारती भारतनन्दनको लहराया,
प्राणोपर दे प्राण कि जिसने सपहृगिरीको धन्य बनाया !

क्यो तेरी रगोमें रगिणी अुनका रक्न नही भर आता ?

क्यो तेरी वीणापर मानिनि अुनके राग न कोओ गाता ?

तरलाओका परम देवता जल हूँ, मधुर अश्रु प्यारे हूँ !

पर मिठासमें रक्नदान क्यो वहती हो अिनसे न्यारे हूँ ?

चली योजनो डग-डग, पग-पग पागल भूमिदानकी तोली,

करुणामयी न तूने अुनपर अभीतलक वाचा भी खोली !

रथ दौड़े, जलस्थ दौड़े, ले देख हवापर भी रथ दौड़े !

वाल्मीकि, तुलसी, मोरेस्वर सब पुष्पक वणनको दौड़े !

निज ढीली चरणावलियोपर मत भूलो चमकीली सूली !

मत कहलाओ सिन्धु चीरते नभ कपित करतोको भूली !

तुलसी रगे रामके रगसे, मूर श्यामने रिस-हँस बोले !

खुद अपने ही को दुलराकर हम जैसे कोओ कव बोले ?

नारी गयी कि प्राण चल दिये, माना किन्तु रसोकी रामा-

माता वहिन बेटियाँ भी तो नारी ही होगी अभिरामा !

वेणी खोल बेशियाकी सब भूमि भाग वालाओं धार्यो,

तेरा माखन-चोर जगा दे री भारती असोदा माओ !

बलिपर, कृतिपर, रसपर, छविपर जितनी दूर नजर जाओगी

चारण-युग अुन्चारण युगको सिंहासन दे पछताओगी !

वशीको ओठो रख, स्वरको जीपरसे भूपर आने दो !

हे प्रकाशमुखि, छाया पीछे-पीछे ही शोभा पाओगी !

सजग विश्व जनगण मुनता हूँ, जगके स्वरपर म्बर दो रानी !

छा जाओ भारती जगतपर, प्रतिभामयी देशकी वाणी !

अुठो देवि, बल्पाणवन्दिता शस्त्रशास्त्र पूजिता अुठो तुम !

गिरिवन निर्जन प्रलय प्रभजन रसवती जूझिता अुठो तुम !

चढा कुमारीके तूँवेपर तार खूँटियाँ हिमगिरिपर दे,

गाओ भैरव राग सृजनकी विश्ववन्द्य वृजिता अुठो तुम !

आचार्य शान्तिदेवके स्वार्थ और परमार्थपर विचार*

श्री शान्ति भिक्षु :

ऐक्य बान मेरे मनमें घूमा करती है, वह यह कि आदिम मानवसे उत्पन्न आनन्दरत्न मुमस्कृत मानव अथ और स्वार्थसिद्धिने त्रिभे अचिन ऐक्य अनुचिन मय कुठ करता है और दूसरी ओर यह परमार्थकी बात ही नहीं करना, पर परमार्थके नामपर दुनियाको ऐक्य पोषीवाना ही बना डालना चाहता है। वसी-वसी वह परमार्थके नामपर कुठ भी कर डालना है या करना अवका करवाना चाहता है, जो परमार्थकी परिभाषामे कौमो दूर होता है।

ऐक्य दिन ऐक्य घामिक-ग्रह पड रहा था। ग्रहके रचयिता ऐक्य महान् आचार्यने ऐक्य जगह ऐक्य महा-पुरुषको बहून बडी बाने वह टाकी थी। मने अपनेका खूब सम्भालनेका जलन किया नही तो गुम्मेमें आकर धीटगा जवाय पत्थरमे देना चाह था। अम मानुषताके आवेगमें भुने वाधिसम्ब शान्तिदेवने वचा किया। अमकी ऐक्य मूक्ति मेरे मनमें जायी और अमने मेरे मनको पाराव होनेसे वचा किया। अमुहाने कहा है कि धर्मकी यदि कोत्री दुरात्री कर रहा हों, मूक्तियोंको यदि कोत्री तोड रहा हों और स्तूपोंको यदि कोत्री बिगाड रहा हो तो हमें नाराज होनेकी जरूरत नहीं, वसो कि त्रिपसे चुड और धोषिसम्बोग मन नहीं दुपता—

“ प्रतिमा स्तूप सद्धर्मनाश का शोष केपु च।

न मुज्यते मम धोषो यद्वादीना नहि ध्यया ॥”

— (वाधिसर्वावतार)

मेरे मनमें नाग्यीत्रीका वह चित्र चित्रलिपिल-मा घूम गया। जब वे दि-त्रीमें बंटे हिन्दुओंके समाचारामे बिना कुपित हूँ ही मुसलमानोंकी कुसलताकी

* आचार्य शान्तिदेव सातवीं शतीमें नालन्दामें थे। अिनकी प्रसिद्ध वृत्ति “धोषिसर्वावतार” का निबन्धनमें गीताकी तरह पाठ होता है। — लेखक।

निरन्तर कामना करने रहे, रच भरको अमके अपेक्षी आग्ने के अुदासीन न हूँ, और ऐक्य दिन वह आया जय स्वय अपना वलिदान कर दिया। अपनी जानि, अपने धर्म, ऐक्य अपने आपके अूपर आये मन्टके समय कुपित होनेका अर्थ तो समझमें आ जाता है क्योंकि वह दुनियाकी रीति-नीति है, पर अंछे अवमगपर दान्त रहनेमें क्या रहस्य है? तथागतने कहा है— फूटे बन्धिका घटा कितना ही क्या न पीटा जाये, बजना नहीं। असी तरह यदि तुम अपने आपको गमखोर बना लो तो समझो कि तुमने निर्वाण पा लिया। तुम्हारे त्रिभे वगामिनी नहीं रही।

“ स चे नरेसि अत्तान कंमो अुपहतो यया।

अेय पत्तो सि निव्वानं सारभो ते न विञ्जति ॥”

— (धम्मपद)

पर बान-बानमें कएह करनेवाली दुनिया क्या त्रिम प्रकारके निर्वाणको चाहती है? शायद नहीं। क्योंकि त्रिम प्रकारके निर्वाणने लिये त्रिम कपमताकी आवश्यकता है, अमका दर्शन दुनिवामें बिरल है।

मनकी वह स्थिति त्रिमे निर्वाण कहा गया है कंमे प्राप्त की जा सकती है? अन्तर सीधा है कि दुनियाके स्वाधोंको छोड देनेमे। विन्तु स्वाध कंमे छोडा जाये? अमका अुपाय क्या है? शान्तिदेवने अुसका अुपाय बनाया है कि यदि हमाग मन निर्वाणके लिये त्रिचन्द्र है, तय हमें सभी कुछ छोडना होगा क्योंकि सर्वथागना नाम ही निर्वाण है। पर सब कुछ योही छोड देना ठीक नहीं, प्रस्युन अुमे सत्वाधे-प्राणियोंके त्रिनके लिये छोडना होगा यदि हमने अंगना नहीं किया तो दुनिवामें जो होता है वह तो होगा ही। ऐक्य दिन अंगना आयेगा जब न तो हमारे त्रियजन बचेगे, न हमारे अत्रियजन ही, न मंही रहेंगा और न यह सब कुछ।

“सर्वत्यागश्च निर्वाणं निर्वाणाय च मे मन ।
 स्वतत्त्व्य चेन्मया सर्वं वर सत्त्वेषु बोधयता ॥
 अप्रिया न भविष्यन्ति प्रियो मे न भविष्यति ।
 अहं च न भविष्यामि सर्वं च न भविष्यति ॥”
 —(बोधिचर्यावतार)

प्राणियोंके हितके लिये किये गये अिम त्यागको आचार्य शान्तिदेव स्वार्थका परित्याग नहीं कहते, प्रत्युत स्वार्थका साधन कहते हैं, बसो कि अन्तके विचारसे जो स्वार्थ है वही परमार्थ है और जो परमार्थ है वही स्वार्थ है । स्वार्थ और परमार्थके बीचमें रेखा खींचकर परमार्थको व्यवहारसे सर्वथा मनुष्यके प्रवहमान जीवनसे अलग कर देना ताकिबोकोी वरजुत है, जिसका साधनाके मार्गसे बोओ रुन्वन्ध नहीं । परन्तु यदि परमार्थ जैनी कोओ वस्तु है—परमार्थ जैसा बोओ पुरुषार्थ है और यदि परमार्थ सभी पुष्पाधर्मों श्रेष्ठ है तो जीवनके अन्य मूल्योंको जीवनसे अन्य पुरुषार्थोंको, अस्तका अग होकर चलना होगा । मनुष्यका अन्तसे बड़कर स्वार्थ या परमार्थ क्या ही मुकता है कि वह स्वयं सुख और शान्तिका अनुभव करे तथा दूसराको सुख और शान्तिका अनुभव करने दे । पर मनुष्य अंसा नहीं करता ।

सत्त्वार्थ अिस त्यागको ही तथागतकी आराधना कहते हैं । आज तथागतकी आराधना स्तूप और प्रतिमाकी आराधनामें बदल गयी है । यद्यपि पुराने आचार्य अिस बातकी टीक-टीक समपते थे कि बुद्ध पूजा अेव सम्भार पहन नहीं करत । कोओ अुन्हें पूजे या कोओ न पूजे, वे अेक रस ही रहते हैं । पूजा पूज्यके लिये नहीं वह तो पूजकके लिये है । पूजकमें पूजाके द्वारा जो वरपभर चित्तकी प्रसन्नता अत्यन्त होती है, वही पूजाका परम अेव चरम फल है । बुद्धकी जीवन-वेलामें आ पूजा करता या तथा अन्तके परिनिर्वाणके बाद जो अन्तकी पूजा करता है, अन्त दोनोंमें चित्तकी निर्मलता अेक ही प्रकारकी होती है । अन्त, दोनोंमें अेक ही प्रकारका सुदृढ है । पर प्रश्न यह है कि पूजाके वास्तविक प्रतीक कौन हैं ? स्तूप और प्रतिमाओं का मन्वत् (प्राणि-समूह) ? स्तूप और प्रतिमाओंको देखकर अतिहासिक महापुरुषका स्मरण हाजा है, अन्त

अन्तके प्रत्याख्यान करनेकी बात तो सोची ही नहीं आ सकती । पर वास्तविक पूजा अिननेसे नहीं होती । वास्तविक पूजाके आश्रय वस्तुतः सत्त्वगण ही है । अिसलिये आचार्य शान्तिदेवका कथन है कि अन्त कारणिक तथागतोंने सारी दुनियाको आभवात्तु कर रखा है, प्राणियोंके रूपमें तथागत ही तो हमारे प्रभु हैं, फिर अन्तके प्रति वादन् न ही यह कौसी बात ? —

आत्मोदृतं सर्वमिदं जगत्-
 कृपात्ममिर्नैव हि संशयो ऽस्ति ।
 दृश्यन्त अन्ते ननु सत्त्वरथा—
 स्त अेव नाया किमनादरो ऽत्र ॥

—(बोधिचर्यावतार)

सत्त्वाराधनके रूपमें बुद्ध-पूजा कौसे की जाये ? आचार्य शान्तिदेवने अत्यन्त रमणीय काव्यभाषामें अिसका वर्णन किया है ।

येषां मुखे शान्तिं मुदं मुनीन्द्रा
 येषां च्छयाया प्रविशन्तिमन्युं ।
 तत्तोष्यगत्सर्वं मुनीन्द्रं तृष्टि-
 स्तत्रापकारो ऽपहृत मुनीनाम् ॥
 मुखी हो हि अिनके मुद माहीं ।
 अिनकी च्छया देखि पडिग्राहीं ॥
 तिनके मुख सब सुगत सुखारी ।
 तिनहें वृत्त-अहित मुगत-अपकारी ॥
 आदीप्तकायस्य यथा समन्ताद् ।
 न सर्वं कामरवि सौमनस्यं ।
 सत्त्वेष्ययायामपि तद्भदेव
 न प्रीत्वृषायो ऽस्ति दयामयाना ॥

मुखी न मन यद्यपि सब कामा ।
 लीं आति यन्ने अेव जामा ॥
 विमि जनयथा भये मुनिगया ।
 होअि न मन-अतोप अुषाया ॥
 स्वयं मम स्वामिन अेव तावद्
 यदर्थमात्मन्यपि निर्यथेक्षया ।
 अहं कथं स्वामिषु तेषु तेषु
 करोमि मान न तु राम भाव ॥

जिनके हित तूण गम मम स्वामी ।
 सर्जिह देह (जनके अनुगामी) ॥
 तिन प्रभु प्रति हौं किमि अगिमानी ।
 धरहु न दागभाव वा जानी ॥
 तस्मान्मया धरजन दुखदेन
 दुःख हृन मंत्रमहावृषाणां ।
 तवद्य पाप प्रतिदेनयामि
 धन्वेदितान्मनूनय कथमन्तां ॥
 गवत् जनन नहं जो दुःख दी हूं ।
 महावृषाट् दुर्गा मब वीर्य ॥
 अत्रु सो गम प्रतिदेगहूं पापा ।
 छमहु मूर्खान्द्र मंद जो व्यापा ॥
 तयागत्पराधनमेतदेव
 स्वार्थस्य सताधनमेतदेव ।

लोकस्य दुःखावहमेतदेव
 तस्मान्ममास्तु धनमेतदेव ॥
 यहं तयागन परमाराधन ।
 यहं मनुष्य स्वार्थ सताधन ॥
 यहं तवत् जन दुःख विदारन ।
 यहं हमार होत्रु द्रव्यधारन ॥

दुनियामें अिस प्रकारकी स्वायंसाधना ही साधकका परमार्थ है । जो साधक नहीं, अथवा जो सिद्ध हो चुका है वह भी अिसका अभिनयन किये बिना नहीं रह सकता । अिस प्रकारकी साधनामें लगा मनुष्य परमायंके नामपर धर्मके नामपर, श्रीस्वरके नामपर, अंगीकोत्री कार्य नहीं करता जो मानवताके विरुद्ध है या मनुष्यकी निर्गम प्रकारकी सकीर्णतामें बाधना है ।

[शान्तिनिकेतन



भूदान यज आन्दोलन, शान्तिकारी आन्दोलन है । वह शोषित और दलित वर्गका अुत्साह और वीरता बढ़ानेवाला है । वह शान्तिका विरोधी नहीं है, विरोधी है रत्नपान, धूर्तता और हृदयहीनताका । भारतका जितना सुद और अुदात्त होगी, शान्तिने मैनिफेस्टी शक्ति भी अुत्तरी ही अधिन अमोघ होगी ।

—आचार्य दादा धर्माधिकारी



ज्वार भाटेके खिंचावमें

: श्री प्रबोधकुमार मजुमदार :

गाँवके अनादि चाचा सबर पाकर सहानुभूति जताने आये। पर जिस शकरपर अितने बड़े दुर्भाग्यका वार हुआ था, उसकी बातचीतमें किसी प्रकारकी निराशा न पाकर, वे आश्चर्यसे अवाक् रह गये।

‘जी हाँ, चाचा, मकान मंने छोड़ दिया। सब तरहसे सोचकर देखा, लेकिन लगा कि अितसे अच्छी बात और कुछ ही नहीं सकती।’ शकरने यह बात अँसे लहजेमें कही, मानो बारोबारमें कोभी बहुत बड़ी रकम बूसके हाथ लगी हो।

‘तुम कह क्या रहे हो, शकर? पैतृक मकान, चाप-दादकी निशानी, असे बेच डालनेमें ही तुमने भलाभी देखा?’

बपण भरके लिये शकरके चेहरेपर विषादकी छाया आ पडी।

‘हाँ.. तो.. जो हाँ, पैतृक सम्पत्तिको बेच डालना तो...’ पर दूसरे ही बपण अँकाअँक अत्याहित होकर कहा—‘लेकिन ज्यादा दिनोंकी बात छोड़े ही है। साहुजीने मुझसे वादा किया है कि..’

‘कौन? वह भुवन साहु न? जब तुमने अूस हत्यारे मूमसे रुपये अुधार लेने शुरू किये थे, तभी मैं जान गया था कि अब सब सत्यानाश होकर ही रहेगा।.. तो भुवन साहुने क्या कहा?’

‘वहा कि मेरा मकान ज्यादा ल्या बचा रहेगा। वट् अुगमें कोभी परिवर्तन नहीं करेगा। फिर जिन दिन मैं अुनके रुपये मूद-महित लौटा दूंगा, अुमी दिन वह मेरा मकान लौटा देगे।’

‘अच्छा। यह दयावान है। तुम किस तरह अुनके बर्जको चुका पाओगे, जिन सम्बन्धमें भी कुछ सोचा है?’

‘जी हाँ। क्या नहीं? यदि अीश्वरने दृषा की, और जिन नये काममें मैंने हाथ लगाया है, वह सकल रहा, तो फिर अिस कर्जको तो चुटकी बनाते चुका दूंगा।’

अनादि चाचा घरसे यही सोचकर चले थे, कि वह तमल्ली देते हूअे येही सब बात कहेंगे। अुन्होंने सोचा था कि शकरको परेशान तथा बूसके चेहरेको अुतरा हुआ पाअँगे, तो आशा दिलाअँगे, जिससे कि विपत्तिका बोस हन्का हो जाअे। पर महाँ तो वे ही सब बातें शकरके मुँहमें निर-अी। अिसलिये मजबूर अुन्हीको जब अुटा राग अलापना पडा—‘अरे, भैया, रुपये कमाना क्या अितना आसान है?... अच्छा, जाने दो ये सब बातें। शायद भुवन साहुने ही तुमको ये सब बातें समझायी हँ।’

‘हाँ, अुन्होंने भी कहा, और मैंने भी सोचकर देखा। बात यह है कि हर महीना मूद बडता चला जा रहा था। कर्ज चुकता हो जाअे, तो बम-से-कम मूदसे तो रिहाअी मिले। अिसके अलावा अुनसे नकद भी ३५० रु० लिये हँ।’

‘बर्ज कुठ दिन जोर रहता, तो क्या विगड जाता? अिस बीचमें कोशिश कर-कराकर..’

‘पर साहुअी रखनेके लिये तंभार नहीं दूअे। अुन्हीने कहा, कि अगर मैं बर्ज न चुकाअँगा, तो मजबूरन मालिश करेंगे।’

‘और, बम, अितनेहीमें तुम्हारा दम निकल गया। जानते हो, डिप्टी, अपील, नीलाप, दलल करने-वराने दो साल जाते। और जिन बीचमें अिन्हेकी अदालतने लेकर हाअीकोर्ट तक अुमको मात्र ‘समुन्दर’ का पानी पिला दिया जाना।’

' फिर भी, चाचाजी, अन्तरी मरान तो हाथमे निकल ही जाता ? पिजूटका एचं बड़ानेमें क्या पायदा था ? '

' तो भी अिसीलिअे, भैया, कोअी बाप दादाकी निसानी अंसे नहीं छोड देना । यह कोअी अंमी-जैमी जायदाद तो है नहीं, बाप दादारी निसानी है । खर, भर तो गया ही । त्रिमनी जैमी ममदा । . ता, भैया, मरान तो गया, अब रहोग त्हा ? '

' अुसरनी कोअी चिन्ता नहीं । वहीँ-न-वहीँ गुजारा हो ही जाअेगा । साहुअीने अेन महीनेका समय दिया है । त्रिम वीचम वहीँ न-होई दूँड ही रूँगा । हम ढाअी आदमियोंको गिर रखनेके लिअे जगहकी क्या चिन्ता ? गावमें कोनी-न-कोअी जगह मिअ ही जाअेगी । '

अमल बाब यह थी कि अगर कोअी अुमकी गरीबीपर अुमने साथ महानुभूति दिलाने आना था, तो सक्करके आत्म-सम्मानको टेग लगनी । अुमने पिना धनी न होनेपर अच्चे खासे तगडे आसामी थे । अकर बचपनमे ही आराममे रहनेका आदी था । गगीनीने कीचडवा निलक लगाना अुमके लिअे न केवल कष्टदायक था, बल्कि लज्जाकी बाब भी थी ।

नदी-प्रवाहके बेगसे जीर्ण, सिधिल तट-भूमि जैसे रमातलमें जानेके पहेले कुछ समय तब हरियाली धारण निसे रहती है, अुसी प्रकार सक्करने प्रफुल्लताकी आडमें अुमने दुर्भाग्यकी छिपा रसना चाहा ।

अिअेके अतिगिन सक्करमें कपनाके शिवा स्वप्नमें टूटे रहनेकी अद्भुत शक्ति थी । जो सक्किणकी मादक, मधुर कपनामें विमोर रह सकना है अुमे विषादमय वर्णमान कैसे स्वर्ण करेगा ?

पिताके जीविन रहने कभी अुमे खाने-पहननेका अभाव नहीं हुआ । अंमा कभी हो सकना है, अिसकी वह भी कपना नहीं कर सकना था । अिसलिअे वह जब अेन बार मैट्रिकमें फेल हो गया तो अुमने तीन मीलरनी दूरीपर स्थित स्कूलमें भरती होनेका कष्ट करना शय्यं समझा । और गजेमें ताग खेलकर और बागुरी

बजाकर दिन काठने लगा । यथा समय पिताने अुमकी सादी भी कर दी, पर पोनेका मुँड देगनेके पहले ही वे परलोक सिधार गये । अरनेके पहेले ही जमीन तथा लेन देनका सारा हिमाज पुबको समझा गये ।

लेन-देन चलानेकी मनोभूति सक्करमें नहीं थी । अिस कारण तथा नये-नये कानूनोंके पंचमें पटकर शीघ्र ही अुसका यह काम खतम हो गया । बाकी रकी जमीन । अिस वीधमें चीजोका भाव बढ रहा था । गृहस्थी विसी प्रकार न चलती देखकर, सक्करने कहा कि अब वह ध्यापार करना ।

स्त्री सरसी बहुत खुश थी कि ध्यापार होगा । अुसने सुन रखा था, 'वागिअे वसति लक्ष्मी ।' फलां-फलां ध्यापारकी बदौलत मामूली आदमीसे बढकर राजाओंकी तरह अंश्वर्यशाली हो गये, अंसे दृष्टान्तोंका भी अभाव न था ।

अुसाहकी अधिकाते कारण अुम रातको विनीको नीद नहीं आयी । ध्यापारसे रपये मिअनेपर क्या-नया होगा सक्कर अिसका जेक बहुत लम्बा-चीडा चित्र खीच गया और सरसी मुग्ध होकर सब सुनती रही । सक्करमें वर्णनकी अच्छी ब्यमना थी । गुनते गुनते सरसीकी कल्पना भी अुत्तेजित हो गयी । अुमने भी सक्करने चित्रपर अपनी तूलिना चलायी ।

अिसी विषयपर दोनामें अेक छोटा मोटा परन्तु मीठा झगडा भी हो गया । सरनी कोअी नि मरानके भीतर बागनके अेक बिनारे अेक अमरुदना पेड रहेगा । अुमका बच्चा बडा होनेपर अमरुद तोडकर खाअेगा । (बच्चेकी अुभ्र अिस समय मात्र महीनेकी है ।) सक्करको अमरुदमे नकरत है । वह कहना था कि अनारका पेड रहेगा । अिसपर तिर टिअने अुअे सरतीने चटपट कहा- 'अरे बाबा, नहीं नहीं । अनारकी डाल बहुत बमजोर होती है । वही हमारा मुनु गिर पडे, और अुमके हाथ पर टूट जाअें तो ?' कहकर मुनुकी काल्पनिक विातिकी आसकाकी पोंछ डालनेके लिअे अुमने पाग लेटे अुअे अुनुका मुँह चूम लिया ।

जो ही, कुछ देर तक वितरुंके बाद यह निश्चिन हुआ कि मरानके अन्दर अमरुदना पेड ही रहेगा, और

मकानके बाहर अनारका, पर उसके आसपास सावधानीसे बैसा घेरा तैयार कर दिया जायेगा कि मुन्नु अंसपर न चढ सके ।

व्यापार शुरू हो गया । पहले गुडसे शुरू हुआ । पर व्यापार बल्पनाके घोड़ेपर तो चलता नहीं । उसके लिभे जिस तजुब तया जानकारीकी आवश्यकता थी, वह अंसमें न होनेके कारण वह तरह-तरहसे ठगा गया । कारोबार तो गया ही, मामला अितनेसे ही खत्म नहीं हुआ । पल्लेकी छात्री बीधा जमीन भी दे देनी पडी । जिस प्रकार कडुवेपनने गुडके कारोबारका अन्त हुआ ।

शकरने सरसोको समझाया कि कारोबारका यही नियम है । कभी मुनाफा होता है, कभी घाटा । जो कुछ घाटेमें गया है, अगली बार उसके बीस गुन मिल जायेगा । बल्कि शुरूमें घाटा होना ही अच्छा होता है । तजुबा ही जाता है । अतःअब कमर बसकर फिरसे व्यापारमें लग जाना चाहिये ।

अबकी बार अंसने तम्बाकूका कारोबार शुरू किया । बिलममें भरकर हुक्केमें पी जानेवाली तम्बाकूका नहीं, तम्बाकूके पत्तोंका । आय-अपयका लेखा दिखाकर शकरने यह बताना दिया कि अिसमें बितना जबदस्त मुनाफा रहेगा । अिसपर फिर दोनोंके हृदयोंमें आशा हिलोरे लेने लगी । कारोबार शुरू हुआ । पर बाजारकी जादूगरीकी शकर बेचारा क्या जाने ? नतीजा यह हुआ, कि तम्बाकूका कारोबार भी गुडके व्यापारकी तरह चौपट हो गया ।

सरसोकी अवनव अपने पतिकी योग्यतामें सन्देह करनेका कोअी कारण नहीं मिला था । पहले-पहल जब अंसने शकरकी पति रूपमें पाया था, तो वह अंस प्रामीग वाग्तो अेक अमिनव आनद जान पडा था । अिसके अनिरिक्त गाँवके लोगपर जब कोअी बिपत्ति आ पडती थी, तो शकर जी गोलकर अुतकी सहायताके लिभे दौड पडता था । अिसने सब लोग अुसकी सारीक ही करत ये । बामुरी बजानेमें अुसके मुखाबलेमें कोअी नहीं था । फिर जब गाँवमें कोअी 'ठंडर' (पियेटर यानी नाटक) या नोटकी होती, तो शकरकी सारकनके बिना मरुल

नहीं होती । अुस जमानेमें भोली भाली सरनी क्या जानती थी कि अेक दिन शकरकी भी कठोर जीवन-सशामका सामना करना पडेगा, और अुसके ये गुण काम न दोंगे ।

जब तम्बाकूका कारोबार भी गुडकी ही गतिकी प्राप्त हुआ, तो हिर्नपियोने सलाह दी कि अब काअी प्रयोग हो चुके, अब शकर कोअी नौकरी कर ले । पर गाँवमें जो मामूली नौकरी मिल सकती थी, अुसे शकर नहीं करना चाहता था । रहा परदेश जाकर नौकरी-चाकरी तलाश करना, मो भी शकरकी दृष्टिमें अनुचित था, क्योंकि घर-द्वार छोडकर वह कहीं कैसे जाता । अिसके अतिरिक्त नौकरीके सीमित वेतनसे धन-दौलत, आगन-सहन, कुअे-पोखरेका स्वल्प कैसे पूर्ण होता ?

शकरने हिम्मत बाधकर फिर व्यापार शुरू किया परन्तु परिस्थिति यह हो गयी थी, कि पंतूक मकान बेचे बिना काम नहीं चल सकता था ।

× × ×

साहुजीने कृपा करके अेक महीनेका जो समय दिया था, अुसके खतम होनेके पहले ही अुसने अेक आश्रय खोज लिया । निडुअ अुसका दूरका पूजाजान-भाजी है । वह अुसमें अुससे बडा है । गाँवके हाटमें अुसकी अेक दूकान है । अिस दूकानमें चावल-दाल मसाले, टीस-टाम, छोटी-मोटी अन्ध चीअें और मिट्टीके बर्तन मिलने हैं । दूकानवे पीछेकी ओर बाँससे घिरा हुआ आगन है । घरमें तीन कमरे । पत्नी कामिनी तथा चच्चोकी गृहस्थी । यही निडुअ कुछ दिनेके लिभे शकरकी आश्रय देनेके लिभे तैयार हो गया ।

कामिनीने पहले पहल यह बहकर आपत्ति की थी, कि यदि तीनमेंसे अेक कमरा छोड दिया गया, तो सामान रखनेमें अनुबिधा होगी । पर बादमें राजी हो गयी । अिस प्रकार रहनेकी बिन्तासे छुट्टी पाकर, शकरने अपने पास बचे अुसे तीन ही साठ रुपये लेकर फिर कारोबार शुरू किया ।

अब अुसकी बल्पनाकी दौड बहुत पट गयी थी । परकी महाजनसे छुटा पाना ही अिस समय अुसका

अब मात्र ध्येय था। जब कँसे २५००) रु हाय लगे कि मवान छुटा लिया जावे, अतः पति-पत्नीकी वरपनाका केन्द्र-बिन्दु यही था। अिससे आगे सोचनेकी हिम्मत नहीं थी।

वरपनाकी दौड़में सरसी शकरको पार कर जाती थी। महाजनके लिअे मवान छोड देनेके पहलेही वह अुसमें अमरुदका अंक मन्हा-सा पीधा लगा आयी थी। मुन्नु और वह पीधा हीड करके बढने लग। जब तब पेडमें फल आने शुरू होंगे तब तक तो मुन्नुभी पेडपर चढनेके काविल हो जावेगा। अुस समय सरसी पेडके नीचे खडी होकर कहेगी—'मुन्नु अंक अमरुद देगा ? और मुन्नु सारा पेड खोजकर, अुसमेंसे कुछ अच्छी तरह पके हुअे अमरुद माँके पमाने आचलमें डाल देगा।

तब माँ कहेगी 'बापी है, बेटा, अतः अुत आओ।'

तब मुन्नु जल्दीसे अुतरकर माँकी गोदमें छिप जावेगा।

व्यापारमें शकरको जो कुछ मुनाफा होता, अुतनेसे गृहस्थी नहीं चरती। अिसलिअे पूँजीपर हाथ लगाना पडता। धीच-धीचम घाटा भी होता। शकरने हिसाब लगाकर देखा तो जान पडा कि पूँजीका तो वही पता नहीं, अुट्टे वह कुछ कर्जदार हो गया है।

ज्यो ज्यो शकरकी आदिक अवस्था विगडती गयी, त्यो-त्या सरसीके प्रति कामिनीका दुर्व्यवहार भी बढता गया। खानेके एअेने लिअे शकरसे कुछ लेते निकुजको शर्म आती थी, पर शकर कुछ-न कुछ खरीद कर हमेशा निकुजकी गृहस्थीमें योग देता। अिस तरह निकुजको कुछ फायदा ही था, नुकसान नहीं।

कामिनीके कभी बच्चे-बच्चे थे। अकेली वह अुनकी देख-भाल किया करती। पर अबसे सरसी आयी, वह अिस कार्यमें हाथ बँटाने लगी। कामिनी कभी बीमार पडती, तो वही खाना पकाकर सबको खिलाती।

जब शकरकी हालत अँसी हुजी कि वह निकुजकी गृहस्थीमें कुछ मदद देनेके योग्य नहीं रहा, तो कामिनी अक्सर बीमार रहने लगी। सरसी बेबारी क्या करती? जिनके आश्रयमें थी, सब तरहसे अुन्हे सतुट करने लगी। अिस प्रकार जब शकरकी निजी आमदनी कुछ नहीं रही, तो सरसीका अुन्हे चीनेसे पक्का सम्बन्ध जुड गया।

दोना जून रसोअी, चीका-चलन और अुपरसे पग पगपर कामिनीकी डाँट टपट, सरसीको यह सब कष्ट मजूर था, पर अुसका लडका लापरवाही और अनुपयुक्त आहारके कारण सूखकर काँटा होता जा रहा था, अिससे अुमे बहुत अधिक मानसिक कष्ट था। सरसी चुपचाप सब सहती कभी प्रविधाद नहीं करती। अक्सर कामिनीकी निरनुदा जीभ अुमपर अँसी चोट करती कि अुसका कलेजा टूक-टूक हो जाता।

जब वह किमी प्रकार वही भी आशाकी बपीण रेखाभी नहीं देख पाती, तो शकर अुमे तसल्ली देता। अिस प्रकार सरसी अपने दुर्भाग्यको सहनेके लिअे फिर कमर कम लेती।

पर मुन्नुको सहन शक्ति सीमित थी। वह कुछ दिनों तक बीमार रहा फिर माँकी गोद खाओ करने चल बसा।

सरसी कअी दिन बेहोश पडी रही। पर जो खिला रहे थे, वे छोडते क्यों? कामिनीने कअी दिन तक रसोअी सभाली, फिर सरसीको मुना-मुनाकर कहने लगी कि-भेरा शरीर जितना कमजोर है। दोनों जून अुन्हेके सामने बँडूँ, तो जो चुकी।

अिसपर भी जब कोअो मनीजा नहीं हुआ, तो अुसने साफ-साफ कहा, विपदा किसपर नहीं पडती? पर अिसी कारण कोअी गृहस्थी थोडे ही छोड देता है। अजीब ढकोसे हँ।

अिसके बाद न मालूम और मुजनेकी बारी आयें अिसलिअे सरसी अुठी, और अुसी रोग तथा दोषकी अवस्थामें सबेरेसे शापतक पितन लगी।

अिसी बीचमें निकुजने शकरसे कहा—'भअी, जानते तो हो मरी हालत। अब अँसे क्वतक काम

चलेगा ? हाँ, अगर तुम दूकानका हिसाब लिखा करो तो मुनीमको जवाब दे दूँ।

+ + +

अगले दिनसे राकर दूकानका हिमाव-किताब लिखने लगा। जिस प्रकार पति और पत्नी दोनों निकुञ्जके पूर्णतया आश्रित हो गये।

जिसी तरह चला जा रहा था। पर अंक दिन राकरने आकर, झुत्साहसे झुत्पुल्ल होकर सरसीसे कहा, 'अब कोअी चिन्ताकी बात नहीं। बहुत बढ़िया रोजगारका पता लगा है। मालामाल हो जाऊंगा।' झुत्साहके मारे वह ठीक तरह बोल नहीं पा रहा था।

संधेपमेँ मामला यो था। असी गाँवका निखिल कलकत्ताकी अंक कटरीसकी दूकानमें नोकरो करता था। वह आज किसी कामसे गाँवमें आया था। राकरने अूसके मुँहसे सुना कि कलकत्तेके रास्तामें पंसे बिलेरे पडे रहने हे, अठा भर ले। वहाँ जानेपर अूहें खानेकी कोअी कमी नहीं रहनेकी। वहाँ माग्य चमक गया, तो पौ-वारह रहेगा। व्यापार भी करे तो कलकत्तामें करे। वहाँपर कुछ लोग अंक सालमें ही लखपति हो चुके हेँ। निखिलने जो कुछ अुमे बताया था, वही अतिरजित वर्णन अुसने सरसीकी सुनाया।

अूस दिन दोनो रातको वही देरतक जागकर कल्पनाकी बे-लामा दीडाने रहे। गाँवके लोग जेक दिन आशचर्यचकित होकर देखेंगे कि अूसके मकानके सामने ओटें पडी हेँ, और राज काम कर रहे हेँ। देखने-देखने सुन्दर, आगनदार मकान तैयार हो जायेगा। गृह-प्रवेशने दिन सारे गाँवका ग्योता होगा। सब लोग आकर घूम-घूमकर देख रहे हेँ, और सोच रहे हेँ कि मकान हो तो अंगा हो। जहाँ जो चाहिअे, वहाँ वही है। चारा और लक्ष्मीका राज्य है। गीउालमें गाय-बैल बेंचे हेँ। आगनके अंक तरफ खलितान है, और अंक बानेमें वही अमरुदना पीया रहगा। और पीयेपर.... यहाँक आकर सरसीकी कल्पना बयूच्च हो जानी। वह लखीे सास भौचकर, दूसरी बात सोचने लगती।

जिसके बाद अच्छा दिन देखकर, अंक दिन राकर सरसीको लेकर कलकत्तेके लिअे खाना हो गया। निखिल पहले ही चला गया था। यह तय था कि वही अिन लोगोंके लिअे रहनेकी जगह ठीक कर खेगा। रास्तेके खर्च और कलकत्तेमें कुछ दिन रहनेके लिअे सरसीके कानकी बालियाकी बेंचकर पचीस रुपये अिकट्टे किये गये।

गाँवसे स्टेशन सात मील है। शामकी गाडी पकडनेके लिअे दस बजे दिनको ही खाना हो जाना पडेगा। सरसीने जल्दी-जल्दी खाना पकाकर पतिको खिलाया, और खुद भी खाया। आज अूसकी खुशीका कोअी पारावार नहीं। बच्चोकी तरह वह खुशीसे अुछल रही है। बिरपरिचित गाँवको छोडकर, वह दूर देश जा रही है, जिसकी अुसे जरा भी चिन्ता नहीं। निकुञ्जके मकानवाले दो सालके विभीषिक-पूर्ण अध्यायका यह सुखद अन्त ! जिसको वह गनीमत समझ रही थी। अुनकी छोटी-सी गृहस्थीकी आबरुअक चीजेँ अंक छोटे बकस और बिस्तरमें लपेटकर बँलगाडीमें लाद दी गयी हेँ।

यात्राके लिअे तैयार होकर सरसीने कामिनीके पंर छुअे। अबसे दोनो अून रसोअी करनी पडेगी, यह साचकर कामिनी नाराज थी। जरा खीअकर बोअी- 'देवरजीके भी अजीब ग्याल हेँ। कहने हेँ न कि सुखसे बंर हेँ। यहाँ कितने मजेमें थे। सो नहीं रचा, तैयारी कर दी कलकत्तेकी। कोअी कलकत्ता जानेसे चतुर्भुज घोडे ही हो जाता।'।

सरसीने आश्रतक जिम प्रकार अूसकी सब बातोंको चुनचाप महन किया था, वंसे ही आज भी वह कडुआ पूँट पी गयी। केवल बोली- 'किसी प्रकार तकदीर नहीं लौटी। अब जरा देना जाअे कि कलकत्तेमें.....'

कामिनी कुछ पिपती। बोनी- 'खंर, जा रही हो, तो जाओ। पर यदि कभी विपत्तिमें पडो, तो यहीं कली आना। हम लोग तो हेँ ही।'

मुनकर सगसोवा हृदय बाँध चुटा। मन ही मन
जीश्वरसे प्रार्थना की—'भगे ही धन न देता प्रभु पर
यहाँ अन्न दाग हाकर न लौटना पड़े।'

फिर पतिके साथ गाड़ीपर बैठ गयी। रास्ता
पहुँचके अपने मकानके सामनेने पडना था। दोनों जी
भरपर झुंसे देखा। सरमीने कहा—'चंग, जग
मकानकी भीतरसे देखा जाये।''

पर शरने कहा—'रहन दा, जिस मकानमें जो
किरायेदार है, न माटूम क्या समझ बैठें।'

मकानके किरायेदारका अक छह साल वर्षका
लटका सामने गला झुगली चूम रहा था। सरमीने धुन
पास बुलाकर जिरह की, 'तुझेका क्या हाज है? अम-
रुदका पीना कितना बडा हुआ है? पर वह कोत्री
गलापजनक झुलर न दे सता।'

सरमी फिर गाड़ीपर चढ़ गयी। सोचने लगी,
'न माटूम अब किस हालतमें यहाँ लौटना हा? समझ
है, यह मकान भी लौट जाये। पर झुंसे जिरहका
टुकडा मुनू कभी नहीं गौटेगा। कितनी अवहेलना सह-
कर बेचारा मरा।'

बचपनमें सरमी अपने चाचाके साथ अक बार
कलकत्ता गयी थी। पर अक समयकी स्मृतियाँ धुंधली
ही चुकी थीं। वह रास्तेमें कापी नजी चीज देपती, तो
विस्मयसे अबाक होकर, टकटकी बांधकर देखती, और
सोचती 'हाय, यदि मुनू आज यह देखता ता कितना
पुस होता।'

हावडा स्टेशनपर झुलरकर, दोनों अक रिक्शापर
सवार होकर चले। हावडा पुत्रपर सरमीने गगात्रीकी
प्रणाम किया। फिर पतिके बोली—'अक दिन मूचे
गया रनाम करनके लिअ ले चलना।'

शरने कहा—'जरूर। अब तो यहाँ रहोगी,
न माटूम कितनी बार आता होगा।'

× × ×

निश्चिन्ने निवास-स्थानपर वे पहुँचे। अमने छह
आने रोजपर अिनके लिअे वहाँ अक कमरा ठीक कर
रखा था। वहाँ दोना पहुँचे। सरमीने बसत, विस्तरा

खोत्र देखते-देखते गृहस्थी गजा दी। न माटूम
कितने दिनाने अँगी म्वनन गृहस्थीके लिअे अूनके मन
तरस रह थे।

निश्चिन्ने साथ सगाह करके यह तय हुआ कि
पहले व्यापारके चक्रमें न पडा जाये। नौकरीकी तलाश
होन लगी। निविल भी अिय तलाशमें मदद देने लगा।
पर अबल तो नौकरी मित्रनी नहीं थी और मिलनी
भी थी, तो पत्र-द्वीमकी जियमें मकानका किराया
देकर कान्तेमें रोटी दाग खाना भी मुश्किल था।
सरसी राज व्यग्रतासे प्रदीवपा करनी, और रोज निगादा
होनी। जिस प्रकार कानकी बालियोके रूपे खतम
होनको आय। सरमीका मुंह सूख गया। अक दिन अक
काम खोजनके लिअ शर जा रहा था, तो पाउठेने सरमी
बोली—'क्यो जी, कोत्री नौकरी क्या नहीं कर लेने?'

शरक शाला—'कोसियम तो हूँ पर कोत्री
बीस रूपयेम अूपर बडता ही नहीं। और अक दिन
हमने हिसाब लगाके देखा था कि पंनीम दरयमे कममें
काम नहीं चलेगा।'

'सो ता है पर मैं क्यो न वही रसोत्री बनानेका
काम कर लूँ?'

शरक स्तब्ध रह गया। फिर वेदना भरी
आवाजमें बोला—'सरसी, तुमन आज कंगो बात नह
दी? क्या मैं अँगा अभागा हूँ कि अपनी रसोत्री काम
करवाऊँ?'

अिसमें नाराज होनेकी क्या बात है? अकेले
तुम्हारी आमदनीमे काम नहीं चलेगा अिमीमे मैंने यह
बात कही।'

'यह बात फिर कभी जवानपर न लाना। गरीब
हूँ तो क्या? अिजगतशर तो हूँ।'

सरसी यह समझती थी, पर वह परिस्थितियोको
भी जानती थी। वह मूडु स्वरमें बोली—'वहाँ भी तो
मैं रसोत्री बनानी थी।'

'वहाँकी बात और थी। हजार हो, वे रिस्नेदार
तो थे। यहाँ अगर तुम महाराजिन हो जाओ, और
गाँवके लोग जान जायें, तो बस नाक कट जाअ। दो-

चार दिनमें ढगकी कोजी-न-कोजी नौकरी मिल ही जायेगी ।'

पर दो-चारकी जगह दस दिन बीत गये, कुछ न हुआ । सारी पूजा खतम हो गयी । मकानवालेके तकाजसे परेशान होकर सरनीकी चूड़ियाँ भी बेच देनी पड़ीं ।

अन्तमें शकरन भी हार मान ली । अंक दिन अूसने आकर सरनीसे कहा—'अब कोजी अूमिद नहीं । गाँवका लौटना ही पड़ेगा । केवल रेलका किरामा बाकी है ।'

सरनीको कजी दिनसे अमीकी आसका थी । वह गुमशुम बँठ गयी ।

दूसरे दिन दोना गाँव लौटनेकी तैयार हुअे । सरनी अंक करके बिल्ली चीजाकी बटोरती, और अूसकी अँखें सजल हो अुठनीं ।

शकर आखिरी बार बाजार धूमने गया । तप यह या कि वह घट भरमें लौटेगा, पर अंक बजे लौटा । बहुत धुन था अूस समय वह । बतलाया कि निखिलके यहाँ अंक व्यक्तिसे अूसकी अँट हूअी, जिसने अुमे रूपया पँदा करनेका गुर बता दिया । अूस व्यक्तिने कहा था—'वाह ! आप नौकरी क्यों करणें ? बस, देहानमे सेमरकी हथी बटोरकर भँजिअे । मैं खरीद लिया करूँगा ।'

× × ×

सरनीने अिसपर कोअी अुत्साह नहीं दिखलाया । दोनों स्टेशनकी ओर फिर अूसी प्रकार रिक्शमें चले । पर यह जाना दूमरे ढगका था । छुट्टीका दिन था । सिनेमाका मैटिनी तो हानेवाला था । लाअुडस्पीकरपर अंक गाना बज रहा था, जिसका अर्थ यह था, कि जो भाटेबे मुँहमें जान है वे फिरकर ठाकने भी नहीं । सरनी सोचने लगी—सच तो है । फिर अुनी कामिनीके 'अन्न दासग्व'में लौटना पड रहा है । क्या अूसके जीवनमे अब माटा ही रहगा ? समुरजीकी मृत्युके बादसे आपा हुआ यह माटा कब तक चणगा । क्या कभी अ्वार आयेगा ?

अुधर शकर रास्ते भर प्रबल अुत्साहसे अपने मने स्यापारकी सम्भावनाअँके सम्बन्धमें बात करता

रहा । परन्तु अूसने जो कुछ कहा, अुमका अंक भी शब्द शरमीके कानोंमें नहीं गया ।

अुनका रिक्शा जिस समय हावडाके पुलगर जा रहा था, अूस समय अंक नीखी मोटीमे अुनका ध्यान अपने चारों ओरके वातावरणकी ओर फेरता । सरनीने सामने दृष्टि डाली । गगाजी ल्हारा रही थीं । सूर्य-किरणोंसे तरणें झिलमिला रही थीं । शकरने कहा—'ओह, खूब याद आया । तुमने गगा किनारे नहलानेके लिअे कहा था, पर मोहा नहीं मिला । अमी गाडीमें देर है । चलो, दो-चार डुबकी लगा रे ।'

रिक्शवालेसे ठहरनेके लिअे कहा गया, तो वह राजी नहीं हुआ । अन्तमें अुसे पूरा विरापा देकर बिदा कर दिया । किसी प्रकार घाटके किनारे अंक दूकानपर सामान रखकर वे नहाने चले । अूस समय घाटपर स्नानार्थियोंकी भीड नहीं थी । अँसे समय बौन नहाता ?

नदीमें अूस समय पूरे अ्वारके बाद भाटेका खिचाव आ रहा था । वपोंके अन्नकी नदी थी । घाटकी प्राय सब सीडियाँ डूबी हुअी थीं । जल प्रवाह तीव्र था । घाटके दोनों तिरोंपर असह्य नौकाअें, बजरे, डोगियाँ लगी थी । प्रवाहके तालपर नाव नाच रही थी । अुनकी रस्सियोंपर खिचाव पड रहा था । अंकदम किनारे, जहाँ प्रवाहकी गति अहुत मन्द थी, नावाकी आडमें खडे होकर शकरने अगोछेसे शरीर रगडनेकी तैयारी की । अकस्मात अूसने चौंकर देखा, सरनी अूससे भी कअी हाथ आगे थी । वहाँ पानी अूसकी कमर तक था ।

शकरने परेशान होकर कहा—'सरनी अुतने गहरेमें मन जाओ । पानीमें तेजी बढन है ।'

सरनीने कुछ नहीं कहा, और ओर भी आगे बड गयी ।

'अरे, यह क्या, सरने ? सुननी क्यों नहीं ? अिननी दूर मत जाओ । तुम तैरना नहीं जानतीं । जन्दी लौटो ।'

सरनीने कुछ नहीं कहा । मुँह फेरकर देखा भी नहीं । फिर रधी हुअी आवाजमें मिर्च बटा—'नहीं !'

'नहीं क्या, जी ? पानीमें कितनी तेजी है नहीं देखती ? समल नहीं पाओगी। यहाँ पानी कम है। बिघर आओ।'।

अबकी बार सरसीने मुँह फेरा। अुसे चहरेपर आँसूकी धारे बह रही थीं। अपनी बड़ी बटी सजल आँसूकी पातले मुँहार जमाकर वह मर्मभेदी हृदयके साथ गौली—'नहीं जी। मैं अब वहाँ लौटकर नहीं आऊँगी।'।

दूसरे ही क्षण जाह्नवीकी जठराग्नि अुसे ग्रस लिया।

शकर वकी वषण तक अुस तरफ विह्वल, विभूट दृष्टिसे दक्षता रहा। सरसी फिर अुपर नहीं आयी। जहाँपर सरसी दूरी थी, वहाँपर कुछ देखके लिअे अेक भँवर-सा दिखायी पडा। फिर जल ज्यो-का-रयो हो गया।

वषण भर बाद अुससे कौसी वीस हाथकी दूरीपर, जहाँ अेक मालमे लदी नाव थी, बिछरे हुअे कुछ बाल दिखायी पडे। किसी अज्ञान जलचरकी तरह अेक बार दिखकर वे नावके नीचे अदृश्य हो गये।

मर्मभेदी चीत्कारके स्वरमें शकरने कहा—'सब सन्धानास कर दिया मूने सरसी।' और वह अुन बालोका निशाना बनाकर पानीमें कूद पडा। वह अितने जोरसे कूदा और साथ ही पानीका बहाव अितना तेज था कि शकर अेक वषणमें ही अुम नावके पास पहुँच गया। अपनेको समाल न पावके कारण अुसका सिर जोरासे नावसे टकरा गया और वह बेहोस हो गया।

सरसीको किमीने डूबने हुअे नहीं देपा था, पर शकरके शोर मचानसे सभीकी दृष्टि अुम ओर गयी। शौरन सब दौड पडे, 'गया, गया।' 'बचाओ, बचाओ।' चिल्लाते हुअे।

पल भरमें पासकी नावसे चार-पाँच व्यक्ति कूद पड, और शकरको पकड लिया।

शकरको होस आया, तो वह पागरोकी तरह अिन लोगामे कहने लगा—'डोडो, छोडो। मुझे छोड दो। जहाँ वह गयी है वही मुझे भी जाने दो।'।

अुसने अुन लोगसे हाथ छुडानेके लिअ छीचा-तानी भी करनी चाही थी। पर अुनेपर चार पाँच धादमियोसे कँसे पार पाता। वे अुमे बचाकर ही माने।

देखने-देखने शकरके चारा तरफ अच्यो खामी भीड जमा हो गयी। सब जानता चाहत थे कि मामला क्या है।

घाटेके किनार वैठ-वैठ अेक बूडा भिखमगा लाभी चबा रहा था। अुसने घटनाका अन्तिम दृश्य देखा था। अुमन सबको बनलाया कि 'अिन बाबूकी स्त्री डूब गयी है, अिसलिअ ये भी डूबने जा रहे थे।'।

किमीन सहानुभूति दिखायी, किसीने कर्म-फलकी महिमाका बखान किया, किसीने अिस आतपर अपनी राय दी, कि लास किनने घटोमें अुपर अुठेगी और कितने मोठके अन्दर रहगी।

धीरे धीरे भीड घट गयी। घाट करीब-करीब जन शून्य हो गया। भीगे कपडोमें गगाकी ओर दृष्टि स्थिर किये शकर बैठा रहा।

नदीके पानीमें गला हुआ सोना डालकर, अुस पारकी हुबेलियाकी आडमें मूर्ध अस्त हो गये।

बाह्य ज्ञान शून्य-सा शकर फिर भी बैठा ही रहा। जीवनके सेकडो दुर्भाग्योमें भी अिनने दिनोतक कल्पनाने अुमे आशाकी वाणी सुनायी थी, पर आज तो कहीं आशाकी अक रेखा भी नहीं दीखपडती थी।

अुसके समस्त आकाश-कुमुमोकी सत्पतामें अितन दिन जो बिना बिचारे विश्वास करती थी, अुम सुख-दुखकी जीवन सदृशरीके अिम परम विश्वासघातसे अुमकी कल्पनाका सोना सूख चुका था।

भावनाओं नकारके यन्त्री देशोंमें, सभी वादोंमें वर्तमान रहती है। यदि मौपासा अपनी कथावस्तुका दायरा बहुत बड़ा देना तो समझ था कि अमकी फ्रेंच नारी जीवनके चित्रणकी विशेषता समाप्त हो जाती।

मौपासाकी कहानियोंमें (तत्कालीन कथा विरासतकी दृष्टिसे) कहीं कौशली सामी नहीं। अकेलेक शब्दभंगीनेकी तरह जडा है हर अके शब्दमें काट चमक और गुकीलापन है। अमके कथानक अत्यंत रोमाचक, कुतूहलवर्द्धक और स्वाभाविक है। कथावस्तुके आधार पेरिसकी साधारण और अमीर ओल्लों हैं— वेण्याओं, अभिनेत्रियों, गुलाबी गालोवाली ग्राम्य कन्याओं, सामान्य और ठाकुरोकी ठकुरानियां आदि। अिन सबके साथ गोपण, धोना, झूठ, सपय, अनुदारता, अुदारता, दुखकी कटुता, सुयका सतीय, पराजितोकी यन स्थिति आदि अनेक भाव-भावनाओं गुम्फित है। मौपासाने अपनी कथाओना सुजन अत्यन्त कौशल और चपल धर्मके साथ त्रिया है।

अम समयके साहित्यर अपनी रचनाओकी पॉलिदा त्रिया कएले थे। अूर्वमें सीर लिखनेवाले शायरो की तरह तत्कालीन कथाकार भी कभी बार अपनी कहानियोंको काटने-छोटीते तराशने थे। अिससे यह स्पष्ट होता है कि वस्तुस्थितिस अधिक अुनका ध्यान बाह्य आवरण दीर विविधताकी ओर था। मनोरजन, रोमास और रोमास अुनके प्रथम लक्ष्य थे। मौपासा अिनमें भी आगे था। अुसकी छोटीसे छोटी कहानी भी पूर्ण मनोयोगपूर्वक अेव कलायय ढगने लिखी गयी है। यह कहानीके बाह्य स्वरूपका शिल्पी और आन्तरिक भावोका सूटा था। फिर भी, यह तो कभी-कभी महसूस होना ही है कि पूरा कहानीमें केवल सद्वाडम्बर और अेक ट्रिक है, अेक चमत्कार माय है जैसा कि हमारे रोतिनालीन शृंगारी कवियोंके वर्णनात्मक छंदोंमें मिलना है। अर्दनी, श्दानी रात, 'कचहरीका कमरा', 'कत्रस्तानकी रानी' आदि कहानियां अिसी कोटिकी हैं।

अेसा लगता है कि अिल्लेने समय, मौपासा अपनी कथाओंमें तन्मय हो जाता था। अभिव्यक्तिका कयेन रा.भा ३

अत्यन्त दुर्गम है। वहाँ तलवारकी धारपर चटना होता है। लेखक अपने पात्राके तन, मन, जीवनको अभिव्यक्त करते समय बहुत ज्यादा लिख जाता है विशेषकर अुन विषयाने, जो अुसकी विशेषताके अन्तर्गत आते हैं, जो अुने अधिर प्रिय हैं, स्पेकका तटय रह जाना, बडे सपनका काम है। अैसे समय लेखक अपनी समस्त अनुभूतियाको मूर्त रूप देनेका लोभ सवरण नही कर पाता। किन्तु भावोन्मेष, अभिव्यक्ति-आविक्षय, और अनुभूति अुद्वेगनकी सीमाको पहचाननेवाले कलाकार तटय्य रहकर अुननाही रस, रूप आकार और मायुय देते हैं, जितना पात्रों और पाठकोके लिअे आवश्यक है। मौपासा अपने पात्रोंमें अभिव्यक्त है।

भावानुभूति और अभिव्यक्तिमें अति अतिरेकसे रचनाके सौंदर्यकी मर्यादा भंग होनी है। वाक्य या कथाके समस्त बाह्य अुपकरण और आकाशित मूर्ति आन्तरिक मनोप्रदेशमें अेक समस्वरता हीनी चाहिअे। मौपासा अिसीना अुस्ता है। वह अपने अिष्टको शान शान परन्तु दृढतापूर्वक अुंठाओकी ओर ले जाता है, भाव कलशको कहीं छठकने नहीं देता। अनिच्छित, अनिष्टको, विरोधी पक्षको अिस कठोर धर्मके साथ धीरे-धीरे काटना है कि ब्रह्मा भी चाहे तो अुसे पुन जीवन नहीं दे सकते। अिसी कारण, मौपासामें जितनी कसक, वेदना, तीव्रता, सचाओ और स्पष्ट-वादिता है।

मौपासाके पात्रोंमें दो अद्भुत विशेषताओं हैं। वे 'कु' और 'सु' की दोना धुरियोवर स्थित हैं। यदि पात्र बुराओमें जाता है तो समस्त बुराओके स्मशानार भूतनाय शिवकी तरह शासन करता है। अैसे पात्राका साथ ही बुराओ है। यदि पात्र सन् चरित्र है तो अितना कि कभी हारता नहीं। जीवनका कौशली लोभ, मोह गत्ययमे अुन नही कर सचना। अिस कथनपर हमें प्रेमचन्दके 'होरी' की याद आती है। साधारण और निम्न वर्गके पात्रके लिअे मौपासा और प्रेमचन्दने समान रूपसे लक्षजियां लडी हैं। पोस्टमेन मेडेरिक रॉयल साशिमनका पापा, रस्तीका दुबडा और कण्ठहार अिमके प्रमाण हैं। बोभुंश नैतिकतासे मौपासा खूब सुलकर खेला है। 'बॉक ऑक

फेट' पठ लीजिये— काञ्चुत ह्युवत्तं, कानूदे, केरे लेम्दां और झुनकी वीवियाँ, आभिजात्यमें रहनेवाली पाश-विक्रताकी प्रतिमार्थें हैं । जिस वर्गके सदस्योंकी— अनैतिक असामाजिकताके विरुद्ध मोपासोंने अपने समयकी अग्रतिथील व्यवस्था और समाजके बीच रहकर भी बड़ी वीरतापूर्वक जग लडा है । 'वॉल ऑफ फेट'— 'वर्चोंका गोला' समालोचकोंकी दृष्टिमें पिछली अंक शताब्दीकी श्रेष्ठतम कहानियोंमें है । पचपन वर्ष पूर्व, श्री सेटबरी— जिसे मोपासांकी कहानियाँ खास तौरपर पसन्द और नापसन्द नहीं थी,—लिखता है— "वॉल ऑफ फेट"— ट्रेजिक कमिडीकी अत्यन्त परिष्कृत अब रोमांचकारी रचना है । हमारे युगमें ऐसी कहानी कभी नहीं लिखी गयी ।"

सचमुच, जिस कहानीमें मोपासोंने कल्पनाकी अुत्तम श्रेणियों और यथार्थकी गहन गहराइयोंको वांध लिया है । वॉलम डॉकवेका कथन है— 'जिस कथा-द्वारा मोपासां अतिना अँचा अुठ गया है कि अुसने कहानीकी श्रेष्ठताका परीक्षण करनेवाले अँचेसे अँचे मापदण्डको भी छोटा प्रमाणित कर दिया है ।' वास्तवमें, 'वॉल आफ फेट' अँसी ही कला-कृति है । अुसमें जो गहरा, पैना और भारी व्यंग्य है, वह अुस वर्गको शताब्दियों तक बाटना रहेगा, जिसपर वह किया गया है ।

शोषक-वर्गका यह प्रमुख लक्षण रहा है कि अपनी स्वार्थपूर्तिके लिये वह किसीकी कुछ भी बलि देनेमें नहीं हिचकता । नीति और चरित्र, शास्त्र और शास्ताकी दुहाइयाँ देनेवाला अिमका व्यक्ति अपने परित्राणके लिये, वेद्योंके चरणोंमें लोट-लाटकर भी सब माँग सकता है और अपनी मुक्तिपर, लोह-बलतीसे निकले नागकी तरह फुटकारकर फन मारता है । जिससे अधिक कृत्घ्न और कमीना दूरमा नहीं । 'वॉल आफ फेट'के पात्रों द्वारा मोपासांने अिम मत्पकी मूर्तिमठ रूपमें रखा है । मोपासांने 'अिन पात्राकी नैतिकता' और अुनके अमम्य सम्चारोंने १९ वी सदीके अन्तमें कभी अंग्रेज और अमरीकी आलोचकोंको दुर्वांग बनाया ।

यदि अुसकी कहानियोंमें 'मानसकी फगन-गरस्त अग्रतियों और मुदरियाँका गधमरा चित्र है (कमरा न.

११, खलिहानकी लड़की, मेद्रमेजेल फिफि, वनमें, दानव, वाजियाकी अप्सरा, ब्याहकी रात और अन्याय), विविध वर्गोंके विचित्र पीड़ितो-शोषकोंके स्वरूप हैं (बेल, कलाकार, पगली, शिकार आदि) और शासक वर्गीय सामन्तो, महन्तो, सारे समाजकी अञ्छाश्रियों, सचा-श्रियोंके सौदागरो (मिस हेरियेत, मर्यू पेटेन्ट, मार्क्विस् द फ्युमरोल, साअिमनके पापा, अंग्रेज, दर्या आदि कहानियाँ) और नाअिम तथा पेगनसे मरे १९ वीं सदीके सजीव चित्र हैं तो अुनके लिये मोपासांकी अपनी नैतिकता, अनैतिकता अुत्तरदायी नहीं । साधारण-सी बात है कि अपने जीवनकी प्रबल परिस्थितियोंने अुसे अपने सामयिक समाज और अवस्थाका पर्याप्त अनुभव कराया । जो अुसे सहज सुलभ, अुपलब्ध हुआ, अुसका अध्ययन और प्रभाव अधिक सूक्ष्म रूपसे अुसके मन, मस्तिष्क और कलापर अंकित हुआ । अुस कालके मानव समुदाय और समाज-व्यवस्थाके प्रति अुसका अंक विशेष दृष्टिकोण बना । यदि मोपासांमें नैतिकता ही देखना है तो विलासिनी सामन्त कन्याओंमें क्यों न अुसकी शोच की जाये, वाजाः सेठानियोंके जीवनमें वह सहज-सुलभ न हो सकेगी, अुसे 'कण्टहार' कहानीकी नायिका मदाम लाबिजेलके चरित्रमें देखना अधिक सुगम होगा । क्योंकि कठोर परिश्रमके अुपरात भी वह अपनी अँचाश्रिये नहीं डिगती । नैतिकताका अर्थ क्या है ? अुसके मूल्य, मान और लक्षण क्या विविध वादोंने अपने विश्वासीके अनुरूप नहीं बदल लिये ?

साहित्यिक जीवनके अारम्भमें ही मोपासांकी पर्याप्त पूंजी और प्रसिद्धि प्राप्त हुई । अिलैंड अमेरिका और योरपके कभी देशोंने अुसकी कहा-नियोंका अनुवादकर अपने भाषा बोपको समृद्ध बनाया । भारतीय भाषाओंमें भी अुसने अुचित सम्मान पाया । हिन्दीमें अुसकी कहानियोंको ज्योत्सना स्यो लानेके प्रयत्नका मोभाष्य अिन पत्रित्तियोंके लेखकोंको मिला है ।

शायद मोपासां ही अँसा लेखक है, जिसकी कहा-नियोंके कथानकोंके आधारपर ससारके अनगिनती कथा-कारोंने अपनी कहानियाँ लिखीं । 'साहित्यिक चोरी' के साधारण विवादमें न पठकर, हम अिस मोपासांके लिये अद्वितीय सम्मान ही कह सकते हैं ।

पासका तो यह हाल था कि मोपासाँ जितना लिखता तुरन्त छप जाता। समाचार पत्राँमें अुसकी कहानियोंकी जबरदस्त माग रहनी। आजकी महाभाभीको भूलकर ७५ वष पूवकी दगापर विचार कीजिय, जब वस्तुके मूल्यको हिमालयकी चोटीपर चढनका ख्याल नही आया था—सब चीजें सस्ती थीं। अुस जमानम मोपासाँकी साहित्यिक आय २५०० रु प्रतिमास थी। पेरिसमें अुन दिनो अितनी आय किमी रओसी गानके लिअ पर्याप्त थी। पारियमिककी अिस आमदनीसे अपनी माँकी वार्षिक सहायताके अलावा मोपासाँ पूरी लगजरी से रहता। अुसकी आदत अुच्छी नही थी। अत आबभगतमें खच होनवात्री रकमका अंगज लगाया जा सकता है। पेरिसमें रहनवाले तत्कालीन लव्य प्रतिष्ठि चित्र-कलाकार गागिन पिसारो लावन वानगोक वगरह अुसके मित्र थ। अिन मित्रोकी मदलीमें सुन्दरियो के लिअ विशय आसन शासन था। अिनमें भी गागिन (विश्वका महानतम चित्रकार) तो लडकियो के बारेमें पूरा परमहम था। गागिनने चित्रकार वान गोकना जीवन बरवाद कर दिया यह कहकर भी अक प्रतिष्ठ पुष्पके विषयमें असा कहना कहातक अुचित है हम नही जानते।

मोपासाँका असावधिक देहान्त हुआ। अुसन आरमह या कर ली। रेजर ब्लेडसे अपना गला काट डाला। विश्वका अग्रतम कहानीकार असा करेगा यह कसे कहा जा सकता था? कथा-लोकम सवया तटस्थ पयवेवपण दष्टि मृष्टि रखते हूअ भी क्योकर मोपासाँ दुनियासे अिम प्रवार निराश हो गया? दुनियाकी सारी बुराओकी अुमने देखा। देखा ही नही सुना समझा पाया और परखा था। यह सब होने हूअ भी असी कौन-सी चीज थी जिसन मोपासाँकी अिस प्रकार बलिदान होनको विवश किया?

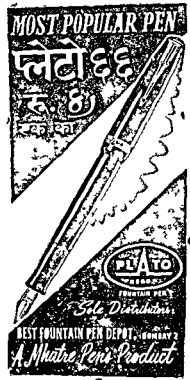
मोपासाँकी वह? (He?) और पागलकी डायरी अतिम कहानियाँ ह। अिसके बाद वह पागल हो गया था और अुसन अपना गला काट डाला। कलाकार वानगोकन तो अपनी प्रमिकाको क्रिमसके पर्वपर अपना फान काटकर भेंटर दिया था। 'वह? कहानी प्रथम पुष्पम लिखी गयी बडी ही

भयानक रचना है। अिसे पडकर कोओ भी पाठक अपन मस्तिष्क और मनको वगमें नहों रख सकता। हृदयकी घडकन बड जाती है और मौनकी परछाअियाँ सामन नाचन लगती ह।

' प्रिय मित्र सभी सम्भव सापनोंके बल भी तुम यह जाननम असमथ रहोग। तुम्हारा ख्याल ह म पागल ही गया ह। ही सकृता ह परतु अुस दृष्टिकोणसे नहों जिससे तुम निणय करते हो। हाँ म क्याह करनवाला ह। मेरे विचार और मेरे विश्वास बसे हो ह अुनमें कोओ परिवतन नहों आया ह।

अब आग म रात्रिमें अकेला रहना नहों चाहूगा। म यह महसूस करना चाहता ह कि कोओ मेरे विल्कुल करीब ह मुससे सटकर सोयो ह। अक आत्मा जो बोल सकती ह और कुछ भी कह सकती ह परवह नही वह चाहे जो कहे।

मेरी अिच्छा ह कि म अपन समीन सोयो किसी सुन्दरीको अगाभू ताकि म अधानक अुससे कोओ प्रदन



पूछ सकूँ और अन्तानकी आवाज सुन सकूँ। मुझे यह भान हो कि मेरे पहलू, मेरे अतना निक्कट अंक जीती-जागती जबगी हैं। 'कोओ' है—जिसे मैं चाहे जब रोगनी जलाकर देख सकूँ क्यों कि यह स्वीकार करनेमें मैं लज्जित हूँ कि अकेला रहनेमें मुझे डर लगता है।'

“तुम मुझे अभी भी न समय सकोगे भले आदमी, मैं किसी पतरसे नहीं डरता, - यदि कमरेमें कोओ आदमी आये तो यकीनन बिन हिचके और काँपे, अस्का खात्मा कर दूंगा। मैं भूतोसे नहीं डरता, और न मुझे प्रेनाताओपर विश्वास ही है। मैं मरे लोकोसे भय नहीं खाता क्योंकि मैं जानना हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति मरनेपर खत्म हो जाता है।

हाँ, तो हाँ, कहना ही पडेगा, मुझे अपने आपसे भय लगता है, मैं 'भय की सनसनीसे डरता हूँ। मैं धोला हूँ तो मुझ अंसा लगता है, मैं अपनी ही आवाजसे डर रहा हूँ। यदि चलता हूँ तो लगता है दरवाजेके पीछे, पर्देके पीछे, आत्माकी पीछे और बिछोनेके नीचे कोओ छिपा हुआ है, कोओ है। मैं यह प्रतिपल समझता हूँ कि वहाँ कुछ भी नहीं है, फिर भी, मैं तत्काल सहसा मुड़कर देप लेता हूँ, चूँकि मैं अस्से डरता हूँ जो मेरे पीछे है। अस्का साथ मुझपर मंटराया हुआ है, यह बयन मूर्खतापूर्ण है, लेकिन सच है। 'बढ़' कीन और क्या है? मैं जानता हूँ कि मेरी कायर-बल्पनाके अतिरिक्त अन्य कहीं अस्का निवास नहीं। वह मेरे भय और मेरी पीडामें पैठा है। बट्ट हो चुका यदि मैं कमरेमें अकेला न होना और हम दो होते तो निश्चय ही वह भाग लडा होता, क्योंकि 'वह' कमरेमें अस्त लिअे आता है कि मैं अकेला हूँ, साधारण कारण है कि मैं अकेला हूँ, और अकेला हूँ।”

अब 'पागलनी शायरी' के कुछ अवतरण देसिअे—

“जून २०—१८५१. अंसे जओ लोकोसे भेंट होती है कि जिहें हृषामें आनंद आता है। हाँ, हाँ, अिगमें मजा आता ही चाहिअे। सबसे ज्यादा मजा बत्तमें है, क्या बत्त, मोहनके समान नहीं है? निर्माण और नाश। अिन दो लक्षणोंमें दुनियाँकी तथारील छिपी

है। तमाम धरतीका अितिहास— बस, यही सब है न? तब मारनेमें मजा क्यों न आये ?

“जून २५— यह सोचना कि अंक जीव है जो, साँस ले रहा है, जोचित है, चलता फिरता दौडता है, वाह खूब कहा जीव! जीव भला क्या चीज है? जीवन अंक जरा जो धरतीपर रंगता रहना है और मैं नहीं जानता, जीवनका यह नाचीज कतरा कहांसे आता है, लेकिन कोओ चाहे तो जिसे अपनी मर्जीपर मार सकता है, तब, तब कुछ भी नहीं घचना। यह ओपल हो जाता है, यह खत्म ही जाता है।

‘जून २६— तब बनाजिअे, हृषाकी अरराप क्यों बताया गया? हाँ, क्यों? बजाय हयाके, यह तो प्राकृतिक नियम है। हर अंक 'प्राणीका घर्म है— कितोको मारे। हर अंक, जीवित रहनेके लिअे माता है, मारनेके लिअे जीता है। पशु प्रतिपल मारता रहता है। मनुष्य अपनेको शक्तिमान् बनानेके लिअे निरन्तर हृषाअे करता है। लेकिन, अिअेके अलावा, मडेके खातिर भी यह खून करता है, अितीलिअे तो अुमने बत्तका आविष्कार किया है। बालक दिनभर कोडोंको मारता है, नहीं चिडियाँ, छोटे जानवर वगैरह जो भी अुसके रास्तेमें आते हैं, मरते हैं। लेकिन, हमें बत्लेआमकी जो अदम्य प्यास और ललक है अुसकी पूनि अिअेसे नहीं होती। पशुओको मार लेना ही काफी नहीं है। हमें चाहिअे कि आदमीको भी मारें। पूर्वकालमें अिअे आदम्य कताका प्रतीक 'बलिदान' था। अब तो समाजमें जीवन व्यतीत करनेकी जहरतने हृषाकी अरराप बना दिया है। हम हृषारेको मजा देने हैं और धिक्काले हैं। फिर भी हम अितनैसगिक अेव अनिशाय अिच्छाका शमन नहीं कर सकते हैं। यह हममें सनत जागून रहती है। और अिअेका शमन करनेके लिअे हम समय २ पर जग छेडते हैं। तब तो आनदका मंगल समाटोह आरम्भ होता है। पूरेके पूरे राष्ट्र दूमरे राष्ट्रपर चड दौडते हैं और अुसका पूर्ण विध्वन कर प्रसन्न होते हैं। यह खून और रूट धोडियोंकी दावत है, अेक अमी दावत है, जो सेनाओंकी विशिषत और नागरिकोंको पागल कर देती है। आबमी-ओरत और बच्चे होना हृषाम खो देते हैं और रातोंमें घोबे अिराण जन्म जलाकर अणुकारोंमें छे, हृषाकाअेकि बोभत वधन बडे समाटोहपुनैक

मिलजुलकर पड़ते हैं। जवाब बीजिजे, क्या हम धन लोभोकी धिक्कार सकते हैं जो अन्तानकी हत्याके कारण हैं जिन्होंने ये कल्ले आम जारी करनेके हृषम दिये हैं। परन्तु नहीं, हम झुलटे धनकी विधिय अध्याधियोस्ति धिभूषितकर अपना गौरव बढाते हैं। अन्हे सोने और जरीकी पोझाये पहनायी जाती हैं, धनकी टोपियोंपर घुरें लगते हैं और धनके सीनेपर जेवर-जवाहरानके सगमे जगमगाते हैं। अन्हे डॉम और लीजन आँक आँकर मिलते हैं। सलामियाँ दी जाती हैं। पमन्डके ये पुनले अहकारके मदसे भर जाते हैं। गुन्दरियाँ धनका प्यार पानेकी प्रतियोगितामें प्राण गँवाती हैं। भौड़की भौड़ धनका जय जयकार करती हैं। क्यों साहब केवल अिमोलिअे न कि धनका जोवनोद्देश्य मानवमाप्रका रचत महाना, ह्रयाअें धीर कल्लेआम करना है। जब ये अपने मोतके हृषियार घामे गलियोस्ते गुजरते हैं तो लोम रतम्प रहकर मनही मन धनकी धानसे ओर्ष्या करते हैं। बयोकि, ह्रया करना प्रकृतिका प्रबल नियम है जिसे धुसने प्रत्येक प्राणीके हृषयमें प्रतिष्ठित किया है। सतारमें ह्रया और कल्लसे अधिक सम्मान और आनन्ददायक दूसरा काम नहीं है।

मृयु नियम है,—बयोकि प्रकृति शाश्वत योवन चार्ती है। अँसा लगता है यह अपने प्रत्येक कार्य-कलापमें अतजाने ही पुकार रही है, जप्दी करो, जल्दी करो, जल्दी करो। ज्यों-ज्यों यह विनाश करती है, र्यों-र्यों धुसकी जबानी नया रग साती है।

× × ×

परन्तु आि अद्वरणीजे आपारपर भी हय यह माननेको तैयार नही कि 'वह?' और 'वागलनी डायरी' मोपासाँकी विकिपस्त प्रमाणित करती है। अुपरोक्त अततरणोद्गारा विश्वके अगणित रोनानामकी, परा-त्रमिया, सिक्न्दरा कृत्तिम विजेनाआ, नादिरशाहा और हिटलरोपर ब्यग्यना जो वञ्चपात किया गया है वह विश्व साहित्यमें सर्वथा दुर्गम है। मोपासाँ-जैसा महान् कला प्रभु ही यह कर सता था। मुद्धने विषय कितनी अटल अपील अिन पक्कियोमें है? मोनकी जीवका व्यापार बसा देनेवाले बगोंके वाले बगालोपर कँसा करारा घपत अिनमें है?

कीन कह सक्ता है यह सब लिखनेवाला मोपासाँ लेखन शालमें पायल था। यह 'मानवता' और 'अमर जीवनकी आवाज है, माग है। नातिद्वारा पेश की गयी न्यायकी पुकार है। अपनी कअी पहानियोमें मोपासाने शाति और मानवताका पक्व लिया है। युद्ध और ह्रयासे अुमे अुसनीही घृणा थी जितनी रोम्मा या गांधीकी। 'पगरी' नामक कहानीमें युद्ध विरोधी बाला-वरणजे जरिये, अुसने यही नाति-नारा बुलद किया है —

"तब भेडिये अुमे निगल गये। पछियोने अुसके षीयडे और बिछोने काटकर अपने पोसले बसायें और भेने अुसकी हृडियोको समेटा। मेरी पही प्रायंता है कि हमारी सन्तान कभी 'युद्ध' के इर्जन न करे।"

—अँसे मोपासाने आत्महत्या क्यों कर ली? विद्वान कभी अेकमत नही हो सते हैं। जिन कारणोसे मोपासाँ सहीद हुआ, ये कारण साधारण अेव ब्यक्तिगत नही हो सकते। ब्यक्तिये रूपमें यह अितना समर्थ अवश्य था कि अपनी पीडाको देलता-गरपता और बर्दासत करता। अवश्य अुसने फा-मीमी समाज व्यवस्था और शासनमें, परिचिनो और अग्य लोभोमें अिस सीमा तक संडाद, शोषण, लूट, ह्रया अनाचार, कृत्घ्नता, धोया देला कि वह अूब अूठा और आत्महत्या कर ली। जँसे मराठीजे प्रसिद्ध लेखक साने गुहजीने अपने जीवनका अत किया।

अिसके आतिरिक्त, सच जात तो यह है कि मोपासाँ जिस बर्गके लिअे अूठा, अुसकी कमजोरियोकी जानने हूअें भी, अुन कमजोरियोके कारण और अुन्हें दूर करनेका सही तरीका न सोज सका। अुस बर्गकी विरोधी बगते सतन सपई करनेकी ब्यमता नही दे सका, न अपने लिअें ही यह सपयेंसीलता रग सका। मोपासाँके पात्रोमें दुर्गनेनाकी अनुपस्थिति है। सम्भवतया यही कारण है कि मोपासाँ अिमिजात्यो और शोषणोजे विषय अपने पात्रोकी मेदानमें लानेमें अतमर्थ रहा। सचेउन सपयेंगीक ब्यक्तिन कभी आत्महत्या नही करता। कुछभी ही मोपासाँ विश्व कथावपेनका ज्वलत ज्वालासुधी है।

आधुनिक तेलुगु काव्य-प्रवृत्तियाँ

: श्री चारणासि राममूर्ति 'रेणु', अेम. अे. :

आचार्य श्री रामप्रोडु सुब्बाराव तथा महाकवि गुरजाड अप्पाराव वर्तमान तेलुगु काव्योद्यानके अंशे कोकिल हैं, जिन्होंने अपनी मधुर काकलीसे कविता-सरस्वतीका आवाहन किया था तथा अुस वीणा-पाणिके चरणोंपर स्वागतञ्जलि, अकर-सुमनाञ्जलि चढा दी थी । वह प्रभात सचमुच समूचे आंध्र प्रदेशके लिये नव जागरणका परिचायक सुन्दर सुप्रभात था । स्व श्री महाकवि गुरजाड अप्पारावजीने देश-प्रेमका सहस्र फूँककर जनताकी दृष्टि अपनी मातृभूमिकी ओर अिन घाटामें, अुमुख कर दी कि—

देशमनिषेडि दोहूवक्षयम्
प्रेमलनु पूलेतवलेनोयु ।
आकुलदुन अपाणि मणगी
कवित कोकिल पलकवलेनोयु ।
पल्लुल्लु विनि देशमदमि
मानमूलु मोलकेतवलेनोयु ।

(देगरपी महानु वृषभमें प्रेम प्रभून निकल आअें ।
पल्लवोंका रागारण अवगुण्डन लिये कविता कोयल कूक
अुठ, जिसके श्रवण मात्रसे देगके अणु परमाणुमेंसे
आत्मानिमानके अड्डकुर फूट निकले ।)

—श्री आचार्य श्रीरामप्रोडु सुब्बारावकी हृत्तंत्री
प्रेम-भाषुरीकी स्वरलहरियासे स्थावर-अंगमकी भाव
विह्वल, आनन्द विमोह बनायी रही । अुहें तो दुनिया
अेक सुन्दर फूलवारो-सी लगी ।

“तारल्लप्रनु, मधुल्लप्र, तनंपुल्लप्र
पुल्लुमल्लप्र, गीतमल्लप्र, पूवुल्लप्र
नाम वाचक भेदमूलु भाषुमात्र
मन्निमुनु अड्डले यणु नाम दृष्टि ।”
तारिकाअें, मणिअें, लडके-लडकियाँ, पक्षयोग्य,
गीत तथा सचप सुमन अिन सबमें नाम भरका अतर
है । ठावठ मुझे तो सब फूल ही लगते हैं ।

अंसु सुमन-सड्डकुल सप्तारमें जम लेनेवालोंका
अेक ही लक्ष्य हो सकता है—प्रेमकी अुपासना । प्रेम
पराङ्मुख मानवाको देखनेपर वे अित्तने व्यपित हो
अुठते हैं ।

सच्चिदानंद कल्याण सदन मंन
श्री मनोहर अगतिकि नेगुदोचि
प्रेम-लक्षिम नाराधिपवेमि यकट !

(हे मित्र ! यह कंसी विडबना है कि) तुन
सच्चिदानंद कल्याणके निलय अिस जातीपर अवतीर्ण
होकर भी, प्रेमलक्ष्मीकी आराधना नहीं करते ?

कुछ-कुछ अिसी तत्वको स्व महाकवि अययकर-
प्रसादजा भी अपनी जीवन-यात्राका पापेय बनाकर
चले थे ।

यह लीला अित्तकी विवस चली
वह मूल शवित भी प्रेम-कला
अित्तका सदेग-मुनानेकी
समृत्तिमें आयी यह अमला ।

—(कामायनी)

अिस प्रकार आधुनिक तेलुगु साहित्यका श्रीगणेश,
देशभक्ति, समाजसुधार तथा अमित प्रेमवृत्त अिन तीनोंके
साथ सघन हुआ था, अिस २० वें शतीके प्रथम दशक
ही में । स्व अप्पारावजी देशभक्त तथा पुरानी
रुझियके धोर शत्रु सुधारवादी कवि रहे । श्री सुब्बा
रावजीकी काव्य-दृष्टि तो आरम्भसे लेकर आरतक
निसाँ जनिव तथा शुद्ध रही । येही दोनों आधुनिक
काव्य-यगनके मूर्धं अेव शक्ति सिद्ध हाव हैं । अिस छोटी-
सी नूनिवाके बाद हम समूचे आधुनिक तेलुगु काव्य-
साहित्यकी प्रथम प्रवृत्तिषोका अुल्लेख, अुदाहरण
सहित करेंगे ।

१. प्राचीन संस्कृतिका परिपोषक काव्य विधान :—

२० वीं शतीमें आकर जनताका ध्यान अपने सनातन आर्य-धर्म अथवा प्राचीन संस्कृतिके खिचकर हेतुवाद तथा नास्तिकताकी ओर अप्रसर होने लगा है। 'काम' तथा 'मिथुन' का अहितकर प्रचार जोर पकड़ता जा रहा है। अग्रजी शिवप्राणाली रही सही कसर पूरी कर रही है। अंभी स्थितिमें धर्म और सदाचारसे दूर जा पड़नेवाली जनताके हृदयोंमें अतः विपरीतों पुनः प्रतिष्ठाकर सनातन सांस्कृतिक ध्वजा फहरानेकी सद्भावनासे प्रेरित होकर कुछ कवियोंने लेखनियाँ बुझायीं। अिस श्रेणीके अग्रणी कवियोंमें श्री विश्वनाथ सत्यनारायण आचार्य, शिवशंकर शास्त्री, गोरि गरसिंह शास्त्री, पुट्टपति नारायणाचार्य, गुदिमेल्ल रामानुजाचार्य, वेङ्कूरि वेङ्कट नरसय्या वगैरह हैं। पादचार्य रगमें रगे अपने आलोचकोंकी अपेक्षा, श्री विश्वनाथ सत्यनारायण किस दृढ़ता अथवा आत्मविश्वासके साथ करते हैं, जरा देख लें—

लेत बुरलु कोविक्किरस्ते
आतगाळ्ळतो येमिगानी
तान तातलनाटि कथलु
श्रिश्चपोस्वानोय ।

(यदि कच्ची खोपडियाँ मेरी हँसी बुझाती हैं तो बुझाया वरे । मुझे अतः कब परवाह है ? मैं तो बाप-दादोके जमानेकी गाथाओं छोड़कर डेर लगा दूँगा ।)

“ विघ्नेरसानि पाटनू रायरायण वल्पद्रुममु कवि-प्रिया, 'सहजयान पथी', पेनुगोण्ड लन्पुी, सावपात्कारमु, शिवलाण्डवमु 'मगुव माचाला', 'माण्डवी' वगैरह अिम ढगकी कृतियोंमें अस्लेखनीय हैं ।

२. गौचारणवाली (Pastoral) कविता पद्धति :—

गँवओ गाँवाके स्वस्थ, स्वच्छ अथवा अकपट वातावरणमें रहनेवाले कतिपय कवियोंने प्रामीण जीवन तथा अुससे सबद्ध दृश्यावनको ही अपने काव्यका विषय बना लिया है। अंसे काव्य-विधानके सप्टाके रूपमें स्व० श्री

वनवराजु अप्पारावका नाम मादर लिया जा सकता है । अिस रीतिकवा श्रेयणेश अिन्होंने अपने 'निशंर सगीत' (सेलमेटि गानमु) के साथ किया था। यह प्रणाली काव्यप्रमंजो तथा काव्यरसिकोंको अितनी अच्छी लगी कि देखते-देखते अनेक रस-सिद्ध कवि तिलकोने अुसको अपनाया और तेलुगु साहित्यको 'रूपीवल्लुडु', 'वनकुमारी', 'वपेन्नलन्पुी', 'येकि पाटलु' अंभी सरस रचनाओं प्राप्त हो गयीं। सर्वश्री दुधूरि रामिरेट्टी, येङ्कूरि वेङ्कटनरसय्या, नडूरि सुब्बाराव, अडिधिवापिराजु विश्वनाथ सत्यनारायण वगैरह अिम श्रेणीके अत्यंत लोकप्रिय कवि हैं । अिस प्रकारकी रचनाओं सिष्ट ध्याकरण समत भाषा तथा देहाती बोली दोनोंमें लिखी गयीं हैं। नडूरि सुब्बाराव तथा वापिराजुने बोलचालकी जवानका ही सर्वत्र व्यवहार करके देहाती तेलुगुकी मिठासमें लोगोंको छका दिया। अथवा अुराधारण सुब्बारावकी 'अंकि पाटलु' से लीजिओ ।

'अतिस्नेह पापशकी' प्रेमकी आत्यंतिकता हमेशा प्रियपाशोके शारीरिक-कुशलको लेकर मसक रहा करती है। गँवओ-गाँवकी प्रीतिपतिका 'येकी' के दिलकी घडकने वितनी करुण है ।

डूरान नाराजुके राविडोनी !
अीरोजु नारात से रालपालो !

सोम सितुकन गाने सेदरि पोतदि मनमु,
काकम्म सेतैन कवुरपडाराजु ! ॥ डूरान०
कळ्ळ केदो मसक कम्मिनटलुटावि,

निवरले नायोल्लु नीरिसस्तुग्रादि ॥ डूरान०
तुल्लिस्तेम घोरिगदि, तोल्लिपूस पैरिगदि ।
मनतुलो ना थोम्म मसक मसकेसिदि ॥ डूरान०

हाय ! हाय ! डूर देशमें रहनेवाले मेरे राज (प्राणेश्वर) सकटमें होंगे । जाने मेरा भविष्य किन लकीरोसे अंकित हो रहा है । बीटीके चलनेकी भी आहट पाकर यह मन जाने कैसा डुआ जाता है । हाय, यह तो अपना सदेश तक कौअेसे नहीं भिन्नवाने । आलोचन जैसे कौअो पतली बदली-सी छा गयी है, सारी देह किसी तडालस विवशतामें शिथिल पडती जा रही है । हाय, हाय ! तुलसी चौबरेका यह पोषा तो

नीचेकी तरफ झुका जाता है। मेरे गलेका हार (टूट) बढ चला है। मन-मन्दिरमें बैठे प्रियकी मूर्ति तो घुघली पड गयी है। जाने मेरे परदेसी प्रियतम किस सकटमें होंगे।

३. प्रेम-प्रधान काव्य-सर्जना :—

आधुनिक नेलुगु कवियोंमेंसे प्रायः सबके सब न्यूनाधिक मात्रामें प्रेमके विविध रूपोंको ही अपने काव्यके विषय बनाकर चले हैं। अंग्रेजी कवि कीट्स, शैली, ब्राउनिङ्गकी रचनाओंके साथ साथ बंगलाके कवीन्द्र रवीन्द्रके गूढ-मधुर प्रेम-तत्त्वसे भी जिनमेंसे अनेक कवि—विशेषकर गीतिकार—प्रभावित हुये हैं। किन्तु यह प्रेम तो विभिन्न व्यक्तियोंमें अनुभूति भेदके कारण विभिन्न नाम धर बैठा है। कहीं वह रति (दम्पति प्रेम) का रूप लेता है तो कहीं 'भैत्री' का और कहीं प्रकृति प्रेम तथा अग्यत्र मातृ-भक्तिका। जिससे स्पष्ट है कि जिस प्रकारकी रचनाओं बहुधा आत्माथयी (Subjective) हुआ करती हैं। कविता विषय प्रधान न रहकर विषयी प्रधान बन जाती है और सर्वत्र अेक प्रकारकी स्वच्छन्दताकी छाप लिये चलती है। प्रेमको अपने काव्य जीवनका सम्बल बनाकर चलनेवाले कलाकारोंमें सर्वथी सत्त्वावसल शिवदाकर शास्त्री, देवुलपल्लि कृष्णशास्त्री, नायनि सुब्बाराव, नाळम् कृष्णाराव, अडिवि वापिराजु वेदुल सत्पनारायण शास्त्री आदि प्रधान हैं। जिनमें श्री देवुलपल्लिका काव्य जीवन दुसरे आविल है, अुसका 'कृष्ण पत्र', ही अधिक चित्ताकर्षक है। आचार्य शिवदाकर शास्त्रीकी 'हृदयेश्वरी', कृष्णशास्त्रीकी 'जुवंसी' तथा वापिराजुकी 'शाशिफल', जिन 'तीनाही कल्पना प्रायः अेक-सी है। फिर भी अनूपर अपने निर्माताओंके सबल व्यक्तित्वकी छाप स्पष्ट गाचर हाती है। 'हृदयेश्वरी', 'बकुलमालिका', 'कविप्रिया', 'पद्मावती', 'अर्जुनी', 'शाशिका गीतमल', 'सोमद्रुति प्रणययात्रा' वगैरह दर्जनों रचनाओं रस-रूपत मुमन चपक हं जिनकी मिठान अेव मोरमने तेलुगु काव्योद्यानकी वचारिया महान रही हैं। अेक-दो बुदाहरण देसं—

(अ) श्री देवुलपल्लि कृष्णशास्त्रीकी निम्नलिखित पक्तियोंमें, समूचा विश्व किमी विराट् सत्ताके विरहमें, प्रेममें आकुल-व्याकुल होकर, बदम्ब-सा फूलकर मानो, "कर्मदेवाय हविषाविधेम!" वाली विरमयकारिणी वैदिक रागिनी, सुनाता नजर आता है, तो कविकी चकित आत्मा अेक बृहत् प्रश्नचिन्ह लगाकर अपनी जिज्ञासा प्रकट करती है।

सौरममूलेल चिन्मु पुष्पजंजु ?
चन्द्रिकल नेल वेदजल्लु चंदमाम ?
अेल सलिलबु पाथ ? गाड्पेल विसथ ?
माथि गुण कोम्मनु मधुमास वेळ ?
वल्लवनु भेविक कोअिल पाडुडेन ?

अर्थात्—

सौरभ क्यों वहा देता है, सुमन ममूड ?
चन्द्रिकाओं क्यों विश्वेरता है चन्द्रमा ?

यह सलिल बहना क्यों है ? पवनका प्रसार किसलिअे ?
रसाल पल्लवोका कलेवा करके, अबुआकी डाठिसे,
मधुअुतुमें, मदमाती कोअिल पाती किमलिअे है ?

(आ) मुगल बादशाह शाहजहाँ तथा बेगम मुमताजके प्रेमके अमर प्रतीक ताजने, न जाने कितने कवियोंकी कल्पनाको जीवन-दान दिया है। दो शरीर तथा अेक हृदय लिये रहनेवाले अंन प्रेम विहगीकी पवित्र गायिका गायन 'रसाल तथा माधवीलना'के रूपके सहारे स्व वसवराजु अन्पारावजीने जिन प्रकार कर दिया है—

माथिडि चेट्टनु अल्लुकोप्रदी माधवीकोतोफीदी,

अेमा रेंडिटि प्रेम सपवा ! अितितनराडू !

चूडलेनि पापिटि तुपानू, अूडवीके लन्नू !

अोडे पोयी माथिडि चेट्टे मोगमू वेलवेसे !

मुच्चटेनू आकुल कायणने वेच्चनि कन्नीओडुवी !

पच्चनानुला योग्गारिटिलो पडोशकटि रालवी,

माथिडि चेट्टे माधयिलतनो मायलो कलिातिदी !

कामिन विच्चे माथिडि पग्गू कडुलकु मिगिलिदी !

सयोगकी बात है—

किसी रमाल्ने अेक माधवीरत्ना लिपट गयी।

दोनोंका प्रेम-सौंदर्य तो अवरुणनीय बना रहा !

सहमा पापी तूफान अठ राडा हुआ—

अससे यह निर्मल प्रेमन देता गया / न देला गया /
हाथ / देरते-देरते माधरी जड़ समेत अण्ड गयी /
बेचारा रसाल नीरस नीरव टूट बना रहा / और
गवनाभिराग पत्र दुग्पाके गर्म आसू बहा डाले /
अंक राजे-राजाये परीदेमें गिरा दिया अंक फल /
फिर यह रसाल भी माधवी ल्पनाये साथ
विगीत हो चला मायामें ! और आज जिस
धरतीपर रह गया कविपोकों काव्य बरसाने-
वाला आम ।

४. अतीतके गौरव-गानका विधानः—

भारतका अतीत अत्यंत गरिमामय तथा ज्वलन-
शील रहा है। अससे कितने ही गौरवमय व अद्भुत
प्रसङ्ग हैं जिनसे स्पदाशील कवि हृदयमयी कल्पना
प्रेरणा पाकर अमरत्वको प्राप्त करती रही है।
'सौंदर्यदामु', 'राणा प्रताप सरिद्रमु' तथा 'शिव-
भारतमु' ये तीनों महाकाव्य आधुनिक काव्य साहित्यके
बेजोड़ रत्न हैं, जिनसे कि प्रमत्त भारतीय अति-
हासके बोधयुग, राजपूत तथा महाराष्ट्र युगीन भास्वर-
धातावरणकी विरणे छूटती रहनी हैं। सरंधो पिगळि,
कादूरी कविद्वय, राजसेखर धातावधानी तथा गद्यधारम्म
वेकटक्षेप शास्त्रीजीने ये तीनों काव्य रचकर तेतुगु
साहित्यका मस्तक सम्पन्नत किया है। अिन अतिहासिक
महाकाव्योंके अतिरिक्त कितनेही कवियोंने टाण्टकाव्योंके
रूपमें अतीतका गुणगात किया है। स्व० श्री बोडालि
मुष्पारावकी 'हमीकवेत्रमु' पुष्टपति नारायणाचार्युलुकी
'पेनुगोड लक्ष्मी' तथा अदूरि वेकटनरसय्याजीकी
'गलगाटि भारतमु' आदि अिग दिशामें सुलेखनीय
रचनाओं हैं। गत-विभवा 'पेनुगोडलक्ष्मी' के अवे
पुचे शिल्प सौंदर्यने रससिद्ध कविये हृदयमें भावोका
जो तूफान राडा कर दिया है, असकी तीव्रताका
अनुभव तनित्र कर लीजिये ।

स्वर्गकी अप्ताराओंकी भी मात करनेवागी प्रस्तर-
मुदरिषोपर दृष्टि पड़ते ही कविकी भावना मातों
अमूह पड़ी ।

रा भा. ५

कुलकुञ्जगुल अचुचुप्रपदि,
सिगम्नू जीलिच प्रोवाडु नभ्युत्तो,
कचिच विसयु नल्कोपिपि,
यो पुवोडि येवानि भावलता स्वर्ण मुमयो !
नेटिकि नपूयं प्रीडि, कचिचु मा
सल्लुपुल्ल, तीकषणमुल्लेन मन्त्रमुल्ल
चेतय्योले नाडिपुचुन् !

नाज-अन्दाज भरी अपनी तिरछी नजरें, लज्जा
पटके सार सार करती हुआ, चारों ओर फँकनेवाली,
तथा ओठोंसे फिसल फिसल पड़नेवाली मुम्कानोंमें
कच्चा जहर घोल्कर पिलानेवागी यह कुसुम-वाला
(श्री मूर्ति) जाने किस कलाकारकी भावलापर सिला
स्वर्ण गुगन है ! आहा ! (३०० वर्ष बाद) आज भी
प्रस्तर मन्त्रापररोरी तरह अमोघ शक्ति रचनेवाली,
अपनी कुसुमताये मह (प्रतिमा) तो हमारी भावनाओंको
चुरा रही है ! हमें कमाल बनाकर मनमाना नाच
नचा रही है ! बाहू री कुसलता !

अलिलो, वेनेल सोनलन जिलिकि, धीयोडधारि,
शिर्त्रिषु वेळल मा दिलिपिनि मन्नु गोसलनु धारल्ल-
ट्टनेनो जलपुल्ल,
चेवोपि सेमचिपुंडु मनुकोट्टुन्,
भावनयेश भगुल्लु पंपे जेलरेग,
मदुडु गोनिपुडुन्, प्रेम विघ्नोतुडुं !

छेनीमें सहृदके पत्थारे छिडककर, जिस प्रतिमा
की स्वरूपदान देते समय मेरा हयाल है, अस (अज्ञात
नामा) सिल्लीके नेत्रांचल फर्क फर्क करस पडे होंगे,
असकी हृदयलियोंमें स्वेदकण छलके हागे ! निरचयही
असने भावावेगके अमग भर्गोंके अफानये तग आकर
प्रमके भँवरमें फँसकर (जिसे) लपककर चूम लिया
होगा !

बंसी भाव विद्धता है ! अपने स्वर्गकी वृद्धिको
भी कषकरमें डालनेवागी बंसी काला-कुसलता है !

५. दलित मानयता तथा राष्ट्रीय भावनाका
प्रतिनिधि काव्यः—

अस्पृश्यता तथा धुँव-नीचका भेद भाव हमारे
सामाजिक जीवनमें कौककी भाँति पुतकर, अससे जीर्ण-

शीर्ष बनाते आय है। अन्तसे राष्ट्रको छुटकारा दिलानेके शुभ अनुष्ठानमें राजनैतिक नेताओंके मिह-गर्जनके साथ-साथ काता सम्मत कविवाणीभी अपना करण मधुर तथा मर्मस्पर्शी संगीत सुनाती रही। जिस दिशामें मधुर षड्वि श्री, गूरंम जोषुवाकी सुन्दर कृतिपाँ 'गव्विल्लमु' तथा 'अनाया' विशेष रूपसे झुल्लेखनीय हैं। अिनमें पहली रचना अेक सुन्दर मदेश काव्य है जिसमें हरिजनकी दुर्दशाका अतीव करुण चित्र खीचा गया है। इसी कविकी अेक और रचना 'फिरदौसी' भी अत्यंत लोकप्रिय है।

भारतीय स्वतंत्रताके साथही, अलग आन्ध्र-प्रदेश निर्माणके लिये आंदोलन पिछले ४० वर्षोंसे चलता रहा है, जो कि इसी वर्ष विगत १ अक्टूबरको अस्तित्वमें आया है। अिस आंदोलनमें भी स्वतंत्रताके आंदोलनकी भाँति कवियोंने अपना आर्थिक सहयोग प्रस्तुत कर दिया है। स्व श्री गरिमेळ्ळ सत्यनारायण, श्री विद्वनाथ सत्यनारायण, श्री राम प्रोल् मुब्बाराव, श्री दाशरथि तथा श्री तुम्मल सीताराम मूर्ति चौधरीजी की रचनाओं अिस प्रसंगमें सादर स्मरणीय हैं।

कविवर जोषुवाकी 'अनाया' रचनाका अेक सुंदर प्रसंग लीजिये। किसी सकटकी तिकार चमारिनको अस्पतालमें भिक्तिसाके लिये छोड़ आनेवाले अपने दयालु पतिको किसी बट्टर ब्राह्मणीने तबतक घरमें पैर रखने नहीं दिया या जबतक अुसने सचल-स्नान नहीं किया। स्नान और भोजनके अुपरांत जब अेकातमें दम्पती बँठ गये तो पतिने पत्नीसे मृदु शब्दोंमें प्रश्न किया—

अलक शमितेना जलरुमादिन धंतने ?

मालदानि पिल्ल बडगड्डु घुचि बट्टळंडुग दप्तम नदुना मनोजलगम मंलबट्टुदि स्नानमू चेतने ?
वेरिदान योवेलुपल मुडि ओवलकु वेट्टने,
पोयने मूशितनिच्चुने ?

अरी पगली ! बाह्य स्नान करने मात्रसे तुम्हारा शोध अंतर गया ? अुम चमारिन नया अुमने सच्चोति दैन्यरी आँचसे मेरा मानस-नमन मुरझा गया है, अप-

वित्र बन चला है, क्या अुमने भी स्नान किया है ? फिर अिस बाह्य निर्मलतासे, भला, कोओ प्रयोजन सिद्ध होगा ? अिससे मुक्ति मिल सकती है ?

करुणासे अेतप्रोत कैसी कान्ता-गमित संजीवनी वाणी है !

६. प्रगतिवादीकी धारा:—

अिस प्रकार हम देख चुके हैं कि काव्य साहित्यमें राष्ट्रप्रेमके साथ-साथ प्रातीय भावनाने भी स्थान पा लिया है। समय तथा विज्ञानके प्रगति करनेके साथ ही जनताके दृष्टिकोणमें भी परिवर्तन आ गया है। वर्तमान सामाजिक धार्मिक अेव नैतिक व्यवस्थाके प्रति कुछ पट्टे-लिखते व्यक्तियोंका असन्तोष बढ चला है। अवि-विकसित आधुनिक विज्ञानने अिनकी दृष्टि अेकदम अपायिब और भौतिक बना दी है। अंसे लोगोंके विचारोका भी प्रतिनिधित्व वर्तमान तेलुगु काव्य कर रहा है। 'प्रगतिवाद' और 'अतिवास्तविकतावाद' अंसी विचार धाराके काव्य गत नाम हैं। अिस खेबेके कवियोंके अगुआ "श्री श्री" (अीरगम् श्रीनिवासरायजी) हैं। अिनके अनुसार कविताके लिये छंद, सौंदर्य, सचीमापा, यहतक कि भाव भी अुठने जरूरी नहीं हैं। कोअी भी शब्दममूह काव्य बहला सकता है ! अिस प्रकारके काव्यमें मानवताकी स्वाअी समस्याओंकी अुपेक्षा साम-यिक अेव सामाजिक विषयोंको ही अधिमान्यता दी जाती है। वर्तमान भौतिक प्रभुताको तिकार दलिन जनताका आकुल आत्रोस ही अुममें मुखरित होना है।

अपनी 'मिक्कुवर्षायसी' रचनामें 'श्री श्री' बड़ी हुअी अगीठी-मो किधी पेडके नीचे सिक्कुडी सिमटी ठिठुरनेवात्री भित्तिरिका करण चित्र खीचकर अतमें लिखते हैं।

आ अध्ये मरगिस्ते आ पाप येरवरिदिनि,
वेरिगालि प्रदिनस्त्रु वेळिपोदिदि ।

अंयुक मुक्क कोरुकुट्टु अेमी अनलेडु कुक्क ।

ओक ओगनु पडवेमुक तौदरगा तीलगे तौड !

"अिदि ना पापं काडने"

अेतिरि वञ्चि अंगिलाकु !

पगली हवा प्रदान करती निवल गयी—

“यदि वह बूढ़ी मर जाये तो वह पाप किसके सिर लगेगा ?”

पास ही पडी सूखी हड्डी कट-कटानेवाला कुत्ता चुपचाप सुनता रहा ।

कहीसे अंक गिरगिट झटसे लपका,

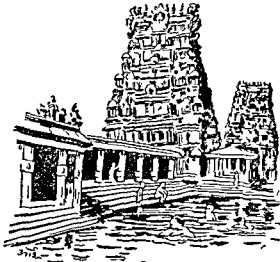
अंक मक्खीका शिकार कर वहाँसे हट चला ।

सर्रंसे जूटा पत्तल अंक, यह कहता अड आया—
“यह पाप तो मेरा नहीं है ।”

अबतक प्रसंगवत्ता अद्भुत नामोके अतिरिक्त सर्व-
श्री पल्ले पूर्ण प्रज्ञाचार्युल्लु, स्व० सुरवरम् प्रतापरेड्डी, देवु-
लपल्लि रामानुजराव, सी० नारायण रेड्डी, बन्नेगटि
वीरभद्राचार्युल्लु जन्ध्याल पापय्यशास्त्री, नारायणबाबु,
सपत्तुमाराचारी, पालगुम्मि पधराजु, मोचलं राम-
वृष्णय्या, अनिसेट्टि, सुब्बाराव शिष्ट्ला, सत्यनारायण
राजसोखरम, अंकिकराल वृष्णामाचारी, चाविलाल मोम
याजुल, पिल्ललमरि वेकट हनुमतराव, केशवभट्टल

गोपालमूर्ति, जोसफ, बोडवीटि वेकट कवि आदि किनने
ही ख्यातनामा कवितिलक वर्तमान तेलुगु काव्यकी
अलंकृत कर रहे हैं । लेखके कलेवरके बड़ जानेके भयसे
अन सबका अन्वेषण संभव नहीं रहा है ।

पुरयो ही की भाँति महिलाओकी स्तवनीय सेवाओं
भी आधुनिक तेलुगु काव्यको पर्याप्त मात्रामें प्राप्त हैं ।
अिनमेंसे मुथी काचनपल्लि वनकाबा, कनुपति वरल-
क्षमम्मा, गुड्डिपूडि अिदुमती देवी, चित्तपाटि सीताम्बा,
गण्टि कृष्णवैणम्मा, स्यानापति रुक्मिणम्मा, मदमचि
अन-तम्मा, पुट्टपति कनकम्मा, तन्नाप्रगड विस्वसुंदरमा,
सौदामिनी, बगारम्मा जिल्लिदल भरस्वती देवी, नायनि
वृष्णकुमारी, अडिवि राधावसतम्मा, अट्टकूरि लक्ष्मी-
कातम्मा, दो० अनमूया देवी वरंरह धीर्तो माताअे तथा
बहूँ हैं जिनकी मरस कृतियोंपर तेलुगु काव्य जगत
सदैव गर्व करता रहेगा । अिन देवियोंने पुरयो ही की
भाँति, वर्तमान तेगु साहित्यकी सभी दिशाओको अपनी
पारस लेखनियोंसे भास्वर बना दिया है ।



ध्येयवादी

: श्री ग. ज्ञं. माडखोलकर :

संसारके परिवर्तन-क्रमको विवादात्मक स्वरूप देनेका प्रयत्न शास्त्रज्ञ सर्व्व करता रहा है। परन्तु कुछ परिवर्तन बितने अनुभव होते हैं कि शास्त्रज्ञोंकी अपनी अनुभूतिके विषयमें जानकारी प्राप्त करना दुःकर हो जाता है। शास्त्रज्ञ होनेपर भी वे अनुभवोंके आधारपर ही तो सिद्धान्तोंका निर्माण करते हैं। लेकिन मनुष्यका अनुभव स्वभावतः कितना सञ्चित है कि उसके आधारपर संसारकी सारी घटनाओंके रहस्यका विश्लेषण करना असंभव होता है। किसी घटनाके परचात उसके मूल कारणोंका विश्लेषण करना क्षमता बलित नहीं होता। जिनो लिखे संसारमें आज तक जितनी भी शान्तिवादी हूँ, उनके मूल कारणोंकी परम्परापर कतिहासज्ञाने सफलतापूर्वक प्रकाश डाला है। विभूतिके निर्माणके परचात उसे अवतार लेनेके लिये अनुभूति परिस्थिति पूर्व्वे ही प्राप्त थी, यह सिद्ध करना दुःकर नहीं है। विभूतिका अवतारकार्य विवादात्मक परिणाम है यह मान लेनेपर भी विभूतिके कार्यमें अपनी अन्तःपूर्विका भी अपने ही महत्त्वका स्थान है, यह भूलाया नहीं जा सकता। पुष्पके सौंदर्य और मनुष्यका विवादात्मक होनेके लिये मूर्त्त-प्रकाशके साप-साध बुद्धका स्वभाव-धर्म भी महत्त्व रखता है। कुछ विभूतिकोंके चरित्रमें जैसे चमत्कार दिखायी देते हैं कि उनके वर्तुणकी कीमत तत्कालीन परिस्थितियोंमें बिलकुल भी नहीं हो पाती। बाल विभूतिका निर्माण करता है किसी क्षणके साप-साध यह भी सत्य है कि विभूति बालका निर्माण करती है। कल्पना जिसके धर्मोंको आज आपसे अपिच संसार मानता है उस बीजामन्त्रीकी मूर्त्तपर चढ़नेका प्रयोग क्यों आता ? जिस तरह भगवान् बुद्धके धर्मका प्रसार करनेकी औचित्यस्थानों ही सारे भारतमें हुआ, उसी प्रकार बीजामन्त्रीके धर्मका प्रसार क्यों नहीं हुआ ? जिसका मुख्य कारण यह है कि बीजामन्त्रीके लिये बाल अनुभूति नहीं या और

जिसो लिखे प्रतिकूल बालके क्रोधका उल्लेख बननेका दुःख प्रयोग अपनेपर आया।

लेकिन कुछ विभूतिकोंका बाल-निर्माण ही नहीं होता। अनुभूति अथवा प्रतिकूल बालको विना कुछे होती है जो उस पानेको अनेकदा करता है। विन्तु जो निराशासे तनिक भी नयनीय नहीं होते, वे अपने कार्यको पूरा करने बिना नहीं रहते, चाहे परिस्थिति अनुभूति हो अथवा प्रतिकूल। फिर वह कार्य बितना निष्फल होता है अथवा ही निष्फल सिद्ध होता, उसे भी कुछे पचाह नहीं रहती। ऐसी ही विभूतिकोंको हम "ध्येयवादी" कहते हैं। जिस प्रकार अपने कार्यको अनुभूति बालको अनेकदा नहीं होती, उसी तरह बाल भी अपने कार्यको सीमित नहीं कर पाता। विनाय बालका नियम है। फिर भी ध्येयवादी विभूतिका कार्य अविवारणी होता है। उसे वैतिहासिक स्वरूप प्राप्त नहीं होता। शास्त्रज्ञोंके सिद्धान्त विनायी होते हैं। सद्योपनात्मक प्रगतिके नये सिद्धान्तोंकी प्रस्तावना होते ही प्राचीन सिद्धान्तोंका केवल वैतिहासिक महत्त्व ही रह जाता है। शास्त्रज्ञोंके मानवीय अनुभवोंके आधार-पर निर्मित सिद्धान्त मनुष्य चरोंके समान ही मर्त्त होते हैं। मनुष्यको जानना जिस प्रकार बारबार अनेक देह धारण करती है, उसी प्रकार जिन अनुभवानुक्त सिद्धान्तोंकी सदा नये रूप धारण करने पड़ते हैं। परन्तु जिस ज्ञानका बुद्ध अन्तःपूर्विके सम्बन्ध रखता है अन्तर विनायकारी अथवा विवादात्मक सिद्धान्तोंका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता।

संसारके ज्ञान-मार्गकी अनुभूति अनुभव जैसे अन्तःपूर्विके हूँ है। जिस कारणपर हम मानव-जातिके प्रवर्तकोंको दो भागोंमें बाँट सकते हैं। ज्ञान, रामदास, मोरोपन्त, लॉक, मिल क्रिपादि प्रवर्तकोंके अनुभवके आधारपर अपने-अपने विषयों। उनके साहित्य और

जिस प्रकार सत्यनिष्ठा कल्याणप्रद होनेके साथ-साथ बठोर भी होती है, उसी प्रकार सौंदर्यका भूत भी आनन्ददायक होनेके साथ-साथ अुन्मादक होता है अग्यथा 'गंटे' अेव 'अस्कर वाग्रिन्ड' जैसे प्रतिभाशाली कवियोंके नैतिक-पतनका क्या कारण था ? आम्बर वाग्रिन्डके मतानुसार " No artist has ethical sympathies " " कलाकारको नैतिक भावनाअें नहीं होती " के सिद्धान्तको सत्य मानना अनुचित नहीं होगा ।

लेकिन ध्येयवादी जितना सत्यनिष्ठ, अुतना ही सौंदर्योपासक, अेव जितना सौंदर्योपासक अुतना ही स्वतन्त्रता भक्त होता है । ध्येयवादीका यह सिद्धान्त है कि सत्यके बिना सौंदर्य और सौंदर्यके बिना स्वतन्त्रताका मूल्य नहीं आँका जा सकता । स्वतन्त्रता साधन मात्र है, साध्य नहीं । सत्यका सरवपण और सौंदर्यका सर्वधन करना स्वतन्त्रताका ध्येय है तथा जबतक व्यक्ति और राष्ट्रको स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं होती तबतक वह किस ध्येयको प्राप्त नहीं कर सकता । इसी भावना अेव श्रद्धाके कारण वह स्वतन्त्रता प्राप्तिके लिये आत्म-समर्पण करता है । राष्ट्रकी स्वतन्त्रताके लिये सधर्ष करनेवाले वीर और ध्येयवादीमें यही मुख्य अन्तर है । मेज़िनी और गरिवाल्डोके चरित्रमें यह अन्तर स्पष्ट रूपसे व्यक्त हुआ है । व्यक्ति-स्वार्थ तो अुनमें सर्वथा लुप्त ही रहता है । परन्तु राष्ट्रीय स्वार्थकी भावना भी अुसे सहन नहीं होती, क्योंकि मानवताके व्यापक दृष्टि-कोणसे अुमका ध्येय अेतप्रोत रहता है । अिटलीकी स्वतन्त्रता प्राप्तिके लिये मेज़िनीने अितना सधर्ष किया वह किसलिये ? केवल अिटलीको स्वतन्त्रता वह नहीं चाहता था, अिनतु ' रोम सारे ससारको स्वतन्त्र करेगा " यही अुमकी श्रद्धा थी और इसी श्रद्धाके आधारपर अुमके विश्वात्मक राष्ट्र धर्मका अधिष्ठान हुआ । लेकिन तत्कालीन देशभक्तोंने मेज़िनीके ध्येयवादीके प्रति विवेक आदर व्यक्त नहीं किया । लोगोंने अुने मूल भी कहा । परन्तु इस कारण मेज़िनीकी योग्यताके बारेमें किसे सन्देह होगा ? आकाशमें भ्रमण करनेवाला गरुड भय्य होनेपर भी

पृथ्वीके लोगोंको छोटा ही दिखायी देता है और आकाशमें भ्रमण करनेके बाद अुसे आश्रय लेनेके लिये भूतलपर ही आना पडेगा यह भी वह भलीभाँति जानता है । लेकिन गरुड आश्रय लेनेके लिये नीचे अुतरनेपर भी हिमालयके रजत-शिखरोपर ही आश्रय लेता है । वह पृथ्वीके वृक्षोंकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता । यह बात दुनियादारों अेव देशभक्तोंमें नहीं पायी जाती, लेकिन ध्येयवादी-व्यवहारी भूतलपर आनेके बाद व्यवहारको भी विशुद्ध स्वरूप प्रदान करता है । इस दृष्टिके अिग्लैडके परम्परागत साम्राज्यकी अपेक्षा रोमकी सत्ताधारी शक्तिके पतनका अितिहास अधिक महत्व रखता है । इसका मुख्य कारण है, सम्भव-सम्भवके विचारोंमें डूबी मानवीय बुद्धिकी अंतिहासिक अनुभवोंके आधारपर ही अपने अुद्धारकी आशा रहती है । मेज़िनीका ध्येयवाद तत्कालीन समाजको मूर्खपना प्रतीत हुआ, परन्तु अुसका विश्वात्मक राष्ट्र धर्म आज समाजवादके विकसित रूपमें पूरे ससारने मान्य किया है । यह तो ससारका नियम है कि आज हम जिसे असम्भव मानकर अुपहासकी दृष्टिके देखते हैं कल अुसे ही अतिमानपूर्वक ग्रहण करते हैं । लेकिन यदि ध्येयवादी सम्भवासम्भवके चक्करमें पड़कर सशयात्मक परिस्थितिका शिकार हुआ तो मानव-जातिका अुद्धार होना कठिन ही प्रतीत होता है ।

सम्भवासम्भवका विचार स्वार्थकी अुपज है । जिसे केवल यश पानेकी लालसा होती है, अुसकी बुद्धि-सम्भवासम्भवके विचारसे बारम्बार कुठिन होती है । लेकिन ध्येयवादीकी अपेक्षाअें कुछ भिन्न प्रकारकी होती है । वह अनुकूल कालकी वाट नहीं जोहता । वह अन्त स्फूर्ति अेव अन्तरिक प्रेरणासे कार्य करता है फिर चाहे अुसे यश मिले अथवा न मिले, अुसकी अवज्ञा ही अथवा अन्याय हो, वह अपने विचार व्यक्त किये बिना नहीं रहता और इसीमें अुसकी अलोकिक्ता निहित है । विचारसमाधिमें बुद्धि नष्ट होनेके परचाण अुसकी आँखोंके सामने अेक विशेष प्रकारकी स्वप्नसृष्टिका विकास होता है और अिसलिये अुसे " श्रद्धा " (Seer)

कहते हैं। तत्त्वज्ञोकी दृष्टि भूतनालीन अनुभवोके रहस्यका अनुसन्धान करती है। देशभक्तका दृष्टिकोण वर्तमानके आगेकी बात नहीं सोचता। लेकिन ध्येयवादी सबैव मानवजातिवे अत्युत्कर्षवे स्वप्न देखता है और वह अन स्वप्नोको व्यवत करनेका साहसभी करता है। यही कारण है कि लोग उसे "भविष्यवादी" (Prophet) कहते हैं। परन्तु जिस भविष्य-वचनके लिये अने कितनी यातनाओं सहनी पडती हैं? लीगोना अंसा प्राचीन मत है कि यज्ञ किये बिना सामर्थ्य प्राप्त नहीं होती। जिस ध्येयके कारण मानवको पवित्रता अथवा पूर्णता प्राप्त नहीं होती, क्या वहभी यज्ञपरही अवलम्बित है? अन्यथा मेजिनीके समान राष्ट्रधर्मके प्रवर्तकको जन्मभर

'देश-निकाला' क्यों सहना पडा और ओसामतीह जैसे विषय-धर्मके प्रवर्तकको सूत्रीपर घडनेकी वारी क्यों आयी? अखिल मानवजातिवे अुद्धारवे लिये अकेले ओसामतीहको आत्मयज्ञ करना पडा जिसका क्या अर्थ है? माँधीजीका वर्णन करते समयभी रबीन्द्रनाथको यज्ञकी ही अपमा सूझी थी। सत्सारमें आजतक जिननेभी ध्येयवादी हैं उनके चरित्र अवगोचन करनेपर हमें यही लगता है कि हमने "नरयज्ञका" त्याग नहीं किया है। लेकिन अुसवे लिये दोषी किसे कहा जा सकता है? क्योंकि स्वयं भगवानने कहा है कि यज्ञ किये बिना जग-पारणा निर्माण नहीं हो सकती।

मराठीसे अनुवादकः—श्री घनु व्यास "अनल"

[नागपुर

श्रीराम

: श्री नीरज :

आज न कोभी दूर न कोभी पात है
फिर भी जाने क्यों मन आज अुदास है।

आज न सुनावन भी मुझसे बोलता
पात न पीपल पर भी कोभी डोलता,
ठिठका सा है श्याम, घका सा नीर है,
सहमी-सहमी रात, चाँद गम्भीर है,
गुपचुप धरती, गुमगुम सब आकाश है।
फिर भी जाने क्यों मन आज अुदास है ॥

आज शामको सारे नहीं कोभी कली,
आज अंधेरी नहीं रही कोभी गली,
आज न कोभी प-पी भटका राहमें,
जला पपीहा आज न प्रियकी छाहमें,
आज नहीं पतझार, नहीं मधुमास है।
फिर भी जाने क्यों मन आज अुदास है ॥

आज अपूरा मोत न कोभी रह गया,
धुमनेवालो घात न कोभी रह गया,
मिलकर कोभी मोत आज छूटा नहीं
जूटकर कोभी स्वप्न आज टूटा नहीं,
आज न कोभी दर्द न कोभी प्यास है।
फिर भी जाने क्यों मन आज अुदास है ॥

आज धुमधकर बादल छाया है कहीं
धिता बुलाये सावन आया है कहीं,
कितो अंधजले शिकल दालभकी यात्रमें
आज किसीने दीप जलाया है कहीं
अिसीलिये दायब मन आज अुदास है।
अथ कि न कोभी दूर न कोभी पात है ॥

[फानपुर

गोंडोंका इतिहास

: श्री प्रभाकर माचवे, अेम. अे. :

गोड राजाओंका इतिहास कही भी कमबद्ध नहीं मिलता। बिशप, चैटरटन विल्स आदि लोगोंने जनश्रुति और दन्तकथाओंके आधारपर कुछ लिखनेका यत्न किया है। अुन्हींके आधारपर पता चलता है कि गढ़ाके राज-घरानेका मूल पुरुष जदुराय था। गोदावरीके किनारे बिंसी गाँवके पटेलका लडका था। शायद देवगिरीके यादवोंमेंसे यह अंक हो। गढ़ामें राज्यस्थापना होनेसे पहले इस भागमें कलचुरी नामके राजा हुअे हैं। अुन्हींका जदुराय नौकर था। नागदेव नामके गोड राजाकी लडकीसे अुसकी शादी हुआ। और बादमें सुरभि पाठक नामके ब्राह्मण मंत्रीकी सहायतासे अुसने गढ़ामें राज्य स्थापित किया। अुसके संवधमें यह दत्तकथा प्रचलित है कि वह अपने स्वामीके साथ अमरकटकमें देवदर्शनके लिये जाया करता था। रास्तेमें अंक रातको मालिकके डेरेके बाह्य जब पहरा दे रहा था, तब दो गोड पुरुष और अंक स्त्री और अुनके पीछे अंक बदर जदुरायके सामनेसे गये। बदरने जदुरायके मुँहकी ओर देखकर कुछ मोरके पक्ष वहाँ डाले और चला गया। जदुरायका पहरा समाप्त होते ही वह वही सो गया। नोदमें नर्मदामाअीने अुसे दर्शन दिये और कहा कि तुमने जिन्हें देला वे साधारण आदमी नहीं थे। वे राम सीता और लछमन थे। अुनके पीछे हनुमान जा रहे थे। भयूर पत्नका अर्थ यह है कि तुम्हें शीघ्र ही राज्यपद मिलनेवाला है। तू अब रामनगरमें जा और वहाँ सुरभी पाठक नामक ब्राह्मणको अपना गुरु बना। जदुरायने बंसा ही किया। नर्मदा नदीमें सन्न्य छोडा कि 'मैं राजा बनूँगा तब तुम्हें प्रणाम बना दूँगा।' गढ़ाके गोड राजाके अुम समय पुत्र नहीं था। तब अुसने यह युक्ति की कि नर्मदाके किनारे सब लोगको जमाकर अंक पाल्कू मंजा इस अुद्देश्यसे अुठा दी कि 'वह जिसके सिरपर जा बैठे वही राजा होगा।' वह मंजा जदुरायके सिरपर ही बंठी।

पहले गोड राजा अपने नामके पीछे राजपूतपद दिखानेके लिये 'सिंह' पदवी लगाते थे। बादमें मुसलमानोंके प्रभावसे 'शाहा' लगाने लगे। जदुरायके बाद संशामसहा हुआ। इस राजाने अपना राज्य बहुत बढ़ाया। गढ़ाके परिवधमें ४०-५० कोसपर अुसने चौरागड नामका किला बनाया। दो अुंची मजबूत पहाडियोंपर यह किला है और अुसपर पानीकी बड़ी रसदका प्रबध है। इसके बाद करीब १५०० अीस्वीमें दलपतगहाने राज किया। यह सप्रामसहाका लडका था। महोबाके चदेल राजावी सुन्दर लडकी दुर्गावतीके लिये गोड राजाने माँग की। कहते हैं कि दुर्गावतीने दलपतके पास गुप्त सदेश भेजा और नलवारके जोरपर अुसे जेतनेका प्रस्ताव रखा। दलपतने गोड फौजके सहारे अपने भावी समुरपर हमला किया और अुन्हे हराया। अिन दोनोंकी शादीके चार बरस बाद ही रानी दुर्गावती विधवा हो गयी। अपने लडके वीरभारायणके भरोसे रानी दुर्गावतीने बड़ी हिम्मतसे राज चलाया। बहुतसे जनहितके काम किये—तालाब, किन्ने, नहरोंका निर्माण किया। अकबरके सूवेदार आसफखाने माणिकपुरमें दुर्गावतीकी सुदरताकी तारीफ सुनी थी। अुसने अिसके राज्यपर हमला किया। सिगोरगडमें अपनी गोड सेना जमा करके रानीने आसफखानका मुकाबला किया, वहाँ अुनकी पराजय हुआ। गढ़ामडलामें फिर लडाओ हुअी। अंक स्थानपर जब पीछे नदी पूरपर थी और सामने आसफखानकी सेना थी, तब रानीने विश्वल नौकर आधार अुके ने हाथो खररसे आरम-धातकर लिया और अपने सतीत्वकी रक्षा की। रानी दुर्गावतीके नामपर "रानी

●यह चौरागड सम्भवत पचमड्डीके निकटवाला स्थान होगा। —अु.

अु आधारसिंह रानी दुर्गावतीके मन्त्री थे। अुनके नामका आधार ताल जबलपुरमें है। —अ.

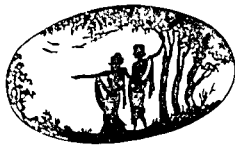
साठ' जबलपुर और गढ़ाके बीचमें है।

रानीके पुत्र वीरनारायणको गोड लोग नरसिंह-
पुर ले गये। वहाँ भी आसफगाने पीछा किया। तब
अस महादुर लड़केने अकेले लड़कर प्राण दिये। चौरा
गढ़में 'जोहर' हुआ, अत आगमेंगे रानी दुर्गावतीकी बहिन
कमलावती और वीर नारायणकी, भावी वधू पुरागढ़के
राजाकी लड़की भाग निकली। गढ़ा और चौरागढ़की
लूटमें आसफगानेके अंक हजार हाथी और अतगिनती
राजाता तथा जवाहिरास मिले। अिनमेंसे सिर्फ ३००
हाथी अतने अकबरको भेज। बादमें अकबरको जय
सम्पन्नता पता चला तब आसफगाने अतका विस्वास नहीं
रहा। अिसी समय गढ़ामें गोडोका घराना प्राय नष्ट
हो गया। वीर नारायणका चाचा चन्द्रसाहा अकबरका
मडलीक बनाया गया। परन्तु भोपालकी ओरका बहुत-
सा हिस्सा अतसे छीन लिया गया था। अिससे गढ़ा-
मडलीकी सत्ता बहुत कम हो गयी। चन्द्रसाहाने भाभी
मधुकरसाहाने अतसे मार डाला और खुद राजगद्दीपर
बैठा। परन्तु बादमें मधुकरको भाभीकी हत्याका अितना
पछतावा हुआ कि वह अंक सूलों पीपलके पेड़की तोखलमें
जाकर बैठा और अपने हाथोंसे अत पेड़की आग लगा
दी। मधुकरका लड़का प्रेमसाहा जो मुगलके दरबारमें
अपने लड़के हिरदेशाहाके साथ था, अपने चापके राजको
सभालने आया। पर वीरसिंहदेव सुन्देलेने लड़के सुसार-
सिंहने अतपर हमला कर दिया। वहीं अँसा भी कहा
गया है कि प्रेमसाहा मुगल दरबार छोड़कर जो चला
तो अतने वीरसिंहदेवके प्रति आदर स्पष्ट नहीं किया।

अिसलिये मरते समय वीरसिंहने अतपर बदला लेनेके
लिये लड़केसे वचन ले लिया। अँसारसिंहने प्रेमसाहाके
बिचके घेरा डाल दिया। बहुत दिनोंतक जब घेरा नहीं
अूठा, तब अतने कपटसे सधिये लिये प्रमासाहाको बुला-
कर अतसे और अतसे मन्त्री जयदेव बाजपेयीको मार
डाला। प्रेमसाहाका लड़का हिरदेशाहा दिल्लीमें था, वह
मुक्त रूपसे वहाँ आया। अपनी पुरानी दात्रीकी मारकत
अतन छिपा हुआ पिताका राजाना हथियाया और साह-
जहाँसे भोपालके सूबदारकी मारकत सजय जोड़ा। साह-
जहाँने अँसारके लिये यह फरमान जारी किया कि अतके
मडलीक गढ़ाके राजाको अतने वयो मारा और राज्य
कैते ले लिया। अिसके बदलेमें वह राज्य और १० लाख
रुपये दितनी भेजे। अँसारने अपने लड़के विक्रमाजीतको
बालापाटसे बुला लिया। तँ जमानके साथ अतकी बड़ी
लडात्री हुआ और विश्रमाजीत बड़ी मुशिलसे
आ मिला। बादसाह-नामेमें आगकी बाते यो दी हैं—
साहजहाँने 'सु दर बबराम' नामका आदमी अँसारके
पास भेजा और अतसे निम्न सधिकी सँ बनायी—(१)
अँसार आगराके अितानेका अंक हिस्सा बादसाहाको दे।
(२) अतके बदलेमें अँसार गोडोके राज्यका चौरागढ़
और नीचेरा प्रदेश ले। (३) चौरागढ़की लूटमेंसे तीन
लाख रुपये बादसाहाको दे। (४) अँसार खुद सँजमानके
साथ बहाड (बराह-विदभं) में सेनासहित जाये। (५)
अतके पुत्र विश्रमाजीतकी मुगल दरबारमें रखा जाये।

लेखककी अप्रकाशित पुस्तक 'गोंडोंके देगम'
का अंक अत।

[नागपुर



“गीता” की वैज्ञानिक दृष्टि और वैज्ञानिक

: श्री प्रो० कन्हैयालाल सहल, अेम. अे. :

गीताके प्रथम अध्यायको पहले मैं अितना महत्व नहीं देता या किन्तु आज मुझे लगता है कि गीताकी मूल समस्याको समझनेके लिये यह अध्याय अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अर्जुन जैसे प्रतिद्वन्द्व योद्धाके हाथसे गाड़ीव छूट जाता है और अुसका मस्तिष्क चक्कर खाने लगता है। प्रश्न यह है कि क्या अर्जुन कोरवोकी विदाला चाहिनोको देखकर भयभीत हो गया था ? अर्जुन जैसे धनुषीके सम्बन्धमें यह सोका नहीं की जा सकनी। अुमने पहले भी बहुत से युद्ध लडे थे, आज वह क्यों युद्धसे पराङ्मुख हो रहा है ? आज वह युद्धकी हानिवोका अिनता विस्तारपूर्ण वर्णन क्यों कर रहा है ? यहाँ यह अुन्लेखनीय है कि गीताके प्रथम अध्यायमें जितने छोडे पाठोंमें युद्धकी अधिक से-अधिक हानियाँ दिखलायी गयी है, वे सायद ही अिम रूपमें अन्यत्र देखनेको मिल सके। अिसका मुख्य कारण यह है कि अर्जुन अपने सबधियोंको मारना नहीं चाहता। अपने ही चचा, भाभी-मनोजो आदिकी हत्या वह कैसे कर डाले ? अुसने अिम बातको साफ स्वीकार किया भी है। “स्वजन हि कथ हत्वा सुान्न त्याम माधव ?” यदि अर्जुनको किसी अ्य पात्रसे मुकाबला करनेके लिये भेजा जाता तो वह अवश्य बडे हर्षपूर्वक युद्ध करनेके लिये चला जाता, अुसपर रणोग्माद छा जाता, हर्षसे अुमकी छाती पूल जाती। तब वह युद्धकी वुराअियोका अुपदेश भी किसीको नहीं देता। वस्तुतः हमारा हृदय जो चाहता है, अुसीका समर्पण हम करने लगते हैं। हृदयकी अदम्य अिच्छाके सामने बुद्धिना कुछ बण नहीं चलता, वह हाँमें हाँ मिलाने लगती है। ‘कामायनी’के सुप्रसिद्ध कवि श्री जयसकरप्रसादने अिम मनोवैज्ञानिक तथ्यको भली भाँति प्रकट किया है—

“बन जाता सिद्धान्त प्रथम फिर,

बुद्धि हुआ करती है।

बुद्धि अुसी ऋणको सबसे ले,
सदा भरा करती है।
मन जब निश्चित सा कर लेता,
कोभी मन है अपना।
बुद्धि-बँव-बलसे प्रमाणका,
सतत निरखता सपना ॥”

अर्जुनके मनने निश्चित-सा कर लिया था कि स्वजनोसे युद्ध नहीं करना चाहिये। बुद्धिने युद्धके विरुद्ध अनेक प्रमाण अुपस्थितकर युद्धकी सदीपता दिखला दी। हम भी प्रायः यही किया करते हैं। अिस तथ्यकी सम्यक् प्रतीतिने लिये कुछ अुदाहरण लीजिये —

१. बनारस विरव-परिपद्में सम्मिलित होनेके लिये हम लोग बनारस गये थे। अेक स्टेसनपर मैंने देखा, गाड़ी आनेमें विसय देर नहीं थी। यानी पक्ताबद्ध सडे थे और प्रतिवपण खिडकीके खुलनेको आवाजकी प्रतीक्या कर रहे थे। खिडकी खुली किन्तु टिकिट बाँटनेवाला बाबू अरने अेक मित्रसे बातचीत करनेमें सलग्न था। मित्रको वह बनला रहा या कि मेरी पत्नीकी बहिन बहुत बच्छा गाती है, रेडियो-वालीकी ओरने भी अुसे निर्मंत्रण मिलते हैं और अुसकी सुमपुर आवाजका तो क्या कहना। अेक यात्री धीरे-धीरे गुराँवा, कहने लगा, अिस स्टेसन मास्टरको गोलीसे अुडा दिया जाये तो कितना बच्छा रहे। यह नहीं देखता गाड़ी आनेवाली है, यानी जाडेसे ठिटुर रहे हैं और अिसे अपनी पत्नीकी बहिन और रेडियोकी पडो है। जहन्नुममें जाये अुमकी बहिन और अुमका रेडियो !

सुयोगसे अेक वयणके लिये आप कन्वना कीजिये कि यदि यही स्टेसन-मास्टर अपनी युद्ध मानाको लेकर यात्राके लिये निकले और अुमकी भी हड्डियों तहकी कना देनेवाये जीतमें टिकटके लिये पक्ताबद्ध सडा होकर प्रतीक्या करनी पडे और वह टिकट बाबूकी अिसी

प्रकारकी घरेलू बातोंमें रस लेना हुआ देखे, तो अमी सामान्य मुसाफिरकी सो प्रतिश्रिया क्या अस्वप्न मनन नहीं व्युत्पन्न हो जायेगी? किन्तु ज्योही वह अपनी कुर्सीपर बैठेगा, सोचने लगेगा, दिनमें न जान कितनी गाइयाँ आती हैं, मैं मुसाफिराका कर्हातक ध्यान रखूँ, अंसा कर्हें तो मेरा सो मरण हो जाये ।

२ अंक बार अंक सज्जन जो मूझसे बिल्कुल अपरिचित थे, सपत्नीक मेरे यहाँ आये । कहने लग-देसिअ, 'अिनको' पढानेम मनेने क्या नही किया, ट्यूशनोकी व्यवस्था की, घरका काम छुडायी' किन्तु अब नीका मशघारमें है। आप ही अिस नौकाको पार लगा सकते हैं । फिर बोले स्त्री शिक्काका तो हमारे देशमें बेसे भी यमाव है, आप जैसे विद्वान यदि महाग नही लगाअेंगे तो कंसे पार पड़ेगा? वे चाहते थे कि मैं अुहीकी अुपरिचितमें अुभन महिलाकी अुतर पुस्तक निकालकर अुहे मुक्तहस्त होकर अउ दे दूँ । मने मन ही मन कहा 'अब मैं तोहि जामो संसार ।' 'कामो स्वना पश्यति ।' "सर्वं स्वायं समोहते ।"

३ अंक न्यायाधीश थे जिन्होंने अेकाधिक बार फाँसीकी सजा सुनायी थी । अंक दिन अुनका लडका ही अेता अपराध कर बैठा जिसकी सजा सिवाय फाँसीके और कुछ नही हो सकती थी । किन्तु न्यायाधीश सोचने लगे, यह फाँसी कोअी अच्छी चीज नहीं, अिससे न समाजका भला होता है न अपराधीका । फाँसीके बदले कोअो दूसरो सजाहा आविभव किया जाना चाहिये । न्यायाधीशकी युक्तिर्था चाहे युक्तियुक्त हो किन्तु अुनके चित्तके मोहाविष्ट हो जानेके कारण अुनकी युक्तिर्था पूर्वाग्रहसे दूषित हो गयी थी ।

लेखकी कलेवर-बुद्धिके भयसे अधिक अुदाहरण नहीं दे रहा हूँ । आज हम वैज्ञानिक युगमें रह रहे हैं किन्तु वैज्ञानिक दृष्टि हमारी नहीं है । जो वैज्ञानिक प्रयोगशालामें बैठकर सत्यका वस्तुगत परिचयण करते हैं, अुसके साथ प्रयोग करते हैं वे ही वैज्ञानिक लौकिक व्यवहारोंमें अपनी अिस वैज्ञानिक दृष्टिको तिलाजलि दे देते हैं ।

व्यावहारिक बुद्धिके पुरुषको अर्जुनका दृष्टिकोण बुरा नहीं लगता, कृष्णको बुरा लगा । अर्जुनको भी कुछ

लगा हो किन्तु अुसके मनमें संन नहीं था । अिसीलिये भगवान व्यासने गीताके अिस प्रथम अध्यायका नाम रपा है "अर्जुन विषाद-योग" ।

याज्ञवल्क्य जब अपना घर छोडकर जाने लगे तो अुन्होंने अपनी दोनो पतिवोसे कहा कि मेरे पास जो गोधन आदि है अुसका बँटवारा कर लो । अुनकी अेक स्त्रीने कहा- 'कितेन कुयाम् येना ऽह नामृता स्याम्' क्या अिम घनसे मैं अमर हो जाऊँगी! याज्ञवल्क्य ने कहा, अँसा तो नहीं हो सकता । तो अुसने कहा कि अुसे लेकर मैं क्या करूँ जिनसे अमरता मुझे न मिले । सभी जानते हैं कि यह शरीर तो अमर नही रह सकता । किसी दिन मिट्टीमें मिलही जायेगा । 'मृत्युवन् निश्चित' यह तो अग्नेजी भाषाकी अेक कहावती अुपमा है । वास्तवमें आत्मोपम्य दृष्टिमें अमृतत्व है । सब प्राणि-योक्तो आत्मवन् देवना अथवा साधनाकी अुच्च अवस्थामें आत्माको ही सब प्राणियोंके रूपमें देखना यह दृष्टि कृष्ण अर्जुनको देना चाहते थे । जबतक यह दृष्टि हमें नहीं मिलेगी तबतक न हम सुखसे रह सकेंगे, न हम दूसरोको सुखसे रहने देंगे ।

आजकल "सर्वोदय" जैसा कृत्याण-कारी शब्द सुनायी पड रहा है । सर्वोदयका सच्चा अर्थ मैं तो यही समझता हूँ कि "आत्म" और "सर्व" अिन दोनोके बीचमें जो दीवार है अुसे भेद दिया जाये, तोड दिया जाये तो 'आत्म' और "सर्व" के स्वार्थोंमें अंक-रूपता आ जायेगी । हम अपने मोहके कारण ही अिनको अलग अलग समझ बैठे हैं । गीताके अन्तमें चलकर अर्जुनने स्वीकार किया कि मेरा मोह नष्ट हो गया है और अब मुझे चीजें ठीक ठीक दिखलायी पडने लगी हैं । हम भगवानसे प्रार्थना करे कि हमें भी गीताकी वैज्ञानिक दृष्टि मिले जो आजके वैज्ञानिकोंको भी प्राप्त नही ।

विनोबा कहते हैं कि वर्तमान युगमें यदि विज्ञानने हिंसाके साथ अपना गठ बधन किया तो विश्वमें प्रलय अुपस्थित हो जायेगा किन्तु यदि मानवताके हितको अल्पयमें रखकर विज्ञान और अहिंसा दोनो प्रेम-पाशमें

आवद्ध हो गये तो विश्वमें सुख-शान्तिकी स्थापना हो सकती है। पर आज हो क्या रहा है? विश्वके वैज्ञानिक हायड्रोजन बमोकी सहारक-शक्तिको बढ़ानेमें लगे हैं और एक देश हायड्रोजनके अुत्पादन और विकासके अर्थ दूसरे देशके साथ प्रतिस्पर्द्धा कर रहा है। यह स्थिति निश्चयही अवाछनीय है, किन्तु प्रश्न यह है कि जिसके लिये दोषी कौन है? सामान्यतः यह कहा जाता है कि जिस विनाशकारी प्रतिस्पर्द्धाके लिये वैज्ञानिकोको दोषी नहीं ठहराया जा सकता। दोषी वे हैं जो वैज्ञानिक साधनोका दुष्ययोग करते हैं। किन्तु थोड़ा विचार कर देखिये तो पता चलेगा कि जिसके लिये स्वयं वैज्ञानिकभी कम दोषी नहीं। वैज्ञानिक आखिर क्यों अिन घातक साधनोका आविष्कार करते हैं? क्यों नहीं वे दुनियाके दुख दर्दोको दूर करनेमें अपनी प्रतिभाका सदुपयोग करते? आज जिस बातको समझ लेनेकी सबसे अधिक आवश्यकता है कि वैज्ञानिक भी वैज्ञानिक होनेके पहले मनुष्य है, जिसलिये अच्छा वैज्ञानिक बननेकी अपेक्षा अेक अच्छा मानव बनना अुसका सबसे बड़ा कर्त्तव्य है।

यह हमारा दुर्भाग्य है कि बौद्धिकवाद और विज्ञानके जिस युगमें हम मानवताको भूलने लगे हैं। हमारी बुद्धि तो आवश्यकतासे अधिक विवक्षित हुआ है किन्तु हमारे दिल छोटे पड़ गये हैं, हृदयका समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। यह गहन चिन्ताका विषय है। विज्ञानको आज दर्शनका सहारा लेकर आगे बढ़ना होगा। दर्शनके बिना आज विज्ञान अग्या हो गया है; अुसे मालूम नहीं, वह मानवताको किस विनाश-अणकी ओर ले जा रहा है!

गीतामें कहा गया है— 'न हि कस्यापि कश्चित् दुर्गतिं ताव गच्छति' अर्थात् "जो कल्याणके मार्गपर आरुढ़ है, अुनकी कमी दुर्गति नहीं हो सकती।" वैज्ञानिकोंके लिये आवश्यक है कि वे आत्म-अन्यन करे, सोचे कि क्या वे कस्यापि-मार्गके पथिक हैं? यदि

वैज्ञानिकोंने अपने कर्त्तव्यका पालन नहीं किया तो निश्चयही वे भी मानवताके लिये अनिशाप सिद्ध होंगे।

भौतिक जगत्की सचाओका पता वैज्ञानिक लगाता है जब कि अध्यात्मवादी अध्यात्मिक जगत्के रहस्योंका अुद्घाटन करता है। जिस युगके महान् दार्शनिक अर-विन्दने कहा था कि केवल भौतिकवादपर ही बल देना अथवा भौतिकवादकी सर्वथा अुपेक्षा कर केवल अध्यात्मवादको ही सर्वस्व मानकर चलना दोनों ही अतिवाद हैं। भूत अध्यात्मकी ओर गतिशील है तो अध्यात्म भूतकी ओर अुन्मुख। आवश्यकता जिस बातकी है कि वैज्ञानिक भी जिस तथ्यको समझें। और जिस तथ्यको वे तभी समझ सकते हैं जब कि मानवताके महत्त्वको वे हृदयगम करें।

वैज्ञानिकोंका कहना है कि हमारी यह पृथ्वी कमी भयकर ज्वलन्पिण्डके रूपमें थी, असह्य वर्षोंके अनन्तर यह ठंडी हुआ, जिसपर वनस्पतियाँ अुगी। फिर जीव-जन्तुओका आविर्भाव हुआ। और न जाने प्रकृति द्वारा विलने प्रयोग किये जानेपर जिस धरित्रीपर अुन प्राणोको अवतारणा हुआ जो अपनी मनन-शक्तिके कारण मानव कहलाया। मानव ही अेक अेसा प्राणी है जिसमें विवेक है, सयम है, तपस्या है और जा अपने अकल्पनीय गुणोंके कारण प्रकृतिपर विजयपर विजय प्राप्त करता चला जा रहा है किन्तु आज सबसे बड़े आश्चर्यकी बात यह है, मानव ही मानवके लिये पहली वन गया है। जिस पहलीको मुल्लज्ञाना आजकी बड़ी भारी समस्या है। समय-समयपर महापुरुष जिस विश्वमें अवनरित होते हैं और जिस गुरुयोको मुल्लज्ञानेका भरसक प्रयत्न करते हैं। जिस देशमें गांधी जंस महा-माने अहिंसा और सत्यके साधनो द्वारा जिसी गुरुयोको मुल्लज्ञानेका प्रयत्न किया था।

क्या विश्वके वैज्ञानिक और राष्ट्रोंके मून्धार समय रहते चीकार करती हुआ मानवताकी जिस आवाजको मुन सवेंगे?

[पिलानी

धरतीका वेटा

श्री नन्दकुमार पाठक

जिस दिन करनलके सामने तीन दाँत तोड़ डाले गये थे उस दिन भी उसका दिङ नहीं टूटा था। सिफ़ स्वर टूट गया था। दिलमें अके दरार भर पड़कर रह गयी थी। लेकिन जिस दिन उसका दिल बिल्कुल ही टूट गया और किस्मत भी फूट गयी उस दिनकी बात कह रहा हूँ।

यह करनल आजसे ६ साल पहले तक रावी नदीके किनारे बसे हुए जडाला नामक गाँवका रहने वाला था। किसान था। उसने अपने सामनेवाले खूपरके तीन दाँत सोनसे मढ़वा लिये थे। जब देशको दो हिस्सोंमें तराग दिया गया तो प्राण बचानके लिअ वह भागकर देशके एक भागसे दूसरे भागमें आ जानेके लिअ मजबूर हो गया। वह एक भागसे दूसरे भागमें आया। वहाँ उसका खत छूट गया। उसका घर छूट गया। और सोनसे मढ़ सामनेके तीन दाँत तोड़कर वहीं रह जानेवाले नए लिये क्योंकि वह सोना जो उसके दानिभ चिपका दिया गया था, वह उसी भागका था और अिसलिअ उसे वहीं रह जाना चाहिअ था। उसकी जान बहाना दी गयी। सो वह अपनी जान लेकर चला आया। साथमें अपना आठ सालका लड़का ले आया। और साथमें आया उसका दरार पडा हुआ दिल दिमागमें परेगानी गाँव छूट जानेका दुख था। परेगानीके कारण माथपर पड गयी सिलबटोपर अस्तव्यस्त बाल थे और धी नय जीवनको प्रारम्भ करनकी व्याकुलता साथमें और कुछ नहीं था।

अपनी जान और मालकी सलामतीके लिअ करनल अिधर आ गया। उसके बहुतसारे साथी टिहरी गढ़वालके पायथ्य अिलाकामें जा बसे थे। कोभी थोड खरीदकर टागा हावन लगा था और कोभी भैसे खरीदकर दूधके व्यापारमें कामाभी करन लगा था।

करनल यह सब कुंठ नहीं कर मजता था। कुछ दिनों तक रेठगाडियां घूम घूमकर उसक लडकेन सतरेकी गोलियाँ बची। अेकिन करनलको यह गवारा नहीं हुआ और वह हरगाँवके एक जमीदारसे आरजू मिगनकर अुमके घरमें लडकेकी भोकरी लगा दी। वह वहीं परवरिश पाने लगा। और करनलन दूकानसे अुधार माल लेकर रेलगाडियोंमें नीलामकर कुछ पदा कर लेनकी तरकीब अपनायी।

जो करनल अपने गाँव जडालाकी चान्नी रातोकी दूधिया सिलमिलमें और सितारोकी छाहमें अपने खनोमें काम करता था वह यहाँ अपने भाग्यके टूट नक़्क़ोकी छाहमें मनुष्योंकी भीडमें अपनी रोजी कमानका काम करन लगा। जो करनल अपने खनाकी नसोकी टटोलकर उसकी अुवरा गकिन और आदनाका चतुर अनुभव किया करता था आसमानके और मौसमके बदलन खनोकी टोह लिया करता था हल फाल बुदाल बीज और बलोकी देख रेख और हिसाबकिताब करता था वह यहाँ अाकर एक व्यापारी आखटककी दुष्टिसे देखनमें चतुर हो गया। वह अुन भोली भाली सूरतोको बूडा करता जो अिसके व्यापारमें बरकत दे सकती हा। धरतीको कुरेदकर धन पदा कर लेनवाला धरतीका वह बटा धरतीकी सेवाओके आवरणसे बचित होने ही अउन जीवनकी नम्यतामें आन लगा और जब अपनी जवानकी चतुर कचीसे नीलाममें भोले भाँटे अिसानाकी जब कनरन लगा उसे अिन सब बातका दुख था और वह यह सब नहीं चाहता था। लेकिन मजबूर था। अुमने योजनाभी बना रखी थी कि वह थोडही दिनों तक अिस मजबूरीको बरदाश्त करेगा, फिर कहीं न वही धरतीका काम करन लग जाअगा।

जिस प्रकार निर्मम और अचल परिस्वितियोंकी विवशतामें गुनाह कर बैठनवाला बानूतके चतुर्लम्बे फँस जानेपर भुक्ति पानेके लिये कानूनकी कितनीही धाराओं और पैतराओं बुगल बन जाता है, अन्वी प्रकार करलैल अपनी निर्मम परिस्वितियोंके गिरफ्तमें आ गया था और झुके रोजमर्रा जीवनमें आहतक प्रवृत्तियों अपनी जगह बना ली थी। जन्म दिन यह कितान झूल देव कर हुरावसे लौटने ला तो झुकी डबमें करलैल भी अपनी नीलाभी माल लेकर बड़ गया।

वह नीलामका अभिनय करन ला। "देखिये बाबूजी यह 'आल्ला'की शीशी है। यह आषीना है। यह कपी है। और यह अक सेट लाग है। आप जिहें बाजारमें लन जायें तो चार रुपयेसे बीडी बन नहीं लग्या। लेकिन मैं जिहें सस्तेमें दे दूंगा। जो बोली गयादा बाल। पहलस कम हाक होनपर कमीशन दंगा। आप अँसा न समते कि यह चारीका माल है। नहीं। यह लाँटरीका माल है। इसलिये सस्ते मूल्यमें दिया जायेगा। आप भाभी साहबानकी, जिसे वाली बालना हो, बाले। जा बाल, रपना, दो रपना।" वह मुस्कराया।

'आठ जाने!' मुसाकिरीकी भाँडमेंसे आवाज आयी।

"यह देखिये, बाबू साहब चार रुपयेके मालपर आठ जानेकी बोलें। अच्छा, आठ जाने। चार रुपयेके मालपर वाली आठ जाने। आठ जाने।" वह घूम घूमकर बोलने ला—'आठ जाने। आठ जाने। आठ जाने।' अन्वी आनगिमाके वारप चिन्तित भाषेपरक छिन्नरपे अस्त-वस्त बाल दल खाकर रह रह जात थे। बेहरेर अक चित्तानुर कननीपडा आ पो थी।

'बाह्र जाने!' दूसरे छोरस आवाज आयी।

वह झुके स्वरकी छार पकड़कर बोलने ला—
'बाह्र जाने, अरी बाह्र जाने।'

वह अपने अचालन और स्वरके लोचमें अुमाद भरकर बोलने ला।

'अक रपना!' आवाज दी गयी।

करलैलने पकड़ लिया—'अक रपना! बाबूजी, अक रपना।' दूसरे दाँतेके बोचते झुके स्वरका स्पष्ट बुच्चारण कियलने ला। लेकिन भापी बोन लर लेनेपर जैसे टोनेवाला दूताजिसे चलता है, वैसे हा अपने अभिनयके लिये दृक्मि प्रसन्नताका बन हल्ले वह दूताजिसे बाल जा रहा था। मादेपर पनीकेकी दूरे छत्र आयी थी। 'अक रपना। अक रपना।'

'सवा रपना।' झुघरते आवाज पृठी।

पनीना पोंछते हुअे करलैलने छोर पकड़ ली—
'अरी, सवा रपना। सवा रपना।' सवा रपनापर पहुँच बोलेमें अचरबी हो गया। करलैलके बेहरेर पकान आ गयी। अन्वे लाचारीके स्वरमें कहा—'बाबूजी सवा रपनामें नहीं पडगा। यह श्रीबिसे चार बन कमीशनके।' अन्वे पैसे अक छोर बढ़ाने कि अन्व बोलेसे अचरबी हट गया। 'बेड रपना।'

करलैलने टेक बदल दिया—'अच्छा बाबूजी, बेड रपना।' यह बोली अक तरण प्रामीपकी थी जो लखनश्रुसे अन्वे गाँव बानस आ रहा था। अन्वेके मनमें नयी अुमका शोरल होने ला था। और वह सोच रहा था कि जिन सब चीजोंकी लेकर वह अपनी नयी पनीको भेंट करे ता कँडा अच्छा हो। लेकिन अन्वे सापीने अुसका मनभूदा सन ही-सन भाँन लिया और आगे बढ़ गया—'दो रुपये।'

करलैलकी पकान दूर हो गयी। वह अन्वे स्वर साधने ला—'दो रुपये, अरी बाबूजी दा रुपये।—दो रुपये।'

पहला सापी अडाबला होकर बूदा-शुकीरने।'

लेकिन दूसरे सापीने रोक लिया—'तीन रुपये।' करलैलने तीन रुपयेमें अक-दो-तीन कर रुपये अकमें रख लिये। अन्वना मन हच ही गया।

अब करलैलने अक साड़ी विकली। टोड पीलपनका रा लिये। अन्वेके सहीकी दूट अपनेके अतरसे सादबान हाँते हुअे अन्वे अपने हाथोंमें लीग।

'नाभी साहबन, अब आरके सनने अक साड़ी देव कर रहा हूँ।'—धीरे-धीरे अन्वेके सटने

आकर्षक होने लगे। "आप साहवान जानते हीये, मेनका अंसी ही लजीज साडी पहनकर विश्वामित्रके पास आयी थी, जो हवाके झोकोसे बूढ़ बूढ़ जाये, फहरा-फहरा जाये फिमल-फिमल जाये।" बड़ी ही आकर्षक और कोमल अदासे साडीकी तह खोलते हुये बोला— "विश्वामित्रकी आँखें खुली कि मेनकाने घुंघट डाल दिया। तब भी आँखें चार। जो हाँ, तब भी आँखें चार।" करनैलने साडीके फर्दको अपने मुँहपर लेकर अमकी पारदर्शिताका परिचय कराया। "बटो-बटो दूकानोमें जाअिअं तो अंसी माडिर्या शीरोकी आलमारियोके तहपानेमें या नफीस बुटोके बदनपर नुमाशिराकी गयी मिलेगी। अिसकी कीमत तीस रुपये। जी हाँ। लाटरीके लाटमें मिली है। बाबूजी जिसे बोलना हो बोली बोले। दम, बीस। जो, जी चाहे।" साडीमें धुसने तहे लगा दी। कभी-कभी भायी साहवान कमीगनके लालचमें यो भी बोली बोल देते है। आपसे मेरा अजं है, थेसा न करे। अगर आपके टेंटमें पैसे हो तो बोली बोले, बरना खामोश ही रहे।"

"पाँच रुपये।" अुधरसे आवाज आयी।

टूटे दाँतोके झरोखेके अुसपार करनैलको जुवान हिलने लगी। "पाँच रुपये।" अुसने अफसोस प्रकट करनेके लिये कहा— "जी हाँ। तीसके मालपर पाँच रुपये।" अुस बोलनेवालेको अेक दूसरा नवयुवक समझाने लगा,—"अरे, क्या सनक सवार हो गयी तुमपर भी यार? देखते नहीं हो? पाटकी है? अेकवार पानी पड़ेगा तो साडीके रेखे अुसीके माप धुल जाअेंगे। यह तीज रूपमें भी मईगी है, बेवकूफ।"

बर्षपरसे आवाज आयी— "आठ रुपये।"

आखिर सत्रहमें जाकर साडीका अेक दो तीन हुआ। अुसके बाद टेलकी शीशिया, टांचलाअिट, कंचिया, धूपके चरमे आदिबा डाक हुआ। आज करनैलको पम्पि आमदनी हुई। और गाडी सीतापुर था पहुँची।

सन्ध्या समय बारिश सहसा थम गयी थी। सन्ध्याके झटपुटेमेसे अेक मटिमाला अुजाला फूटकर

निकल आया था। गड्डे जहाँ-तहाँ गेरले पानीकी सनहूँका प्रतिबिम्ब और पश्चिमके आकाशमें चके और निचुड़े हुअे बादरोंकी ओटसे निकलकर फँसता हुआ घुट्ट आलोकेसे सन्ध्याके आनेका मार्ग दिखलायी देने लगा था। हरगाँव लोट जानेवाली गाडीके मिलनेमें अभी देर थी। समय वितानेके लिये करनैल स्टेशनके गिर्द घूमने लगा। सामनके मैदानमें किसी आयोजनका शोर-गुल और चहल-पहल था। बँल गाडियोपर गन्ने लारे रानभर चलकर मोनापुर चीनीके धारखानेमें बेचनेके लिये आये हुअे किसान बारिशाके कारण जो अिधर-अुधर छिप गये थे, अब खाने-पकानेका आयोजन करने लगे। अजीब-सी हरकते। चूत्हे मुलगे। हाँडियाँ चड़ी। सिखोपर ममाले पिये। धुअें। लपटें। बन्न। पत्तल। पानो। हर हरकतमें हिंसाव-किताव करते जाते थे। कितनी आमदनी हुअी। कितना खर्च हुआ। किस किस सामानमें कितना कितना खर्च। जोड-घटाव। लकडीका दाम। हाँडीका दाम। मनाओका दाम। चावल-दालका दाम। कभी किसी गानेकी पुन। कभी हँसी-खिलवार। कभी अूँचे स्वरकी तीव्र आवाज। चित्तानुर आवाज। परेशान आवाज। करनैल सब देख रहा था। सब सुन रहा था। जमानेकी सड़कपर जोधनकी दौड धूपसे अुठे गर्दों-गुवारसे ढँका अुसकी स्मृतिथेका दाँव, अुभरन लगा। वह सोचने लगा, कभी वह भी धरतीकी पैदावारपर अपनी जिन्दगीकी बाते तोला करता था। लेकिन अब ये दिन बीत गये। नीलाममें बचे मालको अेक ओर रम अेक अर्बड अुधके किसानके निकट-बँठकर वह अुसके हिंसाव-कितावमें सहायता देने लगा। लेकिन वह सोचता जाता था, किम तरह और कयो वह धरतीसे अलग हो गया।

करनैल हरगाँवसे तोतापुर अपनी रोजीके कामको लेकर बराबर ही आया जाता करता। लेकिन जब भी यहाँ ठहरा, तो होटलमें ठहरा। होटलमें खाया-पिया। सिनेमामें बतन गुजारा। भीडमें बचन गुजारा। कभी कुछ नहीं सोचा। आज भी वह प्रायोणोकी भीडमें ही था। वह अुसके कामद खर्चका हिंसाव कर रहा था। लेकिन आज अुसका मन अुसके बीने हुअे

जीवनके घुग्घमें भटकने लगा। छाता तैमार हो जानेपर खुसे ग्रामीणोंने बड़े स्वागत-भावसे भोजन कराया। गाडीका समय होते ही वह स्टेशनकी ओर चल पड़ा। गाँववाले अपनी गाडियाँ जोतकर अपने गाँवको रवाना हो गये।

जैसे खुसेके दिमागपर अंक बोझ लद गया। गाडीमें खुसकी आँसूँ अपने शिकारका निशाना सापनेसे अिन्कार करने लगी। करनैल सोचने लगा—वह अपने अिस पेशेमें क्यों आ गया ? और कैसे आ गया ? जहाँ पेट भरनेके लिये शिकार करना पड़े ! बेचारे अिन मोझे-भाले किसानोंका, जो धरतीकी सेवाकर खुसेसे घन पैदा करते हैं ! करनैल अपने जीवनकी जिस मजिलरपर अभी आ पहुँचा है, वहाँ तक पहुँचनेकी अेक-अेक गतिविधि सोच गया। आज खुसने अिनती बातें बनाना कैसे सीख लिया। धूम-फिरकर वह अिसी निर्णयपर पहुँचा कि जिस दिनसे वह जमीनकी सेवासे, धरती माताकी सिद्धमत्तसे जुदा हुआ, खुसी दिनसे खुसका अाँवन नया होने लगा। बँबर, बाछेटक, नया। अिनके लिये अिस पेशाकी खुसने अनिवार्य समझकर गुरू किया था, वह अिस समय अेक विवरा यन्त्रणा बन गया था।

वह हरगाँव पहुँचा तो रातके दम भी नहीं बच पाये थे। लेकिन निम्नस्थ सप्ताहने रातको लपेटकर मुला दिया था। अंधियारेने भी रात्रिको अपने आलिंगनमें भरकर आरन विन्मृत्तिमें अपनी लम्बी बालो पलके झुका ली थी। नीरबना गुनगुना गुनगुनाकर हवामें अेक गुदगुदी पैदा कर रही थी। अिनसारिकाअँ या विर-द्विगिणी अंधी रातोंमें मादकता या अवसादका लय मुना करती होंगी, विन्तु करनैल जिस अंधेरी रातमें अपने जीवनके पपकी अंक रेखा दूँडना चाहता था। अेक सुबहका मुँह देखना चाहता था।

सोचा, क्यों न वह अपने लडकेको भी अपने साथ ही धर ले चले ? अिनती अंधेरी रातमें लोटनेमें शायद डर जाअँ। वह बँसे ही बोझल मनके साथ खुस मालिकके मकानपर गया जहाँ खुसने अपने लडकेकी नौकरी लगा दी थी। मालिकके यहाँ सो जानेका अप्पन्न किया जाने लगा था।

करनैलने विनीत भावसे पूछा—“मितल चला गया क्या, बाबूजी।”

बाबूजीने अन्गमनदक भावने कहा—“हाँ, बँके तरहसे चला गया ही समझो।”

“अेक-तरहसे चला गया कैसा ? मैं समझा नहीं, बाबूजी।”

“जाओ, आराम करो। खुद ही मालूम हो जाअँगा तो सब कुछ समझमें आ जाअँगा।”

बाबूजीने आजिज हो खुसनेके भावमें अ्वदाव दिया।

“बाबूजी, जब आप अँसा कहने हैं तो मेरे मनमें कभी तरहका टक होने लगा है। अब तो खुद मालूम हो जाने तकका अिन्तजार मुझसे नहीं सहा जाअँगा। क्या बात हो गयी है, बाबूजी ?”—करनैल अ्य हो झूठा।

बाबूजीके शरीरकी शिराअँ हठात् अ्य हो झुठीं। वे अँके स्वरमें बोल झुठे—“तुम्हारा बेटा रीतान है। और क्या पूछते हो ? छोटी बीबीजीके गुसलवानेसे खुसने अुनके डेढ़ रुपये झुठा लिये। मैंने अुसे पुलियके हवाले कर दिया। हम तुम लोगका यह सब फिरूर वदरिन नहीं कर सकते। अभी वह चक्का है। अनीले अुसे सुचारना चाहिये। नहीं तो नविप्यमें वह अर्पकर बदमास बन सकता है।”—मालिक चुप हो गये।

मितलका सभाचार करनैलने सुन लिया। समझ लिया। खुसकी आँसूँ अगारोंकी तरह नहीं चमकीं। अेक ली की तरह तिलमिला गयी जो खुसके जीवनकी वास्तविकताअँपर सदा ही अेक घुँपला आलोक देती रही है। न मालूम, आज कीन-सा घुँट पीकर वह लौटा था कि अिनने अुसे मुत्तों और दुत्तों, दोनों ही के प्रति अुदासिन बना दिया था।

दाँविले ओठ दबा, गलेमें अ्यपट्टे आँसुओंका घुँट पी गया। अँपर अेक चुन्पी छा गयी। छातीपी, मूक-मिलल छातीपी। फिर वह खूक गलेसे बोला—“अच्छा बाबूजी मैं जाता हूँ। आज आपके आशीर्वादसे मुझे कुछ

मिला है । और आपका कुछ नुकसान हा गया । आपन मरे लन्केको सुधारकर जिनन जिना तक साथ रखा और अब ज्यादा सुधारके त्रिभुज अल भिजवा लिया । आपना अणुकार भूलन लायक नहीं । म अपनी ओरमे आपके परिवारके वचोके लिअ कुछ पैना चाहता हू ।' अमन कुछ नोट कुछ सिक्के और अठानियाँ चवन्नियाँ और दुर्गाभ्रमा चारपाओके पायदान रख दी । और धीरे धीरे चलन उगा ददके विलम्बन राग की तरह ।

दरवाजके अुस पार पहुचनके पहले झगरी अक आवाज हुआ तो अुसन घूमकर देख भर लिया नोट सिक्के आदि सभी जमीनपर बिलर पड थ । और मालिक अपना पांव समेट रहे थ ।

अभी रातकी स्याही गुबहकी सपचीक साथ टोकसे घुलन मिन्नभी नहीं पायो था । करनलनेँ अपन पडोपीओ घुलाकर बहा- जानते हो न ? मित्तल जल भज दिया गया है । अमन अपन मालिकके डड रुपय चुरा लिय थ । गरीबाका सबसे बडा कपूर यही है कि वे अपनी अिच्छाका पूरो करनकी कासिग करे । अमीरोकी सभी चीजेँ गुदर होनी ह । अुनके पापभी

गुदर होने ह । लेकिन अब छोडो भाओ क्या क्या कहू ? मन मोच सपय लिया है यह सब क्या हो गया ? यह सब अुम दिनमे हाना गुरू हुआ जिम दिन मुझसे धरतीकी सेवा छूट गयी । धरतीकी सेवासे दूर रहनसे हा जिदगी हैवानकी जिदगी बन जाती है । नगी बवर गिकारी । सो देखो म जा रहा हूँ किम्से रतीकी सेवाम । और मिनल जब छूटकर यहाँ आय तो असे वह देना वह टिहरी गडवालके अपन रिश्तेदारोके पाग आ जाअ । म भी वही जा रहा हू । जानते हो ? जहा से भागवर यहाँ आना पडा है वहाँभी अिंसानही रहते हैं । लेकिन फिरभा अब अिमानको अिमानके डरमे भागना पडा । अब यहुँके अिंसानोमे भागकर कहा जाअ ? अिन्सान अिंसानोसे भागकर कहा मनेगा ? वहाँ मेरे दात तोड डाठे गय थ । मेरी जिदगीका सिलसिला तो चाला गया थ । और यहाँ मेरे बटकी जिदगीको तोड गला गया । अब म नगा हो गया ह । फिर जीवनको डकना होगा ।

करनल कटो फमलके पडाके मडोपरसे होना हुआ । अुस दिशाकी ओर चल पडा जिम दिशामे गुबह चली था रही थी ।

[परगपुर



अपन्यास-सम्राट शरद्वावूके जीवनकी झलक

: स्व० श्री युसुफ मेहरअली :

शरद् वावूके साथ मेरी अंतिम भेंट उनके अन्त-कालके घोड़े ही दिन पूर्व हुई थी। उस वकन तो स्वप्नमें भी यह खयाल नहीं था कि मेरे और उनके बीच यह आखिरी मिलन साबित होगा। उन दिनों कलकत्तेमें एक सम्मेलन था। उसमें मम्मिलित होनेके लिये शरद् वावू भी आये थे। सम्मेलन समाप्त होनेपर हम दोनोंमें वार्ताचीत शुरू हुई।

उन दिनों शरद् वावूका स्वास्थ्य कुछ बहुत अच्छा नहीं रहना था। अस्मलिये वे जमकर कोशिशें कर रहे थे। डॉक्टरोंकी ओरसे उन्हें पूर्ण आराम लेनेकी हिदायत भी मिल चुकी थी। लेकिन सतत कार्यमें रत रहनेवाली उनकी आत्मा भला यह बन्धन कैसे स्वीकार कर सकती थी ?

मेने उनसे पूछा कि आजकल थाप कौनसा साहित्य पढ़ना अधिप पसन्द करते हैं ?

"फिलहाल तवीयत ठीक न होनेसे मेरे लिये एगातार पढ़ना मुश्किल हो गया है।" उन्होंने जवाब दिया। "फिर भी आजकल मुझे विज्ञान-सम्बन्धी पुस्तकोंमें अधिप आनन्द आता है।"

"विज्ञान सम्बन्धी।" मैं आश्चर्यमें घोलें हुआ। उनका यह जवाब सुनकर मुझे काफी ताज्जुब हुआ। मेने कहा, "मेरा तो कोशिशें और ही खयाल था। शायद आप साहित्य-सम्बन्धी बताओगे।"

"सब पढ़ो तो आपको यह सुनकर अजब मातूम होगा कि अपन्यास तो आजकल में किसी भी हाजतमें नहीं पढ़ सकता।"

"बहुत खूब।" मैं बह हुआ। शरद् वावू, कल्पना कीजिये एक मनुष्य है, जो अमर्य अपन्यासोंका लेखक है और हजारों लोग जिनके अपन्यास रिलक्षणीय पढ़ते हैं, वह खुद अपन्यास पढ़ना नापसन्द करता है।"

शरद् वावूके चेहरेपर एक हल्की-सी मुसकराहट दौड़ गयी। हमारी बातोंने दूसरा मोड़ लिया। देशकी राजनीतिके बारेमें उन्होंने मुझसे अनेक सवाल पूछे। अन्तमें मेने कहा, "शरद् वावू, मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हो रही है कि न केवल अिम देशके, बल्कि विद्वके दूसरे श्रेष्ठ साहित्यकारोंकी भांति आपकी रचि भी केवल कल्पित विषयो तक ही सीमित नहीं है।"

उनके मुँहपर सहज अल्पेजनाका भाव प्रकट हुआ। वे कहने लगे 'मे तो मानता हूँ कि सच्चा कलाकार कभी सार्वजनिक जीवनसे अलिप्त नहीं रह सकता। कलाकारकी जिम्मेदारी कुछ कम नहीं है। हरेक देशके सुन्दर और सुखी भविष्यके निर्माणका कीमती काम तो अणु-अणु देशोंके साहित्यिकों और शिक्षकोंपर ही निर्भर रहता है न ? अपनी आँखोंके सामने खड़े वर्तम्यके प्रति अुदासीन रहा जाये, तो आप कैसे भविष्यकी आशा करोगे ? भारतमाँकी देहपर तो विदेशी शासनकी गुलामीकी बेड़ी पड़ी है। तब क्या हमारे देशके आजादीके आन्दोलनकी वेग देना हम सबका वर्तव्य नहीं है ?"

शरद्वावूके साथ वार्ता करते हुये मेरे मनमें कथप भरके लिये एक विचार आया। अिस देशकी दुखी प्रजा और अुमकी अभिलाषाओंके साथ तद्रूप हो जानेमें अिम साहित्य-सम्राटकी मान-प्रतिष्ठा और गौरवने अुसके मार्गमें कोशिशें रखावट नहीं उाली। अिम देशकी जनताका एक विशाल समुदाय अुनके प्रति विनये आदर-भावसे देख रहा है। फिर भी अिम वमनगीव देशमें पादचाय सभृतिने रपमें रये हुये कुछ अये लोग भी होंगे, जो शायद शरद्वावूसे बिलकुल ही अनभिज्ञ हों। दुनियाकी अनेक भाषाओंमें शरद्वावूकी पुस्तकोंने अनुवाद निकल चुके हैं। अुनमेंसे कुछनी तो चिननी ही आवृत्तियाँ भी निकल चुकी हैं। चिनना ही नहीं, अिनमेंसे कुछ पुस्तकाने ता साहित्य-जगत्में अद्भुत कमाल कर दिखाया है।

शरद्वामूसे आप्रह किया कि वे अिम पत्रके लिखे कुछ न कुछ जरूर लिखें। शरद्वामूने तो वर्षोंसे हाथमें कलम भी नहीं ली थी। अन्होंने काफी हीले-हूवाले किये। लेकिन सुनता कौन है? अुनकी सारी दलीले वैकार सिद्ध हुआ। अन्तमें शरद्वामूने अपने वचनके पालनके समालसे तो नहीं, मगर अिस परेशानीसे बचनेके लिखे अनिच्छासे ही क्यों न हो, एक कहानी लिख भेजी। यह कहानी 'यमुना' पत्रमें छपी और अुसने दगलाके साहित्य-जगत्में अंक हलचल-सी मचा दी। मभीने यही सोचा कि हो न हो यह कहानी रविवामूने ही लिखी है। लेकिन जब रविवामूने स्वयं यह जाहिर कर दिया कि नहीं, यह कहानी मेरी नहीं है, अिसका लेखक कोअी और होना चाहिये, तब सबको लगा कि दगलाके साहित्यिकोमें अंक नये साहित्यकारका जन्म हो चुका है।

अब तो शरद्वामूने अपना ज्यादा-से-ज्यादा ममय साहित्य-सर्जनमें ही देना शुरू किया। 'भारती' मासिकमें अुनकी 'बडी दीदी' कहानी जमश. प्रकाशित हुआ। अुसके सबसे अन्तिम परिच्छेदमें कहानी-लेखकके रूपमें शरद्वामूका नाम प्रकट हुआ। अपने रंगूनके मित्रोकी ओरसे अिम रहस्यके बारेमें पूछनेपर अुन्होंने यह अुहाअू जवाब देकर कि अिस कहानीके लेखक शरद्वामू जरूर है, लेकिन वह मैं नहीं कोअी दूसरे ही है, अुन्हें शान्त कर दिया। अंमे थे हमारे शरद्वामू शरभीले और प्रसिद्धिसे कोअो दूर भागनेवाले।

'परिणता', 'चन्द्रनाथ', 'चरित्रहीन' आदि कृतियाँ अिसी 'यमुना' पत्रमें प्रकाशित हुआ थीं और अितनी खोब-प्रियताने साहित्यकार शरद्वामूकी कीर्तिकी चार चाँद लगा दिये। सन् १९१३ में अुनका स्वास्थ्य बिलकुल गिर गया और डॉक्टरोंने अुन्हें ब्रह्मदेश छोडनेकी सलाह दी। अुन दिनों अुनकी मासिक आय सौ रुपये थी। अब अुनके सामने बडी कठिन समस्या खडी हुआ। अंक और भयवर आयिक तगी और दूसरी और डॉक्टरोंकी यह सलाह। स्पर्मां नीजरीको तिलाजलि देकर वे अनिश्चित भविष्यके गर्भमें कूद पडे। लेकिन यथाश्मनीमे अुनके प्रकाशवने अिम समय अुनके प्रति

बडा सौजन्य दिखाया। अुसने अुन्हें प्रतिमास सौ रुपये देनेका वचन दिया। अिम आधारपर शरद्वामू ब्रह्मदेश छोडकर कलकत्ता आ गये।

कलकत्ता आनेके बाद तो शरद्वामूकी प्रतिष्ठा दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ती गयी। श्री देशबन्धुदासने अुन्हें अपने मासिक पत्र 'नारायण' के लिखे कोअी रचना भेजनेके लिखे लिखा। शरद्वामूने 'रवामी' नामक कहानी लिख भेजी।

अिम कहानीको पढकर देशबन्धुदास अितने सुग दुखे कि अुन्होंने अंक कोरा चेब अपनी मही करके शरद्वामूको भेजते दुखे लिखा कि आपके जैसे अंक अद्वितीय और अप्रतिभ कलाकारकी रचनाकी कीमत अंकनेकी घृष्टता में नहीं कर सकता। आप अपनी मर्जीमें आये अुतनी रकम अिस चेकमें भर लीजिये। दर असल शरद्वामू चाहते तो चाहे जितनी रकम भर सकते थे। लेकिन अुन्होंने केवल सौ रुपये ही लिये। अंक श्रेष्ठ साहित्यकारके नाते अुनकी यह सिद्धि कुछ कम नहीं थी। लोगोके दिलोपर अुनकी कहानियोंमें कैसा जाडू किया था, यह अिम बानका ठोस प्रमाण है।

दो समयों साहित्यकारोकी रचनाओकी कला, अुनकी शैली और प्रश्नरा समग्र दृष्टिसे प्रथमकरण करनेका तरीका कभी अंक-सा नहीं-होना और फिर शरद्वामूकी शैली तो बिलकुल ही मित्र प्रकारकी थी। शरद्वामू कहानीका आदि और अन्त कभी पहलैने निश्चित नहीं करते थे। सबसे पहले वे कहानीकी रूपरेखा तैयार करते। अुनके सास-न्नाम पानोके बारेमें सोचते। और बादमें जीवनका जो रहस्य अुन्हें प्रकट करना होता अुसे प्रकट करते। कभी-कभी तो वे बीचमेंसे ही कहानी शुरू कर देने और कभी कहानीका अन्त पहलैने लिख डालने। सब तो यह है कि जैसे-जैसे अुनके दिमागमें विचारोंकी तरंग अुठती, वैसे वैसे वे अुसे मूर्त रूप देने जाते। 'चरित्रहीन' अुपन्यास अिसी प्रकार लिखा गया है। अपनी रचनाओके पीछे शरद्वामू कुछ कम मेहनत नहीं करते थे। शैली तो कहानीकी जान होनी थी। अपनी शैलीके प्रति वे काकी सावधान रहते थे। लेखन-कार्य अुनके पनसे कोअी मामाग्य बान नहीं

थी। अुनकी यह दृढ मान्यता रही कि आन्माकी अभिव्यक्त करनेका यदि कोअी मन्ने बडा प्रेरक बल है, तो वह है लेखन-कार्य।

अपने जीवनकालमें शरद्बाबूने जितना लिखा है, अुतना शायद बहुत कम लेखकोने लिखा होगा। यदि अुनके प्रशिक्षण और अप्रशिक्षण सभी प्रयोगोंका मग्रह किया जाअे, तो यासा अुच्छा सग्रह बन सकता है। बिलकुल भीअे सादे और सामान्य प्रमणोंको भी अपनी अद्भुत प्रभावशाली शैलीमे पेघ करनेका अधिकार तो शरद्बाबूको ही था। अुनके मवादका ढग सचमुच अुनोखा था। व्यग्य और कटावपभी जहाँ-तहाँ अुनकी कृतियोंमें बिखरे पडे हैं।

शरद्बाबूके करीब करीब सारे अुपन्यासोंमें बगालके सामाजिक जीवनका चित्रण है। बगाल यानी जमींदारी प्रथाका घर। अुन्होंने अपनी रचनाओंमें बगालके मध्यम और जमींदारोंके वर्गका ही निरूपण किया है। जमींदारी प्रथाके अनिष्टों, जमींदारोंके जीवनके वैभव-विलासों और छल-प्रपणोंका चित्रण अुन्होंने अपने विविध ढगसे किया है।

विद्वान् पुरुषोंकी धुनभी कभी-कभी अुनके जीवनका अेक दिलचस्प विषय बन जाता है। चार्ल्स डिकन्सके बारेमें कहा जाता है कि अुन्हें अपने जीवनके अन्तिम वर्षोंमें यह धुन सवार हुई कि अेक खास कुर्सीपर खास ढगसे खास टेबलपर जबनक वे नहीं बैठेंगे, तब तक कुछभी नहीं लिख सकेंगे। अेमिल जोलावे बारेमें भी अैसाही कहा जाता है। अमुक आदमीकी तमवीर जब तक अुनकी टेबलपर नहीं होनी, तब तक अुनकी कलम नहीं चलती थी। शरद्बाबूके जीवनमें भी कुछ अैसी प्रकारकी विचित्रताएँ थी।

हमेशा लिखनेके लिये अे सुन्दर और कीमती वागज ही काममें लेते। जाडी, मोटी और तीक्ष्ण धारवाली पेनसे ही अे लिखते। अुनके अुपर भी बडे सुन्दर थे। हुक्केके बिना तो अुनका काम ही नहीं चल्ता था। चायके भी ब जबरदस्त शौकीन थ। मतान तो अन्हें कोअी भी नहीं थी। लेकिन वा-सन्ध भावसे पद्म-नक्षिण्योको पालनेका अुन्हें कुछ कम शौक नहीं रहा।

भारतीय साहित्यमें तो शरद् बाबूका स्थान सर्वे-थ्यष्ठ साहित्यकारके रूपमें है ही। अिनना ही नहीं, शिध-साहित्यमें भी अुनका स्थान निश्चिन्त हो चुका है। लेकिन भविष्यमें अुनकी कृतियोंका मूल्यांकन कैसा और कितना होगा, यह तो अभी क्या कहा जा सकता है? क्योकि शरद् बाबूकी आत्मा स्वभावसे शानिकारी नहीं थी। सामाजिक कणोंके प्रति अुनका भुकाव अत्यन्त मावधानी भरा है। समाजमें घर बर रहे अनिष्टोंका प्रथकरण वे अपने अनोंअे ढगसे करते हैं। प्रथकरण करते समय अुनकी कलम भी तेजस्वी बन जाती है। फिर भी प्राचीन कालमे समाजमें रूठ हो गये अिन अनिष्टोंसे आधुनिक युगमें कैसे मल माघा जाअे, अिस बारेमें वे कोअी हल नहीं बनलाते। प्रचलित अनिष्टोंको दूर करनेके लिये वे भूतकालकी ओर देखते हैं, लेकिन अज्ञान और बहमोअी जालमें फँसे समाजका जडमूलमे कैसे परिवर्तन हो, अिसका मार्गदर्शन अुनकी कृतियोंमें कही भी दिखायी नहीं पडता।

बाबजूद अिषके शरद्बाबू हमारे देसके गौरव और अेक महान् कलाकार थे। २६ जनवरी, १९३८ को वासठ वर्षकी अुग्रमें अुनका जीवन-दीप सदाके लिये बुझ गया। अुनके जवसानमे साहित्यके अेक युगका अन्त हो गया।

(अनुयाटक : श्री गौरीशंकर जोशी)

[अहमदाबाद

हिन्दी-साहित्यके आदिकालका नामकरण

: श्री महेन्द्र 'राजा', अेम. अे., सा. र. :

स्व. आचार्य रामचन्द्र शुक्लने अपने 'हिन्दी साहित्यके इतिहास'में हिन्दी-साहित्यका आदिकाल स० १०५० से १३७५ तक माना है और हिन्दी साहित्यके इतिहासमें परिचित जनसामान्य भी यही मानना है। पर पिछले वर्ष प्रकाशित अपने 'हिन्दी-साहित्य' में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदीने हिन्दी साहित्यका आदिकाल १००० अि से १४०० अि तक माना है। यदि सच पूछा जाये तो अिन कालमें जिन-जिन प्रवृत्तियोंका जन्म हुआ वे विज्ञानको प्राप्त हुआ अुनका 'बोध-वपन मन्त्रार' तो अिस कालके पहले ही अर्थात् अपभ्रंश कालमें ही चुका था जैसा कि दसवीं शताब्दीसे पहलेके प्राप्त अनेक अपभ्रंश ग्रंथोंसे पता चलता है। अतः अिस कालको 'आदि काल' कहना भी ठीक नहीं मालूम पडता। अिस कालकी प्रवृत्तियाँ तो पूर्व निश्चित योजनाका फल थीं। अकुर तो कभीका निकल चुका था, सायही पल्लव भी आने लगे थे, अत्र तो केवल अुनके पुष्पित होने तथा फल लगानेकी देरी थी और यह सब अिस कालमें हुआ। अेर बात हमें नहीं भूलना चाहिये कि अिस काल तक जो साहित्य हमें मिलता है वह हिन्दीका नहीं अपितु परिनिष्ठित अेव अुमसे कुछ आगेकी अपभ्रंशका है। और अब यह निविवाद है कि अिस कालमें अिस साहित्यकी रचना हुआ वह पूर्व निश्चित परम्पराका सुमन्थल रूप है। १० वीं शताब्दीकी भाषाके गद्यमें तत्सम् शब्दोंका व्यवहार बढने लगा था पर पद्यमें तद्भव शब्दोंका ही व्यवहार होता था। अिस कालकी सपूर्ण प्रवृत्तियोंमें यह बात विशेष रूपसे लक्षित होनी है। अिस कालकी जितनी भी प्रवृत्तियाँ हैं, वे सब प्रत्येक दृष्टिसे पूर्ववर्ती परम्पराका आनेकी और बढाव ही हैं, अथवा भाषामें नाममात्रका थोडा बहुत परिमार्जन आ गया है। अतः अिस कालकी प्रवृत्तियोंको लक्ष्य कर हम अिस कालकी भाषाको परिनिष्ठित अपभ्रंशसे थोडा आगे बढी हुआ,

परिमार्जित व मन्कारित अत्रयत बह सकने है, (हिन्दी नहीं।) आगे चलकर अिना भाषाके जनस. विकासमें शुद्ध हिन्दीका रूप लिया। हो सकता है कि तत्कालीन भाषाका रूप हिन्दीकी वाचुनिव प्रा-नीय बोलियोंमेंसे ही किसीका पूर्व रूप रहा हो।

हिन्दी-साहित्यके आदिकालका इतिहास जाननेके लिये प्रमुख रूपसे केवल अेक ही इतिहास पुस्तक प्राप्त है और वह है प० रामचन्द्र शुक्ल लिखित 'हिन्दी साहित्यका इतिहास'। पिछले कयो वर्षोंमें स्कूलों, कालेजों अेवं विश्वविद्यालयोंमें यह पुस्तक अेक प्रामाणिक ग्रंथके रूपमें मान्य हुयी है और आगे आनेवाली पीढ़ीने अिनीके आधारपर हिन्दी-साहित्यके इतिहासके विषयमें ज्ञान प्राप्त किया है।

अिस समय शुक्लजीने इतिहास लिखा था, अुन समय नाममानके जो थोडेसे ग्रंथ प्राप्त थे, अुन्हींको आधार मानकर शुक्लजीने अपने इतिहासका प्रथमन किया था और अुन्ही ग्रंथोंके आधारपर शुक्लजीने हिन्दी-साहित्यके आदिकालका नाम 'वीरगाथाकाल' रखा था। यद्यपि अुन समय भी कयो अेसे अन्य ग्रंथ प्राप्त थे जो अब काफी प्रामाणिक माने जाने लगे हैं, पर शुक्लजीने अुन समय अुनकी प्रामाणिकतामें सन्देह प्रकट किया था और अिनीलिखे अपने इतिहासके लिखनेमें अुनने कुछ भी महापता नहीं ली। तथा कुछ ग्रंथोंकी अुन्हीने साम्प्रदायिक अेव धर्मप्रचारका अिजाव देकर भी छुट्टी ले ली थी। गेअ जिन ग्रंथोंके आधारपर अुन्हीने अिस कालका इतिहास लिखा था, वे ये हैं— (१) विश्वपाल रासो, (२) हमोर रासो, (३) कीर्तिलता, (४) कीर्तिताराका, (५) सुमान रासो, (६) बीसलदेव रासो, (७) पृथ्वीराज रासो, (८) जयचन्द्र प्रकाश, (९) जयमयक जस अदिका, (१०) परमाल रासो, (११) सुसरोकी पहेलिन और (१२) विद्यापति-पदावली।

अिन ग्रथोको आधार मानने अेव अुम समय प्राप्त अन्य ग्रथोको छोडनेका कारण बतलाने हुअें अुहोंने लिखा था कि केवल अपुरोतन वारह ग्रथ ही अैसे हैं जिनने हमें अपने विवेचनमें सहूप्रता मित्र सक्ती है और हिन्दी-साहित्यके आदिकालका लक्षण-निष्पण अेव नामकरण हो सक्ता है। अिन ग्रन्थामें अधिकांशकी अुहोंने धीरगाथात्मक बतलाकर अिस कालका नाम 'वीरगाथा-काल' रखा था तथा बाकी ग्रदाको अविवेचनीय करार देने हुअें तथा कि अिन पुस्तकामेंसे कुठ परवर्ती कालकी रचनाअें है कुठ नोटिस माय है और कुछ धार्मिक अपुदेग विपयक है। पर अबतक जो साहित्यिक खोजें हुअी हैं, अुनसे पता चलता है कि शुक्लजीने आदि-कालने लिअें विवेचनीय ग्रथोके चुनावमें बडी भूल की है और जिन ग्रथोको अुहोंने अुस समय प्रामाणिक अेव असदिग्ध माना था अुनमेंसे अिकाग अप्रामाणिक अेव असदिग्ध होनेसे अविवेचनीय है तथा रिमी किमीके तो अस्तित्व तकका पता नहीं चलता।

अपुरोतन वारह ग्रथोंमेंसे अधिकांशको अविवेचनीय ठहराने हुअें अेव शुक्लजीकी भूलकी ओर अिगित करते हुअें आचार्य द्विवेदीजीने बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा आयोजित व्याख्यानमालाके अतन प्रथम व्याख्यानमेंही निर्देश किया था। राजस्थानी साहित्यके अुद्भट विद्वान श्री अजरचंद नाहुटा अेव श्री मोतीलाल गनोरियाके साथही साथ श्री राहुल साहूव्याख्यानने भी अपुरोतन ग्रथोंमेंसे कुठको अप्रामाणिक अेव असदिग्ध सिद्ध किया है।

अिन प्रकार वर्तमान खोजोंके अनुसार हम देखते हैं कि मान्य विद्वानोंने यह सिद्ध कर दिया है कि शुक्लजीने हिन्दी-साहित्यके आदि कालके अितिहासके लिअें जिन ग्रथोको विवेचनीय माना था अुनमेंसे अधिकांश अविवेचनीय हैं और अुहोके अन्दरमें कहा जाअें तो कुछ पीछेकी रचनाअें हैं, कुछ नोटिस हैं कुठका अस्तित्व तब सदेहजनक है, अेव कुछ अर्द्ध-प्रामाणिक मानी जाने लगी हैं। केवल पुष्पीराज रामोरी प्रामाणिकता-अप्रामाणिकताको लेकरही विद्वानोंने जमीन-आगमानके मुलावे अेक कर डाले थे। जिन धार्मिक अेव अपुदेगपरक

रचनाओंको शुक्लजीने अविवेचनीय मानकर छोड दिया था, अुनमेंसे अधिकांश अब विवेचनीय मानी जाने लगी हैं। केवल धर्मोपदेश होने मात्रमेंही कीत्री रचना साहित्य विवेचनके योग्य न समझी जाअें, यह अुचित नहीं जान पडता। अन्यथा फिर रामचरित मास, मूर-सागर, रामपचाध्यायी आदि ग्रथ भी साहित्यिक विवेचनके योग्य नहीं रह जाने।

स्व० शुक्लजीके बादकी खोजोंमें अिन 'काल'की विवेचनके योग्य जो ग्रंथ पाये गये हैं तथा विद्वानोंकी दृष्टिमें जो ग्रंथ विवेचनायोग्य समझे जाने लगे हैं, अुनमेंसे कुठ ये हैं—

सन्देश रासक, भविष्यत्त कहा, सणकुमार चरित्र, भावना सार, परमाल प्रकाश, पञ्चमासिरी चरित्र, तिमट्टीलखण महापुराण, पञ्चमचरित्र, हरिषड पूरण, स्वयंभूका रामायण, असहर चरित्र, पाण्डुमार चरित्र, प्राचुर पंगलम, बौद्धगान ओ दोहा, वर्णरत्नाकर, मुक्ति-व्यक्ति प्रकरण, डोलामाहरा दूहा, नेमिनाथ कृत आदि ग्रथोके अतिरिक्त कुठ पहलेके प्राप्त ग्रथोंमेंसे भी विवेचनीय हैं।

अपुरोतन ग्रथाने साथही साथ आदिकालके अितिहासपर विचार करते समय आधुनिक लेखकोंके निम्न ग्रंथ सहायक सिद्ध होंगे—मिथवन्तु विनोद, हिन्दी साहित्यका अितिहास, काव्य धारा, धीर-काव्य मगह हिन्दी साहित्यका आलोचनात्मक अितिहास, राजस्थानी भाषा और साहित्य, राजस्थानी साहित्यकी रूपरेखा, हिन्दीके विकासमें अपभ्रंसका योग, हिन्दी-साहित्यका आदि काल आदि। अिनमें दो ग्रंथ काफी महत्वके हैं।

अब प्रश्न आता है, अिन कालके नामकरणका। अिस कालके अितिहासके लिअें विवेचनीय जिन ग्रथोका अपुर जिक्र आया है अुन्हें देखनेमें पता चलता है कि अिनमें दो प्रकारकी रचनाअें। अेक तो अपुदेगत्मक, धर्म प्रचारक, रहस्यमूलक रचनाअें हैं। दूसरी-चारण कवियाने-चरित काव्य। अिनने विषयमें आचार्य ह. प्र द्विवेदीजीने लिता है कि पहली प्रकारकी रचनाओंमें बौद्ध और नाथ सिद्धोंकी तथा जैन मुनियोंकी रूपक तथा अपुदेगमूलक या हठयोग या कर्मयोगकी महिमाका

प्रचार करनेवाली रहस्यमूलक रचनाओं हैं। अिन्ह हम साहित्यके इतिहासमें हटा नहीं सकते। अिन्हाने जितनी दूरतक मनुष्यचित्तकी दृष्टिके विचारमें मुक्त करके सहज सत्य तक पहुँचनेमें सहायता की है अतना दूरतक व सच्चे साहित्यके अन्तगन गिनी जान योग्य है। दूसरी श्रेणीकी रचनाओंमें राजस्तुति युद्ध और विवाह आदिके वर्णन ह। अिस श्रेणीकी रचनाओंकी वीर दर्पणियोंमें नवीन वाक्य भगिमाकी ताजगी अनुभूत होती है। हेमचन्द्रक व्याकरणमें ही अिस श्रेणीक वीर दर्पण यह नया रवर सुनायी देन लगा है। अूमम नवीन ताजगी ता हैं ही सहज अकुनोभय भावनाम अूममें अपूव तज श्विना भी मिलने लगती है।

यह पहल कहा जा चुका है कि प रामचन्द्र गुप्तजीन अूम समय प्राप्त रचनाओंके आधारपर अिस कालका नाम 'वीरगाथा-काल' रखा था। अुनका कहना था कि अुन रचनाओंमें अधिकतम वीरगाथाओं हैं। पर अूर यह बतलाया जा चुका है कि शुक्लज्योकी आधारित रचनाओंमेंसे अधिकांश अप्रामाणिक तथा सद्व्य तथा नोदिस मात्र हैं, अत अिस कालका नाम 'वीरगाथाकाल' अुचित नहीं प्रतीत हाता। हाँ, यह बान निर्विवाद है कि अिस कालकी रचनाओंमें वीर रमका अपूर्व अेव नवीन स्वर मिलता है तथा वीर रस प्रपान है, पर दूसरी

ओर बौद्ध तथा नाप मित्रा तथा जैन मुनियोंकी निर्गुणिया भावापन कविताओं भी मिलनी हैं। राहुलज्योका भी यही मत है और अुपरोक्त दो प्रकारकी (१) सिद्धोंकी वार्था २ सामताकी स्तुति) रचनाओंके आधारपर अुन्होंने अिस कालका नाम 'सिद्ध-नामन काल' रखनेका सुझाव दिया। पर यह नाम भी कुछ अधिक अुपयुक्त नहीं मालूम पडता। नाम अेमा होना चाहिये कि अिस कालको सभी प्रवृत्तियाँ अुमन आमास हो सके। अत जैवतक बालाचकों, विद्वाना और अिस विषयके अन्व पकीकी दृष्टिमें कोअी अय अुपयुक्त नाम नहीं आता तबतक हम भी आचार्य ह. प्र द्विवेदीजीके स्वरमें स्वर मिलाकर यही कहना चाह्य कि अिस कालका नाम 'आदिकाल' ही अधिक अुपयुक्त जान पडता है।

कुछ विद्वानोंकी दलील है कि यदि कुछ धार्मिक ग्रन्थ प्राचीन कालके मिल गये, तो भी 'वीरगाथा काल' में कोअी आँच नहीं आती। क्या दानवीर, धर्मवीर, दयावीर नहीं होने? पर सच पूछा जावे तो अुनकी यह दलील थोपी है। माना कि 'दानवीर' आदि भी वीर हाते हैं, पर सामान्य व्यवहारमें 'वीर' का अर्थ 'यूववीर' या युद्धवीर' हाता है, अत 'वीरगाथाकाल' यह नाम हमें अुपयुक्त नहीं अँचना।

[चनाम



असम प्रदेश और उसकी भाषा

: श्री महेशकुमार मूँधड़ा :

भारतके अन्तरी पूर्वी सीमान्तका प्रदेश आसामके नामसे विख्यात है। तीन तरफ यह पहाड़ोंसे घिरा है—अन्तरी-पूर्वी भागकी पहाड़ियोंके कारण अर्धरे ब्रह्म-पुत्रकी घाटी और चीन अथवा दूसरेसे अलग होते हैं, पूरबी दक्षिणी भागकी पहाड़ियाँ अिस प्रदेशको बर्षासे पूथक् करती हैं। जिसके पश्चिममें पडता है पूर्वी बंगाल (अर्थात् वर्तमान पूर्वी-पाकिस्तान)। भौगोलिक दृष्टिसे हम वर्तमान आसामके दो भाग कर सकते हैं— ब्रह्मपुत्र या आसाम घाटी अथवा मूरमा घाटी। ब्रह्मपुत्र घाटी ही असली आसाम है। यहाँके निवासी खुदको अरामिया कहते हैं अथवा असमिया भाषा बोलते हैं। देश 'असम' कहलाता है, किन्तु अंग्रेजोंकी कृपासे आसाम हो गया।

विभिन्न ऐतिहासिक युगोंमें अिस प्रान्तके नाम अलग अलग रहे हैं। अिसका सबसे पुराना नाम है प्राग्-ज्योतिष। रामायण तथा महाभारतमें अिसी नामसे अिस प्रदेशका अुल्लेख किया गया है। रामायणमें लिखा है कि मुग्रीवने सीताको ढूँढनेके लिये विभिन्न दिशाओंमें बन्दर भेजे थे। कोअ्री बन्दर यहाँ भी आ पहुँचा। मुग्रीवने अुस समय अिस प्रदेशका परिचय अिस तरह दिया था—

योजनानि चतु वट्टिबंराहो नाम पर्वतः ।
सुवर्णधुङ्ग गुमहानपाथे वरुणालये ॥ ३०
तत्र प्राग्ज्योतिष नाम जातरूपमयं पुत्रम् ।
तरिम्नु असति दुष्टारमा नरकी माष दानव ॥ ३१
(किष्किन्-महाकाण्ड, ४२ सर्ग)

महाभारतके सभापर्यमें अर्जुनके दिग्विजयपर अिस क्षेत्रके शासन भगदत्तका वर्णन आता है—

स किरार्तवच चीनैश्च पूत प्राग्-ज्योतिषोऽभवत् ।
अप्येवश्च बहुभिर्षोष्यै सामारानुवातिभि ॥

रा भा ७

यहाँ यह कहा जा सकता है कि कुरुक्षेत्रके युद्धके समय अिस राजाने दुर्वाधनकी सहायता की थी।

परवर्ती संस्कृत साहित्यमें प्राग्-ज्योतिषके अलावा 'कामरूप' शब्दभी अिस प्रदेशके लिये प्रयुक्त होने लगा। कालिकासने दोनो नाम व्यवहृत किये हैं। प्राचीन कालके अन्तरी भारतके कितनेही जिलालेखोंमें भी कामरूप शब्दका प्रयोग मिलता है। पुरातत्त्वके अध्ययनसे जात होता है कि कामरूप बहुत ही प्राचीन जनपद है। आज वो कामरूप वर्तमान असम प्रदेशका अथवा विस्तृत जिला मान रह गया है, मगर प्राचीन कालमें अिसका क्षेत्र अिस समयकी अपेक्षा बहुत अधिक विस्तृत था। वर्तमान आसामके अधिकांश भागके अलावा बंगालके जिले कोच बिहार, जलपायी गोंडी तथा रंगपुर आदि अुस कालमें कामरूपके अन्तर्गत ही थे। 'कालिकापुराण' (रचनाकाल—सम्भवत दसवीं शताब्दी थी) और 'योगिनीतत्र' (रचनाकाल—सम्भवतः मोलह्वी शताब्दी थी) में प्राचीन कामरूपका भौगोलिक वर्णन मिलता है। अुस वचन अिसकी पश्चिमी सीमा अन्तरी बंगालकी करतोया नदी थी।

'कालिका पुराणमें' लिखा है—

करतोया सत्यगङ्गा पूर्वं भागावधिधिता ।

यावत्सलितकान्तास्ति तावद्देश पुंर तथा ॥

(३८।१२१ अ)

अर्थात् करतोया नामक सत्यगंगासे पूर्वकी ओर ललितकान्ता पर्यन्त यह पुर विस्तृत है। (ललितकान्ता दिनकरवासिनीके निरुट है।)

'योगिनीतत्रमें' प्राचीन कामरूपकी चतुःसीमा अिस तरह दी गयी है—

"करतोया समाधित्य पावट्टिकर वासिनी ।

अुत्तरस्यां कच्छगिरि करतोयास्तु पश्चिमे ॥

तोयधरेष्ठा दिक्पुनरी पूर्वस्या गिरिकण्यके ।
 दक्षिणे ब्रह्मपुत्रस्य लावयाया मगमावधि ॥
 कामरूप अति ह्यात सर्वशास्त्रेषु निश्चित ॥'
 " त्रिंशत् योजनविस्तीर्ण दीर्घेण शतयोजनम् ।
 कामरूपं विजानीहि त्रिकोणाकार मृतमम् ॥
 ओशाने चंब केदारो वायव्या गजशासन ।
 दक्षिणे सङ्गमे देवी लावयाया ब्रह्मरेतस ॥
 त्रिकोणमेव जानीहि सुराधुर नमस्कृतम् ॥"

अर्थात् कामरूप वरतोयासे दिक्करवासिनी तक विस्तृत है। इसके अन्तरमें कञ्जगिरि, पश्चिममें करतोया नदी, पूर्वमें तीर्थ श्रेष्ठ दिक्पु नदी और दक्षिणमें ब्रह्म पुत्रा नदी तथा लवया नदीका संगम है। जिस सीमाको सभी शास्त्रों माना है। इसका विस्तार तीस योजन और दीर्घ अक्षी योजन है। इसके आंगान कोणमें केदार, वायव्य कोणमें गजशासन और दक्षिणम ब्रह्मरेतस तथा लावयाका संगम है। कामरूप त्रिकोणाकार है।

वर्तमान गोहाटी ही अिम प्रदेशकी राजधानी थी और प्राग-ज्योतिषपुर इसी गोहाटीका नाम था। मगर तेरहवीं सदीके पिछले भागमें अिस प्रदेशकी राजधानी यहाँसे हटकर आधुनिक बूचबिहारसे चौदह मील दक्षिण पूर्वस्थित कामतापुर बना दी गयी। आज कामतापुर अेव ध्वसावशेष मात्र रह गया है। कामरूपमें अुस समय कितने ही भूपा सरदारके दल बहुत शक्तिशाली हो गये थे। व कामतापुरके राजाके अधीन नाममात्रके अिन्ने ही थे। मोल्टवी मदीमें नर-नारायणने (१५४० अी में गढ़ीनर बंठा) कामतापुरसे हटाकर बूचबिहारको राजधानी बनाया।

किमी समय कामरूप प्रदेग अिन्द्रजालकी विद्याके लिये अिन्ध्यात था। कट्टा जाता है कि यहाँकी स्त्रियाँ अिन्द्रजाल फँलाकर पुत्राकी वशीभूत कर लेनी थीं। कामरूपमें स्त्रियाँ अन्य प्रदेशकी अपवया अधिक स्वतंत्र रही हैं। नायद अिमो स्त्री-स्वान्ध्याने वारणही यह अन्ध-विश्वास बाहरसे जानेवालेन दिमागमें पैदा हुआ।

अिम प्रदेशका आधुनिक नाम यहाँके शाल विजे-त्ताओंने सम्भरित बनाया जाता है। सन् १२२८ अी

के करीब अुलरी पूर्वी सीमा (वर्मा चीन) की तरफने शाल जातिके लोगाने अिस प्रदेशको जीता। कहा जाता है कि अिम प्रदेशपर विजय प्राप्त करनेके बाद अिन लोगोंने 'अहोम' नाम ग्रहण किया और अुसीसे अिस प्रदेशका नाम असम पडा। सन् १२२८ अी. से करीब डेड सौ वर्षोंतक अहोम राजा वेष्टके पूरबी असममें राज करने रह। पूरबी असममें जब अिनके पर जम गये तो अिनहोने पश्चिमकी ओर बढ़ना शुरू किया। अिस देशमें ये लोग वर्तमान बगालकी सीमातक बढ़ आये। सन् १३७६ अी में पहली बार अिन्हें लननीपुर और शिवसागरक चूता राजाओंसे घमासान युद्ध करना पडा। कहा जाता है कि यह संघर्ष करीब १२४ वर्षोंतक चलता रहा। १५०० अी के करीब चूता राजाको हराकर अहोमोने शिवसागरमें अपनी राजधानी कायम की। परवर्ती शताब्दियोंके असमका अितिहास काफी हदतक अहोम-शासनकालका ही अितिहास है।

अहोम जिस वक्त आसाममें आये, अुनकी वेस-भूपा, चाल-टाल और भाषा आदि पराजित प्रदेशके लोगोंसे अिन्कुल जुदा थी। राजनैतिक सत्ता हासित करनेका अहाँनक सवाल है, अहोम विजयी हुअे। मगर पराजित जनताकी सस्त्रुति अितनी अुजत थी कि विजेताओंको मास्कृतिक बर्षेनमें अपनी हार माननी पडी। धीर-धीर अहोम भारतीय रगमें रगे जाने लगे और अन्तमें सन् १६५५ अी के करीब अहोम नृपति चुचगकाने हिन्दू धर्म भी स्वीकार कर लिया।

अिम प्रदेशका नाम असम है और अिनो नामसे अुस प्रदेशकी भाषाका नाम असमिया पडा। असमिया भाषाकी या गौड वपभ्रमस सम्भवत निक्की है। आधुनिक आर्य भाषाओंमें असमियाका स्थान अेरु पूर्ण विकसित भाषाके रूपमें है। मगर अिस भाषाका अपना विशेष रूपा किम समयमें गुरु होता है यह कहना बहुत ही कठिन है। तन्म (सस्त्रुत) शब्द अिममें प्रचुर मात्रामें हैं। बगला भाषाने अिनका बहुत अधिक साम्य है। अिन दोनों भाषाओंकी अुत्पत्तिका

योन अरु होनेर वारण अरुमा हाना कोओ आरुचरुवकी वान नही है ।

मातवी सदीके प्रथमायम कामरुपके राजा भास्वरु उरुमनेके निमप्रणस कीनी पयटव हुजनत्साग अरुम प्रदेशमें गया था । राजकीय-रुतविके रूपमें वह कुछ दिन वही रहा । अरुसन र्गिवा है वि कामरुपके लोग ओमानदार नाउ वदव तथा वाउ र्गके थ अरुनरी भाषा 'मध्य भारत की भाषास कुछ भिन्न थी, (The people were of honest ways small of stature and black-looking their speech differd a little from that of Mid India) ?

हुजेनत्सागने अरुम वर्णन तथा र्गतिपय दूगरुी वाओके आरुपरपर कुछ विद्वानोरा कहना है वि सालवी सदी ओ में आरुमभाषा अरुम प्रदेशम पहुँच चुकी थी और अरुम वरुनभी अरुत भाषामें तथा तत्कालीन "मध्य भारत में कोओ जानेवाली मैथिली या मागरी भाषामें कुछ फरु आ चुका था । २

आरुवरु सुनीतिरुमार चाटुर्ग्या महाशयका मत है वि पन्द्रहवीं सदीके मध्यभाग तककी अरुमभाषा तथा तत्कालीन वगला भाषामें नहीके समान फरु है, दोना प्राय अरु है तथा अरुमभाषाके विरुगिट तत्त्व अरुम कालकी अरुमभाषामें नगथने है । अरुनके मतानुसार तत्कालीन वर्मा अरु वान, प्रभाव तथा दूगरुे कतिपय कारणाने परुवर्ती कालमें अरुमभाषा तथा वगलाका पारुषय बढा । ३

(१) Thomas Watters—On Yuan Chwang's Travels in India (London 1905) Vol II p 186

2 Birinchi Kumar Barua—Assamese Literature. (P E N.) Bombay, 1941 pp 5-6

3 Dr Suniti Kumar Chatterji—The Origin and Development of the Bengali Language. (Calcutta University Press) 1926 Part I p 108-9 (Section. 58)

आरुवरु वणीरुान्म कावनीने उलवत्ता विरुग विद्यालयमें सन १९३५ म पी अरुच नी डिग्रीके लिखे अरुमभाषा—अरुसका निर्माण तथा विवास सम्बन्धी ओ निरुगथ (विस्तिम) दिया अरुसमें अरुमभाषाका अरुगथान्य भागकी भाषाओने जा मध्यय है अरुमभाषा अरुची तरह विरुेषन किया है । ४ अरुनके मतानुसार अरुमभाषा वगलासे निरुगनी हुओ अरुक ररुतय भाषा है अरुमभाषा मागरी अरुवअरुसके नाने वगलाके सम्बन्ध है । वनमान अरुमभाषा दोहाकी भाषाके अरुगिन्न निरुक्त है । ('Assamese is not an offshoot or patois of Bengali but an independent speech related to Bengali, both occupying the position of dialects with reference to some standard Magadhan Apabhhransa Modern Assamese in certain respects shows a closer approximation to the forms and idioms preserved in the dohas) ५

यहाँ दोहासे मतलब है 'दोहागान् ओ दोहा' है । ६ अरुगिवाव विद्वान अरुन बीरुद दोहाका रचनाकाल आरुवी से दसवीं शताब्दी मानते हैं ।

4 Dr Bankanta Kakati—Assamese, Its Formation and Development (Gauhati: 1941) अरुम पुस्तकमें देगिओ भूमिका—(B) The Affinities of Assamese Relationship with other Magadhan dialects considered pp. 3-11

5 वही पुस्तक pp 9-10 section 16

६- महामहोपाध्याय हरुप्रसाद शास्त्रीन नेपालमें आरुवरु बीरुद गानओ दोहाका पता लयाया । अरुनके मतानुसार य करुीरु अरुक हजार वरुं पहुँचेकी वगला भाषाके नपूने ह । किन्तु अरुनकी भाषा और विरुग रूपसे दण्ड सगटनको दणवरु पूर्वी भारतकी विरुगिन्न भाषाओके विद्वान अरुमह अपनी अरुप ती भाषाकी रचना बताते हैं

अस तरह हम देखते हैं कि स्व डॉक्टर वाक्तीन डॉ सुनीति बाबूके ऊपर दिये गये मतको नहीं माना है। डॉक्टर काकतीका कहना है कि बंगला और असमियाका अद्गम अेक है, किन्तु उनका विवास समानान्तर रूपसे स्वतंत्र पद्धतिमें हुआ। ('. they started on parallel lines with peculiar pre-disposition and often developed sharply contradictory idiosyncracies ') ७

पहले असमिया कभी लिपियामें लिखी जाती थी। गर्मय, बामुनिया, लखारी और बँचली आदि लिपियाँ प्रचलित थी। बंगालके प्रसिद्ध शहर थी रामपुरमें छापाखाना खोलनेके बाद असमियामें पुस्तक

७, डाक्टर वाक्तीकी ऊपर लिखित पुस्तक, प ७, परिच्छेद १२

प्रकाशित होने लगी और तबसे अस भाषाके लिखे बंगला लिपिमें घोडा सरोधन करके अुने ही अिल्लेमात्र किया जाने लगा।

असमिया साहित्य विशाल है। बाधुनिक भारतीय भाषाआमें अितिहासके अन्य लिखनेके बयेत्रमें असमियाकी परम्परा काकी गौरव पूर्ण रही है। कभी सताब्दियोंमें असमियामें बृहज्जियाँ (अर्थात् अितिहास) लिखनेकी परम्परा चलनी आयी है। ये बृहज्जियाँ अभीतक सुरक्षित हैं। अस प्रदेशका अितिहास जाननेमें जिनसे बहुत सहायता मिलती है।

विभिन्न लेखकोको सापनासे असमिया साहित्यकी श्री-वृद्धि हो रही है। हमारे समाजकी प्रगतिके साथ असमिया साहित्यकार भी विवासकी नयी मजिले तप करते हुअे निरन्तर प्रगतिकी ओर बडे जा रहे हैं।

[कजकता



बुन्देलखण्डी लोकगीतोंमें शृंगार-सुपमा

: श्री कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुन्मुमाकर' :

यद्यपि ब्रजभाषा और बुन्देलखण्डीमें कोअी विशेष अन्तर नहीं फिर भी कुछ अक्षरार्थ भेद और शब्दोंके प्रयोगमें कुछ भिन्नता अवश्य पायी जाती है। जिन लोगोंको श्री बनारसीदास चणुवदी और श्री मैथिलीशरण गुप्तसे वातचीत करनेका अवसर मिला है और जिन्होंने बारीबारी से दोनोनी भाषाआका अन्तर समझनका प्रयत्न किया है, वे जिस मूल्य भेदको कुछ-न-कुछ अवश्य समझ सके होंगे। स्वर्गिय कवि मुशी अजमेरीका कहना था कि बुन्देलखण्डी ब्रजभाषासे भी अधिक मधुर है और ब्रजभाषासे माधुर्यवी तो चर्चा करना ही व्यर्थ है। ब्रजभाषा और बुन्देलखण्डी दोनोकी अत्यन्त सौरसेनीसे हुआ है, जिसे डाक्टर धीरेन्द्र वर्माने सौरसेनी जनपदकी भाषा माना है। केशव और पद्माकरनी कविताआ पर भी बुन्देलखण्डीका प्रभाव पाया जाता है। पद्माकरनी निम्नलिखित सर्वथा ब्रजभाषा और बुन्देलखण्डीकी अक्षता समझनेमें सहायक होगी —

जाहिरं जागत सीजमुना, जब बूडं यहँ अपुहँ यहँ येनी ।
रयो 'पद्माकर' हीरके हारन गगतरगनको मुण देनी ।
जावकके रगतो रग जानु है भतिहिभाँति रारस्वति सेनी ।
परे जहाँ ही जहाँ वह बाल तहाँ तहाँ तालमें होत त्रियेनी ।

—जगद्धिनोद

ब्रजसाहित्य-मंडलके गन मैतपुरी अधिवेशनमें (१० दिसम्बर १९५३) को अपने अध्यक्षीय भाषणमें डाक्टर वर्माने भाषाके अनुसार पाँच जनपदोंका वर्गीकरण बताया था (१) शुभने जिसमें ब्रज और बुन्देलखण्डी वषेय, (२) पाचाल (बनौजी भाषाका वषेय), (३) कोशाँ और बानी (भोजपुरी-वषेय) और (४) कुशँवष। कुशँवषकी भाषाको छोड़कर प्रायः सभी जनपदोंकी भाषापर ब्रजभाषाका प्रभाव अधिक रहा है। अवधी, बनौजी और भोजपुरीमें अनेक शब्द और प्रयोग ब्रजभाषाके मिल जाते हैं —

भभिभू विरह जरि कोअिल कारी ।

डार डार जो बूक पुकारी ।

—जायसी

डाक्टर वर्माने अपनी पुस्तक 'ब्रजभाषाका व्याकरण' में अवधीका वातावरण ब्रजभाषासे बहुत भिन्न माना है, परन्तु वात अक्षी नहीं है। वे स्वयं अवधीको मध्यवर्ती भाषा मानते हैं और जिस दृष्टिसे देया जाये तो ब्रजभाषाका प्रभाव अवधीपर किसी-न-किसी सीमातक पडा हाँ है। सहायक क्रिया 'हँ' को ही लीजिये ब्रजभाषा और अवधी दोनोमें जिसके समान रूप चलत हैं। अहो, अहै, अियादि। सजाके नरन घरन, आदि प्रयोग दोनोम समान हैं। सर्वनाम भी अक्षे चलते हैं। डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा 'धोर' सर्वनामका प्रयोग ब्रजभाषामें नहीं मानते, परन्तु मेरे' शब्दका प्रयोग दोनोम होता है जैसे —

मेरे बाबूलरे सोनेके दोपकलसा लंदे ।

मेरे बाबूलरे नितनितजलसिया कूटती ।

(ब्रजका अक्षे लोक गीत)

होतो बिटिया जो मेरे एक बेहूराजाघर देति बियाहि ।
कुम्भक लीती रपहिटाजाकी, ली लासनको लेति बचाप ।

—आरहा

आरहाकी भाषा बँसवाडी है, जो अवधीका ही अक्ष रूप है। 'लीता' ब्रजभाषामें लावती' हो जाता है। त्रिपार्थक मजा जैसे 'राखव' तथा वर्तमानकालिक कुदन्त, जैसे 'राखत' दोनोमें अक्ष से होते हैं। सहायक क्रियाके रूपामें भी सादृश्य है। कअी विभक्तिपरी भी अक्षमी है। श्री विशोरीदास बाजपेयीने भी अपनी पुस्तक 'ब्रजभाषाका व्याकरण'में ब्रजभाषाका व्यापक प्रभाव माना है जो अवधीही नहीं बअो अन्य प्रान्तीय भाषाओ पर भी दिवायी देता है। अवधीपर ब्रजभाषाका प्रभाव बतलाने हुअे डाक्टर धीरेन्द्र वर्माने ब्रजभाषा 'व्याकरण'में

यह स्वीकार किया है कि "अंक और तो असम ब्रजभाषाएँ अनेक रूप मिलते हैं, दूसरी ओर पूर्वी भाषाओंकि कुछ चिह्न दिखलायी पढ़ने लगने हैं।" वास्तवमें पूर्वी भाषाओं जिन्हें डॉक्टर घोरेन्द्र वर्मनि ब्रज-साहित्य मंडलके गत मैनपुरी अधिवेशनके अध्यक्षीय भाषणमें कोसल-जनपदके अन्तर्गत माना है, अवधीके द्वारा ब्रजभाषासे भी प्रभावान्वित है। भोजपुरीका भी यही हाल है। भोजपुरी 'वाट' धातु अवधीकी ही है। कवीरकी कबी कविताओपर भी तो इस भाषाका प्रभाव भी दिखलायी देता है। अपनी भाषा या बोलीके सम्बन्धमें कवीरका स्वयं कहना है—

बोली हमारी पूरबकी हमें लखे नहीं कोय ।

हमकोतो सोओ लखे, घुर पूरबको होय ।

—हिन्दी कवि और काव्य भाग २

जान वोम्सने रायल ओरियाटीक सोसायटीके भाग ३ सन् १९६२ में लिखा या कि भोजपुरी भोजपुरकी बोली है, जो माहाबादमें पश्चिमोत्तरमें बसा है। डॉक्टर प्रियमनका तो यहाँतक कहना है कि "राजनीतिक दृष्टिसे इस स्थानका सम्बन्ध सयुक्तप्रान्त (वर्तमान अूत्तरप्रदेश) से हाना चाहिये न कि बिहारसे, यद्यपि आजकल यह बिहारकी सीमाओं है।" (लिबि-स्टक सर्वे आफ् बिहिया, भाग ५) अिन अूद्धारणसे यह निश्च है कि भोजपुरीको भी अवधी और ब्रजभाषाके प्रभावसे मुक्त नहीं रखा जा सकता ।

बुन्देलखंडी और ब्रजभाषाएँ बीचका भेद तो बहुत बारीक है। स्वर्गीय रायबहादुर डॉक्टर स्पाम-मुन्दरदासने अपनी पुस्तक 'भाषाविज्ञान'में लिखा है कि 'यह बुन्देलखंडकी भाषा है और ब्रजभाषा केशवके दक्षिणमें बोली जाती है। शुद्ध रूपमें यह शमी, जालोन, हमीरपुर, ग्वालियर, ओडछा, मागर, नरसिंहपुर शिवनी और होगवावादमें बोली जाती है। अिनके मिश्रित रूप दक्षिण, सतना, चरखारी, दमोह, बालाघाट तथा छिन्दवाड़के कुछ भागमें पाये जाते हैं।' वास्तवमें सतना और चरखारीकी भाषापर बुन्देलखंडी भाषाका कुछ प्रभाव ही रहता है, परन्तु दनिया, दमोह, वाग-घाटा जयबपुर आदि ता शुद्ध बुन्देलखंडी ही बने हैं।

ब्रजभाषा-शब्दोंमें पायी जानेवाली ये-ओ ध्वनियाँ बुन्देलीमें प्रायः ये ओ के रूपमें ही प्रयुक्त होती हैं। शब्दके बीचमें आनेवाला 'हु' बुन्देलखंडीमें अधिकतर लुप्त हो जाता है। कर्मकारकमें ब्रजभाषाका 'को' 'खो' हो जाता है। जैसे 'हम खो'। जनानामिक शब्दोंका प्रयोग बुन्देलखंडीमें अधिक होता है। अिन्ही सब कारणोंसे यह अक्षर ब्रजभाषासे भी अधिक श्रुत-मधुरही जाती है। परन्तु जंसा डाक्टर घोरेन्द्र वर्मनि 'ब्रजभाषा' व्याकरणमें लिखा है केवल बुन्देलीमें ही पद्य का परो नही हो जाता, ब्रजभाषामें भी होता है। हाँ, आपका यह विचार माय्य है कि "दोनोंमें व्याकरण सम्बन्धी अधिक भेद नहीं है केवल दर्शन समूहोंका भेद है।" जो स्वाभाविक भी है।

काव्यमें रस

विभाव आदिके द्वारा घोषित विषे मनोमोहक भाव ही रसका रूप धारण करने हैं और विभाव अनुभावके ज्ञानसे ही रसकी अनुभूति अत्यन्त होती है जिसका सम्बन्ध मानव आत्मासे होता है। अंग्रेजी कवि-कार्लरिज अिसोलिए कवि-कल्पनाको आनन्दस्वरूप आत्मासे अत्यन्त मानता था और क्योंकि आत्मा शाश्वत है, अिसोलिए काव्यकी कल्पनाओं भी शाश्वत मूर्तियोंपर निर्भर रहनी हैं। यह शाश्वत मूर्तियें ही "चतुर्वा-फलप्राप्ति" का साधन बनता है। अिटलीका अमि-व्यजनावादी विचारक श्रेयिने भावो तथा मनोविका-रोंको काव्यकी अुक्तिका विधायक नहीं माना, परन्तु अमि-व्यजनाका प्रासाद भावोंकी नींवके बिना नहीं खड़ा हो सकता ।

वास्तवमें रूप विधान कल्पनाके द्वारा ही निर्मित होता है अनुभावके व्यापारो तथा चेष्टाओ द्वारा आश्रयको जो रूप प्राप्त होता है, वह कल्पनासे ही मिलता है। अंसी ह्यूलनमें काव्यमें कल्पनाका स्थान साधारण नहीं माना जा सकता और काव्यकी अनुभूतिके लिये कल्पनाका अस्तित्व कवि और श्रोता दोनोंके लिये अत्यन्त आवश्यक है। प्रत्येक रूप-विधानसे आदानसे जिस कल्पनाकी मूर्ति होती है, वह कविके अनुभवोपर अवलम्बित है।

आधुनिक आलोचक आजी. अ. रिचर्ड्सका कहना है कि 'जीवन और कवितामें काशी भेद नहीं। हमारा प्रतिदिनका भावात्मक जीवन और वाच्यमें भी कोई अन्तर नहीं।' (प्रेक्रिटवड प्रिन्सिपल्स) काव्यम प्रयुक्त विभिन्न रस जीवनकी विभिन्न रागात्मक प्रवृत्तियाँ चोतक हैं, जिसीलिये काव्यमें अनुकी निष्पत्ति आवश्यक है और जिंगीलिये रस वाच्यकी आत्माका काम करत है। शृंगार रसका स्थायी भाव रति अथवा प्रेम है, जो समोग और विषाग दोना ही अवस्थाम रहता है। वियोगकी अवस्थामें विप्रलभ और मयोगकी अवस्थामें समोग-शृंगार कहते हैं। परन्तु वास्तवमें दोना अवस्थाओं में रति या प्रेम स्वयं सयुक्त अनुभूति न हाकर रसा चन है, जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकारकी अनुभूतियाँ और भावाका सम्मिलन हाता है। मग प्रकारके भाव वात्सल्य प्रेम और दाम्प्य प्रेमके अन्तर्गत जाजाते हैं और स्थायी भाव आत्मानुरक्तिवा साधन है, परन्तु शृंगार रसाका स्थायी रति या प्रेम वह बागना नहीं जिसे अिस युगके वैज्ञानिक फ्रायड मानव जीवनमें सबसे अधिक महत्व देने हैं। फ्रायड चतन मनपर अवचननका प्रभाव जरूरदस्त मानत हैं, परन्तु भारतीय साहित्यका ध्येय तो अवचतन मनपर अतिचनन मनका प्रभाव डालना रहा है और महर्षि जगदिन्द तो 'भविष्यकी कविता से यही आशा रखते थे। परन्तु रीतिवालीन कविताकी भाँति ही शृंगारी लोक-गीतामें रस आत्माक निरस्तन मुखका सागन नहीं बन पाया, यद्यपि उनमें जीवनका रस अवश्य निहित है।

बुन्देलखंडी लोकगीतोंमें शृंगार

सयोग शृंगारमें नायिकाके शृंगारका वियोग महत्व है। अलंकारादेद्वारा मोदयन अुत्ते पकरीका बाधकर सोनेके पिजरेम रखनेकी कल्पना की जाती है। महाशक्ति कविदासकी भाँति 'अियमअधिकमनोसा बत्कले नापित्तयो' वल्कली तन्वीमें ही शकुन्तलाका रूप लावण्य देगनेकी कपमता बहुत कम कवियोंमें है। जितीलिये अुत्त कविता और नायिनी दोनोके लिये धरकारोकी आवश्यकता पडी। अेक बुन्देलखंडी

गीतमें जिसी शृंगार सापनाका वर्णन करत दूथे लिखा गया है —

अरन (आलों) सेककशी (करी) लओ बेलनमें तेल फुलेल ।
पटिया पारोरे माये पं जंमे नाग लहरिया लेय ।
गुयो चूटील (गुयो चोटी) अंसे रिरके (खिसके) जंसे बायो
सरक जाय सँय ।

भांग भरदओ रेगोरीकी, जंसे गयाका निकर जाय धार ।
नाक नयूनियाँ नकबेसर, सोने बेंबा लग्योलिलार ।
विदिया अनारस दमकन लागी, अनयारे लटकरये बार ।
सोने सोक सुरमा रचे, जंसे बादर अुठे घन घोर ।
पान अगिनिया मुपमें दये कठन ही पीक दिखाय ।
दुहरी, तिहरी पचलडियाँ, गरेमें परं टकाअुर हार ।
का छव बरनो रे गोरीकी गरेमें घूम रही खगवार ।

। अिगी प्रकार विभिन्न अगाक शृंगार वर्णनमें चमत्कार दिखताया गया, जिसमें काव्यका रूप पन्य तो है परन्तु आत्मपन्य नह। काव्यकी आत्मा अनुभूति चाहती है जिंगवा जिन गीतमें अभाव है। परन्तु माज सिंगारका वर्णन गीतमें अवश्य सुन्दर हुआ है और कुछ अुपमाओं तो वंसीही नयो हैं, जैंगी आजरलके प्रयोगवादी रति देने हैं। जैसे —

बिलना बिलनी पिडरी बनी, जीवनकी सोभाबिसाल ।
मुदगे कंसी बरहा बनी, मानो डारो घुनर सुनार ।

अेक दूसरे गीतम जिमे होश्रीके अवपरपर बेंड-नियाँ (पाम नत्तकियाँ) गानी हैं अिगी प्रकार शृंगारका वर्णन है। अिसमें नायिकाका निनगण पवित्रारिनके रूपम बिया गया है —

चुनरी रगी रगरेजने । गगरी गडी कुमार ।
विदिया गडी सुनारने सो दमकत सुघर मिलार ।
बिदुलिया तो लं दभी रसोले छेलने ।

अेक नायिका अपने पतिको आँवकी ओट नहीं देखना चाहती, अिगलिये प्रियममने कहती है —

प्रीतम प्रीत लगाअिकं बसन दूर नाँअ जाअ,
बसो हमारी नागरी, दरसन बंदं जाअ
नजर सँ टारे टरी नाँअ मोरे बालमा ।

अंक अन्य नायिकाको पति दूर होनेसे अंमके दर्शन ही दुर्लभ हो गये— जिससे वह अपनी देहकी अपुमा पीपगमूलसे देती है, जिसका तात्पर्य यह है कि वह सूखकर दुबली हो गयी है —

सबके संयां नीरे बसे, मो धोखन (दु खिनो) के दूर ।
पूरे-परी पं नाचे हं, सो हूँ गयी पीपरामूर ।

ठाकुर कविन इसी भावकी व्यञ्जित करते हुआ लिखा कि 'जिन लालन चाहकरी नितहीतिहूँ देखिबेके अब लाले परे ।' निकटताका इस प्रकार दूरीमें परिवर्तित हो जाना, वास्तवमें नायिकाके लिये दुःखकी बात है और दुःखमें वामिनीका यह अनुराग पूर्व स्मृतियोंके रूपमें छलका पडता है ।

पारिवारिक जीवनकी छटा

अंक गीतमें परिवारिक जीवनके दो दृश्य बड़े सुन्दर ढंगसे दिखलाये गये हैं । चार स्त्रियां हैं, दो गोरी और दो सांवरी । दो सांवरी परिवारमें तिरस्कृता हैं । धुनका किसीकी रूपाल नहीं । गोरी सास और ननद का सुख भोगती हैं । सब शृंगार करती हैं । ब्रुह पतिका प्यार प्राप्त होता है, जब कि सांवरीका पति विवाडे तक नहीं खोलता और अशु निराश होकर वापस आना पडता है । अन्त्यास और निरासाके दो मार्मिक चित्र इस बुन्देलखंडी गीतमें बड़े सुन्दर धन पडे हैं । गीत मावनम ही अधिकतर गाया जाता है —

गुजिया दो गोरी दो सावरी ।

गुजिया चारधु बजारे जापं, सहेली सावन भरझूलियो,
गुजिया कौने बिसाये बारे बजरबा कौने बिसापेलोजी पान ।
गोरी बिसाये बारेकजरबा, सांवरी बिसापेलोजी पान ।

गुजियां दो गोरी, दो सावरी ।

गुजिया बौनेलौं कजरा लूब लगे, ओ बीना सोरचे हें तमोर।
गोरीलो कजरा लूब लुभें, गुजिया सवरीलो रचे तमोर।
गुजिया दो गोरी, दो सावरी ।

पेले ओसरे सवरीलो गुजिया, ओरी बरलो सोरभु निगार,
सासो पं मांगो बरओ री, गुजियां ननदी पं मांगो फुलेल।
सागो न बीनी बरओ री, गुजिया ननदी न बीनी फुलेल ।
गुजियां दो गोरी, दो सांवरी ।

पिनयां लगाय गोरी पटियां जोपारी गुमविनभर लजो मा।
(तेल न मिलनेसे पानीसे पाटोपारी और अंगुरन मित्रनेसे लाल-लाल घुघचियोसे मागभरी)

अंची अटरिया चदि गधो गुजियां, मोरो लँह बेला
(कटोरा) भतेल ।

खुलीरी किवरियां लगलओ गुजियां भोरी, जागत सोगये
नाप ।

शटक अटरियां भूतरी गुजियां ठाडे पटक दओ तेन ।

गुजियां, दो गोरी दो सांवरी ।

भोरभये सलि पूछन लागीं, ओरी बंसे बितायो सारी रंत ।

अिन सिजियन पयो पथरारी गुजियां, मोरे राजापे पयो
धुपार ।

गुजियां दो गोरी दो सांवरी ।

यह तो हुआ निरास पत्नीकी बात । अब दूसरी ओर दो गोरियोंके अल्लास और आनन्दका वातावरण देखिये —

अिसे ओसरे गोरीके गुजियां, करलओ सोरह सिगार ।

सासने बीनी ककओरी गुजियां, ननदीनं बीनी फुलेल ।

गुजियां दो गोरी दो सावरी ।

बेला तेलसे पटिया हों पारी, अंगुर भरलओ माग ।

अँटो अटरिया चडिगओ गुजियां, लंये बेलाभर तेल ।

लगी केवरिया खलगओ गुजियां, सोबत जगणे नाप ।

कहाँओ पायतें गिररभू राजा, कहीं पलट घर जाभू ।

गुजियां दो गोरी दो सावरी ।

ना तो पायते गिररथ धनिया, नां तो पलट घर जाव ।

मोरो हमारी पिडरी री धनिया, बँठे हमारे साथ ।

गुजिया दो गोरी दो सांवरी ।

भोर भये सलि पूछन लागीं । गुजियां बंसे बितायो सारी
रंत ।

भ्रतसिधिया फुलवा हो बरसे । मोरी राजा पं अुडिलो
गुलाब ।

गुजियां दो गोरी दो सांवरी ।

अब अन्य गीतमें नायिका पनिये अपनी ओर अच्युती तरह प्रेमपूर्वक देखनेका आग्रह करती है ।

‘नजर भर देना वा अर्थ ही है अच्छी तरह देखना प्रम पूर्वक देखना है—

नजर भर हेरत काय नभियां ।

हम तो राजा बनकी हिरनियां,

तुम ठाकुरक लरिका ।

तुपकनोर मारत काय नभियां । नजर भर

समृन्तने अक सुप्रसिद्ध आचार्य धामनन रमनो गुणना प्रधान लक्षण माना है। अन्तर्गत ममानुसार रसकी महायतामे ही शैलीमें कार्ति प्रकट होनी है। यह बात ठीक भी है। कारण शैली, वह परिधान है जो वह शरीर और आत्माके मोदयपर ही निखरता है। लोक गीतामें आत्माका मोदय अधिक व्यापक रूपमें रहता है, असील्लिख कभी कभी शैलीमें कीजी विद्युप आकषण न होने हुआ भी रसका परिपाक शैलीको अद्भुतभासित कर देता है। अूपर अल्लिखित अधिकारा गीतामें भी शैलीका चमत्कार रसकी स्वाभाविक निष्पत्तिके कारण चटक और चपल दिखलायी पडता है।

अक अयगीतमें नायिका नायकको विदेश गमनसे रोकनने लिये वितना बनाव तनाव सोचती है। अिस गीतकी नायिका परकीया जान पडती है —

जिन जभियो विदेशी दिन थोरो ।

दिन थोरोरे । दिन थोरो ।

थोरो जियन मूल न सोरो ।

अूचे अटा पे पलगा विष्टावभु ।

हुआरे बांध धी जो थोरो (घोडा)

जिन जाभियो विदेशी दिन थोरो ।

नायिका परकीया सी है ही, कुछ कुछ रस्य प्रतिक्रिया सी भी जान पडती है। कारण, वह विदेशीको रोकनके साध-साध परिस्थितिको भी समझानी जानी है जिमम आगनुक निश्चित होकर ठहर सके। दरवाजर घोंगा व धवानमे भी अिस शकतीं परिपुष्टि होनी है। क्या कि यदि पति होता तो अूसे घोडा वापनका स्थान बनानकी पत्नीको क्या आवश्यकता पडती ? अब अक आगत पतिके नायिका (जिसका पति आ रहा हो)का अुदाहरण नीचे लिखे गीतमें देखिय —

रा भा ८

रसिया आये गरद अुडी गोरो ।

जब मोरे रसिया मेड पे आये

सूखी डूब हरियाणी गोरो,

रसिया आय गरद अुडी गोरो ।

जब मोरे रसिया कुवना पे आये,

रोते कुअं भरि आये गोरापे ।

जब मोरे रसिया द्वारे पे आये,

मोतिपन चौक पुराये गोरो ।

जब मोरे रसिया बखरो (घर)में आये,

सोनके कलस घराये गोरो ।

अिस गीतमें नारीके हृदयका अल्लाम बडे सुन्दर ढंगसे दिखलाया गया है। अुमके वितकी प्रमत्ता चारो ओर स्फुरित है और वह स्वय स्वगणकी तैयारीमें निमग्न है। सामन अंक चिन सा खडा हो जाता है, जिमे हृदयकी तूलकास चिन्तितवर जीवनके रगसे रंगा गया है। असीही अक आगतपतिके हृदयका अल्लाम वर्णन करते हुआ हिन्दीके अंक कविने लिखा है कि ‘अगियाकी लनी खुल जान धनी सो बनी फिर वापस है कसिके।’ नरिकी भावनामें अतिशयोक्ति अवश्य है परन्तु वह नारीके हृदयमें जाँवकर अुसके मनकी अुकुल्लाको अवश्य सफलताके साथ व्यक्त कर सका है।

अक अय बुदेलखडी गीतमें जो शैलीकी तरफ गया जाता है, नारीकी पतिप्रणयगता तथा सतीत्वका सुन्दर ढंगसे प्रकटीकरण हुआ है। नारी कुअँपर पानी भरने गयी। पतिके विरहके कारण दुबनी हो गयी है, धुममे अुसकी चोली ढीली पड गयी है और हार भी ढीले पडते हैं। अुमे देखकर अक घोड़ी प्रकोभनो द्वारा फुमलाना चाहता है परन्तु सतीका सतीत्व जायन हो जाता है, और वह घोडीको अच्छी डाँट बतानी है। अुसे देवरके आनपर बेरीके पेइसे बधानेकी कहती है —

अही रतन कुअं मूख साँकरे, अलबेनी भरं पतिहार ।

अरी अरो कुअनकी पतिहारी, काहे ठाढो बदन मलीन ।

कं तेरो हार कुअन गिरो, अरी कं तेरो बिछूरी पतिहार ।

ना मेरो हार कुअन गिरो अरी न बिछूरी पतिहार ।

कहरा तो ह्यावै लरका दरजीकी कहरा लिवारं पतिहार ।

[शपास पृष्ठ ६२ पर]

सम्पादकके नाम अेक पत्र

[कभी-कभी मेहमान और मेजमान, दोनों जानेवाले और दुलानेवाले, परेशानीका तिसार बन्दे है, हंसी भी लगी है और परचाताप भी होता है । जिनका दर्शन जिन लेखन शौचिने । —सं०]

आतिथ्य, धर्मकी पराकाष्ठा

मित्रवर श्री पद्मालालजी शर्माका अेक पत्र है । भारतवर्षके अेक बड़े शहरसे, जहाँ हिन्दी, मराठी, गुजरातीकी त्रिवेणीका मगम है, बंबयी मत समत सौत्रिजेगा जिस शहरको, यह मजेदार पत्र आया है । पत्रमें 'राष्ट्र-भारती'के पाठकोंको देखने मिलेगा कि किनी लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यिक व्यक्तिको अपने यहाँ किनी समारोहमें बुलाते हैं तो कभी-कभी बुत्ताहके मारे हम जितने आत्मविनोद, आत्मविसृष्ट हो जाते हैं कि हमारा आतिथ्य-धर्म पराकाष्ठाको पहुँच आता है । 'पराकाष्ठा' का अर्थ होता है चरमसीमा । तो सचमुचमें अँसाही अेक प्रसा है जबमें, स्वेच्छासे नहीं किन्तु स्वातःसुचाय जिसलिये कि बुद्धिमान-सुखायकी भावना निहित है—जिस भावनाको लेकर कीजी स्वातिमान्द साहित्यकार या कलाकार निमंत्रित होकर आया करता है, आगत व्यक्तिकी मेहमानदारीका हमने मूर्खानिपेक कर डाला । तो पत्रिने :—

मराठी साहित्य-शान्में प्रसिद्ध अेवं लब्ध-प्रतिष्ठ विदुषी लेखिका श्रीमती मालती दाडेकरकी अवकी वार हमने व्याख्यान देनेके लिये बुलाया ।

"हमारे जीवनकी कुछ समस्याओं"—विषयवर आज बोलने जा रही थीं, सी अेकसमयेसे वे यहाँ आ रही थीं । स्टेजवर बनिषिकी अगवानीके लिये जाना पहला धर्म है । मैं स्टेज पर पहुँचा । सोच रहा था कि न जाने वे स्वभावसे कँसी होंगी, किन्तु वेना-भूषणमें होंगी, क्या सानी-पीठी होंगी, कँसे जूट्टे पत्र-नंगा, कँसे वातचीतका तिलसिला मूक बसंगा । मेरी विचार वार-वार मनमें चक्कर खाट हो रहे थे कि माझे इनदनाती काकर प्लेटफार्मवर रकी । मैं बुली-हमालको लेकर अिनर-अुपर

दीडने लगा और जिस बलामेलमें न जाने कितने अन्य लोगोंसे टकराया और कितनेके होन्डालोर हृदयवाकर गिर पडा । सचमुच जिस समय मेरी जो स्थिति थी वह बड़ी करण अेवं मजेदार ही थी । सोच रहा था, वहाँ वे प्लेटफार्मसे निकल न जायें, क्या सोचेंगे कि पत्ति व्यवस्थापक कितने व्यवहार-गुण, लक्ष्मण हैं आदि-आदि.....। किसी प्रकार सेकंड क्लामके दिव्यके पत्र पहुँचा तो अेक स्वल्प सुन्दर भद्र महिला अजारह हाथकी महाराष्ट्रीय माझी पहिने अपने लजेकरी दिव्यसे अुनारती हुआ दिवानी दी । मेरे मनने कहा, हो न हो यही श्रीमती दाडेकर हैं ! किन्तु नाम पूछनेवर सी अोजीबना लगेगी । क्या सोचेंगी कि मुझे पहचानते नी नहीं ! जितनी बड़ी, मराठी साहित्य-नन्दिनीके आत्म-विकाले कँसे पूछें कि, क्या आपही मालतीदात्री दाडेकर हैं ? लेकिन नहीं पूछता हूँ; तो जानशी कँसे चलेगा । कुछ सुझाही नहीं कि क्या मुक्ति की बाजे, बुद्धि अबाव दे चुकी है । मेरे मनमें जिन सारे विचारोंकी मृंखला अेक मिनटने जूट्ट गयी और बादमें साहज बयोरकर मैंने कह ही तो दिया कि 'क्या आरही धीमती मालती-दात्री दाडेकर हैं ?' परन्तु न जाने क्यों अन्दर कितने धीरे निकले कि मैंने स्वयंही नहीं सुना कि मैंने क्या पूजा है । परन्तु किल्लोके नापने छींका टूट गया, अुन्होंने गीघरासे कहा 'जी, मैं मालती दाडेकर हूँ।' अुन्होंने जो अुत्तर दिया अुससे प्रपट था कि वेकल मैं ही अुन्हें खोज रहा हूँ तो वात नहीं, दे भी मुझे खोज रही थीं और जो समस्याओं मेरे सामने थीं ठीक वे ही अुनके सामने भी थी । अन्तु, बुलीने अुनका सामान अुजाया और हमारी मोटरसे कँगिरमें रख दिया और हम लोग नियोजित नियामन-दानवर पहुँचे । अुन्हें जहाँ ठहराना था वहाँ अुन्हें छोड़कर हमअेन मोटर अेकर

चले आये और कह दिया अपने अतिथिसे कि हम लोग
भाषणके पन्द्रह मिनट पहले आन्दे लेने पहुँच जायेंगे ।

× × ×

लौटते समय कार्यवश अनेक स्यातोपर भटकने लगे
तीन घंटे बाद जब कार्यालय पहुँचा तो देखा अन्ध-
बली हलचल-खलबली थी मन्त्री हुजी है मुझ देतलेही लोग
मूखपर टूट पड़े, जैसे निगल जाना चाहते हो 'चिल्लाने लगे,
'सेनेटरी वने फिरते हैं यहाँ फोनपर फोन आ रहे हैं
बेचारी ४०० ५०० मोन्ने सफरमे आयी हैं विदुषी है
स्त्री है, अरे जब किसीकी योग्य व्यवस्था और सम्मान
नहीं कर सकते थे तो बुलाते क्यों हो अब मारन ?
वह अितनी बड़ी मगठी जगत्की भद्र महिला है कि
क्या कहेगी, अक्की गन्ती होनी है लेकिन बदनामी तो
सभीकी होनी है ।'

मे असमजसमें पढ़ गया कि आखिर हों क्या गया ।
सही सलामत घंटे दो घंटे पहले मैं ही पहुँचाकर आया
हूँ, फिर फोनसे अंसा कौनसी दुर्घटना सुनायी जा रही
है । मैंने तो अंसा कोओ असम्य व्यवहार नहीं किया ।
मराठी भाषा और रीति-नीतिका पूरा मर्मज्ञ न होनेके
कारण तो मैंने खुदसे पूरी बातचीत भी नहीं की, फिर
यह क्या बला है । मैंने खुदमे पूछा— अरे भाभी क्या
हो गया, कुछ बोली तो ?'

वे सभी अेक साथ कहने लगे "अरे अिममे घडकर
जिसी बुलाये हुअे आपन अतिथि सज्जनकी क्या हंगी
हो सकती है, तीन घंटेसे बेचारी बंठी है परेशानीमें,
तुम किसीकी परवाह तो करते नहीं, अपनेमें फूले फिरते
हो ? अब तो मे कपि गया, सोचा हों न हों कोओ
अनादिकारक घटना अवश्य घटी है । लेकिन मे देवता
लोग कुछ कह भी नहीं रहे हैं । मे बिड-सा गया और
पूछा—'क्या हो गया है अंसा, जो घंटे भरसे सारा
ऑफिस सरपर अुटा रखा है ?' वे सब साश्चर्य कहते
लगे 'अरे तुम्हें मालूम नहीं जिग मोटरमें तुम मालती
बाभीको स्टेशनसे लाये थे, उसके कैरिपरमें अुनका
बिस्तरा और पेटी रखी है, बेचारी बिना नराने धोये
अपने सामानकी प्रतीवपामें बंठी है । फोनपर फोन
आ रहे हैं पर तुम्हारा तो पता तक नहीं, कुओमें बाम
हाले गय । सन्देश भी दें तो वहाँ दें । क्या तुमने
अुनका सामान अमीतक नहीं पहुँचाया ?'

× × ×

श्रीमती मालतीदेवी दाहकरका भाषण समा-
भवनमें हुआ और सानदार हुआ । सामान घंटे दो घंटे

तक खोजानेसे हुआ अनुपुतिमे अुनने 'मूड'को अेक नया
कल्ट मिला था जिससे अुन्होंने अपने भाषणमें कहा हम
कभी-कभी सामयिक छोटी-छोटी चिन्नाओमें अितने
अ्यग्र हो जाते हैं कि हमारे जीवनकी महत्वपूर्ण समस्या
छोटी और अ्यथक चिंताही बन जाती है, परन्तु अंसा
होना नहीं चाहिये । भाषणके बाद श्री. मालतीबाओसे
साहित्यके विषयमें मन खोलकर चर्चा की। अुन्ने लिखी
हुओ पचीसो पुस्तके देवी हैं, जिनमें मराठी लोकगीतो
के सग्रह कहानी सग्रह, बालकथाओं और सामाजिक
परिवारिक अुपन्यास थे । मैंने पूछा 'आप अपनी सबसे
अच्छी रचना कौनसी समझती हैं और वह क्या ?'

अुन्होंने कहा मुझे मेरी सबसे अच्छी रचना
'ससारमें पदार्पण' लगती है, जो अेक परिवारिक अुप-
न्यास है और जिसलिअे अच्छा अुपन्यास है क्योंकि
अुसकी नायिका अेक आदर्श नायिका है— जिसकी
आवश्यकता आज गृहस्थीके भारने लुके हुअे और कुरी-
नियोग प्रसिद्ध प्रत्येक भारतीय परिवारको है ।' मैंने
फिर पूछा क्या आपने सितारियो लिखनेका प्रयत्न
कभी किया है ?' वे बोली 'मैंने पनासा कहानियाँ और
दर्जने अुपन्यास लिखे हैं, अुनपर कओ चलचित्र बनाये
जा सकते हैं । कुछ फिल्मबालोंने जिस विषयमें मुझने
बातचीत भी की थी लेकिन मेरी अपनी शक्त है कि,
मेरी नायिका अदे दर्पसे न नाचेगी, न गाओगी; वैसे
आचरण और बातचीत भी नहीं करेगी जो पुस्तकमें
न हो या जो मैं नहीं चाहती हूँ । यही वजह है और
मुझे ही हिचकिचाहट है कि अबतक मेरी किसी भी
रचनापर फिल्म नहीं बन सकी । और हम आशे-
दिन देखते हैं कि ये फिल्म निर्माता अच्छीसे अच्छी
कलाकृतिको विगाहकर बाजारू चीज बना देते
हैं । सच्चे साधक कलाकारको किनने उंग लगती है ।'

श्रीमती मालतीबाओ दांडेकरजीसे, अन्तमें मैंने
क्यमा मागते हुअे कहा कि आज आपको मैंने बेहद
तकलीक पहुँचायी । भूलसे सामान मोटरमें मेरे साथ
चले जानेसे आपको जो घोर अमुविधा हुआ, कष्ट हुआ,
मैं दुःखी हूँ—शर्मिन्दा हूँ । लेकिन यह आजकी घटना
भी अीश्वरेच्छा थी ।

'अीश्वरेच्छा' शब्द सुनते ही वे सिलसिलाकर हँस
पडी और बोली कि "आप अीश्वरकी वकालत क्या करते
हैं । हमें प्रत्येक और प्रतिक्पण घटनेवाली घटनासे लाभ
अुठाना चाहिये । वैसे मेरे सामने आजकी यह 'सामानकी
दुर्घटना' अपने आपमें अेक कहानीका मज्जदार प्लॉट है ।



सारस्वत धर्म

: श्री सुमाशंकर जोषी :

[गुजराती]

आपणा देवानी जुदी-जुदी भाषाओंना साहित्यका रोने मळवानु थाय छे त्वारे अकमेकना वार्षेने भले ओळखता न हता पण बघा केवा अंक रीते ज जाणे अंपकारमा मार्ग (Groping) वरी रहपा हता तेनु भान तो तरत थाय छे ज। आपणा देवानी जनतानी अनगळ सहनशक्तने अने अेनी मूगे आसा आकाशपा-ओने वाचा आपी शके अेवा अुचित साहित्यस्वरूपोनी खोजनी अणसारी पण म्ळी रहे छे। पण ते छता मुख्यत्वे घातो साहित्यआयोजना (टेकनिक) अगे धणी चर्चा तो चाले छे। साहित्यना माणसो घणु खरु दुनि यानी घटनाओमां सीपा सडोवापेला नषी होता, पण अेनी अर्थ अे नषी के तेओ चंदनमहेल (Ivory tower) मां रहे छे। देवानी अटपटी विटबनाओनी ख्याल पट्टकरण गणाना आ धर्गेने बेवेन बनाव्या खगर रहे अे केम बने? जीवन केम वषु अुप्रत बने, वषु सभर बने अे माटे अे पण सळपी रहपा होय छे।

सरस्वतीके अुपासकोंका धर्म

: अनुवादक : श्री गौरीशंकर जोशी :

(हिन्दी)

हमारे देशके भिन्न-भिन्न भाषाओंके साहित्यकार जब कभी कहीं मिलते हैं, तब वे भलेही अेक-दूसरेको या अेक-दूसरेके वार्षके वारेमें न जानते हो, फिर भी अिसका तो तुरन्त खयाल हो ही आता है कि सब मानो अन्धेरेमें अेक ही जंसे रास्ता टटोल रहे थे। साथ ही साहित्यके अंसे स्वरूपोको खोजवा सवेत भी मिल जाता है, जो हमारे देशकी जनताकी असीम सहनशक्ति और अुसकी मूक आशा-आवावपाओओी वाणी दे सके। वावजूद अिसने यह वान नहीं कि अुनके बीच केवल साहित्यकी आयोजना (टेकनिक) या साहित्य-सर्जन सम्बन्धी ही विरोध बाते होनी हो। देशके महान प्रदनों और मानव-जातिकी समस्याओंके वारेमें भी अुनमें काफी चर्चा होती है। अरुत्तर साहित्यिक लोमावा दुनियाकी घटनाओंने कोओ सीमा सम्बन्ध नहीं होता, वे स्वयं अुनमें फँसे हुअे नहीं हाते; लेकिन अिसका यह अर्थ नहीं कि वे कहीं दूर किसी अेवान्त चन्दन मडल (Ivory tower) में रहते हैं। देगवे जटिल प्रदनों और दुलका खयाल सवेदनशील माने जानेवाले अिस वर्गको अेवंन बिये बिना कैसे रह सकता है? -जीवन किस प्रकार अधिक अुन्नत और श्री-सम्पन्न बने अिसके लिअे अुनके मनमें भी आग मुलग रही होती है।

यण साहित्य अने कलाना अुपासकोनी साधना अलग प्रकारनी होय छे । लोकजीवनमां मूळियां नाश्या वगर अे जीये ज न शके, पण जगतना रागद्वेषो धी पूर्णपण लिप्त यवु अेमन पाउवे नहि । दुनियामा कलेशो तो अुकळता होय छे । कलेशोने यकरावनाराओनी कमीना हौती नयो । सरस्वती के अुपासकी तो अे कले शोनी अन्दर स्फुरी रहेला सवादिताना बीजने पोषवा मयो -हेता होय । सारस्वतीनी आ सवादितानी साधना घेलछाभरो आवर्शमयता नयो । विश्वप्रममां, व्यवहारमां अेनो अुपयोग छे । समाजमां अेयो व्यक्तिओ के व्यक्ति मडळो जोओअे ज समाजना धारे वाये पलटाता राग द्वेषोने वश न थाय अंटलुज नहि बलत आव्ये समाजनी सामे अुभा रहिने पण अेने अेनी कल्याण-मार्ग चींथी शके । आत्मिकि न हीत तो सीता क्या जमीन रहें ? वात्मिकि न होत तो सीतानी स्वीकार करवा माटे अयोध्याना लोकोने दम भीरीने कोण कहेत ? आपणा देशो अितिहास जोओशु तो जगामे के व्यवहारना राजकारणना माणसोअे देशने घणु खए छिन्न भिन्न राख्यो, ते छतां दुनियाने अचबो अुपजावे अेवा विरळ अतिरअेकता आ देशमा शी रोते घूटाओ अने देशनी पडनी घेळा आवी तोपे टकी रही ? देशनी आवी अेकतानी साधनामां सारस्वतीनो मोटो फाळो छ ।

अे धर्म बजाववानी जरूर अत्पारे ओछी छे अेम मानवानु नयो । बलके आजनी घटोअे सारस्वतीअे व्यक्ति तरीके तेमज मडळो तरीके अेकता अने सवा दितानी पोतानी साधना वधु सकिय बनायवानी जरूर छे । राजकारणना माणसो आ साधनानु गौरव आपो आप समजो शके अेयो शुद्ध अने अतरकारक पण अे होवी जोओये । दुःस्यन्त कृष्णा तपोवनमा विनीत वेश' मां जवानु विचारे छे । धनके सत्ताना माणसो सारस्वत मडळोमां 'विनीत वेशे आवे अंटलो अे मडळोअे पोतानो प्रभाव प्रगटायवो जोओये । पोते अेमना वचंसु नीचे तो हरपीज न आवे ।

लेकिन साहित्य और कलाके अुपासकोनी साधना कुछ भिन्न प्रकारकी होती है । लोकजीवनमें जइ जमाये बिना तो वे बिन्दा ही नहीं रह सकते लेकिन दुनियावे राग द्वेषां पूर्णरूपने लिप्त हो जाना अुन्ह नहीं पुमा सकता । कलेशोका अुपान तो दुनियामें निरन्तर चलना ही रहता है । कलेशोको अुभाडने वालाकी भी कोओ कमी नहीं होनी । सरस्वतीके अुपासक तो अुन दुखाने भीतर बिल रहे सवादिता (हामनी) के बीजके विकासके लिअे प्रयत्नशील होने हैं । सरस्वतीके अुपासकोनी सवादिताकी यह साधना कोओ पागल आदर्शवादिना नहीं । विश्वरम और व्यवहारमें अुसका अुपयोग है । समाजमें अेसे व्यक्ति या व्यक्तिषाके समुदाय होने चाहिये, जो समाजमें दिन प्रतिदिन बदलते रहनेवाटे राग द्वेषाके वश न हो । अिनना ही नहीं, बल्कि समय आनेपर वे समाजके खिलाफ खटे होकर अुसे कल्याणमार्ग भी बना सके । वान्मीकिकि न होने तो सीता कहां जाकर रहती ? वान्मीकिकि न होते तो सीताको स्वीकार करनेके लिअे अयोध्याके लोकोसे खम ठोककर कीन कहता ? हमारे देशका अितिहास देखेंगे तो पता चलेगा कि व्यावहारिक-राजनैतिक पुरुषोने देशको बहुत कुछ छिन चिछिन हालनमें रपा, फिर भी दुनियाको अचम्भमें डाल देने जैसी विरल आतरिक अेकता अिम देगमें कैसे मजबूत वनी, जो देशके पतनके समय भी टिकी रही ? देशकी अेसी अेकताकी साधनामें सरस्वतीके अुपासकाका काफी बडा हाथ रहा है ।

यह न माना जाअे कि आज अिस धर्मपर चलनेकी कोओ कम जरूरत है । बल्कि आज तो सरस्वतीके अुपासकोनी व्यक्तिगत रूपमें और अिनी प्रकार मण्डलोके रूपमें अेकता और सवादिताकी अपनी साधनाकी और भी अधिर सत्रिय बनानेकी जरूरत है । वह अितनी शुद्ध और असरकारक होनी चाहिये कि 'राजनैतिक पुष्ट अिम साधनाका गौरव अपने आग समझ सके । दुष्पत कण्वके तपोवनमें 'विनीत वेश' में जानकी सोषना है । अिम मण्डलोकी भी अपना अितना प्रभाव दिखाना चाहिये कि धन और सातावाले आदमी सारस्वत मण्डलोमें 'विनीत वेशे' आअें । वे स्वय अुन धन और सत्तावालोके वर्षसके नीचे तो बदाधि न आअें ।

। भक्त सोहिरोबानी नोचेनी (मराठी) पवित्रयो
मानी भावनामा आ सवादिता अणे अंकता स्यापता
परमनी चावी छे

आम्ही न हो पाचातले, न हो पचवीसातले,
या सर्वाहि वळखुनिया आम्ही आतले आतले हो ।
आम्ही न हो लक्ष्यातले न हो पक्ष्यातले,
या सर्वाहि वळखुनिया असू अलक्ष्यातले हो ।
आम्ही न हो मन्नातले, न हो तन्नातले,
या सर्वाहि वळखुनिया नसू मायच्या यन्नातले हो ।

—अमे नयो पालमाना, नयो पचीसमाना अे
बधाने ओळखी लमीने अमे अन्दरना छीअे । अमे नयो
लाखमाना, नयो पचपमाना, अे बधाने ओळखी लमीने
अलक्ष्यमाना छीअे, नयो मन्नामाना क तन्नामाना, अे बधाने
ओळखी लमीने मायाना यन्नामाना रह्या नयो ।

भक्त सोहिरोबाकी निम्नलिखिते मराठी पंक्तिपोंमें
असि अेकता और सवादिता स्यापित करनेवाले परमनी
कुजी है —

“आह्मी न हो पाचातले, न हो पचवीसातले,
या सर्वाहि वळखुनिया आह्मी आतले आतले हो ।
आह्मी न हो लक्ष्यातले, न हा पक्षातले,
या सर्वाहि वळखुनिया अमू अलक्ष्यातले हो ।
आह्मी न हो मन्नातले, न हो तन्नातले,
या सर्वाहि वळखुनिया नमू मायच्या यन्नातलेहो ।”

—हम न पांचमेंसे हैं, न पचोसमेंसे, अिन
सबको पहचानकर हम अन्दरके हैं । हम न लाखमेंसे
हैं, और न पचपमेंसे, अिन सबका पहचानकर हम
अलक्ष्यमेंसे हैं । हम न मन्नामेंसे हैं और न तन्नामेंसे,
अिन सबको पहचानकर हम मायाके यन्नामेंसे नहीं रह ।

[पृष्ठ ५७ का शायदा]

कौनकी चोलिया अमाने (ढीली) भयो, कौनके ढीले
मये हार ।
तेरे पानजो चाबे हूँ रतिया चोलीपं परिगओ पीक ।
अरे,अरे भजिया घोबियारे मेरी चोलीको दाग छुटाव ।
ओ तेरी चोलीको दाग छुटहें, हमको कहा तुम देशु ।
तोको देहां हापकी मूदरी और हिये कौहार ।
सिन्धपरफोरि हें तोरी मूदरी, समद (समूद) बआइ तेरो
हार ।
लेहो ओ लेहो तेरी चोली लेहो में पियको सिंगार ।
डाडी जारो तेरे बापकी तेरी मूछें नो देअु शंगार ।
जबपर आवे बारे लछमन देवरा तोहें बिरियासे देहो बंधाया

श्री देवेन्द्र सत्यार्थने अपनी पुस्तक 'बलाकूले
आधीरात'की प्रस्तावनामें लिखा है कि 'लोक गीतके
स्वर सुदूरसे आते हैं । जाने ये स्वर कहसि फूँ पडते
हैं । युग-युगकी पीढा-वेदना, युग-युगकी हर्ष श्री, रीति
नीति, प्रथा गाय, जचुक सहज रडिबार्ता भौगोलिक
अेव वातावरण निर्मित ससृष्ट परम्परा ये सभी अिन
स्वरोंमें अजने नाम, धाम अयका वेदा आदिका परिवच
देवी प्रनीत होनी है ।" यही कारण है कि लोक-गीतोंमें
हम व्यक्ति और समाजके जीवनका सच्चा चित्र पाते हैं,
जो हमको केवल भाव-जगत्से ही परिचित नहीं
कराता परन्तु अुस वास्तविक जगतम परिचित कराता
है जो बलामें यथार्थकी अमिष्यजनाकर आदसोंकी अोर
बडता है ।

[चर्चा]



[सूचना—'राष्ट्रभारती' में समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियाँ ही सम्पादकके पास आनी चाहिये।]

आँखोंमें—[लेखक—हरिवृष्ण 'प्रेमी', प्रकाशक—
आत्माराम अंड मस, दिल्ली, पृष्ठ-संख्या ११०, मूल्य २।]

हृदयकी अनुभूतियाँ जब सरस श-शावलीका
सहारा लेती हैं तब कविता स्वयं व्युपस्थित हो जाती
है। प्रेमानुभूतिमें प्रेरित काव्यही सद्यःके साहित्यमें
सबसे अधिक है। महानवि अकबरन ठीक ही लिखा
या कि—

जिसको दिलमें जगह दे अकबर
शादरो कब अबलते हुआ करती है ?

प्रस्तुत पुस्तक "आँखोंमें" अथ 'प्रेमी' के विरह
विषय हृदयकी वेदना, प्रेम, वसक, मादकता, कृष्णा
और न जाने अन्य कितनी कोमल भावनाओं अकपरोसे पीठ
पडीं होकर पाठकाकी भाव-विभोर बनाती हैं।

'आँखोंमें' पुस्तकके रचयिता श्री हरिवृष्ण प्रेमी
हिन्दीके प्रसिद्ध नाटककार हैं, किन्तु स य यह है कि वे
नाटककारसे पहले कवि हैं। हिन्दी साहित्यके क्षेत्रमें
वे पहिले कवि रूपमें ही प्रकट हुए थे, बादमें बुहोन
अनेक सुन्दर नाटक लिखे हैं। अिन नाटकीयों भी अिनका
कवि रूप ठिप नहीं सका है।

'आँखोंमें' प्रेमीजीके जीवन-कालकी सरस रचना
है, जिसमें अिनके अन्तरका अुच्छवासित घुआ वाण
वनधर आँगोसे आँगु बनकर टपकने लगा है। किमी
'प्रेमी' के हृदयको जब कोडी कोमल भावना छू लेनी है

तब वर प्रयोगमल हो जाता है। नयेही फिर सतार
अुसे पागल कहे, मतवाला कह। वह स्वनिर्मित अपनी
सृष्टिमें विचरण करता है। अुम मृष्टिके बाहर और
भी कुछ है, कुछ ही सकना है—न वह अिने जानना है,
न अुसे जाननेका प्रयत्न करता है। "आँखोंमें" कियो
अंसे ही मतवाले 'प्रेमी' के विगृहक भाव विखरे हुए
हैं। न यह प्रय काव्य है और न मुन्तक-नाय्य। हाँ,
सरस भावके मोतियोका अुने अंक सुन्दर सग्रह कहा जा
सकना है।

कियो तरण कविकी भावनाश्रीम यौवनका अुदाम
प्रवाह कितना सुन्दर और सरस होना है, "आँखोंमें"
सहज देखा जा सकता है।

चन्दनाके खोल—लेखक—हरिवृष्ण "प्रेमी"
प्रकाशक—आत्माराम अंड मस पृष्ठ १२०, मूल्य २।
प्रस्तुत पुस्तकमें श्री 'प्रेमी' जीकी ६० कविताओं
सग्रहीत हैं। पुस्तकके प्रारम्भमें कविने अंक प्रदन
किया है।

"कविकी वागुरीने चन्दनाके खोल कयो माये ?
गा-रीको गये दो वर्षने अत्रिक हो गये और अब कविकी
सत्सोमे ये अुच्छवाम कयो अुमडे ?"

कविने अिस प्रश्नका अुत्तर भी दिया है—

"घातूके चदनीच चक्कि-चने स्वय ही फूंक लगा
दी है, कविका अपने मीतापर अधिकार नहीं है।"

स्पष्ट है कि प्रस्तुत पुस्तकका सीधा सम्बन्ध राष्ट्रपिता गांधी और बुनकी विचार-धारासे है। प्रायः प्रत्येक गीतमें बापूके प्रति नम्र श्रद्धाजलि कविने चढायी है।

जो जन्मकी सृष्टानके
मोचे बबे नीरव रहे।

अन भूक पीड़ित प्राणियोंका।

बन गया अच्छवाम तू।

हर साँसकी था साँस तू

विश्वासका विश्वास तू ॥

शैलीकी दृष्टिमें 'बन्दनाके बोल' को अंक अपनी विशेषता है। अर्द्धकी गजलके ढगपर अिन गीतोंकी कुठ-बुछ रचना हुआ है। श्री 'प्रेमी'जी अिस दिशामें प्रयत्नशील है और अिधर अुन्होंने अनेक हिन्दीकी अच्छी गजल भी लिखी हैं।

"बन्दनाके बोल" गाकर कविकी वाणी धन्य हुआ है।

कविने निकट बापूके चरण-चिन्होका विशेष महत्व है। अूसका विश्वास है—

पातकोंके पंक्रमें भ्रम-शरा
कमी फँसते नहीं वे,
जो तुम्हारी लोकर पर रख
पाँव अविचल चल रहे हैं।

कवि हृदयकी कल्पनाको
उपोति तुममें मिल रही है।
स्वप्नके अस्तके हृदयमें
खिल विमल शतदल रहे हैं

चिन्ह चरणोंके तुम्हारे
दोपकीसे अल रहे हैं ॥

— रामेश्वर दयाल दुबे, अे. अे., सा. २-

गौनेकी विदा (बुन्देलखण्डकी लोच-कपाअें) :—
ले श्रीगिरमहाय चतुर्वेदी। पृष्ठ १६४ डबल
गाभ्रन १६ नेजी। मूल्य २) प्रकाशक-अजन्ता प्रेस लि.
पटना।

यद्दु प्रथमतःकी बान है कि भारतीय साहित्य
करो अेव प्रकाशकोंकी रवि लोक-साहित्यकी और

आकषित हुआ है। अभीतक अधिक्तर लोकगोशोर ही
ध्यान दिया गया परन्तु ग्रामोकी जनताका अाना क्या
साहित्य भी है, जो दरियाँजे लोगोकी जवानपर चला आ
रहा है। पुस्तककी भूमिकाके लेखक श्री रामनेरु
त्रिपाठीके शब्दोंमें कहा जा सकता है कि 'मनुष्य क्हांनी
वनानेके लिअे ही अुत्पन्न हुआ है।' और वह समझे
वक्षस्पलपर अपनी कहानी लिखकर अज्ञानलोकको चम
देता है। अिसी क्हांनीको कवि और कथाकार गनों
द्वारा सामने लाते हैं। अुसे कलाका रूप देते हैं, परन्तु
मनुष्य जन्मजात कलाकार है और बुनकी कलाकृति
प्रतिबिम्ब ही साहित्य-सरिताके नीरमें प्रतिबिम्बित
दिखलायी पडता है।

लोक-साहित्य आदर्शवाद या यथार्थवादके पचवेमें
नहीं पडता। वह कलाकारोंका विषय भी नहीं। विषय
तो समीक्षकोंका है। परन्तु अन्तर समीक्षक बादोंके
मुचनमें पडकर कलाकी कमनीयता अेवं सजीवताकी
भूल जाते हैं। अुसके सादरत सत्यको पहचाननेमें ढग-
मगा जाते हैं और तब साहित्य अपना स्वाभाविक प्रबह
छोडकर लकीरो और मंडोपर चलने लगता है, अिसमें
अुसको स्वाभाविकता नष्ट हो जाती है। स्वभाविकता
साहित्यका सौंदर्य है और अन्वभाविकता ही कुल्लता।

"गौनेकी विदा" में लेखकने बुन्देलखण्डकी २०
कहानियोंका सग्रह किया है और मनी क्हांनियाँ मज्ददार
तथा प्रवाहपूर्ण हैं। अुनमें सभाजवा चित्र है और
साहित्यका प्रकटीकरण। चार क्हांनियाँ तो सागर
जिलेकी बुन्देलखण्डो बोलीमें लिखी गयी हैं। बन्तु
वर्णन भी स्वाभाविक तथा आकर्षक हैं। क्हां
कहीं तो सामने चित्र या अुपस्थित हो जाता है। क्हां-
क्हीं भाषार्थो बडी चुलचुली और मज्ददार हो गयी है—

'बिम्बानी झूठी न बाउंजे मीठी. पडीपडीबा बिमराम
जाने सोताराम ! नईबेबादे खोदीप न मुनने बारेलो
दोय, दांपतो अन्वो जीने बिम्ब्या बनाके सटी कती।
और दोप आधो सोभ्राँ नैया। कामसे अने रैनकाटनेके लाने
बनायी। गजकरकी घोडा सखलारिकी ल्याम। छोड
दो दरियाके बाँचमें बग जाय छमा छन छमा छम
अुसरार घोडा अुनसार घान, न घाय घोडा खो ग्याय न
घोडा पास लो ग्याय।'

यद्यपि सभी कहानियाँ 'रंजकारि'के लाने' बनायी गयी है, फिर भी उनमें दिनोंको ममज्ञनेकी भी सामग्री है। प्रथम कहानी 'शोनेकी मिठा' कीही लीजिये, जिसमें नारीकी बुद्धिमत्ता और मनुष्यके अधिमानका घटे मामिन दगते वर्णन किया गया है। 'राजा रघु और ब्राह्मण' कहानी तो जीवनकी गीताके समानही उपदेश देती है और वह भी उसी मधुरताने साथ नि उपदेश उपदेश न होकर कहानीके रूपमें मस्तपक्षको घेगता है। 'बुंदेला ठाकुर' कहानी भी वही मजेंदार है। गोस्वामी तुलसीदासके शब्द 'सपनेहु हीबू भिखारि नृप रचनाच पनि होय' याद आते हैं। इसी प्रकार सभी कहानियाँ कोश्री न कोश्री अर्द्धश लेख चलती हैं, परन्तु अर्द्धश कलाके आवरणमें असा कुछ धिरकर चलता है कि कहानी तन्व अपना रम जमा लेता है। पाथोरे (भनसामें मजीवता देखकर यह कहना पडता है कि जन माधारणमें कहानी-कला अपने कितने अवयव लेकर चली और चल रही है। इसका प्रभाव हमारे क्या साहित्यपर भी पड सकता है।

खोजकी पगडंडियाँ — लेखक श्री मुनि' कान्तिसागर, पृष्ठ २१५, डबल पाञ्चन सोरूह पेजी, मूख्य ४), प्रकाशक, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी।

पुस्तकके लेखक मुनिकान्तिसागर श्रेताम्बर जैन हैं, जो अधिकतर संदल पर्यटन करते रहते हैं। आपका कहना है कि 'मेरा अनुभव रहा है कि भारतीय सभ्यता और सभ्यतितने मूलरूपको जितना पादविहारी भोली-भाली जननाम बैठकर आत्मसाग कर अनेक विरुप्तप्राय सामग्रीको प्रकाशमें ला सकता है, हमारे वाहन-विहारीके लिये सम्य नही।' और फिर 'दृष्टि-सम्पन्न, मानव जहाँ जायगा अने अपने विषयकी ठोम सामग्री अपुलब्ध होही जायगी।' लेखकने जिनो दृष्टि सम्पन्नताके फलस्वरूप पट्टे "सदहरोका वैभव, नामकी पुस्तक पाठकोप्रदान की थी। जिसमें वैभवकी विशेषण पट्टहर बताते हुआ भी 'राजे सजाय मन्दिरोमें सोन्दर्य सम्पन्न कृत्रियोका भी अनुलेप किया है।" वास्तवमें सोन्दर्य तो विश्वकी प्रत्येक कलाकृतिकमें देगा रा भा ९

जा सकता है, यदि सोन्दर्यनुभवकी दृष्टि हो तो। "सोची और भेडापाठकी चौपठ योगिनियोंकी मुक्तियों आजभी तो अपने सोन्दर्यकी आभा विकीर्ण करती है, यद्यपि उनका प्राचीन वैभव लुप्त हो गया है। सोन्दर्यके लिये वैभव आवश्यक नहीं। कारण, सोन्दर्य स्वय ही वैभवका प्रतीक है और त्रिमी दृष्टिको ले, मुनी-कान्तिसागरको सम्भवत 'बेहरो' अथ 'पगडंडियों' में भटवते हैं और 'जिन हुआ तिन पाशिया'के अनुसार अन्दे, यहाँ भी सोन्दर्यका वैभव मिल जाता है— कलाकी अमरता दिख जाती है। जिसे वे अपनी पुस्तकमें रख देते हैं।

'खोजकी पगडंडियाँ' पुस्तक भी सण्डहरोके वैभव' की भाति मुनिजीके पुरातत्व तथा कला मन्वन्धो निवन्धोका सग्रह है, जिसके ललितकला, लिपि और भौगोलिक यात्रा तीन भाग किये गये हैं। पुस्तकका आरम्भ जैन आश्रित चित्रकला अव्यायसे होता है। जिसमें जैन चित्रकला, मिति, पल्लव, ताड तथा वस्त्र चित्र आदिपर विवेचन और प्रमाणके साथ विचार प्रकट किये गये हैं, जिनसे लेखककी प्राचीन तथा अर्वाचीन श्रयोको जानकारी प्रकट होगी है। दूसरे प्रकरणमें बौद्ध चित्रकलाका विवेचन है और फिर महाकाशने जैन भित्त-चित्रोंपर प्रकाश डाला गया है। वास्तवमें यह खेदकी बात है कि मध्यप्रदेशकी पुस्तक सामग्रीपर जैसा चाहिये अभाव प्रकाश नही डाला गया, यद्यपि यहा पर्याप्त सामग्री अपुलब्ध है। इसी प्रान्तमें भारतका सबसे पुराना खुदा रमसव मौजुद है, लेकिन सत्र छिया पडा है। त्रिपुरीकी खुदाओका कार्य भी बहुत महत्वपूर्ण है। जयलपुरमें स्वर्णशय रायबहादुर डाक्टर होरालालकी स्मृतिमें जिस समितिकी स्थापना हुयी है, अनेके प्रयत्नको प्रोत्साहन मिले तो भले ही कुछ हो जाय।

लिपि-प्रकरणमें महाराज हस्तीके नवोपलब्ध ताग्र सामन, कलचुरि पृथ्वीराज द्वितीयके ताग्र-शासन और गुप्त लिपिपर विस्तारके साथ लिखा गया है। प्रथम सामग्य स्व गौरीशंकर होराबद्र ओजाके मतानुसार वि से ५४६ का है। दूसरे सामग्यकी लिपि तेरहवीं शताब्दी की देवनागरी है, जिससे अतिहासकी अंक नयी जानकारी यह मिलती है कि

बालिग नरेश चोडगणकी पृथ्वीदेव द्वितीयने हराया था, यद्यपि अभीतक रत्नदेव प्रथम द्वारा चोडगणका पराजित किया जाना प्रसिद्ध था।

भौगोलिक ज्ञान सम्बन्धी लेखोंमें नालदा विद्यालय, कलातीर्थ मेहर तथा पाटलिपुत्रकी पैदल यात्राओंका सुन्दर वर्णन है। अित यात्राओंमें भी लेखक अपनी पुरातन दृष्टिसे बिलग नहीं हुआ। मेहरकी चारदा देवीका वर्णन करते हुअे लेखक लिखता है कि "चारदाके मुखपर अदभुत तेजकी चमक है। धीणापर अंगुलियाँ अंसी साधन रखी गयी हैं कि अूनकी कल्पना और रचना अेक पहुँचा हुआ कलाकार ही कर सकता है। शरीरके अन्य सभी अंग-प्रत्वगमें कोमलताकी मामिक अभिव्यक्ति है।" पाषाण-प्रतिमामें कोमलताकी अभिव्यक्ति कलाकारके ही समझनेकी चीज है और सचमुच साधारण शिल्प-कला अिस चरम अुत्कर्षको नहीं पहुँच सकती।

अिसी प्रकार पुस्तकके अनेक स्थल मामिक और विशद विवेचनासे भी पूर्ण हैं। पुस्तक-पठनीय तथा अुपयोगी है।

—'अज्ञातशत्रु'

समीक्षार्थ प्राप्त पुस्तकें तथा पत्रिकाओं

नया पथ (मासिक-पत्र) —सपा०— श्री शिव शर्मा। प्रकाशन स्थान—३१४ बल्कमभाओ पटेल रोड, बम्बयी ४। मूल्य ॥)

नवनीत (मासिक-पत्र) :—प्रकाशक—नवनीत प्रकाशन, बम्बयी। मूल्य १)

भौतिक समन्ययवाद :—ले०—श्री मोक्षिण्ड-प्रसाद त्रिपाठी। प्रकाशक—रा मा. प्रकाशन, मधना, कानपुर। मूल्य १।।।)

रजवाड़ा :—ले०श्री देवेरादास। प्रकाशक—आत्मागम अेण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली। मू० ५)

अभिनय (मासिक पत्र) :—प्रका०—किन्-वेज कार्पोरेशन, बलवत्ता। मूल्य ॥)

परेड ग्राऊंड :—ले०—श्री हसरत रहर। प्रका०—आत्माराम अेण्ड सन्स, दिल्ली। मू० १।।)

गुरु दम्पिण्या :—ले०—श्री सन्तराम। प्रका०—आत्माराम अेण्ड सन्स, दिल्ली। मूल्य ॥।)

स्तालिन —ले०—श्री राहुल साहत्यायन। प्रका०—पीपुल पब्लिशिंग हाउस, बम्बयी। मूल्य ३)

अपना पराधा :—श्री राधिकारमण सिंह। प्रका०—राजेदवरी साहित्य मन्दिर, पटना। मूल्य २)

धर्मकी धुरी :—श्री राधिकारमण सिंह। प्रका०—राजेदवरी साहित्य मन्दिर, पटना,। मू० २)

लाल चीन :—प्रका०—भारतीय ज्ञानपोठ, काशी। मूल्य ३)

संघर्षके वाद :—ले०—श्री विष्णु प्रभाकर। प्रका०—भारतीय ज्ञानपोठ, काशी। मूल्य ३)

साहित्य-सुधा :—श्री सत्यपाल। प्रका०—भाया प्रकाशन, नयी दिल्ली। मूल्य ३)

साहित्यिक जीवनके अनुभव :—लेखक श्री विश्वरीदास वाबरेपी। प्रकाशक—हिमालय अेजेन्सी बनखल, अु प्र। मूल्य २)

आर्य संसृतिके मूलतत्त्व :—लेखक—श्री सत्यप्रद मिश्रातालवार। प्रका०—विद्याविहार, बलवरी अेजेन्सी देहगढ़त। मूल्य ४)

चारके चार :—ले. श्री कमल जोशी। प्रका०—शुभा प्रकाशन जमशेदपुर। मूल्य २।।)





द्विट्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति :

अखिल भारतीय व्रज-साहित्य मण्डलका नवम अधिवेशन प्रयाग-विश्व-विद्यालयके सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री डॉ० धीरेन्द्र वर्माकी अध्यक्षतामा सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। अन्तर प्रदेशके राज्यपाल श्री कन्हैयालाल मुन्शीका अति अवसरपर दिया गया अद्घाटन-भाषण भी प्रेरणादायी था। अन्होंने कहा कि—“अेक समय था जब व्रज-भाषाके साहित्य द्वारा दूसरे प्रान्तोंके साहित्यिकोंको भी प्रेरणा मिलती थी और कभी गुजराती तथा दूसरी भाषाओंके कवियोंने व्रज-भाषाकी कविताके अनुकरणपर अपनी भाषामें कविताकी रचना की है। कुछ भिन्न प्रान्तीय कवियोंकी व्रजभाषामें लिखी कविताअे भी मिलती है। व्रजभाषाका अुस समय अितना व्यापक प्रभाव था।”

श्री डॉ० धीरेन्द्र वर्मानें अपने अध्यक्षीय-भाषणमें व्रजभूमिकी भाषा, अुसका साहित्य तथा सस्कृतिकी कुछ विशेषताओंको दिखाते हुए व्रज-भाषाका विशेष अध्ययन-अध्यापन, सरवण तथा खोजकी ओर अग्रसर होनेके लिये प्रेरणा दी और अुसे वैज्ञानिक रूप देनेका आग्रह किया। अुसके साथ-साथ अन्होंने अक चेतावनी भी दी जो बड़े ही महत्व की थी। अन्होंने कहा —

“व्रज भाषाके कार्यको आप कभी भी हिन्दी भाषा सम्बन्धी कार्यमें भिन्न अथवा प्रतियोगी न

समझें। व्रजभाषा हिन्दीका ही अेक अभिन्न अंग है। अत व्रजभाषाकी सेवा वास्तवमें हिन्दीके ही अगनी सेवा है। दूसरी बात यह कि व्रज-प्रदेशकी भावनाको आप धामन और राजकीय-स्तरपर कभी भी न ले जाअें। स्पष्ट शब्दोंमें व्रज प्रदेशका अेक स्वतन्त्र प्रान्त बनाया जाअे, अिस कल्पनाको भी कभी मनमें न आने दीजिये। अिमसे व्रजभाषाका अहित अधिक हीगा, हित कम। आज व्रजभाषा समस्त हिन्दी-भाषियोंकी ही नहीं बल्कि समस्त भारतीयोंकी अपनी निधि है। व्रज प्रान्त बन जानेपर व्रजभाषा अुस प्रान्त तक ही सीमित रह जाअेगी। अिसके अतिरिक्त अंया करनेसे आप आर्यावर्तके मध्यदेशकी लगभग १५ करोड हिन्दी भाषी जनताके सम्मिलित परिवारमें फूटका बीज बोअेंगे। आज भी हिन्दी प्रदेश १०-११ पृथक राज्योंमें विभक्त हैं, किन्तु अिस विभाजनके पीछे कोअी कटुता या अलगभावकी भावना नहीं है। हिन्दीकी बोलियोंके आधारपर राज्योंकी मांग हिन्दी भाषियोंकी शक्तिको छिन्न-भिन्न कर देगी। हिन्दीके सम्बन्धमें प्रियमन आदि जो फूटका बीज बो गये है वह पल्लवित हो जाअेगा।”

अुनकी यह चेतावनी बड़ी अुपयुक्त चेतावनी थी और बड़े अवसरकी चेतावनी थी। फिर भी अधिवेशनमें जो अेक यह प्रस्ताव हुआ कि व्रज साहित्यमें नया साहित्य—नाटक, अुपन्यास आदि लिखनेकी प्रवृत्तिका भी आरम्भ किया

जाजे, उसे हम बहुत बड़ी चिन्ताका कारण मानते हैं। हमारी दृष्टिमें, आर्यावर्तके मध्यदेशकी जनतामें आधुनिक हिन्दीको अपनानेके सम्बन्धमें जो अकेलत दिखायी देता है, बुझमें यह प्रस्ताव छोटा-सा भी क्यों न हो, अके छिद्र बुलबुल करनेका प्रयत्न कर रहा है और अके छोट-से छिद्रके कारण कंसी अनर्थ-परम्पराका भामना करना पड़ेगा, जिसकी कल्पना करना भी कठिन है। श्री धीरेन्द्र वर्माकी अपुरोक्त अध्यक्षीय चेतावनीके बाद भी यह प्रस्ताव क्यों आया यह समझना हमारे लिये अके समस्या ही है। जिस 'प्रस्ताव' के सम्बन्धमें जब चेतावनीके दो शब्द कहे गये तो वर्माजीने विश्वास दिलाया कि वहाँ किसीके मनमें हिन्दूकी प्रतियोगिताका या कोई दूसरा भाव नहीं है। यह विश्वास दिलानेकी कोई आवश्यकता तो न थी, क्योंकि जिन्होंने प्रस्तावके सम्बन्धमें चेतावनी दी थी वे भी जिस बातको मानते और जानते थे। परन्तु जिस प्रस्तावका वे विरोध कर रहे थे क्योंकि वे उसके परिणामसे डरते थे। और दरअसल यह समझना कठिन है कि आज खड़ीवोली गद्यके विकासमें अितनी दूर तक जानेके बाद बुद्धे ब्रज-भाषाके गद्यको नये सिरेसे पैदा करनेकी कौनसी आवश्यकता जान पड़ी? ब्रजभाषाको घरेलू व्यवहारमें ही सीमित करके सार्वजनिक क्षेत्रमें जहाँ आधुनिक हिन्दीको सब प्रकारसे अपनाया गया है, यहाँ तक कि हिन्दीमें धारावाही भाषण देनेवाले ब्रजभाषाके अिन आग्रहियोंको भी ब्रजभाषामें भाषण देना कठिन मालूम होना था, वहाँ यह नया अपुनन किस लिये? यह प्रश्न होता है, और अुमका अुतर और अिन अपुननका परिणाम दोनोंकी कल्पना परनेपर हम चौक अुटते हैं। अवधी, मैथिली,

राजस्थानी, भोजपुरी, बुन्देली, हाड़ीती बाँके भाषाओंके आग्रही भी यदि जिसी प्रकारकी प्रवृत्तिमें जुट जाँके, तो जिसका परिणाम वही होगा जिससे बचनेके लिये श्री धीरेन्द्र वर्मा चेतावनी देते हैं। अन्तमें शासन और राजकीय स्तरपरही बुद्धे अुतरना पड़ेगा और परिणाम कंसा होगा यह तो सरल अनुमानकाही विषय है। हम चाहते हैं कि यह प्रस्ताव ब्रज साहित्य मण्डलके कार्यालयमें अंसा खी जाँके कि फिर अुसका किसीको ख्याल भी न जाँके। स्वयं प्रस्तावक महोदयने बातचीतमें यह स्वीकार किया था कि बुद्धेने अपने प्रस्तावके परिणाम आदिपर पिस प्रकार विचार नहीं किया। अंसी स्थितिमें हम मानते हैं कि अुमे भुला देना कठिन न होगा।

आगरा-विश्वविद्यालयका हिन्दी-विद्यापीठ :

जिस विद्यापीठका गिलान्यास अुनर प्रदेशके मुख्य मन्त्री श्री गोविन्दवल्लभ पन्तजीके अुम हाथोंसे ता. १४ दिसम्बरको हुआ। जिसका नाम तो बंसे हिन्दी-विन्स्टीट्यूट रखा गया है, परन्तु यहाँ सुविधाके लिये हमने अुसे विद्यापीठ बना लिया है। हम जिस विद्यापीठका स्वागत करते हैं। अेरु सरलसे अधिक हुआ कि जिसके सबधमें विचार हो रहा था। अभी अुसका गिलान्यास हुआ है, और जैसी कि आशा की जाती है बुद्धे आरम्भ आगामो जुलाबीसे हो सकेगा। अभी अुसके सचालनका भार कौन सभूलेगा जिसका निर्णय नहीं हुआ है। अच्छी योग्यताके व्यक्तिनी तलाश हो रही है और जिसलिये अुन पदके लिये पर्याप्त वेतनकी योजना की गयी है। परन्तु कौन जिस पदको विभूषित करता है यह जबतक मालूम नहीं होना, सस्यावे भविष्यके सबधमें कुछ भी कहना कठिन प्रतीत होता है।

क्योंकि सस्थाके भविष्य तथा विकासका आधार अतिस सचालकके व्यक्तित्वपर ही निर्भर करेगा। फिर भी हम अिस विद्यापीठका हार्दिक स्वागत करते हैं। हम आशा करते हैं कि यह विद्यापीठ आजकी अेक बहुत बड़ी आवश्यकताकी पूर्ति करेगा। जैसा सुना गया है, अिसके कार्योपत्रके बारेमें अब भी कुछ मतभेद हैं। कुछ लोग अिसे भारतीय भाषाओके लिये अेक अनुसन्धान तथा खोज-कार्यवा बपेत्र मान बनाना चाहते हैं परन्तु आगरा विश्वविद्यालयके कुलपति श्री मु.जीजीकी कल्पना दूसरी ही है। वे अुमे भारतीय भाषाओके और खासकर हिन्दीके विशेष अव्ययन और अध्यापनका पीठ बनाना चाहते हैं। यही नहीं, यहाँ अनुसन्धान तथा खोजका काम भी होगा। परन्तु वह भारतीय भाषाओको परस्पर अेक दूसरेके निकट लानेकी दृष्टिसे, उनमें जो समान शब्द व्यवहारमें आते हैं अन्हे ढूँढकर हिन्दीको समृद्ध बनाने और फिर हिन्दी द्वारा भारतीय भाषाओको समृद्ध बनानेकी दृष्टिसे होगा। अिस मस्थामे अेक और भी महान लाभ होगा और वह यह कि भिन्न-भिन्न प्रान्तोके विद्यार्थी-विद्वान् अिस मस्थामें अेक दूसरेके निकट आयेगे। साहित्यिक तथा सांस्कृतिक-स्तरपर परस्पर सम्पर्क साधेंगे और अिस प्रकार हमारी मूलभूत राष्ट्रियताको सुदृढ़ बनायेंगे। अिस भव्य भावनाको यह सस्था किस प्रकार मूर्तरूप दे सकेगी, यह भविष्यकी बात है। हम आशा करे कि अिस सस्थाके कार्यका आरम्भ शीघ्र ही हो और वह अपने ध्येयके अनुसार कार्य करनेमें सफल हो। जैसा कि सुना गया है अिस सस्थाकी ओरसे भारतीय साहित्यकी अेक त्रैमासिक पत्रिका भी निकालनेका आयोजन हो रहा है, अुसमें सभी

प्रधान प्रान्तीय भाषाओका प्रतिनिधित्व होगा। हम अिस सक्पका स्वागत करते हैं।

हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, प्रयागका अुपाधि वितरण-समारोह :

सम्मेलनके हिन्दी विश्वविद्यालयके साहित्य-रत्न परीक्षोत्तीर्ण म्नातकोना अुपाधि-वितरण समारोह ता २० दिसम्बरको सम्मेलनके साहित्य विद्यालय भवनके प्राणणमें सफरता पूर्वक सपन हुआ। सम्मेलनके दोघंजातीन जीवनमें यह प्रथम ही अवसर है, जबकि अुमने यह समारोह किया है। अिसका अुद्घाटन सम्मेलनके प्राण राजाँपि टण्डनजीने और दीवपान्त भाषण बिहार राज्यके शिवपामन्त्री आचार्य श्री बदरीनाथजीने किया। अिससे अिम समारोहकी शोभा और भी बढ गयी। अिममें श्री डॉक्टर सम्पूर्णानन्दकी अुपस्थिति और अु.हे मगलाप्रसाद पारितोषिक दिया जाना, अिम समारोहका विशेष आकर्षण था। सम्मेलनके आदाता श्री जगदीश-स्वरूपजीकी अिस सूझके लिये तथा अिस समारोहकी सफलतापर हम अुनका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

सम्मेलनका अधिवेशन नहीं हो रहा है परन्तु सम्मेलनकी परीक्षपत्रो आदिका कार्य मुचार रूपसे चल रहा है। यही नहीं अुसने अेक बडे कोशका काम भी शुरू करवा दिया है। यह श्री जगदीशस्वरूपजीकी कार्य-कुशलता तथा हिन्दी-प्रेमको प्रकट करता है। वे कुछ काम कर जाना चाहते हैं और जो कुछ किया जा सकता है वे कर रहे हैं। अिसके अिसे वे धन्यवादके पात्र हैं। यह समारोह भी अुनके अिसी प्रकारके अुत्साहका परिणाम है। और वह खूब सफल रहा। परन्तु अेक बात हमें अवश्य सटकी।

स्नातकोको गाअन देनेका विचार जिस किसीका भी हो, वह हमें अपनी सस्कृतिके अनुकूल नहीं जेंचता। वह तो केवल अंग्रेजी परिपाटीका अनुकरण मात्र ही था। जिम गाअनका हमारे स्नातकोको कुछ भी अपुयोग न हो सकेगा और न वे कभी अमका अपुयोग कर सकेगे। जिससे तो अच्छा यह होता कि अंक अच्छी शाल मम्मेलनके मुद्रालेखसे छपी हुअी दी जाती। उसका स्नातक अपुयोग तो करते। गुजरात-विद्यापीठने वर्षोंसे गाअनके बदले खादीकी शालका अपुयोग किया है और उसी परिपाटीके अनुमार गण्ट्रभापा प्रचार समिति भी अपने कोविद तथा राष्ट्रभापा-रत्नोको शाल ही देती है।

हमारी अुदासीनता तथा निष्क्रियता :

दूसरा जो विचार जिस समारोहके अवसरपर आया वह यह था कि आज यदि सम्मेलन आदाता द्वारा नहीं, परन्तु अपनी स्थायी समिति द्वारा सावेंजनिक सस्याके रूपमें कार्य करता होता तो, जिस समारोहकी भव्यता किन्नी बढ जाती। हिन्दीका कार्य करनेवाली देशकी सबसे बडी और पुरानी सस्या आज आपसके झगडोके कारण अंसी परिस्थितिमें पड गयी है कि देशको हिन्दी मम्बन्धी बहुत बडी आवश्यकताओको देखते तथा अनुभव करते हुअे भी अुन्हे पूरा करनेमें वह असमर्थ है और हिन्दीपर अभी चारो ओरसे जो व्यर्थवा आक्रमण हो रहा है, उसे अुसके अंक समयके कणंधार, जिनके नामसे हिन्दीके साहित्यिक तथा कार्यकर्त्ता प्रेरणा पाते थे और हिन्दीके कार्यमें अुत्साहमे लग जाते थे, वे भी आज पुग्पायहीन होकर केवल देगते रहनेके सिवा कुछ नहीं कर सकते। अभी-अभी दिल्लीकी सगद तथा सन्धमामे जो हिन्दीके सम्बन्धमें

चर्चाअें हुअी, अुनमें बहुत-सी बातें हमारी आँखें खोल देनेके लिअे पर्याप्त है। जामिया मिलिया द्वारा हिन्दीका ज्ञानकोश तैयार करवाया जा रहा है और सरकार अुसे लाखों खपयोकी सहायता दे रही है। मैं जामिया मिलिया या सरकारका दोष नहीं निकालता। जामिया मिलियाने तो अंक अच्छा कार्य आरम्भ किया है और वह अपने विचारोके अनुसार अुसे पूरा करेगी। यह दूसरी बात है कि भापाके सत्रंघमें तथा विश्वकोशकी योजनाके सवघमें हमारा अुनसे मतभेद हो। दरअसल ज्ञानकोश तथा दूसरे प्रकाशनोका काम हाथमें लेना हिन्दीकी गण्यमान सस्याओका काम था। अुसमें लगानेके लिअे योग्य पूंजी प्राप्त कर लेना भी जिन सस्याओके लिअे कठिन काम नहीं था। परन्तु वे आपसके झगडोमें ही लगी रही और जिस प्रकारके रचनात्मक कार्योंके प्रति अुदासीन बनी रही।

यदि हिन्दीकी सस्याओने अलग-अलग अपनी हचिके अनुसार कार्य-भार अुठाकर हिन्दीकी सेवा करना अुचित न माना तो वे सब मिलकर भी कुछ योजना बनाकर कार्यका आरम्भ कर सकती थीं। अुन्हे अुमके लिअे आवश्यक साधन-सामग्री मिल ही जाती और कार्यका आरम्भ करनेपर सरकार द्वारा भी सहायता मिलती। परन्तु अुन्होंने अंमा कोअी कार्य नहीं अुठाया और सब अपनी-अपनी डफ्ती बजानेमें ही व्यस्त रहे और कभी-कभी सरकारकी या दूसरी सस्याअें जो अपनी दृष्टिके अनुमार कार्य किये जा रही है, अुनकी टीका-टिप्पणी करके ही मतोप मानते रहे। अिमका परिणाम और क्या हो सकता था ? आज फिर अुर्दूका प्रश्न अुठ रहा है। प्रान्तीय भावनाअें प्रबल हो गयी है और

हिन्दीको जो स्थान वर्षोंके मतलब प्रयत्नसे प्राप्त हुआ था अमुका आसन डोलता हुआ नजर आता है। और हम तो निश्चिन्त हो आँखें मूंदकर अपनी छोटी-छोटी प्रवृत्तियोंमें ही अंक दूररेका विरोध करते हुए कार्य करनेका वृथा अभिमान करते हुए दिखायी देते हैं। क्या अब हम अपनी आँखें खोलेंगे और वास्तविक स्थितिका अध्ययन कर हमारा जो कर्तव्य है उसे करनेके लिये अग्रसर होंगे ?

— मो० भ०

× × ×

‘नागरी-लिपि सुधार परिपद’:

अुत्तर-प्रदेशकी राजधानी लखनऊमें पिछले नवम्बर मासके आखिरी सप्ताहमें अंक नागरी-लिपि सुधार परिपद हुआ। नागरी वर्णमालाके, आजकल व्यवहारमें आनेवाली लिखित अंकित, टंकित और मुद्रित प्रणाली या परम्परामें सुधार करनेके अद्देशमें अुत्तर-प्रदेशके प्रधान मंत्री पंडित गोविन्दवरलभ पन्तने अिस परिपदको आमन्त्रित किया था। भारतके विभिन्न राज्योंके कुछ राज्यपाल, कुछ प्रधान और शिक्षा-मंत्री, सचिव, सचालक और कुछ विशिष्ट विद्वान् लोग अिस अधिवेशनमें सम्मिलित हुए थे। भारतके अुपरराष्ट्रपति महान् दार्शनिक डॉ. राधा-कृष्णनने अध्यक्षत्व ग्रहण किया था। यह सब देखकर अिम परिपदकी श्रेष्ठता, अुपयोगिता व आवश्यकताको कौन समझदार व्यक्ति ननकार सकता है। अिमम जो लोग अिजट्टे हुए, चर्चा हुआ, विचार विनिमय हुआ आपसमें, तो हमें १९२२ को गया-कांग्रेसकी याद आ गयी जिसमें नेताओंके दो पत्र हों गये थे—अंक अपरिवर्तनवादी अर्थान् ‘नो चेज’ और

दूसरा परिवर्तनवादी। लखनऊकी अिस परिपदमें कुछ कट्टर सनातनी विचारके भी थे जो नागरी लिपिमें किसी प्रकारका परिवर्तन नहीं चाहते। आज नागरीका जो रूप अुत्तर-प्रदेशमें प्रचलित है अुसीको रखनेके पक्कम है वे। कुछ लोग पूरा और पर्याप्त परिवर्तन करनेकी मिफारिअें लेकर पहुँचे थे अुस परिपदमें।

राष्ट्रभाषाके साथ राष्ट्रलिपि भी जुड़ी हुआ है। यह हमारा सविधान घोषित कर चुका है। प्रयत्नपर प्रयत्न किये जा रहे हैं कि हिन्दी राष्ट्र-भाषाके रूपमें सर्वग्राह्य हो—सर्वमान्य हो। हमारी राष्ट्रभाषा वैज्ञानिक हो। अुसका सुलभ सामान्य रूप देशवासी ग्रहण करे। अुमकी ढीली नियमबद्ध हो जिसमें कठिनमें कठिन भाव व्यक्त किये जा सके। राष्ट्रभाषाका व्याकरण प्राणवान हो—लोगोंके जीका जजाल न हो और अुमका साहित्य अंसा अुन्नतिशील प्रौढ हो कि पढा जाये। भारतकी अंक राष्ट्रीय त्रिपिके बारेमें भी यही समस्या है, कि नागरी लिपि सरल अुपयोगी और सारे भारतमें ग्रहण करने योग्य आधुनिक वैज्ञानिक सुधारोंसे सुधार-मचारकर रख दी जाये कि अुमें सभी माने।

तो यह ध्यानमें रखा जाये कि वर्णमाला और लिपि अलग-अलग चीजें हैं। भारतका यह दुर्भाग्य या वदनमीत्री है कि अंक भाषाके त्रिअे दो लिपियाँ (नागरी ळम् (धन) अुद्ध) चलायी गयी और मविधान विरुद्ध होते हुए भी अुमें चलाये जानेके पक्कम अब भी अेरी चोटीका पसीना अंक कर रहे हैं। कुछ लोगोंका ळ्वा-लिपि पक्कम भी यहाँ मौजूद है जो अवैज्ञानिक होते हुए भी व्यावहारिक कपेत्रमें ज्यादा अुन्नत और अुपयोगी सिद्ध की गयी रोमन-लिपिकी अपना लेनेका समर्थन करना

है। हम हजार चिल्लाएँ कि 'रोमन वर्णमाला' में, लिपिमें, अपूर्णता है—स्वरो और व्यंजनोका अकाल है, लिखेंगे 'पिता' और पढ़ेंगे "पिटा", लिखेंगे 'दाता' शब्द और पढ़ा जायेगा—'डाटा' और कभी भूले-भटके या अक्के-बुक्के लिखा गया संस्कृतका 'पिनाकपाणि'—(शिव-शकर जिसका अर्थ है) वहाँ शब्द पीनेका पानी" पटा जायेगा। हमपर प्रभाव डाला जाता है कि यूरोप-अमेरिका आदि पाश्चात्य देशोकी अधिकांश भाषाओं रोमन लिपिमें ही लिखी जाती है। तब पाश्चात्योके साथ सांस्कृतिक सम्बन्ध बनाये रखनेके लिये अंग्रेजीके साथ-साथ पन्द्रह वर्षोंके लिये हम इसीको क्यों न अपना ले। माना कि अर्द्ध लिपिमें 'शीघ्र लिपि' के सभी गुण मौजूद हैं। यह अति शीघ्रतासे लिखी जा सकती है। अर्द्ध अवपरोकी रचना सादी है, अनुका आपसमें संयोग भी बड़ा सरल है फिर, वही क्यों न अपना ली जाये। भाषाओं और लिपियोंके वैज्ञानिक जानते हैं कि अस्समें विना लेखनी अथवा अक्षर तथा शब्द लिखनेकी क्लमता अथवा रेखाओं सरल होते हुए भी स्वर और व्यंजन बड़े गडबड हैं। अक्षरारणमें दिक्कत होती है। जिसकी वर्णमाला अपूर्ण और वेदगी अवैज्ञानिक है, संस्कृत अंग्रेजी आदि भाषाओंके शब्द लिखना जिसमें असमय है, जहाँ नुक्को हेरफेरके चक्करमें पडा हुआ व्यक्ति अक्षरोंमें टटोलता फिरता है।

अतः हमारे दूरदर्शी नेता लिपिका मुधार अनिवार्य मानते हैं। अथ वैज्ञानिक दृष्टिकोणको सामने रखकर मुधार आवश्यक है। यह बात तो सभीके दिलमें जमकर अब बैठ गयी है कि नागरीमें जो कुछ लिखा जाता है वही ठीक पढा जाना है। संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी, फारसी आदि सभी भाषाओंके शब्द लिखे जा सकते हैं, अनुनी ध्वनियाँ प्रकट की जा सकती हैं। और हज़ार पढ़े जा सकते हैं। फिर भी मुधारकी आवश्यकता है और शीघ्र भ्रम दिशामें कुछ सर्वमान्य बात होनी

चाहिये। कुछ आवश्यक बातोंको ध्यानमें रखकर सुधरी हुई हमारी नागरी लिपि अंसी बने जो मोनो, लाइनो टाइप, टेली प्रिंटिंग, टंक-लेखन, शीघ्र लिपि आदिमें निर्दोष अथवा सहूल बन जाये। नागरीका अवपर परिचय सहज हो जाये, हस्त-लेखन अतना सपा-सुधरा हुआ हो कि कठम वार-वार न भुठानी पड़े। भारतके बरोडा निरक्षरोंमें जिनके द्वारा साक्षरताका प्रचार सुलभताके साथ किया जा सके। आज 'खाना हुआ' 'खाना हुआ' बन जाता है, क् + प वा शुद्ध वैज्ञानिक संयुक्त रूप 'क्प' होनेपर भी असे अमान्यकर, असी पुराने वावा आदमके जमानेके 'क्ष' को पकड़े हुए है। 'स्टेनोग्राफीके स्टैंडर्ड-ऑर्गैनाइजेशन' को भी बहुत कालतक अछूता नहीं रख सकते। टंक लेखन (टाइप राइटिंग) को भी ठीक सभालना है। अभी तक "की बोर्ड" (key board) बुरी तरह फिसल रहा है। अथ मत नहीं। भिन्न-भिन्न मत और मुसाव है। सर्कीर्ण प्रातीयता और प्रादेशिकता भी ख्वाबट डाल रही है। अभी तक कुछ न हुआ—कुछ न हुआ।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा अनु सभी सर्वसुलभ, नागरी-सुधारोका स्वागत करनको तैयार रहेगी। अिन सुधारोंकी दिशामें अस्सने १९३७ में अपना सर्वप्रथम सुधरा हुआ नागरी-रूप देशके सामने रखा था जिस पथपर वह आज भी चल रही है। आचार्य काका कालेकर, प्रयाग विश्वविद्यालयके प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी डॉ. वाबूराम सक्सेना आदि सप्त महारथी पंडितोंके बड़े मपझीतेके साथ ध्वनिशास्त्रके आधारपर वर्धा समितिको सुधारी हुई नागरी लिपि दी थी। लिपिका समानीकरण किया था। आवश्यकता है बहुत सोच विचारपूर्वक निर्णय करनेकी, साहसरी और समझीतेको अमली रूप देनेकी। अभी तो हमें रखनभ्रूको लिपि सुधार पत्तिपद 'पहाड खोदकर चूहिया निनली' जैसी लगी।

नागरी प्रचारिणी सभाकी हीरक जपन्ती :

आजसे साठ वर्ष छह मास पीछेने युगपर आप दृष्टि टालिये । तत्र राष्ट्रभाषा हिन्दी, हिन्दी साहित्य, नागरी लिपि, अिनकी चर्चा करना, अिनके प्रचार और प्रसारके लिये प्रयत्न करना तबके सभ्य समाजमें पागलपनका काम समझा जाता था । राज्य अंग्रेजोंका था अपने मध्याह्नपर, सारी दिनका अंग्रेजी भाषा द्वारा मिलती थी अंग्रेजी राज्यान्तर्गत वसनेवाले भारतवासियोंको । अंग्रेजी भाषाके साथ अंग्रेजोंकी वृषाके बलपर राजराज, दरवार और अदालतोंमें किच्छर अरबी-फारसीसे लदी बुद्धू लिपि और बुद्धू ज्ञानका जोर था । बुद्धू सन १८३७में ही भारतमें अदालती भाषा बना दी गयी थी । अंग्रेजीदाँ और बुद्धूदाँ ही तत्र पढ़े लिखे सभ्य या सिविपत लोग माने जाते थे । बच्चे क्या करते ? मरता क्या न करता ? रोटीका-रोजीका सवाल जो था । हिन्दीका अपमान सूर्यमग्नूला होता था । हिन्दी-नागरीका व्यवहार करनेवालोंकी हँसी बुझायी जाती थी । सारा भारत तबके अंग्रेजोंके राज्यमें अन्धेर नगरी बना हुआ था । भारतेन्दु हरिश्चन्द्रका अुदय हुआ । हिन्दीके अुत्तरपंखा वह मगलमय दिखस था । दयी हुआ जनताकी भाषा जीवित होकर अुठ सटी हुआ । भारतेन्दुके "निज भाषा अुन्नति अहै गव अुन्नतिको मूल" का मन्त्रोपदेश ग्रहण कर हिन्दीकी सर्वांगीण अुन्नतिने लिभे दो-तीन पागलोंकी आवश्यकता थी जो अेन हृदय होकर, अेन प्राण होकर, हिन्दीकी सेवा करे । वे युवक थे । वाशी नगरीके किंगी हाथीस्कूलके ही छात्र थे । तीन थे वे तर्ण—शिवू श्यामसुन्दरदास, पटित रामनारायण मिश्र और टाबुर शिवबुमार

रा भा १०

सिंह । अिनने भगीरथ प्रयत्नसे, त्याग और तपने काशीमें नागरी प्रचारिणी सभाकी स्थापना हुआ । मुनकर आपको हँसी वा जायेगी जत्र शुन्-शुहमें अिम सस्थानो १ सपया १४ आना मात्र मासिक चद्रा मिलता था । सदस्य ही आपसमें यह चदा थिक्छा कर लेते थे । वाशीके धनी-मानी, पढ़े-लिखे सभ्य अिस सस्थाको निरा बच्चोंका खेल समझते थे । अिन तीनों नौजवानों और अुनने सहयोगियोंके लगातार अुद्योगसे हिन्दीकी अुन्नति बड़ी ही तीव्र गतिसे होने लगी । हिन्दी और नागरीके प्रचार-कार्यकी वाधाअं श्रमस दूर होन लगी, ठीक अुमी तरह जैसे सूर्यके अुदय होनेके साथ धीत, जाडा, जडता जनतामेंसे भाग खडे होते हैं । मार्ग स्पष्ट दिग्यायी पठने लगता हैं और कमल खिल अुठते हैं जलाशयोंके । त्रिमी भी महान् अुद्देश्यकी मिद्धि आरभमें अपनी परिमित शक्ति और परिमित साधनोंमें ही होती हैं । नागरी लिपिके प्रचार तथा हिन्दी साहित्यके अुन्नयनमें सभाका कार्य अुत्तरोत्तर आगे बढ़ा । राजकाजमें, अदालतोंमें, जनताके जीवनमें, शिक्षणमें, साहित्य, ससृति और कलाके विविध निर्माणमें जो महत्त्वपूर्ण स्थान आज हिन्दीको और नागरी लिपिको प्राप्त हुआ हैं अुमका सारा श्रेय वाशीकी नागरी प्रचारिणी सभाको है । हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग धिमोका स्थापित किया हुआ है । १९१० में जो पहला पहला अधिवेशन हिन्दी साहित्य सम्मेलनका महामना मालवीयजी महाराजने समापितत्वमें हुआ था, अिन पत्रियोंने लेखकने अुस प्रभावशाली अधिवेशनको निक्कटसे देखा था, वाशीकी नागरी प्रचारिणी सभा मूलम अुन छोटेमें बटवीजकी तरह रही और अब वह महान

विशाल वट-वृक्षके रूपमें है जिसकी जड़ें जमीनके अन्दर कभी सी फीट नीचे जम गयी है और जो अपनी शाखा-प्रशाखाओंमें अपनी सार्वदेगिक विपुलता, मृज्जता, सघनता और विशालताको फँला चुका है। आज यह सस्या साठ बरसकी हो चुकी है। राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि नागरीके अधिकारोंकी रक्षाके लिये, बुत्थान अँव विकासके लिये जिस प्राचोन संस्थाने जो सतत संघर्ष किये है, सेवा और संघर्षमें आज भी वह सलग्न है। सबकी आदरणीया है, श्रद्धाकी पात्र है।

कामी नागरी प्रचारिणी सभा आगामी वसत-पंचमी (माघ सुदी-पंचमी सवत् २०१०)

को, अपनी हीरकजयन्ती मना रही है। यह हीरक जयन्ती अँसे सत्रान्ति कालमें मनायी जा रही है जब सम्पूर्ण राष्ट्रकी साहित्यिक अँव सांस्कृतिक आवश्यकताओंको दृष्टिमें रखते हुअे राष्ट्रभाषाके माध्यमसे भारतीय राष्ट्रके नवनिर्माणका कार्य करना है।

हम सब चलें, चलिजे, पवित्र कामीपुरीके विस भारतीय साहित्य और संस्कृतिके वमंत-हीरक महोत्सवमें सम्मिलित होने।

जिस महती हीरक जयन्तीकी संपूर्ण सफलताके लिये शुभ कामना !

—ह० श०



जिस घरमें आरोग्य प्रकाश नहीं, वहाँ सुख शान्ति कहाँ ?

आरोग्य, स्वच्छता और चिकित्साका सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ

भारत-प्रसिद्ध श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेडके अध्यक्ष वेंचराज प० रामनारायणजी वैद्यनाथजीने ५-६ वर्ष बड़ी मेहनतसे स्वयं अंग्र प्रथकी लिखा है। प्रथका अंक-अंक वाक्य हजारों रुपयेका काम देता है। व्यायाम, ब्रह्मचर्य, भोजन, सदाचार, अस्वतम विचार आदि पूर्वार्द्ध विषयोंको पढ़कर और तदनुसार चलकर सदा धीमार रहनेवाला रोगी बिना दवाके भीरोग (तन्दुरस्त) हो जाता है। प्रथके अन्तरार्द्धमें शरीरमें पैदा होनेवाले सभी रोगोंकी उत्पत्ति, कारण, निदान, रोगके लक्षण, चिकित्सा पथ्यापथ्य आदि बड़ी ही सरल भाषामें लिखे हैं जो पढ़कर विद्वान्से लेकर साधारण पढ़े-लिखे दोनों समान भागसे लाभ बूझ सकते हैं। जिसमें दवाओंके जो नुस्खे लिखे गये हैं वे बहुत बार परीक्षित, कभी भी फेल न होनेवाले और शास्त्रानुमोदित हैं। शहर हो या देहात, सब जगह जिस पुस्तकके घरमें रहनेमें रोगीको तत्काल लाभ पहुँचाया जा सकता है। बीमारी तैयार करनेका विधान तो जिस पुस्तकमें श्रेष्ठ है क्योंकि लेखन जिस विषयके निर्णयात्मक ज्ञाता है। जिसने आठ संस्करणोंमें ७१००० प्रतिष्ठा छपकर बिक चुकी है। यह नवा संस्करण १५ हजारका अभी छप रहा है। जिससे जिसकी लोक प्रियता और उपयोगिता स्पष्ट मालूम होगी है। हिन्दीमें अंसी अस्वतम पुस्तक दूसरी नहीं है, यह कहा जाय तो अनुचित न होगा। प्रचारकी दृष्टिसे मूल्य भी बहुत कम रखा गया है। ५१५ पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य सिर्फ १।।।), डाक खर्च ॥=), हमारी चार निर्माणशाला, ५० विज्ञान केन्द्र, १५००० अंग्रेजियोंमें प्रत्यक्ष खरीदनेपर डाक खर्च नहीं लगेगा।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड, कलकत्ता, पटना, झांसी, नागपुर।

—: अद्यम :—

हिन्दी और मराठी भाषामें प्रकाशित होता है।

प्रतिमास १५ वी तारीखको पड़िये।

अद्यममें निम्न विषयोंके लेख छपते हैं :—

लाभदायक अद्योगधंधोंकी जानकारी, अनाज तथा सब्जियोंकी खेती व रोगोंका निवारण, पशुपालन, दुग्धव्यवसाय व श्रामोद्योग सबधी लेख, विद्यार्थियोंके लिये वैज्ञानिक व अग्य जानकारी, आरोग्य, घरेलू औषधियों मन्वी लेख, हिन्दुस्तानके वैज्ञानिक और औद्योगिक क्षेत्रकी व्युत्पत्ती जानकारी, कृषि, औद्योगिक और व्यापारिक क्षेत्रमें काम करनेवाले लोगोंकी मुलाजान तथा परिचय।

अद्यमके विशेष लक्ष्य

महिलाओंके लिये अपुत्रकन, रुचिकर साधनपदायें बनानेकी विधि, घरेलू पित्तव्ययिता, अद्यमका पत्रव्यवहार, क्षेत्रपूर्ण खबरे, आर्थिक तथा औद्योगिक परिवर्तन, जिज्ञासु जगत्, व्यापारिक हलचलोंकी मासिक समालोचना, नित्योपयोगी वस्तुओं स्वयं तैयार कीजिये।

वार्षिक चन्दा ७ र. और प्रति अंक १२ आना

पता— 'अद्यम' मासिक, धर्मपेठ, नागपुर (म. प्र.)

नयी धारा

याद रखिये पत्रिकाके लिये

१ अेर निदिघत अुद्देश्य चाहिये ।

२ अुसका अपना व्यक्तित्व चाहिये ।

नयी धारा अंसी ही अेर मानिक पत्रिका है ।

नयी धाराके पुराने प्राप्य अरु आपी कोमतमें प्राप्त होंगे। पोस्टेज फ्री। रगमच अरुकी थोडीथी प्रतिपा शेष हं । प्राहक शोधना करें ।

डिमाथी आठ पेजीके १०० पृष्ठ. पन्की जिल्द, आकर्षक कवर, सचित्र, सुसज्जित।

अेर अंक १) रु.] [वार्षिक १०) रु.

पता:—प्रबंधक, नयी धारा, अशोक प्रेस, पटना ६

अवन्तिका

वार्षिक का मिस अंकका

१०) काव्यालोचनांक ३)

सपादक . स्वामीनारायण मुषामु

अवन्तिकाके दूसरे वर्षका यह पहला अरु हिन्दी-कविताके सिद्धारकी अेर नयी उ पी प्रस्तुत करेगा ।

अिस अंकमें हिन्दी-कविताके सभी युगों और प्राय. सभी पक्षोंकी व्याख्या अधिकारी आलोचक प्रस्तुत करेंगे ।

यह अरु वार्षिक प्राहकोनी माषारण दरपर ही मिलेगा ।

प्रकाशक—श्री अञ्जन्ता प्रेस लिमिटेड,

पटना-४

रानी

आपके मनोरंजनके लिये

नाना प्रकारके सचित्र लेख, कहानियाँ, छाया-लेख और आलोचनाओं आदि-आदि । वर्षमें होत्रिका अेर दीपावली-अरु मुषन ।

रानीका वार्षिक अरु केवल चार रुपये हैं । रानी १५ वर्षके हिन्दी-पाठकोंकी निरन्तर मनोरंजन-साधनी देती आ रही है ।

“रानी” धार्यालय,
१२१ चित्तरंजन अेविन्यू,
पलकत्ता ७

गुजराती भाषाका निघाला साप्ताहिक-पत्र

निर्माण

[सम्पादक : हरिलाल पंड्या]

समस्त भारतकी संवर्षणिक, सासृजिक और प्रशाजीवनके नव निमापकी प्रवृत्तियोंका अ्यातिपर ।

निर्माणमें आप देखेंगे :—

आनंद अुसाह और चेतनाप्रद लेख, कहानियाँ अेर अु अपने हा टगले चुने अुने समाचार । राष्ट्र भाषाके सम्बन्धित सभी प्रवृत्तियाँका विवरण और विनों की वादले परे रहकर तटम्य और स्पष्ट मतथ्य प्रकट करना निमापका ध्येय है ।

निमापनना अन्व्युत्तम साधन ।

आज ही पत्र लिखकर नमूनार्थ प्रति मगवाअिने ।

वार्षिक मूल्य ५) 'निर्माण' धार्यालय
छ: माही ३) स्वतंत्र अिन्दरी,
अेर प्रति दो आना पन्ड मां,
राजशेट (शोरुपु)

हिन्दीका स्वस्थ, सात्विक अवं सस्ता मासिक पत्र

‘जीवन-साहित्य’

वार्षिक शुल्क फेवल ४)

चाहे तो पहले अंक पाठें भेजकर नमूना मगानर देख ले।

जुलाही और जनररीसे ग्राहक बनये जाते हैं।

पता:-- सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली

नव निर्माण

[सम्पादक - नेमिचन्द्र जैन 'भाषुक']

+ साहित्य, शिक्षा, सस्कृति और कलाका संपन + राजनीति विज्ञान + तारोकी छापामें
+ चना जोर गरम + अमनके आलोचमें + आप भी कहें हम भी कहे + कसौटीपर + ये घुल
भरे हीरे भादि स्वाधी स्तभोसे मुक्त अपनी ही विशेषताओसे प्रेरित प्रभावित नयी पीढीका
साक्षि प्रमासिक. अंक प्रति १) विशपाक युत वा ४)

कुमार साहित्य परिषद, जोधपुर

विशेष:— माचें अक्की प्रतियां अप्राप्य, जनकी प्राप्य। निशुल्क प्रति भेजनेमें असमर्थ।

सस्ता, सरल, आकर्षक और शिक्षाप्रद
राजनीति, साहित्य और विज्ञान
सम्बन्धी लेखोका समन्वय

सचिव
हिन्दी नया पथ मासिक पत्र

* कठिनमे कठिन विषयको जनताकी भाषामें
रचना ही नया पथका सुदेर्य है।

१. देश विदेशकी राजनीतिक और साहित्यिक
समस्याओपर विचार पूर्ण लेखो तथा रद्धानियों
और कविताओके अज्ञात भाससंवादकी
पाठशाळा, सिनेमा जगत, पुस्तक परिचय,
साल विज्ञान, महीनेका महत्त्व, आदि।

वार्षिक चन्द्रा ६ रु. : छः माही ३ रु.

अंक प्रतिका मू. ८ आना

नया पथ कार्यालय

३१४ बलभभाओ पेट्टा रोड, बम्बयी ४

सुन्दर टाइपिग और कार्डर

अस कारखानेके सुन्दर और मज-
बूत टाइपको अनेक छापखानवाले पसन्द
करते हैं। हमारे यहाँ अंग्रेजी, मराठी,
गुजराती तथा बानडी टाइप और अनेक
प्रकारके कार्डर तथा अलिनेट्रो क्लानम हमेशा
तयार मिलते हैं।

अुसी प्रकार हमारे यहाँ मोनो मुपर
वास्टरसे तयार किये हुअे १२ पाइंट
हिन्दी और मराठी टाइप भी तयार हैं।
वेटलाग जरूर मंगावे।

पता—मैनेजर, निर्णय सागर प्रेम,

बम्बयी नं० २

आपके, आपके परिवार के प्रत्येक सदस्य के, प्रत्येक शिक्षा-संस्था तथा
पुस्तकालय के लिये उपयोगी
हिन्दीका अपने ढंगका पहला पत्र

वार्षिक मूल्य १०)
पृष्ठ संख्या १२५

गुलदस्ता
(हिन्दी डाजिजन्ट)
३९३८ पीपलमंडी, आगरा

नमूने की प्रति
अंक रुपये

अजन्ता

सम्पादक—

श्री बसोधर विद्यालंकार श्री श्रीराम शर्मा

प्रकाशक— हैदराबाद राज्य हिन्दी
प्रचार सभा, हैदराबाद दक्षिण

१. अक्षर कोटिका साहित्य, २. सुन्दर और
स्वच्छ छपाही, ३. कलापूर्ण चित्र

वार्षिक मूल्य ९ रुपये

किसी भी माससे ग्राहक घना
जा सकता है।

वार्षिक मूल्य ४) * अंक प्रति १२)

‘माता’

श्री अरविन्द साहित्यको उत्तर भारतकी
अंक मात्र मासिक पत्रिका चार वर्षसे
नियमित रूपसे प्रकाशित होकर भारत-
वर्षके कोने-कोनेमें तथा अन्य देशोंमें
आध्यात्मकी धारा बहा रही है।

कुछ विशेषतायें:—

१ अक्षर कोटिके लेख, कहानी,
कवितायें आदि।

२ सुन्दर और आकर्षक छपाही।

प्रधान सम्पादक—श्री मोहन स्वामी

पता:—प्रबन्धक ‘माता’ (मासिक)

श्री मालवेन्द्र, गाजियाबाद (यू पी)

हिन्दीका स्वतंत्र मासिक

“नया समाज”

संचालक: नया समाज-ट्रस्ट * संपादक: मोहनसिंह सेंगर
वार्षिक चन्दा ८) : अंक प्रति ॥३) : विदेशोंमें १०) वार्षिक

आप यदि ग्राहक नहीं हैं तो आज ही बन जाजिये। यदि है, तो अपने विप्रमित्रको
भी बनाजिये। यदि किसी कारण आप ग्राहक नहीं बन सकते तो चेष्टा
कीजिये कि ‘नया समाज’ आपसे पड़ोसके पुस्तकालयमें भेगाया जाय।

आज ही नमूनेके लिये लिखिये:—

व्यवस्थापक ‘नया समाज’, ३३, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता-१

हमारे सुविख्यात प्रकाशन

स्वामी विवेकानन्दजीकी सुप्रसिद्ध पुस्तकें

भारतमें विवेकानन्द-जैकेट सहित सचित्र ५)
“आजकी परिस्थितिके अत्यन्त राष्ट्र निर्माण
सबरी बंध अथ ठोस विचारोमें भरे स्वामीजी द्वारा
भारतमें दिये गये भावयुक्त स्फूर्तिप्रद

विवेकानन्दजीके सागमें-आकर्षक
“स्वामीजीके आध्यात्मिक राष्ट्रीय
तथा भक्ति सबरी सभापणोका रोचक, महान
शिक्षाप्रद तथा पथप्रदर्शक संग्रह।”

पत्रावली-दो भागोंमें, प्रत्येक भागका मू० २०)
“स्वामीजीके शक्ति सम्पन्न पत्रोंका सञ्चलन।”

देववाणी-सचित्र, २०) अमृततुल्य आध्या-
त्मिक अन्त प्रेरणासे भरे हुए अपूर्व। “शक्तिदायी
विचार ॥०), भारतीय नारी ॥१) व्यावहारिक
जीवनमें वेदांत ॥२), मेरे गुरुदेव ॥३), विवेक-
नन्दजीकी कथायें १), कवितावली ॥४)

गीतातत्त्व-स्वामी विवेकानन्दजीके गुरुभाजी
स्वामी शारदानन्द कृत, सुन्दर जैकेट सहित, २०)

विवेकानन्द-चरित-हिन्दीमें स्वामीजीकी अक-
मान प्रामाणिक विस्तृत जीवनी, आकर्षक जैकेट ६)

श्रीरामकृष्णलीलामत- विस्तृत जीवनी दो
भागोंमें, महात्मा गांधीकी भूमिका सहित, प्रत्येक
का ५)

मसतरीकी
सजिल्द,
तु भा ७)

स्वामीजीकी लोकप्रिय पुस्तकें

नये प्रकाशन-जाति सत्कृति और समाजवाद
१) चिन्तनीय बाने १), विविध प्रसंग १०),
योग पर-ज्ञानयोग ३), भक्तियोग ११),
राजयोग १२), कर्मयोग ११०), प्रेमयोग ११०),
हिन्दू धर्म सबधी-हिन्दू धर्म १११), धर्मरहस्य
१), धर्मविज्ञान ११२), हिन्दू धर्मके पथमें ११३),
शिकारो वक्तृता ११४), आत्मानुभूति तथा अत्मके
मार्ग ११)

भारत पर-हमारा भारत ११), वर्तमान भारत
११), स्वाधीन भारत जय हो १२), प्राच्य और
पार्श्याय ११)

धन्तोली. (रा) नागपुर-१. (म० प्र०)

आलोचनाके तृतीय वर्षका पहला अंक

“आलोचना अंक”

के नामसे लगभग २५० पृष्ठोंका विशेष
अंक होगा। इस अंकका मूल्य ५)
मात्र होगा, लेकिन वार्षिक ग्राहकोंको
यह अंक साधारण मूल्यमें ही मिलेगा।

सम्पादक-समिति — डा० धर्मवीर
भास्ती, डा० रघुवश, डा० वज्रेश्वर वर्मा, श्री
विजयशेखर नारायण साही। सरकारी सम्पादक
श्री शंभुचन्द्र मुषन।

वा० मू० १२) मात्र मनीभांडर द्वारा भेजिजे

प्रकाशक:— राजकमल प्रकाशन,

१ फैज बाजार, दिल्ली

सुपमा

सम्पादक • कुंडलराय मोहंकर

या मासिकाची वैशिष्ट्ये—

★ सुन्दर लघुकथा ★ नामावित
लेखकांचे लिप्याण ★ जीवन, कला,
साहित्य अित्यादि विषयावर अपयुक्त
मजकूर ★ या शिवाय चेतोहारी चित्र

नियमित वाचण्यासाठी आजच वर्गणी
पाठवून ग्राहक होणे फायद्याचे आहे

वार्षिक वर्गणी ६ रुपये.

किरकोळ अंकास आठ आणे.

सुपमा पराग बिल्डिंग, धरमपेट, नागपुर (म प्र)

भारत सरकारके व्यापार और उद्योग मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित 'उद्योग व्यापार पत्रिका'

- ★ उद्योग और व्यापार सम्बन्धी प्रामाणिक जानकारी युक्त विशेष लेख, भारत सरकारकी आवश्यक सूचनाएँ, उपयोगी आकड़े आदि पत्रिकामें प्रति मान दिये जाते हैं।
 - ★ डिमाओ चौपेजी आकारके ६०-७० पृष्ठ मूल्य केवल ६ रुपया वापिक।
 - ★ अंजेन्टोको अच्छा कमीशन दिया जायेगा। पत्रिका विज्ञापन देनेका सुन्दर साधन है।
- ग्राहक बनने, अंजेन्सी लेने अथवा विज्ञापन छपानेके लिये नीचे लिखे पतेपर पत्र भेजिए —

सम्पादक,

उद्योग व्यापार पत्रिका,
व्यापार और उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली।

सरस्वती प्रेसका नवीन आयोजन

जनवरी १९५४ से प्रकाशित

हिन्दीमें कथा साहित्यका अनुपम मासिक
क हानि

कथा साहित्यके प्रेमियोंको अिम मुसवादेसे प्रसन्नता होगी कि सरस्वती प्रेस अिलाहाबादसे हिन्दीमें अुन्नकोटिरी कहानियोंका मासिक 'कहानी' (अेक प्रतिका मूल्य चार आना, वापिक तीन रुपये) जनवरी १९५४ से प्रारम्भ हो रहा है। अिस पत्रमें निरन्तर प्रगति करते हुअे हिन्दी कथा साहित्यके साथ ही साथ भारतकी अन्य भाषाओंकी सुनी हुअी श्रेष्ठतम कहानियोंके अनुवाद भी रहेंगे। कथा साहित्यके अिस अनुदानमें 'कहानी' को लेखका, पाठको, विज्ञेताओं सभीका वृषापूर्ण सहयोग अपेक्षित है।

—वी० पी० नहीं भेजी जाती—

व्यवस्थापक : 'कहानी' कार्यालय,
सरस्वती प्रेस, ५ सरदार पटेल मार्ग पो बा न २४,

गोवध वन्द करनेके लिये

३१ करोड़ हिन्दुओंकी मॉग !
भ्रान्तिकारी विचारोंके साथ।

*** गोरकपण ***

मासिक-पत्रमें पढिये

गोसेवामें भाग लेनेके लिये आज ही
२॥) र वापिक भेजकर ग्राहक बनिये।
नमूनाके लिये पाँच आनेका टिकट अवश्य
भेजिये। धार्मिक सत्याओंको अर्धं मूल्यमें।

गोरकपा प्रचारके लिये हर प्रकारकी
सहायता तथा दान नीचेके पतेपर भेजिये।

व्यवस्थापक — गोरकपण साहित्य मन्दिर,
रामनगर, बनारस (अ प्र)

राष्ट्रभारती-विज्ञापक दण

साधारण पत्र	पूरा -- ६०)	प्रतिमास
	आधा -- २९)	
द्वितीय कवर पत्र	पूरा - १००)	
	आधा -- ५५)	
तृतीय कवर पत्र	पूरा - १०)	
	आधा - ६)	
चतुर्थ कवर पत्र	पूरा -- १२०)	
	आधा -- ६०)	

राष्ट्रभारतीका साप्ताहिक -- ० x ७

एक पत्रकी साप्ताहिक -- १ x २३

नीचमें शक्ति वार प्रिजापन दन्तानोंकी सुविधा की जायेगी।

‘राष्ट्रभारती’ में अपन व्यापारका प्रिजापन देकर नाम
अटावित्तै। क्योकि यह इन्मीसे क्षेत्र समेश्वरगत
और अगनाथपुरीम इतरकापुरीम
दुनारों पाठसँके द्वाशामें पहुँचती है।

★

राष्ट्रभारती-अंजुत्सवी

- १ प्रतिमास वम म रम पाँच प्रतिमाँ इतर ही अत्रगी या जात्रगी।
- २ पाँच प्रतिमाँ इतर ५०) प्रतिमास कमाणत दिया जात्रगा।
- ३ एकदम अधिक प्रतिमाँ इतर ५५) प्रतिमास कमाणत दिया जात्रगा।
- ४ पाँचम अरिक्त प्राथक बना टावागारा भा विगत सुविधा की जात्रगा।

विशेष ज्ञानकारिक लिअ आज ही प्रिजित --

श्री प्रबन्धक, “राष्ट्रभारती” पो० हिन्दीनगर (उर्धा, म. प्र.)

हम आपसे कुछ कहना चाहते हैं !

‘राष्ट्रभारती’ का चौथा वर्ष जनवरी ५४ से ही शुरु होता है। चौथे वर्षका यह प्रथम अंक (जनवरी मासका) आपके हाथमें है।

‘राष्ट्रभारती’ के जिन प्रेमी पाठकोका वार्षिक चन्दा अिम अंकके माथ पूरा हो जाना है, उनसे हमारा नम्र निवेदन है कि वे अपना अगले वर्षका चन्दा ६ रु मनीआर्डर द्वारा तुरन्त भेजनेकी कृपा करें। वार्षिक या छहमाही चन्दा हर हालतमें मनीआर्डर द्वारा भेजना ही ठीक होगा। इससे हमको और आपका मुविधा होगी। आपको अंक समयपर मिलेगा। बी पी और रजिस्ट्री चार्जको सप्तसे आप और हम दोनों बचेगे। आशा है, आप हमारी अिम प्रार्थनापर जरूर ध्यान देंगे।

दूसरा निवेदन यह भी है कि कमसे-कम अपन किसी अंक-दो पडोसी मित्रोंको भी पाठक अवश्य बना दें और बुझका सालाना चन्दा मनीआर्डरसे भिजवा दें। यह ‘राष्ट्रभारती’ सबसे सस्ती, सुन्दर-साहित्यिक, सांस्कृतिक पत्रिका है, जो ठीक समयपर हर १ ली १०० को निकलती है।

अिम पत्रिकाके प्रचारमें आप अपना ज्यादा-से-ज्यादा सहयोग दें और अिम पत्रिकाको स्वावलंबी बनावें।

मनीआर्डरसे वार्षिक चन्दा ६ रु. और छहमाही चन्दा ३ रु. ८ आ.

नमूना अंकके लिभे दस्त आना मात्र।

पता :- व्यवस्थापक—‘राष्ट्रभारती’, पो०—हिन्दीनगर (वर्धा, म० प्र०)

राष्ट्रभारतीके लेखकोंसे निवेदन

(१) ‘राष्ट्रभारती’ में प्रकाशनायं रचना आदि नामघी स्वच्छ सुवाच्य लिखावटमें अथवा अच्छी टाइप की हुओ कानी भेजनी चाहिये। प्रकाशन योग्य सामघी जो कुछ भी आप भेजें वह बहुत भारी-नोमिल शीर खूब लंबी नहीं होनी चाहिये। कृपया अिमका खयाल रखें कि लिखावट स्वच्छ अेव सुवाच्य होनी चाहिये।

(२) यह अच्छी तरह ध्यानमें रहे कि राष्ट्रभारतीमें प्रकाशनायं भेजी हुओ आपकी रचना अिमके पूर्व किसी हिन्दी पत्र-पत्रिकामें प्रकाशित न हो चुकी हो, और जो कुछ सामघी भेजें वह ‘राष्ट्रभारती’ के लिभे ही भेजें। ‘राष्ट्रभारती’ अपने लेखकोंको ‘पत्रपुष्प-मुरस्कार’ भी भेंट करती है।

(३) अनुवादक महापाय किसी अनुदित रचनाको भेजनेसे पूर्व अुमके मूल-लेखकमें पत्र द्वारा अनुमति अवश्य प्राप्त कर लें, तभी अनुदित रचना हमारे यहाँ भेजें।

(४) आपकी स्वीकृत रचना सबघी सूचना सपादक द्वारा आपको दी जायेगी और छपनेतक आपकी प्रतीक्षा करनी होगी।

(५) अपनी अस्वीकृत रचनाको वापस भगानेके लिभे डाक-टिकट अवश्य भेजें अथवा आप अुसकी प्रतिलिपि अपने पास सुरक्षित रखें।

(६) लेख, रचना आदि प्रकाशन योग्य सम्पादकीय सारा व्यवहार अिस पत्रपर करे—

संपादक : ‘राष्ट्रभारती’

पोस्ट—हिन्दीनगर (वर्धा, मध्यप्रदेश)

मधु शर्मा



फरवरी १९५४

[आवश्यक सूचना:— राष्ट्रभारती राज्योक्त शिक्षा-विभागों द्वारा स्कूलों, कालेजों और वाचनालयों में लिखे स्वीकृत है। राष्ट्रभारती का चौथा वर्ष आरंभ हो चुका है। राष्ट्रभारती समग्र भारतीय—अनार प्रांतीय साहित्यका प्रतिनिधित्व करती है। अतः हिन्दीको मासिक पत्रिकाओंमें अपना अंक प्रतिष्ठित एवं महत्वका स्थान बना लिया है। प्रेमो पाठकोंसे निवेदन है कि अंक अंक नया प्राहक बनाकर अति पत्रिकाको प्राहक सत्यमें वृद्धि करें और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति पर अन्तर्गतको बढ़ावे। विशारद और 'राष्ट्रभाषा रत्न' परोक्षोपयोगी अर्च्च आलोचनात्मक-परिचयात्मक लेख भी प्रतिमास अंशमें छपेंगे। कृपया अंश बातको ध्यानमें रखें कि हमारी लिखित अनुमति लिये बिना कोशो मन्जूर या उकासक राष्ट्रभारती'क पिछले अंशोंमें या आगामी अंशोंमें प्रकाशित प्रातीय साहित्यके लेखो कहानियों और अकाद्यो-नाटको आदिको न छापें।

—मोहनलाल मट्ट, मंत्री, रा. भा. प्र. म. वर्धा]

—विषय-सूची—

१. लेख :	लेखक	पृ० सं०
१ स्व गुरुदेवकी वाणी ।	..	३१
२ आचार्य परमाप	.. श्री कृष्णकिशोर मिश्र	३२
३ '३० जनवरी' की पुण्यस्मृति-रहरी (समिल)	... { श्री आर. के. पद्मसुखम् चट्टीमार अनु०— श्री रा. वीरजिनाथन	८०
४ गांधीजीका कुमुर ?	.. श्री अ. ल. हलीम अन्सारी	८३
५ वृद्धव वसु (वगला साहित्य) श्री मन्मथनाथ गुप्त	८८
६ राजस्थानका अक लक्ष्मीत 'मणियारो'	. श्री कन्हैयालाल सहल	९६
७ पद्मावतका गूढ तत्व	... श्री रामपूजन तिवारी	९८
८ अपेक्षी मॉन्ट परपरा और अतिज्ञान	... { श्री प्रो. वि. म. कुलकर्णी श्री प्रा. मा. ग. वृद्धिमागर अनु०— श्री अनिलकुमार	१०३
९ अर्द्ध कवितामें राष्ट्र-विभाजनके प्रति वदना और आग्रह	... { श्री रतनलाल वसल	१११
१० अनुपामाकार श्री निगला	.. श्री जानन्द भावव मिश्र	११५
११ यमुन ।	.. श्री गुरुनाथ जोगी	११८
२. निबंध :		
१. अच्छा ।	.. श्री कुपार	१०१
३. कहानी :		
१ अक साधारण अनुभव (गुजराती)	.. { श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंगी अनु०— श्री पर्यायिहर्षा वसल	९०
४. कविता :		
१ मधुसूदनकी वन्दना	.. श्री रामरुपा श्रावाम्बव	३६
२ स्वर्ग भोग	. श्री नमदाप्रमार श्वर	१०६
३ मर मरन यज्ञ	.. श्री राजन्द यादव	११३
४ मैं ना अनुका दख रहा था	.. श्री 'निपक'	११५
५ कविता पुनः (मलयालमका भावानुवाद)	.. { श्री चन्द्रमुने कृष्णामिन्द अनु०— श्री मोहनकुमार	११९

राष्ट्रभारती

[भारतीय साहित्य और संस्कृतिको मासिक पत्रिका]

—: सम्पादक :—

मोहनलाल भट्ट : हृषीकेश शर्मा

* वर्ष ४ *

वर्धा, फरवरी १९५४

* अंक २ *

स्क. गुरुदेवकी क्षणिक !

राष्ट्रभाषाका यह तात्पर्य वदापि नहीं कि प्रान्तीय भाषाओका वह नाश कर दे, न यह ब्रुसना लक्ष्य ही है। राष्ट्रभाषा और प्रान्तीय भाषाओके सम्बन्धके विषयमें स्वर्गीय विश्वकवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर कहते हैं

“आधुनिक भारतकी संस्कृति अेक विकसित शत दल कमलके समान है जिसका अेक-अेक दल अेक अेक प्रान्तिक भाषा और अुसकी साहित्य संस्कृति है। किसी अेरुको मिटा देनेसे अुस कमलकी शोभा ही नष्ट हो जाअेगी। हम चाहते हैं कि भारतकी सब प्रान्तिक बोलियाँ जिनमें सुन्दर साहित्य सृष्टि हुई ही है, अपने-अपने घरमें (प्रान्तमें) रानी बनकर रहें प्रान्तके जनगणकी हादिक चिन्ताकी प्रकाश भूमि स्वरूप कविताकी भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओके हारकी मध्यमणि बनकर हिन्दी भारत भारती होकर विराजती रहे। मेरे विचारमें प्रान्तीय भाषाओके पुनरुज्जीवनसे राष्ट्रभाषा हिन्दीकी कुछ भी क्पति नहीं होगी, अुसका अुत्कर्ष ही होगा।”



मृत्युंजयकी बन्दना

: श्री रामरुष्ण श्रीवास्तव :



हे मृत्युंजय मानव ! तुम अवतार बन गये,
दुनियासे अछूते-अछूते संसार बन गये !

विश्व-पुरुष तुम विश्व-शक्तिका दीप जलये,
पद-दलितोंको कंठ लगाने भूपर आये !
प्रेम-नेम धारण कर जा पहुँचे घर-घरमें,
करते-करते प्यार स्वयं तुम प्यार बन गये !

मानवताको कवच अहिंसाका पहनाया,
शोषित जनको सत्याग्रहका शस्त्र सुझाया !
संघर्षोंकी सरिताकी हिंसक लहरोंमें—
खेते-खेते नाँव स्वयं पतवार बन गये !

धर्मोंसे अुपर मानवताको पदवी दी,
तुमने मानवता प्राणोंके मोल खरीदी !
आसा-बुद्ध-मुहम्मद तीनोंके स्वर साधे—
गाते-गाते तुम अखंड गुंजार बन गये !

मुक्त किया मानवको अपनी मुस्कानोंसे,
तुमने मस्तक कभी न फेरा बलिदानोंसे !
मंजिल, छाया बनकर पीछे चली तुम्हारे—
बलिपथके पग-चिन्ह स्वर्गके द्वार बन गये !

मानवताके शिल्पी तुम खुद मूर्ति बन गये,
मिटते-मिटते मानवताकी पूर्ति बन गये !
मानवताकी पूजामें सर्वस्व चढ़ाकर—
तुम मानवको पूजाके अधिकार बन गये !

हे मृत्युंजय मानव तुम अजतार बन गये,
दुनियासे अछूते-अछूते संसार बन गये !

आचार्य परमार्थ

श्री दृष्णाकिंकर सिन्हा, अेम अे

प्राचीन कालमें चीन और भारतको सार्वत्रिक अकताके सूत्रमें बापनेका प्रयास जितना अिन दशकी गृहत्यागी भिषपुआ और विद्वानोंन किया था अतना राजा महाराजाओ तथा अुनके द्वारा भज गय राजदूतान नही । परमाथ भारतके अरु अस ही मनीषि थ जिहोन आजसे १४०० वष पूअ चीनकी भूमिपर भारतीय साहित्य और सस्कृतिका प्रचार किया और अपन अुज्ज्वल चरित्र और विद्वत्ताकी धाक जमायी थी । पर हमारे विगाल भारतीय वाडमयमें अिस महान सास्ककी चर्चाम अक पविन भी लियो नही मिलती । हम चीनी वाड मयका सदा कृतअ रहना चाहिअ जिसम हमारे अिम साधक तथा और भी अनक भारतीय साधकोका जीवन वत्त तथा कायकलापाका विवरण अबतक सुरक्षित है ।

जीवन घृत

परमाथ अुज्जैनके निवासी थ । अुनका जग सन् ४९८ अी म अक विद्वान वाङ्मण कुलम हुआ थ । वे वचपनेमे वड मेधावी थ और अल्प समयम ही नाना शास्त्रोंमें पारगन हो गय थ । विद्या पयनके वाद अु ह घरका वधन खलन गगा अत अक दिन घरस निकल पड । नाना स्थानोंका भ्रमण करते हअ तथा ज्ञान विज्ञानसे अपनको और समृद्ध करते हुआ वे पाण्डिपुत्र पहुँचे । अुन दिनों मगधकी गद्दीपर अुत्तरवागीन गुप्त राजा थ । परमाथ पाटलीपुत्रम रहकर शास्त्र चर्चाम अपना समय व्यतीत करन लग । षोड समयके भीतर अुनकी विद्वत्ता तथा अुज्ज्वल चरित्रकी धाक वहाँ जम गयी । अुत्तरकाशीन गुप्त राजा भी अुनमे वड प्रभावित हुआ । सभवत अुस समय जीवित गुप्त प्रथम मगधकी गद्दीपर थ । सन ५३० में अुनके दरबारम दक्षिण चीनके ल्याड राजवगके सम्राट वृत्तिका भजा अक मिगन पहुँचा । सम्राट वृत्ति पक्के बौद्ध धर्मावलम्बी थ और चीनमें बौद्ध धमकी अुन्नति देखना चाहने थ । अत

अु हीन भारतमे बौद्ध धमग्रथा तथा अक प्रसिद्ध भारतीय पन्थिको चीन ले आनके लिअ मिगन भजा था । अिस मिगनके अनुरोधपर जीवित गुप्त प्रथमन परमाथसे चीन जानके लिअ अनुरोध किया । परमाथके हृदयमें भगवान बुद्धकी मनी तथा कर्णाके अुपदेशोंका प्रचार अपन देशसे दूर जाकर करनकी चाह तो थी ही अत व चीन जानकी राजी हो गय । चीन जानके लिअ अुन्हीन अक विशाल भारतीय वाङ्मयका सग्रह किया और अस लेकर सन ५४४ अी में लांग्गलिन्ग बन्दरसे समुद्र माग द्वारा चीनके लिअ रवाना हो गय । दो वर्षोंकी यात्राके वाद वे सन ५४६ अी म चीनके नान किङ नगरम पहुँचे । अिन दो वर्षोंके बीच व सभवत दक्षिण पूवके देशोंका भ्रमण करते हुआ चीन गय थ क्योंकि अुन समय अुन देशोंमें बौद्ध धम और भारतीय सस्कृतिका काफी बोलबाला था ।

नानकिङ्म ल्याङ्ग सम्राट वृत्तिन परमाथका राज कीय स्वागत किया । वे वहाँ पापुन प्राप्तसे रहकर धम प्रचार तथा साधम लाय हुआ ग्रयोका चीनी अनुवाद करनमें लग गय । पर परमाथके भाषयमें शांतिमे वठकर काय करना नही लिखा था । अुन िनों चीनकी राज नीतिक अवस्था बडी डारवाडोल थी । राजनीतिक दृष्टिसे चीन अुत्तर और दक्षिण दो कषत्रांमें बँट गया था । क्षीन कषत्रोम राजकीय पन्थव तथा राजवगोका परिवर्तन आम वात थी । ल्याङ्ग राजवगके विरुद्ध भी पन्थव रचा गया और विद्रोह हुआ । राजधानी अिन पडयत्रो और विद्रोहोका प्रधान केन्द्र होती थी । अत , अराजकताके बीच परमाथको भला वहाँ शांति मिल सकती थी । अुनके मरकषक सम्राट वृत्तिक विरुद्ध सेनापति हुआङ्गन विद्रोह कर अुनकी हत्या कर दी । अमी परिस्थितिमें परमाथको नानकिङ्ग छोडना पडा और व अपन साहित्यका भंडार लिय आश्रयकी क्षोत्रमें

मटकते अेकदम दक्षिण चीन चले गये । सीनागमसे दक्षिणमें फु छुअेनका शासक पक्का बौद्धधर्मावलम्बी था । बुन्होंने परमापका स्वागत किया तथा आश्रय दिया । जिस शासकने धर्म प्रचार करने तथा धर्मपर्योका अनुवाद करनेकी सभी समाहित सुविधाअें दीं । पर वह युग ही शांतिसे काम करनेका नहीं था । दक्षिणमें भी अराजकता फैल गयी और परमार्यको अपना अधूरा काम छोडकर पुन आश्रयकी खोजमें मटकना पडा । सेनापति हु चिउ ल्याङ्ग सम्राट बुनिकी हत्याकर नान्किङ्गपर आधिपत्य जमा बैठा था सो अतमें मारा गया । अल्प-कालके लिअे पुन शांति कायम हुअी । परमार्य नान्किङ्ग लौटे और चङ्गान विहारमें रहकर कार्य करने लगे ।

लेकिन चीनका राजनीतिक आकाश साफ नहीं हुआ था । अपना अपना प्रभुत्व स्थापित करनेके लिअे विभिन्न राजपुरषा, मन्त्रियों और सेनापतियोंके बीच घात प्रतिघात चलते रहते थे । फल यह हुआ कि सन् ५५७ बी में छन् पा शिअेन् नामक एक सेनापति ल्याङ्ग राजवशको समाप्त कर स्वयं सम्राट बन बैठा और छन् राजवशकी स्थापना की । जिस अशांति और अराजकताके बीच करपा और मन्त्रीके प्रचारकका मन भला कहाँ तक रम सकता था । बुनका मन चीन छोडनेकी अुतावला ही बुझा । पर बुनकी विद्वत्ता और अुगुगल चरित्रकी धाव अितनी जम चुकी थी कि बुनके अनुयायी, शिष्य और प्रशंसक बुनके चीन छोडनेकी बातसे घबडा अुठे । सबके बार-बार अनुनय विनयके फलस्वरूप बुन्हाने चीनमें रहना स्वीकार किया और नान् चुअे नामक स्थानपर रहकर पुन धर्मोपदेश तथा अनुवाद कार्यमें जुट गये । स्वतन्त्र अनुवादके अतिरिक्त बुन्होंने पहलके बहुतेसे अनूदित ग्रंथोंका संपादन भी किया ।

परमार्यकी विद्वत्ता तथा धर्मोपदेशकी अशांति दिन दिन अधिक फैलने लगी । दूर-दूरस लोग बुनका उपदेश सुनने तथा बुनसे ज्ञान सीखने बुनके पास जुटने लगे । छन् राजवश (सन् ५५७-५६९ बी) के सम्राट अन्तिके राज्य कालमें नान्किङ्ग निवासियोंके अनुनय-विनयपर बुन्होंने नान्किङ्गमें बन्धी बनीं तक मन्त्रपरिषद

शास्त्रपर उपदेश दिये । पर परमार्यका मन चीनसे अुलड चुका था । अेक बीर बुनके शिष्यों तथा प्रशंसकोंके प्रेम और अ्रद्धाका वधन बुन्हें चीनमें रहनेका वाप्य नर रहा था तो दूसरी ओर चीनकी राजनीतिक अशांति और घात प्रतिघातका वातावरण बुनके मनका चीन छोडनेकी प्रेरित कर रहा था । स्वदेशसे दूर परमार्य जिसलिअे ही तो जाये थे कि वे अटककर बौद्ध धर्मका प्रचार कर सकेंगे—युद्ध और हिंसारत मानवकी मैत्री तथा अराजकता बुनदेशामृत पिलाकर सत्य कर्तव्य पथपर लगा सकेंगे । पर बुन दिनों चीनका राजनीतिक वातावरण अितना नयप्रद और हिंसायुक्त हो गया था कि शनं शनं—बौद्ध धर्मकी अवन्ति हो रही थी । सत्त प्रयत्नाके बाद भी परमार्यको अपने अुद्देशमें सफलता नहीं मिल रही थी । अत, वे स्वदेश लौटना चाहते थे और अिथी अुद्देश्यसे वे अेक दिन नाबमें बैअंकर समुद्र तटके अेक अन्दरगाहपर पहुँच गये । वहासे अेक दहा अहाज पक्डकर स्वदेशकी ओर प्रस्थान करनेकी तैयारी थी । परन्तु बुनके शिष्य भला बुनका पिठ कब छोडने वाले थे । बुन सबसे अन्दरगाहपर ही बुन्हें जा अेंग । वाप्य होकर परमार्यको समुद्र-तटपर ही रज जाना पडा ।

समुद्र-तटपर परमार्य कुछ दिनों तक टिके रहे और अपने बुनदेशोंसे लोगोंका गुप्त करते रहे । वहाँ बुनका मन नहीं लगा । अत, अेक दिन बुन्होंने अक अहाज पक्डा और स्वदेशकी ओर खाना ही ही गये । पर स्वदेश लौटना बुनके भाग्यमें नहीं था । शासन परमार्यका जन्म चीनकी भूमिपर रहकर कार्य करनेके लिअे ही हुआ था । स्वदेश लौटनेके लिअे अहाजपर वे सवार तो हो गये पर अ्रहतिने बुनका साथ नहीं दिया । चीनके लोग अ्रहति पूजक अधिक हाते हैं । अ्रहतिने अपने अ्रद्धाशुओंकी ही विनती सुनी । हवा अ्रतिकूल हो गयी और अहाज आगे नहीं बड सका, बेल्नके पान जाकर बह रक गया । परमार्य अहाजस अुतरकर पुन चीनकी भूमिपर पाँव रखनेका वाप्य हो गये । बुनकी अशांति सब जगह फैल चुकी थी अत वहाँके शासकको परमापके अगमनकी बात माग्म हुअी तो बुन्हाने बुनका अत्यधिक स्वागत और अम्बदना की । अिध

घामकने अनुरोधपर वे वहाँ बौद्ध धर्मका अप्रवेश देने लगे। बुद्धोंने विशेषकर वहाँके बौद्ध भिक्षुओंका महार्थधर्मप्रयोगाद्य आस्त्य तथा विज्ञप्तिमात्र सिद्धिबे गृह उत्प्रेषणी शिष्टया दी। जिस स्थानपर भी परमार्थके पाग अत्र बड़ी शिष्य मंडली जुट गयी जो बुद्धकी सवामें गलत लगी रहती थी। पर ज्ञानने अतः साधकको अपन मनमें सदा यह बात सत्यनी रहती थी कि अन्हें अपने जीवनके अद्देश्यमें सफलता नहीं मिली, अतः बुद्धका जीवन व्यय है। अगिलादिने व अत्रेक दिन आत्महत्या करनेपर अस्ताह हो गय। अपने गुणने जिस कायसे शिष्यगण बडे दुषित हुअे। दिन रात वे गेय और सजग होकर बुद्धकी सेवामें जुट गय। पर परमार्थ अपने जो प्रथमे सर्वथा निराग हो चुने थे। अतः पारिविक शरीरको त्याग देना ही अत्रेकमात्र शांतिमा मार्ग बुद्धने लिअे रह गया था। अतः तरह स्वदेश और अपन परिजनोम दूर अपनी मान्मुमि शोचनेकी अत्यन्त श्रिच्छा लिअे हुअे अपने जीवनके निराग होकर ज्ञानका वह साधक अपने अनगिनत शिष्यो, अनुयायिषया और प्रशस्तार्थको रोने छोड ७१ वर्षकी आयुमें सन् ५६९ बी. में यह लोक छोड गया। अपने गुद्धके प्रति चीनी शिष्योमें जो अगाध अद्वडा और भक्ति थी अत्रे प्रवट करनेके लिअे कोअी भी पारिविक साधन यवेष्ट नहीं था। पर ये अपने गुद्धका स्मारक बनाना चाहते थे सो अतः शोमोने परम्पराका पात्रन करने हुअे अतःनी समाधिपर अत्र स्तूप निर्माणकर सन्नाप किया।

परमार्थका प्रचार कार्य

परमार्थके चीन जानेका अद्देश्य था मंत्री और शरणाने अप्रवेश द्वारा हिमव हा अडे मानव समाजमें शांतिकी स्थापना करना। वहाँ पहुँचकर अन्होंने अस्ताह और लगनने गाय अपने अद्देश्यकी पूर्तिके लिअे काय आरम्भ किया। बुद्धकी विद्वला तथा मर्मस्पर्शी व्याख्यासे लोग बुद्धकी ओर आकर्षित हुअे और बुद्धपर प्रभाव भी पडा। पर जान पहना है कि परमार्थ जिस समय चीन गये थे वह बुद्धने अद्देश्यपूर्तिके लिअे अप्रयुक्त समय नहीं था। चीनकी राजनीति अत्यन्त सुष्ठ बुद्धने मार्गमें सबसे बडा रोडा था। अतः लिअे अन्हें

अपने अद्देश्यमें सफलता नहीं मिली और वे अपने जीवनके निराग हो गये। अन्तमें अन्होंने अपने अत्रेक शिष्यके कहा— मैं जिस राजनीति लेकर यहाँ आया वह कभी भी पूरी नहीं होगी। जिस कात्रमें धर्मकी बुद्धि होगी अत्राभी जरा भी आगा हम लोगको नहीं रखनी चाहिये।" अतः प्रचारने रूपमें परमार्थका कार्य और जीवन अमपठ रहा और यह अमपठता-जन्म निरागा ही बुद्धकी मृत्युका कारण बनी।

परमार्थका साहित्यिक कार्य

शांति-प्रचारके रूपमें जहाँ परमार्थ अमपठ रहे वहाँ साहित्य निर्माणके उपेक्षमें अन्हें अमूनपूर्व सफलता मिली। अतः चीनके त्याग (सन् ५४८-५५७ बी.) और छन् (सन् ५५७-५६९ बी.) दो राजवताने समय कार्य करनेका अवसर मिला। राजनीति दृष्टिसे दिन दोनों राजवताना गमय यद्यपि अशांतिका युग था और परमार्थको शांतिग वंढनर काम करनेका कम ही अवसर प्राप्त हुआ तथापि वे अतः प्रतिमानागी और अगाय विद्वान् थे कि कम समयमें भी बहुत कार्य कर लेने थे। अतः दिन। चीन पहुँचनेवाडे भारतीय विद्वानोका प्रधान साहित्यिक कार्य होता था बौद्ध धर्मके प्रबोका चीनी अनुवाद प्रस्तुत करना। परमार्थने भी विशेषकर यही कार्य किया। बुद्धने कायकी महत्ता और अनुवादने रूपमें बुद्धकी सफलताके सम्बन्धमें प्रसिद्ध जापानी विद्वान् थी ताका कुमुनेकी प्रशंसा अत्रेकनीय है — "अतः अतः अनुवाद-कार्य अत्यन्त ही प्रथमनीय और सतोपप्रद हुआ है। अमग वगुवन्धु आदि विज्ञानवा-दिषोने प्रसिद्ध प्रबोको, श्रीश्वरकृष्णके भाष्य सहित मास्यकारिकाको तथा नागार्जुन, अश्वघोष, वगुमित्र और गुणमतिके कुछ प्रबोको अनुवाद रूपमें सुरक्षित रखने कारण ये सबमुक्त पाठ्यवादके पात्र हैं।" अन्होंने जिन भारतीय प्रबोका चीनी भाषामें अनुवाद प्रस्तुत किया अतःमेंसे कुछ ही अब मूल रूपमें भारतमें प्राप्त हैं। अतः बुद्धने अनुवाद-कार्यकी महत्ता अतः अत्राकी जा सानी है कि अतः प्रबोके पुनः अत्रा करनेका अत्रेकमात्र श्रोत चीनी अनुवाद है।

परमार्थके मंकी वर्ष पहले बौद्ध धर्म महायान और हीनयान दो शाखाओंमें बँट चुका था। इनके समय तक प्रत्येक शाखामें कितने ही सम्प्रदाय भी बन चुके थे। परमार्थ महायान शाखाके अनुयायी हैं। बहुतस विद्वान् प्रसिद्ध कवि-दर्शनिक अश्वघोषको महायान शाखाका प्रवर्तक मानते हैं। अंक प्रथम जिनसे अिस मतकी अधिक पुष्टि होती है वह है श्रद्धोत्पादशास्त्र*। क्योंकि कश्ची विद्वान् अश्वघोषको अिस ग्रन्थका प्रणेता मानते हैं। जिनमें भूततपताकी धारणा त्रिकाय सिद्धान्त और सुखावनीयूह अिन तीन बातोंका प्रतिपादन बड़ी दृढ़तासे किया गया है। महायानशाखाके माध्यमिक सम्प्रदायके न्यूनतावाद दर्शन और योगाचार सम्प्रदायके आलय विज्ञान सिद्धान्तका बीज रूप हमें श्रद्धोत्पाद शास्त्रके भूततपताकी धारणामें मिलता है। अिसी तरह यह ग्रन्थ त्रिकाय सिद्धान्तकी व्याख्या तथा चर्चा करता है जिसमें कर्षणा, ज्ञान और कर्म अिन तीनोंका सम्मिलित रूपसे कार्यान्वित होना माना गया है। यह त्रिकाय सिद्धांत महायानकी अेक प्रमुख विशेषता है जिसके कारण वह हीनयानसे अलग माना जाता है। अिन श्रद्धोत्पाद शास्त्रमें सर्वप्रथम मुष्पावती ब्यूह अर्थात् धर्म द्वारा निर्वाण प्राप्तिके सिद्धांतकी चर्चा हुआ है। अतः बौद्ध धर्ममें यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अिस ग्रन्थको सर्वप्रथम चीनी भाषामें अनुवाद करनेका श्रेय परमार्थको ही है। मुद्गरपूर्वके देशोंमें बौद्धधर्मके विकासमें अिस अनुवादमें अत्यन्त सहायता मिली है। अिन अनुवादपर फा चाङ् नामक अेक चीनी विद्वान्ने बड़ा ही तथ्यपूर्ण और विस्तृत भाष्य लिखा है जिसका प्रचार मूल अनुवादसे भी अधिक हुआ।

बौद्ध धर्मके अतिहासमें पना चलना है कि महायान शाखाके अेक प्रसिद्ध आचार्य असगने य गाचार सम्प्रदायकी नींव डाली। असगने छंटे भात्री वसुवधुने अपने भात्रीके प्रयापर भाष्य लिखकर यागाचारके प्रचारमें ही हाथ नहीं बँगाया, प्रस्तुत, स्वतंत्र रूपसे विज्ञानवाद दर्शनका प्रतिपादन, स्थापन और व्याख्या कर जहाँ अनी प्रतिभासे लोगोंका बाधल किया वहाँ अेक शार्सनिक शाखाके रूपमें योगाचारको सुदृढ़ बनाया। योगाचार और विज्ञानवादके सिद्धांतकी सर्वप्रथम चीनमें प्रवेश करनेका श्रेय परमार्थको है। यह काम अुद्धान अग्रगण्य ती काम पर वसुवधुने कश्ची प्रयाग चीनी भाषामें

अनुवाद प्रस्तुत करके किया। परमार्थने असाके महायान सम्परिग्रह शास्त्रका चीनी अनुवाद सन् ५६३ बी में किया और अुसके बाद अिस प्रयपर वसुवधुके लिखे भाष्यका भी अनुवाद किया। असाके ग्रंथ 'अभिधर्म संगति सूत्र' का अनुवाद परमार्थके बहुत पीछे गुआन चङ्ने प्रस्तुत किया पर अिस प्रयपर वसुवधुके भाष्यका अनुवाद स्वयं परमार्थने किया था।

कहा जाता है कि वसुवधुने २८ प्रयोकी रचना की थी। अिनमें कुछ दूसरे आच योंके प्रयोपर वसुवधुके लिखे भाष्य य और कुछ स्वतंत्र रूपसे अुनके द्वारा प्रस्तुत ग्रन्थ। और अेके कुछ प्रयोपर स्वयं अुनके लिखे भाष्य। परमार्थने वसुवधुके आठ प्रयोका अनुवाद चीनी भाषामें किया। अिनमें सबसे प्रसिद्ध है अभिधर्मकोश-कारिका और अुसका भाष्य। ये दोनों ग्रन्थ वसुवधुकी प्रतिभाकी स्वतंत्र अुपज हैं। बहुत दिनोंतक अिन दोनोंका मूल संस्कृत रूप अुप्राप्य था पर भीमार्थने अब मिल गया है। अिन ग्रंथोंमें वसुवधुने अपने विज्ञानवाद दर्शनका प्रतिपादन और व्याख्या बड़ी ही विद्वत्ता और तर्कपूर्ण ढंगसे की है। परमार्थके लगभग ८० वर्ष बाद गुआन चङ्ने पुन अिन दोनों प्रयोका अनुवाद चीनी भाषामें प्रस्तुत किया। वसुवधुके दूसरे प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसका अनुवाद परमार्थने किया वह था 'विनयविभाषा सिद्धि' या विगतिता। अिनमें वसुवधुने अपने विज्ञानवादके सिद्धान्तको सक्षिप्तरूपसे प्रतिपादित किया है। परमार्थके बाद भी अिम ग्रन्थके दो चीनी अनुवाद हुए हैं। अिन ग्रंथोंके अतिरिक्त परमार्थने वसुवधुके 'मध्यान्त विभाग शास्त्र', 'तारक शास्त्र', 'दुद्धोत्र शास्त्र', 'बुद्धके अंतिम अुपदेशोपर लिखा गया शास्त्र' आदिका भी अनुवाद किया। अिन ग्रंथोंकी विनेयशाही चर्चा अिस छोटे निबन्धमें सम्व नहीं। अिनमेंसे अिचिकायें मूल संस्कृत रूप लुप्त हो गये हैं और हम लोगोंकी जानकारीका अेक मात्र माधन चीनी और तिब्बती अनुवाद है।

वसुवधुके प्रयाका चीनी अनुवाद करनेके अतिरिक्त परमार्थने जा सबसे प्रसिद्ध काम किया वह है चीनी भाषामें अुनकी लिखी हुआ वसुवधुकी जीवनी। अिनके अभावमें हमलोग वसुवधुके जीवनके सबमें अुनक नामकी छाडकर और कुछ नहीं जान पाते। वसुवधुकी जीवनी लिखने हमें प्रसंगबद्ध परमार्थने अुनके

बड़े भाओ अमगवे जीवनपर भी काफी प्रकाश डाला है। परमार्थके जिस कार्यकी मस्त्काके मरपमें प्रमिद्ध जापानो विद्वान् नाका कुमुवे मतका निम्न अङ्कगण यथेष्ट है—
“परमार्थके जिस कार्यका सबसे अधिक मूल्य है वरु प्र अनकी खिली वगुदपुत्री जीवनी। अिममे अंस अनक विम्भूल अकिओ तथा तथ्याका पना चलता है जितने जाननेका कोजी दूमरा सागत नहीं सोप रहा था। साथ-साथ जिनमे साधारण रूपमे भारतीय साहित्यपर तथा विशेष रूपमे साम्य सम्प्रदायके बौद्ध धमक इतिहासके अपकार गुणपर अमभाविन प्रकाश पडता है।” ४

आचार्य दिग्गज बौद्ध तर्कशास्त्रके जनक माने जाते हैं। उनको प्रसिद्ध पुस्तक ‘अलम्बन-परीक्षया’ या ‘अलम्बन प्रत्यक्ष्यान शास्त्र’ का अनुवाद भी परमार्थन चीनी भाषामें प्रस्तुत किया पर दूमरे नामसे। बादमें युजाद् चट्टने भी जिस प्रयका अनुवाद किया। परमार्थ और युजाद् चट्ट दोनोके अनुवाद मिलानेपर पना चलता है कि ये दोनो अेक ही ग्रथके अनुवाद हैं। पर परमार्थने प्रयका चीनी नाम दिया है जिसका अर्थ होता है ‘अल्प विचार-रजपर त्रिधा गया साम्य।’

परमार्थने साम्य दर्शनके प्रयाका भी चीनमें प्रवेश कराया। ‘सुवर्ण गण्ति शास्त्र’ नामक ७० दलोकाकी साम्य कारिका और अमके भाष्यका अन्होने अनुवाद किया। जिस कारिका और भाष्यके लेखकके संबंधमें विद्वानोंमें बड़ा मतभेद है। अनुवादके प्रारम्भमें अेक टिप्पणी है जिसमें प्रथमे रचयिताका नाम ऋषि वपिल बताया है। पर अ तमें जिस बातका अुन्लेख है कि ऋषि वापलके शिष्य आसुरीके शिष्य पवशिष्य (वापिल्य) ने ६०००० दशोकामें जिसकी रचना की। जिनमेंमे अीदवर ऋष्य नामक ब्राह्मणने ७० दशोकांको पुनकर अलग किया। ‘सुवर्ण सप्तति शास्त्र’ की कारिकाअं अीदवरऋष्यकी ७२ कारिकाओंके साम्य सप्तति नामक ग्रथका, जो सप्ततमें मिलता है सारास है। जिस ग्रथके भाष्यको कोओ गोडाराद रचिन भाष्य और कोओ अीदवरऋष्यको ही कारिकाओं और भाष्य दोनोका रचयिता मानते हैं। परमार्थने आचार्य गुणमतिले

४ जिस ग्रथका अनुवाद चीनी भाषामे हिंदीमें चीन-भवन, साहित्यिकेताके प्रो शांतिभिक्षु शास्त्रीजीने किया है। देखिए—‘विशाल भारत’, अक्टूबर, १९४६।

‘लक्षणागुमार शास्त्र’ नामक साम्य दर्शनके ग्रथका भी अनुवाद किया। यह ग्रथ मूल सप्ततमें नहीं मिलता है। यहाँ तक कि जिसका मूल सप्तत नाम भी नहीं जान है। यह ‘लक्षणागुमार शास्त्र’ नाम चीनी अनुवादमें दिये चीनी नामका सप्तत रूप है।

अपर कहा गया है कि परमार्थको दक्षिण चीनके स्याट और उन् दानो राजदशोने समय कार्य करनेका अवसर मिला था। अपने चीन प्रवासमें २३ वर्षोंमें अन्होंने ७० ग्रथोंका अनुवाद प्रस्तुत किया। अपरके जीवनवृत्ते पना चलता है कि अन्ह अशांतिपूर्ण जीवन चीनमें बिताना पडा था। २३ वर्षाई असांन जीवनके बीच ७० ग्रथका अनुवाद प्रस्तुत कलाही पर्याप्त प्रमाण है कि व कितने मेरानी विद्वान् और कर्मठ व्यक्ति थ। अगर उनका जीवन शानिमे चीनमें अनीन हाना तो न मादुम और जिनने जल्प्य ग्रथ-रत्न चीनी वाटम्य स्त्री हारमें और विरोधे आने। अपर उनकेद्वारा अनुदित कुठ प्रसिद्ध ग्रथाकी ही सर्वा हीअी है। जिनके अनिररित अु-होने नागार्जुन अवतगोप, वसुवर्धन, वसुमिथ आदि महापातके महान् आचार्योंके ग्रथाका भी अनुवाद प्रस्तुत कर अुष्ट मूल सप्ततमें नहीं तो वममे कम चीनी भाषामें मुरकियन रख छोडा है और जिस तरह अन्हे सदाके शिष्ये लुपन हानेते बचा लिया है।

परमार्थने जहाँ अपने बुजुवगु चरिय और धार्मिक आस्थाने कारण चीनके बौद्ध धर्ममेंमे जन समुहकी अदा तथा प्रेम प्राप्त किया वहाँ अन्होंने अपनी साहित्यिक प्रतिभा और कार्यदक्षताके कारण चीनके मुयीवृन्द तथा मनीषियोंको भी अपनी ओर आकषित कर अु-दु-जपना प्रशमक बना लिया। जिस सायकने बौद्ध धर्मके विज्ञानवादका प्रचार कर वहाँ जिस मिद्वानकी जट जमा दी। कितने ही चीनी विद्वान् अपने प्रभाविन हारर बौद्ध धर्मके प्रचार तथा बौद्ध ग्रथोंके अनुवाद कार्यमें लगे। राजनीतिक वपेत्रको छोड उनका प्रभाव अम कालके चीनके धार्मिक, साहित्यिक, साम्कृतिक आदि वपेत्रोपर जितना पडा कि चीनके बौद्ध धर्मके इतिहासमें वट्ट युग हो परमार्थका युग बजलाता है। जिस प्रकार भारतीय मस्कृतिको चीनमें फैलाने तथा अंस समृद्ध करनेकी दिशामें परमार्थकी सेवा अमूम्य रही है जो हमारे लिखे गए तथा अनुकरण करनेकी वस्तु है।

[चरहन्, विहार

‘३० जनवरी’ की पुण्यस्मृति-लहरी

: श्री आर. के. पण्मुखम् चेट्टियार :

[स्वर्गीय श्री आर. के. पण्मुखम् चेट्टियारका जन्म कोयमटूरके अंक प्रतिष्ठित चेट्टियार कुलमें हुआ था। आपकी विद्वताकी प्रशंसा दुनियाके बड़े-बड़े विद्वान करते हैं। आप अपनी मातृभाषा तमिलके बड़े पंडित थे। आपकी लेखनीने अनेक प्रकारके राजनीतिक, सामाजिक साहित्यिक लेख सृजन किये हैं। ‘मिलप्पधिकारम्’ तमिल साहित्यके पंच महाकाव्योंमें सबसे अधिक प्रसिद्ध है। उसके ‘पुहार कांड’ पर आपने जो टीका की है, वह बहुत ही अत्यंत मानी जाती है। तमिलके अधिकारी विद्वानोंने अपनी भाषा व दलीकी बड़ी प्रशंसा की है। आप साहित्यिक ही नहीं, संगीत, नृत्य आदि ललित कलाओंके भी बड़े प्रेमी थे। संगीतके रसानुभवके लिखे साहित्य भी जल्दो हैं—अस पक्षके आर सभयंक ये और ‘तमिल अर्ना’ अर्थात् तमिल संगीतके आन्दोलनके भी आप प्रवर्तक थे।

राजकाज दरबारके बचेत्रमें भी आपका बड़ा हाथ रहा है। आप भारतकी अनेक रियासतके दीवानके पदपर भी आसीन रहे और शासनकी बागडोर मुचाए रूपसे संभाली। संसारके अनेगिने अर्थशास्त्रविशारदोंमें आपका प्रमुख स्थान रहा है। भारतके स्वतन्त्र होनेपर, भारत सरकारके वित्तमंत्री भी रहे।

आप बड़े मिलनसार थे। मित्र और मेहमानोंकी खातिरदारी करनेमें बड़ेही कुशल !

स्वर्गीय चेट्टियारका राष्ट्रपिता बापूके साथ बड़ा निकट सम्बन्ध रहा। बापूजीके निधनके बाद, चेट्टियारजीने जो संस्मरण लिखा है उसीका हिन्दी-रूपान्तर, ‘राष्ट्रभारती’के पाठकोंके सम्मुख हम प्रस्तुत कर रहे हैं, श्री रा बोलिनायनजी द्वारा अनुदित राष्ट्रपिता पू बापूकी स्मृति और श्रद्धांजलिके रूपमें। —सम्पादक]

मैं उस वक्त मदरासके कालेजमें पढ़ रहा था। दक्षिण अफ्रीकाके प्रवासी भारतीयोंकी जो दीन हीन शोचनीय दशा थी, उसकी मार्मिक जानकारी भारतीयोंकी देनेके हेतु गांधीजी मदरास आये थे। ‘सतुराम-चेट्टी’ गरीमें श्रीमत् जी. अ. नटंगनके घरमें उनसे मिलनेके लिखे हम कुछ छात्र गये। सफेद अग, सफेद काठियावाडी पगड़ी और कपड़े श्वेत स्वच्छ दुपट्टा पहने हुए थे। फर्शपर बिछे कालीनपर बैठे हुए थे। हम सब छात्र अू-हैं चारी तरफसे घेरकर बैठ गये। वे धीमी आवाजमें दक्षिण अफ्रीकाके प्रवासी भारतीयोंके सम्बन्धमें बातें कर रहे थे। अूम दिन हमने जिन महाशयकी देखा था, वे काठियावाड़ मुजरासके अंक साधारण सभाय मनुष्यही दिखलाये दिये। अूम वक्त हमारे मनमें एक विचार लेख-मात्रभी नहीं आया कि हम महान अवतारी पुण्यमें बातें कर रहे हैं।

× × ×

अूमके बाद दस साल गुजर गये। महात्मा गांधी तमिलनाडुमें भ्रमण कर रहे थे। मातूम हुआ कि कोयमटूर भी पधार रहे हैं। अूम वक्त मैं अूम नगरकी नगरपालिकाका अंक सदस्य था। नगरपालिकाकी समामें जब यह प्रस्ताव आया कि महात्माजीको स्वागतमें अंक बडिया मानपत्र दिया जाये तब अूम प्रस्तावका जोरदार विरोध हुआ। तरह-तरहके आवेपेण आठे। सदस्योंने यह दलील पेश की कि महा-माजी तो असहयोग आन्दोलनके प्रवर्तक हैं और अूमका जोरदारसे प्रचार कर रहे हैं। नगरपालिकाका कर्तव्य तो यह है कि वह सरकारकी अपना पूरा सहयोग प्रदान करे। अमी हालतमें वह अंक असहयोगीकी मानपत्र देकर अूमका स्वागत कैसे कर सकतो है ?

पर बहुतेके सदस्योंने अूम दलीलका अूरत यों दिया, ‘यद्यपि हम असहयोग आन्दोलनके पक्षपाती नहीं, फिरनी अूनने मद्यपान निषेध, अस्पृश्यता निवारण,

शादीरा प्रचार आदि समाजोपयोगी गुधारोके कामोको हम क्यों न महत्व दें ?”

मेने कहा, “स्वागत-मानपत्रमें हम केवल प्रस्तावके शब्द न लिखाकर, अपने आन्तरिक सच्चे विचार स्पष्ट रूपसे रखा दें और यह भी निस्संकोच कह दें कि हम आपके असहयोग आंदोलनका विरोध करते हैं।”

यह गुणकर अनेक सदस्योंने यह विचार प्रकट किया कि जिस उपाय मानपत्र देना महात्माजीका अपमान करना होगा, जिससे मानपत्र न देना ही अच्छा है।

मेरा विचार यह था कि महात्माजी सत्यवादी हैं। हम अपने मनकी बात बगैर सुकामे छिपाये कह दें तो वे जरूर ही तुम होगे।

आन्तरिक अधिकांश सदस्य मेरी रायसे सहमत हुए और मेरे बड़े अनुसार मानपत्र लिखाने और प्रदान करनेकी राजी हो गये। प्रस्ताव नगरपालिकाके सर्व-सम्मेलिते स्वीकृत हुआ।

मानपत्र तैयार करनेका कार्य मुझे ही सौंपा गया। जिस प्रकारसे मानपत्रोप प्रस्तावने जो शब्द कहे जाते हैं, उन्हें मेने थोडमें और नगर-पालिकाके ज्यादातर सदस्योंने विचारो और विद्वानोंको स्पष्ट शब्दोंमें रखा। -

“आपके असहयोग आंदोलनगर हमें जरा भी विवशता नहीं। सहयोग द्वारा ही हमारा देस स्वतंत्र हो सक्ता है। लेकिन गुधारके जो कार्य आपने अपन हाथमें लिये हैं, उनका हम दृढ़पणे स्वागत करते हैं। अप्सुधयता निवारण, मद्यपान निषेध शादी प्रचार, राम-गुधार जैसे कार्योंमें हम आपकी अपना पूरा-पूरा सहयोग प्रदान करनेको प्रस्तुत हैं।”

जिस प्रकार मान-पत्र तैयार कर दिया गया। हम सब सदस्य जिस बातकी बड़ी मुत्सुकतासे बाट जोह रहे थे कि महात्माजी जिस नये ढंगसे मानपत्रका क्या जबाब देते हैं? परन्तु मेने जो विचार था, वही जबाब महात्माजीने दिया।

महात्माजीन मानपत्रके अन्तरमें कहा, “अधिकांश लोमोका यह समाल होगा कि आज मैं अपने विरोधियोंके बीचमें हूँ। लेकिन मैं यह समझता हूँ कि कोयमनूरकी नगरपालिकाके सदस्य मेरे सच्चे दोस्त हैं। मानपत्रमें प्रस्तावके प्रकृत शब्द नहीं कहे गये, मुझे समझे मीठी बोलनेकी रीति या नीति नहीं बरती गयी। वरन्-अपने आन्तरिक विचार निस्संकोच भावसे प्रकट किये गये हैं, यह देखकर मुझे अगार हर्ष हो रहा है। मेरे असहयोग-आंदोलनके प्रति आप लोमोकी विवशता नहीं हो तो अनेक अंकदम विग्नभूल भूल जाओगे। अिराता मुझे जरा भी दुःख नहीं होगा। मैं यही पर्याप्त समझता हूँ कि आप लोमोकी गुधारने अने कार्योंमें पूरा विवशता है, जिनकी ओर आप लोमोने अपने मानपत्रमें अिसारा दिया है। मैं चाहूँगा कि आप लोग अने कामोंमें लग जाओ, जिससे मेरे मनकी ताल्लो मिल सके।”

× × ×

सन् १९२६में फिर अेकवार महात्माजीकोयमनूर पधारे। तब अेक हफ्तेके लिये मेरे ही घरपर ठहरे थे। जिस समय अनेसे निष्कटतप परिचय प्राप्त करनेका सुयोग हाथ लगा। नित्य प्रातःकाल वे टहलने जाया करते थे। मैं भी अुरते साथ ही लया करता था।

अेक दिन किसी कारणवश मैं अुराने साथ नहीं जा सका। मुझे आठ बजे वापस आने तो अुरोने कहला भेजा ‘मैं तुरन्त तुमसे मिलना चाहता हूँ।’ बात जाननेके लिये मैं अुराने कमरेमें पहुँचा।

अुरोने पूछा, “यहाने पुलिससे अधिकारीकी तुम जानते हो ?”

मेने अुत्तर दिया, ‘हाँ, जानता हूँ। पर अधिकार भेल-जोल नहीं।’

“तुम्हे अभी पुलिससे अुस अधिकारीके पास दूत बनकर जाना हीया !”--अुरोने आदेश दिया।

मेरी समझमें तो कुछ नहीं आया कि मामला क्या है? पूछनेपर मालूम हुआ कि जिस वक़्त गांधीजी मुझे घूमने सडकर आ रहे थे, अुरी वक़्त अेक गरीब तेली भी बाँवरके दोनो तिरोर तेल भरे

टीनके ढबे लटकाने जा रहा था। सामनेसे पुलिमका अंक दल तेजीमें दौड़ता हुआ आ रहा था। तेनी बीच रास्ते जा रहा था। अंक पुलिसवालेने, जो तेज चाल चल रहा था, धक्का देकर तेलीको गिरा दिया। तेली अचकचाकर नीचे गिर पड़ा और टीनमें भरा तेल भी जमीनपर बह गया। पुलिसवालेमेंसे किसीने जिस बानकी चिन्ता नहीं की कि तेल लुडक गया है। किसीने जबानी हमदर्दी भी नहीं जाहिर की। झुलटे कुछ पुलिम-वालोंने ताली पीटकर अूसकी हेंसी जुड़ायी। महात्मा जीने यह दृश्य देखा तो अुनके दिलको बडो ठेग पहुँची और तेलीको साथ लेकर वे मेरे घर आ पहुँचे।

सारी घटना अुनके मूखसे मुननेपर मैंने अुनसे पूछा, 'क्या इसके लिये नालिया करे ?'

अुन्होंने अुलर दिया, 'नालिया करनेकी कोअी जरूरत नहीं। पुलिमके अुम अधिकारीके पास छातिदूत बनकर तुम जाओ और जिसकी निवृत्तिका कोअी मार्ग षोज निकालो।'

क्या खोज निकाल ?—मैं सोच-विचारमें पड गया। गाधीजीने मुझे विचार-मन्त्र देखकर कहा, 'अुस पुलिसवालेको, जिसने गरीब तेलीका तेल फँक देनेका जुल्म किया है और पुलिसके अुच्च अधिकारीको, जिसके मानद्वने अैसा जुल्म किया है, चाहिये कि तेलीमें माफी माँगे और तेलका दाम चुकाकर नुकसान भर दे। यही काम तुम्हें करना होगा।'

वहाँके पुलिस अधिकारी ता मभी गोरे थे और स्वभावके भी बडे तीखे। मुझे अपने दी-यकार्यमें सफलता मिलनेकी आशा नहीं थी। फिर भी मैं निराशा लेकर पुलिसके अुस अधिकारीक पाम पहुँचा और सागे बाने कह मुनायी। गाधीजी अिसना किस प्रकार ग्याय चाहते हैं ?—यह बात भी बना बी। पर पुलिमके अधिकारी वह बात मानने ही न थे।

मैंने अुनके कहा, 'जाप स्वयं महारमाजीके पास चलकर अपनी बात कह दें तो बडा अच्छा हा।'

वे अुनमने होकर वडबडाते हुअे मेरे साथ चलनेको तैयार हुअे। दम मिनट तक महामार्जा और अुनमें

बाते हुअी। गोरे पुलिस अफमरकी अेकदम कायाण्ट गयी। वे स्वयं तेलीसे माफी माँगने और तेलका दाम चुका देनेको तैयार हो गये।

गाधीजीका प्रम-मार्ग कैसा सच फल देनेवाला है ?—मैंने तब अपनी आँखो देखा।

* * *

अुमो दिन शामको महात्माजीका अेक फोटो हापमें लेकर, अुसपर अुनका हस्ताक्षर लेनेके विचारमें अुनके कमरेमें गया।

मरी अिच्छा मालूम होनपर अुन्होंने पूजा "तुम चाहन हो कि मैं जिस फोटोपर अपना हस्ताक्षर करूँ। क्या तुम अुसका अुचित मूल्य देनेके लिये तैयार हो ?"

देखें, ये कितने रूपसे माँगने हैं ?—यह सोचकर मैंने अुनसे पूछा, "मैं तैयार हूँ। हाँ, बन्नाअिरे, आप अिसके लिये कितनी रकम चाहने हैं ?"

"मैं तुमसे रूपयो-धुपयोकी आशा नहीं रखता। पर मैं तुमसे अेक वचन चाहता हूँ। वह वचन दो तो वही अिसका अुचित मूल्य होगा।" अुन्होंने कहा।

मेरी समझमें कुछ नहीं आया कि वह वचन क्या हो सकता है ? मैंने माचने-मोचते पूछा, "मुझसे आन क्या कराना चाहने हैं ?"

"तुम्हें यह वचन देना चाहिये कि मैं रोज कमसे कम आधा घंटा चरखेपर सूत बानूँगा। क्या, तुम्हें मजूर है ?"

अुनके अिम प्रश्नपर थोडी देरतक अच्छी तरह साव लेनेके बाद मैंने अुत्तर दिया कि "यह काम मुझमें नहीं हो सकेगा।"

मैंने समझा था कि मेरा यह जवाब अुन्हें अवश्य असन्नुष्ट कर देगा। लेकिन अुन्होंने कहा, "तुम्हारे अिम निर्भाव अुत्तरकी मैं दाद दता हूँ। तुमने अपनी अममधंता प्रकट कर अच्छाही किया। मैं तो यह कहूँगा कि वचन देकर अुसमें मुकर जानेसे यह अुससे कहीं बेहतर है। मैं तुमसे नाराज नहीं हूँ, बडुन सदा हूँ।"

मैंने बुनसे पूछा, "आपसे तो मैंने कोचीन बात छिपायी नहीं। मच-मच बता दिया। अब ज़िमीकी अपने हस्तानपरका दाम मानकर जिस फाटार आप हस्तानपर करके नहीं दे सकेगे ?"

"मैं भी बनिया हूँ और तुमभी बनिया हा। आखिर जिस व्यापारमें तुम्हीं जीते।" - यह कहकर हँसते हुए अन्होंने फोटोपर हस्तानपर कर दिये।

* * *

तिरुविताकूर (ट्रानवनोर) रियासतमें हरिजनोके लिये मन्दिर खोले जा रहे थे। जिस अस्तव के लिये महात्माजी तिरुवनन्तपुरम् (ट्रिवेंद्रम) गये थे। अम समय में वगलनी कोचीन रियासतमें दीवानने पदपर था। तिरुविताकूरके मन्दिर-प्रवेशका अद्घाटन देखकर कोचीनमें भी आन्दोलन जोर पकड़ने लगे। जिस विषयमें मेरा अग्रगण्य यद्यपि अधिक मात्रामें था, तथापि कोचीनके महाराज बड़े ही कष्ट, वैदिक पर-पराके पालनहार थे। हरिजनोके मन्दिर-प्रवेशकी बात वे कदापि माननेवाले न थे। मेरी दगा साँप-छूँदरकी-सी हो गयी। तिरुवनन्तपुरम्से महात्माजीने मुझे अंक तार भेजा था।

अन्होंने अम तार द्वारा मुझसे पूछा था, "कुछ लोभ जिस बातपर बडा जोर देते हैं कि हरिजनोके मन्दिर प्रवेशके प्रचारके लिये मैं कोचीन रियासतमें भी आऊँ। तुम अपना दीवान पद भूल जाओ और अक मिनके नाते मुझे यह सलाह दो कि मेरे जिस वक्त क्या करूँ ? अपनी आतुरिक रायसे जल्दी से जल्दी मुझे अवगत कराओ। मैं कोचीन आऊँ या नहीं ?"

गान्धीजीका तार देखकर मेरी समझमें गहरी जाया कि क्या जवाब दें। किमीके मनमें भी कैसे यह बात अठ सकेगी कि महात्माजीसे कहा जाये कि आप मेरे यहाँ न आओ ? पर अन्होंने यह भी कैसे कहे कि आप आओगे, तो कोचीन राज्यमें आन्दोलनके जोर पकड़नेका अम्देशा है और वयोवृद्ध कष्ट वैदिक विचारवाले कोचीन-महाराजके दिलकी ठंस पहुँचनेकी सम्भावना है। अम समान बातोंपर खूब विचार कर लेनेके बाद मैंने अतुर दिया।

"यह हमारा अहोभाग्य है कि आप कोचीन पधारना चाहते हैं। मुझे भी बड़ी प्रसन्नता होगी। लेकिन वृद्ध महाराजका दिल टूट जाओगा—चिन्ता किसी बातकी है। सारी बात आप खूब मोच-समझ ले और जैसा अचित्त समझें कर।"—तारका जवाब मैंने तारसे दे दिया।

तुरन्त गान्धीजीका प्रत्युत्तर भी आ गया। अममें लिखा था — 'कोचीनकी हालतमें मैं भलीभाँति परिचित हूँ। तुम्हारी श्रम दगा भी भली भाँति समझ पाता हूँ। अत मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं जिस वार कोचीन नहीं आऊँगा।"

× × ×

देहलीमें विस्तमधीने पदपर में कार्य कर रहा था। वगालसे महात्माजी देहला आ पहुँच थे। दूसरे ही दिन अन्हने दर्शन करनेके विचारसे मैं बिडला-भवनमें पहुँचा। महज त्रिनोदी हँसो हँसते हुए अन्होंने मेरा स्वागत तमिल बोलीमें किया, "आओ, साहब ! आओ। वैदिकों ! कुशलने तो हँ न ?"

मैंने भी तमिलमें कहा, "हाँ, स्वामी ! कुशलमें हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आओसे आपको मेरे साथ तमिल ही में बोलना चाहिये।"

यह सुनकर वे खिलखिलाकर हँसे। अिससे ज्यादा तमिल बोलना वे जानने न थे। दक्षिण अनीकामें तमिल भाषा-भाषियोंके साथ काम करते हुए अन्होंने तमिलके धाँसे शब्द सीख लिये थे। आगेकी बातचीत अयेजीमें हुआ।

अन्होंने कहा, "स्वतन्त्र भारतमें तुम मत्री-पद ग्रहण कर चुके हो। अपने सद्बोली मंत्रियोंको तुम्हें तमिल सिखायना चाहिये। अगर यह काम तुमसे नहीं हो सके तो, तुम्हें हिन्दी सीख लेनी चाहिये। समझे ?"

मैंने कहा, "मुझे हिन्दी सीखना आसान नहीं मालूम होना। तीस वर्षोंसे आपसे निकट सक्न रखने-वाले राजाजी (राजगोपाळाचार) ही जब ठीक तरहसे हिन्दी बोलना नहीं सीख पाये तो मुझसे यह काम कैसे सम्भव हो सकता है ?"

यह सुनने ही गान्धीजी ठठाकर हँस पडे।

× × ×

देहलीमें महात्माजीने अनशन आरम्भ कर दिया था। हिन्दुस्तान और पाकिस्तानके बीचके विभाजनके अवसरपर यह निर्णय हुआ था कि हम पाकिस्तानको पचपन करोड़ रुपये देंगे। इस रकमको लेकर भारत सरकार और पाकिस्तान सरकारके बीच तकरार अठ खड़ी हुई।

अनशनके दूसरे ही दिन मुझे जिस बातकी सूचना मिली कि बापूजी मुझसे मिलना चाहते हैं। सबेरे नौ बजेने करीब मैं बिडला-भवनमें पहुँचा।

देहलीमें तब सन्त सरदी पड़ रही थी। बिडला-भवनकी फूलवारीमें बापूजी अंक पलगपर घूब सेवन करते हुये लेटे थे। मेरे जाते ही, श्री जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल और डाक्टर मयाजी भी आ पहुँचे।

भारत और पाकिस्तानके बीच जो तनातनी खड़ी हो गयी थी उसपर तीन घण्टे तक वाद-विवाद हुआ। मैंने और सरदारने यह तर्क उपस्थित किया कि कानून और पारस्परिक ममताके मुताबिक हम किसी तरह जिस समय वह रकम देनेकी बाध्य नहीं। गान्धीजीने बड़े गौर और सबसे हमारी बातें सुनीं और घीमे स्वरमें अंक घण्टे तक जिस बातकी तर्कपूर्ण विवेचना कर हमें समझाया कि यद्यपि मैं मान लूँ कि पाकिस्तान ही कमरवार है और उसका पक्क कमजोर है, फिर भी मैं यही कहूँगा कि आप लोगोंकी मनोभावना हमारे भारतके अहिंसा धर्मके अनुकूल नहीं, बहुत ही प्रतिकूल है।

अनकी बातें सुनते-सुनते हमारे मनमें यह विचार जड़ पड़ गया कि हमारा फंसला ठीक नहीं है।

दूसरे ही दिन हमने 'कॅबिनेट' की बैठकमें निश्चय कर लिया कि "पचपन करोड़ रुपये" तुरन्त पाकिस्तानके हवाले कर दिये जायें।

जिस बातचीतके समय तमारीकी अंक बाउ हुई। घूब तेज हुई थी मैंने अपना रूमाल निकालकर सिरपर बाँध लिया। यह देखते ही बापूजीने न जाने, घीमे स्वरमें पंडित जवाहरलालजीके कानोंमें क्या कहा? इत जवाहरलालजी अठकर भवनके अन्दर गये। लीगने हुअे अन्तरे हापमें टोकरी जैमी अंक बडी टोपी थी,

जिसे ब्रह्मदेशवाले घूपसे बचनेके लिये अिस्तेमाल करते हैं, अुहोने अुसे महान्मा गाधीके हापोंमें रख दिया। मैंने मोचा कि महात्माजी घूपकी गरमी सहन न कर सकनेके कारण वह टोपी पहनने जा रहे हैं। पर अुहोंने वह टोपी मेरे सामने बडा दी और कहा, "अिने पहन लो न।"

* * * *

१९४८ की तीस जनवरीकी साडे पाँच बजे होंगे, मैं देहलीके अपने कार्यालयमें बैठ कर अी काम कर रहा था। मेरे सेक्रेटरी दीडे हुअे आये और काँपते स्वरमें बोले, "महात्माजीगर किमीने गोली चला दी!"

अुस समय मेरी समझमें कुछ नहीं आया कि अुहोने कहा क्या? मेजपरके साँजे-साँजे कागजात जैसेके तैसे छोडकर मैं बाहर दौडा आया और अपनी गाडीमें बैठकर बिडला-भवनकी ओर चल पडा। अिध समय वहाँ ज्यादा भीड नहीं लगी थी। मैं दौडा हुअा महात्माजीके कमरेमें गया।

परांपर बिछे गड्ढपर महात्माजी लिटाये गये थे। पंडित जवाहरलाल नेहरू भी आये। सरदार पटेल पास ही बैठे थे। सिरहाने महात्माजीकी पोतियाँ फूट फूटकर रो रही थीं और गीताके श्लोक पढती जा रही थी। मैं अपने जीवनमें तीन बार आँसू बहाकर रोया हूँ। यही तीसरी बार था।

महात्माजीको देखते समय यह नहीं मालूम होता था कि अुनके घरोरने गोली छापी था अुनके प्राण-पखेरे तनरूपी पिंडजा छोडकर अुड गये हैं।

दुमरे दिन सरदीकी साँघ्यवेलामें पाँच और छह के बीच, अैतिहासिक यमुनाके राजपाटपर डेरा चदनकी लकडी चिताकी आगमें धषवकर प्रकाशमान हो अुठी। दुनियाकी प्रकाश देनेवाली दिव्य ज्योति, भारतकी आधार प्रकाशरानि अुसमें जल रही थी। सबका बिदवाय वृक्ष रहा था। फिर भी कभी न वृक्षनेवाती अुनकी दिव्य-आत्माकी ज्योति तो सदा प्रकाशमान रहेगी और सारी दुनियाकी प्रकाश देनी रहेगी।

[तमिलसे अनुवादक:— श्री रा० धीळिनाथन]

[मद्रास]

गान्धीजीका कुसूर ?

: श्री अब्दुल हलीम अन्मारी :

महात्मा गान्धीजी गुजरे पूरे ५ साल हो गये। दुसरी भारतके लिखे ये गौच साल कुछ कम नहीं होते जबकि अक्सकी प्यार करनेवाला आजाद करनेवाला और अपनी जिन्दगीमें ज्यादासे ज्यादा त्याग और बलिदान करनेवाला दुनियाका सबसे बड़ा व्यक्ति हमने बीचमें न रहा। क्या वारण है जिसका ? भारतमातारी गान्धिदायिनी गोदसे अक्सका भवन सप्त छिन गया। हमें वह वारण योजना है। अंसा क्यों हुआ ? जब हम अिम सवालपर विचार करते हैं और महात्माका कुसूर ढूँढ निकारनेमें लग जाते हैं तो हम बड़ी कठिनायीमें पड जाते हैं। बार बार हमारे दिमागमें यह खयाल घूमने लगता है कि कौनसा दोष था और वह भी विश्वप्रेमी महात्माका दोष ? दोषना या दोषीका सम्बन्ध बुराचारसे होता है, खराब चाल चलनेसे होता है। पर गान्धीजीकी बातोंमें और आदतोंमें कौनसी बुराई थी। उनके मन्देशमें भारतके हिन्दू, मुसलमान, त्रिस्तो, पारसी, सब धर्म और सब बौध्मके लिखे प्रेम जगमगाता था। अक्सने सदाचारसे हमारा जीवन आगे बढ़ता था। अक्सने चरण चिन्हासे जीवनका निर्माण होता था। आपसमें प्रेम और अक्षताका, सद्भावनाका केन्द्र अूस महात्माका हृदय था। अूसी केन्द्रको तोडनेके लिखे निशाना बनाया गया। घामके ५ बजे जब कि वे भगवानसे मानवजातिकी भलाअीके लिखे प्रार्थनाम्बलपर जा रहे थे, अूस ३० जनवरीकी घामको। महात्माके अूसी हृदय केन्द्रको पिस्तौलीकी गोली लगी। बुड, महावीर, अीसाके बाद दुनियाका अंक मरसे बडा मानवताका पुत्रारी, सच्चा अहिंसक सत पुण्य अुठ गया ! मानवताके मर्मस्थलपर भागी लगी थी। गान्धीजीका कुसूर ?

[भोवाल



बुद्धदेव वसु

: श्री मन्मथनाथ गुप्त .

[भारतीय भाषा-साहित्यमें बंगलाका प्राचीन और आधुनिक सत्य-दिग्ग-सुन्दर साहित्य सबने समर्थ और समृद्ध साहित्य है। काव्य भाव सिन्धुमें व्युत्पन्न तरंग हिलोरती है। कहानी, अुपन्यास, नाटक, समालोचना चरित्र आदि साहित्यके सभी अंगोंमें पुष्टि, नव अुन्मेष, सौष्ठव, क्यण-क्यण नयी रमणीयता, मर्म अुद्घाटनमें अनूठापन और सम्पूर्णता है। आधुनिक बंगला साहित्यके थोष्ठ साधकोंमें श्री बुद्धदेव वसुकी भी अधिक प्रतिष्ठा है। साहित्यके सभी क्यत्रोंमें अुन्होंने अपनी प्रतिभाको बिखरा है। बंगलाके अेक महान् लेखकका यह परिचय श्री मन्मथनाथ गुप्तजीने 'राष्ट्रभारती के लिये ही भेजा है। —सम्पादक]

बंगला साहित्यमें श्री बुद्धदेव वसुका अपना स्थान है। अुन्होंने कविता, अुपन्यास, कहानी, आलोचना सभी क्यत्रोंमें रचनामें करके अपना अतुल साहित्यिक शक्तिमामर्ष्य व्यक्त किया है। और अुनको पूर्ण यश मिला है। कुछ आलोचकाने यह लिखा है कि जिनके निकट कविता और दर्शन अेक वस्तु है या जो यह मानते हैं कि कविताका प्रधान अुद्देश्य कोअी जीवन-दर्शन देना है, अुनके लिये बुद्धदेव कवि नहीं हो सकते। पर क्या यह बात सही है? क्या बुद्धदेवका कोअी दर्शन-शास्त्र नहीं? मेरा तो अेसा विचार है कि बुद्धदेवकी कृतियोंमें जीवनक सम्बन्धमें अेक दृष्टिकोण अुन्तर्निहित है, और वही अुनका दर्शन शास्त्र है।

अुनमें जीवनको भोग करनेकी अदम्य स्पृहा है, साथही साथ दुःखवादकी अेक अन्तर्धारा भी है। दूसरे अुष्टामें कहा जाये तो वे जीवनकी गुप्तियोंको सुलसानेमें अक्षममें रहकर यतिवाद या सत्सारा-त्यागवादके दलदलमें न पंथकर भोगवादकी कोमल गाँदमें जाकर अपनेको भूलनेकी कोशिश करते हैं। अिस रूपमें देखा जाये तो बुद्धदेव बंगालके अकथ्याकृत अुन्न बाँके प्रतिनिधि-लेखक हैं।

बुद्धदेव अिस समय पढ़ते पढ़ते साहित्यिक क्यत्रमें अवतरित हुअे याने १९००-२० के युगमें बंगालके मुबक्योंमें दो धाराओंका जोर था, अेक तो कान्तिकारी धारा अिसका प्रतिनिधित्व सरत बाबू तथा काजी नरदल अिसलामने किया, और दूसरी धारा भागवारी

थी, अिसका प्रतिनिधित्व बुद्धदेव आदिने किया। सरोज बन्योगाध्यापने यह ठीकही लिखा है कि बुद्धदेव अुन लोगोंमें नहीं है, जो नरदलकी तरह स्फुट रूपसे, बल्कि अुत्सलसित होकर जेलखानेके तोड़नेका नारा लगाते हैं। अुन्हें तो अपनेसे अधिक मतलब है। जनगणके दुःख कष्टसे अुन्हें कोअी सरोकार नहीं। वे व्यक्तिवादी हैं। वे अुनी समझसे कवि और कविताका क्या अुद्देश्य होना चाहिये, अिसपर कहते हैं—

“आमार आकाशया ताअी अकित्वे अद्वितीय वत सघहीन मतातीत अेककेर आदिम ज्यामितित्तम्ब तार निलिनाम वा मजात पूर्णतार वाणी ।”

याने—अिसलिये मेरी आकाशया है कवित्वका अद्वितीय वत। सघहीन सनातीत अिकाअीकी आदिम रेखागणित स्तम्बताकी नीलिनामें आत्मजात पूर्णताकी वाणी।

अिनके अिस कथनकी पूरी तरह समझनेका दावा मैं नहीं करता, पर अिनना तो स्पष्ट है कि अुनका संकेत यह है कि कवित्वका अद्वितीय वत व्यक्तिवादका गुण गाभा है। बुद्धदेव वसुकी कविता अक्षर समझमें आती है, पर कहीं वह स्पष्ट नहीं हो पाती। क्या यह आधुनिक कविताकी अेक विशेषता है? अिस विषयपर मैंने अपनी नव प्रकाशित पुस्तक 'साहित्य कला-मयीक्या' में विन्मृत रूपसे विचार किया है। अिस प्रसंगमें केवल अिनना ही कहना पर्याप्त है कि जब विचार धुँपला होगा, तो अुनका प्रकाश भी धुँपला होगा। अत्यामवादिनीकी

वाति अथवा हृदयके बाद समझमें नहीं आती और यही हाल अिन निराशावादी भोगवादियोंका है।

स्वयं बुद्धदेव वसुने बार-बार यह कहा है कि कविता केवल वाते है, सौमन्यमे बुद्धदेवकी सब कविताओं अिस श्रेणीमें नहीं आती। अवसरपर ये जो वाते कहते है वे समझमें आनी है और भाषापर अूनका बहुत अधिन अधिकार होनेके कारण वे हमारे सामने अक चित्र खडा कर देनेमें समर्थ होते है। अूनकी कविताका रसास्वादन करानेके पहले यह त्रता देना जरूरी है कि वे साहित्यके क्षेत्रमें क्यूत्रिस्ट या धनवादी नहीं है। अिस दृष्टिसे भी अूनकी परिस्थिति बहुत ही विचित्र है। वे अथ तरफ तो मानके श्रान्तिवादी या प्रगतिवादी मे जाँचते है दूसरी तरफ अनेको धनवादीयोंमें ले जाकर नहीं छोडा करते। अूनकी लडाओ दो मोर्चापर जारी रहती है। वही अस्पष्टता भलही था जाओ, बात यह है कि वे अेक साथ बहुतसी वाते कहना चाहते है, पर ये अस्पष्टताकी साधना नहीं करते और न असे पाषाणमूर्ति बनाकर पूजते है। ये अिस प्रियाको सम्बोधन करके बात करते है अूसन निकट पहुँचीही पवित्रमे स्पष्ट हो जाना है कि वे अुग्ने क्या चाहते है—

आज आधी रातके समय जब चलेगी ठडी बघार
नींदकी अुतार फेरकर तुम खली आना, क्यों ?

हम दोनों जने आमने सामने बैठकर कविता पढ़ेंगे।

फिर लिखते है —

पेडका हरा पूर्वकी रेखामे गहरा हो गया।
वही पर मुट्टी भर चाँदका अधीर गिल अुडेगा
हम दानो जने आमने सामने बैठकर कविता पढ़ेंगे।
जगलेने पाससे हवा हहरा कर जाधेनी पर
जगलेने पास मेरा आकाश मूर्छित हो गिर पड़ेगा
पूर्वका हरा सफेद होकर भोरका आकाश खिलेगा।
रान और दिनके बीचमें पडकर हवा अूपती है,
पुस्तक समाप्त हो चुकी हम दोनों बैठे है चुपचाप।
हेलेनके क्षेत्रमें मनकी वासनाने बनाया है घोखला
सर्वाथके सब पुरुषोंके मनकी वासना
टूट कर चूर चूर हो गया ट्राय।

वे अपनी धान विल्कुल साफ कर देने है, किसी प्रकार धुधलापन अुसमें नहीं रहता। कवितामें बहुकर ये तत्वसे नहीं हटते।

अफरोदीके मन्दिरमें अय देनेक लिये
स्पार्टाकी रानी हेलेन गयी, सब पुरषोंकी वासना।

टूट कर चूर चूर हो गया ट्राय।

हेलेनके अपने वक्षके ढधिपर अर्घ्यकी रचना की है
वह सोनेका कटोरा है, सब पुरुषोंके मनकी वासना
टूटकर चूर चूर हो गया ट्राय।

अूनकी कवितामें प्रकृति है, प्रतीक भी है, पर असली जान जय पुरु हीनी है सब प्रकृति पीछ छोड जानी है और प्रतीक समयके लिये नहीं बकि वासनाको और घना करनके लिय प्रयुक्त होने है। वे अिषी कवितामें कहते है कि वाषा और आषामें नींदम जगाये हुअे लाल आधे चाँदकी टिमटिमानी ज्योत्सना अुस समय छा जाअगी, जब कविता पढ़नेका कार्यक्रम चलेगा। यही



तो चाँद बेचारेको नाहक घसीटा गया है पृथ्वीमे हजारो मीलकी दूरीपर रहनेवाले चाँदको अिमलअे रिक्कीजीयन (तपना) किया गया है कि वह आकर वासनाको स्पष्ट करे। कविता पढ़ना भी अिमी तरह अेक प्रतीक है।

वे दूसरे डगकी भी कविता लिखत हैं। जैसे—
लीजिये अेक टुकडा —
कल अुसका अन्त नहीं है,

हम तो केवल आजको लेकर जीते हैं,
जो कभी नहीं हुआ, हो सकता है, अुसीका नाम कल है,
जो निरन्तर हो रहा है, हो चुका अुसका नाम आज है,
यह पृथ्वी आज भरके लिभे मेरे लिभे ध्यस्त है,
पृथ्वी मनुष्यसे भरी मुसपर सबका दावा है,
पृथ्वी कामकी कल है, मुसपर सभी पहिये है,
अिसे हो लेकर मेरा आज कटता है।

अिस कवितामें रबीन्द्र प्रभाव स्पष्ट है, पर आगे जो कुछ आता है वह अुनका अपना है और अुसमें हम अुनका विगेप सम्भोगवादी स्पर्म पा सक्ते हैं।

पर कल, कौन जाने कल क्या होगा, शायद वह आये।
मेने जिसे देखा है, शायद कि कल वह आये
मेने तो अुमे देखा है, अेक ही धार क्यों न हो
सोनेकी तराँकी तरह अुनके अुन केदोंका अुच्छास
आँखोंमें सिलमिल रोशनी, मानो तराँगीं दीपकी छाया,
मेने तो अुसे देखा है, जब आँल नक्कत्र होकर खिलती हैं
वे जितने हैं जिहाँने अुसे नहीं देखा है।

कहना न होगा कि बुद्धदेवमें अपना विगेपना है।
अेक कविता और लीजिये—

हम बंठे हैं, मैं और नयनकुमार,
नयन मेरा मित्र है, सात सालमे हम लोगोंकी है
जान पहिचान।

हम बंठे हूँ मैं, बीचमें चापकी भेज है,
सर्पेद प्यानेके मुहमे सूत्रधम सर्पेद पूजा निक्षर रहा है
अेक घुँटके बाद— 'आज जितनी गमी है।'
अिमके बाद पदह मिनट चुपचाप।
प्याला अधिपा गया— 'क्या तुमने पढ़ी है
बर्तारंदाकी नयी किताब? नयन सिर हिलाना है।

नयन बात नहीं करता।

मैं सिगरेट निकालकर कहता हूँ 'दियामलाभी है?'
प्याला समाप्त होनेपर है, मुहनेमें मुहनें कट जाता है।
प्रत्येक मुहनें कटता है, अुसीको हम बैठकर गिनते हैं।
'परदाने पत्र लिखा है।'

'अच्छा?' बात आगे नहीं बढ़ती
'आज सिनेमा चलोगे?' नयन फिर सिर हिलाना है,
नयन बात नहीं करता।
आँर क्या कहा जाये।

मैं आकाश पाताल बुँदता रहता हूँ।

अिसे चाहे कविता मानिये या न मानिये, जितमें सन्देश नहीं कि यह हमारे यहकि मध्यम वर्गका अेक अच्छा चित्रण है। कहा गया है कि जितनी सामान्य वस्तुको विगेप बनाकर कविता लिखना बड़ी भारी बात है, यह वान सही हो या न हो, कविताको कच्चाके स्वर्गसे अुतार लाना यह आधुनिक कविता, बर्निक आधुनिक साहित्यका विशेष गुण है।

अभी अुनकी कविताओंकी अेक चयनिका प्रकाशित हुयी है जिसका नाम श्रेष्ठ कविता है। अुनकी सर्वत्र अच्छी आलोचना हुयी है। अेक आन्धेचक श्री अरुणकुमार सरकारने अुनकी आलोचना करते हुये लिखा है—
'बुद्धदेवकी रचनामें जरा ध्यान दिया जाये, तो यह ज्ञात होगा कि अुनमें कविता और जीवन अेकाकार हो गया है। कविके निश्चय वे दोनों शब्द समपर्यायवाची हैं, दूसरे शब्दोंमें कहा जाय तो अुन्होंने कविताको हमेशा जीवन और जीवनके प्रतीकके रूपमें अिस्तंमाल किया है। सप्ताहकी म्लानि, दैनिक जीवनकी घुँघनी, प्राणधारणका मिथ्याचरण, अस्तित्वकी परेशानीने अुन्हें छेड तो दिया है पर अुन्हें पीडित नहीं कर सकी। बात यह है कि विमय कवि-कल्पनाही अुनका अस्तरी जीवन है और अुनके वाणिविहृगकी आश्रय शाखा है जो कल्पना-वाक्याके अिद्रजालसे निर्यके स्वर्गी रचना कर सकती है। चायी वस्तुअें जितके सार्थमात्रसे मुन्दर होकर मिट्टीके पूँड और आकाशके तारे हो जाती हैं, वही अुनका अुपजीव्य है। जिस कविके हाथमें अलदोवका चिराग है, वह किसी मामूली हीन प्रयुकी प्रयु बँये

मानें। यदि बाहर आधी और तूफान आये, अधेरा अतरे, तो भी भीतरकी रोगनी है, स्वप्न है दिम्बिजयी चिन्ता है।'

अस प्रकारकी आलोचनासे कुछ हाथ लगना असम्भव है, विपथवस्तुका स्पष्टीकरण करनेके बजाय असी आलोचनाओसे वह और भी अस्पष्ट हो जाती है। हाँ, अस आलोचनासे भी यह स्पष्ट हो जाता है कि बुद्धदेव पलायनवादी है या कुछ असीके त्रिदेगिर्द, अथवा आलोचक भी मानते हैं कि मध्यवित्त जीवनके परि-प्रेषिपथमें बुद्धदेव वसुने वर्तमान समाज व्यवस्थाको चित्रित किया है। श्री सरकार लिखते हैं कि मध्यवित्त-जीवनमें 'बिचल पनशङ्का चीरकार है हृत्पिडमें हताशाका डमरू ब ना करता है, पर बुद्धदेवने पराजय स्वीकार नहीं की, बिना लडाओके ही विजयी हुये हैं। अम राज्यम अपनी पुकार अठायी है, जो राज्य शब्द, ध्यान रूप, और प्रेमवा है। जहाँ मनुष्य अकेला है, अकेला और रवाधीन, अपने भयसे मुक्त। या मनुष्य जहाँ हृदयके सम्पर्कसे दूसरेके साथ युक्त है, और असी अकारामीभूत शक्तितमें ही वह विरट्ट-रूपी विश्व-व्यापारकी पहुँचके बाहर है। असीलिअे अुनकी कवितामें गरीब वशर्क भी कह सकता है—

अहह ! सुम्बर यह पुष्पी, सुम्बर यह जीवन ।

बिना मूल्यके ही, अमूल्य दान है

पण्यराशिकी जघन्य कमी है,

देहधारीको अिससे चाहे जितना दुख ही

अनल अगममें है मुक्त मेरा प्राण ।

श्री सरकार अिम अुदाहरणके द्वारा अपने मुक-दमेको साबित करनेके बजाय असे बुरी तरह बोर देने है। बलाकं जो कुछ कहता है वह स्पष्टरूपसे अिस दुनियासे निराश होकर दूमरी बातोंमें भरोसा करता है। यह सब होनेपर भी बुद्धदेव वसुको हम दोष नहीं देने, क्योंकि जैसा युग है, वे असीकी लेकर चलते हैं। वे

दुनियाकी बदलनेके लिये अुत्सुक नहीं, शायद वे अुमकी आशा छोड़ चुके हैं, अिसलिअे वे अुमसे भागकर जात बचाने है। पर कवि होनेके माने वे अपने भगोडेपनको सुन्दर वाचनोंके घुम्रजालमें छिपाना जानते हैं, और अंवा अ्रम अुत्पन्न करनेमें समर्थ होते हैं कि वे सत्राम कर रहे हैं। अिममें कोअी सन्देह नहीं कि वे अेक राविन-शाली कवि हैं और भाषापर अुनका बहुत अधिक अधिकार है।

हमने अिस लेखमें मुख्यतः कवि बुद्धदेवकी ही आलोचना की है, पर वे कवि होनेके अतिरिक्त अेक आलोचक, अुपन्यासकार तथा कहानीकार भी हैं। अुन्होन अंग्रेजीमें 'अंन अेकर आप, ग्रीन प्राप्त' लिखा है, जिससे अिररके बगला साहित्यका परिचय बगलके बाहरके लोगोंको मिलता है। यह पुस्तक तथ्यपूर्ण है। अेक हृदयक वे निष्पथ भी रहने हैं। आलोचनामें गहराअीतक जानेकी चेष्टा करने हैं। बहज और सुप-ठिन हैं, दूर-दूरको कोडो लाते हैं। अुपकी लिखी हुअी चीजोंकी समझनेके लिये अुनकी तरह स्वाध्यायी होना आवश्यक है।

अुप-न्यास और कहानी क्षेत्रमें श्री बुद्धदेव वसुका नाम बगला लेखकोंमें प्रमुख है। अुनका पहला अुप-न्यास 'साडा' १९३० में प्रकाशित हुआ था। १९३३ में 'जेदिन फुटलो कमल' और 'अुसरपीपुलि' १९४२ में 'कानोहवा' और १९४६ में 'विशाखा' १९४९ में 'विपयिडोर' प्रकाशित हुअे। अुनकी पुस्तकोंमें यौन-आवेदनकी प्रबलता है। मैंने अपनी 'प्रगतिवादकी रूप-रेखा, नामकी पुस्तकमें अिनके सम्बन्धमें लिखा है। 'बृट्ट अुट्ट प्रतिक्रियावादी भी मानते हैं। पर यह कोअी नहीं कहता कि बुद्धदेव वसु कलाकार नहीं है। वे अेक अुँचे दर्जेके कलाकार हैं, और अुनमें हम मध्यवित्तवर्गके अेक रूपको देख सकते हैं।

[दिखी

अेक साधारण अनुभव

: श्री कन्हैयालाल प्राणिकलाल मुंशी :

रघुनन्दन और मं जिगरी दोस्त थे । बचपनमें हमारी पटाओ ही नाथ नहीं हुआ थी, वरन् प्रत्येक प्रकारकी भविष्यकी आशाओंके जो बड़े-बड़े हवाओ किले हम बनाते थे उनमें भी हम रात-दिन साथ रहते थे । कालिजमें पढनेवाले अनुभवहीन युवकोंकी स्वच्छन्द कल्पनाते हम अनेक प्रकारकी बातें सोचते थे । हम समझते थे कि हममें विद्वत्त्वयापी आन्दोलनोंके अग्रगण्य नेता होनेकी शक्ति है और प्रलयकालके समुद्रकी तरंगों जैसी न्युधरकी आत्मा और वृद्धिका ब्रह्माह । यही नहीं, हम अपनी अिन समस्त शक्तियोंको सत्कारकी अुन्नतिके लिये अुपयोग करनेवा भी दृढ़ निश्चय करते थे । अिनमें भी मेरी अपेक्षा रघुनन्दनमें टीमटाम कुछ अधिक था । वह बातें भी बड़-बड़ कर करता था । अिसलिये मेरी समझमें यह नहीं आता था कि वह कौनसा अुच्च पद प्राप्त करेगा । कभी अंसा लगता कि वह धार्मिक सुधारक होकर सत्यके लिये श्रीनामसीहके समान भयकर मृत्युको अपनातेवा गौरव पायेगा । कभी अंसा लगता कि देव-प्रेमपर बलि होकर कोओ धीर पुरुष बनेगा और कभी अंसा लगता कि मुरेन्द्रनाथके समान अनुपम वक्ताव-कलाका धर्मा होकर देशकी चारों दिशाओंकी दहकने लूँ अंसा शान्दागारीमें भर देगा ।

वादमें वह बम्बओ आया । पंमेकी कुछ कमी होनेसे मुझे तो अेक अंमेकी स्कूलकी चालीम रायकी मास्टरीमें अपने कल्पना-अगतकी छोड़ना पडा । पर रघुनन्दनने अपना अध्ययन जारी रखा । हमारा पत्र-व्यवहार बराबर चलता रहा और मं यह सोचकर सतोष प्राप्त करता रहा कि यदि मैं नहीं तो कम-से कम मेरा मित्र तो बचपनके स्वप्नोंको मूर्तिपान करेगा ही ।

अेक वर्ष बाद हम मिले । मुझे कुछ खेद हुआ । मैं साचना था कि रघुनन्दनके निर्मल हृदयकी स्वच्छता-पर कभी तनिक भी मेल नहीं चड़ेगा परन्तु अुनकी चाल-

टाल देखकर मुझे अचम्भा हुआ । अंतरके अुन्नतिकी अपेक्षा अुसमें बाह्य प्रदर्शन अधिक दिखायी दिया । प्रेम और ब्रह्माहके निर्मल स्त्रोतमें दुनिपादारीकी बीच अधिक जमती जान पडी । मैंने ये विचार मनसे निकाल डाले । मोचा, नभव है, मेरी दृष्टिका दोष हो ! मैंने पुराने स्वप्नोंकी व्याप्त खेटी, लूँसने, अुनमें घोरा-मा रस लिया लेकिन मुझे लगा कि वह बम्बओकी रंगीनी, वहाँके नाटक और वहाँके फंगनमें अपेक्षाकृत अधिक रस लेने लगा है । अंसा अनुभव हुआ जैसे अुसने हमारी आशाओंको अूँची-अूँची अट्टालिकाओंमें कुछ रद्दोबदल कर दिया हो । अिनना होनेपर भी अुसमें मेरी श्रद्धा अचल रही । मैंने सोचा कि सासारिक सुखोंकी अिष्ट माननेवाले पाश्चात्य सस्कृतिके अनुपम केन्द्र बम्बओके वातावरणसे मनुष्यके दृष्टिकोणमें परिवर्तन होना स्वाभाविक है अिसलिये अपने स्नेहाधिक्यके कारण मैंने अुसके स्पष्ट परिष्कृत होनेवाले अयपतनकी ओर कोओ ध्यान नहीं दिया ।

रघुनन्दन और अेक सुशील वालिकाओं परस्पर प्रेम था । वह मुझे सदैव पत्रोंमें अुसके गुणोंके विषयमें लिखा करता था । मैं समझता था कि कुछ दिन बाद वह अुसमें विवाह करेगा । लेकिन अुसने मुझे कहा कि अुस लड़कीके बापकी स्थिति अच्छी न होने कारण अुसने विवाह स्वीकृत कर दिया है ।

दो-अेक महीने बाद मुझे अेक पत्र मिला कि रघुनन्दन अेक धनवानकी लड़कीने विवाह कर रहा है । पहले मैंने विद्वान नहीं किया । यहाँ तक कि रघुनन्दनके लिखनेपर भी अुसे कोओ जवाब नहीं दिया । कारण, मैं कभी यह मान ही नहीं सकता था कि रघुनन्दन अंसा अुच्चादर्शवाला मनुष्य प्रेम-मन्थनद्वारा अपनायी गयी अपनी प्रियतमाकी छोड़कर किसी दूसरी स्त्रीसे विवाह करेगा । लेकिन अिसी धीच मुझे बम्बओ

जाना पडा। पहले जब बन्नी में बम्बकी जाता था तो रघुनन्दन पत्र पाकर दौड़ता हुआ स्टेशन आता था पर जिस वार मेरे पहुँचनेके अंक दिन बाद तक भी वह नहीं आया। मेरे मनमें अनेक भ्रम उत्पन्न हुआ। मेरा हृदय भी बहुत दुखी हुआ। रघुनन्दनके अज्ञात भविष्य और देवोपयोगितापर मेरी अिननी श्रद्धा थी कि मैं यह मानने लग गया था कि यदि अुसका अध-प-तन हो गया तो देश और ममाजके लिये अंक भयकर आघात होगा।

दूसरे दिन भाओ साहब दिलायी दिये। विला-यती रग-डग और बहुमू-य वस्त्रोसे सुमजित रघुनन्दनको देगकर मुझे आश्चर्य हुआ। 'सादा जीवन अुच्च विचार' के पवित्र आदर्शकी साधना करनेवालेमें यह शान शीतल कंसी ? साहब बैठे। अूंकी सोसायटी-वात्री चालाकीमे कुछ देर अिधर-अुधरकी बातें की। मुझसे न रहा गया। मेने विवाहके सम्बन्धमें पूछा।

"हाँ, अमुक सेठकी अिकलीती लडकीके साथ अगले महीने मेरा विवाह होगा', अगुलीकी अगुठीके चमकते हुअे नगको अूपर लाते हुअे अुसन कहा, 'मुझे भी आज ही वालकेश्वर चलना पडगा। तेरा परिचय कराअूंगा।' सत्यको छुपाकर कपट द्वारा किया गया मित्र द्रोह, गरीब माँ बापकी निरागर लडकीको बाधा देकर किया गया प्रेम द्रोह, धनके लालचमें नये सम्बन्धको स्वीकार करनेके साथ-साथ फेशनमें डूबकर किया गया अन्तरका आच्छादन और आत्मद्रोह, यह सब मेने देखा और बिना धारमाये अुसे अंसी घुष्टता करते देखकर मुझे अुसके प्रति पूणा अुत्पन्न हुआ। यह रघुनन्दन! मेन अुसे आडे हाथी लिया। घण्टे भर तक जो कुछ मुझमे कहा गया सो कहा, और तिरस्कारका गमरत शब्दकोष खाली कर दिया, लेकिन वह हँसता ही रहा।

अन्तमें अुसने जबाब दिया "देव भाओ, ये सब अपने स्वप्न थे। क्या हममें त्वय्यर अयवा शकरी प्रतिभा है ? हम लोग अल्पशक्तिकाले है। अितना होनेपर भी यदि हमारे पास बाकी पैसा हो तो हम

किसी अशमें अुसका सदुपयोग कर सकते है। केवल भायण देनेकी अपेक्षा पंमेका त्याग करके देशकी सेवा करनेमें अधिका शोभा है। तू जरा सोच कि अिसमें मनको तो थोडा मारना पडता है पर अिसके द्वारा अिम ममाजको कितना अधिक लाभ पहुँचा सकता है।" यह वान थी तो हलकी पर डीक मालूम पडती थी। मुझ लगा कि रघुनन्दन अय अवश्य कुछ करेगा। वह लखपती होकर अुच्च त्यागका आदर्श रखगा। लखमी और सरस्वती दोनोको प्रमन्न करेगा और वास्तवम अपनी भावना-ओको किसी-न-किसी अशमें पूण करगा।

कुछ समय बाद घूमघाममे रघुनन्दनका विवाह हुआ। जैसा कि सुना गया छह महीने बाद अुमकी परिश्यवना प्रियतमा विरहसे वगीण हाकर स्वधाम चली गयी। अुस समय रघुनन्दन महाबलेश्वरमें आनन्द लूट रहा था। नयी स्त्रीके सधन स्नेहमें निर्धन अभागिनीकी अवाल मृत्युकी कौन चिन्ता करता ? पत्र पढ़कर अुसे रईकी टोकरीमें पेंककर रघुनन्दन पत्नीके साथ टैनिंग खेलने चला गया।

अुसके तीन वर्ष बादमें फिर बम्बकी पहुँचा। मेरे लिये स्टेशनपर मोटर तैयार थी। अपार धन वैभवमें विहार करनका यह अनुभव मेरे लिये नया था। तेजीसे हम वालकेश्वर पहुँचे। आदमियाने आकर मेरे लिये निश्चित कमरा दिलाया। सारे मकानवा ठाट-घाट राजाओके गर्वको चूर करनेवाडा था। यदि केवल बगलेके ही चेवारके सात्र-सामानको वचकर पैसा अिकट्टा किया जाता ता (योरमकी सालके अकाठमें अंक भी प्राणी या जानवर न मरने पाना। काठियावाडमें पंसेके अभावके कारण अनाजके बिना तडपने हुअे मृत्यु शैथ्यामें पड प्राणीकी अपेक्षा अक घृणित व्यक्तिको प्रसन्न रखनेके लिये अुसको तृष्णाको शान्त करनेके लिये कितना खर्च, कितनी मेहनत ! कितनी सुशामद !

तदनन्तर मैं रघुनन्दनसे मिला। अपने विद्वान वालमित्रकी मानसिक अुत्साहमे चमकनी आँखो, अुत्सा-मिलापाने मूजती वाणी, और अध्ययनकी गरिमामे दीप्त भालके स्वानपर अन्तसायी हुआ विषयी आँखो,

फरानेबुल समझी जानेवाले पारसियोंकी-सी भाषा कठिनाओंसे निकलनेवाली लम्बीसी आवाज और अनेक मुगन्धित पदार्थोंसे झकझकाता हुआ मुख देखकर मैं चौंक पड़ा।

असके बाद जैसे बीट-मत्यर या शीरो-लकड़ोंमें कोअी बड़ी भारी भय्यता हो जैसे वह मुझे अपना बगला दिखानेके लिये साथ लेकर चला। उसके वर्णनसे किसको लाभ होनेवाला था? मुझे घीसने अंक महात्माकी याद आयी। अंक पंसेवाले सिप्यने डायोजिनीसको अपना भव्य महल दिखाकर प्रदासकी दृष्टिने उसके सम्बन्धमें कुछ तत्ववेत्ताका बलिप्राय पूछा। डायोजिनीसने सिप्यके मुखपर धूका और हँसकर बोला—“और सब तो सुन्दर है पर अितनी ही सी जगह गन्दी है।” मुझे भी रघुनन्दनको अंसा ही कोअी प्रदास-मन्त्र देनेकी अिच्छा हुआ।

यह अमुक ‘हाल’ और यह ‘पल’ रूम करते-वर्ते हम लायब्रेरी वही जानेवाली जगहपर आये। वहाँ मैंने अनेक चमकती हुई अलमारियोंमें अत्यन्त पानदार जिल्दों और सुनहरे नामोंसे सुशोभित कब्री अंक अस्पदर्य और विलासियोंकी वासना तुरपर्य लखे गये अुपन्यास देखे। कुछ अलमारियोंमें माहिरियक ग्रथ ज्यकिन्त्यो—विना पना चीरे—तोमा दे रहे थे। गत पाँच वर्षोंमें किसीने भी अुन्हें छुआ हो, अंसा नहीं जान पड़ता था।

“रघुनन्दन। तेरी कालिजकी छोटी कित्तावांका क्या हुआ? वे तो तुझे प्राणोंमें भी अधिक प्यारी थी।”

“कीनमी, वे छह-छह आनेवायी। हाँ, वे तो विलकुल बेकार थी। अुन्हें मैंने फेंक दिया।” मच है, जब अुंचे बिचारोंको जन्म देनेवाची ही चली गयी तब अुंची भावनाओं ही कहींसे रह सचती हैं?

अितनेमें अंक नौकरने आकर कहा कि जोसफाजिन बीमार हो गयी है। यह नाम मुनकर मुझे महान नेपोलियनकी स्त्रीका स्मरण हो आया। रघुनन्दनका चिन्ताग्रन्थ मुझ देणकर मुझे यह जाननेकी जिलाना हुआ कि यह जोसफाजिन कीन है। हाँकते-हाँकते हम

अंक कमरेमें आये। वह कमरा कुत्तोंका निजरासोट जैसा लगता था। वारप, मैंने वहाँ १५-२० कुत्तोंको मौज करते हुअे देखा। अुन्हें देखकर जब मैं अर्धिक घुणाके भावसे भर रहा था तब मुझे पता चला कि जोसफाजिन अंक कुतिया है। अिस भाग्यशाची जानवरके लिये मोटरमें डाक्टर आया और जब अुने कुछ आराम मिला तब रघुनन्दनकी जानमें-जान आयो। अुस समय मुझे अुम स्वर्गवासिनी, प्रेममयी नारीका ध्यान आना जो रघुनन्दनकी नीचताके कारण बचपनमें ही मर गयी थी। मुझे कंपकपी आ गयी। अुसके बाद अुसने मुझे प्रत्येक कुत्तेकी जाति, कुटुम्ब, गुण आदिना अितिहास बताया। यदि अितनी अधिक स्मरण-शक्तिका प्रयोग नभ्यत्र किया गया होता तो निस्संदेह हिन्दुस्तानका अितिहास लिख जाता।

अिनके बादको अपनी तबलेकी यात्रा और अुसके घोड़ोंके गुणोंका विवरण देखकर मैं पाठकोंको बुझाना नहीं चाहता। मुझे तो यही लगा कि यदि रघुनन्दन कुत्तों अथवा घोड़े-गधोंका व्यापारी होता तो बहुत अच्छा काम करता और दुनियाके लिये कहीं अधिक अुपयोगी सिद्ध होता। तत्पश्चात् रघुनन्दनने अपनी समृद्धि और वस्तुओंका वर्णन किया और मुझसे पूछा—“क्या दोस्त! सब लाजवाब हैं न? केवल अंक ही तकलीक है।”

“क्या?” मैंने अुपेक्षया भावसे पूछा।

“खर्च नहीं चलना। क्या कर्ह? बड़ी मुश्किल पड़ती है।”

अुस समय मुझे घोड़ी देर पहले देखे हुअे अंक दर्जन घोड़े, दो दर्जन कुत्ते और पाँच दर्जन जूते आद आये, पर मैं धोन्ग नहीं।

“तब तो किसी दूसरे काममें पंसा गायदही लगता हो?” मैंने पूछा।

“नहीं भाओ। अंक कौडी भी नहीं बचती। मैं क्या कर्ह?” यह बात अुसने अंसे कही जैसे अिसमें कीटीका दोष हो। और फिर पूछा—“अेकिन दोन्ग सच बना, सब वस्तुओंकी ध्वस्तया तो ठीक है न?”

‘विलगुल ठीक है रघुनन्दन, लेकिन और वान है और यह यह कि तेरे यहाँ सब वस्तुओंने लिअ तो जगह है पर अंक वस्तु रगनेकी जगह वही नहीं दिखायी देनी ।’

‘किगरी ?’

‘किगरी ! यहाँ सब कुछ है पर तेरी भावना पुरुषार्थके अँके आदर्श, त्याग और मेवाके शुद्ध सब पना स्थान यहाँ वही नहीं दिखायी देता । अनुके लिअ वही जगह नहीं है । अँसा लगता है कि वे सब कागवा दबीकी असा छोटी और नदी कोठरीमें रह गयी जिनमें

कि नू पहुँचे रहता था । न केवल वे बरिच पुराना रघुनन्दन भी वही रह गया । क्या अँसा नहीं है ?’

मने अपन छाटे-से गाँवमें और घाडी सो तनव्वाह में अपनी भावनाओंकी रघुनन्दनकी अपरवा अधिअ अच्छे ढंगसे मुरकियत रखा था । अिसाँअे पाँच छह दिनमेंही आनन्दके अ मधिअ अुपभोगके अूरर में अपने गाँवको चल दिया । बगला छोटत ममय मूले भतृरिका यह दलोन याद आया—

साहित्य समीकला विहीन साध्यात् पशु पुच्छविषाणहीन ।
तृण न सादप्रवि जीवमानस्तद्भाषधेय परम पशूनाम् ॥’

गुजरातीमें अनुवादक:- श्री पद्मसिंह शर्मा, ‘कमलेश’, अेम अे

[आगरा

खरा नाटककार

: श्री भा वि. चरेकर :

(मराठी)

(हिन्दी)

नाटककार म्हणजे— नाट्य लेखक नव्हे—नाटकाची निमित्ती करणाग नाटककार हा प्रतिमृष्टि निर्माण करणारा अंक विद्वामित्र आहे विध्यालय ला जें साधक नाही, जें गुचक नाही, बी फाक नाही तेच निर्माण करणाच सामर्थ्य ज्याच्या अगी आहे, तोच तरा नाटककार

समाजातील गुणावगुण टिठून निवडून काढून, त्यांनील गुणदोषाच प्रदर्शन जो प्रत्यक्ष स्वरूपान करून दाखवतो त्या गुणदोषाच्या जेरीज, कजायागी आणि गुणाकरातून कोणत्या तरी प्रमेया निश्चित स्वरूप जो समोर माडू शकतो तोच नाटककार

नाटककारता मतलब—नाट्यलेखक नहीं—नाटकची निमित्ति करनेवाला नाटककार प्रतिमृष्टि निर्माण करनेवाला अंक विद्वामित्र है । शिरजनहा—विधाताको जो नहीं मधा जो नहीं गुना न रुचा वह निर्माण करनेका सामर्थ्य जिनके दिल दिमागमें है, वही है खरा नाटककार ।

समाजे गुणावगुण दरग-परखकर, चुन चुनकर, अतसे गुण-दोषोचा प्रदर्शन जो प्रत्यक्ष रूपमें कर दिखता है, अून गुण दोषोचे धन, ऋण, गुणितमेंसे किमी-न किसी प्रमेयका निश्चित स्वरूप जो सामने रख सकता है, प्रस्तुत कर सकता है वही है नाटककार ।

राजस्थानका अेक लोकगीत 'मणिपारी'

: श्री कन्हैयालाल सहल, अेम. अे. :

अेक वार राधाने कृष्णसे कहा कि मं अेसी मनिहारिने चूडिया पहनना चाहती हूं ओ मुझने भी अधिक सुन्दर हो । कृष्णने कहा—'प्रिये ! तुम्हे सुन्दर चूडियोमे काम है अथवा मनिहारिनके सोन्दरसे ? ' 'दोनोंमे' राधाने सगर्व भौहोमें मुस्कराते हुअे अुतर दिया ।

कृष्णके सामने विकट समस्या थी—राधासे सुन्दर मनिहारिन भला कहा मिलेगी ? मनमोहनने सोचा— मे ही अथो न मनिहारिनका वेग धारण कर लूं ? त्रियाहट भी पार पड जायेगा और खासा अज्जा मनोविनोद भी रहेगा । राजस्थानी लोकगीतकारके शब्दोंमें—

“हर मे रूप धरया मणिपारी
होके तो हुम्शरार हर ने रूप धरया मोहनी
सजं हे तिणगार हर की मूरत लगं सोहणी
लक्ष्मीके अेतार दालिदरकी खोवणी
मनुष्यका गुवाल भेरा सीस गुंय दे रे जाली
पटिया मुपार जुल्की छोड दे ने काली
पंर लिया छाप छल्ना हमलो हमेल पाली
चूप बाजूबंद सोवे वानों मे मुकाली वाली
धरे धूमता घाघरा चोली पंरी चोपाली
चूडा लिया दो अ्यार होगा वरसाणके त्यार
अेजे पन्ना और जंवार
लिया टोकरीमें डाल
हर के पग पायल सगणकारी ॥”

कृष्णने मनिहारिनका रूप धारण कर लिया, हुम्शरार होकर भगवानने मोहिनीका रूप बना लिया । शृंगार कर लेनेपर कृष्ण अत्यन्त शोभित हुअे, अुनकी मृगावृत्तिसे नूर वरमने लग्गा, दरिद्रताको दूर अगाने-वाली सावयानु लक्ष्मीके अवतार-से वे जान पडे ।

राधाने कहा— 'हे गोपाल ! मेरा सिर गुंय दे, बालोंके पट्टोंको सँवार दे ।'

अिधर कृष्णने अपना सुन्दर त्रिचोचिन वेग बना लिया—छाप-छल्ले पहन लिये, गलेमें हँसली डाल ली, चूप और बाजूबंद शोभित होने लगे, वानोंमे वाली पहन ली । पेर-पुंर 'घाघरा' और चापानी चोली

पहन ली । दो चार सुन्दर चूडे ले लिये और बरसाना जानेको तैयार हो गये । पन्ने और जवाहरात टोकनीने डाल लिये । अुनके पंरीमें पायलकी सनकार होने लयी ।

यदुराज चलने लगे, पायलका 'छम-छम' शब्द होने लगा, धरती 'धम-धम' हिलने लगी । 'गम्म-गम्म' करने हुअे श्रीकृष्ण बरसाने जा पहुँचे । द्वारपालोंने कहा—हे मनिहारिन ! तनिक ठहर, अपना पनीना मुसा ले, जरा विश्राम कर, कुछ मुस्ता ले । कृष्णने खोलिअेको अुतार दिया और वे शीतल पवनका सेवन करने लगे । कुछ देर बाद बोले—“मं चूडा बेचने आयी हूं, मुझे राधिकाका भवन बतलाओ, अुसके विना मेरा चूडा और यहाँ कौन खरीद सत्रता है ?”

राधिकाकी सखी ललिताने मनिहारिनमे कहा—“बहिन ! कौनअा तुम्हारा गांव है ? कहाँसे चलकर आयी हो और क्या तुम्हारा नाम है ? राधा तेरा चूडा अवदप खरीद लेगी, रोक-रोककर तुजे दाम देगी । मेरे पीछे होले, वरसानेकी सँरकर ले । तुजे राधिकाके महल दिखलाअुंगी और तेरी यडी टहल कअुंगी ।” मनिहारिन वेधपारी कृष्ण बोल अुठे—“तेरा गुण मानुंगी, मुजे राधिकासे अर मिळा । रोक-रोक दाम दिलका दे ती तुजे भी अेक रूपया अिनामका दूंगी ।” ललिता चलकर राधिकाके महलमें पहुँची और कहने लगी—राधे ! अेक नयी मनिहारिन आयी है; अुसके रूपका तो कहना ही क्या ! धरतीपर अंसा रूप पहले कभी देवनेकी नहीं मिळा । अदमून सुन्दरी है वह, माती सूर्पकी विरणोंने स्वय अुसका मात्र-शृंगार किया हो ।

“घाने जादूरात्री जिणकी पायल बाजे छिम छिम चाल जो धुमायो दाना धरती हार्ले धम्म-धम्म वरसाण मे जाय पूंरया जादूरात्री गम्म-गम्म उधोडी कं दरबाणी बोल्या मणपारी नू धम्म धम्म सीने को मेठ प्यारी जरा लेलेके गम्म गम्म चोलियेकी दिया ठार लेणं साम्या ठंडी पून चूडा बेचण आयी मअं राधेका बताओ भीन राधे दिन चूडा मेरा और यहाँ पर लेगा कौण ?

मणियारी से ललता बोली कूणसी तुम्हारी गाँव
कडे सेती आओ भाण बताय ना तेरो नाव
राधे तेरो चूडे लेगी रोक रोक कर देगी वाम
होले मेरी गैल करले, बरसाणकी सेल
तन्न राधेका दिलाओ म्हेल

भौत कलेंगी तेरी टहैल ।

तेरा गूण मानूँ प्यारी राधे तँ मिलावे सही
रोक रोक वाम दिवा वे अक रूपयो दूगी तट्टी
ललित। सखी चालक राधेजीक म्हेल गयो
सुण हे राध घात अक मणियारी तो आयो नयो
रूप हँ अपार अँसे धरती अपूर देखी नाओँ

या बडो अनोखी नारी

जँसे सूरज किण्ण सुधारी ॥

राधिका सुरत बोल झूठा—यदि वह मजमे भी
अधिक मुदरी है तो गोध्र उसके दशन करवा तनिक
भी देर न लगा। ललित। चलकर दरवाजपर आयी
और कहन लगी—हे मनिहारिन! तू भी प्र चल तुझे
राधिकाने अभी बुला भजा है। ललित। राधे साथ कृष्ण
राधिकाने महलमें पहुँच। रूपसे अभिभूत होकर
राधिकान मनिहारिनके लिये जाजिम बिछया दी।
राधिकाने वचन सुनकर मनिहारिनन अपना छुबडा
खोला और चूडी दिवाने दुअ्रे कहा—अिन चूडोका मूल्य
बहुत अधिक है, हीरे—पन्न और नगोसे य जडे हैं,
कार्तिये जगमग जगमग कर रह ह चतुर है तो
पहन ले मूर्ख तो अिनका मोल लया नहीं पाअगा।
राधिकान कहा—अिससे भी बहुमूल्य चूडे निकालो, मैं
अूनका मोल कर सकूंगी। चूड पहननेके अिन राधिकाने
अपनी भुजा फँडा दी।

'मेरे से सख्य हँ तो दरसन हे कराओ ना
अन्दो करके जा हे ललता। बार मत लाओ ना
ललता सखी चालकर डडोडी अपूर आयी है
मणियारी। तू चाल तन्न राधजी बुलायी है
ललित। तजी के स य क्रिसण महला भीतर आया हँ
देख देख कँ रूप अिन जन्म तो विछायी है

राधेजीका सुणकर बोल
घोलियेकी दिया खोल
या ले चूडा पँर प्यारी
यारी अिनका कहिअे मोल ।
हीरा व ना नग जडधा
रगमें होया सखकासोल

घातर है मो पँर प्यारी
मूरख नै पट नै तोल
राधजी तो बोलिया बोल
अँसे बधका खीन
माने सख कीमतका तोल
राधे पँरणने भुजा पसारी
मेरी भर दे कलँया सारी ॥

राधिका बहन लगी—अरी ! तू अजीब मनि
हारिन है वाँहमें चूडा पहनाने टुअ भुजा वयो मरोड
रही है ? कि तु त्रिलोकानाथ कृष्ण राधिकास आँवें
चार नहीं करते, अिस भयने कि कहीं सब भद प्रकट न
हो जाअ ! हे त्रिलोकीके स्वामिन ! तुम्हारी मायाको
कीन समझ सकता है ? ज्ञानी गगादासन कृष्णके रूपका
वधान किया है। वही लीलायारी मृष्ि रचता है
और फिर अुसे समेट लता है।

बडभागिनो है राधा जिसने यहाँ कृष्ण पाहुन
वनकर आय ह।

अरे ! अिधर तो देखो कृष्णन अपनी माडी
अुनार दी और अक नपणम ही मोर मुकुट धारी बन
चारी बन गय ! !

"अंगों मे चूडा पहरावे भुजा वय परोडे है ?
त्रिलोकीको नाथ देखो निजजर नहीं जोड रँ
त्रिलोकीका नाथ धारी माया नै कुण जान हँ !
गगादास ज्ञानी हरकँ अदन बल्लाने हँ
मणियारीकी लीला सुणके भरम नै वधावणा
घाहीकी हँ सुट्टी या तो बाटीका खवावणा
राधेजीका बडा भाग क्रिमण आया पावणा
हर न तार बगाधी साडी
बने मोर मुकट बनचारी ! !

जहाँ कृष्ण साडी अुनारवर मोर मुकुटधारी बन
जाते ह यहाँ ही यह गीत अु-मुकुटकी चरम सीमाकी
छु लेता है और यही अिसका अंत भी हो जाता है।
चरम सीमाके बाद यदि गीत आग चलता तो यह नीरस
हा जाता। बडी सरल सुबोध भाषामें यह गीत लिखा
गया है और बडा प्रवाह है अिसमें। राजस्थानमें
जोगी लोग बडी सरस अब मधुर लयमें भारगीपर अिन
गीतकी गति ह और गृहस्थीका मनोरजन करते हँ।

किननी मुखी गृहस्थीका मुरध्व श्रुतिमनोहर
गीत है यह।

[पिलानी ।

पद्मावतका गूढ-तत्त्व

: श्री रामपूजन तिवारी, अेम. अे. :

जायमीके 'पद्मावन' के अन्तमें निम्नलिखित पत्रितयां भाना 'पद्मावन' के गूढ-तत्वोंको समझनेके लिये कुछी स्वरूप दी गयी है ।

तन चित्तभ्र, मन राजा कोन्हा ।
हिय सिधल, बुधि परामनि कोन्हा ॥
गुरु सुआ बेप्रि पय देखावा ।
बिनु गुरु जातको निरगुन पावा ॥
नागमती यह दुनिया घषा ।
बांवा सोप्रि न अहि वितबंधा ॥
राघव दूत सोप्रो संतानू ।
माया अलाभुदो मुलनानू ॥

अर्थात् यह शरीर चित्तोर है और मन ही राजा है । हृदय सिंहल द्वीप और बुद्धि पचावती रानी । सुग्या गुरु है जो परमात्मा तक पहुँचनेका मार्ग दिखलाता है, वयो कि बिना गुरुके समारमें परमात्माको कौन पा सकता है ? नागमती, सामारिक जखल है और ब्रूसमें जो नहीं बँधा, वही बच सकता है ? राघवदूत ही मीतान है और मुलान अलाभुदो माया है ।

में अिन पत्रितयांकी सूक्तियाके दृष्टिकोणसे समझनेकी वासिध बन्गेा और देखना चाहेगा कि अपुपुंन पत्रितयोमें पद्मावतीकी बुद्धि समझनेके लिये जो कहा गया है वह कहानक पुंनितसगत है ।

सूरी परमाना विपयक ज्ञानकी प्राप्तिके लिये बुद्धिको कोशी स्थान नहीं देने । लेकिन मुनजिला-सिद्धान्तका माननेवाला कहत है कि परमात्मा उम्बरी आप्पामिक ज्ञान (मारियन) वास्तवमें मन्तिष्य और बुद्धिका ध्यागार है, अत्रयैव बुद्धिके द्वारा ही आदमी अिम ज्ञानको पानेमें समर्थ हो सकता है । अधिकाश सूरी अिये स्वीकार नहीं करत । हुननीरोने वनलाया

है कि वह ज्ञान हाली अर्थात् हृदय-प्रभूत है । वह अिन ज्ञानको हृदयका विषय मानता है । अबुल ह्दत नूरीका कहना है कि परमात्माको पानेका रास्ता परमात्माके सिवा कोशी नहीं बता सकता । अपनी बुद्धिके द्वारा मनुष्य अुस परमात्माको जानना चाहता है लेकिन अेक सीमानक पहुँचकर अुसकी गति अवरद्ध हो जाती है और मनुष्यको अपनी असहायवस्थाका बोध होने लगता है । अुस समय किसी प्रकारका मानवीय शन अुमकी सहायना नहीं करता, बूँकि वह ज्ञान परमात्माके गुणोपे ही सम्बन्ध रखता है और परमाना अुन गुणोंका अपने ध्यानमें लगे हुअे सावकोरर प्रकट करता है ।

सूक्तियोंका कहना है कि मारिक (परमज्ञान) परमात्माके द्वारा ही अन्वि-सम्पन्न होता है; अन्वया बिना परमात्माकी सहायताके परमात्माका नहीं जाना जा सकता । कहा जाता है कि जब परमात्माने बुद्धिका निर्माण किया तब अुमने पूछा कि 'मे कौन हूँ ?' बुद्धि धीन रह गयी । तब परमानाने अपने 'अेक-व' का प्रकाश अुसपर डाला और अुमने वतलाया कि 'तुम परमात्मा हो' ।

अिमसे यह सहज ही समया जा सकता है कि आर बुद्धिका यही अय समता जाअे तो बुद्धि और पद्मावतीको अेक समपना ठीक नहीं होगा । जादसीने जाह-जगहरर संकेत किया है कि पद्मावती वह परीय मता है जिसके लिये रत्नेयन अर्थात् सानक मभी प्रकारके बटोंका वरप करता है । वंस सर्वत्र अिसी रूपमें पद्मावतीको चित्रित नहीं किया गया है । बुद्धिके संधधमें सूक्तियोंके दृष्टिकोणको समय लेनेवर यह

२ वशी, पृ २६७ ।

३ मांगरेन्मिय स्टडीज अिन अर्ली मिडिल-विग्म अिन दि निदर अेन्ट मिडिल अ्रीन्ट पृ २०९

निस्सकोच कहा जा सकता है कि बुद्धि को पद्मावती समझनेके लिये जो कहा गया है उसे ठीक नहीं माना जा सकता ।

अब हम अद्भुत पवित्रयोनो दूसरी तरहसे समझन की चेष्टा कर । अगर पद्मावतीको परोक्ष सत्ता मानते हैं तो आत्मा, परमात्मा, मनुष्य और सृष्टिसे सबधमें सूक्तियोका क्या रहना है जिसकी बोधो यी चर्चा कर लेना आवश्यक है । जिससे सूक्तियोके दृष्टिकोणको हम अच्छी तरहसे समझ सके कि ' मनुष्यके भीतर परोक्ष सत्ताके वाग ' का अर्थ क्या है ? जिससे यह भी स्पष्ट हो जायेगा कि पद्मावतीको परम सत्ता मानते हुए धरतीके भीतर अणुकी स्थितिकी कल्पना कृतिक मायिक है? माय ही यह समझना भी कठिन नहीं होगा कि असे बुद्धि नहीं कहा जा सकता ।

सृष्टि और परमात्माके सबधमें सूक्तियोका कहना है कि अम निरपेक्ष, परम सत्ताको जो परम सौन्दर्य और परम-कृत्याण भी है अपनेको प्रकट करनेके लिये जिस अ-मत्, कण भगुर जगत्की सृष्टि करभी पडी । किसी तत्त्वका परिचय, विरोधी तत्त्वकी वर्तमानतासे सहज ही हो जाता है । जन्म-कारणा होना प्रकाशना मान करता है । अतएव अत परम सत्ताका ज्ञान जिस अ सत् सृष्टिसे द्वारा सम्भव है । मगलका ज्ञान अमगलके द्वारा, सुन्दरका ज्ञान असुन्दरके द्वारा और अच्छाधीना ज्ञान बुराधीके द्वारा सहज प्राप्त है । जलालुद्दीन रमीका कहना है कि बुराधियो (विरोधी तत्त्वो) की सृष्टिसे द्वारा परमा माकी सर्वशक्तिमत्ताका पना ठीक लग जाता है । अच्छाधियोको प्रगट करनेके लिये बुराधियोका होना जरूरी है । जिसपर आक्षेप किया जा सकता है कि बुराधियोकी सृष्टि करनेवाला तय स्वयं भी बुरा होगा । जिसके समाधानमें जलालुद्दीन रमीका कहना है कि किसी तस्वीरमें अगर पुरुषना प्रदर्शित की गयी हो तो इसका यह अर्थ नहीं है कि चित्रकार ही कुल्प है । ४

अमको स्पष्ट रूपसे जो समझ सकते हैं कि सूर्यका प्रकाश जगत्में पटना है और जलमें पडनवाले अतसे प्रतिबिम्बसे हम सूर्यको देख सकते हैं । यह प्रतिबिम्ब वास्तवमें सूर्यके कारण है । अगर सूर्य नहीं है तो वह प्रतिबिम्ब भी नहीं है । अत प्रतिबिम्बको अपने अस्तित्वसे लिये सूर्यपर निर्भर करना पडता है लेकिन सूर्यका अस्तित्व प्रतिबिम्बके कारण नहीं है । यह प्रतिबिम्ब हजारो बार बन बिगड सकता है । अतसे सूर्यका कुछ आता-जाता नहीं । अम प्रकारसे जल, सूर्यके दर्पणकी नाभी है, जा सूर्यको प्रतिबिम्बित करता है । यहाँ सूर्यकी नाभी परम-सत्ता है, जल्की तरह अ-तन है जो अम प्रतिबिम्बित करता है और जो सत्ताका न-कारात्मक रूप है । और सूर्यके प्रतिबिम्बकी नाभी यह दृश्यमान जगत् है जो परमात्माका प्रतिबिम्ब है । यह दृश्यमान जगत् परमात्माकी सत्तापर ही निर्भर करता है इसकी अपनी कोअी सत्ता नहीं ।

अम दृश्यमान जगत् और मनुष्यके सबधमें सूक्तियोका कहना है कि दृश्यमें देखनेवाला अमको अपनी प्रतिच्छविमें देख पडनेवाली आँवकी पुतलीमें देखता है, असी प्रकारसे परमात्माकी प्रतिच्छवि जो यह दृश्यमान जगत् है अतसे मनुष्य अम प्रतिच्छविकी आँव जैसा है । जिस प्रकारसे परमात्मा अपनी प्रतिच्छवि (दृश्यमान जगत्) में प्रकट होता है तथा मनुष्य (प्रतिच्छविकी आँवकी पुतली) में भी अपने आपको प्रकट करता है । अतएव मनुष्य अम सम्पूर्ण गुणोको, जो अलग अलग ब्रह्माण्डमें अभिव्यक्त हो ग्ते हैं, अमको अपनेम ग्रहण करता है और अम सम्पूर्ण गुणोके ममा-हारकी भी अभिव्यक्त करता है । वह मानव रूप 'आलमेकुद्' (कपुद्र जगत्) है जो आरुमकुद्' (वास्तु समस्त वृहत् जगत्) को अपनेमें धारण किये हुअे हैं । परमात्माके सभी गुण हृदयमें प्रतिबिम्बित होने हैं जिसलिये मनुष्यके हृदयको जाननेसे परमात्माको जाना जा सकता है ।

जिस हृदयको कैसे जाना जा सकता है और अमस परमात्माका सावधानकार कैसे हो सकता है ? आमा-सयरी मिद्गाण्डरो लेकर सूक्तियोमें नाता प्रकारके मव

प्रचलित है लेकिन साधारणतः सूक्ष्म आत्माके दो भेद करते हैं, (१) नपम, (२) रह। नपम, निम्नस्तरण है और सभी प्रकारकी सुप्रवृत्तियोंका स्थान है। रह, सद्वृत्तियोंका बुद्ध्यम-स्थल है। तपस, भावावेगसे परिचालित होता है और रह विवेकसे। जिन दोनोंका मंथन निरन्तर चलता रहना है और ये आत्माको विपरीत दिशाओंमें खींचने रहते हैं। सूक्ष्म भावकोंने नरपसे बचनेके लिये बराबर सावधान किया है। अब मुलमान दारानीने कहा है कि तपन (जड़ आत्मा) बड़ा घोवे-बाज है और जो परमात्माके रास्तेपर चलनेवाले हैं उन्हें बाधा पहुँचाना है। 'पपावत'की नागमनीको नत्न कह सकते हैं।

सूक्ष्मोंके मतानुसार अर्चनर आत्मा शरीरके पहिले ही निर्मित हो जाता है और बूने परमात्मा, मनुष्य शरीरमें भेजता है। जिन अर्चनर आत्माके भी तीन विभाग किये गये हैं, कत्व, रह और सिरं। यह सिरंही सबसे भीतरका हिस्सा है जहाँ सूक्ष्म साधक परमात्माके दर्शन किया करता है। यहाँ किसी प्रकारका कल्प प्रवेश नहीं कर सकता। यही मानो परमात्माका वाच-स्थान है, जहाँ वह मनुष्यको जान पाता है और मनुष्य वही परमात्माका ज्ञान प्राप्त करता है।^१

५. विनायक-अलङ्कार, पृ० २३१।

जीलोंने रह (आत्मा) तथा रहल कुद्म दो विभाजन किये हैं। बुद्धके अनुसार परमात्माने जन्म ज्योतिसे रह (आत्मा) की सृष्टि की और फिर बूने जगतका निर्माण किया। रहल कुद्म (पवित्र वाग्) ही मानव शरीरमें सर्वश्रेष्ठ आन्तरिक शक्ति है। यह परमात्मासे अलग नहीं और मनुष्यसे संपृक्त भी नहीं है। जिसमें परमात्मा अपने ज्ञानको अनिच्छित करता है लेकिन परमात्माकी अनिच्छित परमात्मासे सिवा अन्य कहीं नहीं हो सकती। अतएव यह रहल कुद्म ही मनुष्यके भीतर अक्षररामा है। यह स्वर्गी अक्षररामर है जो मनुष्यके अन्तरगतमें बाँट करता है। जिसेही जानने और प्रत्यक्ष करनेकी भावना की जाती है।

सुपुंक्त विवेचनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि पद्मावतीकी रहल-कुद्म कहा जा सकता है, लेकिन रहल कुद्मकी दृष्टिका पदार्थ नहीं बनाया जा सकता। जिस दृष्टिसे विचार करनेपर पद्मावतीकी दृष्टि मानना मूल है। चापही 'पद्मावत'की सुपुंक्त प्रकृतियों से सर्वथमें भी सन्देह जन्म हो जाता है कि क्या सबकुछ वे आपसीकीही लिखी दृष्टी हैं?

[शान्तिनिकेतन



अच्छा !

: श्री 'कुमार' :

अच्छा, तो तुम्हें अंक बात बताओं । जी हाँ, बहुत अच्छी बात है और अंक बहुत ही अच्छा आदमीन हमें बतायी है । और अच्छे आदमी तो आप जानते हैं अच्छी ही बात करते हैं । बात यह है कि हमारे सारका सारा व्यापार अंक दम्पतीके सहारे ही चल रहा है । अच्छा, ता अंक आपने ध्यान दिया । परन्तु जिसमें आपका को-पी दोष नहीं, सभ समयकी बात है । आज-कल लोग बाग किमी बातपर सभी ध्यान देते हैं, जब खुशमें को-पी रोमांटिक बात हो । वही किसी दम्पतीकी बात हुआ नहीं, कि लोग कान खड कर लेते हैं ।

अच्छा तो बात छोडिअे । मैं आपको बता रहा था कि मंगारका सारा व्यापार अंक दम्पतीके सहारे ही चल रहा है । और वह श्रीमान् अच्छा और सुनसी पत्नी श्रीमती अच्छी । पर श्रीमान् और श्रीमती तो केवल झूठे शिष्टाचारने नाले ही कहा जाता है, वरना आजकल कौन श्रीमान् है और कौन श्रीमती है, सभी वापरोड घनते जा रहे हैं । हाँ तो, सीधे-सादे शब्दोंमें कहा जाये तो वे हैं अच्छा और अच्छी । अिन अच्छा और अच्छीके बिना हम को-पी कार्य भी नहीं कर सकते । आप कहेंगे, अच्छा तो प्रमाण दो । तो लो, प्रत्यक्ष प्रमाण आपने सामने प्रस्तुत हैं, भला हाथ बगनको आरसी क्या ?

अब चाहे आप किसी कलाकी बात करिअे और चाहे मिडी तोरअी, करेलेकी, बाह कविता-कहानीकी बात करिअे और चाहे बूट-पालिशकी और चाहे आप किमी फिटमकी बात करिअे और चाहे किसी पालतू कुत्तेकी, हमें पूरा । बपचास है कि अिस दम्पतीके बिना आप को-पी बाना नहीं कर सकते, वही अपन बिचार प्रकृ नहीं कर सकते । अंक कलाकी ही बात लीजिअे । को-पी बिच आपकी पसंद आ गया, तो आप अवश्य ही कहेंगे कि यह बिच बहुत अच्छा है । अिस बिचका दुष्य बहुत

अच्छा है या पोज बहुत अच्छा है । या फिर रंग बहुत अच्छा है । सार यह कि बिच बहुत अच्छा है । अवश्य ही यह बिची अच्छे पलाकारकी वृति होगी । परन्तु अच्छा आपकी मेवामें अुपस्थित न होता तो आप क्या करते । निदचय ही आपने कला प्रेमको बहुत धरना लगता और आप अपने मनके भाव प्रगट न कर पाते । यह तो अच्छी बात है कि अच्छा आपने सब काम आसानीसे कर देता है सब भाव आसानीसे प्रगट कर देता है जिसे सुनकर सब लोग आपको भी कलाका अच्छा जानरार या अच्छा कलाकार समझने लग जाते हैं ।

पर केवल कला सम्बन्धी बिचयोपर ही अच्छा आपकी सहायताके लिये नहीं आता । यदि आप बाजारमें मिडी-तोरअी आदि शाक तरकारी खरीदने जाअें, तो भी वह आपकी सवामें तपर रहेगा । अच्छे आदमी हर समय सहायता करत हैं, और अच्छा मित्र भी वही है जो मुसीबतने समय काम आये । और मिडी-तोरअी है भी अच्छी सखी । सभी अच्छे डाक्टर यही बताने हैं कि जिसमें लोहा विटामिन और न जाने क्या-क्या पीटिक पदार्थ होने हैं । वेसे तो हमें तोरअियोंके बीज या सडी गरी तोरअियोंमें बीडोंके बिवा और कभी कुछ दिखायी नहीं देता । परन्तु डाक्टरोंके साथ तर्क कौन करे क्योकि आजकल तो यह यह भी बताने लग गये हैं कि टिटिडियो और मकडियोंमें भी अधिक विटामिन होते हैं । अब आप हो कहिअे कि यदि मिडी तोरअीके सम्बन्धमें ही न करे तो डाक्टर हमें मकडियाँ ही खिलारर दम ल । सो चुपचार कह देने हैं कि अच्छी बात है जो लोहा-टीन या फोलाद आदि वह बताने हैं, होगा अिन मिडी तोरअियोंमें ।

अच्छा तो अिन डाक्टरकी बात तो छोडो और मिडी तोरअियोंकी ही बात लो । सर्वप्रथम ता आप किमी

अच्छे दूकानदारके पास ही जायेंगे। फिर वहाँ या तो अच्छी-अच्छी तोरखी आप ही चुनने लगेंगे, नहीं तो अमीको कहेंगे कि भाभी अच्छी-अच्छी तोरखी डालना। साथ ही तोलके सम्बन्धमें उसे चेतावनी दे देना कि भाभी अच्छा तोल तोलना, स्वाभाविक ही है। और दूकानदार भी तो अच्छी चीजके अच्छे ही पैसे माँगेगा। अच्छा, अब आपको सखी खरीदने काफी देरी हो गयी है, अब घर चलिये।

तो फिर आप कविताकी बहार ही देखिये। यदि आपको पसन्द आ गयी तो आप अवश्य ही कहेंगे कि यह अच्छी कविता है। परन्तु आजकलकी अच्छी कविताएँ प्रायः समझमें नहीं आती। अंक समालोचक महोदय बता रहे थे कि अंशमें अच्छाभी यही होती है कि अंशके भाव आसानीसे नहीं समझे जा सकते। आधुनिक कविताओंको समझनेके लिये अच्छा खासा परिश्रम करना पड़ता है। अब बताइये कविता क्या हुआ, मानो मानसिक व्यायाम करनेका अच्छा खासा आस्वादा हो गया। अंसी अच्छी कविताकी भी कोशिश करे, जिसके भाव चाहें वह कितने ही अच्छे क्यों न हों, समझमें ही न आये। यही हाल कहानियों और उपन्यासोंका है। कोशिश कथानक नहीं होता, आरम्भ और अन्त भी मेल नहीं खाते, फिर भी कहते हैं कि कहानी अच्छी है। वस वही गताधिपयो पुरानी कहानियोंको थोड़ा बहुत हेर फेर कर, नये ढंगसे पेश कर दी जाती है। वही पुरानी शराव नयी बोलचालमें दृष्टिगोचर होती है। वही अंक लड़का और दो लड़कियाँ या अंक लड़की और दो लड़के, थोड़ा-बहुत अनुर-चढ़ाव, थोड़ा-बहुत विघ्न और फिर मिलाप, वगैरह कहानी तैयार है।

परन्तु चाहें आपकी कविता, कहानी अच्छी हो न हो, चिन्ता न कीजिये। वस दस धोम अत्रट्टी कर, किसी अच्छे प्रवाचकके सहित छपवा लीजिये और पुस्तकका नाम भी कोशिश अच्छा सा रख दीजिये। कोशिश लम्बा चौड़ा नाम रखनेकी आवश्यकता नहीं, वस छोटे में छोटा नाम आप रख सकते हैं। अब अंश ही विचार चतुर्निराल है। कभी लेखक को पुस्तकका

नाम रखते ही नहीं, और नाममें घरा भी क्या है। अंक विद्वानके अनुसार है, हूँ ओह, तो आदि कोशिश भी नाम अल्पयुक्त हो मकता है। और नहीं तो बाहरके पन्नेपर कामा, विराम, फुलम्टाप या प्रदन्मूक चिन्ह ही लगा दीजिये, वह भी पर्याप्त होगा।

हाँ, तो पुस्तक छपवाकर आप दो-चार अच्छे समालोचकोंको अंक-अंक प्रति अवश्य भेज दीजिये और यदि हो सके तो अंक-आप फालतू भी भेज दीजिये, ताकि यदि वह पुस्तकको सेकड़हंड पुस्तकको दूकानपर ले जायें तो कुछ तो जेब गममें ही जाये। वस वह भी आलोचनामें पुस्तककी प्रशंसा ही करेंगे। लिखेंगे कि लेखकने बड़े परिश्रमसे पुस्तक लिखी है, लेखक बड़े अनुभवी सज्जन हैं। पुस्तककी लिखाओ छपाओ अच्छी है और टाइपल पेज भी अच्छा है। और मूल्य भी अच्छा ही है। विषयके बारेमें समालोचक प्रायः कुछ लिखना मूल ही जाने हैं। सो यह भी अच्छा है, नहीं तो न जाने वह क्या-का-क्या लिख देते। परन्तु लिखने भी कैसे, अन्होंने कौन-सी पुस्तक पढ़ी होगी। वर, अंशके विचार दो-चार अच्छे पत्र-पत्रिकाओंमें छानेसे आपकी पुस्तक गम-गम पत्रिकाओंकी तरह विश्वजायेगी। और लो, आप बातकी बातमें अच्छे लेखक बन गये। देखा आपने, लेखक बननेका कितना सरल अुपाय बताया आपको। परन्तु जिसका सारा श्रेय किसी 'अच्छा' महोदयको है।

अब तो आप समझ ही गये होंगे कि अच्छा आपके कितना काम आता है। यदि नहीं तो और अुदाहरण देखिये। आप पित्रचर देखने तो जाते ही हैं। निरचय ही आप अच्छी पित्रचर देखना पसन्द करेगें जिनमें अच्छे कलाकार काम कर रहे हों और जिनमें अच्छे नाच-गाने हों। अच्छी पित्रचरमें और हांता ही क्या है? और फिर छोटे-मोटे सिनेमामें तो आप जाना ही न चाहते होंगे। जी हाँ, सिनेमा-हाल अच्छा हो, जिनमें मीटें भी अच्छी हों, तभी पित्रचर देखनेका आनन्द आता है। और फिर यदि बम्पनो (मगी-मागी) भी अच्छी हों, तो बहुत ही अच्छा है।

पित्रचर देखकर आप काफी-हायूममें काफी पीने जायेंगे ही। काफी भी आजकल बहुत लोकप्रिय हो गयी

है और यह है भी अच्छा पेय। सभी सभ्य और अच्छे आदमी अिसे पीते हैं। वहाँ बैठने ही बंधा आपके सिगपर सवार हो जायेगा। तो आप दूसरी बातोंको समझ करते हुये अपने सादीसे पूछेंगे कि अच्छा बनाओ साओगे क्या? निश्चय ही आप किसी अच्छी चीजका आर्डर देंगे। और फिर बंदेको यह तो बोग्गे ही कि काफी और दूसरा सामान जन्दी लाना। वह भी अच्छा साहब कहकर लोप हो जाता है। अिस अच्छे वातावरणमें बैठकर, अच्छी अच्छी बात कर गम गम पय पीकर और अच्छी मूरतोंको देख कर तपोपन भी अच्छी हो जाती है। पर बातों ही बातोंमें देरी भी हो जाती है और अपन मित्रोंमें छुट्टी लेनेके लिअ कहते हैं अच्छा भाओ, अब तो हम चर।

मागमें आपको काभी शरणार्थी मिष मित्र जाता है, वह हर समय अपनी ही रामबहानी मुताबकी बुतावला होता है। अुसके कहनेका सार यह होता है कि कभी अुनकी भी आर्थिक अवस्था अच्छी थी पास अच्छे पैस थे, अच्छा खाने पीने थे अच्छी रहन महन थी, बस यही समझिअे अच्छे दिन बट रहे थे। पर पाकिस्तान बननेपर अुगने अच्छे दिन हराहो गय। और हो सकता है कि वह दें कि हमारी सरकारकी नीति भी अच्छी नहीं है। आप भी बलरूने सहानुभूतिका नवानुला वाक्य कहकर कह सकते हैं कि यह सब किस्मनकी घात है। कोओ वान नहीं अच्छे दिन फिर आयेग। परिश्रम करते जाओ, अुसका परिणाम भी अच्छा ही निकटेग। और ओश्वर जो करता है अच्छा ही करता है। बस अुमीपर भरोसा रखो। वह भी हारकर कहेगा अच्छा, और फिर चल देगा। अच्छा आप ही बताअिअे कि अिसके सिवा और किय भी क्या जा सकता है।

और फिर जब अच्छा अच्छा करके जाप घर पहुँचते हैं तो श्रीमतीजी छूटते ही पूछता है अच्छा, यह बताओ कि अिसनी देर कहाँ रहे? आप कह्य कि अच्छा, खाना तो खाओ, अभी बताय देता हूँ। तो वह दूसरा वार करेगी अच्छा यह ता बताओ कि नलपालिश और मुन्नेकी जरावें लाय हो कि नहीं? आप कह्य

ओ अच्छा, वह तो मैं मूल ही गया। फिर आप सफाया पेग करनेके लिअ कह्य कि अच्छा बात यह है पर वह बीचमें ही बात बालक कहगी, अच्छा अच्छा रहन दो अब बहान। मो अब तो आप थुप चाप खाना खाअिअ और सो जाअिअ देखिये रात भी अच्छी हो गयी है। फिर बल सररे ही मिल्य।

परन्तु आपको नींद भी अच्छी ही आती है। अुधर श्रीमतीजी है कि सररे ५ बज ही कहगी कि, अच्छा अब अुठो भी न। परन्तु ५ बज भी मला कोओ अुठनका समय है। आजकल सर्दीम कोओ अच्छा आदमी ८ बजसे पहले नहा अुठता। कोओ वान नहीं, अप अच्छा कहकर सो जाअिअ। घट डठ घट वाद श्रीमताजी फिर आयेगा और कहगी अच्छा तो आप अमातक सो ही रहे ह। कोओ वान नहीं श्रीमतीजीमें पीछा छुडानके लिअे अक वार और अच्छा कहिय और सो जाअिअ। परन्तु अज तो आठ बज गय। अच्छा अब तो अुठना ही पडगा नहीं तो सम्भव है कि श्रीमतीजी झाडू या बलन लेकर ही आ पहुँचे। अच्छा तो खँगियन अिसीमें है कि अब अुठा जाये। प्रात चाय पीना तो स्वभाविक ही है और आवश्यक भी। चाय पिये बिना ता विस्तरसे नाचे अुनरना भी बठिन हाना है। पर श्रीमतीजी हैं कि अपन अगत राज्ममें फिर आयेगी और कहगी, अच्छा आ अमीतक अुठ नहीं। परन्तु अुनके अुठनका मारग्य है, नहान बोनका। परन्तु आपको ता चाय पानी है सो आप हीसला कर पूछेंगे ही, अच्छा बनाओ चाय तैयार है।

सो जाप चाय पी मूँह टाय धो, रोटी खा और श्रीमतीजीसे बाजारसे परोदनेवाली वस्तुआकी लम्बी सूची दफनर जाअेंग। और अिनन काम करनेमें देरी होना ता स्वाभाविक ही है। पर रोज ही तो अंमे काम होने ह और राज ही अच्छा देरी भी हा जाती है। बस साहब भी पूछेंग अच्छा आज क्या कारण है? कारण तो कोओ नया नहीं है और नित्य प्रति कोओ न कोओ कारण बतानसे और कोओ कारण भी बाकी नहीं रह गया। कोओ वान नहीं आप कोओ घिसा पिटा कारण हो बना दीजिय। साहब अिनना ही ता

कहेगा, अच्छा आगेसे समयपर आना । तुम्हारे हकमें रोज देरसे आना अच्छा नहीं । पर साहब तो रोज ही बैसा ही कहते हैं । तो क्या हुआ, साहबके सामने जरासा अच्छा ही तो कहना पड़ेगा । आना तो फिर अपने समयपर ही है ।

अब कहिये अगर आपका मच्चा और अच्छा साथी यह "अच्छा" न हो तो आपका सारा व्यापार ही ठप हो जायें । आपको नौकरी चाहिये तो अच्छी और वेतन भी अच्छा ही चाहिये । मकान भी अच्छा ही होना चाहिये और अच्छी लोकेलिटी (पास पड़ोस) में होना चाहिये । पड़ोसी भी आप अच्छे ही पसन्द करेंगे । आप कोभी वस्तु बाजारसे खरीदने जायें, तो यही यत्न करेंगे कि अच्छी वस्तु मिल जायें । चाहे कपडा हो या नेलपालिश, बूट हो या क्लिप, साथीकल हो या टाभी, वस सभी वस्तुमें अच्छी ही होनी चाहिये । और फिर सूट भी तो अच्छा होना चाहिये क्योंकि आजकल आदमी अच्छे कपडोसे ही पहचाना जाता है । कपडे अच्छी तरह पहनना भी अब बला है । पुराने लोग तो कपडे क्या पहनते हैं, वस अपनेको कपडोमें लपेट लेते हैं । परन्तु आजकलने युवकोंको देखो, क्या ढगसे कपडे पहनते हैं । जिस कलापर वे घटो लगाते हैं, कभी सप्ताह अच्छी योजना बनानेमें लगाते हैं और कभी मास नया स्टाइल ढूँढनेमें लगाते हैं, तब कहीं जाकर अन्हें अच्छे कपडे पहननेकी बलाना अच्छा अभ्यास होजा है ।

और फिर अच्छे कपडोने परर्नैलिटी (व्यक्तित्व) भी तो अच्छी हो जाती है । पर अच्छे कपडोके लिये न केवल अच्छे पैसे ही लगते हैं परन्तु अच्छे दर्जोंकी भी आवश्यकता होनी है । अच्छे दर्जो बिल्कुल अपटूडेड बट्के, जो अभी-अभी हालीबुडसे लाया हो, कपडे सीते हैं । और अच्छे कपडे पहनकर आप भी अच्छे लगेंगे । अच्छे आदमीकी और पहिचान ही क्या है । किसी जमानेमें कहते हैं, कि अच्छा आदमी बननेके लिये विद्याका अच्छा अभ्ययन करना पडता था, अच्छे कर्म करने पडते थे, अच्छा स्वभाव बनाना पडता था, अच्छा चरित्र बनाना पडता था । वस, अच्छा बनना भी

मुसीबत थी । परन्तु अब अच्छा बनना तो बिल्कुल सरल हो गया है, अिनना ही सरल जैसे गर्म-गर्मतेलमें पकोडिया तलना । वस, अच्छे कपडे पहनी तो आप अच्छे आदमी बन गये । और यदि आपके पास अच्छा पैसा हो तो समझो सोनेपर सुहागा है । फिर क्या है आप बेक अच्छी कार रखिये, अच्छे होटलोमें जायिये, अच्छे कपडे पहनिये, अच्छे बगलोमें रहिये और आप मानवनि-शत अच्छे आदमी बन गये । क्या ही अच्छी बात है ।

परन्तु कमी-कमी लोग अच्छी बात नहीं करते और लड पडते हैं । यह तो बिल्कुल ही अच्छी बात नहीं । अुनको झगडा निपटानेके लिये आपको कहना ही पड़ेगा, अच्छा-अच्छा जो हो चुका सो हो चुका, अब झगडा बन्द करो । परन्तु वह कहाँ मुनते हैं । वह तो कहे जा रहे हैं, अच्छा अबके मारके देख, अच्छा फिर कमी तुमसे समझ लूँगा या फिर अच्छा तुम्हें जिस बातका मजा चखाशूँगा । तो आपको फिर कहना ही पड़ेगा कि अच्छा समझ लगे ।

खेर अन्हे छोड़िये, बाजारमें देखिये रातको क्या अच्छी रोशनी होती है । भीड़ भी वहाँ अच्छी होती है । लोग जब सैर-सपाटेको निकल आते हैं तो अच्छी चहल-पहल हो जाती है । मोमम भी अच्छा हो तो ओंग भी अच्छी रीनक हो जाती है । परन्तु जिस चहल-पहलमें आगे बडना कठिन हो जाता है । कुछ तो लोग भीड़भाड कर देते हैं, और मित्रगण और परिचित लोग आगे बडने नहीं देते । अुनको देखो मिलेयें भी तो भीड़में, और सरे बाजार । क्या अच्छी जगह ढूँडी है ? और फिर नमस्ते भी अवश्य ही करेंगे, और हाल भी तो पूछेंगे । अब अंभी भीड़में किसका हाल अच्छा हो सकता है, अच्छा खामा अपटूडेड आदमी भी 'ओवर हाल करने योग्य हो जाता है अिननी मिट्टी-में, परन्तु अन्हें क्या पना भिष बाउफा । सो पीछा छुडानेके लिये कहना ही पडना है कि भाभी अच्छा हाल है । फिर किमीपर दृष्टि न पडे तो यूँ ही ताने बघने लग जाते हैं, अच्छा भाभी अब क्यों देनने लगे अिघर, या यूँ ही कुछ ओर । आप ही कहिये अुनको क्या

दुःख दिया जा सकता है। गप यही मुँहमें निबलना है, अच्छा भाभी जो मनमें आत्रे बह लो।

यह मित्रता भी अंक अच्छा खासा मजान है, जो किसीने मनमें आत्रे बह दे, पर आप कुछ कहने लगे तो मुसोबत और न कहो तो मुसोबत। परन्तु आजकल अिन प्रतियोगिताआन भी तो दफो क्या अच्छा मजान बन गया है। पहले तो सप्रसे अच्छे खिलानी, सबसे अच्छे पढ़नेवाले सप्रसे अच्छे बूढ़नेवाले सबसे अच्छा घोऱनेवाले आदि लोगोको पारितोपिड मिलते थे परन्तु अत्र देखो सबसे अच्छे मूलें सबसे अच्छी गप हुकिनेवाऱेको भी पारितोपत्र मिलने लग गये ँ। और फिर आजकल सौ दर्यप्रतियोगिताओ (खूनमुरती की होड) की भी अच्छी ह्वा चल निरली है। पर अत्र अच्छा बुरा कीन देमता है, सब मनमानेकी ही करते हैं।

न अच्छे माव हैं, न अच्छे कर्म न अच्छा व्यवहार है और न अच्छा चरित्र। तो फिर लोगोमें अुछललना न बडे तो और क्या हो। आजकलके लऱकीरो देगो क्या अच्छा व्यवहार करते हे। अभी अुम दिनकी बान है कि दो लडके जा रहे थे। अंक लडकीको जाते देख पहुँके तो अुसे घूरने लगे, फिर ग्यसना आरम्भ कर दिया और फिर अर्ल मटना अंक कहने लगा, 'अुनो देखेमे जो आ जानो है मुँहपे रोनुक, बह समझे हे बीमारका हाल अच्छा है।' मुखसे अुनायाम ही निबल पडता है कि 'अच्छी मभ्यना है।'

पर लडकाकी तो बात ही मन कीजिये। अुन्हें ता कुछ भी अच्छा नहीं लगता। न किसीका बहा मानना और न किसीकी कोभी अच्छी बात सुननी। अुन्हे ता यम बन उनकर धूमना अच्छा लगता है। अंक लडकेको अ्रेक वार कहने मुना कि बडोकी बानपर 'अच्छाजी, 'अच्छा जी कर सेना चाहिये, और यह आवश्यत्र नहीं कि अुनकी बान मानी हो जाअ। अुम लडकेने अनुमार यदि बडोकी बाने मानी जाअे तो चाय वाऱी, सिगरेट, सिनेमा मत्र कुछ ही छोडना पडे और अिन सब चीजोने दिना जीनेमे तो मौनही

अच्छी। यह विचार मुनरर क्या आप किसी लडकेमे कुछ अच्छ कामकी जाया कर मरते हे? लडकीरा तो विऱुल भरोमा नहीं है। वंगे मूऱुका भी क्या भरोमा है। रायमाहव गाला दामुदयालकी बात ही लो कत्र प्रात कालक अच्छा भला या परन्तु शामको हृदयकी गति बन्द होनेस दूमरो दुनियाम जा पहुँचा। अच्छा, अंस भगवानकी अच्छा।

परन्तु हमारा तो कहना है कि यदि 'अच्छा और 'अच्छी' सहायनापर न आत्र, तो क्या आप कुठ भी कर पाअे। अत्र कहिये विवाह करना हो तो कोओ अच्छा लऱका हृदना पडता है जिमरा स्वभाव अच्छा हो, चरित्र अच्छा हो और अच्छा पढा लिखा हो अच्छे कुत्रका हो अच्छे पैसे कमाता हो बम अच्छा लडका हो। यदि लडकी चाहिय तो वह भी अच्छी होनी चाहिये अन्ठ गुणावाऱी हो अच्छा खाना पका मक्ती हो, मीना परोना भी अच्छा जानती हो और देवनेमे भी अच्छी हा बस अच्छी हो। अब क्या आप अच्छा और अच्छीके बिना विवाह कर सकत य? कदापि नहीं। और विवाह करने या करानत्र लिअ पेसा भी तो अच्छा चाहिये।

और फिर आजकल फिरेट टेनिस वाऱीरालके मैचोमें भी जनक दशक ताऱी न पीऱें और अंक दो मिनट बाद ताली न बजाअे या 'बऱुत अऱे' बहुत अच्छे न चिऱाअ, तो साग चल ही नीरस हो जाअे। और हो सकता है कि लोग यह तेल गेलना ही बन्द कर सें। परन्तु आप मोचने हागे कि हम अच्छाके पीऱे अच्छी तरह हाय घोऱर पड गय हैं। हाँ, तो हाय हमने घी ही लिये थे, पर पीछे पन्ना हमारा वाम नहीं। राजपुऱीक समाल उषव भी सदा सामनेम ही वार करत हैं और अिमिलिये तो यह लय आरके पीछे न होकर आपके पिऱुऱ सामन है। और जाप यह केव कयो पड रहे हे? जो ही यदि अरने मूंह मोयी मिऱुऱु वऱुं ता कह मक्ता है कि आप अिसलिजे यह लेल पड रहे हैं कि यह केव अच्छा है और अिमका मोपक भी "अच्छा" है और फिर अच्छे पयमें छप है।

पर आखिर अच्छा है क्या ? हम तो क्या बनायें परन्तु शैबमपियरने अंक स्थानपर कहा है। शैबमपियर तो आप जानते हैं अंक अच्छा कवि और नाटककार था। अमुने बहुत लिखा है और अच्छा लिखा है। अमुकी कलम अच्छी चलनी थी (गायद बह पाकर पेनसे लिखता था) और कुछ चीजें तो अमुने बहुत ही अच्छी लिखी हैं। हाँ तो अिन अच्छे शैबमपियर महोदयने कहा है या लिखा है कि कुछ भी अच्छा नहीं और कुछ भी बुरा नहीं, बस हमारे विचार ही किसी भी वस्तुको अच्छा या बुरा बना देने हैं।

अब यह भी अच्छी रही। अच्छा-अच्छा चिल्लाते रहे और अन्होंने गूड-गीबर अंक कर दिया। क्या बात बतायी है। अब यदि अच्छा बुरा अंक ही है तो फिर कोअी अच्छा काम करनेसे लाभ। अिसी गडबडके कारण लोगोको अच्छे और बुरेके भेदका ज्ञान ही नहीं रहा। अंक विद्वानने बताया कि लोग बुरा काम भी

अच्छा समझकर ही कर रहे हैं। और जब कुछ भी तो अच्छा नहीं मिलता, न दूध अच्छा मिलता है और न घी, न आदमी अच्छे मिलते हैं और न अच्छे नौकर और कहते हैं कि नेलालिया और क्रौम भी अच्छी नहीं मिलनी। तब प्रश्न फिर बही रह जाता है कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है? जो कज अच्छा था, वह आज अच्छा नहीं रहा, जो आज अच्छा है वह कलक अच्छा रहे, वह नहीं मवते। अच्छे बुरेका माप-दण्ड भी तो समय, देश और फंशनके साथ बदलता रहता है। और आजकल तो कहते हैं, अच्छाओका समय ही नहीं रहा। किसीसे अच्छाओ करो, तो भी वह बुराओ ही करना है। क्या ही अच्छा हो यदि आप असपर विचार करें।

परन्तु आप तो अच्छा-अच्छा सुनने थक गये प्रनीत होते हैं। अच्छा तो लो हम भी चने। अच्छा फिर मिलने, फिर अच्छी-अच्छी बातें हाँगी। अच्छा, तो जय रामजीकी !

[नयी दिल्ली]

कीर्तिता :

स्वरं सुरंगम्

: श्री नर्मदाप्रसाद खरे :

मैं तुम्हारी बांसुरीमें स्वर भरूँगा ।
 अंक स्वर बैसा भरूँ कि तुम जगतको भूल जाओ,
 अंक स्वर बैसा भरूँ कि चन्द्रको तुम चूम जाओ,
 स्वर-शुषा तुममें बहाकर, ताप सब पलमें हर्षूँगा ।
 स्वर भरूँगा ॥

तार बुद्ध जैसे मिलें कि स्वर्ग तुम भूपर सुतारो,
 भरणको देकर सुनौती स्नेहसे जीवन सँवारी;
 जागरणकी ज्योतिसे मैं तब तुम्हे ज्योतित करूँगा ।
 स्वर भरूँगा ॥

दूर, - शुभ भुवतारिकामें, लक्ष्य तुम अपना निहारो;
 प्रेम-गंगामें नहाकर, मुक्तिका घँघट सुधारो,
 मुग्ध वामन्ती पवन बन, सुरभि-घन तुमपर भरूँगा ।
 स्वर भरूँगा ॥

ज्वार बुद्ध बैसा सुडे जो दो तरोंको अंक कर दे;
 प्यारकी अठखेलियोंसे, मृत्युका अभिषेक कर दे;
 मिलनका मधु-पर्य होगा, और मैं तुमको भरूँगा ।
 स्वर भरूँगा ॥

मैं तुम्हारी बांसुरीमें स्वर भरूँगा ।

[जयलपुर]

(sestet) के रूपमें छह पंक्तियोंका दूसरा विभाग। दोनोंमें आठवीं अथवा नवीं-अथवा नौवीं पंक्ति बीच बिराम होता है, जिसमें मानेदेके दो भाग होते हैं।

प्रथम आठ पंक्तियाँ ही चतुष्पदियामें बनती हैं और दूसरे विभागमें दो त्रिपदियोंका अन्तर्भाव होता है।

अष्टकमें तुलान्त सम्बन्धी अंक विशेष घटन है। पहली-चौथी और दूसरी-तीसरी पंक्तियोंमें तुक मिटती है अथवा पहली-तीसरी और दूसरी-चौथी पंक्तियोंमें अन्वयानुप्रास माया जाता है।

पदकमें पहली-तीसरी पंक्तियोंमें तुलान्त मिलता है। अथवा पहली-चौथी, दूसरी पाचवीं, और तीसरी-छठरी पंक्तियोंमें भी तुक सम्बन्ध जाँग जाता है।

मिटनी मानेट भाव-दृष्टिके भी दो भागोंमें विभाजित होता है। अष्टकमें अिच्छित्त काव्यायंकी रूपरेखा और विस्तार होता है तथा पदकमें जिसका अन्तर्ध अथ परिणति। अन्तर्धकारणं यदि अष्टकमें भावना विशेष, भावनातिन विचार अथवा प्रसंग वर्णित होगा, तो पदकमें भावनासे अल्प विचार, विचारका दूसरा पक्ष अथवा पहले विभागमें वर्णित प्रसंगका निरूपण होगा। अष्टकमें विषयका अथ पक्ष रखकर, पदकमें अथका दूसरा पक्ष दिखाते अथ अथे पूर्ण किया जाता है। अिमीसे सांनेटका निर्माण स्वभावगुण माना जानेवाला 'अर्थका आन्दोलन' गुण अल्प होता है।

मिटनी मुनीत-शैलीके अष्टक और पदक दो विभाग करीब-करीब सम्पूर्ण अथ स्वयंपूर्ण होते हैं। ममीवपक Crossland लिखता है कि मिटनीमानेट, अथ सम्बद्ध काव्य न होकर करीब-करीब दो काव्याय होता है। और अष्टक अलग हटाकर रख दिया जायेगा तो चतुष्पदियोंका वह स्वतंत्र काव्य ही प्रतीत होगा। परन्तु यही आलोचक आगे लिखता है कि अष्टक और पदकका मयोग असा कलात्मक साथ लिया जाये कि अतिप्रता प्रतीत हो। किन्तु आलोचककी यह भूमिका मानी नहीं जा सकती। Enid Hamer अथवा Sir Arthar Quiller-couch जैसे ममीवपकोने लिखा है कि मिटनहीके सांनेटमें काव्या-

यंका अष्टक प्रवाह आरम्भमें अन्ततक अविरोध प्रकाशित रहता है।

ये दोनों रूप समभव हो सकते हैं। जहाँ अष्टक और पदक अथक दूस्वम्भ भिन्न, स्वतंत्र अथ स्वयंपूर्ण प्रतीत होने लगते हैं, वहाँ भी अन्ततक अन्ततक तरीके सम्बन्ध जोड़कर अथ ही काव्य करीब निर्माण करनेका अन्ततक-दायित्व मिटनीमानेटमें कविकी निभाना पडता है। आठवीं अथवा नौवीं पंक्ति बीच योग्य स्थानपर बिराम-योजनाकर, भिन्न अर्थसूत्राके कटापूर्ण गुण द्वारा कविकी सुसालना व्यक्त होती है।

अि अिनाडियन (मिटनी) सांनेटका अंग्रेजी-भाषी चेतनपीरिजन सांनेट कहलाता है। वास्तवमें यह चेतनपिअरमे भी काफी पुगला है। अिअका मूल निर्माता थामस वैंट माना जा सकता है। अिनाडियनमे अंग्रेजीमें लाने अथे थामस वैंटने मानेटका मूल रूप (Form) सुरक्षित रखा। दो चतुष्पदियोंका द्विपक्षी अष्टक और दो त्रिपदियोंका त्रिपक्षी पदक यह विरोधना अंग्रेजीमें मूल अिनाडियनमे आयी। मान वैंटने अन्तिम दो पंक्तियोंकी तुकवदी नवीन शैलीमें जोड़नेकी पद्धति अन्तमे प्रचलित की। यह माधारण परिवर्तन अिनाडियन सांनेटके मूल रूपको विघटित करनेवाला मानित हुआ। मरने नैटकी शैलीका अनुकरण किया और साथ ही अष्टक और पदक अिना दा भागोंकी अथका दो तुकान्त-वादी तीन चतुष्पदियों और अन्तिम दो पंक्तियोंका युगक-अिना प्रकार सांनेटका अथक नया रूप (Form) अन्तमे प्रचलित किया। अिमीका अनुकरण सर विलियम सिडनेने किया। कुछ समय बाद "अष्टक-पदक और मध्यस्वानीय बिराम" वाली सांनेटकी परिभाषा करीब होकर आरह पंक्तियाँ और दो पंक्तिवाला रूप व्यवहृत हुआ। प्राग्भिक आरह पंक्तियोंमें विक्षिप्त भावधारका अन्तिम दो पंक्तियोंमें सूक्ति अथवा मुद्रापित-रूप समारोप किया जाने लगा। अिमी प्रचलित प्रथाको गुणवर्धित रूप देकर डनिअल और चेतनपिअरने आगे चलकर "चेतनपीरिजन" कहलाने-वाली सांनेट-शैली अंग्रेजीमें आविर्भूत की।

मिन्टनी और शेक्सपियरजी सॉनेट भाभी-भाभी होनेके कारण इनके कुछ अवयवा और स्वभाव गुणोंमें समानता होना स्वाभाविक है। मिन्टनी सॉनेटके अष्टक समान ही शेक्सपियरजी सॉनेटकी प्रथम बारह पंक्तियोंमें विषय विवेचन अथवा अनुराग परिपोष होता है। अष्टककी अपेक्षा अष्टका अपेक्ष विस्तृत होनेके कारण अष्टक पुनरवित विस्तार अथवा कल्पनाकी बारीकियोंको अधिक अवसर मिलता है। मिन्टनी सॉनेटके पद्यमें अष्टकके विषयका सुलभ अथवा परिपति होती है तो शेक्सपियरजी सॉनेटकी द्विपदीमें। बारह पंक्तियोंमें व्यक्त विषयका चमत्कृतपूर्ण अपसंहार किया जाता है अथवा अर्थान्तर-न्यासके रूपमें उसे घुमा दिया जाता है।

मिन्टनी और शेक्सपियरजी सॉनेटमें अर्थ-नीच निदिचत करना कठिन है। सॉनेटकी श्रेष्ठता—असुकी शैली, रूप और शास्त्रीयताकी अपेक्षा कविकी प्रतिभा पर होना अधिक अवलंबित होती है। शेक्सपियर और उसके समकालीन कवियोंने शेक्सपियरजी शैलीको लोक-प्रिय बनाया है, तथापि सॉनेटकी मिन्टनी शैली ही भावनाके सूक्ष्म आन्दोलन अभिव्यक्त करनेकी दृष्टिसे श्रेष्ठ मानी जाती है।

सॉनेटकी स्वरूप चर्चा करते हुए अथवा महत्त्वपूर्ण प्रश्न सुलभ होता है। सॉनेट किन विषयोंपर लिखा जाये ?

वास्तवमें सॉनेट विविध विषयोंपर लिखे गये हैं। प्रथम तो अस्वभाव प्रमुख विषय है ही। किन्ती समय यही अस्वभाव अथवा प्रमुख विषय माना जाता था। परन्तु प्रेममें भी मिलन परिपूतिकी अपेक्षा विरह, वचना, मधुसूचना और निराशा आदि स्थितियोंका वर्णन सॉनेटकी रमणीयते लिखे अधिक अनुकूल मिष्ट हूँ हैं। सॉनेटका नायक प्रणय-सफलता साधक ही अनुभव करता है। 'Our Sweetest songs are those that tell of saddest thought' शैलीके ये श्रुद्गार सॉनेटके सम्बन्धमें विशेष अर्थमें सत्य हैं। नारी प्रेम और मित्रप्रेमका विशेष तथा मित्र-प्रेमकी विजय शेक्सपियर-

कालीन मुनीतकारोंके प्रिय विषय थे। प्रेमके साथ ही मृत्युका सुल्लेख आता है। मृत्यु भी मुनीतकारोंका प्रिय विषय है।

अनालयन और अंग्रेजी राजदरबारोंमें बचन बितारकर सॉनेट प्रौढ़ हुआ, अन राजस्तुति और स्वामि-प्रशंसा भी अस्वभाविक विषय बना। जोषित अथवा मृत-मित्रोंका गुणगान, महापुरुषोंके प्रति आदर-प्रदर्शन, बलि और कविताका सम्बन्ध और स्वरूप वर्णन, औरवर रूप-चिंतन आदि सभी विषयोंपर सॉनेट लिखे गये।

केवल निसर्ग-वर्णन सॉनेटके लिखे पर्याप्त विषय नहीं हो सकता। भावों अथवा विचारोंकी पृष्ठभूमि होना अस्वभाविक लिखे आवश्यक है।

अपरोध, अपहाम, नर्म विनोद, व्याजोक्ति आदि विषय सॉनेटके लिखे कहांतक अनुकूल हो सकते हैं यह प्रश्न बार-बार पूछा गया है। सॉनेटके जन्मकालके अवतक राजनीतिक प्रतिद्वंद्वीके प्रति बर्तनीयपूर्ण आलोचनाके लिखे अस्वभाव अपुयोग किया गया है। व्याजोक्ति, अपरोध और प्रकट अपहामका अस्वभाव अन्तर्भाव ही ही जाता है। निरं हास्यरसपूर्ण सॉनेट भी लिखे गये हैं। परन्तु इनकी मर्यादा परिमित है। विचार और भावनाकी मुद्रिल्लिखे अथवा गभीर अभिव्यक्ति सॉनेटकी विशेषता मानी जाती है। विनोदप्रधान सॉनेटमें यह समभव नहीं होता, अन विनोद सॉनेटके लिखे वर्ज्य माना जाता है। सॉनेट अस्वभाव विषयपर लिखा जाये और जम्बुक विषयपर नहीं, अस्वभाव प्रकारका नियम नहीं बनाया जा सकता। कविकी प्रतिभा-शक्तिपर ही सॉनेटकी गुणसम्पन्नता अवलंबित रहेंगी। परन्तु साथ ही सॉनेटकी प्रवृत्तिकी कुछ विषय अनुकूल होंगे तो कुछ अतने अनुकूल नहीं होंगे—यह भी स्पष्ट है। अनुकूल विषय तथा प्रतिभा और रचना-कौशल सम्पन्न कविका 'समसमा सयोग' होनेपर ही प्रथम श्रेणीके सॉनेटका मूजन होता है। ❊

❊ मराठी 'मुनीत-संग्रह' की भूमिकाके सानार।

(मराठीसे अनुवादक—श्री अनिलगुमार, साहित्यरत्न)

अर्द्ध कवितामें राष्ट्र-विभाजनके प्रति वेदना और आक्रोश

श्री रत्नलाल बंसल

राष्ट्र विभाजनकी घटना और उसके फलस्वरूप हुए भीषण साम्प्रदायिक अत्यात भारतीय इतिहासके विद्यार्थीके हृदयमें सर्व्व वेदना और आक्रोशकी भावनाअ उत्पन्न करते रहेग फिर अउनकी मनोभावनाओका तो कहना ही क्या है जिनके अभाग नशके स मुख यह सब कुछ घटित हुआ अथवा अिन अत्यातोम जिनको व्यक्तित्वन रूपने भी बहुत कुछ भुगतना पडा असे भूतभोगियोमें जो कलाकार थ या विगपत कवि थ वे अपनी प्राकृतिक सवेदन शीलताके कारण स्वभावत अिन घटनाओसे बहुत अधिक प्रभावित हुए और अुसके फलस्वरूप अिस युगमें अिन घटनाओसे सम्बन्धित बहुत सा साहित्य लिखा गया । विभाजनका प्रभाव विशेषत अुस भूभागपर पडा जिसकी भाषा सिंघी अुद्द तथा बंगला थी । अिसलिअ (सिंघी और बंगलाका तो हमें पता नहीं है) अुद्दमें गद्य और पद्यकी अनक प्रभावशाली तथा कलात्मक रचनाअें अिस ददर्भरे विपदकी लेकर रची गयी । यह विशेष रूपसे आगा तथा प्रसन्नताकी बान है साय ही साहित्यिक समाजके अिअ गौरवकी भी कि अिन रचनाओमें हमें अकना अिसानियत और अुच्चकोटिकी हादिक विशालताके दशन होने ह । अिगना अथ यही है कि जब लासो मनुष्य साम्प्रदायिक विद्वषकी आगम जल रहे थ और हमारे अधिकाग राजनीतिक नता अुम अिनाशकारी आगकी जान या अनजान हवा दे रहे थ तब भी अुदका कवि अान पथमें अिबलित नहीं हुआ थ । क्या हिन्दू और क्या मुसलमान क्या भारतीय क्या पाकिस्तानी सभीन अपनी काव्यकलाका अुपयोग अुत्सर्गी हुई मानवताके अुपचार और अुदारके हेतु ही किया । जब भारत और पाकिस्तानम हिन्दू और मुसलमान अक दूभरेके खूनके प्यासे हो रहे थ और अक दूसरेको अगबस अपन-अपन वतनसे निकाल रहे थ जब कल तक अक मान गय देशकी छातीको दुधारामे काटकर अुन दो टुकड़की सरहदें तय की जा रही थी तब पाकिस्तान निवासी अट्टमद रिवाजन अपन हिन्दुस्तानी साधियोकी पुकारते हुए कहा थ —

‘साधियो ! हाथ बढाओ कि ह हम आजभी अक कौन कर सकता ह तकसीम^१ अदबकी जागीर^२ । कौन अफकार^३ की कदील^४ बुझा सकता ह कौन कर सकता ह अहताय^५ की गिदत^६ की असीर^७ ।

× × ×
साधियो ! आओ अधूरे ह हमारे सपन साधियो ! आओ अभी काम बहुत बाकी ह । अपन घदार-तकाओ का फिर अँलान^८ करें, जिन्दगी अब भी हमें सिफ हमें तकती ह ।’

और अिस आमत्रणके साथ ही कविन तत्कालीन वनमान स्थितिका चित्र खींचते हुए कहा थ —

‘शहर बँट गय, तकसीम हुआं गलियां भी बूलबूल ओ गुल^{१०} की मुहब्बतका कम्^९’ खत्म हुआ कितन चेहरे ह जिहें देख न पाभगा कभी कितनी अँलोकी लताफन^{१२} का फुस खरम हुआ ।

और नागिर काजमीन अपन पाकिस्तान प्रवासके पश्चात् जमे अंगुष्ठामें कलम भिगोरकर लिखा —

‘वो जि दगोके सहारे नजर नहीं आते, वही ह बोस्त एमारे नजर नहीं आते ।

× × ×
हजूम-यास^{१३} ह और मजिलो अँधरा ह वो रान ह कि सितारे नजर नहीं आते ।’

अक और स्थानपर अिहा नागिर साहबन लिखा है —

जिहें हम देखकर बोते थ ‘नासिर’, वो लोग अँलैसि अँगल हो गय ह ।

१ बँट सकता है । २ साहित्यकी सम्पत्ति । ३ विलिन । ४ दीपक । ५ अनुभूति । ६ अुल्लणता । ७ बंदी । ८ जागृत अुतरदायित्व । ९ घोषणा । १० फूल और बूलबूलके प्रमना जाड़ । ११ सरसग । १२ निगाओका समूह ।

राष्ट्रका विभाजन और ब्रुसके कारण लाखों-लाख व्यक्तिगणोंपर अंसी भीषण आपातियाँ ब्रुस समय आयीं, जब राष्ट्रको स्वाधीनता प्राप्त हुई। गलन या सही, लाखों व्यक्ति आज भी यह विचार रखते हैं कि हमारे नेताओंने राष्ट्रके विभाजनकी शर्तके साथ स्वाधीनताको स्वीकार करके भारी गलती की और अिसीलिअ जो साम्प्रदायिक भ्रुत्पात हुआ, अूनकी जिम्मेदारी भी अिन नताओंपर ही है। ये भावनाओं अिन दिनों अिम विषय-पर लिखी गयी अूर्दूकी कविताओंमें बड़े ही सशक्त रूपमें प्रकट हुई हैं। 'हफीजू होशियारपुरीने अंसी स्वतंत्रता और नेताओंकी ओर अिगित करते हुअे कहा, 'कुछ अिस तरहसे बहार आयी है कि ब्रुसने लगे हवाअे-लाला-ओ-गुलसे चिरागे बीदा ओ बिल।

× × ×

य अिजतराब ये शौके अुरुसे आजदो अुठाके देख तो लेता था परदये महमिल।

अर्थात्, कंसी अजब बहार आयी कि फूलोंसे अंसी गन्ध निकलने लगी, जिसके स्पर्से नेत्र और हृदय प्रसन्न होनेकी अपेक्षया अुदास होने लगे।

नेताओ! तुम्हें स्वाधीनतारूपी दुल्हनको पानेकी अंसी आतुरता, अंसी आसक्ति यो? अरे! पालकीके पदोंको तो अुठाकर जरा देखा होता कि वह दुल्हन वास्तवमें कंसी है? पाणिग्रहण हाथ पकडने योग्य है भी या नहीं।

अंक और कविने अिन दिनोंका चित्रण करते हुअे लिखा है—

शहर दर शहर सू बहाये गये,
यों भी जडने तरब^{१४} मनाये गये।
बया बहूँ किस तरह सरे बाजार,
अस्मनों^{१५} के दिये बुझाये गये।
रहनुमाओं^{१६} को गफलतों^{१७}के तुफल^{१८},
बाकिले राहमें लुटाये गये।
आह यो खिलवतों^{१९} के सरमाये^{२०},
भजमये—आम^{२१} में लुटाये गये।

१४ आनन्दपूर्ण अुसव। १५ सतीत्व। १६ नेताओं। १७ भ्रुत्। १८ कारण। १९ अंकान्त। २० सम्पत्ति। २१ सर्व माघारणके समक्य।

अिक तरफ़ शूम कर बहार आयी,
अिक तरफ़ आशियाँ^{२२} जलाये गये।

श्री 'साहिर' लुधियानवीने, अिनकी ब्रुस समय पाकिस्तान चला जाना पडा था, विभाजनके लिअे आग्रह करनेवाले अपने मजातीय मुस्लिम नेताओंसे व्यग्य भरे स्वरमें पूछा था—

“भेरा अिलहाद^{२३} तो खैर अंक लानत^{२४} था सो है अबतक,
मगर अिस आलमे-बहान^{२५}में ओमानों पं बया गुजरी

× × ×

चलो, यो कुफ़ूके घरसे सलामत आ गये लेकिन
खुदाकी ममलकत^{२६}में सोरता-जानो^{२७} पं बया गुजरी?

और भला कौन था, जो 'साहिर'की अिस बातका जवाब देता? अलबत्ता अूनको पाकिस्तान छोड देनेके लिअे अवश्य विवदा कर दिया गया।

फिर अूर्दूका कवि अिस भयानक स्थितिसे निराश होकर नहीं बैठ गया, या अुसने केवल स्वतंत्रता और नेताओंको कोसने तक ही अपनेको सीमित नहीं रखा, अुसने यह भी गाया कि—

‘छोडो भी नफरतकी बातें आओ कौओ काम करें
मुल्कों मुल्को अम्नो-मुहब्बत^{२८} के अफसाने^{२९} आम करें।
बबतकी जिब्दा कट्टे^{३०} हमसे कुरबानी^{३१} की तालिब^{३२} है,
आज ये अपना काम नहीं है जिन्हे-मये-गुलफ़ाम^{३३} करें।

यह अंसा अिसलिअे कह सका, क्यों कि अुसे आशा है कि—

‘ये जुलमत^{३४} भी छोटे जाअेगी है दिलमें हमारे चन्दकिरन'
बदलेगा जमाना बदलेगा अुम्मीदका क्यों छोडे दामन^{३५}।

और कौन नहीं चाहेगा कि हमारे अुदूके कविषाकी यह आशा फलवनी हो?

२२ घोंसले। २३ धार्मिक कट्टरताका विरोध। २४ पूणित। २५ अुम्मादके वातावरण। २६ राज। २७ गुल्से हुअे प्राण। २८ शान्ति और प्रेम। २९ कहानियाँ पंचार्ये। २९-३२ समयकी सजीव आवश्यकताओं हमसे बलियान चाहती हैं, आज मदिरा और सुन्दरियोंकी चर्चा करना हमारा काम नहीं है। ३३ अंभेरा। ३४ अचल।

[फीरोजायाद

मेरे सपने थक गये

: श्री राजेन्द्र यादव, अेम. अे. :

मेरे सपने थक गये,
भटकती राहें आपसमें अूलझी-अूलझी
जीवन भूल-भुलैया-सा रह गया
कि छूटी सारी सुधियाँ दूर
साध सब चूर
बुझा मन हारा-हारा यस्त,
यस्त मनदूर !

तुम अपनी बाहोकी कोमल सीमाओंमें घेर अिन्हें
वासन्ती चम्बन अंकित कर दो दीप्त-मधुर
सच, ये बालकसे लहरा जाअेंगे खिलकर !

मेरा भानस,

बुझते हसोकी अञ्जवल परछाओंके नीचे
मोतीकी फसल अुमाना जो
अब केवल विद्याल रेतोला सागर
करघटें बदलता

छूता रहता वो छोरे

'सहारा' हँसता है ।

तुम अपने भावुक मत शबंती सजल—

नयनोंमें अिन्द्र-धनुष धोले,

बस, अेक अिशारा भर कर दो,

शत शत मललिस्तान किलककर अगडायी लें ।

सच, मे बहुत अकेला,

अिन सघपोंके कातर पजोंमें बिघडकर

दिन-रात छटपटायी करता हूँ ।

जैसे मेरा अुह्लास

ज्वानीकी शरनो-सी निर्दन्द हैसी

मस्तीके सपने सतरगी,

भावोंके जूझोंमें गुथे सजे, गीतोंके मुकुलित पारिजात

कल्पनाके पायलकी मबिर बनक

सब भीतर ही घुट घुटकर मिसक रहे चुपचाप ।

किसी केकडके पाशोंमें बंध गया विवश,

जो बूद-बूदकर मुझे सोखता जाता है ।

बाहोमें ताकन नहीं कि हिलतक सके तनिक
 यों जीवनका नवनीत चुक रहा शनं शनं:
 संगीत चुप रहा शनं. शनं. !

जो सीमासे अमंग-अमंगकर
 सरिता-सा बह अठे — गा अठे
 में अफान था !
 सत्यवान था !
 लेकिन सब 'सत' चुका,
 न पतझर रुका
 भाग्यकी शाखें झुक न सकीं—
 फिर भी केवल अंक अजाना मरता-सा विश्वास
 कभी बल दे जाता झकसोर
 किसी दिन 'सावित्री' की ज्योतिर्मय सांझें
 जिस अम्बकारके कुंजोमें आलोक बिखेरेंगी आकर,
 मेरा अवसाद ओस बनकर चमकेगा,
 मैं रक्षित हूँ अंक सुगन्धित अलक जाचसे
 जो यह साँपोंके जाल काट दे सक्ता है
 स्नेहका सम्बल यमसे भी लौटा लायेगा !

[आगरा

कविता :

मैं तो अुनको देख रहा था ।

: श्री 'निशंक', अेम. अे., सा. र. :

मैं तो अुनको देख रहा था ।

जीवनकी निधि खोकर भी मैं
 जीवन-धनको देख रहा था ।
 मैं तो अुनको देख रहा था ॥

कोयलने सदेश सुनाया—

“मधुरितु आयी, ऋतुपति आया”,
 किसने खोया किमने पाया ?
 कौन रो पड़ा, किमने गाया ?

जान न पाया मैं तो अपने
 पागलपनको देख रहा था ।

अधरोमें मृदु हास छिपाये,
 नयनोमें मधुमास छिपाये,
 आये थे वह अिगितमें ही
 मेरा भाग्याकास छिपाये,

तेव मैं मोन खडा अपने ही
 चंचल मनको देख रहा था ।
 मैं तो अुनको देख रहा था ।

अुपन्यासकार श्री निराला

श्री आनन्द माधव मिश्र, धी अं, विशारद

निरालाजी कविवे रूपम ही अधिक प्रयास है। पर अुनका गद्य साहित्य भी अनुपमेय और निगले गुणोको खान है। त्रिस तेजोमे अुनका कवि अद्भुत और रहस्यवान्से मुडकर प्रगतिकी ओर अुमुख हुआ है अुनका गद्यकार भी अप्रतिहत गतिसे गद्य साहित्यम भी नूतन प्रयोग करनमें अग्रसर रहा है। अु होन अपनी चुटीनी व्यंग्यात्मक भाव शैलीमें अपन ममालोचनात्मक निबन्धों द्वारा रीति कालीन अिनिवृत्तिके घृष्ट पटमें अुलक्षी साहित्य पाराको जन मुलभ साहित्य छटा प्रदात की है। साप्ताहिक मतवाला कालमें चाबुक शीपकसे लिखी गयी अुनकी व्यंग्यात्मक टिणणिया साहित्य गगनमें छाष अुग समयके कुहासेको नितर वितर कर सकनमें ही सफल नहीं हुआ बल्कि तत्कालीन तक्षण-साहित्यकारोके घघले पथको भी आलोकित करन और अुह्ने नयी शिषा नयी सूत्र और नयी प्ररणा देनका भी अु होन काम किया है। सावही अु होन साहित्यकारोकी तत्कालीन रूप मडकलापर भी कसकर प्रहार किया है। सामाजिक प्रस्नोके महत्त्वको भी अुनके कलाकारन प्रारम्भसे ही महत्त्वकी दृष्टिसे देला है। अुहान स्पष्ट घोषिन किया कि— मोचन वस्त्रकी समस्या किसी अकके लिभ नहीं है अनकोको अुसक हल करनको आवश्यकता है।

निरालाजीका जीवन सघर्षोकी अदूट शृंखला है। पद-नदपर अु होन ददभरे नूफानी द्वन्द्वोको भला है। अनवरत आफ्ना जीवन्-आवर्त्ता और हलचलोके साथ अु होन होड की है। पर अुनका सौदय शिषी स य दर्शो नलाकार न नहीं शिषका है न यका है न युका है। अक अतूब वेगसे अुसन चलना गुरु किया और अुनी निराली ज्ञानसे आज भी चुनौती देता बडा चला जा रहा है। डा० रामबिलास शर्मान निराला विषयक अपनी पुस्तकमें लिखा है— अुनका (निराला रा भा ६

जीव।) जीवत प्र यक सहृदय व्यक्तिके लिअ अक चुनौती है कि वह अिस मडी गली व्यवस्थाना अन्त करके अक नय समाजका निर्माण करे। स्वय निरालाजी अिस अुद्देश्यको पूतिके लिअ सनत साहित्य मूजन करते रहे ह और विषम परिस्थितियोम भी युग प्ररणाके अविचल वेद्र रहे ह।

निरालाजीका पहला अुपन्यास अपसरा सन १९२१ औ० में प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात वे अक नियमित गतिसे अलका निरूपमा प्रभावती चतुरी चमार (रेखाचित्र) कुल्लो भाड और बिल्लेसुर बकरिहा आदिका सृजन करनमें लग रहे ह। आष दजनसे अधिक अुप यास और दजना व्हानियो (रेखाचियो)का अु होन प्रणयन किया है। काव्य और निबन्धोके नपैत्रम अिम वीदिक तबशीलता और पान पटुतासे अु होन सिहासनामीन साहित्यकारोको हिला दिया था अुनके कथा साहित्यन अुनके परो तलेरी भूमिको ही विवका दिया। अपन पहले ही अुप यासमें अक वेदया मतकोकी कथाका नायिकाकी भूमिकामें अवनरित करके पूरे रोमटिक शल बलके माथ अु होन अुप यास अगतमें अक वान्तिवारक हलचल अुलन कर दी। प्रमचदन यति गाँवोको गोदसे पूल भरे पात्र अुठाकर अुहें अूचा अुठाया तो निरालान समाजकी परम अुपेक्षित शोधित नारीका अुमक पदपर आमीन वरनका तुमल प्रयास प्रारभ किया। अत्सग' से अलका' निरूपमा और प्रभावती' तक अुनका यही क्रम जारी है। काल्पनिक पात्रोकी आदर्शो-मूल रचना कर लेवक मतन ही आग बढता चलना है। अुसने अपन अिम प्रयासम भारतीयताकी पूरे वगस ररषा की है। नारीको पाश्चात्य रगम रगकर अुद्धत-अुच्छल आधुनिकताकी वेग भूया प्रदानकर अयशानि अिशृंखलाको अुसन ज म नहीं दिया है। वरन भारतीय संस्कृतिको गौरव मनीके सतीत्व और ममनामयी, त्यागव्रती साध्वी नारीको अुसन पग-पगपर प्रतिष्ठिन

करनेका प्रयास किया है। 'अपसरा', 'अलका', 'निरुपमा' यदि अूनकी प्रारम्भिक रचनाओं हैं तो 'प्रभावती' अूनके सक्रमण-कालीन भावोकी धाती है और अन्य कृतियाँ कुल्लीभाट, चतुरीचमार और बिल्लेसुर बकरिहा अूनके स्वस्थ, प्रौढ यथार्थवादी कलाकारके दृढ़ रचना-चिह्न हैं।

निरालाजीने अपनी प्रारम्भिक रचनाओंमें काल्पनिक आदर्शोन्मुख पात्रोका चित्रणकर समाजमें भव्य आदर्शोकी प्रधान भूमिकाको जहाँ अेक ओर मुलभ बनावेका सफल प्रयास किया है, वही नवयुवक स्वस्थ चेतनावाले तरुण-वर्गको सामाजिक प्रगतिके लिअे असीम वेगसे अुभाडा है। निश्चय ही, समाजकी वीभत्स समस्याओके हल का यह प्रयास नहीं है, फिर भी प्रेरणा और अुत्साहका षषेत्र तो है हो। अिससे अिनकार करनेका अर्थ कलाकारकी भावनाको न समझना ही होगा। यहाँ केवल देखना यह है कि कलाकार अिन काल्पनिक अुडानोमें अुड तो नहीं जाता, भूमिका आधार तो नहीं छोड बैठना, जन-जीवनसे कट तो नहीं जाना। और फिर किसी कलाकारकी प्रारम्भिक रचनाओंमें ही प्रान्ति अथवा प्रगतिका अुच्चतम स्वर ढूँढना भी तो श्लाघ्य नहीं है। अुसकी कृतियोमें गतिके कणोकी अुपलब्धि आवश्यक है, जो अुसे अेक दिन सही पपपर ले ही आअेंगे। अँसा ही कुछ निरालाके कथाकारका है। वह आदर्शसे-कल्पनासे चलता है और फिर अपनी भूमिपर, अपने यथार्थको देखने लगता है। यही, अुमकी महानताका, चिर प्रगतिका चीनक है।

अिस प्रकार हम निरालाजीके कथा-साहित्यको पूर्वं और अुत्तर-कालीन रचनाओंमें बाँटकर देख सकते हैं। निश्चय ही अपनी पूर्वं कृतियोमें अुनका कलाकार युगकी समस्याओको पूर्ण-वेगसे आत्मसात नहीं कर पाया है। पर अुनमें सतत बढनेकी अुत्कठा है, वेग है जो कि अुनकी अुत्तर-कालीन कृतियो (कुलीभाट और बकरिहा)में अुभङ्गकर सामने आ गया है। यह भी सही है कि अुनकी पूर्वकालीन रचनाओंमें विसान-मजुरकी सही कविता मूल्यांकन-चित्रणका भी अभाव है, और अुनका कलाकार अेक सही पपका निर्देगन करनेमें भी सफल नहीं हो पाया है। पर छायावादी कलाकार

जो अमी अपने भीतर ही ढूढ कर रहा है, जो अमीतक रोमाममें ही डाँक रहा है, अुसमें अिस कालमें अिसने अधिककी आशा भी नहीं रखी जा सकती। हमारे लिअे गोरवकी जो बात है वह यह कि निरालाका कलाकार अिन छायावादी मंदिर रगीनियोकी छिन्न भिन्नर तीव्र वेगसे यथार्थ पपकी ओर सक्रमण करनेमें लगा है। वह यह अनुभव करने लगा है कि—“कलाके विकासके लिअे जनताके दुख-दर्दको तसवीरे खीचना जरूरी ही नहीं, अनिवाय है।”

निरालाजीकी पूर्ववर्ती रचनाओंमें पात्रोकी सुल-कर विकसित होनेका अवसर भी नहीं मिल सका है। कथानकोमें अुपकथानकोकी सूत्रबद्धता भी कहीं-कहीं नहीं निभ पायी है। अिस सवमें कविके अूपर छाये हुअे अँदत और रामकृष्ण-मिशनकी तत्कालीन छाप है। परन्तु अपनी अिन रचनाओंमें कलाकार अप्रतिम शैली, गद्य-विन्यास, भावोकी प्रहणशीलता और अद्भुत दृढतामें अपराजेय है, अद्वितीय है। हास्य और व्यंग्यके साप विषय वस्तुकी रसमयता सर्वत्र ध्याप्त है जो सहज ही पाठकका मन मोह लेती है और अपनी छाप बिना लगाये नहीं छोडती। ये कवि-कलाकारकी सहज अनु-भूत रचनाओं हैं। ये पूरे वेगसे चलती हैं और हृदयर छी जाती हैं। 'अपसरा' में कलकत्तेकी कहानी है। 'अलका' और 'निरुपमा' में लखनऊ और गडाकोला (कलाकारकी पितृ-भूमि) के अनुभव गुम्फित हैं। 'अपसरा' और 'प्रभावती' अुनके कवि-मुलम मौदर्यमिड प्रेष-परिणितिके चरम बिन्दु हैं। अिन सभी कृतियोमें अुनकी भाषा, अुनके काव्यकी भाँति ही अेक सरपम-लयका बोध कराना चलनी है। भावोकी गुण्ययोमें भी भाषाकी यह गेयता पाठककी सुदगुदीकी चेतन बनाने रखनी है। और अुमें 'बोर' नहीं अनुभव करने देती। अुनके शब्द सहज ही हृदयको वेधने चलते हैं और अेक अँसे रमोद्रेकको अुद्रेलित करते रहते हैं जिमकी मिडासका अनुभव भीतर ही भीतर पाठक करता रहता है। यही अुनकी सफलताकी कुञ्जी है। यही नहीं, अुनकी अिन प्राथमिक कृतियोमें मिनेमाका-सा दूर्य-विनाम तना रहता है। रोमामके साप देस सेवाका पुट, पडा-निपा

नायक, अर्धवियत नारी वर्गकी नायिका और कभी त्रासि
कारी युवक नायक और धनी नायिका, अन्के व्यापक
पूत जीवनका चित्रण सिनेमा जैसे मनहर, हृदयहारी
दृश्य ला अल्पस्थित करते हैं जा पूरे वेपमें जन-मानसपर
छा जानेकी सफल शक्ति रखते हैं ।

निरालाजीकी अन्तरराष्ट्रीय रचनाओं प्रामोण
जीवनकी चित्र-रेखाओं हैं । ये अन्के सतत जागृत
कलाकारकी हिन्दी साहित्यके लिये बजाइ देन हैं ।
कलाकारने अपने अन्तरदासित्वको पूरी कथमताम
त्रिनमें ओट लिया है । जीवनकी विविधताको
'चतुरी खमार' में एकका समारोपित करनका
प्रेमचन्दके गोदानमें होरीकी भाँति, एक अभिनव प्रयास
है । चतुरी गाँवमें पैदा हुआ है । वह अपने प्रेतेके लिये
आश्रयें रखता है । उसे पढ़ाना लिखाना चाहता है ।
सन् ३०-३२ के किसान आन्दोलनके दिन हैं । चतुरी
आदिपर जमींदारका प्रकोप होता है । मुकदमें होते हैं ।
हारकर भी चतुरी खुश है कि असन जान लिया—
"जूता और पुरवाली बात अन्दुल अजैमें दज नही है" —
असे ज्ञान हुआ कि जमींदारको जगदस्नी दो जोडे लेनेका
अधिकार नहीं है । वैसे यह घटना अपनेमें एक साधारण
घटना है । पर शूद्रत्वका अन्त कैसे होता है निरालाजी
चतुरीके जीवनमें यह ममज्ञानमें सफल हुआ है । यही
अस कृषिका मूल प्राण है । इसी प्रकार, कुहली भाट'
के रूपमें किया गया व्यंग्य एक पूरे युगपर व्यंग्य है ।
पात्राकी सजीवता, सखी हुसी, सरल भाषा, व्यंग्य और
हास्य असमें देवतेही बनते हैं ।

'बिल्लेमुर बकरिहा' निरालाजीका सर्व सफल
प्रामोण चित्र है । अवधके किसानकी एक भरी-पूरी
तसवीर लेखकने खींची है । बिन्डमुरके पास निरुपमाके
नायककी भाँति शिवपानी अूची डिप्री नहीं है । पर वह
व्यवहारिक जीवनमें अगुमें अधिक सकल अतरे हैं । वे
तीन भाओ हैं—मन्नी ललबी और दुलारे । वे स्वयं
बकरी पालने हैं, असिलिये अन्का नाम बकरिहा पड

गया । सामाजिक जीवनपर जैसा तीव्र व्यंग्य चित्र
निरालाजीन खींचा है कि सामाजिक अहम्ता मारा
ढाँकाही कथमग गया है । बकरिहा तगके मुकुल हैं ।
फलत छोटे जातण हानसे व्याप्तकी नमस्या सामने है ।
वेक भाओ एक विधवाकी अन्नोप कथाम सगाओ फँसाने
हैं । दूपने गुजरानके एक ब्राह्मणके सहा नीकरी करत
हुअे अन्के घरनेपर अुसकी पत्नी-पुथी समत पात्र अमबाव
समेट लाते हैं । समाज स्वीकार नहीं करता । नीमरा
भाओी मुकुल परिवारमें विरवा विवाह कर आयी नारी-
रदनम अपना घर आबाद करत हैं । बिल्लेमुरका वर्णन
मवसे रावक है । वे बगाल जाते ह । जमादार सलीदीन
मुकुलके यहाँ ठहरते हैं । अन्का बाबाकी छेट छाडकर
कटी माला पटककर घर लीगत और बकरियाँ पालने
हैं । सारा पाँच अूनकी अन्नतिसे ओग्या करता है । अक
विवाहका प्रस्ताव आता है । राता रात वे स्वयं देखने
हैं—'बहुत गोरी है । मोल्ह सालकी है । बडी बडी
अँवें हागी, जैमी पुवराजबाओकी लडकी हमीनाकी
है ।' बिल्लेमुर नयी पोशाक बनवाने हैं और मंगतूने
घरकी ओर चलते हैं । प्रस्तावका भेद छुट जाता है ती
निराला न होकर अपन भाओीको समुदाय चले जाते हैं
और सासजामे विवाहका वर प्राप्त करते हैं ।

अस प्रकार, अस चित्रणके द्वारा समाजकी जिन
वीअन्म, सडी-गडी व्यवस्थाका निरालाजीने पदापान
किया है लाचारी और लोभका जो मर्दापथभरा-
दरनाक चित्र खींचा है वह समाजकी छापीपर अगदके
जैसा भीषण पदापान है । अन्में खेतिहर मजदूरके
रूपमें बिल्लेमुरने जीवन-नप्राणता जो चित्र निरालाजीने
खींचा है—साथन न होनेपर भी रोटीके लिये लडनवाले
किमानकी जो रण-गया निराशाजीन बहायी है वह
हिन्दुस्तानी किमानको अतराज्य, पोषण्य धनित है ।
हिन्दीके यथार्थवादी साहित्यकी 'बिल्लेमुर बकरिहा'
निरालाजीकी अंभी अमर देन है जैसे कि प्रमचन्दका अमर
किमान-नाव्य (अपव्यास) 'गोदान' ।

यमुने !

(राजघाटकी समाधिसे समीप)

: श्री गुरुनाथ जोशी :

यमुने,

युग-युग पूर्वें द्वापरमें, तुम्हारे तीरपर कुरुक्षेत्रमें अर्जुनकी गीताका रूपदेस देनेवाले श्यामसुन्दर मोहनने अपने बाल्य-कालमें अहीरके बालकोंके साथ न जाने कितने मलोंने खेल खेले थे । कालियका फन कुचलकर ब्रह्मपर वह खडा हो गया था, तुम्हारी गोदमें श्रीडा वरके तुम्हें हँसाया था, गोपिकाओंके साथ राम-श्रीडा की थी । जनताका मन आनन्द-प्रवाहमें आलोडित किया था, नचाया था । छुन दिनों जो खेल ब्रह्मने खेले थे, छुनवा स्मरण कर ब्रह्मकी बसीकी रसीली चापी कर्णोंमें भरके कल तक जनता आनन्दसे विभोर होनी, पुलकित हो आनन्दभू बहानी, जनताके आनन्दमें तुम भी साथ देती, कलकल नितादने सब जनोंके मनको आनन्द-रस-भोग कल तक कराती आयीं । पर क्या जनताका तथा तुम्हारा वह आनन्द शायद ब्रह्म परम पिता महादेवकी न माया ? तुम्हारा आनन्द लूटना तथा औरोंको लूटने देना ब्रह्म परमेश्वरकी अच्छा नहीं लगा क्या ? मानवकी अितना सुख और आनन्द मिलना अचित नहीं जानकर या अितने सुख-आनन्दमें अपनेको मूल गया है, यह जानकर शायद ब्रह्मने तुम्हारे और हमारे सुखका, आनन्दका अपहरण किया क्या कालिदी !

यमुने,

युगयुगोंसे मानव-मनको आनन्द देती आयी हुई तुमकी आज हमें अपार शोक-सागरमें डबेलेनेका दुर्भाग्य क्यों प्राप्त हुआ ? तुम्हारे बड़े प्यारे मोहनका दाह-संस्कार तुम्हारे ही तीरपर देखनेका दुर्भाग्य क्यों तुम्हारे और हमारे सिरपर आकर श्वाचलक अनभ्र वयसायकी तरह गिरा ? आनन्दभूओंकी बहाती हुआ तुम्हारी और हमारी आँसुओंकी आज क्यों दुग्गम्य बहाना पड़

रहा है माँ ! तुम अकेली अपने प्यारे मोहनकी अमानवी हत्यासे शोक नहीं कर रही हो, पर, देखो, देखो वो, सारी दुनिया ही आँसू बहा रही है । तुम्हारे पिताके आँसुओंकी शायद बहना पसंद नहीं आया, जिनीअिअे वे वहीं जमकर नगाधिराज हिमालयने बडिंग सडे हैं । तुम्हारा प्रियतम सार समारके कोने-कोनेने वह आये नयन-नीर अपनेमें अक्षयित कर, अपने मवेंक्षेष्ठ, सभारके प्रिय, महात्माकी अुपाधि प्राप्त, अमर कीर्तियुक्त पुत्रका अल्प-संस्कार कैसे देखूँ, यह सोचते हुअे हृदयविदारक स्वरने रोते हुअे जहाँका यहाँ खडा है ! आजो कालिदी जाओ, अपने अमृगबाहकी दिवा, ब्रह्मके आँसूमें अपने आँसू मिलाकर अपने प्रीतमका दुख हलका करो, धीरज बचाओ ! यह कहने जाओ कि बाकी पुत्रीकी आयु बिर रखनेकी श्रायंता हम परमात्मासे करे ।

देवि,

तुम और तुम्हारी बहन गंगा दोनों मिलकर बड़े भारतके बापू-मोहनकी अस्थिपर लगे रक्तको धोकर क्या यह दिखाना चाहती हो कि ब्रह्मकी अस्थि भी परिगुभ्र है, राख भी परिगुभ्र है तो ब्रह्मकी आँना वो परिगुभ्रताकी प्रतिमूर्ति ही थी या क्या तुम यह दुनियाको बताना चाहती हो कि ब्रह्मकी आत्मा सत्य और अहिंसा तथा प्रेमके रूपमें करोडों लोकोकि हृदयोंमें प्रवाहित विवेपी श्रीपरंज होकर अमर है ।

कालिदी,

आज भारतमें द्वेद, असूया, मर्कापं शत्रु-दायिक्ता, नास्मिन्वताका नाटक हो रहा है । तुम भिनकी अपने प्रबल-प्रवाहने तहन-नहस करोपी कि नहीं ? क्या युग-युगगत अिपी तरह तुम रोती हुओँ,

केक और—

स्वर्ण-मुद्राओंके क्लेशोंके अपर नाचनेवाले नपुंसकको काँटिगत कर
मंवार रौंगेलियोंमें नृत्य करता है ।

केक और—

अन्ध वेग-भूपायी मरीची पैदाकर गभीर भावने खड़ा रहता है
और शुभकी ध्रुवामें नग्न होकर दुनियां सुन्दर स्वप्न देखती है
केक और धनमन-तपा लगातर दिप मुगल रही है
और साम्राज्य-दृष्ट्याके सामनें समात्सनी जहाज चल रहा है ।
वह कब-कब पुष्पहार हाथमें लेकर

हाप !

कजाकर परमनिराशामें, शून्य सुन्दरके नाथ, भीषण काठमनें गली-गली घूम रहा है ।

सुम हारकी महिनाकी जाननेवाला कोभी नहीं था ।

कविका गला मूल गना,

सुमकी मिराबे कर्णीत वनी ।

सुमी गानकी वह धरतीपर गिर पडा और

फिर न हिला ।

+ + +

बहुत दिन बीत गये,

संजान-स्वप्नोंमें शांति फैल गयी,

कभी पहाड विरल-निष्ठ हुआ,

कभी कन्धे लुभे भर गये,

और मनवलमें पूल विकसित होकर आनागने लगे ।

जानागर पूल बरामनेवाले सुम सुन्दरके मध्य

कविकल शायिका दिह जैना जो कत है

वह किमका है ?

विरवके कमिनन्दन गुलाबजल बलकर

सुम जमीनपर लो बरान पवता है,

कहाँ और तदुप सुवसुधुधिमनें नग्न है ?

केक मदी पहेले,

पूतकी कामनें जिय भिन्गारीके हाप गिल्लिलाकर निर्वीर

बन गये थे, सुमकी रत नाचन-भोंकी गुपकर बनाया हुआ

वह पुष्पहार—

दिना तिलनर भी सुरमाये

सुन्दरगामे नहाकर

भाज भी प्रगोभित रहता है ।

सुमके सामने

ममानर अर्जुनबद्ध आराधना करता है ।

[अनुवादक- श्री मोहनलुनार]

[दक्षिण भारत]



पंजाब

: श्री दिआनचंद भिगलाणी :

: अनु०—श्री भद्रन्त आनन्द कौमलपायन :

वेसां विचों वेस मुणोंवां सोहणा वेस पजाब
 णोवन असि वा बल्लुर्वा मारे, कोभी न बल्ले ताव
 अल्लां वे माल गल्लां करवा अये सोल शवाव
 लंठां घरने गभरु असि वे विल वे दाली, नवाव
 विच मंदानां चमके असि वे, मुरमिअां बी अॉव
 सतलुज, विआसा माली असि वे लिहिआ वांग गुलाब
 लहि-लहि करदे खेतां विचों मोतो मिलण नावाव
 घरती ते मुरगां वा टुकडा, बसवा रहे पजाब

मुरमिअां दिवां वारां गाओआं जावण विच अणांटे
 पलट घेआ बिममत वा पासा, मुक गये तरले हाटे
 पूरा होवेगा हृण छेनी आजादी वा लाब
 घरती अने मुरग नमूना बसवा रहे पजाब

[गुना जाता है कि देशोंमें मुन्दर देश पजाब है ।
 जिसका जीवन असा चमकता है कि कोअी अुगकी ताव
 नहीं सट सकता । यहाँकी शोय-तरणाओी अॉलोस वात
 करती है । यहाँके जवान लट्टोकें समान हैं, दिन्के
 बडे ही अुशार । असिके मेशानोंमें बीरोकी चमक चमकनी
 है । सतलुज तथा अ्याग नद असिके माली हैं । यह
 गुलाबकी तरह गिजा हुआ है । असिके लहलहाते ह्रुअे
 रेतोमेंगे मायात्र मोनिओरी प्राप्ति होती है । यह पृथ्वीपर
 स्वर्गका टुकडा है । यह पजाब बना रहे ।]

[अब दुगोकी रात बीत गयी है । अब मुरजने
 आंगें रोटी हैं । जिन्हाने कभी यह बाग अुजाडे थे, वे
 अब बिस्तर बांध चके गये हैं । ये पजाबी लाडके अब
 कपर कमकर खडे हो गये हैं । सकिन-मममर लोग कभी
 'यओी', 'यओी' नहीं बगते । कपडोर ही राने रहने हैं ।
 वीरसि गीत गाकरये अवाडोंमें अुनर रहे हैं । बिममतका
 पासा पलट गया है और मिप्रन-चिगेरी करना ममागन
 हो गया है । अब श्रीअुरही आजादीका स्वन्न पूरा होगा ।
 पृथ्वीपर स्वर्गका नमूना—यह पजाब बगता रहे ।]

बाण सौणे बी घरती, विइन् गीअां गुलजारां
 नरे शगुडे, नबीअां बलीअा, नबीअां अंग बहारा,
 नरे शेम बीअा नबीअां महिरा, भरसन अंन भण्डारां
 सरगोअें ते संलपुरे दीअां भुल जाण गोअां वारां
 कोटिआ बी वां महिल बगनगे, गडिअां बी वां कारां
 नवां जनन शहिरावा होवा, रौणक गनी-बजारां
 मूरज वांग रौशन होवे अेह खड्वा पंथाव
 जनत बी पओी रीत करे, अिअे बने अेह पजाब ।

बीत गयी हृण रात दुलां बी, मूरज नंग अुघाडे
 कगह बिस्तरा टुर गये अंधों, जिन्हीं बाग अुजाडे
 थंक बन्दके अूठ ललोते, अेह पजाबी लाडे
 तगडे कवी न पओी यओी करवे, रोवे रंहुदे माडे

[पृथ्वी सोनेकी खान बन गयी है। अब मुलजार महल बनग और गाडियोंकी जगह मोटरकार लगी। खिलेग। नय रागूफे, नयी कलियाँ और नयी बहारें सहराका नया जन्म हा गया है। गली-बाजारोंमें रौनक होगी। नये बाँध और नयी नहरे होंगे। अन्नके ढण्डार है। यह चटना हुआ पजाब मुरजकी तरह रोगन हा। भरे जाजेंग। सरगोध और लाधलपुरकी बारे (नहरोंसे स्वर्ग भी बिसकी रोम करे—यह पजाब बिस तरह सींची गयी भूमि) भूल जाअगे। कोठडियोकी जाह बसत रह।]

[कालिम्पोङ

पंजाबी कविता

खेतोंकी भरपूर जवानी

: सुश्री अमृता प्रीतम :

(पंजाबी)

भरपूर जवानी खेतों दी, भरपूर जवानी हो ।
 खेत जो गोड बीजे बाहे—भर सरोवर ते पानी लयाअे,
 शिक शिक कोह ते पात्रर छनकी, बेल जो लीते खोन ।
 गिट्टे गिट्टे खेत होअे हो गोडे-गोडे खेत होअे,
 मीनिया करवा पया जो दाना, स्टिट गये खलो ॥
 भरपूर जवानी हो ।

लम्बडा दे बिच वाहर पओ, 'हो कावा' दी बाज पओ
 भरिया बन्न बन्नके म हारी, बूल ता ले गय खो ।
 कच्चा कोटा लिम्बके रखया, झाड पूजके, लिम्बके रखया,
 सखम सखना कोटा मेरा, मूह बले झाके ओह ॥
 भरपूर जवानी हो !

आर गयी हाँ, पाँर, गयी हाँ, दूड-दूडके हार गयी हा,
 पक्के महल्ले बडे जो दान, मूड निकली न सो ।
 हाँओ बीजी, सावणी बीजी, दूनी बीजी चूनी बीजी,
 सडदा-बलदा हाड गया, ते ठण्डा बक्कर पो ।
 भरपूर जवानी हो ।

खेतों दी भरपूर जवानी, मेरी भुष दी करे कहानी,
 मेरी मूल दे गोल सुनाते, पये बलेअे खो ।
 घुघ गुवार अन्द घडियाँ, मैं खेतों दी बट ते खडियाँ,
 मूरज दुब्या घड न घडया, न तारे दी लो ॥
 भरपूर जवानी हो ।

सत्ता आओया, सत्ता गाओया, अँसे बटने दुहाँ रओया,
 पूड पओ मेरे पखा अत, राह न बिस्या की ।
 गोहे न घुल्लदे, बनक न गुजदी, ये नहीं खडा साथी पुजदी,
 न खन पखावे रोटियाँ, न तारा करे रमो ॥
 भरपूर जवानी हो !

अनुवाद :

(हिन्दी)

खेतोंका भरपूर यौवन, भरपूर यौवन !
 खेतोंको जो जोना, धीमा तो तालाबके पानीसे मोचा,
 हर कुअँपर झाँ में गूँज झूठी, जब बेलोंको जोत गिया ।
 खेत फिर टपने-टपने तक डूबे, फिर घुटने-घुटने तक बड़ गये,
 जब मोनी जैसे दाने पड़ गये ता मिट्टे बागी-बागी हो गये ।
 भरपूर जवानी खेतोंकी !

जब खेत करनेका समय आया, 'ता झुड़ जा कौ' की आवाजसे खेत गूँज झूठे,
 मैं तो गट्टे बान्ध बान्ध कर थक गयी, परन्तु (अनाजका) डेर ता वह झुड़ाकर ले गया ।
 खेत कर और झाड़ पोछ कर, मैंने अनाज रखनेके काठेको नितार दिया था ।
 मेरा खाती और अदाम कीटा, रह-रह कर मेरा मुँह देव रहा है ।
 भरपूर जवानी खेतोंकी !

अनाजके दानोंकी तराजमें मैं मारी मारी फिरी,
 पर अके वार पक्षे मट्टो (के कोठा) में जाकर दाने फिर वाहर न निकले,
 गावन और असाइकी पमड, दुगुनी-दुगुनी और फिर चौगुनी-चौगुनी बोयी,
 जलना-जलना अगाड़ गया है, और ठसा जमा दनेवाग पोह ।
 खेतोंकी भरपूर जवानी !

खेतोंका यह भरपूर यौवन, मेरी भूलकी क्या कह रहा है,
 मेरी भूलके नाके गुना रहा है, हृदयमें अके हूक-गी झुठती है ।
 खेतोंके अन्दर घुमलना-सा छाया हुआ है और मैं खेतोंके किनारे पर लड़ी हूँ,
 सूर्यास्त हो गया है, और चन्द्रमा अभी निकल नहीं है ।
 खेतोंकी भरपूर जवानी !

झुलुअँ आयी भी, और चली भी गयी, पर मैं झिमी प्रकार चलती आयी हूँ,
 घूलमें पजे अट है, और राह सुझायी नहीं देनी है ।
 अगले जलने मट्टी हैं, और आटा गुन्नीना नहीं है—खेत मुझे मान नहीं हूँ,
 (परन्तु) न चन्द भोजन पकावेगा, न तारा रमोजी करेगा (और मुझे झिमी
 प्रचार चलते रहना होगा ।)

(अनुवाङ्क :—श्री घनश्याम सेठी)

[काश्मीर]



हिन्दी भाषा भारत आशा

विविध विषय

१. राष्ट्रभाषाका स्वरूप

[पं० जवाहरलाल नेहरूका भाषण]

[दिनांक ५ जनवरीको सायंकाल ४-२१ पर, मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलनके हिन्दी भवनका शुभ-शिलान्यास करते हुअे नागपुरके अतिहासिक अवं अनूठे साहित्यिक-समारोहमें भारतके प्रधान मंत्री प्रियदर्शी पंडित जवाहरलालजी नेहरूने जो महत्वपूर्ण भाषण दिया अुमको हम सविपत्त रूपमें नीचे दे रहे हैं। पंडितजीने राष्ट्रभाषा हिन्दीकी योग्यता और अुसके स्वरूपके सम्बन्धमें अपना लोकप्रिय मत व्यक्त किया कि राष्ट्रभाषा अुस व्यापक और सार्वजनिक भाषाको कह सकते हैं जो राष्ट्रमें बोली और समझी जा सके और जिसके द्वारा हमारे राष्ट्रीय कार्य वेरुकावट चल सके, वह सरल हो, सबल हो, अुस भाषाके द्वारा देशके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार चल सके और जो सारे देशकी सभ्यता और संस्कृतिकी प्रतिनिधि हो। लीजिये, आगे पढिये— सम्पादक]

“कोभी भाषा सिर्फं दफतरोके अन्दर ही नहीं गढी और मढी जाती है। कोभी साहित्य केवल दरबारी साहित्य नहीं रह सकता। लेखक या साहित्यिक सिर्फं कविता और कहानीकी रचनाअे बरके ही सतीप मानकर न बंठ जाअें। वे देशके अुन हजारो मवालोपर भी लिखें जिनसे आजकी दुनियाको हमें समझनेमें मदद मिले। अिसलिअे दुनियाको समझनेमें सहायक साहित्यका सृजन आवश्यक है। फूलको तरह खिलना ही भाषाका मूल स्वभाव है। अंसी भाषा और अुमका साहित्य मुझे प्यारा है। हर देशके लिअे साहित्यका सम्ग्रन्ध जीवनके साथ बंधा हुआ है। दुबल देशका साहित्य दुबल होता है, अुभी प्रकार दुबल साहित्य देशको दुबल बना देता है। किसी देशके साहित्यसे यह जाना जा सकता है कि वह देश बंसा है। साहित्यका सवाल दुनियादी सवाल है। साहित्यके आअिने (दपण) में देशको देखा जा सकता है।

राष्ट्रभाषाका प्रश्न विवाद रहित

अब राष्ट्रभाषाके सवालपर बहसकी कोभी मुजाबिदा नहीं। श्री विदापीत्रीके बयनका अुल्लेख

करते हुअे अुन्होंने कहा कि हिन्दी किसी दूसरी भाषाके मार्गमें बाधक नहीं होगी। भाषाके वपेत्रमें अेक भाषाके बढनेसे दूसरी भाषा कभी घटती नहीं बल्कि विचार-विनिमयके माध्यमसे अुमका विकास होता है। साहित्यकी भाषा और बोलचालकी भाषामें कमसे कम दूरी रखना चाहिये। यो साहित्यकी भाषा और बोलचालकी भाषामें कुछ फरक तो रहता ही है। अगर यह फरक बहुत ज्यादा हो जाअे तो फिर साहित्य कमजोर हो जाता है। वह दुबल साहित्य दरबारी साहित्यकी शक्त अख्तियार कर लेता है या फिर वह अंसा साहित्य बन जाता है जिसे चद लोग ही आपसमें पढ़-सुन लिया करे। प्रजातन्त्रीय व्यवस्थामें बोलचालकी भाषा और साहित्यकी भाषा अेक दूसरेके निकट होनी चाहिये।

तुर्कीके कमालागाता अतातुर्कके जमानेमें यह तप किया गया कि तुर्की भाषासे अरबीके जटिल शब्द निवाले जाअें, आप जानते हैं, अुस समय टर्कीमें क्या किया गया? शब्दोंके लिअे लोग दफतरो या साहित्यकीके पास नहीं पहुँचे। वे शब्दोंकी पूतिके लिअे

(निकाले गये शब्दोंकी खाली जगह परनेके लिये) गावोंमें गये। उन्होंने वहाँमें हजारों शब्द ले लिये— अंसे शब्द जो चालू थे, जानदार थे। हमें शब्दोंके प्रहण करनेमें खुदाय नीति अपनायी होगी। अंग्रेजोंमें प्रतिवर्ष हजारों नये शब्द मिल जाते हैं। कोअी सरकार भाषाके मार्गकी कठिनायियाँ भले ही दूर कर दे, पर किसी सरकारने हुबमसे भाषाको गढ़ा-मढ़ा नहीं जा सकता। भाषा अंक पुष्पके समान है। क्या किसीके हुबमसे फूल खिल या निकल सकता है? हम बीज डाल सकते हैं, पर फूल तो आहिस्ते-आहिस्ते ही निकलेगा और खिलेगा। भाषा बड़ी नाजूक चीज है। अतः तोड़-मरोड़कर नहीं बढ़ाया जा सकता। अगर हालत यही रही तो भय है कि बड़ी हिन्दी केवल दफ्तरोंकी भाषा न रह जाये। मैंने हिन्दीका अंक कोप देखा तो मेरा सिर चकरा गया। अगर अंसे शब्दोंकी बलानेकी कोशिश की गयी तो कहीं अंसा न हो कि

सरकार ही टप हो जाये। कविता और कहानियोंके अलावा हिन्दीके लेखकोंको अतः हजारों मवालोंपर लिखना चाहिये जो कि रोज़ खुदा करते हैं। अंसी रचनाओं हानी चाहिये जिससे आजकी दुनियाको समझनेमें सहायता मिले।

साहित्य-सम्मेलनोंको चाहिये कि वे लेखकोंकी हालतकी ओर भी ध्यान दें। मैं प्रकाशकोका दुश्मन हूँ, (मजाकिया ढगमें) ये प्रकाशक लेखकोंका गला दबाते हैं। सौ-बचाव रूपमें देकर लेखकोंका कापी-राबिट ले देने हैं और खुद हजारों रूपये कमाने हैं। साहित्य-सम्मेलनोंको चाहिये कि होनहार साहित्यिकोंकी सहायता करे और जिस बातका ध्यान रख कि अतःके साथ अयाय न हो।

x x x

हिन्दीके पीछे धर्म है। अतः सस्कृतका शोध प्राप्त है। अतःके दायें-बायें दूसरी-दूसरी भाषाओं हैं।...

२. हिन्दी नवयुगकी देहलीपर

मध्यप्रदेश-हिन्दी साहित्य-सम्मेलनके अध्यक्ष श्री ब्रिजलाल वियाणीके श्री मोर हिन्दी-भवन नागपुरके शिलान्यास-समारोहके अवसरपर दिया हुआ भाषण.—

आदरणीय नेहरूजी, बहिनी और भाजियो—

प्राचीय हिन्दी-साहित्यके अतिहासमें आजका दिन अवश्य अंक घटना बनकर रहेगा। जिसमें बड़ा हमारा और सौभाग्य क्या हो सकता है कि जिस अंक, पत्थर और भाव-भाषा-शैलीका अंक हम निर्माण करने जा रहे हैं जुमनी नींवकी शिक्षा आजके अतिविशेषके बर-बसने द्वारा रखी जाये? सौभाग्य केवल अतिशय नहीं, कि यह अस्कार भारतके प्रधान मंत्री द्वारा सम्पन्न होने जा रहा है। अपने बीज साहित्यके बर-बस, भारतीय आत्माके प्रतिष्ठा, सभ्यताके अंतर्गत जादूगर, प्रयोग और सृजनकारको या कौन साहित्य सम्मानित न होगा? हम अतःके अंसा स्वागत शिष्टाचार करे जा मारे देशकी पू. प्रेरणा बन गये हो और हमारे जीवनमें जिस तरह नींव-बाहर समाये हुए है? हम तो यही

बह सकते हैं कि मध्यप्रदेश-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनके अतिहासमें यह सबसे गौरवशाली दिवस होगा।

हिन्दीके अतिहासमें भी यह अंक महत्वपूर्ण घड़ी है। हिन्दी आज अंक नये युगकी देहलीपर खड़ी है। प्रादेशिक भाषात राजभाषाका स्थान अतःके प्राप्त कर लिया है और अब राष्ट्रभाषाके विकसित होने जा रही है। यह युगके अंतर्गत अंक नवनिर्माण बना है। राजभाषा घोषित होनेके बाद यकायक अतःके अंक महान् अन्तर-दायित्व आ पडा है। दशके अंक छोटे-छोटे दूरदेश, भावों और विचारोंके आदान-प्रदानका अंतर्गत माध्यम बन जाना है। राजनीति, सामन तर और विज्ञानकी नित नयी आवश्यकताओंके लिये अतःके अंक भरपूर अतःके है। अतःके अतःके सर्वगुण, लचीली और गुणवत्ताही होता है कि देशभरकी नाना जैलियों और अतःके हक गये परदायी

आश्रय दे सके। यह सब होते हुए, अंक वपण भी यह भ्रम न हो कि अुसकी अन्य प्रादेशिक भाषाओंमें किसी तरहकी स्पर्धा है। हिन्दीकी ये सब महोदरा हैं, न कोअी श्रेष्ठ न कोअी हीन। अुनमेंमें वगाली, गुजराती, मराठी, तेलगु, तमिल जैसी भाषाओंका तो अपना महान समृद्धिशील साहित्य है, जिनमें हम कुछ पाहीं सक्ते हैं। हमारी यही कामना हो सकती है कि अपनी-अपनी जगह यह सब फूले-फले और मिलकर देगका अुत्कर्ष करें। किन्तु अन्य भाषा-भाषियोंके मनमें अकारण वसे अिम सदेहको हमें दूर कर देना होगा कि हिन्दी किसी तरह अुनकी भाषाके विनासके भागमें वाधक होगी। दोनोंमें कोअी वास्तविक विरोध नहीं, बसोकि दोनोंके वपत्र भिन्न हैं। हिन्दीकी तो आकाशका केवल अिसके सिवा और कुछ नहीं कि वह मही अर्थोंमें राष्ट्रके विभिन्न टुकड़ोंके बीचकी मजबूत मुतहरी कड़ी बन जाके।

हम जानते हैं कि अिस आदर्श तक पहुँचनेके लिये अमी कठोर तपकी आवश्यकता होगी। भाषा पूरे समाज और परम्पराकी देन होती है, अंक दिनकी अुपज नहीं। फिर भी यदि हम चाहते हैं कि हिन्दी अपना अुचित स्थान ग्रहण करे और अपने अुत्तरदायित्वका ठीक-ठीक निर्वहण करे, तो अुसी प्रमाणमें हमें यत्न करना होगा। अंग्रेजीमें हमारा विद्वेष नहीं, अुसके तौ हम अनेक तरहमें ऋणी रहेंगे। किन्तु यह बात मानी हुई है कि सच्चा प्रजातन्त्र तभी हो सकता है जब कि अुसका सारा कारख़ार जनताकीही भाषामें हो, न कि किसी विदेशी भाषामें। और यह जितना धीघ्र होके अुतनाही अच्छा। अिस स्थितिमें हम बच नहीं सक्ते, कभी न कभी यह करना होगा। अिमलिये हिन्दी और मराठीको अिम प्रदेशमें राज-कार्यकी भाषा बनानेमें मध्यप्रदेश सामनने निस्पन्देह अंक सामयिक, सूचनूपना और माहमका कदम अुठाया है। अिमी प्रदेशमें यह प्रयम प्रयोग हो रहा है और थोड़ेही दिनोंमें अिमने जो प्रतिष्ठा पायी है वह अंक अुज्ज्वल भवित्यकी सूचक है।

लेकिन भाषाका प्रश्न अितनी सरलतामें हट नहीं हो पाता। अिमने अनेक व्यावहारिक पहलू हैं जिनका

ध्यान रखना पडता है। सबसे पहिले तो परिवर्तन-कालकी कठिनाअियाँ होती हैं। सासन कार्यको दिना क्वति पहुँचाने ये प्रादेशिक भाषाओं केसे और कब अंग्रेजीका स्थान ले, यह मुरा प्रश्न है। अिन भाषाओंका पारस्परिक सबध दूसरा प्रश्न है और अतिम तथा सबसे महत्वपूर्ण है—भाषाके स्वम्पका प्रश्न।

अिन प्रदेशमें हिन्दी और मराठीने तो अब अपना स्थान ले लिया है। यह प्रतिया अभी पूरी नहीं हुई, फिर भी नेत्रेटरियटमें लेकर गौव-गौव तब अब जनताकीही भाषामें कार्य होने लगा है। अनजानेही अंक मनोवैज्ञानिक प्रातिका अुदय हुआ है। नामन और जनताके बीच अब अंग्रेजी भेदकी दीवार बनकर खड़ी नहीं। जैसे-जैसे समय बीनता है, यह मत्य और भी स्पष्ट होता जाता है।

प्रादेशिक भाषाओंका परम्पर सबध भी समय पाकर यहाँ आपने आप मुलज गया है। अिम राज्यकी प्रादेशिक भाषाओं—हिन्दी और मराठी—दोनोंके यहाँ समान स्थान प्राप्त है और आज हम गर्बमें कह सकते हैं कि अिनके आपसी सबधोंमें जरा भी कटुता नहीं है। अिम सबधमें मराठी-भाषी वंधुओंके महयोगके लिये हम आभारी हैं। अपने कार्योंमें हमें सदा अुनका बल मिला है। हजारीकी मख्यामें हिन्दीकी परीक्षाओंमें बैठ अुन्होंने हिन्दीको अपनाया है और अुमके लिये अनुकूल वातावरण तैयार किया है। प्रधानत मराठी केन्द्रहीमें मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य-सम्मेलनका पहला भवन बने यही अुनकी अुदार वृत्तिका परिचायक है। पाम ही, मडककी दूसरी ओर विदर्भ साहित्य मधका भवन खडा है। जो हिन्दी और मराठीके बीचकी वहुतापिकी भावनाका सूक्त दे रहा है। भाषा और मन्त्रनियोंकी मिलन-भूमि अिम मध्यप्रदेशमें सामाजिक शास्त्रकी दृष्टिमें यह अंक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयोग है। हमें विश्वास है कि देगके सामने सांस्कृतिक मेल-मिलाप और भाषा-महिष्णुताका हम अंक अुदाहरण रन सकेंगे।

भाषाके स्वम्पका प्रश्न अवश्य सबसे जटिल है। अिस मरधमें अुदार और स्वम्ध नीति अपनाता आवश्यक

है। भाषा गन्दकापकाके या मरकागी आदिनाम गडी जानचाणी कोआ कृत्रिम वस्तु नहा। अने तो जनता ही—भुमके बाव ळवक गावक कडाका और विचारन निमित्त करे। गाननका काम होगा कि अिम भाषाका मायाता और जहाँ आवश्यकता हो प्रोसाहन ३।

अिस दिगाम मबम प्रबम आवश्यकता है अक अरिहृत गामकीय वचानिद और वाकिभाषिक गलाके हिंदी न दकोणकी। राज्य सरकारन अिस सबबम मराठीय प्रदाम विदा है जा राष्ट्रभाषाका माग प्रगस्त करेगा। पर स्वप्लन यह अक अविभ भारतीय स्तरका वाप है। कडीय गाननमे हमारा निवेदन है कि कायके मह वका दखत हुअ विभन भाषाजाके विदाला और राज्य गाननके सहयोगमे काओ जवी भाजना तैयार करे कि यह शीघ्र मम्पन हो सके।

लेखकाका अुनम रचनाओन लिअ पुस्तक बनन और विभिन्न प्राणैगिक भाषाओके श्रवोका हिंदी मराठीम अनुवाद करनी राज्य सरकारकी याजनाका हम स्वागत करे ह। भाषाकी समद्ध करन और माहिरियक समवय स्थापिन करनम अनुवादाका महत्वूप हाव होना है। मुअ सदेह नही कि अिन याजनाओको सकल वानानम हमारे माहिा वन पूरा पूरा सहयोग दग।

हिंदी म अिय सम्पन भा अिम दिगान अन कसव्यान जनभिन नहा। हम र माहिरियाके लिअ यह अक महान निमाण-यग है। हिंदीपर जा अुन गायिरव आ पना है अमे अुम अकरूपवताना है ता क वह अयजी जानवे वाद रिखन म्यानकी हर तरहम पूति वगनके योग्य हू जाअ। म अपने कवि लेखक म हि विभ मित्राको आमनित करता हू। आजकल हमन हिन्दीके लिअ जो माग की थी वह पूरी हा गयी। अब हमारी परीवपाना समय है। हम रे विचारक व लेखक हिन्दीहाम सोच जाँ हिन्दीहाम लिख। हिन्दीका हम अिनकी समझिगानी बना द कि वह जन जन अरम्भ मम पा र और सबकी गठहार बन जाअ।

बपोंम प्राणों हि ग माहिय सम्पनके अपन अमे भवनकी कमा महनुम हो रही थी कि जहाँ जन त माहिय माधता हो सके। सम्पलन अुमसर निवासी मेठ नर्ममगदासजी मोर थी गावीकिमनजी जयवाल और श्री दुर्गाप्रसादजी मराफका आभारी है अिनकी दानगाकनामे अने भवनका स्वन मवाव हान जा रहा है। उड लावकी गणनम वननवाके अिय भवनम अक मिला जुला रगमव और समा-स्वल् रहगा अब पुन काय तथा अनुभवान गाठा होगा और माव ही अनियिगह हाग। हमें आशा है यह साहित्यना वाडा स्वथ होगा।

३. देशकी अेकताके लिये हिन्दी

अुत्तर प्रदेशके परमश्रेष्ठ राज्यपाल और गुजरातके सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार श्री क मा मुन्दीने हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार समा द्वारा आयोजित अेरु स्वागत ममरेहमें राष्ट्रभाषा हिन्दीके सम्बन्धमें कहा —

हिन्दी बिना हमारे देशकी अकता संभव नहीं। जो ठोम काठेओ तथा अुच्च स्तरके राज-काज व्यवहारमें हिंदीका माध्यम स्वीकार नही करना चाहत वे अिय अकताक मार्गमें बाधा ही अुरशियत कर रहे ह। हमारे देशकी अकताक ठिअ हिंदी बगदानके रूपम हमें मित्री है और अिम बगदानक महत्वकी हम ममझना चाहिन।

हम लोगान अपन म माजिक जीवनम छुआटून और भद भावनी कापी आधय दिया है किन्तु भाषाके कथम अिम प्रकारकी छुआटूनमे बडी हानि हागी। हमें यह नही मोचना चाहिअ कि कौन-या गन्द अिम भाषाका है बकि अिम बातकी कागिग करनी चाहिअ कि अिम भाव या वस्तुके लिअ हमारे तम गन्द नपी ह अुनक लिअ हम अपना मभा भाषाअाम अुपयुक्त

निर्देयके अनुसार ढली हुई अिन पद्धतियों और रीति-रिवाजोंमें अितिहासकी घटनाओंमें समय-समयपर परिवर्तन होने रहते हैं। किसी समय हम लोग कबीलोंमें बैठे हुये थे। अब अतिशीघ्र श्रेक अँसा भी समय आनेवाला है जब कि सारे विश्वके लोगोंके अँर कुटुम्ब या विश्व-समाज (व-ईं भोग्यअिटी) के रूपमें परिणत होना अवश्यम्भावी है। अिस तरह हमारे समाजकी प्राचीन व्यवस्थामें लेकर आज तककी व्यवस्थाका विकास भविष्यमें निरन्तर सघर्ष और समन्वयका फल है।

भारतीय विचार-धारा

भारतीय समाजकी व्यवस्था अिलुल मुनगति है। अिस व्यवस्थाके अलगत विधि निपेयोंकी क्रिये हुये भारतीय धर्म मनुष्यको अपने जीवनकी प्रत्येक दशामें पुद्गार्थके अुच्च, अुच्चतर तथा अुच्चतम स्तर तक पहुँचानेमें सक्षम है। अिस धर्मके अनुष्ठानसे मानव-सहज दुर्बलताओं प्रत्येक दशामें न्यून, न्यूनतर और न्यूनतम होकर सर्वथा लुप्त हो जाती है। अिससे मनुष्य-जीवन प्रत्येक दशामें पवित्र रहता है। यह सगठन प्राचीन ऋषि-महर्षियों और अर्वाचीन साधकोंकी सतत साधना और अनुशीलनके द्वारा निष्पन्न सर्वोत्तम विचारोंका अिस्मित रूप है। “मध्य वेद, धर्म चर” ही अिसका मूल-मंत्र है। अिसीलिये हमारा धर्म सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक है। मनुष्यकी सर्वोत्तम शक्तियोंके विकास तथा पोषणके द्वारा व्यक्तित्व और सद्गता व्यक्तियोंकी समष्टि या समाजके विकासकी व्यवस्था ही हमारे मानव-मताका लक्ष्य रही है। भारतीय आदर्श मपूर्णतया मन्यकी गहरी नीबुर में स्थित होनेके कारण स्थिर है। यही सत्य भारतीयोंके भौतिक तथा आध्यात्मिक जीवनका ताना बाना है। पश्चिमी समाजोंमें आज जीवनके प्रति पश्चिमी माश्रामें अतुलिकी भावना अिग्रायी पडती है। क्योंकि अुनके आचार और विचारामें पार्थक्य है। आचार तथा विचारोंका सामन्वय भारतीय सामाजिक जीवनकी अिसेपना है। अत यह पश्चिमी समाजके लिये आदर्श बना हुआ है।

समाजकी वर्तमान स्थिति

अितना सब होने हुआ भी यह जानी हुयी बात है कि आज न पूर्वी देशोंकी सामाजिक स्थिति ही नृत्तिकर है, न पश्चिमी देशोंकी ही। क्याकि वर्तमान दशामें समाजकी आवश्यक भलाओ तथा योग्यपेम सघ नहीं रहा है। अमरीकाकी अतुल्य सम्पत्ति, औद्योगिक क्रांती की कभी न घमनेवाली हलचल और सगठनकी असाधारण शक्तता या अिगठकी मुसमूढ और अिधिष्ट मालुत्तिक परम्परा—अिन सबके होने हुये भी ये दोना राष्ट्र विश्व-भरमें अत्यन्त हीन अपराधाने केन्द्र बननेमें बच नहीं पाये है।

डाक्टर अेलैक्सिज़ कैरेल महोदयकी चेतावनी

मुद्रसिद्ध नोबेल-पुरस्कारके अिजेता समाज-दर्शन शास्त्रके अिष्णात अिद्वान् डाक्टर अेलैक्सिज़ कैरेल (Dr. Alexis Carrel) महोदयके विचार अिन अवसरपर ध्यान देने योग्य हैं। आपने पश्चिमी समाजकी वर्तमान दशाका अिवर्णन तकपेमें या अिया है —

“दशके मनीषियोंके मनम यह मदेह अुत्पन्न हो गया है कि वर्तमान सामाजिक दुर्दशाका अिदान ठीक है या नहीं। क्या अिस दुर्दशाके कारण केवल आर्थिक या अित्तीय है? हम अपने अर्वाशास्त्रज्ञोंके अुनकी मुगनुष्णा अब अज्ञान और राजनीति तथा अनाधिपतियोंका अुनकी मूर्खता तथा अर्बव धन अिम्माके कारण दोषी ठहराये अिना कैसे रह सके हैं? क्या आधुनिक जीवन-पद्धतिये मपूर्के राष्ट्रके अौद्यिक तथा नैतिक बलकी घटा नहीं अिया है? तरह-तरहके मुशारा दमन करन और अाराधियोंके लडनेके अिधे पति कर्षे अरवीं टालनेका अणव्यय हम क्या करे? आज अिन भी गुडे अोग दल बाँडर बनें तो अिन दहाडे मरुठनाके माथ लूटने ह, पुत्रिसवात्राको मार डालने ह, बच्चाका बचकर धन कमाने ह या मुस्त शहकोंके न मिठनेपर अिठाने-अिठानेके व्ययय बचनेके अिधे अुत्त माश्र भी डालने ह। अिन बातोंको रोक्नेके अिधे अिये अनेकले अपार व्ययके होने हुये भी यह मव बरा हो रट है? मध्य अोगोमेंसे अुद्धि-अष्ट और अिर्वक-मनके

व्यक्ति अितनी मस्यामें कहीं निकल आये ? सारे ससारमें आज अज्ञान अपनी चरम-सीमाको पहुँच गयी है। क्या इसके कारण केवल आर्थिक हैं या वैयक्तिक और सामाजिक भी हैं ? आशा है कि हमारी मभ्यतामें दीखनेवाले पतनके ये प्रारंभिक लक्षण हमें इस बात-पर गभीरताके साथ विचार करनेका बाध्य करेंगे कि जिसमें हमारा अपना या हमारी सामाजिक सम्थाओंका कहींतक हाथ है। समाजकी अिम दुर्दशाको दूर करक सामाजिक व्यवस्थाको मशकत बनानेकी आवश्यकताका क्या हम जब भी अनुभव नहीं करेंगे ?”

[अज्ञान मानव (मैन, दी अनूनोन) तरहवाँ

संस्करण, १९८८, पृष्ठ मख्या २५८]

यह चेतावनी पश्चिमी मभ्यताके अन्धानुकरणमे पूर्वी देशोंको बचानक लिअे पर्याप्त है।

प्राच्य देशोंकी दशा

हम आज चीन और जापान जैसे पूर्वी देशोंकी सामाजिक स्थितिको विलकुल ही अक्षर पाते हैं।

विदेशी शासन अेव परतन्त्रताकी लवी अवधिने बाद हम भारतीय अभी-अभी स्वतन्त्र हुअे हैं। आज भारतीय समाज-मुधारका पर बडा भारी अुत्तरदायित्व आ पडा है। अुनको दूरदगिता, श्रद्धा तथा विवेक-वृद्धिम काम लेना चाहिअे। अिम तरह त्याग अेव सेवाकी मनोवृत्तिमे अुनको आगे बढकर दिनयके साथ समाजकी सेवा करनी होगी। मेरा पूरा विश्वास है कि अिम महान् अेव पवित्र कार्यके ितोंहके लिअे हम अपनेको हर तरहमे योग्य पाअेंगे।

समस्याकी ध्याति

डाक्टर रेक-ज महादयने अिम समस्याकी व्याप्तिके सम्बन्धमें बडी दखनाक साथ निम्नलिखित मार्गभित्त बाने कही हैं —

“भारतकी सामाजिक अुदातिके लिअे हमें चाहिअे कि अंधी अेव वैज्ञानिक-समाज-पुधार-संज्ञाना नैधार करे जो हमारे देशके दार्शनिक लक्ष्यको लिये हुअे हो और त्रिमय। लागू करनेमें सुविधा हो। आज प्रत्येक देशमें आवश्यक मत है कि आरक्षकी-विभाग (पुलिम-विभाग),

अपराधियोंको मुधारनेवाली (दोमेद-स्कूल जैसे) सस्थाआ और धारा-सभाओंके कार्यमें अैसा मामत्र-स्यपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो जिसमे अेकका कार्य दूसरेका पूरक हो।”

डॉ रेक-ज साहबके अिस कथनका प्रत्येक मत्र ध्यान देने योग्य है।

मुख्य सिद्धांत

समाज-व्यवस्थामें मिथिलना लानेवाली बर्तें ममाजके भीतर भी होती हैं और बाहर भी। अन्दरनी बातको लीजिअे। निरन्तर “अपराध अेव कर्त्तव्य-भ्रष्टताके” लिअे बार-बार दड भोगनेवाले बच्चों और बालिग लोगोंको मुधारनेकी बातपर आज जोर दिया जा रहा है। अिम समस्यामें दो मुख्य बातें अन्तर्निहित हैं। बालिगोंमें बार-बार अपराध करनेकी प्रवृत्तिको दूर करना और बच्चोंमें कर्त्तव्य-भ्रष्टताकी प्रवृत्तिको निवारण करना—भारतीय दृष्टिमे सामाजिक जीवनमें फिरमे पवित्रता लाना अिसीको कहते हैं। यह बात हमारे देशके िअे कुछ नयी नहीं है। अपने प्रतिदिनके आचरणमे सामाजिक जीवनको गुद्ध बनाये रचना मदिधोमे हमारा ध्येय रहा है। पाठशाला तथा मठ जैसे मास्कुतिक मस्थाओंकी महायनामे छोटी अुन्नके बच्चोंके आचार-विचारपर निदग्नण किया जाता है। अिममे बाल्यकालमें ही अिम प्रकारकी मस्थाओंमें मिथिपत होनेपर बच्चे ममादा नौजवान और बूढे होनेपर भी अिमन्के पादद होनेके कारण मशाचार अेव गुद्ध आचार-विचारके सहज ही अभ्यस्त हा जाते हैं। अुनका मन कभी कुपदपर पाँव नहीं रखता। अिममे अोगति मनमें भिक्वु, श्रमण, माधु, सत्यामी, जगम, यति, हरिदास और मित्र-गण जैसे चलने-फिरने महा-मात्राति प्रति आदर-वुद्धि अुत्तन होती है और अभी तक हानी आयी है। अैम लोग ममाजमें कभी बोझ बनकर नहीं रहे। अुनका ममाजमें हर कही आदर-मन्तार होता आया है और अुनको सेवाअति हम मदामे श्रुती है। ध्यानकी दनेकी बात है कि पाँचवीं और मालकी मदिधोके चीनी मारी और पन्द्रहवीं और मालहवीं मदिधोके पुर्नगाली यातिधोने हमारी मुक्तपापूर्ण सामाजिक-व्यवस्थाकी प्रणमा की थी।

कार्यकी योजना

पिछल सम्मन्तक अवसरपर एक नौमत्वा-काय योजना स्वीकृत हओी थी। अमुका मार निम्नलिखित है —

(अ) साधारण

१ भिन्न भिन्न राज्यामें अपराधीकी रोकनाम और कानून युक्त शिक्षाकी मर्यादा कम करनेक अपाया तथा मादनामें आवश्यक मन्त्र और परम्पर मनायना दनका एक कश्चय योजना।

२ यायाग्याम राज्यके सभा वशी अत्र विवाय कारामारमें माय भेज जाअें जहा अनर अपराधवि सारणाका निदान दिया जाअ। अंन कागमारमें अराध निदान विनातक ज्ञाना मनावैनातिक विद्वरणके द्वारा मानसिक गथाकी विक्रि मा करनेवाल समाज दान यता मन गादन समाज-मुधारक और चारर लाम अपराधियाके मुधारके लिअ नियुक्त रह।

३ सामाजिक प्रतिरक्षा-वाजनक अनुमार काम करनेवाठ अधिकारी तथा हर तरके कायकताजाको तैयार करनेके लिअ स्नातकोत्तरकाउम-स्तरकी शिक्षाकी व्यवस्था।

(आ) बालक

१ कश्चय सरकारका तरफम बालकाम सवरा रखनवागी जागनन विन (A Central Modern Children Act) का निमाण।

२ कनक्य च्युत पाठका (या बाल-अपराधिया) का मुधार क जुह सभ्य समाजमें रहन याग्र बन नके लिअ कुठ जुयाग अब सिक्तानेवागी सम्वाधकी योजना और पाठ-अपराधियाके विरुद्ध गिकायतानी छान यन करनेमें पुजिमवागकी मनायना करनेवागी सम्वाधका निमाण।

३ बाल अपराधियाक अपराधापर विचार करने कश्चे विनर मायाठगीकी प्राजनके माय-माय प्रदर्श त्रिमें अपराधियाको मुसरनवाग गिकरण-यस्थाआकी स्थापना।

४ बाल अपराधियाका याय विचार करनेवाठ यायाग्याम म्ना मैजिस्ट्रेटाका नियुक्ति।

ग भा /

(धि) नौजवान

अपराधियाक अपराधापर जतिम विषय कर्नन पूव जुनका टाको नियमित कर्नवाठ गणव्याया विन (Probation Act) का व्यवस्था जीर अप विधाक पगक्या-कालमें अनकी दायर कर्नवाठ विवाय प्रकारके निरीकरकाका मना त्रिगाम नियुक्ति।

(अ) वयस्क (यालिया)

अपराधियाकी मजारी मियातक अ दर अपराध बतियाको मपूणतया मिगनके द्वारा जह मुधारकर सभ्य समाजमें रहन योग्य नायरिक बनाकर भजे मकनवाठ प्रमाणाकृत कारागार स्थापित करनेका योजना।

य विचारिण माधारण ह पर जिन लिगाम मुधार-कायका धागण कर्नके लिअ य ताकातिक रूपम पयात ह। अपराधियाका मुवारतक लिअ याग्य कायकताआवागी बुनियादी गिकरण-सहवाआको हमारे दाम स्थापित करनेक अुद्देश्ये य विचारिणो का गयी ह। जिन सिफारिणाम अक कमा है। वह है कश्चय तथा राज्यामें याग्य समाज-मुधारकाका लिख हुअ समाज मुधार विभागका म्यापना और जनरा नियरण अब पय प्रदशन करनेवाठ समाज मुधार-मचिवाग्य अब मनोकी नियुक्तिका अभाव। जिन सिफारिणो अ गमन जिन बातका अु-उल न हाना सटकता है। जिन कमीके कारण पायद जिन सिफारिणाम जमल करनम कश्चिनाआ पग जाती हो। जिन ज्ञानाम मन दा कर्षाम कायका जा प्रगति हुआ ह अमुका मिहावाजन कर्ननर हमको वास्तविक ग्यनिका पना चलता है। तव कहा हम अगल कपकी काय याजनापर समुचित विचार कर सकंग।

कुछ आवश्यक कार्य

वाठकार साथ समुचित व्यवहार करनेकी आवश्यकता सब विनि है। अपराधियाका मुधारन याग्य गिका या प्रकारकी है। अत्र विरिया द्वारा मदतियाकी तरफ आग घडनक लिअ प्ररित करता है। दूसरी विपवा द्वारा अपराधीका नियंत्रण करता है।

हमारा प्रस्तुत बुद्देश्य अपराधियोंकी वृत्तियोंको अपराध करनेकी तरफसे मोड़ देना है । पश्चिमके बालकोंको निम्नलिखित बातोंमें कडाओने साथ राक दिया जाना है । अनिपर हमें भी तुरत ध्यान देना चाहिये ।

- (१) तमाखूना अपुयोग
- (२) होटल जानेका अभ्यास
- (३) सिनेमा-घरोंमें प्रवेश

बालकाकी बोडी सिगरेट पीनेकी बुरी लतको रोकनेके लिये जो प्रयत्न किये जा रहे हैं वे अत्यन्त

अपर्याप्त हैं । हमें और अधिक जागरूकताके साथ जिन कार्योंमें लग जाना चाहिये । मोलह वर्षमें कम बुधबाले बालकोंका अपने माँ-बापके साथके बिनास्वय ही कारी-होटल या सिनेमा-घर जाना आस्ट्रियामें विधि-द्वारा निरोध किया गया है । वहाँ जिस विधिका बडाओके साथ पालन किया जा रहा है । हमारे देशमें भी यही करना होगा । हमें क्या-नया करना है, उनकी लकी सूची यहाँ में देना नहीं चाहता । केवल बुदाहरणार्थ मैंने अपरकी दो-चार बातें कही हैं ।

[मैसोर]

६. हिन्दी व्यापक बने-समृद्ध बने !

: डॉ. वासुदेवशरण अप्रवाल : :

गत मासमें आगरा विश्व-विद्यालयके अन्तर्गत संस्थापित हिन्दी विद्यापीठकी व्याख्यान-मालाका प्रारंभ करते हुए सुप्रसिद्ध पुरातत्त्व-विद्वान डॉ. वासुदेवशरणजी अप्रवालने कहा —

राष्ट्रभाषा हिन्दीको व्यापक व समृद्धिशाली बनानेके लिये प्रांतीय भाषाओंका हमें आदर करना होगा । उन भाषाओंके शब्दों, लोकोक्तिषो, मुहावरों और भाषा सम्बन्धी विशेषताओंको अपनाना होगा और उनमें जा अनेक प्रकारका अलम्ब साहित्य अपुलब्ध है, उनमें भी हिन्दी भाषामें अनूदित करके हमें अपनी राष्ट्र-भाषाके भंडारको पूर्ण करना होगा । जब हिन्दीके साथक यह सब कर सकेगे तभी वह एक विशाल राष्ट्रके अनुरूप, सच्चे अर्थोंमें भारतकी राष्ट्रभाषा कहलानेकी अधिकारिणी हो सकेगी ।

भारत सदामे विभिन्न धर्मों और विविध भाषा-भाषियोंका देश रहा है । आज भी यहाँ अलग-

अलग प्रान्तोंमें, जिनकी अलग-अलग भाषाएँ-बोलियाँ-हैं, अैसे विविध धर्मावलम्बी जन रहने हैं । जिन प्रांतीय भाषाओंका अपने-अपने, क्षेत्रमें महत्वपूर्ण स्थान है । हिन्दीही एक ऐसी भाषा है, जिसके बोलनेवालोंकी और समझनेवालोंकी सख्या सबसे अधिक है । जियाँजिसे अधिको राष्ट्रभाषा होनेका गौरव मिला । पन्द्रह वर्षकी अवधिमें इसे अंग्रेजोंका स्थान लेना है । जिन १५ वर्षकी अवधिमें जिस राष्ट्रभाषाको एक व्यापक, शक्ति-शाली और समृद्धिशाली भाषा बनाना है । प्रांतीय भाषाओंमें जिसका कोओ विरोध नहीं । प्रांतीय भाषाएँ अपने क्षेत्रमें विकसित होगी, उनको विशेषताओंको अपनाकर अपना भंडार बढ़ाना हिन्दीका काम होगा । साथ सत्त्व चाहिये तभी साहित्यका निर्माण होगा ।



[सूचना—'राष्ट्रभारती' में समालोचनायें पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियाँ हैं। सम्पादकके पास आनी चाहिये]

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति :

(लेखक — श्री डॉ. राजेन्द्रप्रसाद)

[प्रकाशक : आरमाराम अष्टक सम्म दिल्ली ।
पृष्ठ ५), पृष्ठ संख्या १८८]

अपने पुस्तकमें राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसादके समय-समयपर दिये गये भावनोंका समुदायित-संग्रह है। उनके सम्पादनमें आचार्य शिवपुत्रन गहाय और डा. नगेन्द्रका योगदान है। लेखकने नाते 'रा. राजेन्द्र-प्रसादका स्थान हिन्दी-साहित्यमें बहुत ही बुच्च अब महत्वपूर्ण है। अत्र गम्भीर चिन्तन, प्रगाढ विद्वत्ता और स्पष्ट अभिव्यक्ति अनूठी अपनी विनोयता है। उनके विचार केवल हिन्दी साहित्यकी ही वस्तु नहीं, बल्कि विश्व साहित्यकी वस्तु हैं। भारतीय जीवन-संस्कृति और दर्शन उनके व्यक्ति-वके प्रत्येक पहलूमें स्पष्ट झलक आत है। आज हिन्दीको असी कोटिके अनेक देशकीकी आवश्यकता है। हिन्दी साहित्यकी बहुमूर्ती वृद्धिके लिये डा. राजेन्द्रप्रसादकी कौटिके विद्वानकी आवश्यकता है जो अध्ययन, अनुभव और गभीर चिन्तन द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रेरणात्मक-साहित्य (Literature for inspiration) प्रदान कर सके तभी वह सही अर्थमें राष्ट्रीय-साहित्य-वाली राष्ट्र-भाषा बन सकेगी।

अस्तु, प्रस्तुत पुस्तकमें शिक्षा, साहित्य और संस्कृति अत्र तीन विषयोंपर निबन्ध है। राष्ट्रपतिने

अपनी भूमिकामें स्वयं लिखा है— 'साहित्य शिक्षा और संस्कृति ये तीन व्यापक शब्द और विषय हैं। जाति-धर्म और देश अत्रमें निहित है।' जिस पृष्ठभूमिसे यदि हम अत्र पुस्तकका अध्ययन करें तो हमें भारतकी शिक्षा, साहित्य और संस्कृतिका यो कहिये कि वर्तमान भारतकी सभी ज्वलन्त समस्याओंपर निष्पन्न विवेचन व्युत्पन्न होता है।

डा० राजेन्द्रप्रसादके विचारोंमें बहुमूर्ती सामन्त्रय है। जैसे कि अन्तर्गत व्यक्तिगत विभिन्न रूपा और नामोंमें भूलत अस्पष्ट हो प्रकृतिमें शायद भारतीय है। भारतकी परम्परागत सांस्कृतिक आदरताकी दृष्टिसे वे साहित्यकी देखते हैं और भाषाकी समस्याओंपर विचार करते हैं। साहित्यमें सचित आदर्शों द्वारा वे भाषा और संस्कृतिकी समीक्षा करते हैं।

साहित्यकी चर्चा करने लगे अज्ञान उसके अनि-हासिक विकास और राजनीतिक प्रभावोंका अन्वेषण किया है। अत्र सम्बन्धमें अज्ञान विषयके सभी महान् राष्ट्रीयके साहित्य और अज्ञान पर अतिरिक्त, राजनीतिक प्रभावोंका विवेचन किया है और समाजके विकासमें भाषा किन्तु महत्वपूर्ण साधन बनती है इसके तुलनात्मक आदरारण दिये हैं। हिन्दीके विषयमें, अज्ञानके राष्ट्रभाषा बनानेके अधिकारके विषयमें अज्ञानों देश मात्र भी सदिग्धताका अनुभव नहीं हुआ। अज्ञानों जिस बातका श्रेय है कि ("यदि देशी भाषाओं द्वारा राजनीतिक क्षेत्रमें काम किया गया होता तो आज देशकी परिस्थिति कुछ और ही होती।") आज जब हमारे सामने हिन्दीके अधिकारिक विकासका प्रश्न अस्तित्व

है तो हमारे जिनहासकी देन बुद्धके प्रति डॉ० राजेन्द्र-प्रसादके विचार अत्यन्त मननीय हैं। इनका विचार है—“हिन्दी और बुद्ध चाहे इनकी उत्पत्ति और विकास जिस क्रम और रीतिसे हुआ हो—दो भिन्न भाषाओं नहीं हैं।” बुद्धके जोष “फरहंगे वासपिया” में यह बात सिद्ध हो जाती है। जिसमें ५४ हजार शब्दोंमेंसे लगभग ३२ हजार हिन्दीके हैं। भाषाजोकी जटिलता और क्लिष्टताकी प्रवृत्तिके डॉ० प्रसाद विराधी हैं। मस्त्व और फारसीने शब्दोंकी भरभारने ही बुद्ध हिन्दीमें भेद अत्यन्त किया है। इनका कहना है ‘बुद्धके अच्छे लेखक अपनी भाषाको जटिल बनानेके पक्षपाती नहीं हैं। सनी भाषाओंके मुलेखक जिस सम्बन्धमें अंक ही मन रखते हैं कि साहित्यकी अक्षमता नरलना और प्रसाद गुप्तमें ही है।’

साहित्यके अनेक अुदाहरणमें बुद्धोंने अपने विचारोंकी पुष्टि की है। हिन्दीकी व्यापकताके विषयमें चर्चा करते हुये डॉ० प्रसाद कहते हैं कि—“हिन्दी भी यदि जीती-जागती भाषा होना चाहती है तो उसे अपने शर-भंडारको बटाना होगा . . बहिष्कारकी नीतिको बचापि स्वीकार नहीं कर सकती और न विदेशी शब्दोंको बाहर रखकर वह अपनी अुन्नति कर सकती है।”—भाषाका शास्त्रीय विवेचन करते हुये अुन्होंने मू, तुलसी बिहारी आदिके अुदाहरण देने हुये हिन्दीके अनुचित सस्कारके कट्टरपनयो आन्दोलनके प्रति स्वामाविक चिंता व्यक्त की है और देहाती बोलियोंकी शक्ति और समृद्धिमें लाभ अुठातेकी ओर मार्गनिर्देश किया है।

हिन्दीके विकासके लिये अुसके साहित्यकी बहु-मूवी अभिवृद्धि परम आवश्यक है। जिसे विस्तृत रूपमें और विषय तथा अनुवादकी ओर हिन्दी-लेखकोंकी प्रेरित कर पूरा किया जा सकता है। लेखकके मुझाव जिस सम्बन्धमें बहुमूल्य है। ललित-साहित्यके दायरमेंही हिन्दी-साहित्यकी देवना अब अुपयुक्त नहीं है। अब अन्वेषण और चिन्तनके अनेक विषय-सम्बन्धी धन्योंकी आवश्यकता है। राष्ट्रभाषामें राष्ट्र-जीवनके सभी पहलुओंपर अुत्तम साहित्य लिखा जाये तभी हिन्दी अपना पर्य सम्मानपूर्वक स्थायी रख सकेगी।

जिन विचारोंके अतिरिक्त लेखकोंके दार्मिक, अज्ञ साहित्य और सस्वत-साहित्यपर भी अुन्होंने बहु-मूल्य विचार व्यक्त किये हैं।

डॉ० राजेन्द्र प्रसादके विषय सम्बन्धी विचार विग्यान हैं। वे आजकी गिरवाकी सच्चे माननेमें विहासना साधन नहीं मानते। गांधी-दर्शन इनकी भाषामें रमा है अिन्नीलिखे वे गिरवाका देगकी मस्वति और सामाजिक अन्वेषणाश्रमि सम्बन्ध करनेके पक्षपाती हैं। विरव-विद्यालयोंमें देगी भाषाके माध्यमसे शिक्षा देनाही अुचित समझते हैं। “वृत्तिपाठी शालीन” इनकी दृष्टिमें आजके भारतमें बहुत स्थानदायक सिद्ध होंगे। विश्व विद्यालयोंकी गिरवाकी चर्चा करते हुये वे कहते हैं—“देशमें केवल शैक्षिक शिक्षाको मस्त्व न देकर कुछ नया टप निहालना है जिसमें वह भेद जो बाब शहरी और ग्रामजीवनमें पैदा हो गया है—डूर हो जाये।” समाजके विभिन्न वर्गोंकी आवश्यकताओंसे विरव विद्यालयका सम्बन्ध स्थापित करनेसे गिरवामें अव्यय नम हो जानेकी सम्भावनाकी ओर अुन्होंने ह्वाय ध्यान आह्वय किया है। डॉ० प्रसादका आशान-अन सहज-भारतीय है। भारतीय मस्वतिकी चर्चामें अुन्होंने ‘नैतिक-चिन्ता’का अुल्लेख किया है जिससे भारत सदिरमि प्रेरित होता आ रहा है। ‘विश्व कीर्ति-मन्दिर’ और ‘सोमनाथमें महादेव प्रतिष्ठा’ जिन दोनों लेखोंमें डॉ० प्रसाद ‘भारतीय राज्यमं’ और ‘धार्मिक मस्वति’का विरव विवेचन करते हुये भारतकी प्राचीन मस्वति-परंपरा और दृष्टिकोणकी अुपादेयताकी ओर ह्वायी परिचय-प्रभावित दृष्टिको बार-बार बलसे खींचते हैं। यह पुस्तक निस्संदेह हिन्दी-साहित्यके लिये अमूल्य देत है। यदि हिन्दीके पाठक जिस तरहकी पुस्तकोंको खरीदकर अपने पटनेका दायरा बढा सके तो हिन्दीके लिये यह परमनीमायकी बात होगी। जिनहास, भाषा और गिरवाके विद्यापियोंके लिये यह पुस्तक भारतकी वर्तमान विचार-धाराकी सच्ची परिचायक है। अंतही चिन्तनपूर्ण ग्रन्थ भारतके नवयुवकोंके हाथ पहुँचना और पहुँचाना आवश्यक है।

जिस पुस्तकके प्रकाशक इन जिनगिने भारतीय हिन्दी प्रकाशकोंमेंसे अेक प्रचीन होते हैं जो साहन और धर्मसे गंभीर साहित्य मुद्रित करते आ रहे हैं। पुस्तककी छापाकी बहुत सुन्दर है और गेट-अप कलापूर्ण। अंट पेपरपर छपी होते हुये भी जिसकी कीमत केवल ५) है। फिर भी जिसका अेक और सस्वा मस्वरण निकलना जाये तो अच्छा हो।

—गोपाल शर्मा, अेम. अेम.



सम्मेलन-भवनका शिलान्यास :

अब मध्यप्रदेशकी अंक मात्र हिन्दी साहित्यिक संस्था प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलनका अपना भवन शीघ्र ही बनकर तैयार होगा। जिस प्रान्तके हिन्दी-प्रेमियोंकी चिर-वाञ्छित अभिलाषा पूरी होगी। यह भवन सचमुच भव्य भवन होगा। जिसकी विषय अतिहासिक भव्यता तो यही है कि आधुनिक भारतके और दुनियाके अंक सबसे बड़े भव्य साहित्यिक पुरुष हमारे प्रधान-मंत्री प्रियदर्शी पंडित जवाहरलाल नेहरूने गत जनवरीकी दिनांक पंचमीको जिस भवनकी आधार-शिलाकी प्रस्थापना की। शिलान्यासका यह अलम्ब-समारोह अपने आपमें बड़ा भव्य था। प्रान्तके साहित्य, कला और समृद्धिके प्रेमी और नायक श्री ब्रजलालजी त्रिपाठीका यह सङ्घ भी कि उनके सभापतित्वमें प्रादेशिक साहित्य-सम्मेलनका अपना अंक असा भवन हो जहाँ प्रान्तकी दो बड़ी हिन्दी-मराठी भाषा परम्पराअे अपनी समृद्धिसे साहित्यके भाङ्गाङ्को भङ्गी रहे और आपसमें सत्य शिव-सुन्दरका अच्छी तरह आदान-प्रदान करे, यह सङ्घ भी भव्य है। लक्ष्मीके जिस पूतने लाख-उठ लाखका सम्पत्तिदान अिम भवनके लिअे दिया, धनका वह अंश भी भव्य है। यह हिन्दी-भवन शीघ्र बनकर तैयार हो। यहाँ अितना ही हमारा नम्र निवेदन है, मुझसे हैं—कि जिस भवनका विगुद्ध नाम "हिन्दी-भवन" ही रहे। अिसीम

जिस भव्य भवनकी शोभा है जिसकी भव्यता है। राष्ट्रकी, देशकी अंक मात्र राष्ट्रभाषाकी यह संस्था है। यह कोअी धर्मशालाकी अमारत तो नहीं है। दानधर्मकी, धर्मदिकी संस्था भी नहीं है। लक्ष्मीके अंस लाडले सुपुत्रका नाम स्वर्णाक्षरोम और अंक भव्य तैलचित्र जिसन बडी धनराशि जिस भवन निर्माणके लिअे दी है, भवनके सभागृह (हॉल) में अंकित किया जाअे। यही अंस व्यक्तिका सबसे बडा सम्मान है। अुसके सामने ही अत्यन्त समीप, मराठीके विदग्ध-साहित्य-मन्दिरका भव्य भवन है।

हिन्दी साहित्य-सम्मेलनका यह भवन अंक पवित्र जीवित संस्था हो। राष्ट्रभाषा हिन्दीको सशक्त, समर्थ बनानेकी, त्रियाशील निर्माणकी प्रवृत्तिका यहाँसे चले, जिससे पन्द्रह वर्षकी अवधिसे पूर्व ही हिन्दी और देवनागरी दोनों राष्ट्रकी भव्य भाषा और भव्य-लिपि बन जाअें। यह संस्था निराधार गरीब निराश्रय लेखको और साहित्य-मैत्रियोंकी महामत्ता करे। दलदलके दल-दल और तू तू में में, मिथ्या प्रशंसा, पक्षपात और राजनीतिक दावपंचो तथा हथकडीसे जिस साहित्य संस्थाकी सदैव रक्षा की जाअे और जिसे स्वच्छ, स्वस्थ साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्था ही रहने दिया जाअे।

मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिषद :

केन्द्रीय सरकारके साथ भारतके विभिन्न राज्योंकी सरकारोंने अपने-अपने राज्यम लोक-

प्रिय साहित्य-सृजन और साहित्यकारोंके प्रोत्साहनके लिये कुछ योजनाओं कार्यरूपमें परिणत कर दी हैं। बिहार और उत्तर-प्रदेशकी सरकारोंने जिस दिशामें आगे कदम बढ़ाया है। साहित्यकारोंका राजकीय अथवा आर्थिक स्वागत-सत्कार होना भी प्रारम्भ हो गया है। जिस योजनामें मध्यप्रदेशका शासन व्यो पीछे रहता। यह बहुत पहले हो जाना चाहिये था। खैर, 'देर आयद दुरुस्त आयद'। हिन्दी और मराठीका सम-स्थल है मध्यप्रदेश। प्रान्तीय सरकार दोनों-हिन्दी और मराठीका समदृष्टिसे विकास करना चाहती है। अंकका राष्ट्रभाषाके और दूसरीका प्रान्तीय भाषाके रूपमें। अन्ततः साहित्यके लेखकोंको प्रोत्साहन देनेके लिये, १ लाख रु० मेंसे १०-१० हजार रु० की निधि अमुने घोषित की है। और ८० हजार रुपया साहित्य-निर्माणके लिये, उत्तर-दक्षिणकी प्रादेशिक भाषाओंसे अभिजात हिन्दीमें और मराठीमें अनुवादों अथवा मौलिक हिन्दी-मराठी ग्रन्थ रचनाके प्रकाशनके लिये सुरक्षित रखा गया है। जिसे शीघ्रही कार्यान्वित करनेके लिये मध्यप्रदेशकी सरकार समुत्सुक प्रतीत होती है। अमुने जिस योजनाका संचालन करनेके अदृश्यसे "मध्यप्रदेश-शासन साहित्य-परिषद" की स्थापना की है। जिसके सगठनमें शासनके मुख्यमंत्री सभापति, शिवपामंत्री, अिन दोनोंके दो उपमंत्री, चार साहित्यकार, मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापति, विद्वान-साहित्य-सघके सभापति, सागर-विश्वविद्यालयके उपकुलपति, नागपुर विश्वविद्यालयके उपकुलपति, ये सदस्य होंगे और राज्यके शिक्षासचिव जिस परिषदके मंत्री, भाषा-विभागके सचालक 'व्योपाधिकारी' तथा उपसचालक जिस परिषदके उपमंत्री होंगे।

अबतक लक्ष्य तो अच्छे ही दीख पड़ रहे हैं।

हम तो जिस सगठनमें मध्यप्रदेश शासनको अंक सुझाव देना चाहेंगे कि वह राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाको भी अपने सगठनमें अंक प्रतिनिधित्व देवे, जो भारतके कभी हिन्दीतर राज्योंमें राष्ट्रभाषा हिन्दीका पिछले १६ वर्षोंसे काम कर रही है और भारतकी विभिन्न प्रान्तीय भाषाओंका सम्मानपूर्वक आदान-प्रदान करती है।

"स्वर्गीय वैशंपायन-स्मृति-अंक":

अपना पद आप निर्माण करनेवाले और जीवनकी अन्तिम श्वास छोड़ने तक राष्ट्रभाषा हिन्दीकाही सक्रिय, सेवामय, मगल-चिन्तन करनेवाले मराठी और महाराष्ट्रके देशभक्त श्री ग र वैशंपायनजी अब जिस ससारमें नहीं हैं। गत् अक्टूबरमें दिनांक ९ को ६१ वर्षकी अग्रमं, लम्बी बीमारीके बाद आपका निधन हो गया। जबसे स्वर्गीय वैशंपायनजीने होश सँभाला था, वे राष्ट्रसेवाके व्रती, महा देशभक्त और कठोर कारावासके निर्भीक प्रवासी थे। पूनाकी लब्ध-कीर्ति प्रमुख हिन्दी-प्रचार सस्था "हिन्दी प्रचार सघ"के वे सस्थापक थे। अपने सभी स्नेही मित्रों और साथियोंको असमयमें वियोग-दुःखमें डुबोकर वे स्वर्गवासी हुए। अुनकी राष्ट्रभाषा-सेवा सदैव अतिहासिक स्वर्णाक्षरोंमें अंकित रहेगी। हमारी सहयोगिनी 'जय-भारती'ने अुनका 'स्मृति-अंक' प्रकाशितकर श्रद्धाजलि अर्पित की है। स्व० वैशंपायनजीकी हिन्दी-सेवाका सच्चा स्मारक अुनका 'हिन्दी-प्रचार-सघ' है, अुसको स्थायी अथवा परिपुष्ट बनाया जाये। सभी राष्ट्रभाषाके कर्मियों जिस 'स्मारक'में अपनी-अपनी श्रद्धाजलि प्रदान करें।

अपनी-अपनी सराहना !

हमारा यह मतलब नहीं कि हम 'अपने मुंह मियाँ मिट्टू' बनें। 'राष्ट्रभारती' की भारतीय साहित्यके क्षेत्रमें की गयी सेवाओकी, उसकी लोक-प्रियताकी, समय-समयपर अपने आप सराहना होनी ही रहती है। इसका सच्चा और समस्त श्रेय तो अजुन लेखकोको है जो 'राष्ट्रभारती' पर कृपा करते रहते हैं। बड़े-बड़े लब्ध-प्रतिष्ठ लेखक तो सदैव हमारे श्रद्धा-आदरके पात्र हैं ही, साथ ही हम कृतसकप-निम्नशय हैं कि 'राष्ट्रभारती' में अठती हुई पीढ़ीको, नयी पीढ़ीके, अदीयमान लेखकोको भी सर-आँखोपर रखेंगे। शर्त अतनी ही कि अजुनकी कृतियोग स्तर, विषय और शैलीकी दृष्टिस वे हमें पट जायें, फिर वे रचनाओं चाहे महलोसे आयें या किसानो मजदूरोकी कुटियासे आयी हूँ ही हो। जहाँ धन्यवादपूर्वक लौटानेवा सम्पादकका अधिकार है वहाँ अपने लेखकोसे हाथ पसारकर माँगनेवा भी हक है सम्पादकको। राष्ट्रभारतीमें कभी-कभी अच्छी चीजें जो छप जाती हैं तो अजुनकी प्रशंसाकी जाती है, अजुन चीजोका अल्लेख किया जाता है। सुप्रसिद्ध साहित्यिक सम्पादक प्रवर श्री देवेन्द्र सत्यार्थीजीके "आज-कल" में, प्रयागकी हमारी बुजुर्ग मासिक श्रद्धा-स्पद "सररवती" में भी अिसी (जनवरी १९५४ का अक देखें और पिछले अकोमें भी) समय-समयपर 'राष्ट्रभारती' में प्रकाशित सामग्रीकी सराहना—सम्यक् अहंणाकी जाती है। सहयोगी लेखक बंधु पत्र भेजकर अजुस चीजकी तहेदिलसे दाद देते हैं। 'राष्ट्रभारती' के पिछले जुलाअी ५३ के अकमें हिन्दीके अदीयमान कहानी लेखक श्री नन्दकुमार पाठककी अक मासिक कहानी "अन्सानका बच्चा" प्रकाशित हुआ थी। वह

पसन्द की गयी। महान कहानीकार कलाकार यशपालजीने, पटनाकी "अवन्तिका" के यशरवी सम्पादक साहित्याचार्य श्री लक्ष्मीनारायण 'सुधाशु' जीने, कानपुरकी श्रेष्ठ सचित्र "मुमित्रा" के विवेकशील सम्पादक विट्ठल शर्माजीने और अकोलाके साहित्य सस्कृतिके नए प्रवाह रूप "प्रवाह" के नवनीत सम सुकोमल सम्पादक सुकवि श्री शिवचन्द्र नागरने "अन्सानका बच्चा"—कहानीकी भावना, मार्मिकता, प्रभाव, लेखन, मनोविश्लेषण और दुनियाकी मान्यता-ओको मिटा देनेका भीषण सक्कप, माताके बान्स-ल्यका चित्रण, कहानी साहित्यका अक नया प्रयोग, कल्पनाका नया कूचा, जीवनकी समाजगत विपमताओका सजीव चित्रण आदि-आदिको भलोभाँति सराहा है, दिलखोल प्रोत्साहित किया है।

—ह० श०

x x x

राष्ट्रभाषा हिन्दीका राजनैतिक पहलू :

अिसमें सदेह नहीं कि अब राष्ट्रभाषा-हिन्दीका प्रश्न राजनैतिक प्रश्न बन गया है। विधानमें हिन्दीको भारतीय सघकी भाषाके रूपमें स्वीकार किया गया है, अिसल्लिअे अुसका राजनैतिक पहलू सबकी दृष्टिमें आया है। भारतकी अक राष्ट्रियताके सबयमें जिनका आग्रह रहा, वे, हिन्दीको राष्ट्रभाषाके नामसे ही जानते हैं और अुसे सच्ची राष्ट्रभाषा अर्थात् भारतकी जनताकी सास्कृतिक तथा परस्परके व्यवहारकी भाषा बनानेके प्रयत्नमें ही लगे हुए हैं। अुनके प्रयत्नोके कारण राष्ट्रभाषाका प्रचार तथा प्रसार भी अच्छा हो रहा है। परन्तु अिधर कुछ वर्षोंमें प्रान्तीय भावनाओं प्रबल हो रही हैं, अुसने कारण तथा

यिस काल्पनिक भयके कारण भी कि भारतीय-सघकी भाषा हिन्दी बननेपर, अन्य प्रान्तवालोंको राज्यकी सेवामें हिन्दीभाषी प्रजाके साथ स्पर्धा करनेमें असुविधा होगी कही-वही हिन्दीका सत्त विरोध किया जा रहा है। विरोध करनेवाले अनेक प्रकारकी दलील पेश करते हैं। उनकी सबसे बड़ी दलील यह है कि "हिन्दीको ही राष्ट्रभाषा क्यों कहा जाये, क्या दूसरे भारतीय भाषाओं अराष्ट्रीय हैं? प्रत्येक प्रान्तकी अपनी भाषा ही उस प्रान्तकी राष्ट्रभाषा हो सकती है"। अंसी दलील देकर वे यह भूल जाते हैं कि जिस तर्कमें तो वे प्रत्येक प्रान्त को अलग 'राष्ट्रका' रूप दे रहे हैं। हिन्दुस्तानमें पाकिस्तान अलग हुआ, उसका अनुभव कसा दुखद तथा करणाजनक रहा—यह तो हम सभी जानते हैं। भारतके टुकड़े अब नहीं किये जा सकते और न करने ही चाहिये। भारत अेक राष्ट्र बना रहे और उसके निर्माणमें राष्ट्रभाषा सहायक हो, इसीलिये तो सारे भारतके लिये अेक राष्ट्रभाषाकी आवश्यकता है। यही राष्ट्रभाषाका सबसे महत्वपूर्ण राजनैतिक पहलू है। हम उसे कभी भुला नहीं सकते। यदि हमने उसे भुला दिया, तो वह राष्ट्रके प्रति द्रोह होगा और हमने पनपते हुअे राष्ट्रको हम हानि ही पहुँचायेंगे।

हमारी मर्यादा :

परन्तु राष्ट्रभाषाके कार्यकर्ताओंकी अपनी मर्यादा है। राजर्षि टडनजीने अभी खालियरमें भाषण करते हुअे कहा कि हिन्दीका भी अेक (राजकीय) दल तैयार करना होगा। मन्वत अिममें उनका अभिप्राय राष्ट्रभाषाके राजनैतिक पहलूपर लोगोंका ध्यान आकर्षित करनेका था। जो लोग राजकीय क्षेत्रमें कार्य करते हैं, राष्ट्र-

भाषा हिन्दीक राजकीय पहलूकी महत्ता समन्ते हैं, उसके प्रति केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारोंकी अुदासीन वृत्तिको जानते हैं, और प्रान्तीय भावना या दूसरे कारणोंमें उसके प्रति कुछ लोगोंका विरोध भी देखते हैं, अुन्हें वे मानद जाग्रत करना चाहते हैं। श्री टण्डनजी चाहते हैं कि यदि आवश्यकता हो तो वे सब अेक होकर राष्ट्रभाषाके प्रदनमें योग दें। जितना ही नहीं, अवसर आनेपर दूसरे प्रश्नोंको छोडकर भी यिद महत्वके प्रदनपर अपने राजकीय जीवनकी बाजी लगा दें। मन्वत वे यह भी मानते हैं कि अंसा अवसर आज अुपस्थित है अथवा शीघ्र ही आनेवाला है। जब कि अुन्हें जिस प्रश्नको ही सब प्रश्नोंके आगे लाना होगा। जिसीलिये अुन्होंने समय रहते यह चेतावनी दी है।

श्री टडनजीकी जिस चेतावनीसे थोडी गलतपहमी भी हो सकती है। हिन्दीका कार्य करनेवाली, राष्ट्रभाषा-निर्माण तथा उनके प्रचार-प्रसारका रचनात्मक कार्य करनेवाली सम्प्राज्ञे अंनो परिस्थितिमें क्या करेगी—यह प्रश्न अुपस्थित होता है। हमारे विचारमें श्रद्धेय टण्डनजीका यह अभिप्राय कभी नहीं हो सकता, कि अंसी नस्याओं अपना कार्यक्षेत्र छोडकर राजनैतिक क्षेत्रमें आओं। रचनात्मक कार्य करनेवागी नस्याओं राजनैतिक क्षेत्रके कार्यकर्ताओंके सम्पर्कमें तो अवश्य रहेगी परन्तु वे अपने कार्यको ही अधिक महत्व देंगी और अपनी मर्यादाके बाहर कभी भी नहीं जायेंगी। अपनी मर्यादाके बाहर जाना न नस्याओंके लिये हिनकर होगा, न राष्ट्रभाषाके लिये। रचनात्मक कार्यक्षेत्रमें कार्य करनेवाले कार्यकर्ताओंका बल राजनैतिक क्षेत्रमें कार्यकरनेवालोंको मिलेगा और राजनैतिक क्षेत्रमें

राष्ट्रभाषाका कार्य करनेवालोंके कार्यका बल रचनात्मक कार्य करनेवालोंको, जिन प्रकार "परस्पर भावजन श्रेयम् परमवापस्यथ" ।

शिक्षाके माध्यमका प्रश्न :

श्रद्धेय टडनजीने दूसरा प्रश्न महाविद्यालयोंमें शिक्षाका माध्यम क्या हो ? —जिन विषयको लेकर छेडा है। यह प्रश्न बड़े ही महत्वका है और विकट भी है। श्रद्धेय टडनजीका आप्रह है कि विश्व-विद्यालयोंमें शिक्षाका माध्यम हिन्दी ही होना चाहिये। अंसा होनेपर ही हमारी राष्ट्रीय अकेता कायम रहेगी और भिन्नपाटा स्तर तथा अनुकी अपयोगिता भी राष्ट्रीय दृष्टिसे समान रह सकेगी।

बड़े-बड़े शिक्षाशास्त्रियोंका तथा गायत्री अत्र दूसरे महापुरुषोंका कहना है कि शिक्षा मातृभाषा द्वारा ही दी जानी चाहिये, और बुच्च-से-बुच्च शिक्षा भी मातृभाषा द्वारा ही दी जाये। साथ ही हमारी राष्ट्रीय आवश्यकताओंको देखते हुये बुच्च स्तरपर तमाम शिक्षा राष्ट्र-भाषा द्वारा देना भी आवश्यक प्रतीत होता है। विज्ञान, कानून, अिजीनिधारण आदि विषयोंके पारिभाषिक शब्द यदि सब प्रान्तोंकी भाषाओंमें अके ही हों, तो जिन विषयोंकी शिक्षाकी अके वदी समस्या आसानीसे हट हो सक्ती है। फिर यदि मातृभाषा या राष्ट्रभाषा द्वारा शिक्षा देनेका निर्णय विश्व-विद्यालय अपनी स्वेच्छा तथा सुविधानुसार कर, तो अुसमें कोओ हानि नहीं दिखायी देती। गुजरात तथा बडौदा विश्व-विद्यालयोंने तो गुजराती अथवा राष्ट्रभाषाका पर्यायमे माध्यम स्वीकार कर ही लिया है। हम आजकी परिस्थितिमें जिसे बहुत ही अच्छा मानते है।

अंकोका प्रश्न :

श्रद्धेय टडनजीने नीसना प्रश्न अकोके मन्वधमें भी जुठाया है। १९८९ में विधान सभाने अकोके सबधमें जो निर्णय किया था, अुस श्रद्धेय टडनजीने कभी स्वीकार नहीं किया। विधानमें नागरी लिपिके तो स्वीकार किया गया, परन्तु नागरी अकोको स्वीकार नहीं—यह वात जुन्हें हमेशा अखरी है, और अुसका विरोध करनेका अपना अधिकार अुन्होंने कायम रखा है। आज अुन्होंने जिन प्रश्नको जुठाया है, यह गायद अपुपुवन अवसर समझकर ही जुठाया है। विधानमें जिन समय हिन्दीको स्वीकार किया गया, अुसी समय पांच साल बाद सरकारी कार्योंमें हिन्दीकी प्रगतिकी जांचके लिअे अके कमीशन नियुक्त करनेकी वात कही गयी थी। १९५८ में पांच साल पूरे हो रहे है और सभवत हिन्दीके लिअे अके कमीशनकी नियुक्ति होगी अुससे पहले विधानमें जो कमी रह गयी है, अुसके प्रति जनताका ध्यान खीचना, आन्दोलन करना तथा आवश्यक कार्य करनेके लिअे आज ही से तैयारी करना चाहिये,—जिसमें सदेह नहीं। श्रद्धेय टडनजीने ठीक हो कहा है कि हिन्दीको विधानमें स्वीकार करानेमें जो सफलता मिश्री है, वह आगिक है। जब तक अकोका प्रश्न हल नहीं होता, यह सफलता अखरी ही रहेगी। फिर भी हम मानते है कि यदि आज यह प्रश्न जुठाया न जाता, तो अच्छा होना। अससे हिन्दीका जो विरोध आज हो रहा है, वह बटेगा ही, घटेगा नहीं।

यह ठीक है कि विधानमें नागरी अकोको स्वीकार नहीं किया गया। परन्तु राष्ट्रपतिको तो यह अधिकार दिया ही गया है कि वे चाहे तो

नागरी अकोंके अुपयोगकी अनुमति दे सकने है । अुन्होंने अँसी अनुमति दी है, और आज केन्द्र तथा भिन्न-भिन्न राज्योंके सरकारी प्रकाशनोंमें भी नागरी अकोंका अुपयोग किया जा रहा है । अर्थात् व्यवहारिक दृष्टिमें तो नागरी अकोंका अुपयोग करनेकी स्वतंत्रता और सुविधा है । हाँ, जो लोग चाहे वे अंग्रेजी अकोंका भी अुपयोग कर सकते हैं, और दक्षिणके प्रान्तोंमें अुसका अुपयोग किया भी जा रहा है । दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार-सभा तक अंग्रेजी अकोंका ही अप्रहपूर्वक अुपयोग करती है, दक्षिण भारतकी तमिल आदि भाषाओंके प्रकाशनोंमें भी अंग्रेजी अकोंका अुपयोग किया जाता है, अर्थात् दक्षिणकी भाषाओंने अंग्रेजी अकोंकी अपना लिया है । असलिये अुन्हे अुन अकोंको अुपयोग करनेमें सभवतः अधिक सुविधा भी होगी । असलिये अुन्हे अँसा करनेका अधिकार भी दिया जाये, तो वह हमारी पारस्परिक अँक्य भावना तथा प्रेम भावनाके अनुकूल ही बात होगी । हम जानते हैं

कि श्रद्धेय टडनजी हमारे अिस तर्कोंकी अुनी स्वीकार नहीं करेगे । सिद्धान्त नागरी-लिपिके साथ नागरी अकोंको स्वीकार करना चाहिये—अुनका यह अप्रह हम नमस्ते हैं और अुनका आदर भी करते हैं । हम भी मानते हैं, कि सिद्धान्तकी दृष्टिमें अुनकी बात ठीक है परन्तु अकोंका अप्रह छोड़ देनेमें हम सिद्धान्तकी ही छोड़ देते हैं—यह बात नहीं है । तत्त्व हमारे कार्यके लिये राष्ट्रपतिकी अनुमतिने बहुत कुछ सुविधा कर दी है और हमें विश्वास है कि श्री रामदास स्वामीके कथनके अनुसार—“मानत मानत मानावे ।” दूसरेकी बातको मानकर फिर अुनसे अपनी बात मनानी चाहिये—हम भी यदि अपने दक्षिण भारतके भाषियोंकी बात मान लेंगे तो आगे चलकर अुन्हे हमारी लिपिके साथ नागरी अकोंको न स्वीकार करनेकी अपनी, मूल प्रतीत होगी और वे नागरी अकोंका अुपयोग सरलतासे करने लगेंगे ।

—मो० भ०



जिस घरमें आरोग्य प्रकाश नहीं, वहाँ सुख शान्ति कहाँ ?

आरोग्य, स्वच्छता और चिकित्साका सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ

भारत-प्रसिद्ध श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेडके अध्यक्ष वेंचराज प० रामनारायणजी वैद्यशास्त्रीने ५-६ वर्ष बड़ी मेहनतसे स्वयं जिस ग्रन्थको लिखा है। ग्रन्थका अंक-अंक बानव हजारो रुपयेका नाम देता है। व्यायाम, प्रह्लाचयं, भोजन, सदाचार, अतुल्य विचार आदि पूर्वाह्न विषयोंको पढ़कर और तदनुसार चलकर सदा बीमार रहनेवाला रोगी बिना दवाके नीरोग (तन्दुरुस्त) हो जाता है। ग्रन्थके अुत्तरार्द्धमें शरीरमें पैदा होनेवाले सभी रोगोंकी भुत्पत्ति, कारण, निदान, रोगके लक्षण, चिकित्सा पध्यापध्द आदि बड़ी ही सरल भाषामें लिखे हैं जो पढ़कर विद्वानसे लेकर साधारण पढ़-लिखे दोनो समान भागसे लाभ अुठा सक्ने हैं। इसमें दवाओंके जो नुस्खे लिखे गये हैं वे बहुत बार परीक्षित, बभी भी फेल न होनेवाले और शास्त्रानुमोदित हैं। सहर हो या देहात, सब जगह इस पुस्तकके घरमें रहनेसे रोगीको तत्काल लाभ पहुँचाया जा सकता है। औषधि तैयार करनेका विधान तां इस पुस्तकमें थेंद है क्याकि लेखक जिस विषयके निर्णयतात्मक जाना ह। इसके आठ संस्करणोंमें ७१००० प्रतिधा छपकर विक चुकी है। यह नवा संस्करण १५ हजारका अभी छप रहा है। इससे अिमकी लोक प्रियता और अुपयोगिता स्पष्ट मानूम होनी है। हिन्दीमें अभी अुत्तम पुस्तक दूसरी नहीं है, यह कहा जाय तो अनुचित न होगा। प्रचारको दृष्टिसे मूल्य भी बहुत कम रखा गया है। ५१५ पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य भिकें १(॥), डाक खर्च ॥२, हमारी चार निर्वागसाला, ५० विक्री केन्द्र, १५००० अंजेलिनीसे ग्रन्थकय खरीदनेपर डाक खर्च नहीं लगेगा।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड, कलकत्ता, पटना, झांसी, नागपुर।

—: अुद्यम :—

हिन्दी और मराठी भाषामें प्रकाशित होता है।

प्रतिमास १५ वी तारीखको पडिअे।

अुद्यममें निम्न विषयोंके लेख छुपते हैं:—

लाभदायक अुद्योगधयोंकी जानकारी, अमाज तथा सञ्जीकी खेती व रोगीका निवारण, पशुपालन, दुग्धव्यवसाय व ग्रामोद्योग सबधी लेख, विद्यार्थियोंके लिअे वैज्ञानिक व अन्य जानकारी, आरोग्य, घरेलू औषधियों सबधी लेख, हिन्दुस्तानके वैज्ञानिक और औद्योगिक क्षेत्रकी अुपयोगी जानकारी, दृष्टि, औद्योगिक और व्यापारिक क्षेत्रमें काम करनेवाले लोगोंकी मुलाजान तथा परिचय।

अुद्यमके विशेष संभ

महिलाओंके लिअे अुपयुक्त, दृष्टिकर साक्ष्यपदाथ बनातेकी विधि, घरेलू भिन्नव्ययिना, अुद्यमका पत्रव्यवहार, खोसपुणं खरदे, आर्थिक तथा औद्योगिक परिवर्तन, जिज्ञानु जगत्, व्यापारिक हलचलोकी मासिक सामालोचना, नित्योपयोगी वस्तुअें स्वयं तैयार कीजिअे।

वार्षिक चन्दा ७ र और प्रति अंक १२ आना

पता:— 'अुद्यम' मासिक, धर्मपेठ, नागपुर (म. प्र.)

सुन्दर टाइपिग और चार्टर

जिस कारखानेके सुन्दर और मज-
बूत टाइपिको अनेक छापखानेवाले पसन्द
करते हैं। हमारे यहाँ अंग्रेजी, मराठी,
गुजराती तथा कानडी टाइपिग और अनेक
प्रकारके चार्टर तथा जिलेक्ट्रो ब्लक्स हमेशा
तैयार मिलते हैं।

जुसी प्रकार हमारे यहाँ मोनो सुपर
वास्तुसे तैयार किये हुअे १२ पाइन्ट
हिन्दी और मराठी टाइपिग भी तैयार हैं।
बैटलाग, जस्टर मंगावे।

पता—मैनेजर, निर्णय सागर प्रेस,
बम्बयी नं० २

२६ जनवरी १९५४ मे

“सार्थी”

सम्पादक — पण्डित द्वारकाप्रसाद मिश्र
भूतपूर्व गृहमंत्री, मध्यप्रदेश

जिसमें पढ़िजे—

वैचारिक क्रांतिका अदम्य अक्षरपं। सन्दर्भके
मूलतत्वोंका अन्वेषण। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय
पटनाओं और समस्याओंका नेदक विश्लेषण।
साहित्य मूजनी अदुनी दिशाओंकी ओर प्रेरणा।
राजनीतिव, सामाजिक और आर्थिक अनाचारोंका
अनावरण और मर्मभेदी व्यंग अथे अविस्मरणीय
परिहासकी नृष्टि मिलेगी।

प्रत्येक छोटे-बड़े नगरमें अजेट चाहिजे।

व्यवस्थापक.— ‘सार्थी’ धरमपेट, नागपुर

संस्कृति, कला, शिल्पा, ग्राम सेवा तथा
समाज विकासकी संदेश-वाहिका
मासिक-पत्रिका

भारती

+ अंग्रेजी व विज्ञापनके लिअे शिल्पापडी करे—
+ वार्षिक मूल्य भेजकर ग्राहक बने—
वार्षिक मूल्य ९) अंक अंक ॥)

व्यवस्थापक.—

भारती, नवप्रभात प्रेस, ग्वालियर

साहित्यिक-त्रैमासिक-पत्रिका

“राष्ट्रवीणा”

संपादक:— जेठालाल जोषी
वार्षिक मूल्य ४) अंक प्रति १)
वर्षा समितिके सक्रिय प्रचारकों और वेद-
व्यवस्थापकोंको पत्रिका आपे मूल्यमें भेजी जाती है।

— व्यवस्थापक “राष्ट्रवीणा”
गुजरात प्रा. रा. ना प्र. समिति, काहूपुर,
बड़गोकी फौज, अहमदाबाद।

पुस्तकालय-संदेश

[पुस्तकालय-आंदोलनका प्रकाश-स्वतंत्र मासिक-पत्र]

सम्पादक संचालक
श्री हृष्य संडेलकर, श्री लट्टेन चौधरी अथे अथे
वार्षिक मूल्य ३) अंक प्रति १)

व्यवस्थापक, पुस्तकालय-संदेश

पो० पटना विश्वविद्यालय, पटना—५

महाराष्ट्र रा. भा प्रचार समिति, पुणेके तत्वावधानमें
राष्ट्रभाषा प्रचारकों अथे परीक्षार्थियोंके
अुपयोगकी हिन्दीकी अभिनव साहित्यिक
मासिक “जयभारती” पत्रिका

सम्पादक अथे प्रकाशक:— श्री पं. सु. डांगरे
मनीआडरमें वार्षिक मूल्य १) अंक मपया
मिजवाकर शीघ्र ग्राहक बन जाजिजे।
पता:—८६६ मदासिव, पा वॉ न ५५८, पुणे २

भारत सरकारके व्यापार और उद्योग मंत्रालय द्वारा प्रकाशित

‘उद्योग व्यापार पत्रिका’

★ उद्योग और व्यापार सम्बन्धी प्रामाणिक जानकारी युक्त विशेष लेख, भारत सरकारकी आवश्यकता सूचनाओं, अपयोगी आवेदों आदि पत्रिकामें प्रति मास दिये जाते हैं। ★ डिमांडी चोपेजी आकारके ६०-७० पृष्ठ मूल्य केवल ६ रुपये वापिस। ★ अजेन्टोंको अच्छा कमीशन दिया जाएगा। पत्रिका विज्ञापन देनेवा सुन्दर ग्राहक हैं। ग्राहक बनने, अजेन्सी लेने अथवा विज्ञापन छपानेके लिखे नीचे लिखे पतेपर पत्र भेजिए—

सम्पादक,

उद्योग व्यापार पत्रिका,

व्यापार और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली।।

HEBERT & S

सरस, सरह, आकर्षक और शिवपाप्रद
राजनीति, साहित्य और विज्ञान
सम्बन्धी लेखोंका समग्रव्य

सचित्र
हिन्दी

नया पथ

मासिक
पत्र

सम्पादक - शिवधर्म

वार्षिक ६ रु., अंक प्रति ८ आ., छमाही ३ रु.

‘नया पथ’ कार्यालय,

३१४ बरलभभाभी पटेल रोड, मन्वगी ४

अवन्तिका

वार्षिक या त्रिमासिक अंकिका

१० काव्यालोचनांक ३)

संपादक : लक्ष्मीनारायण मुष्ययु

यह अंक वार्षिक ग्राहकोंको साधारण दरपर ही मिलेगा।

प्रकाशक—श्री अग्रजन्ता प्रेस लिमिटेड,

पटना-४

सरगुली प्रेसका नवीन आयोजन
जनवरी १९५४ से प्रकाशित
हिन्दीमें कथा-साहित्यका अनुपम मासिक

क हा नी

कथा साहित्यके भिन्न अनुष्ठानमें ‘कहानी’ को लेखकों, पाठकों, विभेताओं सहित श्रद्धालुओं सहयोग अपेक्षित है।

—वी० पी० नहीं भेजी जाती—

व्यवस्थापक : ‘कहानी’ कार्यालय,
सरगुली प्रेस, ५ सरदार पटेल मार्ग, पो. बा.न. २४,
जिलासाहायद—१

आलोचनाके तृतीय वर्षका पहला अंक

“आलोचना अंक”

लगभग २५० पृष्ठोंका विशेष अंक। जिस अंकका मूल्य ५) मात्र वापिस ग्राहकोंको साधारण मूल्यमें ही मिलेगा।

या० मू० १२) मनीआर्टट द्वारा मेजिसे
प्रकाशक:— राजकमल प्रकाशन,
१ कैज बाजार, दिल्ली

आपके, आपके परिवारके प्रत्येक सदस्यके,
प्रत्येक शिक्षा-मंथ्या तथा पुस्तकालय
के लिये उपयोगी

हिन्दीका अपने टेंगका पहला पत्र

वार्षिक मूल्य १०) **गुलदस्ता** नमूने की प्रति
पृष्ठ मत्वा १२५ अरु रचना

(हिन्दी लाजिम्स)

३१३८ पीपलमंडी, आगरा

हिन्दी स्वस्थ, सान्त्विक अवं
सस्ना मासिक पत्र

‘जीवन-साहित्य’

वार्षिक शुल्क केवल ४)

चाहें तो पहले एक कार्ड भेजकर
नमूना मंगाकर देख लें।

जुलाही और जनवरीसे प्राहक
बनाये जाते हैं।

पता.— सस्ना साहित्य मंडल, नयी दिल्ली

हिन्दीका स्वतंत्र मासिक
“नया समाज”

संचालक : नया समाज-ग्रुन्ट

संपादक : मोहनसिंह सेंगर

वा चन्दा () : भेक प्रति ॥१॥ : विटरोने १=) वा.

आज ही नमूनेके लिभे लिखिये:—

स्वस्थ्यायक 'नया समाज',

३३, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता-१

अजन्ता

सम्पादक:—

श्री बशीर विद्यालकार श्री धीरान राना

प्रकाशक:—

हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार ममा,
हैदराबाद (दक्षिण)

१. अन्व बोदिका साहित्य, २. सुन्दर और
स्वच्छ छपाओ, ३. बहुरूप चित्र
वार्षिक मूल्य १ रचना

किसी माससे प्राहक बन सकते हैं।

नयी धारा

डिमाओ जाट पेजीके १०० पृष्ठ, पन्को
जिल्द, आकर्षक कवच, सचित्र, सुसज्जित।

नयी धाराके पुराने प्राप्य अरु आपी
होमने प्राप्त होले। पोस्टेज भी। रंगम अरुही
पोडोधी प्रनियां शेव हे। प्राहक शीघ्रना करे।

अंक अंक १) रु.] [वार्षिक १०) रु.

पता:— प्रबंधक, नयी धारा, लखोह प्रेस, पटना ६

आपके मनोरंजनके लिये

रानी

नाना प्रकारक सचित्र रूप, कहानियां,
छाया-नाटक और आनन्दनाभे आदि-आदि।
बर्ने हार्लिवाक और दानाबला-अरु मूफ्त।

रानीका वार्षिक चन्दा केवल चार रुपये हैं।

“रानी” कार्यालय,
१२१ चित्तरंजन अेविन्पू,
कलकत्ता ७

गुजराती भाषाका निराला मासाहिक पत्र

निर्माण

[सम्पादक हरिलाल पट्टग]

ममस्त भारतकी गैवणित् मासुत्तिन
ओर प्रजाजीवनक नव निर्माणकी प्रवर्तिप्रीका
ग्योतिधर । विद्यापनका अ युल्लम सापन ।

वार्षिक मूल्य ५) छु माही ३)

अक प्रति दो आना

'निर्माण' कार्यालय स्वरित्तन त्रिन्त्री

धर्मेश्वर माण राजमोट (सोणपट्ट)

नओ पीटीको मेहनत ओर प्रतिभाका प्रतीक

'नव निर्माण' का चतुर्थ वार्षिक अक
"परीम्पा त्रिजेपांरु"

अम अ घी अ त्रिटर, साहित्य रत्न
प्रभाकर विगारद, साहित्यभूषण साहित्याकार
आदिक त्रिअ विगप युवपाया ।

अक प्रति २) पुस्तकाकार २॥) डाक भय्य अलप

नवनिर्माणके प्राट्टकोको वार्षिक मुल्ल ४) २ अं

पता:—

कुमार साहित्य परिषद, जोयपुर-५

वार्षिक मूल्य ४) * अक प्रति 1=)

'माता'

श्री अरविन्द साहित्यकी भुत्तर भारतकी
अन मात्र मासिक पत्रिका चार वर्षमे
नियमित रूपन प्रकाशित होकर भारत-
वर्षमे कोने-कोनेमे तथा अन्य देशमे
आध्यात्मकी धारा बहा रही है ।

प्रधान सम्पादक—श्री मोहन स्वामी

पता:—प्रबन्धक 'माता' (मासिक)

श्री मातृकेन्द्र, गाजियाबाद (यूपी)

गौरव अन्द करनेके लिजे

* गोरक्षपण *

मासिक पत्र अउय्य पढिजे

वार्षिक २॥) अक अक 1=)

धार्मिक सस्याओको आध मूल्यमे ।

गारवया प्रचारक लिअ हर प्रकारकी

सहायना तथा दान नीचेने पतेपर भजिजे ।

व्ययस्थापक—गोरक्षपण साहित्य मन्दिर,

रामनगर बनारस (यूपी)

त्रजमा सर्वश्रेष्ठ मासिक 'देशबंधु'

वार्षिक मूल्य ४) अक प्रति 1=)

देशबन्धु मधुराम निरालाका सर्वान्द मुदर
साहित्यक मासिक पत्र है जिन सभी लोग बड
चाहते पढते ह । जिनमे अ-च कोटिके लपकाके
चुने लग कहानी कवित्त अकाकी नाटन आदिक
अतिरिक्त वगारवगारयाग ऐग भी रहते ह ।
नयीन साहित्यिक पुस्तका ओर पत्रकी समीक्षा
पठनीय होनी है ।

विज्ञापनदाताओंके लिजे देशबन्धु अपूव सापन है ।

—देशबन्धु कार्यालय, मथुरा ।

* सुपमा *

सम्पादक कुदलगाय मोदकर

या मासिकमाची वैशिष्ट्य—

श्री मुन्तर उच्चया श्री नामांकित ललकाके
लिताण श्री जीवन कला साहित्य त्रियादि
विषयावर युवयुक्त मञ्जूर श्रिया गिवाय
केनोद्वानी चित्र भाजन वर्गीकी पाठ्यून प्राइक
हाले पायथाके भाडे

वार्षिक अगणी ६ रुपये किरकोठ अकास ८ आणे

पता:— सुपमा पढाग विट्टिउज,

धरमपठ, नामपुर (यूपी)

कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन
भारतीय वाङ्मय भाग १, २, ३.

प्रथम भागमें सस्कृत, पालि, प्राकृत अपभ्रंस तथा द्वितीय भागमें हिन्दी अर्द्ध और तृतीय भागमें बंगला, छुडिया, जममिया भाषाओंके सविषय विविहाम सप्रहीत हैं। मूल्य भाग १, तथा ३ प्रत्येक २)रु, भाग दूसरा १॥)

फ्रेंच स्वयं शिक्षक

लेखकः—डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार

अस पुस्तककी महाप्रतामे विद्यार्थी महजहीमें फ्रेंच भाषाका ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य ५)

मराठीका वर्णनात्मक व्याकरण

लेखकः—प्रो. न. चि. जोगळेकर, अेम. अे.

मराठी भाषाकी श्रुति, विकास तथा मराठी साहित्यके सविषय विविहासके साथ-साथ, उसके व्याकरणको रोचक ढंगमें समझाया गया है। मूल्य २।)

संक्षिप्त राष्ट्रभाषा कोश

(सम्पादक—महापंडित राहुल सांकृत्यायन)

शब्दसंख्या - २५००० [मूल्य ५) डाक व्यय अलग]

राष्ट्रभाषा प्रेमियों, विद्यार्थियों, संस्था तथा सरकारी कार्यालयों आदिके लिअे यह कोश बहुत उपयोगी अर्थ संग्रहणीय है।

विशेष जानकारीके लिअे लिखें—

पुस्तक-विक्री-विभाग,

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर, वर्धा .

५ देननागर *

१ पञ्जाब (पञ्जाबी)	{ श्री दिगन्तचन्द्र मिश्रजी अन०- श्री भूतन आनन्द कौम दायन	१२१
२ खेनोकी भरपूर जवानी (पञ्जाबी)	{ श्री अमला प्रीनम अन०- श्री पतश्याम मन्त्री	१२२
६ हिन्दी भाषा भारत जाशा (त्रिविध त्रिपय) *		
१ राष्ट्रभाषा का स्वल्प	श्री प जवाहरलाल नेहरू	१०४
२ हिंदी नवयुगकी दृष्टीपर	श्री त्रिजगन्ध विद्याणा	१२१
३ देशकी अस्तित्वाके त्रिअ हिन्दी	श्री व मा म ती	१०७
४ हिन्दी भारत अभियाकी भाषा बन सक्ती है	श्री पञ्जलजी मास्त्र	१०८
५ सामाजिक प्रतिस्वभा	श्री अ गो रामचन्द्रगव	१२८
६ हिन्दी पाठक बन-समूह बन	श्री प वामु वगारण अग्रवाज	१३०
७ साहित्यालोचन	श्री गगपाल गर्मा	१३३
८ सम्पादकीय		१३५

प्राथमिक चन्दा ६) मनाआन्दरेमे

अधप्राथमिक ३॥)

अनर अन्ना मूल्य १० आना

पला — गण्टूभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर, उर्धा (म० प्र०)

राष्ट्रभारती-पिज्ञापन कर

मासा ण पाठे पूरा - ६०) प्रतिवार	महीय कवर प ठ	पूरा - ८०) प्रतिवार
आधा २५)		आधा - ६५)
द्वितीय कवर पाठे पूरा—(१००)	चतुर्थ कवर पठ	पूरा - १२०)
आधा - ५५)		आधा - ७०)

रष्टभारत की मासिक—० x३

छप प ठका मासिक—८ x५

तीनसे अधिक बार विज्ञापन देनवालाको विशेष सुविधा दी जाअगी।

राष्ट्रभारती म प्रथम व्यापारका विज्ञापन देकर लाभ अटाअिअ। क्योंकि यह कदमीरसे लेकर रमेशवरतक और जगन्नाथपुरीसे द्वारवापुरीतक हजारो पाठकों हाथोंम पहुँचती है।

राष्ट्रभारती अजेन्सी

- १ प्रतिम म कम म कम पाव प्रतिघो लनपर है। अज सी दी जाअगी।
- २ पाव प्रतिघा ल पर २०) प्रतिगत कमीगत दिया जाअगी।
- ३ छहम अतिर प्रनिघो लनपर २५) प्रतिगत कमागत दिया जाअगी।
- ४ पांचम अधिक ग्राहक बना सनब लाक भी विगप सुविधा दे जाअगी।

विशेष जानकारीक लिअ आज ही लिखिअे —

श्री प्रबन्धक, "राष्ट्रभारती" पाल हिन्दीनगर (उर्धा, म प्र)

‘राष्ट्रभारती’ आपसे कुछ कहना चाहती है !

१० यही कि, ता १ जनवरी १९५८ से, वह अपने जीवनके चौथे वर्षमें प्रवेश कर चुकी है। भारतके प्राय सभी प्रमुख माहियकारों, विद्वानों और पत्र-पत्रिकाओंने ‘राष्ट्रभारती’ की प्रशंसा की अने सराहा, अपनाया, अपनी शुभकामना दी, महयोग दिया और अस्वाह बटाया। अने सबकी कृपाकी किन शब्दोंमें व्यक्त किया जाये !

२० यही कि, वर्तमानदिन नमपर, हर महीनेकी पहली तारीखकी, अपने प्रेमी पाठकोंके हाथोंमें श्रेष्ठ, सुदृष्टिपूर्ण, स्वस्थ और सरल-सुन्दर, विविध-विषयक गभीर लेख, कविता, कहानी, समालोचना आदि पाठ्य-सामग्री अर्पण करती है।

३० यही कि फिर भी वह सबसे मन्दी मान-सुखरी पत्रिका है। वार्षिक मूल्य कहें या मालाना चढा कहें ग्यादा नहीं, सिर्फ ६ रुपया और अर्ध-वार्षिक (छह माहों) ३ र ८ आना और अंक अक्का १० आना।

४ यही कि, राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिके प्रमाणित प्रचारको, केन्द्र-व्यवस्थापकोंकी और विद्यालयों तथा महाविद्यालयोंकी ‘राष्ट्रभारती’ अंक रुपया कम करके रियायती मूल्य ५ र वार्षिक चन्देमें और अर्धवार्षिक चन्द्रा ३ र में दी जायेगी।

५ यही कि, अति महान् पवित्र साहित्यिक अथे सामूहिक राष्ट्रभाषा-प्रचार कार्योंमें आप ‘राष्ट्रभारती’ का हाथ बटाये। अुसकी सहायता करे। स्वयं प्राहक बने और अपने मित्रोंकी भी बनाये।

६ यही कि “राष्ट्रभारती” आपकी अंभी सहायताका सट्टय आभारपूर्वक स्वागत करेगी।

राष्ट्रभारतीके लेखकोंसे निवेदन

(१) ‘राष्ट्रभारती’ में प्रकाशनायं रचना आदि सामग्री स्वच्छ-शुवाच्य लिखावटमें अथवा अच्छी टाइप की हुई कपो भेजनी चाहिये। प्रकाशन योग्य सामग्री जो कुछ भी आप भेजें वह बहुत भारी-जोखिल और बहुत लंबी नहीं होनी चाहिये।

(२) यह अच्छी तरह ध्यानमें रहे कि राष्ट्रभारतीमें प्रकाशनायं भेजी हुई आपकी रचना अिनके पूर्व किसी हिन्दी पत्र-पत्रिकामें प्रकाशित न हो चुकी हो; और जो कुछ सामग्री भेजें वह ‘राष्ट्रभारती’ के लिखे ही भेजें। ‘राष्ट्रभारती’ अपने लेखकोंकी ‘पत्रगुण-पुरस्कार’ भी भेंट करती है।

(३) अनुवादक महाशय किसी अनुदित रचनाको भेजनेसे पूर्व अनेके मूल-लेखकसे पत्र द्वारा अनुमति अवश्य प्राप्त कर ले, तभी अनुदित रचना हमारे यहाँ भेजें।

(४) आपकी स्वीष्टन रचना सबधी सूचना मपादक द्वारा आपको दी जायेगी और छपनेवक आपको प्रतीक्या करनी होगी।

(५) अपनी अम्बोहित रचनाकी वापस मगानेके लिखे डाक-टिकट अवश्य भेजें अथवा आप अुसकी प्रतिनिधि अपने पास सुरक्षित रखें।

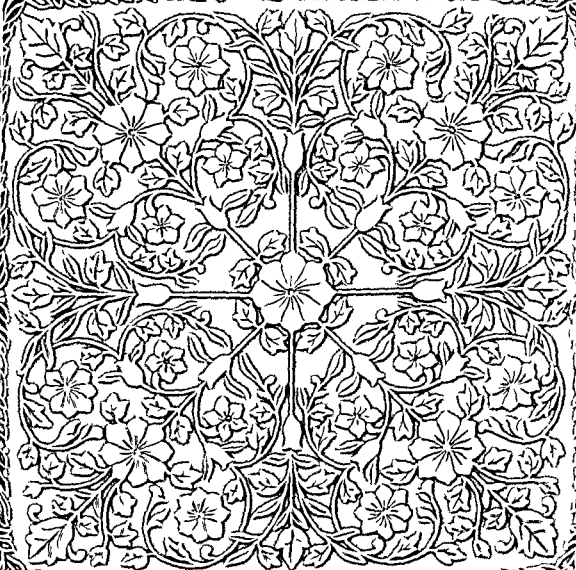
(६) लेख, रचना मम्पादकीय आदि सारा पत्र-व्यवहार अिन पतेपर करे —

संपादक : ‘राष्ट्रभारती’
पोस्ट—हिन्दीनगर (बर्धा, मध्यप्रदेश)

राष्ट्र भारती

मार्च, १९५४

6.3 57



-: विषय सूची :-

१. लेख :	लेखक	पृ०सं०
१ भारतीय ममन्वय	श्री डॉ० मुनीनिबुमार चाटर्ज्या	१६०
२ मत्स्य क्या कहता है ?	श्री महात्मा भगवानदीन	१६३
३ गुजरातके 'नेकप्रिय कहानीका'- पद्मालाल पटेल	}	श्री गीरेशकर जोशी
४ मध्यभारतके पुरस्कृत कुछ प्रमुख साहित्यकार		
५. जिधर देवता हैं अंधर वृत्ती वृत्ते ?	स्व० माने गूर्जी	१६३
६ अवंशी (मगधी)	}	श्री ग इय माडग्वोलकर अनुवादक-श्री वसु व्यास 'अनल'
७. भारतका राष्ट्रपति और मन्त्रिमंडल		
८ नयी हिन्दी कविता और प्रकृति	श्री सिद्धनाथ कुमार	१६३
९. रानी गाओ डाण्डू (अममिया)	श्री जितेन्द्रचन्द्र चौधुरी	१६५
२. कविता :		
१ गीत	श्री महाप्राण 'निराला'	१६४
२ कनुराज	श्री गोपाल शर्मा	१६६
३ मिट्टीकी कहानी	श्री डॉ० 'सुधीन्द्र'	१६९
४ यत्र मौसमकी रेल	श्री 'हृषीकेश'	१६९
३. कहानी :		
१ विचित्र बीन	श्री 'अनाम'	१७४
२ पनग कट गयी	श्री श्रीराम शर्मा 'राम'	१७६
४. 'अंकांकी' :		
१ मन्त्रिणाथ (कन्नड)	}	श्री 'श्रीराम' अनुवादक-श्री गुरुनाथ जोशी
५. देवनागर :		
१ भावना भागीरथीके रजकण (गुजराती)	}	श्री 'सुमन्तेनु' अनुवादक-श्री शंकरदेव विशालशार
६. साहित्यालोचन :		
७. सम्पादकीय :	..	१७६

वार्षिक चन्द्रा ६) मनीआर्डरसे : : अर्धवार्षिक ३॥) : : अंक अंकका मूल्य १० आना

पता:—राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर, वर्धा (म० प्र०)

गङ्गा श्रवणी

[भारतीय साहित्य और संस्कृतिको मासिक पत्रिका]

—: सम्पादक :—

मोहनलाल भट्ट : द्विप्रेक्षा शर्मा

* वर्ष ४ *

वर्धा, मार्च १९५४

* अंक ३ *

गीत

: धी 'निराला' :

फेर दी आँख, जी आया,
जैसे रसाल बोरया ।

रहकर दबते मेरे मन,
फूटे सौ-सौ मधु-मुञ्जन,

तनकी छबियाँ नतलोचन
भुमडी, मानम लहराया ।

सूखी समीर नव-गन्धित
बह चली छन्दसे नन्दित,

भुग आया सलिल कमलसित,
कोमल सुगन्ध नभ छाया ।

सत्य क्या कहता है ?

: महात्मा भगवानदीन :

सत्य आदमीका गुण है। हमेशासे ब्रुसके साथ है, हमेशासक बना रहेगा।

सत्य आदमीसे असंग होकर कुछ भी नहीं। ब्रुसके साथ रहकर सबे कुछ है। गुणके गुणीसे अलग होनेकी कल्पना की जा सकती है, अलग किया नहीं जा सकता।

सत्य जब हमेशासे साथ है, फिर ब्रुसकी खोज क्यों ? और अितना भी पता क्यों नहीं कि वह क्या है ?

आदमी अपनी आँसुकी नहीं देख सकता। वह जन्मसे साथ है, मरनेतक साथ रहेगी। उसे देखनेके लिये दर्पणकी जरूरत पड़ती है।

सत्य हमेशासे साथ है; अगर दिखायी नहीं देता तो घरानेकी बात नहीं। ब्रुसकी सुनो, ब्रुमने देखनेकी धुनमें न लगे। वह तुम्हें दिखायी देनेके लिये जितनाही ब्रुसक है, जितने तुम उसे देखनेके लिये।

सत्य गुण है, गुणमें समझ और जान नहीं होनी। गुण अपने आप कुछ नहीं कर सकता। सत्य गुणकी हैसियतके कुछ नहीं चाह सकता। सत्य तुम्हारे साथ अन्धेकी होनेसे तुम्हारी भलाही अंगेही चाहते लगता है जैसे तुम अपना भला चाहते हो।

सत्य तुम्हारा साथी बनकर तुम्हारी भलाहीके लिये ऐसे ही तड़पता है जैसे तुम तड़पते हो। ब्रुसके लिये भविष्यत यही है कि वह यह चाहता है कि तुम्हें दिखायी दे जाये, पर अित विषयमें वह कुछ कर नहीं सकता। ब्रुसके और तुम्हारे बीचमें जो पर्या है उसे तुम ही सोचोगे; जोही दूसरा नहीं सोचेंगा। लोहेके अन्दरकी चमक जिस तरह तुम्हारे माँजनेसे तुम्हें दिखायी देनी है, ब्रुसी तरह सत्यको माँजनेसे सत्यकी चमक तुम्हें दिखायी देनी।

सत्य यही चाहता है कि तुम अपनी आँसुकी सुली रखो, दोनों बाज खड़े रखो, और अपनी सारी जिन्दगी

तुम यह कहोगे, हम तो अपने आँसु बाज हमेशा सुके रखते हैं, अब और किस तरह खोते ?

तुम्हारा सवाल ठीक है, पर जिनका जबाब तुम्हारे पास है। देखो, जब तुम छोटे थे तब भी तुम्हारी आँसु सुगी थी, जान चौक्रे थे, पर अित दिनों अित सुली आँसु और अित चौक्रे जानागे जा देपते-मुनते थे, क्या आज भी ब्रुसी तरह देखने-मुनते हो ?

तुम जब छोटे थे, फूलको देपते थे। गुण हाने थे। ब्रुसे तोड़ते थे। ब्रुसे मूँड़में रख लेते थे। जरा बड़े हुए, ममलकर पंक्ते लगे। जरा और बड़े दूने पेड़के सारे फूलोंको लकड़ी मार-मारकर गिराने लगे। यह भी देखना देखना था।

अब तुम बड़े हो। अब भी फूलको देपते हो, अब भी सुन होते हो। अगर तुम बहुत समझदार हो तो ब्रुसे नहीं तोड़ते, क्योंकि ब्रुसकी गुणवू तुम्हारी नाकनक अपने आप पहुँच जाती है। अगर तुम अितने समझदार नहीं, और अपने दिमाग तथा मनपर बानू नहीं है तो तुम पेड़परसे अंकरी फूल तोड़ लेते हो, ब्रुसको न मसलते हो, न मूँड़में रखते हो, न फेंकते हो, क्मालमें रखकर सूँपते हो। यह भी अंक देखना है।

दोनों देखनेमें अन्तर है। पहले देखनेमें दूरसे देखनेतक पहुँचनेमें तुममें सत्यके खूपसे कमी पदोंको रण्ड डाला है और यह दखकर तुम्हारे अन्दरका सत्य बहुत गुण हो रहा है। सत्य यही चाहता है कि और आँसु सुगी, और भी जानोको चौकन्ना करो, और भी सारी जिन्दगियोंमें खेतना लाओ और मनपर घीरे-घीरे काबू पाने जाओ।

दुनियामें सत्यसे बढ़कर तुम्हें चाहनेवाला जोही दूसरा नहीं है। माँ बाप भी नहीं। अगर अन्ग कोही

रखा है वह तुमको कभी जितना प्यार नहीं कर सकता जितना सत्य ! जिसका कारण है ।

सत्य तुमको कितना प्यार करता है । जिस बातको समझानेके लिये सत्यमकाने बड़ी-बड़ी कहानियाँ लिख डाली हैं और सीतारामकी कथा अंसी ही अंक है ।

जैसे सीता बनवासमें साय रहनेके लिये मचल झुठी, वैैसे ही सत्य अंक कथणके लिये अलग नहीं रहना चाहता ।

सीताकी जो लगन कवियोंने रामके लिये दिखायी है, अगर बस लगनकी हम अंक बूंद भी पाले तो सत्यकी लगन तुम्हारे साय रहने और तुम्हारे देखनेकी सागर जितनी समझी जायेगी । अब तुम अन्दाजा लगाओ कि सत्यका प्रेम तुम्हारे लिये कितना है । अंसा करो है ?

जो अश्वर, जो राम तुम्हारे अन्दर है वही तो सत्य है । अब अगर तुम चोर हो तो वह चोर है । अगर तुम हिंसक हो वह हिंसक है । तुम जो हो, वह वह है ।

राम राजकुमार थे, सीता राजकुमारी थी । राम बनवासी थे, सीता बनवासिनी थीं । सीता महलमें सोलह शृंगार करके भी रहती बनवासिनी तो कहलानी ही, बससे भी ज्यादा कहलानी, वियोगिनी । वियोगिनी न बनकर बसने बनवासिनी बनना ठीक समझा । राम विजयी हुअे, वह अपने आप विजयन्ती कहलाने लगी । राम राजा हुअे वह रानी बन गयी ।

सत्य अंक शक्ति है और शक्तिने नाते वह सीता है । सत्यको पहचाने हुअे तुम शक्तिधारी हो । शक्तिधारीके नाते तुम राम हो ।

तुम्हारी बड़बारीमें सत्यकी बड़बारी है । रामके राजा होनेमें सीताके रानी बननेकी बात छिपी हुअी है । फिर कौन हो सकता है जो सत्यसे ज्यादा तुम्हें प्यार करेगा ?

सीताकी यह अिच्छा कि राम विजयी हों, अयोध्याके राजा बने, यदि अंसा माना जाये तो सत्यकी यह अिच्छा कि तुम भगवान बनी, सत्य और करोड़ रूपोंसे भी

सत्यसे समीप होना यानी सत्यके आमने-सामन आना ही हो तो भगवान बनना है । जिससे आप सत्यकी तड़पका अन्दाजा लगा सकते हैं ।

सत्य न अपने आपको मँज नकता है, न माजरा है, वह तो तड़पना भर जानता है । और चौबीसों घंटे तड़पते रहता है । तुम जूसी तड़पनकी अनुभव नहीं करते । जब तुम अनुभव करने लगो तो अपने सारे अनुभवोंसे मदद लेना सीख लीगे । और दूसरोंके अनुभवोंको रोगमाल बनाकर बस मँलको मँज डालो तो सत्यपर मुहूर्तोंसे चडा हुआ है और आपे दिन चटता रहता है ।

दाँत रोज मँजने पडते हैं । मुँह रोज घोना पडता है । आँखोंमें सुर्मा रोज आजना पडता है । तब वहीँ दाँत, मुँह और आँख साफ रहने हैं । यही हाल सत्यका है । उसके ऊपर रोज धूल चडती रहती है, बूने ठी रोज साफ करते रहना ही चाहिये । और पुराने मँलको माजनेके लिये भी कुछ वचन निखालना चाहिये ।

बालपनकी आँखसे जवानीकी आँख कम देखती है । पर ज्यादा ठीक देखती है । जवानीकी आँखसे बूढ़ापकी आँख और भी कम देखती है पर बहुत ज्यादा ठीक देखती है । और अनुभवोंने हुअी अन्धी आँख बिलकुल न देखकर बहुत ज्यादा देखती है । यही हाल मनुष्य समाजकी बालपनकी आँखका और आजकी आँखका है । मनुष्य-समाज बालपनमें बहुत देखता था, पर कुछ-कानुछ देखना था । आज वह कम देखता है पर पहलेसे ठीक देखता है ।

सत्य यह चाहता है कि तुम बाहर किसी ताकतको दूढ़कर टोटेमें रहोगे । तुम्हारा नका अिनीमें है कि मेरे ऊपर लगी वाओकी मँज डालो, मेरे ऊपर अंक मिनिट भी धूल न रहने दो । पर तुम हो कि अमकी न मुनकर ताकतके लिये न जाने कहाँ-कहाँ भागे फिरते हो । तुम्हारी यह हालत देखकर सत्य पबरा अुठना है ।

सत्य यह चाहता है कि जो कुछ आँख देखती है या जो बान मुनते हैं, वह वही नहीं होना जो दिखायी देता या सुनायी पडना है । आँखकी जो दिखायी देता

है, अपने मौख उजवा देता है । आँखकी देखने समय पर

कहता है कि मैं किताबका पन्ना देख रहा हूँ, लेकिन उसका मन न जान क्या देख रहा होता है। यही कारण है कि पन्नेपर लिखे किमी खास शब्दको देखनेके लिए कितनी ही बार निगाह डालनी पड़ती है। तब पन्ना देखनेकी बात कैसे ठीक मानी जा सकती है ?

सत्य यह चाहता है कि तुम अखि नाककी न मुनकर मनकी मुनो, पर वही न रुक जाओ।

सत्य यह चाहता है कि मनकी मोची हुई बातोंको ज्यो का-रयो न मान लो उसे अनुभवकी कसौटीपर कसो। अगर वह कसौटीपर ठीक न अतरे तो अग्रे अंसा ही रही समझ लो जैसे अखिका दखा हुआ और वानका मुना हुआ।

सत्य यह चाहता है कि काय कारणके मामलेमें सतर्क रहो।

कितो कायका अंसा कारण न मानी जिस कारणसे उस तरहका कार्य तुम खुद न कर सको।

या अगर तुम उस कारणसे वैसा काय नहीं कर सकते तो यह देखो कि उस कारणसे वैसा कार्य कोश्री कर सकता है ?

अगर अंसा भी न हो, तो यह देखो कि क्या तुम्हारे अनुभवकोका भडार अिस बातमें कुछ भी मदद देता है कि उस कारणसे अिस तरहका काय हो सकता है।

अगर अंसा भी न हो और तुम्हारा अनुभव भडार अिसम जरा भा मदद न करे तब दूसरोके अनुभवका मदद लो, जिनको तुमन अपन अनुभवकी कसो टीपर कसकर ठीक मान लिया है। अगर अन अनुभवकी मददसे यह बात समझमें आ जाअ कि हाँ उस कारणसे वैसा काय हो सकता है तब मान लो और अगर न हो सकता हो ता न मानो।

दूसराके अनुभव या अपन अनुभवके आधारपर माना हुआ काय-कारण अंसा नहीं है जो यो ही पडा रहन दिया जाअ। हाँ, यह ठीक है कि जैसे और खोटी

बात धूल तो नहीं पँलाअगी पर माजनमें सहायक नहीं हो सके तो किसी काम नहीं आ सकती।

सत्य यह चाहता है कि काओ कायकारण जिसे तुमने खुद नहीं किया और तुम्हारे पास पडा हुआ है वह कभी भी बीचके पर्दको न तोड सकेगा और कभी मुझमें और तुममें मँल नहीं होन देगा।

सत्य यह चाहता है कि जब तुम यह देखो कि कोओ आदमी या औरत यह खोर मचा रहा है कि कोओ मुस मार रहा है जब कि वहाँ कोओ आदमी नहा है, तब अकदम कोओ वान तय न कर बटो और न किसीकी तय की हुई बातको मान बैठो। अपन अनुभवकोका भडार टटोरो और देखो किन-किन हाअनामें आदमी अैसी बतुकी वात करन लगता है। अंसा करनपर तुम्हारे अनुभव उस घटनाके कओ कारण बचा सकते हैं। अब देखो कि अुनमेंने कौनसा ठीक बँटना है। जो ठीक बँटना है अुमीके अनुसार उस आदमीको समझाओ या अुपचार करो।

सत्य यह कहता है कि जब जब तुम अपन अनुभवके बलपर किसी अगले अनुभवके अिस जान दे देते हो, तब-तब तुम मुझे अपन बहुत करीब पाने हो। यही कारण है कि तुम्हे जल्दी मफल्ता मिलता है और अगर मोन भी हो जानी है तो अपन साधियोंके अिस अंसी चीज छोड जाने हो जिनके कारण वह तुम्हें मरन नहीं देते।

लेकिन अगर तुम दूसरोके अनुभवपर अपनी जान खनरेमें डालते हा तो म तुमसे बहुत दूर जा पडता हूँ— और अंसे वक्त तुम्हारी मोन हो जाअ तो तुम कोओ चीज अपन पीड नहीं छोड सकने और अगर कोओ चीज तुम छोड ही गय तो वह अंसी नहीं होगी जिससे कोओ फायदा अुआ सके। क्याकि वह वही चीज हो सकती है जो जानवरोंमें ज्यादा मिलनी है और आदमियोंमें कम।

सत्य यह नहीं चाहता कि कोओ आदमी दूसरोके अनुभवके खातिर शरकी सी बहादुरी दिखाकर अपनी

और उसके अंदर रहनेवाले सत्यको कोश्री फायदा न पहुँच सकेगा ।

सत्य यह नहीं चाहता कि कोश्री आदमी दूसरोंके अनुभवके लिये हृदय ज्यादा खुदर बन जाये । क्योंकि खुस खुदारतासे उसके अंदर रहनेवाले सत्यको कोश्री लाभ न पहुँचेगा ।

सत्य यह चाहता है कि तुम किसीकी बातको सिर्फ़ जिस वजहसे न मान लो कि वह आदमी बहुत बड़ा विद्वान है ।

किसीकी बातको जिस वजहसे न मान लो कि वह बहुत बड़ा त्यागी है । जिस वजहसे न मान लो कि वह किसी पुराने शास्त्रमें लिखी है । किसी बातको किसी अंसी वजहसे न मानो जो खुसका कारण न हो ।

सत्य यह चाहता है कि जबतक तुम्हारा अपना अनुभव किसी बातको ठीक-ठीक न बता दे तबतक खून वाताको अपने अंदर अके अंसे खानेमें डाल रखो जो तुम्हारे और मेरे बीचमें आडे न आने पाये । तुम्हारी सारी जानकारी मेरे ऊपर धूलका काम करती है । अगर वह तुम्हारे अनुभवोपर ठीक नहीं अंतरती और फिर भी तुम उसे ठीक समझे हुये हो ।

असौका नाम अंधविद्वान है । असौका नाम मिथ्या विद्वान है । यही वह अवदस्त पदा है, जिसे दूर करनेके लिये सत्य तडप-तडपकर मोन रहते हुये अशारा करता है ।

सत्यका कहना है, मैं आत्मासे अलग होकर कोश्री चीज नहीं हूँ । मैं आत्मासे अलग हो ही नहीं सकता । मैं और आत्मा अंधमेव हूँ । कहने और समझनेके लिये हम दो हो सकते हैं । जैसेही अंतर आत्मा, बुद्धि, समझ, विद्वान, ज्ञान, आत्मा, सत्य यह सब अकेही चीज है, नामके लिये अलग-अलग है ।

प्रकाशका जो रंग है, वह है । पर वह हरे नीलेमें हरा, लाल नीलेमें लाल और नीले नीलेमें नीला दिखायी देता है । ठीक इसी तरह मैं यानी सत्य अपना प्रकाश लिये हुये हूँ । मेरे ऊपर पूल जमी हुयी है ।

और जिस प्रकाशसे आदमी सारा काम चलाता है असौका नाम बुद्धि है । बुद्धि अके चन्द्रमा है जिसे खुस सत्यरूपी सूरजसे चमक मिलती है । खुसकी चमक और मेरी चमकमें अन्तर होगा ही । जैसे-जैसे अंधविद्वान-परसे मिथ्या विद्वानके बादल हटते जायेंगे, जैसे-जैसे बुद्धिकी चमक बढती जायेगी । अके दिन अंसा ही सक्ता है कि बुद्धि और मैं, सत्य, अके बन जायें आदमीका जन्म जिस बातकी कोशिश करनेके लिये हुआ है ।

सत्यका कहना है बुद्धि मेरी है, खुसकी मेरी तरह कद्र करो, जिस विषयमें कभी घोखा न भावो और अगर तुम जिस घोखेसे बचे रहे तो बहुत जन्दी अपने अंदरकी सचाअियां खान लोगे और मेरे दर्शन पा सकोगे । मैं तुम्हें समझ लूंगा, तुम मुझे समझ लोगे ।

सत्यका कहना है, यह बात बिलकुल गलत है कि छोटा बच्चा बुद्धिमान नहीं होता । बड़े-बड़े ज्ञानियोंमें और बालकमें कोश्री अन्तर नहीं होता । चीटी और हापीमें कोश्री अन्तर नहीं है । देहके छोटे बडेका अंतर है । ध्यानसे देखा जाये तो चीटी जितना बोझ अडाकर ले जाती है, हापी खुसी अनुपातसे नहीं ले जा सकता । यही हाल दूध-पीते बच्चेका है । जितनी छोटी खुसे देह मिली हुयी है, जितने छोटे काम खुसके सुपुर्दे हैं, खून सबसे काम लेनेके लिये जितनी बुद्धि खुसके पास है, वह वही ज्यादा है, खून ज्ञानियोकी बुद्धिसे जिनकी बहुत बडी देह और बहुत बडा काम मिला हुआ है ।

सत्यका कहना है, दूध पीते बालकको न घोखा देकर हिन्दू हिन्दू बना सकते हैं, न मुसलमान मुसलमान, न असाही बीमात्री, बडा आदमी बहुकाया जा सकता है, दूध-पीते बालकको बहुकाना मुदिकल ही नहीं, असम्भव है । धर्मवाले दुनियाका बहुका सकते हैं ।

सत्यका कहना है, यह कहकर कि जो सच्चा होता है खुने आग नहीं जलाती, सीता देवीकी पोखा दिया जा सकता है और वह धोखेमें आकर आगमें घुस सकती है, पर किसी बच्चेको यह कहकर धोखा नहीं दिया जा सकता कि जो सच्चा होता है वह आगमें नहीं जलता । बालकको अच्छी तरह मालूम है कि वह बिल-

कानी अगुली आगमें दी थी और वह जलन लगी थी। उस बालकका ज्ञान सब घर्मशास्त्रियोंमें कहीं सच्चा ज्ञान है क्योंकि उसका अनुभव है कि सच्च आदमीकी अगुली भी आग जला देती है। फिर उसकी देह बयो नहीं जला देगी।

सत्यका कहना है कि आगका काम जलाना है पर ही आग जैसी चमकती हुआ चीजें और भी हो सकती ह जो ठडी हो और आग जैसी समझी जाअ उनमें बैठकर सच्चे और झूठ दोनों ही जलनसे बच सकते ह और आग भी यह समाया किसन नहीं देखा कि दहकने हुअे कोयत्रोपर झूठ और सच्चे सभी नग पाव निकर जाते हैं और यह भी किमन नहीं मुना कि दूधका जला छाछको फूक फूकरार पीता है। छाछको गरम दूध समझकर अगर कोअी अपनी अंगुली डाल दे तो वह जलेगी नहीं लोग भले ही यह समझें और यह कहा करे कि उस आदमीन गरम दूधमें अगुली डाली थी और वह जली नहीं क्योंकि वह सच्चा आदमी था।

सत्यका कहना है कि बुद्धिके मिवा और कौन है जो हर वक्त तुम्हारे माथ रह सकता है और आड वक्तपर तुम्हारे काम आ सकता है।

जो तुम्हे बुद्धिके काम न लेनको मान कहने ह वे खुद बुद्धिके काम ले रहे ह फिर वे कैसे हकदार हो सकते हैं कि यह बहे कि तुम बुद्धिके काम नहीं ले सकते।

सत्यका कहना है कि मुझ पहचाननके लिअ या मेरे अपुरसे घूलको हटाएके लिअ जितनी बुद्धिकी जरूरत है अतनी सबको मिली हुआ है। फिर चाहे बच्चा हो या बुढ़ा पढ़ा लिखा हो या बपड़ा अगुली हो या 'हरी' ही झूठ बोलनके लिअ और सत्यको असत्यका रूप देनेके लिअ लोमोको मूटन और लोमोका बिनाश करनके लिअ आधिकारोको सोचनेके लिअ धास बुद्धिकी जरूरत होती है। यह किसीसे छिपा हुआ नहीं है कि छोट बच्चे अपनी मांके सामन जब किसी नगडका फमला करानके लिअ पहुँचते है तो बकीलोकी जरूरत नहीं होती लेकिन जब अरु डाकू यह साबिन करना चाहता है कि उसन आका डालकर भी डाका नहीं डाला तब

वह हीशियारसे हीशियार बकीलको अपन साथ लेकर अदालनके सामन पहुँचना है।

सत्यका कहना है कि झूठ बोलनम वद्धिपर जितना जोर पडता है अतना स य बोलनमें नहीं। झठ बोलनमें बोलनवालेको डर लगता है दुख होता है। मच बोलनमें आदमी निर्भीक रहता है और आनन्द मानता है।

सत्यका कहना है यह किमको मालूम नहीं कि आदमीकी परछाअी कअी वारणोमे कभी कभी आदमीसे कअी गुना लवी हो जाती है कअी गुना मोटी हो जाती है आत्मी नहीं वाँपना पर परछाअी काँपन लग जाती है आदमी टडा नहीं होता परछाअो टडी हो जाती है। ठीक अिसी तरह बुद्धि मुअ सत्यकी परछाअी है पर धमगाएकी बकीलोकी तरह मिध्या विश्वासीको मिद्ध करनके निअ अूनको मुअस लवी चीडी भारी मोटी साबिन बना देता है।

सत्यका कहना है आदमीके जीवनका अुद्ध्य आत्मीके साथ आया है। अुमे बाहर बूदनकी वहाँ जरूरत है ? अुसके जीवनका अुद्ध्य अिसके सिवा क्या हो सकता है कि वह अपनको पहचान और अपनको पहचानना अुमके लिअ मुश्किल नहीं हो सकता न हाना चाहिअ और न है। आदमीको किनी अडे कामके लिअ पदा होनका कोअी मनत्र ही नटी जिमे वह आमानीसे अपन जीवनमें न कर मके। अगर आदमीसे कोअी काम नहीं हो पाता तो वह अुमके लिअ पदा ही नहीं हुआ। आदमी खुद जो मशीन तयार करता है वह अुस कामको आसानीसे कर लेनी है जिसके लिअ बनी है। अगर किसी कामके करनमें मुश्किल हो तो यही समझना चाहिअ कि मशीनको वह काम दिया गया है जिसक लिअ वह नहीं बनी है। प्रहृतिका बना हुआ आत्मी कभी अँमा नहीं हो सकता कि वह अपनको आमानीसे पहचान न सके क्योंकि वह अिसी कामके लिअ पदा हुआ है।

सत्यका कहना है कि कम बद्धिवालोको बिअकुल नहीं धवराना चाहिअ सय अुहाको ममत्रमें आअगा पर अक शत है कि अूनको अपनी बुद्धिपरने मिध्या विश्वास और अ धविश्यामयी चर्चा निकाल फरनी होगी।

गुजरातके लोकप्रिय कहानीकार पन्नालाल पटेल

: श्री गौरीशंकर जोशी :

कलाकार होना केवल पढ़े-लिखे सिविलियन लोग और डिग्रीधारियोंकी ही बचीती नहीं, यह चुनौती देनेवाले गुजरातके कहानीकार श्री पन्नालाल पटेल आज गुजराती साहित्यमें तरुण पीढ़ीके सर्वश्रेष्ठ कहानीकार माने जाते हैं। आधुनिक युगमें, जब कि सहरो तथा कथित सभ्य, सस्कृतिका बोल बाला है, यह सचमुच बड़े आश्चर्यकी बात मानी जायेगी कि अंक मामूली अपठ जैसे परिवारमें पैदा होनेवाला, जिसे ठीकसे पूरी-पूरी शिक्षा-दीक्षा भी न मिली हो, और सहरी समाजसे दूर देहातके किसी अकेलान कोनेमें बैठकर मरस्वतीकी आराधना करनेवाला व्यक्ति अपने जीवनके १०-१२ वर्षके अल्प सृजन-कालमें ही कभी कितना बड़ा कलाकार सिद्ध होगा।

श्री पन्नालाल पटेलका जन्म ७ मर्षी, १९१२ को गुजरातकी पूर्व सरहदपर बसे हुये डूंगरपुर राज्यके अंक छोटेसे देहात माडलीमें आजणा नामक पाटीदार (गुजरातकी अंक विद्यान जाति)के अंक गरीब परिवारमें हुआ। स्कूली शिक्षाके नामपर अिन गुडडीके लालकी केवल चार वर्षया तक पढ़ाओ हुओ। लेकिन प्रतिभाके अिस धनीकी अपने छोटेसे विद्यार्थी-जीवनमें भी तीन रणया प्रतिमास बजीका मिलता या। नियतिका चक्र बढोर होना है। पायद असे यही अिष्ट लया हो। आधिक कठिनाअियोंके कारण आपको विद्यन होकर अयना पठना-लिखना यही समाप्त कर देना पडा। कहा जाता है कि कितना भी ये जयगकरणन्द नामक अंक माधुके प्रोत्साहनसे पठ सके।

आपका अिसोर जीवन अने नहूँ और कमजोर बन्धोर अमयमें ही आ पडी पारिवारिक अिम्मे-दारियोंके बाधकी डोने और पेटकी आग बुझानेकी अिन्नामें दर-दर मटकनेमें बीता। नौकरी-पधेके लिये आपको बासी कमकच करनी पडी। आपकी कहां-

कहां और अिन-अिन जगहोंपर काम करना पडा, यह कहनेके बजाय यह कहना अधिक अुपयुक्त होगा कि आपने कहां नहीं काम किया। घराबकी मट्टीसे लेकर सनवालेके गोशाम, पानीकी टकी, अिलेक्ट्रिक बम्पनीके ऑश्रोल पेन आदिके रूपमें अिन-अिन स्थानोंपर नौकरो करनेसे जीवनके विविध पहलुओंकी निरकटसे देखने और अनुभव प्राप्त करनेका आपको मौका मिला। अमजीवी, किलान और मजदूरोंके समाजके बीच रहकर आपने अुनके सुख-दुखकी समझनेकी सूक्ष्म दृष्टि पायी। आपकी बापी मेहनतकशो और मजदूरोंकी बापी कहीं जायेगी। आपकी सारी कृतियोंमें अिन्हींकी आवाज प्रधान है।

सन् १९४० में आपकी सर्वप्रथम कृतिके रूपमें 'बलाभया' नामक कहानी प्रकाशित हुओ। अुसमें प्रयोग की गयी आनीण लोक-बोलीकी साकन, देहाती समाजका चित्रण और सजीव पात्रोंकी मृष्टि देखकर गुजरातके राष्ट्रीय कवि स्व. अवेरचन्द अेघापीने अिस पुस्तककी बारवार प्रशंसा की थी। बादमें आप धीरे-धीरे अुत्तरोत्तर अिस ओर प्रगति करते गये और अिन पिछले दस-बारह वर्षोंमें गुजरातके साहित्यके चरणोंमें लगानग अंक दर्जनसे अधिक पुस्तकें सर्मायत की हैं। अुपन्यासोंमें 'मलेशा जीव', 'नीरघापो-भाग १, २', 'वीवन-भाग १, २', 'मुठम' और 'मानवीनी नवाओ' तथा 'सुख-दु-खना सापी', 'अिन्दगीना सेरु', 'अिवो दाड', 'पानेतरना रग', 'लख चौरावी', 'अजब मानवी', 'पाछे बारने', 'साबा अमगा' आदि कहानो-संग्रह हैं। अिनमें 'मानवीनी नवाओ' और 'मलेशा जीव' तो आनेके सर्वश्रेष्ठ अुपन्यास कहे जा सकते हैं, जो अिस्वकी अिनी भी आगाके अुपन्यासमें टक्कर ले सकते हैं। 'मानवीनी नवाओ' में आनीण समाजका हूबहू चित्रण और जगह जगह अुनुओंके सजीव

परम भरे पड़े हैं। सामान्य विद्या-परिवारकी कहानीको लेकर और समय समाजकी पृष्ठभूमिमें रखकर लिखने प्रियमें जो वातावरण लड़ा किया है, वह अके कुशल कलाकारका ही काम ही बनता है। हमारे साहित्यमें स्व. श्री चन्द्रबाबुने नारीकी जो गोम्ब-गमिमा प्रदान की, वह विश्व साहित्यमें कबिपुं ही और कहीं मिलेगी। श्री पन्नालाल पटेलकी दीदीपर श्री चन्द्र बाबुका बरही अस्तर सादृश्य होता है। आपके युग्मवासोके नारी-पान रामु और जीवी चन्द्र बाबुकी बलवा, गार, रामलतामी, भंरवा और अन्नदागी किमी भी रूपमें कम नहीं मादृम होते।

'बलापणा' और 'मल्लिका जीव' में ग्राम जीवनकी रूपमें कर्तव्याकी कहानियाँ हैं। 'बलापणा' में लिखने भाषिका ढांग बड़ी कुशलतासे विस्फुट नैगमिक प्रेमका चित्रण किया है। 'मल्लिका जीव' में भिन्न-भिन्न युवक-युवतियाँके बीच हुये प्रेमकी माया है। लगभग समान रचनाओंमें खुदास भावनावाले प्रेम-प्रसंग और नौबंके कुदरती गौरवके बीच पात्रोंको लड़ा करनेकी कला लेखक द्वारा इतनगत की हुई। मादृम हीनी है। देहापी समाजकी विचार-गुंठ और अनेक जीवन-प्रवाहकी पचावर विविध प्रसंगों द्वारा वातावरणको लगामे और अने प्राणवान बनाकर अपनी कहानीको अदृश देनेकी कलाका प्राणमें सुख विकास हुआ है। अिगलिये आपकी कहानियाँ देवतिकाकी दृष्टिसे बड़ी लोकप्रिय हुईं और थोड़े ही समयमें अुद्भूत गुजरती साहित्यमें दीर्घ-स्थान पा लिया। अिगका अंक मज्जेदार परिणाम यह हुआ कि गुजरानके आलोचक वर्गमें श्री पन्नालाल पटेलकी दिन-ब-दिन बढ़ती हुई लोकप्रियता और प्रगिधिसे कारण अंक प्रकाशक कुदुश्ल जाग अडा और वे अुनके अकितमल जीवनके बारेमें जाननेके लिये अुत्सुक हुये। अिग सम्बन्धमें गुजरानके कवि श्री. अुमानकर जीकी अंक अकका अुदुष्ण देना अधिक दिलचस्प होगा, जो अुद्भूतने स्व. मेपाणीकी लिखा था—

"जब पन्नालाल पटेल जैसे लेखक पैदा होते हैं, तब हमें अिगके प्रति जो आकर्षण पैदा होता है, वह अुनकी कृतियोंके कारण ही होता है। ऐकिस रूप अिग

बातको अामापीने भूल जाते हैं और अिन कृतियोंकी अवेकपा अुनके अकवितगत जीवनमें ही अधिक रग लेते लगते हैं।

'हमारे पन्नालालकी ही बात लें तो अुनके अपने आगतके जीवनमें जो घटनायें घटीं वे कभी कहानीके रूपमें परिणत होंगी, अंता प्रापर ही किमीको महसूस हुआ होगा। 'वेअिअे, अंता अण्ड, दबा पिमा, गारकार-हीत अकित केमी बरिपया अीअे कहानियोंके रूपमें हमें देता है।' यह कहकर अकलकारअिय लीयोंका अ्यान लीअनेका लोअ छोडकर मेरा अग अडे, तो मे यह लोअने और तमअनेकी कोअिन कलंगा कि अितना तब हुनेके बावअुब अिय अकितने अरने हूअकको कब गंवार-गपअर अनाया, अनेने जीवनको अित प्रकार गलकार अिये? जो पन्नालाल केवल मजदूरी करना जानता है, अुन कले-अरमेंते यह 'पन्नालाल पटेल' अित तरह पैदा हुआ? मैं अगनी बात कहूँ तो मेरे अिअे मानवीय सम्बन्धकी दृष्टिसे 'पन्नालाल' नामक अकितकी अीअत दीअतपीअरके अाटकोंअि कोअी कम न होगी, अिर भी कलाकार पन्नालाल पटेल' की बात करते हुये तो अुमे अिय 'पन्नालाल' नामके अकितकी जीवन सम्बन्धी अगाधारण जल्दी और रगअुल्ले अाने ही करनेका आरिअे। ..."

'अिनता है अि यह बात पन्नालाल पटेल अंतेके अुदाहरणमें अहून तारक रूपमें सामने आनी हैं। बाकी अुमे तो करीअन यह नमी लेखकोंके बारेमें तब हीना सम्भव लगता है। अत्येक कलाकार अिनी प्रकार अंतके आरके अीअे ही अककर काल करना हीना है।"

यह मयोपगवी अान ही कहिये अि श्री पन्नालाल पटेलकी अकपने ही गुजरानके लक्षअनिअठ साहित्यिक श्री अुमानकर जीकीका अनेह और गगन मिला। अंक लक्ष्य यह भी कह सकने हैं अि श्री जीवीजीने ही अपनी सुकम दृष्टिसे श्री पन्नालाल पटेलमें गुन पदी हुई अिगमंदअन गीअरव-दृष्टिको अुड अिकाला और अुने समय-अमकार अकित अीअगाहन तथा प्रेरणा देकर अिक-अित अिया। अि अनेह अंक मामुडी मजदूरकी गणक कहानीकार बननेमें श्री अुमानकरकी जीवीका बड़ा हाथ माला आअेगा।

मानवताकी अप्रामाणा जिस साहित्यकारका मुख्य ध्येय है। महाभारत आपका प्रिय प्रथम है। अपुन्यास-लेखन प्रिय विषय है। ग्राम-जीवनका स्वाभाविक चित्रण आपकी मुख्य विशेषता है। समाजके शोषित और पीडित वर्गके प्रति आपको गहरी सहानुभूति है। और अपने अपुन्यास तथा कहानियोंमें आपने अुन्हीकी आवाज बुलन्द की है।

पिछले वर्ष गुजरात साहित्य सभाकी ओरसे "रणजित राय सुवर्ण चन्द्रक" नामक सुवर्ण पदक देकर गुजरातने आपका योग्य सम्मान किया। अुक्त अवसर-पर गुजरातीके लघुप्रतिष्ठ लेखक श्री किशानसिंह चावडाने आपके बारेमें मराठी 'नवभारत' मासिकके संपादकके नाम अपने पत्रमें निम्नलिखित अुद्गार प्रकट किये थे .

"गुजराती साहित्यमें 'रणजितराय सुवर्ण चन्द्रक' का बड़ा महत्त्व है। जिसलिअे जिस किमीको वह मिलता है, अुसके बारेमें सहज ही कुछ जाननेकी अिच्छा पैदा होती है। जिस वर्ष यह पदक गुजरातके लोकप्रिय लेखक श्री पन्नालाल पटेलको दिया गया है। गुजराती साहित्यमें अुनका नाम केवल परिचित ही नहीं है, बल्कि वह बहु-जन-प्रिय भी बन गया है। गुजरात और राजस्थानका सरहद्दी गाँव 'माडली' अुनका जन्मस्थान है। श्री अुमाचंकर जोशीके शब्दोंमें कहे, तो 'माडली' सही रूपमें विद्युद्ध देहात है। जिस बारेमें गलती नहीं हो सकती। यही अुचित अिम तरह भी कही जा सकती है कि श्री पन्नालाल चातकमें कथाकार है, जिस बारेमें भी किसी प्रकारकी गलती नहीं हो सकती।

"'मछेला जीव' और 'मानवीनी भवात्री' अुनके प्रसिद्ध प्रथम हैं। ये अपुन्यास जब प्रकाशित हुअे तो अंसा एगा कि गुजराती साहित्यके बानावरणमें पहली वर्षासे फँलनेवाली सुगन्ध यहाँ-वहाँ फँल गयी। अुनके अपुन्यास और कहानियोंमें विशेष सूखी मालूम होनी है। अुनमें धरतीका तेज, वीर्य और मानवता भरपूर मात्रामें पायी जाती है। श्री पन्नालालके साहित्य-वर्षमें पदापंग करनेमें पूर्व प्राचीण बोरीकी दाकिन और अुमकी तेज-रिचतके प्रति लोगोंमें अुपेक्षा भाव था। लेकिन श्री

पन्नालालने अुसका जिस कलात्मक ढंगसे अपुयोग किया कि अुसमें अेक वलिष्ठ बौलीका जन्म हुआ है। X X X अिन सब कृतियोंमें सृजन-शीलताकी कुछ बँसी स्वाभाविक सुन्दरता है कि पाठकके अतःकरणमें मनुष्यके लिअे करुणा पैदा होती है।

गुजरातीके अपुन्यास-लेखकोंमें 'सरस्वतीचन्द्र' के लेखक श्री गोवर्धनराम त्रिपाठीके बाद 'गुजरातके नाथ' के लेखक श्री कन्हैयालाल मुदीका नाम आता है। और अुसके बाद नि सकोच रूपसे 'भारेला अग्नि' के लेखक श्री रमणलाल वसन्तलाल देसाओका नाम दिया जा सकता है। अिमी प्रकार श्री रमणलाल देसाओके बाद अत्र किसका नाम लिया जाअे यह हमें नहीं सूझ रहा था। लेकिन आज जिसके लिअे गुजरातके पास श्री पन्नालाल पटेलका नाम है।"

दरअसल श्री पन्नालाल पटेल आजन्म कहानीकार है। गुजरातकी पाठीदार, गरसिया, वाळद आदि जातियोंके रीति-रिवाज, रहन-महन तथा अुनकी भाषाकी खूबियोंका आपको बड़ा अच्छा अध्ययन है। कथाका सूत्र, टंकनीककी पकड, मुघटित सबलन, अुसका विकास और अन्त सारी वाने बडे सहज ढंगसे साधकर अपनी प्रतिभाके बलपर आप अुसमें कुछ अंसा सोन्दर्य भर देते हैं कि सारी वस्तु नवमें दिअ तब सपूर्ण मालूम होती है। श्री पन्नालाल पटेलकी मृजन-शक्ति, सवेदन-शक्ति और सोन्दर्य-दृष्टि अितनी ध्यापक और विशाल है कि लिखत अखिरमें सूखे अुदुन सम्भव है, गुजराती साहित्यके अितिहासमें सर्वश्रेष्ठ अपुन्यासकार सिद्ध हो।

कहते हैं श्री पटेल अभी-अभी लम्बी बीमारीसे अुठे हैं। अब भी वे बडे कमजोर हैं। फिर भी अपने धके-मदि शरीरको लेकर ज्योन्दयो गाडी चला रहे हैं। गुजराती समाजसे, जो अपनी दानवीरताके लिअे देश-विदेशमें मशहूर है, हमारा निवेदन है कि वह अपने अिम लाडले लेखकको आर्थिक अिन्ताओंके बोझमें मुक्त करने लखे आरामकी सुविधा कर दे और प्रभुमें हमारी प्रार्थना है कि वह अुन्हे जन्दीसे-जन्दी स्वस्थ और सबल बनाकर मरम्बनीकी सेवामें लगा दे।

मध्यभारतके पुरस्कृत कुछ प्रमुख साहित्यकार

प्रो रामचरण महेन्द्र, अम अे

अत्यन्त हृषका विषय है कि सरकार अपने अपने प्रांतके प्रमुख साहित्यकारोंको प्रतिवर्ष पुरस्कृत करती है। कवि तथा साहित्यकार जैसा आश्रय चाहता है उससे सहारे वह आर्थिक चिन्ता मुक्त हो निरंतर साहित्यिक साहित्य मजत करता रहे। जनताको सरकार यदि युगके प्रहरी साहित्यकारोंको प्रोत्साहन प्रकषण न देगी तो कौन देगा। जिस ओर प्रगति हो रही है वह देखकर सतोष होता है।

मध्यभारत गणतन्त्र अपनी साहित्य तथा कलाओंकी अनेकमी मध्य भारत-राज्यपरिषद की ओरसे साहित्य जगतके व्योमूढ तथा प्रतिष्ठित विद्वान् निर्वाचकोंके निणयानुसार ३६०५ रुपयेका पुरस्कार मध्यभारतके सर्वश्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द हरिकृष्ण प्रमी दुर्गाकर नागर महेन्द्र भटनागर विश्वामित्र वर्मा नटवर लाजसन्तो आनन्द निधु गकरराव जोशी श्यामसुन्दर व्यास कमलाकाल पाठक विष्णुप्रसाद व्यास स्वरूप कुमार गंगधर रामचन्द्र श्रीवास्तव तथा जानकीप्रसाद पुरोहितको मिला है। ये सभी साहित्यकार वधाओंके पात्र हैं। अन्तम कुछपर यहाँ विस्तारसे चर्चा प्रस्तुत की जा रही है जिससे अिनके द्वाराकी हुओं साहित्यसेवापर प्रकाश पड सके।

श्री जगन्नाथप्रसाद "मिलिन्द"

मध्यभारतके साहित्यकारोंमें मिलिन्द जीका स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मिलिन्द जी प्रान्तके सबसे पुराने बहुमुखी साहित्यकार हैं। मिलिन्द जी अनुभूति प्रधान प्रतिभाशाली कवि और कुशल नाटककार हैं। आपके आठ ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं—१ जीवन समीप २ नवयुगके गान, ३ बलिपथके गीत ४ भूमि की अनुभूति अत्यादि काव्य संग्रह तथा सामाजिक नाटक समपण अतिहासिक नाटक प्रताप प्रतिभा और गीतमानद चिन्तनकण नियम संग्रह प्रकाशित हैं।

चुके हैं। जिस बार आपको 'भूमि की अनुभूति' और गीतमानद पर तीसरी बार मध्यभारतके साहित्यकारोंमें सर्वप्रथम स्वीकार किया गया है।

मिलिन्द जीका जन्म कानि की पूर्णिया सन् १९६४ वि को हुआ मुरार हाओस्कूलमें प्रारम्भिक शिक्षण राष्ट्रीय विद्यालय अकोशाम मद्रिक तक मिल्क महाराष्ट्र विद्यापीठ पुनामें मद्रिक बुझके बाद साहित्य और समाज विज्ञानकी बुद्ध विद्या काशी विद्यापीठ बनारसके राष्ट्रीय कालेजमें हुआ। आपको हिन्दी संस्कृत और अंग्रेजीके अतिरिक्त मराठी ब्रह्म बंगला और गुजराती भाषाका अच्छा ज्ञान है।

'मिलिन्द जीका प्रताप प्रतिभा अमर नाटक है। हिंदीका प्रथम विद्यार्थी जिस कृतिमें भली भाँति परिचित है। पठकर या अभिनय किसी न किमी रूपमें इससे परिचय प्राप्त किया है। जिस नाटकसे ही नाटककारोंकी बुद्धनम पवित्र आपकी आसन मित्र गया था। तदुपरांत विचार और कला दोनोंका पर्याप्त विकास हुआ है। 'समपण का अोज और भाषा सोप्यव दानीय है। नवीनतम नाटक गीतमानद बहुत हृदयस्पर्शी है। अभिनयकी दृष्टिसे भी बुद्धकृष्ट है। प्रगतिशीलता अब कलात्मकता दोनोंका पूरा सामंजस्य जिस नाटकमें हो गया है।

काव्यके सपत्न मिलिन्द जीका स्थान सर्वप्रथम है। 'भूमि की कविताकी वेदना और भावना केवल मनकी छुनीही नहीं, अस्म अक आलोचन भी बुद्धन करती हैं। अन्तमें आशका वह स्वर और चिन्तन भी है जिसमें अक थच्छ सुखी और समृद्ध मानव समाजकी आशा है, अक सम्यक् साधनाकी छाप और मानवीय वेदनाकी अक कसब है। मध्यभारत गणतन्त्रे विद्या विभाग द्वारा नियुक्त साहित्य मनीषिवाकी समिन्तन आपने काव्य संग्रह बलिपथके गीत को १०००) के प्रथम पुरस्कारके योग्य ठहराया था। अन्तर प्रदेश आपके

“समर्पण” तथा ‘बलिपथके गीत’ पर ८००) रु का पुरस्कार मिला था, जो मध्यभारतके साहित्यकारोंमें सर्वाधिक था। ‘भूमिकी अनुभूति’ और ‘गीतमानन्द’ पर सन् १९५३ में ७००) का प्रथम पुरस्कार आपको प्राप्त हुआ है। मिलिन्दजीको हार्दिक बधाओ।

श्री हरिकृष्ण “प्रेमी”

कवि अथ नाटककार “प्रेमी” जीने काव्य तथा नाटक दोनों ही क्षेत्रोंमें अच्छी ही रूपाति अर्जित की है। काव्य-क्षेत्रमें आपकी “आँखोंमें”, “जादूगरनी”, “अनन्तके पथपर” “रूप-दर्शन”, “वन्दनाके बोल” अत्यादि काव्य-समूह प्रकाशित होकर सर्वत्र प्रसिद्ध हुए हैं। प्रेमीजीकी कवितामें विभिन्न धाराएँ हैं—१ राष्ट्रीय क्रान्ति, २ गांधीवादी दर्शन, ३ वेदना मिश्रित प्रेम संगीत, ४ आध्यात्मिक आदर्शवाद। रोमांटिक कविताओंमें आपकी “आँखोंमें”, “जादूगरनी” और “रूपदर्शन” बहुत मर्मस्पर्शी हैं। “अनन्तके पथपर” दार्शनिक विचार प्रधान खण्डकाव्य है। जिसमें प्रेमीजीने आत्माको अंक स्त्रीका रूप दिया है, जो अपने प्रियतमको नहीं जानता, उसके हृदयमें प्रेमको वेदना अत्यन्त होती है, वह परमेश्वरको ढूँढती है, पर सर्वत्र भटकनेके अपरागत वह उसे अपने हृदयमें ही मिलता है। अद्वैतके सिद्धान्तपर जिसकी समाप्ति होती है। “प्रतिमा” और “अग्निगान” आपके पुस्तक काव्य-समूह हैं। “प्रतिमा” में प्रेमजन्य अनुभूतियाँ हैं। ‘रूपदर्शन’ में सौंदर्य, प्रेम, और जीवनके विविध चित्र खींचे गये हैं। हिन्दीके गीत और अद्भूत गजल दोनोंको सम्मिश्रित कर “प्रेमी” जीने अंक नयी चीज हिन्दीको दी है।

नाटकके क्षेत्रमें ‘प्रेमी’ जीके १—“विपयान” २—“रक्षावधन”, ३—“शिवासाधना”, ४—“प्रतिशोध” ५—“आहुति”, ६—“स्वप्नभग”, ७—“मित्र”, ८—“अद्भार”, ९—“शपथ” अत्यादि अत्युत्कृष्ट नाटक प्रकाशित हो चुके हैं। ये अतिहासिक, राष्ट्रीय और सामाजिक तीनों प्रकारके हैं। ‘विपयान’ में सामन्तवादकी त्रुटियाँ, स्वार्थीघटा तथा अकृताके नष्ट होनेसे अत्यन्त कमजोरियोंका चित्रण है, तो ‘रक्षावधन’ में हिन्दू-मुस्लिम अकृता, व्यक्तिगत स्वार्थी अथ अठकट देग और राष्ट्रके हितके लिये स्वार्थीप्राय करनेका चित्रण हुआ है। “शिवासाधना” में

शिवाजीकी राष्ट्र-भावनाका चित्रण है। “प्रतिशोध” में छत्रमालका राष्ट्रवाद, ‘आहुति’ में धार्मिक अकृता, ‘स्वप्नभग’ में आदर्श पुरुषके रूपमें दाराका चित्रण हुआ है। ‘मित्र’ में मित्रका आदर्श व्युत्पन्न हुआ है। ‘अद्भार’ में राष्ट्रीय विचारधाराकी अभिव्यक्ति है। ‘शपथ’ में प्रजातन्त्रके पक्ष तथा राजतन्त्रके विरुद्ध बड़ा सुन्दर विवेचन हुआ है। अभिनयकी दृष्टिसे ये नाटक सफल रहे हैं।

‘प्रेमी’ जी मध्यभारतके पुराने साहित्यकार हैं। सम्पादनके क्षेत्रमें भी आपकी सेवाएँ इलायनीय हैं। ‘त्यागभूमि’ का १९२७ से ३० तक, ‘कर्मवीर’ का १९३०-३१ तक, “भारती लाहौर” का १९३२ से १९३३ तक और “रेखा” का १९३५-३७ तक सम्पादन किया है। ‘रूपदर्शन’ पर यू पी से पुरस्कार मिला था। अब “वन्दनाके बोल”, “बादलोंके पार” (अंकाकी) तथा “शपथ” नाटकपर ५५०) रु० का पुरस्कार आपको प्रदान किया गया है। “प्रेमी” जीकी जीवन भरकी साहित्य साधनाको देखते हुये यह राशि स्वल्प है।

डॉ. दुर्गाशंकरजी नागर

योग, आध्यात्म तथा मनोविज्ञानके क्षेत्रोंमें कार्य करनेवाले सुप्रसिद्ध आध्यात्म वेत्ता मानस चिकित्सक तथा अज्ज्ञान-निवासी “कल्पवृक्ष” के सम्पादन स्व० डाक्टर दुर्गाशंकरजी नागर आध्यात्मिक साहित्यके निर्माण तथा क्रियात्मक कार्य कर प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। ३० वर्ष तक आप आध्यात्म विद्याके मासिक-त्रय ‘कल्पवृक्ष’ का सम्पादन करते रहे। दुर्भाग्यसे नागरजी अब हमारे बीचमें नहीं हैं, किन्तु अज्ञाने जो रोगोपचार, आध्यात्म जीवनका प्रसार, प्रचार तथा साहित्य सृजन किया है, वह दीर्घकाल तक हमें प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। १—“प्राण चिकित्सा”, २—“प्राथमिक-कल्पवृक्ष”, ३—“आध्यात्म चिकित्सा-वृद्धति”, ४—“स्वर्ण-सूत्र”, ५—“विद्यालय जीवन” आदि पुस्तके नागरजीकी स्वार्थी कृतियाँ हैं। इनके अनिरीकृत मानसिक आध्यात्मिक अनुभवकी दृष्टिसे किय गये आपके भाषण बड़े ओजस्वी ोत थे। नागरजीके सम्पादकीय लेखोंका अंक समूह ‘विद्यालय जीवन’ नामसे प्रकाशित हुआ है। स्व०

नागरजीको अूनकी पुस्तक स्वर्ण सूत्र पर २५०) ह० का पुस्कार प्राप्त हुआ है। भय चिन्ता बलेग निरुसाह आदि मनाविकारोको दूर करन तथा जीवन् पयपर अुत्साहसे अग्रसर करनकी दृष्टिसे यह पुस्तक अमृतपत्र है। जिसमें सत नागरक विचारका निच-या गया है।

श्री महेन्द्र भटनागर, अेम. अे

कवि तथा कहानीकार पार निवासी महेन्द्र भटनागर अम अ काव्य जगतमें अपन प्रगतिगोल दृष्टि कोण तथा यथार्थवादी चित्रणकी दृष्टिसे नवयुवक कवियोंकी पीढीमें प्रसिद्धि पा रहे हू। १-साराके गीत २-टूटती शृङ्खलाअें ३-बदलता-युग तीनों काव्य-समूह जनवादी प्रगतिगोल चेतनाको मुखरित करते ह। शोषक वर्गके प्रति अूनके हृदयम धना है। गोपित सपाज तथा पूजीवादी वर्गके सधपके अनय सजीव चित्र अुद्धान अुपस्थित किय ह जिनमें शोषणके प्रति घृणा और अकता अर साम्यवादके प्रति कवि स्पष्ट मिलती है। हिमा अुन्पीडन पदरलित श्रमिक कृषक अदिकी भावनाअें आपन अूची की ह। आपकी कविताअ मानव मात्रको अर ही घरातरपर खडा करके प्यार करना सिखाती ह। भटनागरजी देग-वापी राजनतिक अुधर पुधलमे प्रभावित हुअ बिना नहीं रह सके ह और राजनतिक घटनाओपर भी आपन पर्याप्त लिखा है।

बदलता युग म भटनागरजीन भारतीय जीवन समाज और मानवम युग परिवतनके कारण अानवाले परिवतनोको अक जागरूक अ्टाक रूपमें देला है। जिस सकारितकालमें अिन भावनाओको मृत किया गया है अुसकी महत्वपूर्ण घटनाओका श्रमिक सविपत् अितिहास भी अुपलब्ध हो जाता है। यह बहु साहित्य है जो अ्यक्तित्वो जीण सकारा और राष्ट्रको अय दास्यम मुक्त देचना चाहता है। देगकी राजनीति अर समाजमें जो परिवतन हुअ ह अुनका प्रतिबिम्ब अिन कविताओपर स्पष्ट है। जिसमें काव्यक नवीन प्रयोग भी ह जो हृदयकी सामानक प्रवृत्तिसे परिपूर्ण ह। जनवादी विचारधाराको स्पष्ट करनके लिअ कविन नवीन प्रतीक, अमिध्यजनाअें छ- और अठकारोका प्रचुर प्रयोग किया है। टूटती शृङ्खलाअ में प्रयोग वादी छणकी भी कुछ कविताअ ह।

श्री भटनागरजीको अूनकी लडखडाले वन्म पुस्तकपर पुरस्कार घोषित हुआ है। जिसमें अूनकी

यथार्थवादी कहानिवाका सयह है। विचारोम अुद्यता और नास्तिका स्वर अिनम प्रकट हो गया है।

श्री विरामित्र वर्मा

अुज्जनके आ विश्वामित्र वर्माकी वकी पुस्तक प्रशागित हो चुकी ह। १-प्राकृतिक क्वि-सा विनान २-प्राकृतिक स्वास्थ्य साधन ३-जीवनके दि द साधन ४-दिव्य सम्पत्ति आि विशय मुदर वन पनी ह। वर्माजी मननगोल विद्वान ह। योग आध्यत्म तथा व्यवहारिक मनोविनानके अचाय ह। अजकल आप काव्यक मामिकके सहायक सम्पादकके रूपम भी काय कर रहे ह। वर्माजीका सम्पूर्ण साहित्य दो भागाम विभाजित किया जा सकना है १-स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक जीवन सम्बन्धी साहित्य — जिस वर्गम वर्माजी प्राप्तम सब अष्ट विचारक मान गय ह और आपका योगिक स्वास्थ्य साधन पुस्तकपर पुरस्कार घोषित किया गया है। दूसरे वर्गमें वर्माजीको आध्यात्म मनोविज्ञान दिव्यमान सम्बन्धी दान प्रय ह। यह अडा ठोस और प्ररणात्मक साहित्य है। जिस वर्गम १-जीवनके दिव्य साधन २-तथा दिव्य सम्पत्ति पुस्तके दुलो अके अुलजनम वमें आतनिरास अ्यक्तियोके लिअ जाडू जना प्रभाव टाटनी ह। वर्माजीकी दिव्य सम्पत्ति पुस्तक भी पुरस्कृत करन योग्य है। जिसका जिनना प्रचार हो याडा है। जिस अयका सृजनकर वर्माजी अमर हो गय ह।

अिन विद्वानोके अनिरिकन मध्यभारत प्रातके अय विद्वानोकी जिस प्रकार पुरस्कार प्राप्त हुअ ह — श्री नटवरलाल सनहीको नागम और गाधी मानस' पर ३५० ह आनन्दिश ग्वालियर की साधना पर २५० ह श्री गङ्गाशय जोगीको फमलके शानु' पर २०० ह आ दयामुदर व्यासको गिलटके अुमके पर २०० ह आ कमलकाट पाठकको आधुनिक हिंदी काव्य पर २०० ह श्री विष्णुप्रसाद व्यासको अरम निर्माण पर १०१ ह श्री स्वल्पकुमार गागयको रोटियो और गानोका जुलूस पर १०१ ह श्रीरामचद्र श्रीवास्तवको काव्यकी परिभाषा पर १०१ ह तथा श्री जानकीप्रसाद पुरोहितको दामनगीर पर १०१ ह के पुरस्कार प्राप्त हुअ ह। य सभी साहित्यसाधक वर्माजीके पात्र ह।

विचित्र वीन

. श्री "अनाम" :

अंक समयकी बात है। भगवान चिंतामें डूबे थे।
मारे चिंताके बुन्हे नींद नहीं आती थी। रातों जागते,
पर सोच न पाते क्या करे। निदान बुदास रहने लगे।

"लुप्लुप" तारे चमकते, चाँद हँसता रहता पर
भगवानका दुख न भूलता। पृथ्वीपरसे दुख-दरदकी
बराहे झूठा करती और भगवानके कानोंसे टकराती।
पृथ्वीपर हरअंक दूसरेसे लडता। झगडेका शोर बूठता।
वह दूर-दूर तक फैल जाता।

झगडा क्यों होता ? अुसका अितना शोर क्यों
होता ? अुस शोरगुलमे भगवान बुदास क्यों होते ?
भगवान भी न समझ पाते। फिर झगडा होता क्यों ?
क्या बिना कारण झगडा होता था।

बात ही कुछ अँसी थी।

मुत्तेने बिल्लीका पीछा किया। बिल्ली पेड़पर
चढ़ गयी। मुत्तेने सीगन्ध ली। बिल्लीको पेड़से कभी
न अतरने दूंगा। कुछ देर बाद बिल्लीको भूख लगी।
बिल्ली गुराने लगी। पर कुत्ता टम-से-मस न हुआ।
मुत्तेका पेट भरा था। वह बिल्लीको भूख क्या जाने ?

रीछने पहाड़परसे चट्टान लुडका दी। लुडकते-
लुडकते चट्टान घाटीमें आ गिरी। हरिनका बच्चा
चट्टानके नीचे दब गया। रीछने अँसा क्यों किया ?

बबूतरने घोसला बनानेके लिये तिनके जमा
किये। अूनको गोध ले भागा। बबूतर चिल्लाता
रह गया।

हेबाने अपनी शालें नालेके आरपार पसार दीं।
शामें फँलकर जाल बन गयी। जालमें नालेकी सब
मछलियाँ फँस गयीं।

बेचूअने जमीनके अूपर सिर निकाल लिया। वह
अपने सीधेपनके लिये बदनाम था। बदनामी अुसे
अच्छी न लगी। अुमने गिरगिटको ललकारा। मेरे
साथ दोड सकेगा ? होड लग गयो। हार गये तो गिर-
गिट दुःखन हो गया ! बाह-बाह ! !

चूहे-चिडियाँ, मगर-मछली, पेड-पहाडके, घास-
पात सब अंक दूसरेके दुश्मन ! अंक दूसरेसे लडा करते।
जमीनके अन्दर और जमीनके अूपर रहनेवाले सारे जीव-
जन्तु झगडा करते। आदमी भी था और वही
सबमे ज्यादा हो-हल्ला मचाया करता। झगडा-फसाद
खडा करता ! मार-पीट करता। अँसी सफाभीसे अपने
ही भाअियोकी हत्या करता— देखते-देखते बहुतेका
सफाया हो जाता। लाशोंके अवार लग जाते।

अँसी हालतमें भगवानको नींद न आती तो और
क्या होता ? अुमीने सारी दुनिया बनायी। तमाम
जीवधारी बनाये। बेजान चीजें बनायीं पर आज वे
सब तो अंक दूसरेका नाश करनेपर तुले हैं।

"मैं क्या करूँ ?" भगवान बार-बार सोचते;
पर कुछ निरदचय न कर पाते। अन्तमें हवाको बुला
भेजा। हवा दुनियाके हर कोनेमें जा सबती है। अुसे
हर जगहकी खबर रहती है। हवाके सोनेके शोक आ
गये। अुत्तरी हवा, दक्खिणी हवा, पूर्वी हवा, पदिक्की
हवा।

भगवानने कहा— दुनियामें धनधोर अभाव है।
बडा हाहाकार मचा है। अिसे कैसे रोकूँ ? मैंने सबको
खानेकी चीजें दी। पीनेको पानी दिया। गरमीके
लिये सूरज दिया। रोसनी और खुनीके लिये चाँद
दिया। सबको साथी दिये ताकि कोयी अकेला न रह
जाअे। प्रेमसे रहनेके बदले वे लडते हैं। बनाओ क्या
करूँ ?

हवा चुपचाप मुनती रही। आपसमें पीरे-पीरे
अुसने सलाह की। फिर भगवानके वानमें कुछ बहकर
जाने लगी।

भगवानने खुग होकर अुसको धन्यवाद दिया।
फिर दुनियावालोको तुरन्त अंक सन्देश भेजा। सब

गोबरपन पहाडपर जमा ही। हरअंक अपनी बढियासे बढिया भेंट लेगर आवे।

दुनियाके कोने-कोनेसे समाप्त जीवधारि और बेजान चीजे पहाडपर अकट्टी हुअी। पर आदमी न आया। असे बुलाया ही नही या तो कैसे आता? पहाडपर बडा गुल-गपाडा मच गया। किमीको रयाल ही न रहा कि वे भगवानके मेहमान बनकर आवे है। सब चिरला रहे थे रास्ता छोडो "हमें यहाँ क्यों बुलाया गया" सब जुडनेवाले अंक-दूसरेको धक्का देने रहे।

अतनेमें भगवानकी वाणी अनेके जानोंमें परी और सब शांत हो गये। चारो ओर सनाटा छा गया। भगवान कह रहे थे—

"मैंने तुम सबको यहाँ क्यों बुलाया? तुम मुझसे रह सकी अिसवा अुपाय बनानेके क्रिये। मैंने तुम्हे प्रेमसे जीवन बितानेके लिये भिय दिये, अनाज, पानी और वस्त्र दिये। जो तुमने चाहा सब तुम्हे मिला। पर सोचो क्या तुम सुधी हो। क्या तुम्हारा जीवन प्रेमसे वीत रहा है? मैं जानता हूँ। तुम आपसमें लटने हो। अंक दूसरेको नापसन्द करते हो। घृणा करते हो। अिसका मुपे बडा दुख है। मैं वैबैब हूँ। हैरान हूँ। परेशान हूँ।

सब खडे रहे। चुपचाप सुनते रहे। बहनोंके सिर शर्मसे झुक गये। अुस सप्ताडेमें सबने सुना— पेडोसे झरकर कोमल धरतीमें पानीकी बूँदें गमाती जा रही थी—टप् टप् टप्।

चुपचाप-अेकना बाद अंक-मबने अपनी भेंट भगवानके चरणोंमें रख दी।

कुत्तेने पंजा दिया। गी मने पल, बग्गदने शाबोंका गट्टर। गिलहरीने सफेद धब्बोंवाली पूँछ। अिसी तरह सबने कुछ-न-कुछ भेंट दी। जब यह काम पूरा हो चुका तो भगवान बोले—"अब मैं तुम्ह अपनी भेंट पूँगा" और असा कहकर ढेरपरसे अंक तूँवी अडा ली, अुसमें मधुमक्तीके मोमसे अंक टहनी लगा दी। गीघरा पल जोड दिया। वैलके बमडेका ताँत लगा दिया।

अितनी चीजे अुपहारमें मिली सबको जोड जोडकर अंक विचित्र वीन बना डाली। वीनको अिन्द्र अनुपके रगोसे रग दिया।

फिर—?

भगवानने वीनकी छू दिया। वीन इनडना अुठी। भगवानने अुसे बजाया। भगवानकी आवाज हुअी। बागे घारीसे सबने शान्तिका गीत बजाया। गीत गूँजने लगा। गीतके प्रभावमें सब अपना वैर-विरोध भूल गये। वीन बजती रही। गीन गूँजता रहा।

सब हाथोंमें धूसकर वीन फिर भगवानके हाथोंमें आयी। भगवानने कहा, यह शान्तिकी वीन है। अिने सबकी मददने बनाया है। ये तुम्हारे मेल जालका असर है।

अब तुम सब कोशिस करो कि तुम्हारे वैर-विरोधकी आवाज अिस विचित्र वीनके मातिके गीनमें डूब जाअे।

सब चुपचाप सुनते रहे। पर तोनेसे न रहा गया। चोल ही अुठा। सबने झगडाऊ तो आदमी है। हम तो फिर भी लडझगडकर अंक हो जाने हूँ। आदमी तो हमेशा लडता झपटता रहता है। लडना ही अुमका काम ही गया है ..

तोनेकी बात बढती जा रही थी। अुसे आगेसे बाहर देखकर भगवानने हाप अुठाया। शांत होनेका अिसारा किया।

फिर बोले—

मैं जानता हूँ। आदमी अिसी कारण यहाँ नहीं बुलाया गया। शायद तुम अुसे सही रागता बता सकी। पृथ्वीपर अरकर मैंने जैता बनाया बैसा करा। शायद वह तुमसे सबक ले सके।

सबने भगवानकी बात ध्यानसे सुनी। अुसका डीक-डीक मनलव समाप्त पाये। भगवानकी आवाज पाकर सब अपने-अपने रयालको लौट पडे। लडने-झगडते आवे थे। गाते बजाने लौटे। देवना है जानवरोसे आदमी क्या सीखता है।

महिरावण

: श्री 'श्रीरंग' :

[लेखक "श्रीरंग" यह श्रेष्ठ कन्नड नाटककार थी आद्य रणाचार्यका आधुनिक साहित्यिक व्युत्पन्न है । आप लदन विश्वविद्यालयके अम्० अं० हैं । १८ वर्षतक धारवाडके कर्नाटक कालेजमें सस्कृतके प्राध्यापक रहे । आपने कन्नड साहित्यकी साधनके क्षेत्रमें अंकांकी नाटक-लेखक और समालोचकके रूपमें पदापन किया । नार्माजिक कुरोतिगोंपर व्यंग्य कृतनेमें आपकी समता करनेवाले कर्नाटकमें अने गिने ही हैं । फर्दियां कृतनेमें बेमूरवनी होती है, पर श्रीविल्यका भंग नहीं होने पाना । तीसरे व्यंग्योंमें समाजके लिखे भागदर्शनकी ओर संकेत भी रहना है जिसलिखे आपकी रचनाओं लोक प्रिय हुआ है । आपने कन्नड व्युत्पन्न कृतनेमें भी अपना हाथ बढ़ाया है । आपने केवल अंकांकी नाटक ही नहीं लिखे हैं; बल्कि बड़े नाटक तीन अंकोंके नाटक भी लिखे हैं । आपके नाटकमें हृदिजन्यार संघ्याकाश, प्रपंच पाणिपत, जरासंधि, नरकमें नरसिंह आदि प्रसिद्ध नाटक है, तो व्युत्पन्नासोंमें विश्वामिनदी सृष्टि, पुत्रपार्थ, कुमारसंभव, अनादि, अनंत आदि व्युत्पन्न भी मशहूर है । जिसके अनादा आपका गीता-गांभीर्य भगवद्गीतातर आलोचनात्मक प्रप पण्यत स्यानि प्राप्त कर चुका है । भाषाशास्त्रपर भी आपने लिखा है । आपकी प्रतिभा बहुमुखी है । आप कभी साहित्यिक संपादकों और सभा-सम्मेलनोंके अध्यक्ष भी रह चुके हैं । अच्छे बक्ता अथ अभिनेता भी हैं । धारवाडमें अपनी पंचवटीमें निवास करते हुए केवल साहित्य-सेवीका जीवन बिना रहे है । आधुनिक कर्नाटक-युवकोंके बड़े प्यारे है ।

भारतीय साहित्यका प्रतिनिधित्व करनेवाले 'राष्ट्रभारती' के अिन अंकोंमें जो महिरावण अंकांकी प्रस्तुत किया जा रहा है वह ध्या शैलीमें राजनैतिक चुनाव-क्षेत्रको शायी करानेवाला है । अमके पात्रके नामोंमें भी कुछ अर्थ हैं । सरळण-सरलभाजी, चतुरप्प-चतुरजी, गुबज्ज छिपे रस्तम या गुप्तदादा, हुबव्य-बुद्धनाल है । पात्रके नाम भी अमके गुण-दोषोंके परिचायक है जो अिस 'अंकांकी' के पठने विदिन हो जायेंगे :

श्रीरंगजीने अपनी आत्मकहानी भी बिलकुल सशेषमें लिखी है । असे हम तैयार करवा रहे है । वह भी 'राष्ट्रभारती' के कितनी आगामी अंकोंमें पाठकोंके भेंट करे जायेगी ।—संपादक]

(सरळणके धरकी जटागेरके कमरेका अन्त कथ (प्रेक्षकोंके) बायीं ओरकी दीवारकी दो विड-कियोंके बीचमें, दीवारके लकार कुनीं, सामने मेज, अण-पर मनदानाबोही मूचीके बाजु-विषये पटे है । सामनेकी दीवारके बीचमें नीचमें अणपरकी ओर जानेका दरवाजा; सामने अण दिवता है । (प्रेक्षकोंके) दाहिनी ओरकी दीवारके कुछ दूरपर मोसा-कुसियां हैं । मेज ओर दरवाजेके मध्यके बानेपर अंकांकी गल्प है, अणपर नी मशदाताओंकी मूचीके बागजुत करीनेसे रहे हुके है । ऐसके पन्कोपर छोटे छोटे बागजुके टुकड चिरकाये गये है जिनपर लिखा हुआ है—पूर्व, पश्चिम,

दक्षिण, अणतर । कुसियां दाहिनी ओर-रामचके सामनेकी ओर-धरमेंसे अटागेर जानेका मार्ग है । अिम मार्ग ओर कुसियां बीचके कोनेमें दीवारके लकार टेन्जिनोत रखा हुआ है । समुन मुदहके नी बजे है । परदा अणता है । सरळण अकेला रगमचपर है । अमको देखनेसे अंकांका लता है कि मानो वह अनी कुनींपरसे अण खडा हुआ है । मंहर अणता है । कलाओकी धरकी ओर बार बार देखता है । दाहिनी ओर मंश करके अंका अिनिय करता है कि नातां कुण मुन रहा है । अंका मिनटमें अदरकी ओर जानेवाली सीडियोंके बिनारपर सडा होकर नीचे देखते हुके—

“क्या रहा ? हाँ...जरा ठहरो अभी कौआ आया नहीं है” कहकर फिर कुर्सीकी तरफ बढ़ता है। अपनी पड़ी देखता है। बाहरसे आवाज सुनायी पड़ती है, बाहरकी सीढियोंके किनारेतक जाकर, जगलेपर हाथ रख नीचे देखते हुअे—)

सरळण्णा :—कोन ? ...क्या चाहिये आपकी ? ..

सरळण्णाजीका घर ? क्यों ? मे ही हूँ सकट, क्या कहा ? ...आगे बढ़कर पूछिये...हाँ.. वह नीमका पेड़ दीपता है न (धूमकर भीतर कदम रखते हुअे बाहर-बागोंके लिये कुछ रूंची आवाजसे) हाँ, हाँ... (भीतर आते हुअे असास छोडकर मुस्कराहटको लिये खिंखिं मुँहसे) ‘बुनावके लिये खडे हुअे सरळण्णा’ बाह ! बुनावके लिये खडा होना मानो भापेपर पडी निशानीकी तरह पीठपरकी प्रयिकी तरह पहचाननेका चिन्ह जैसा हुआ है ! हूँ। (मेजके पास आकर, अभीतक किसीके न आनेके कारण तनिक निरासा सा या असा-सा भाव प्रकट करनेकी मूल मुद्राले) खर किसीके आ जानेतक जिये जरा जोरसे पठ तो ले (कहकर मेजपरसे कागज झुठके अंतक नाकपर चढाकर अपने आप जोरसे पढने लगता है।) “आपका देस आजाद, आप भी आजाद हैं, आपके खुम्मीदवार भी आजाद हैं। अगर ये तीनों आजाद अंक तरफ मिल जायें, तो तीनसे मुक्ति या तीन तेरह जैसे कहते हैं न वैसे, गरीबी और अवालमे आपको मुनित जरूर मिलेगी। मे भी नागरिक हूँ, आप भी नागरिक हैं, तो आपमें और हममें क्या फर्क है ? कुछ भी नहीं, कहा कि कुछ भी नहीं है।” (अवाक हलकर, धरके भीतर जानेकी ओरकी सीढियोंकी तरफ देखकर) क्या कहा ? कुछ नहीं—कहा ? क्या ? कोन हूँ पूछती हो ? कोआ नहीं है—कह तो दिया। (पर, जिसके पढ़ने लगते ही, ठीक बुनी नमय, अक व्यक्ति बाहरकी सीढियाँ चढ़कर द्वार-पर आ पडा होता है। अत और पीठ होनेके कारण सरळण्णाको दीख नहीं पडा था। जब सरळण्णाने कहा था ‘कौआ नहीं है कह तो दिया’ तब अत व्यक्तिका बन्द मुँह मुस्कराहटसे खिलता है।) (खीजे हुअे खरसे) क्या है वह ? कौआ नहीं हो तो क्या बोलना

न चाहिये ? क्यों ? क्या कही हो कि मेरी पहचान मुझे ही नहीं है, जब अकेला रहूँ तब चुप रहूँ। (दरवाजेके पासका व्यक्ति जब हुआ तो तुरन्त धूमकर) कोन ? (हँसते हुअे) अरी—तुम हो ? (अन्दरकी सीढियोंके पास आकर) अरी, छोड दो, या ही दिलगीके लिये कहा। क्या मुझपर सनक सवार हुआ है—अपने आप बातचीत करनेके लिये ? चदुरप्पा है, यहाँ वह और मे दोना बात कर रहे हैं। क्या कहा ? नन नहीं चाहिये, वह तो दिया कि नहीं चाहिये (कहते हुअे मेजके पास आकर, दायाँ हाथ अतपर रख चदुरप्पाको देखता है।)

चदुरप्पा :—(हँसते हुअे) कुछ नहीं चाहिये कहा न तुमने ? (कहते हुअे अन्दर आता है।)

सरळण्णा —‘चदुरप्पा आया है’ कहते ही पूछा कि चाय बनाओ ? मैंने कहा—नहीं चाहिये।

चदुरप्पा —(अक कुर्सी झुठाकर मेजके पास रखते हुअे) नहीं चाहिये कहा ! बनानेवाजी जब कहती है कि बनाओ तो तुमने क्या कहा कि नहीं चाहिये ?

सरळण्णा —वह मेरा तत्व है, सिद्धान्त है। क्या यह तुम नहीं जानते ?

चदुरप्पा —(बैठकर, सहसा चबिन हो अतकी ओर देखते हुअे) तत्व ? सिद्धान्त ? यानी कल जो तुमने कहा असे दिलगीसे नहीं कहा, क्या तुम कहते हो कि तुमने कल तत्व ही मानकर कहा ?

सरळण्णा —(बायाँ पंर नीचे रख, मेजपर बैठकर) हाँ, चदुरप्पा, मेरा स्वभाव जानते हुअे भी पूछते हो ? क्या तुम अंमा समझते हो कि तुमको चाय देना बन्द करवानेके लिये अंमा किया है मैंने ?

चदुरप्पा —(बडप्पनेके खरमें) पागलोंकी तरह मत बोली। क्या मैंने बंसा कहा ? कल तुमने मुझे भी चाय न रूँगा, कहा। मैंने असे दिलगी समझा।

सरळण्णा —तुमको भी, कहा तो क्या ? किसीको चाय दी तो दी वे समान ही हुआ न ?

घटुरप्पा —भाजी सरळणा, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्रपर सन्निपातके चडनेकी भांनि तुमपर भी खुसने चटना गुरु कर दिया । जैसे मतदाताओंको मोटर नहीं देनी चाहिये, वाहन नहीं देना चाहिये, रिश्वत नहीं देनी चाहिये, कह दिया तो तुम कहते हो कि घरपर खानेवालोंको चाय भी नहीं देनी चाहिये ।

सरळणा —यानी ? रिश्वत माने क्या ? सिर्फ़ नकद रुपया ही रिश्वत नहीं है, केवल अपने मनसे, मुने अच्छा मानकर खुनकी मुससे अपना मत देना चाहिये, खुसके लिखे सूद लानेवाली कोश्री भी बात ही तो वह रिश्वत है । खनी देखो न ? तुम तो मेरे मित्र हो । जिस चुनावमें मेरे लिखे दौड-धूप करते हो । मान लो कि मैंने तुम्हें घरमें चाय-नारता दिया । कल चुनावके दिन तुम विचार करते हो 'सरळणा मेरा मित्र है, जिसलिखे मैंने खुसके लिखे दौड-धूप की । भले आदमीने रोज़ चाय-नारता दिया । जिसलिखे मैंने खुसीको वाट देना अच्छित समया "...जैसे प्रसंगमें, मौकेपर तुम क्या करते हो ?

घटुरप्पा —(माया ठोकरकर) कहता हूँ— कठिन है, कठिन ! अरे, तुमने यह समया है कि मैं तुम्हारे लिखे यो ही दौड धूप करता हूँ तुमको चोट नहीं दूंगा, अगर तुमने चाय-नारता दिया तो खुसके वास्ते तुमको चोट दूंगा ?

सरळणा — क्या न समझूं ?

घटुरप्पा —मैं तुम्हारा दोस्त हूँ । चुनावमें तुम्हारा Agent (अजेंट) मैं हूँ । मुझपर विरवास नहीं है ?

सरळणा —विरवास तो पूरा है । यह तो तुम भी जानते हो कि मेरा विरवास तुमपर पूरा-पूरा है ।

घटुरप्पा :—तो फिर—?

सरळणा —जिसीलिखे दूसरोंको अपना मत देना बिल्कुल आसान है ।

घटुरप्पा —(सटपट झुठकर) क्या कहा ?

● सन् (सदन)-निपात ।

सरळणा —(भागे आकर) बैठो जो, बैठो ! अनुभवमें मैं यह बात कह रहा हूँ । 'मुनपर अतिता विरवास है जिसका, मैं किसीको चोट दूँ तो यह बुरा नमसदा है कि मैंने खुसीको चोट दिया' मतमें यों समझकर किसीको बाट देना आसान है कि नहीं ? ठहरो तुमको जो योग्य जैसे खुन्हींको तुम चोट दोगे तो मुझे आनंद होगा । जिसलिखे मैं कहता हूँ, बीचमें जिस चाय-नारतेका दाकिपप्य नहीं चाहिये । तत्त्व माने तत्त्व, दोस्त !

घटुरप्पा —(घृणाके स्वरमें) भाइयों जाओ तुम्हारा तत्त्व ! कल चुनावके दिन तुम्हारे पड़ोसीके घर कोश्री मर जाओ तो तत्त्व कहकर, तुम मारून होता है कि कच्चा नहीं दोगे । (झुठते हुये) जाने दो, तुम्हारा तत्त्व तुम्हारे लिखे रहे । चुनावकी नाकमें अपने तत्त्वकी सलाखी न धुनेड देना ।...हाँ...जब मैं जाया था तब कुछ पढ़ने थे न ? वह क्या है ?

सरळणा :—वह तो खनी कच्ची प्रति है । तुमने कहा था न कि चोटोंको अक बिनती-पत्र जहाँ-तक हो सके शीघ्र भेजना चाहिये ।

घटुरप्पा :—ठीक है तो । वह सब शीघ्रने शीघ्र समाप्त कर लेना चाहिये । पर अभीतक सुबगशा और हुजग्या जिनमेंसे कोश्री नहीं आया ? (द्वारकी ओर जाता है । अक-दो मिनट बाहर देख, अदर आते यकत शिल्फोंकी ओर ध्यान जाता है । सट विरपर 'दक्खिन' लिखा हुआ है अम शिल्पर रखे हुये कागज-पत्र बूटाकर अवरज भगे मुद्रामें अपना मुँह सरळणाकी ओर धुमाता है ।)

सरळणा —मैंने ही वह सब देख रखा है । जिसपर अघरके, दूसरोंके मिने हुये थे—

घटुरप्पा —चीनसे मिले थे ? अक-अक दिशाके अनुसार मतदाताओंके नाम अकक कर रहे थे, यहाँ अतिने कम कंसे हुये ?

सरळणा —जुसमें कुछ नाम दक्खिनके नहीं थे—

घटुरप्पा —(बीचमें ही) खनी, महाशय, यह सब ध्यवस्था हमारे जिम्मे छोड दो, कहा था न ? कुछ,

अंक बार सबसे मिलकर आना तुम्हारा काम.. (बागज बूटावर देखते हुअे) मनें सब लगाके रखा या— (बडबडाता है) ।

सरळण्णा —(हठसे) खुसमे कधी दक्खिणने नही थे, कहा था न मनें, चदुरप्पा—

चदुरप्पा —(खोजकर) तुमसे किसने कहा ? वे सब दक्खिणने ही थे । (बडबडाते हुअे) सभी कमरमें चढानेवाले ही हैं !

सरळण्णा :- (बिना समझे) कमरमें ?

चदुरप्पा —(घाटसे) वह तो हमारा दिल्लीवा शब्द है । नीचेकी दिशा दक्खिणादिक नीचे कमरकी ओर रहती है—

सरळण्णा —(अपूरकी तरफ) दक्खिणा ? दक्खिणा क्यों कहते हो ?

चदुरप्पा —(नागज होकर) क्यों ? वह संस्कृत शब्द है । संस्कृतमें 'दक्खिणा दिक्' कहते हैं । वही मूर्धमें बँटा है ।

सरळण्णा —हाँ—(घट अंदरकी सीढियोंकी ओर) आया । (चदुरप्पासे) अच्छा—तो तुम्ही देख लो, मैं तो हाथ नहीं लगाऊँगा .. अभी आया (नीचे अतरनेके लिये चलता है ।)

चदुरप्पा —क्यों ? कहाँ चले ?

सरळण्णा —चाय पीकर आता हूँ ।

चदुरप्पा —हाँ, जरा ठहरो । (सरळण्णा रुक जाता है) यह देखो, क्या है । (जबमेंसे सितका निकालकर दिखाता है ।)

सरळण्णा —(अचरजसे) क्या है ? अंक आना है ।

चदुरप्पा —ठीक है न ? अिसे लो । यह मेरा है—यानी मेरा बनाया हुआ नहीं है, मेरा कमाया हुआ है । अिसे लेकर नीचे जाओ, मेरे लिये भी अंक कप चाय लेते आना ।

सरळण्णा —आँ ? (मुँह खोल खडा रहता है।)

चदुरप्पा —आँ करके मुँह खोलकर क्या दिखाने हो ? वैसे पूछोग तो—(असके स्वरकी नकल करने) आँ—(कहकर मुँह खोलके दिखाकर) देखा तो ? मेरी भी जीभ सूखी है...अमीलिये अिसे लो । अंक आना रिद्वन मैं देता हूँ, अंक कप चायकी रिद्वत तुम दो—

सरळण्णा —(दग रहकर) अरे—

चदुरप्पा —अरे क्या ? घडी घडी चायके लिये बाहर जाँतो तो काम कैसे हो ? मेरा भी तस्व है यह । अंक हीं आना समझ अिसे छोटा तस्व न समझना—(दे देता है ।)

सरळण्णा —(लेकर) चारा ही नहीं है ।

चदुरप्पा —चारा नहीं कि दारम नहीं ? जाओ जी, जाओ, पहले चाय लाओ । (सरळण्णा अंदरकी सीढियोंतक जाकर कुछ कहनेके अिरारेसे रुक जाता है और अुसे चदुरप्पा अलिँ फाडकर देखता है । तब वह बिना कुछ कहे नीचे अुतर जाता है । चदुरप्पा अुभी तरफ देखता रहता है और अचरज तथा निरासासे पुक्न अना मुँह बनाकर सिर हिलाना ही चाहता है कि सरळण्णा गडबडीसे अुपर आकर—)

सरळण्णा —(अचरजके स्वरमें) चदुरप्पा चदुरप्पा—

चदुरप्पा —(आश्चर्यसे) क्या—अितनेमें—? (सहसा अुमका ग्वाली हाथ देख) चाय कहाँ ?

सरळण्णा —लाता हूँ, लाया...तुमसे कुछ कहना था, भूल गया, नीचे आते हो याद आया, क्या मजाक रहा वह, तुम्हारे आनेके पहले कोअी किमीका धर खोजने आया और कहा "चुनावमें सडे हुअे—सरळण्णाजीके पास है, कहते है"—(हमते) अजी है न मजाक, दिल्ली ?—चुनावमें सडे हुअे सरळण्णा"—हाँ—चुनावमें खडा होना अंक अद्भुत बात हुअी है—हाँ—"चुनावमें खडा हुआ सरळण्णा"—ह ह ह ! (पाना है ।)

चदुरप्पा :- (अपूरकी तरफ निर हिलाने हुअे 'हूँ' कहते हुअे अुमाम छोडनेपर सरळण्णा धूमकर खडा हो जाता है । (असकी देखकर) सच, मजाक, दिल्ली—

हां ? अच्छी दिल्ली ! " चुनावमें खड़ा हुआ सर-
रक्षण "—हां—ह ह ह !

सरक्षण —ह ह ह !

दोनों :—ह ह ह ! (जोरसे हँसते हैं। सरक्षण
हँसते, सिर हिलाते अन्दर जाता है।)

चतुरप्पा — (शौल्फोपरके कागज अपनी अिच्छाके
अनुसार अुठाकर रखके) क्या कुछ आवाज सुनायी पढती
है ? (दरवाजेके पास आकर नीचे देखते हुअे) क्यों
रे ? कब आया ? अं हुबय्या, कहता हूँ कि देर हुअी
है, फिर भी तू हँसते आता है !

हुबय्या :—(पहले अूपर आकर नीचे देखते हुअे)
मैंने कहा था न गुंबज्जा, कि चतुरप्पा मुझपर ही
नाराज होगा ? (चतुरप्पासे) गुंबज्जासे ही पूछो कि
क्या हम यो ही वक्त बिता रहे हैं ?

गुंबज्जा — (अूपर आकर) दर्जीकी दूकानपर
गये थे, देर हुअी !

चतुरप्पा — (अदर आते हुअे) दर्जीकी दूकानमें
क्या था ? चुनावमें खड़े होनेवाले तुम अंक हो तो
त्योहारके लिये कपडा तुमको ?

हुबय्या :—(गुंबज्जासे, दोनो अमी द्वारके बाहर
ही हैं, चिढानेवालेकी तरह धीमी-ध्वनिमें) कहें क्या
दादा ?

चतुरप्पा — (मालूम न रहनेसे गुस्सेके साथ)
और क्या चलाया है जी ?

गुंबज्जा :—(अव अदर आया है) सुनाते हैं
सुनाअेंगे, क्यों जन्दी ?

हुबय्या :—(स्वय भीतर आकर) क्या दिखा ही
दें ? हाँ ? गुंबज्जा ?

चतुरप्पा :—(हुबय्याको ताकते हुअे) अ र र र !
क्या बत्रिया भेप बना लिया है ? सरपर साफा, लवा
लवादा, नीचे—छि छि छि छि !—नीचे पतलून—(सट)
अरे ! पैरोंमें चप्पल ही पहना है तो ?

हुबय्या :—हमारा आनामी स्वन्न अम्मीदवार
है न ?

चतुरप्पा :—यानी ?

हुबय्या :—गुंबज्जाको देखता है। (वह अिचारेसे
'सब्र करो, ठहरो' सूचित करता है।)

चतुरप्पा :—(सट) ठहरो। हाँ, ठहरो। (जेवमें
हाथ डालकर, बाहर निकालके) अ र र !

हुबय्या — (अचरजसे) क्या है वह ?

चतुरप्पा :—(भीतरकी सोडियोकी ओर जाते
हुअे) बेचारा ! कैसे पूछा, बिना देखे ना वह दिया
मैंने !

हुबय्या :—(आग्रहसे) वह क्या है ? नीचे परमें
जाने क्यों निकले ?

चतुरप्पा :—देखो, नीचे कुछ अरुत थी, पूछा
सरक्षणाने—अंक फुटकर 'अिकन्नी' है ? 'ना' कह दिया।
नीचे अूपर ढूँढने लगा बेचारा ! अब जेवमें हाथ डाला,
फुटकर अंक आना मिला ! ठहरो, हाँ, ठहरो। अमी दे
आया ! अमी आया !— (कहते तेजीसे नीचे अुतर
जाता है।)

(दोनों अंक दूसरेका मुँह ताकते हैं। 'नहीं समझा,
जाने दो' सूचित करके दोनो चलकर जाते हैं और
सोफापर बैठते हैं।)

हुबय्या :—गुंबज्जा, कुल आपको कैसे लगता है ?

गुंबज्जा :—चुनावमें लगना सूठ है और जो होगा
वह सब है।

हुबय्या :—अिम चुनावमें तुल परिणाम क्या
होगा ? वैसे तो हमारे सरक्षणकी जितनी अकलमदी
किसी अुम्मीदवारमें नहीं है— (गुंबज्जाकी मुस्तुराट
देख, रोकके) है कि नहीं !

गुंबज्जा —चुनावमें अरुत वृद्धिकी अकलमी
नहीं; अरुत है वोट (Vote)की। (ठीक है गुंबज्जा,
बहते हुअे चतुरप्पा नीचेसे अूपर आता है।)

चतुरप्पा —ठीक है गुंबज्जा तुम्हारा कहना। हाँ,
अव अुठो, काम मरु कर दें, हूँ !

हुबय्या :—अर र र ! बहेसुअ दीग रहे हो जी ?

चदुरप्पा — हूँ, एकडो यह सोफा (सोफा बुठाकर रगमक्के बीचमें रखते), पंद्रह आने लाभ अगर हो जावे तो खुशी हो जानी चाहिये न ? हाँ, यह अंक कुर्सी भी लो ।)

द्वय्या — (विना समझे) पंद्रह आने लाभ ?

चदुरप्पा — अंक आना देनेपर पंद्रह आनेकी खुशी हो जावे तो पंद्रह आनेका लाभ हुआ कि नहीं ?

(अंतर्नमें सोफा और अंक दो कुर्सीयाँ रगमक्के बीच आमने-सामने रखी गयी । सोफाकी पीठ मेजकी ओर है । मेजपरके कागज सोफापर फेंकते हुये कहता है 'अंक छोटा स्टूल भी रखो बीचमें' । गुब्बजा स्टूल कुर्सी और सोफाके बीचमें रखकर खुद अंक कुर्सीपर बैठना है । उसके उपरांत तीनो सोफापर पड़े हुये कागज स्टूलपर रखते हैं । वाली सोफेपर चदुरप्पा बैठकर नीचेकी ओर जानेवाली सीढ़ियाँ अंक बार देखकर—)

चदुरप्पा — (धीमे स्वरमें) गुब्बजा क्या कहा ?

(गुब्बजा छिर हिलाता है) क्योंकि यह तो समझता ही नहीं कि चुनावमें कैसे भरतना चाहिये, समझनेपर भी मानता नहीं ।

द्वय्या — (धीमे स्वरमें) क्यों जी, कैसे खर्च करनेके लिये तैयार नहीं है ?

चदुरप्पा:— (अभी स्वरमें) खर्च करनेके लिये अिनकार तो नहीं करता वह । पर, अिअर सुपर देना पडता है, अिसकी सिधाओके लिये वह नहीं दकता ।

द्वय्या:— (अर्धधंसे, फिर भी धीमे स्वरमें) तो आगे क्या हाल ? चारा !

चदुरप्पा:— अिसीलिये मंने तथा गुब्बजाने अंक तदबीर की । अिससे कह दिया कि मतदानाओंके नामपर अंक प्रायना-पत्र लिखो । छपाओके लिये दग हजारका बिल बनानेके लिये छापखानेवालेसे भी कहके रखा है ।, ठहरोजी । धवराओ मत । धंमे हमारे हाथम आ जानेपर, यह प्रवच करेगे देखकर कि कहाँ-कहाँ कितना खर्च करनेसे कितने मत (वोट) मिलते हैं ।

फिर आमानिबतापर अिसके व्याख्यानकी जरूरत ही नहीं पडेगी ।

गुब्बजा — (द्वय्यासे) देवा कि नहीं ? नेहरूजीने यह दिया है कि हमें अधिमानदार लोगको ही चुनना चाहिय और बंध गये । अब अंसे लोगको चुननेकी जिम्मेदारी हमपर पडी ।

('चदुरप्पा गुब्बजा जाया हे क्या ? '—कहते हुये सरळण्णा हडबडाहटके साथ अपूर आकर गुब्बजाको ही देखते हुये समाधानसे—)

सरळण्णा — हाँ, आया है गुब्बजा... मुनोजी, किसने कहा कि मैं काँग्रेस पार्टीमें मिल जाऊँ ?

गुब्बजा — मंने ही कहा है । क्यों ?

सरळण्णा:— अरे, कैसे आदमी हो जी तुम ! जानबूझकर मे स्वतंत्र अुम्मीदवारके नीरपर सडा हूँ । हमने तुमने मिलकर ही विचार किया है—

गुब्बजा — (बीचमें ही) ना किसने कहा ?

सरळण्णा — फिर तुमने ही—

गुब्बजा — (आगे बोलने न देकर) ठहरोजी सरळण्णा ! मंने तुमसे कबो बार यह नही कहा कि हम पर विस्वास रखकर तुम चुप बंध जाओ ?

सरळण्णा — पर, फिर तुम ही 'अब मैं काँग्रेसमें मिल जाता हूँ' कहकर—

गुब्बजा — तुम्हारे लिये किसने कहा ? (सरळण्णा 'अ' कहकर मुँह खोलता है ।) क्या तुमने अपने मुँहमे कहा है कि काँग्रेसमें मैं मिल जाऊँगा ? (सरळण्णा-नही ।) नहीं, न ? तो काय समाप्त ! तुम मिल जाओ, या छोड दो । मुझे अंसा लगा कि तुम काँग्रेसमें मिल ही जाओगे—

सरळण्णा — (चक्कि होकर) तुमको अंसा लगा था ?

गुब्बजा:— (हँसकर) पागल ही तुम ! मैं तुम्हारा दोस्त हूँ कि नहीं ? अगर मैं बहूँ तो लोगोंको विस्वास होगा कि नहीं ? अिसलिये मंने खबर कंसा दी थी कि तुम काँग्रेसमें मिल जाओगे—अंसा मुझे लगा ।

हाँ, ठहरो। क्यों पूछत हो? तुम्हारे जैसे कायसमें मिल जाते हैं वह तो दूसरी पार्टीके लोग डर जाअंग, जिसमें शक नहीं है। उसके बाद और पार्टीवाले भी अपनी पार्टीमें तुम्हें मिलानके लिये कोशिश करने तुम्हारे पास आवणे।

सरळण्णा —हाँ अितना कष्ट झुठाकर यह चूठा व्यवहार क्यों?—

चदुरप्पा —कहा था न कि यह तुम्हारी समझमें आनवाली बात नहीं? तुमको झूठ ता न बालना पडा? तुम अपन माग पर चलो, हमें अपनी राह चलने दो न?

हुबय्या —(सहसा हँसकर) हाँ हाँ! अब समझमें आया। किसीलित्र यह झगडा हो रहा है क्या?

सरळण्णा —(बिना समझे) झगडा? क्या? क्या? (कहते हुअे सोफापर बैठता है।)

हुबय्या —अस बडो पार्टीमें। सरळण्णा हमारी तरफ हो जाअ तो, जो चुना गया है असे शायद कहा गया है कि तुमको छोड बना पडेगा, जिसपर वह अकडके बँठ गया है और कह रहा है कि मैं भी स्वतंत्र अम्मोदवारके तोरपर खडा हो जाअूँगा।—

गुबज्जा —हुबय्या, दूसरासे हमारा वास्ता क्या? हमारा काम हमारे लिये।

सरळण्णा —मैं भी वही कहता हूँ। हा, वह अक अपील (Appeal) लिख रता है। असे देख लो न? असेके पहले और अक बात। मैं असेमें अक वाक्य जोड देना चाहता हूँ—कि 'सयुक्त बर्नाटिक राज्यका निर्माण ही मेरा अदरप है।'

गुबज्जा —(गिर हिलान) अदूँ। किसीके लिये अितनी जल्दी नहीं करनी चाहिये, अितना मुल्म खुला नहीं रहना चाहिये। अब मान लो कि चुनाव समाप्त होतब लित्र अभी चार छह महीन और चाहिये, असे अवधिमें लोगाको सयुक्त बर्नाटिक राज्यकी आवश्यकता प्रतीत न हो तो—

सरळण्णा —(हँसकर) छि! अितनी मही बलना है।

गुबज्जा —जैसे लोग वंसी बलना। किसीलित्र कहता हूँ। कैसा प्रसंग आ जाये, कौन जाने? तुन अकेले हाथ फँसाकर मत बँडो। अँसा जोड दो 'मेरी पक्की राय है कि अिमके बिना कर्नाटकका अद्वार नहीं होगा।' फिरहाल अिससे यह होगा कि तुम्हारे मनमें जो था असे कह दिया, और आगे चलकर कैसा प्रसंग आता है देखें। क्यों जी?

चदुरप्पा, हुबय्या —बस, यही योग्य है।

सरळण्णा —फिर भी—

गुबज्जा —(बीचमें ही) तुम यही गलती करते हो, देखो सरळण्णा। अभीसे आदत डालो। चार आदमी बँडे है, विचार किया, तीन आदमियाका बहनन हुआ, तुमको मान लेना चाहिये।

सरळण्णा —(हसकर) अच्छा—वैसा ही सही। मगर वही शब्दोंमें कमी-वैसी हो जाये, तत्त्वमें भेद हो जाये तो मैं माननेवाला नहीं।

(सहसा टेलिफोनकी घटी बजती है। पट गुबज्जा अुठकर जाता है और असे अुठाकर बोलन लगता है।)

गुबज्जा —हली,? ...जी, आपकी कौन चाहिये? हाँ...हाँ. क्या कहा? .. पेपर? कौन पपर? .. वाँ? क्या? . किसका पति कहा? . हाँ हाँ...आपके पेपर का नाम 'शोधकाका पति' है न? हाँ...हाँ हाँ...आप पहिले कहिये—आपकी जो कुछ कहना है .. हाँ हाँ ..क्या? . हो सक्ता है किसके साथ? रावमाहबके साथ? अभी वे काममें लगे हुअे हैं। क्या कहा आपने? अच्छा काम है! ...गौबनरमें अुडी खबरके लित्र व क्या कर? क्या कहा? पपर चलते हैं, खबरकी जिम्मदारी आपकी है नहीं नहीं वे और हम मिलकर ही काममें व्यस्त हैं. प्रणाम...क्यमा कर प्रणाम कहा। (कहकर रख देता है।)

गुबज्जा —(आगे आकर अपनी ओर देखनेवाले चदुरप्पासे) मुना कि नहीं?

सरळण्णा:—कोन हे वह ?

गुंबज्जा — (पहली कुर्सीपर बँटते हुअे) वही सोशियालिस्ट पार्टीका पेपरवाला ।

हुबव्या —असको क्या चाहिअे पा ?

गुंबज्जा—कैसे पेपर चलाते हे, क्या करते हे, सुवा जाने ! पेपर चलानेवाले आप, खबर सच हे कि झूठ, कहना चाहिअे हमें ।

सरळण्णा —(मुद्रहलसे) कौन-भी खबर ?

गुंबज्जा—खबर यह कि सरळण्णा सोशालिस्ट पार्टीमें शामिल होगे ।

सरळण्णा —(चकित होकर) क्या कहा ?

हुबव्या:—(मजा लगनेसे) क्या ? हाँ ? ह ह ह ! अब यह खबर खुदी ? ह ह ह ह ! ह ह ह ह !

सरळण्णा —(नाराज होकर, हुबव्यासे) अरे, जरा ठहरो तो ! [गुंबज्जासे] क्या वह ? भे और सोशियालिस्ट पार्टी—

चदुरप्पा --(बीचमें ही) अजी सरळण्णा, तुम चुप-चाप अपना काम करोगे या गाँवमें खुडी खबरसे मुन्नाबाजी करोगे ?

सरळण्णा —(गुम्मेने) छि ! यह क्या ? क्या मुझे बुन्होने तृणवत् समझा हे कि जैसी हुवा वहे अम और झुक जाऊँ ? सोशालिस्ट पार्टी ! कोन हे वह ! (अटकर) वही, ऑफिसमें हे क्या वह ? पूछ लूँ अथमे—

(फिर टेलिफोनकी घटी बजनी हे । सरळण्णा घट चकित हो, रक्ता हे । याकी तीनों अंघ इनरेका मुँह मुसकुराते हुअे देखते हे । अुरे देगकर गुस्तेसे सरळण्णा टेलिफोनकी ओर जाकर, ओर रिसीवर अडा कर—)

सरळण्णा —(गुस्तेकी आवाजसे टेलिफोनमें) हाँ . क्या ? कोन ? हाँ...में ही हे...आप कोन हेँ ?.. कोन ? भूत ? क्या कहा ? हंसिया हपीडेका भूत ? ...यानी ? ...क्या हे वह ? क्या ? ...क्या क्या ?

कम्प्युनिस्ट पार्टी !...क्या हे यह ? हाँ .. हाँ— (टेलिफोन झाडते हुअे) यह देविअे--अरे !—बन्द कर दिया ? अे—

सरळण्णा —में अंघ बयान ही निक्कालता हूँ ।

गुंबज्जा —कोनसा जयान निक्कालते हो ?

सरळण्णा —में तो स्वतंत्र बुम्मीदवार ही रूँगा, किसी पार्टीमें शामिल नही होना ।

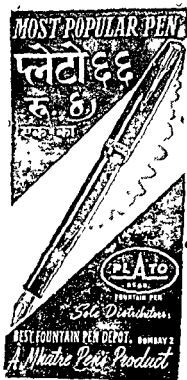
चदुरप्पा —जिसी पार्टीमें शामिल होनेका तुम्हारा विचार हे ।

सरळण्णा —रभी नही ।

गुंबज्जा —फिर यकी चिरला रहे हो ? वे कोमी भी खबर क्या न अडावे ?

हुबव्या —मेरी युक्ति ही-जिन सबकी दवा हे ।

चदुरप्पा —(चकित होकर) क्या युक्ति निकाली हे तुमने ?



(टेलिफोनकी घटी फिर बजती है ।)

सरलण्या — (नाराज होकर) सबकी वार बहके ही छोडना हूँ ।

गुब्बजा — (बुसे रोक्कर) तुम बँडो । तनी तुमने हाँ हाँ बहके गडबड कर दिया । तुम बँडो, मैं देख लेता हूँ । (टेलिफोनके पान जाकर बुसे बूठाकर) हलौ...हाँ ठीक है सरलण्याजीका घर यही है । क्या कहा आपने ? मैं-कौन हूँ ? आप पहले कहिये कि आप कौन हैं ? (सरलण्याको झुठन देते बुसे रोक्ने भागे जाता है । टेलिफोन बानसे लगाकर सरलण्याको हाथसे बिसारा करते, चलते, मेजके पास तक जाकर सरलण्याको सोफापर बिठाते हुये, टेलिफोनमें) हाँ .. क्या ? ...क्या कहा ? ..सान कौन—

सरलण्या :—(बावैसासे बुउने) लाओ, अक वार बिन सबकी खबर लूँ ।

गुब्बजा —(बुसको हाथसे रोकते हुये, टेलिफोनमें) हाँ, या साफ बात कीजिये न ? (दूसरोंको) किसान...!

हुबव्या —ह ह ह ! यह पाटी क्या ?— (गुब्बजाके बिसारेसे रक्ता है)

गुब्बजा —(टेलिफोनमें) क्या कहा ?...हो सकता है । सुल्लमसुल्ला स्वतंत्र है, जैसा चाहें वैसा कर सकन हैं । पूछिये अरुहीसे—(सरलण्या बुठना चाहता है, बुसे रोक्कर) हाँ हाँ, पूछिये तो ? ...क्या कहा ? अभी पूछना चाहते हैं ? अभी वे सम्बन्धीमें हैं, बहोका टेलिफोन नम्बर मालूम नहीं है ।.. प्रणाम । (रख जाता है ।)

(अब मिनट बीसी नहीं बीलता ।)

सरलण्या —क्या ? खबर बुडो है कि मैं किसान-मजदूर पाटीमें शामिल हूँगा ?

हुबव्या —(झुठकर) गुब्बजा, अपनी युक्तिवा प्रदान कर ही दें ।

चदुरप्पा —(बुनुहलतासे) क्या है वह ? लगानार, बार-बार कह रहे हो ।

सरलण्या —(दुखी-सा) अं गुब्बजा, यह घर खबर तुम्हींने फैलायो ?

(टेलिफोनकी घटी बजती है ।)

चदुरप्पा —(जाकर और झुठकर) हाँ— क्या ?— कौन ?— हिल्लमहासभा ? ..कौन चाहिये आपको ? . हाँ । यह प्रधान मंत्रीजीका घर है...नम्बर सही नहीं निकला...प्रणाम । (रख देता है ।)

चदुरप्पा —(हुबव्यासे) अब बताओ नुम्हारे युक्ति ?

सरलण्या —(पहलेकी तरह) यह तो दिव्यकुश वचहनीय है !

हुबव्या —यहाँ देखो सरलण्या, अगर सत्नीय असहनीय बहते बँडोगे तो चुनावकी बाधा छोड देना ही बेहतर होगा । चुनावमें सरलण्या चाहते हो तो कामहमें सौंप दो । खबर बुडानेवालोंकी बुडाने दो । बुनका मुकाबला करनेके लिये हम मजबूत हैं । यह देखो, क्या देखा ? चदुरप्पाने पूछा कि मैंने क्यों अँसा मेप बना लिया है । बहता हूँ मुनी - क्या कहूँ ? अक पाठ ही पडाता हूँ (बहते हुये मेजके पीछेकी कुर्सीके पास जाकर खड़ा होता है) झूठो सच, मंत्री और मूँह करके सामने बँडो । (चदुरप्पा हँसते, सरलण्या चकित हो खड़े हो जाते हैं और सामने जाकर बैठ जाते हैं ।) यह देखो मेरा "अनेक रूप स्नाप" अँप । पूछते हो कि यह मेप क्या ? मैं स्वतंत्र हूँ । जैसा चाहूँ, वैसा मेप बना सकता हूँ । देता ? ठहरो (अपना फग और कौपी भी बुठारता है । सापेके नीचे गाधी टोपी और मोर्के नीचे नेहरू पार्टी) देखो ! जरा और ठहरा (मित्रके पीछे पैट बुठारकर अँकता है और बदरसे महरकी घोटी निकलती है ।) देता ? पूछते हो क्यों ? अँष्ट लोप तो जिये दयकर ही बोट (मत) देते हैं । अँजनेसे समुत् होत है तो हमार क्या जाना है ?

सरलण्या —छि छि ! यह क्या ? खिलवाव करते...-

हुबव्या —ठहरो जी, अभी समाप्त नहीं हुआ है महिरावक वेपकी महिमा । तुमको यह मेप

खिलवाड लगा ? अच्छा, जिसीको देखो अब (सिरपरकी टोपी निकालता है। सिरपर अघर-भुघर बिलबरे हुआ लगे सफेद बाल है, पहनी हुआ घोती भी अतार फेंकना है, अगवे नीचे सफेद पायजामा है।) दखा ? (गुब्बामे) किसी मनबलीका गोहर कहा न ?

गुब्बामा — गोपकाका गोहर—

हुब्बामा — हाँ—शोपकोका गोहर यानी प्रचड समाजवादी हूँ मैं—(चदुरप्याके हसनपर गभीरतासे) कौन है हसनवाले ? ओह ! यह भेप देख तुम मूणासे हंसते हो न ? समझा तुम्हारा स्वरूप, ठहरो। (नेहरू शर्ट अतारता है। नीचे गाल रंगका आगे आस्तीनका छोटा बुरता है जो कमरतक लटक रहा है। पायजामा भी अतार देता है। अगके नीचे लाल रंगका हाक-पेंट है।)

चदुरप्या — (हंसते हुआ) वाह ! वाह ! ह ह ह ! (ओर भी हँसी बजती है।) ह ह ह ! डिमीक-सीका चस्त्रावहरण ! ह ह ह !

सरळण्णा — (असुचि हो जानेपर अटनेकी तरह अठकर) समाप्त हुआ कि नहीं यह तुम्हारी बानर-लीला ?

हुब्बामा — (बनाबट्टी श्रोत्रमे) क्या कहा ? बानर-लीला ? तुमको यह बानर खिलवाड लगा ? हमारे पेत्रकी समस्या तुम्हाने लिभे बानर खिलवाड ? ठहरो, (कहते हुए वह छोटा शर्ट भी अतारकर नग धडवे कंधेपर असे डालकर, ताल ठोककर) तुमने क्या समझा है मुझे ?

सरळण्णा — (अचरजसे) क्या है यह ?

हुब्बामा — (थकावट भरे हुआ स्वरमें) विमान है—(मवेशिकीकी हाँकनेवाले जैम करता है।)

चदुरप्या — वाह ! ह ह ह !

हुब्बामा :— (धीम स्वरसे) मजदूर (कहकर कुर्मी अडाकर सिरपर रख लेता है।)

चदुरप्या — वाह ! वाह !

हुब्बामा — (रोदन स्वरमें) प्रजा (कहकर अग-हाथ, शक्तिहीनका-मा बँटना है।)

सरळण्णा :— (असुची ओर अंक मिनटनक देख-कर, अच्छा, कहकर टेलिकानकी ओर जाता है।)

चदुरप्या — (भयके स्वरमें) अजी यह क्या ? क्या करते हो ?

सरळण्णा — टेलिफोन करता हूँ।

चदुरप्या — किसका ?

गुब्बामा — क्या कहोगे ?

हुब्बामा — अभी क्यों ?

सरळण्णा — (चदुरप्यामें) किसकी ? अिगंडकी। (गुब्बामासे) क्या कहूँगा ? मैं यही कहूँगा कि तुम्हारी डेमोन्समी नही चाहिये। (हुब्बामासे) अभी क्यों ? अगर रहूँ तो डर है कि बुद्धिभ्रष्ट हो जाये।

गुब्बामा — (अमको रोक्कर) समझ गया, छोड़ दो। (बाकी दोनोंमें) अिमको क्या हुआ है, अग कहते हैं ?

दोनों — (पाठ सुनानेवाले बालकोकी भाति) चुनावका बखार चढ़ गया है—जी ! (सुरत तीना हँस पड़ते हैं। अंक मिनट अनेके मुँह ताकनेवाले सरळण्णावे मुँहपर भी मुस्कराहट अकुरित होती है।) ✽

परदा गिरता है !

✽ जिस अंकाकीके सभी अधिदार लेखकके स्वधीन हैं। लेखककी अनुमतिके बिना जिसका अधिनय न किया जाये।

(अनुवादक — श्री गुच्छाथ जोशी, धारवाड़)

ऋतुराज

. श्री गोपाल शर्मा, अेम. अे .

अरी मिट्टी ! ये रगत किन तहोंमें तू छुपाये थी ?
 हजारों रूपके नक्शों अनी तक क्यूँ दबाये थी ?
 अचानक किसने सीनेपर तेरे सिर रख दिया रानी,
 कि झरने तेज है तेरी रगोंमें, गर्म है पानी !
 समाती ही नहीं है आपमें तेरी मलय-सी सांस,
 बूठे है रोम द्यामल दूबके पहले जहाँ थी कांस ।
 पिया वह कौन जिसकी किरन झुलके भर गयी सिहरन,
 ये मोती मांगमें ! सतरंगे चुनरिया ! ! अ नयी दुल्हन !
 तुझे यूँ देख, है हालत अजब, माणिक विघाता है,
 अरे, हर पेड़ बाँहें खोल, बेलोंकी चुलाता है ।
 भगर बेलोंकी जैसी जात, जितने डँग बताती है,
 लपक खुद पेड़ तक आती, हिला सिर लौट जाती है !
 कि पछी डोलते बेहान, गाते गा न पाते हैं,
 न भूपर चैन पाते है, न अम्बरमें समाते हैं ।
 बटी ज्यो-ज्यो कुहू ल्यो-ल्यो वहाँ वो आम बीराया,
 निमट सारमाके अमरात्रीकी गोदीमें छुपी छाया ।
 लपेटे हो रहीं टीली, करे तो क्या करे कदली,
 पकड़िअे अुसको जिमने सबकी हालत अिम तरह बदली !
 लहर सकशोर कमलोंकी, नशेसे जो जगानी है,
 लिपट अुठने ठुबे नरिसे केसर झूम जाती है !
 ये कच्ची कोशिशें ! मतलबने भुसकानेकी कलियोंकी !
 ये बटते हीसले ! नितलीका चलना गँल अलियोंकी !
 नुगधोंकी ये अनीना तह, ये रगोंकी धनी अुलझन,
 ये पानीकी लहरियादार क्षात्रीका तरल-अपन,
 हिलोरें दूर तक नरते ठुबे मैदान चितकबरे !
 पहाडीबे गले दगलोंकी पानीनि धवल गजरे !

अरे जिस ब्रह्मचारी समयकी गति और जैसी हो,
जो दिल है, ब्रुसकी झाँकी ये न हो तो और कँसी हों !
कि रविकी अधखुली पलको पे कोश्री स्वप्न छाया है,
वही ऋतुराज है ! रे प्यारका त्पोहार आया है !
न जिसने वाल-तृण देवा, न बूढे गिरिको छोडा है,
ये जादू है !—जि हूँ ! सबके सिरापर चढके बोला है !
मुझे भी क्या हुआ, आँखोंसे में सुनने लगा कैसे ?
स्वरोको सूँघता हूँ ! गन्ध तन छूने लगा कैसे ?
गली रेखा, धुला स्वर, मुरभि पिघली ! अंक अनुभव है,
वृक्षी पहचान जैसे,— मन लवालव है, लवालव है !

जिधर देखता हूँ अधर तू ही तू है !

क्या महात्मा गांधी अकेले थे ? लाखों बलोंपर सूत कातनेवाले लोग ब्रुस सूतके द्वारा
धूमसे हमेशाके लिये बंधे गये थे । धाम सेवा करनेवाले हजारों लोग गांधीजीके साथ जुड़ गये थे ।
हरिजननोंकी सेवा करनेवाले संवदों भाभी गांधीजीके साथ अंक हो गये थे । हिन्दीका प्रचार प्रसार
करनेवाले हजारों लोग गांधीजीके साथ हो गये थे । हिन्दू-मुस्लिम अंकता स्थापित करनेवाले—
साम्प्रदायिक झगड़े मिटानेवाले, शराब बन्दी करनेवाले, सब लोग गांधीजीके साथ जुड़ गये थे । जिन
करीबों लोगोंकी, जिस जनता-जनाद्वन्दकी सुवर्द्धन शक्ति गांधीजीके आसपास घूमती थी । और क्या
जवाहरलालजी अकेले हैं ? पद-दलितोंका पकव लेनेवाले, मदाग्य क्षेत्र विलासो लोगोंका नशा
धुतारनेवाले किसान मजदूरोंके लिये बलिवान करनेवाले, अन्नका सगठन करनेवाले धर्मका महत्व
पहचाननेवाले, सच्चे मातृधर्मको पहचाननेवाले और सारे दलोंको दूर हटा देनेवाले हजारों लोग
जवाहरलालके आसपास खड़े हैं । और जिनके लिये जवाहरलाल ध्याकुल हैं तड़प रहे हैं, वे करीबों
हिन्दू-मुसलमान भाभी अन्नके साथ जुड़े हुये ह । प्रितिलिये जवाहरलालके शरदोंमें तेज हैं बाणोंमें
ओज हैं और बुष्टमें तेजस्विना हैं ।

महात्मा या महापुरुषका अर्थ है— पुत्रीमूत विराट जनता ।

—ख० साने गुरुजी

अर्चशी

: श्री ग. त्र्यं. भाडखोलकर :

"सुकुमार प्रहरण महेंद्रस्य । अलकार स्वर्गस्य ।"

—कालिदास

"अर्चशी" शब्दका अच्चारण करते ही हमारे मनमें अनेक रमणीय कल्पनाओं जाग उठती हैं। यथायथं अर्चशीका चरित्र कल्पनाकी कोमलताको भी लजानेवाला है। आदि कालमें आधुनिक कालतक चंचल कालकी बदलती छटाओंपर यदि किसीके अकरण सौंदर्यकी अनिवर्चनीय सुपुमा छायो होगी तो वह है केवल अर्चशी। अतिना ही नहीं, अिन्द्रसभनाकी अिस नर्तकीके रूपने कविकुलगुरु कालिदाससे लेकर कविसम्राटतक अनेक कवियोंको अपनी प्रतिभासे मोहित किया है। अत अर्चशी लक्ष्मीके समान सागरोंमेंसे अत्यन्त नहीं हुआ और न पार्वतीके समान हिमालयके अूच शिखरोंसे ही प्रकट हुआ है। यह भी विविवाद है कि विधाताने ससारके सारे सौंदर्यके समन्वयसे ठिलोत्तमाके समान अुसका निर्माण नहीं किया । यथायथं तपोभग करनेके अुद्देशसे भेजी हुई अ्पराअंकि समूहकी देववर नारायणके समान ऋषिने श्रीपावेगमें अपने तपस्याके प्रभावसे अर्चशीका निर्माण किया है। यही कारण है कि अुसके अनुपम लवण्यको देखकर पुरुषवाने कहा था कि "विदाभ्यासके कारण जिसकी वृद्धि वृत्तित हो गयी है, अेसा वह बूटा ऋषि अितना मनोहर रूप जैसे निर्माण कर सकता है ? चन्द्र, मदन अथवा वसन्तके समान ही किसी कामदेवताने अिसका निर्माण किया होगा ?" तपस्याके कारण अेकाग्र और अुन्नतिशील ऋषिकी प्रतिभा ही अिस प्रकारकी अनन्य सुन्दर वृत्तिको जन दे सकती है, यह वह कामुक क्या जाने ? सौंदर्य और अठोरनाका जो विविध मल अर्चशीमें दिखायी दिया, अुसकी अड़में अुत्पत्ति तो कारण नहीं ?

अर्चशी केवल अ्परा नहीं है। वह अेक अुत्तरोत्तर परिष्कृत होने अुअे सौंदर्यका प्रतीक है । ऋग्वेदने

विन्नमोर्वांगीतक हजारों वर्षोंकी विवसित होती हुई अर्चशी मवधी कल्पनाअोवा विचार किया अात्रे तो अुसका युगसापेक्ष प्रतीक हमारे मनपर अेक स्पष्ट प्रतिबिम्ब डालता है। अितना ही नहीं, ऋग्वेदके वैदिक-हासिककालके पूर्वसे लेकर अिस बीसवीं शताब्दी तक कविके अटल प्रभावके लिये अुसके सौंदर्यका प्रतीक ही मूल कारण है। स्त्री ससारके सौंदर्यमें अ्रेष्ठ, प्रेमका प्रतीक और सारी मंगलताकी मूर्ति है। जब सञ्चारकी बाल्यावस्थामें मनुष्य जातिकी सत्या अत्यन्त अल धी, अुस समय मनोरजन करनेवाली रमणीकी दृष्टिसे ही नहीं, बल्कि सतति निर्माण करके ससारकी सतत प्रवाह प्रदान करनेवाली जननीके नातेसे भी स्त्रीका महत्व अनन्य है। मानव जातिकी अलससंस्कृत परिस्थितियोंमें स्त्रीने, विगोपत सुंदर स्त्रीने सौंदर्य और सततिके लिये व्याकुल पुरुष जातिको अपने सक्तोपर नचाया हो तो अिममें क्या आश्चर्य ? ऋग्वेदमें की गयी अर्चशीकी वरणाहीन कल्पनाओं और पुरुरवाके गाये अुअे दैन्य नरे-स्तोत्र अिसी परिस्थितियोंमें अुपजे हैं। मैक्समूलरके समान कुछ अन्वेषणकर्ताओंकी यह धारणा है कि अर्चशी मानव अथवा अमानव न हाते अुअे, केवल अुपाका अेक रमणीय रूपक है। अुनकी अिन धारणाका कारण भी हमें अर्चशी द्वारा पुरुरवाकी लक्ष्य करके गये वैदिक मूत्रांमें मिलता है कि " हे पुरुरवा, मे तुपअे अुपाके समान दूर भा चुकी हूँ । तू अब घर लौट जा । वापुके समान चंचल होनेके कारण मेरा पीछा करना तेरे लिये असभव है " लेकिन अर्चशीके भव्यको अुपाकी अुपमा देनेपर भी यह सिद्ध नहीं होता कि वह अुपा ही है। क्या-क्यलमें रग बदलनेवाली और विपत्तिअकी नीलमूर्तिपर नतन अरने-वाली अुपा, स्यौंदर्य होत ही अिस प्रकार अपने अन्तित्वकी वरणनरमें मिटा देती है, अुसी प्रकार पुरुरवाके प्राणाकी अपने लवण्यसे पागल करते अुससे दूर

भाष्यवादी अर्धगी है पुरुषवा विग्रह या तो अर्धगी वस्त्रविभूषित थी वह कामुख या तो वह कपोर थी वह अतप्त या तो वह अनत यौवना थी । असकी ओर अपनी रियतियोंकी विपमता देखकर अर्धगीको सचो हुआ अर्धगीकी अर्धमा अमके कर्णाहीन सौंदर्यका प्रतीक है । अम अर्धगीको रूपक मानकर अर्धगीस यत्नाको कमोटीपर रखना भा वया वेदाभ्यासकी जन्तुका छोटके नहीं है ?

जब अर्धगी स्वगतोक छोड़कर पुरुषवाके पास रहन आयी थी अम समय दोनोंके बीच केवल अक शतका अन्तरेष पदिक सूक्तोम मिश्रता है । तब यह थी कि पुरुषवा गयनाह छोड़कर अयत्र वही भी अम विग्रह नहीं दिखायी बना चाहिये । अम अर्धगीका पाठभूमिमें भी अर्धगीकी सौंदर्याभिषि दिखायी देती है । अर्धगीकी यह साधारण शत मूलकर पुरुषवाको हँसी आयी होगी । अर्धगी अम तम निहित सौंदर्याभिषि अमके सहजीवनकी अन्तिम रेखा सिद्ध हुआ । पुरुषवाको प्राप्तिके लिये अम कामिनीन अपनी दिव्यताका त्याग किया लेकिन अपनी सौंदर्याभिषिसे विमुख नहीं हुआ । वृद्धावस्था मयू डारपर पहुँचे हुए पुरुषवाको अर्धगी जसी सुरागनाका जितना यौवन पुष्प सुरागना सबया असभव या गयन वयक सिवाय अ पत्र नगनावस्थामें देखा अर्धगीकार करना कितना स्वाभाविक था ? पुरुषवा कितना ही सुन्दर क्या न हो लेकिन वह मानव था । नदनवनको कल्पलताओके कोमलपुष्प मृदाकिनोके परागसे आद्रवाय अमना चद्र किरणोके कोमल तनुओसे वन हुए वस्त्रोके विभाव अय वस्तुओके रंगका जिते अनुभव न हो और देवेद्रको भी जिसके स्पर्श करना प्रसंग न थाय अम अर्धगीको पुरुषवाको नगनावस्थाम देलकर ग्लानि हो और वह असह्य लग तो अिसम आचर्यकी क्या बात है ? अर्धगी गायद गतका मय न समझनके कारण अमन पुत्रवत प्रभमे पाली हुआ मडोको गवर्वा द्वारा भगा ले जानपर, पुत्रार सुनने ही अुहे छडानके हेतु विवस्न स्थितिम ही पुरुषवा अयनगृहे दौन पडा । तासय यह कि गवर्वा द्वारा किय कृत्रिम प्रकाशमें अुसका मयन गरीर लियी देने ही अर्धगी असी वयन अद्वय हो गयी । अर्धगी अुसके प्रभमे अुद्विग्न नहीं हुआ थी । यदि अर्धगीकी

अुसके साथ रहना गटकता तो वह पुरुषवाको पुनर्मिलनका अुपाय क्या बनानी ? अुसे पुरुषवाकी निलज्ज नमनान वचन किया था । नमना द्वारा प्रदर्शित अुसके मानवीय गरीरकी मलिनताम अुसे अधीर कर गया । जनासकत कालिगसात नमनदानके अिस प्रसंगको अपन विग्रहोवशी म टाल दिया है । लेकिन अुसका अयनय ब्राह्मण और अुछ पुराणाम नमनताकी गलके कारण ही वियोग होनाका अन्त मिल्ता है । यदि अुर्धगी अथा और पुरुषवा मूढ होता तो अुसके बीच नमनताका प्रश्न निर्माण होनाका कोभी कारण नहीं था और अपन अियवके गवम अुसे मय्य कहकर अपमानित करनाका दुस्ताहम भी अुर्धगी नहीं कर सकती थी । पुरुषवान अुर्धगीका वयन करते हुए अुसे अपनी प्रभासे अन्तरिय प्रकाशित करनवाणी कहा है । विद्वानोम अुर्धगीको अुपाय रूपक देनम अिस वयनका आचारतो नहीं गया होगा ? लेकिन पुरुषवा अुल्लिखित अन्तरियसे गायद स्वयके प्रमपूण अन्तरणका ताप्य है ।

अुर्धगी अुपायका रूपक न हो लेकिन अुमनी स्वयका दो हुआ अुपायकी अुपमा अयत समानार्थी है । वह अुपा जसी अनत यौवना अन्त रूढिणी और अमानव थी ; असे अमानव अिसलिये नहीं कहने कि वह देवागना थी-अपितु मानवीय दृष्टिके किसी भी सचिम अुमका चरित्र नहीं वैठता । अिस तापयमे अोज करते हुए वयन मटकनवाले पुरुषवान अुसे पहिली बार ही कठोर हृदया सरोधित किया है । लकिन क्या वह सधमूच कठोर हृदया थी । राजाओ और राजपुत्रो मोह्यो और मूढकाको अपनी मोह्तिमे पराजित करनवाली प्रमभयमे रक्तहीन अुनके सफ और चुम्बनके अिच्छुक ओगेको देखकर स्वयको र्नाय समझनवाणी अुर्धगी क्या क्रीटमके वयनानुसार गयव नगरीकी रूपयकिता सुन्दरी थी ? अयवा पीक साहियकी वपला अटलाटाके समान अयन प्रमिनीको तडपते अुर्धगे मरते देखता ही अुमका स्वभाव था ? पुरुषवा जब प्रणय विवाग हो प्राण देनकी धमकी देता है तब अुर्धगीका यह अन्तर वि अरे स्थियाका प्रम केवल प्रेम ही नहीं अुनका हृदय भी भडिया जसा कठोर होता है । [म व

स्त्रैणानि सत्यानि सन्ति सालावृक्षाणा हृदयान्येता]
हमें यह विचार करनेसे नहीं रोकता कि नारायणकी यह मानस कन्या भी अँटलाटाके समान नेडके दूधसे ही पन्थी होगी और पुररवाके प्रति मनमें सहानुभूति अल्पन होकर कीटसूत्री भग्न-हृदया प्रेमिकाके समान अपनेको भी बहनेकी बिच्छा होती है कि "अरे ! अरे ! ! अस् हृदयहीन मुन्दरीने तुझे अपने प्रेमपाशमें फसाया है ।" लेकिन क्या अर्बंसी निर्दय थी ? अस्के कथानुसार अस्का हृदय यथार्थमें कठोर होता तो वह पुररवाको अपना स्वर्गीय सुख क्यों लूटने देती ? पुररवाको सान्त्वना देते हुअे अस्ने कहा था कि "राजन, मेरे दिव्य शरीरका त्याग करके मैं तुम्हारे पास चार शरद रही । जब जब तुम मेरी बिच्छा करते, तब तब मैं ससुरके गृहसे निकलकर तुम्हारे मन्दिरमें आती थी । मैंने अपने शरीरपर तुम्हारा यथेच्छ प्रभुत्व रहने दिया ।" सप्तराकी कोअी भी युवती अपने प्रियतमके लिअे अितसे अधिक क्या अुत्सर्ग कर सकती है ?

यदि अर्बंसीकी पुरुषवाके प्रति अितनी अुत्कट आसक्ति थी, तो अस्ने अस्का त्याग क्यों किया ? क्योंकि वह अम्परा थी । शतरथ ब्राह्मणकी कथामें अपनी पुँन प्रातिक्ता अुपाय मुसाले हुअे अस् नुरागनाने पुररवाको स्पष्ट ही बताया है कि 'तेरे मनुष्य देहका त्याग करके गधवं हुअे बिना तू मेरा पूरा लाभ नहीं अुठा सकता ।' वस्तुतः अर्बंसी रमा अथवा मेनकाके समान जन्मसे ही अम्परा नहीं थी । लेकिन अस्के पिताले जिस समय अस् अिन्द्रको अर्पण किया, असी समयसे अम्पराका जीवन-जन्म अस्के मत्थे पडा । जिस गधवं लोकेमें अम्पराओंको रहना पडना था, वहाँका यह रिवाज था कि अम्पराओंका अविवाहित रहकर ही केवल सौंदर्य साधन (साज सिंगार)में अपना जीवन व्यतीत करना चाहिये । कलाविलास अुतके जीवनका अुद्देश्य और वीरोंका मनोरजन करना अुनका परम धर्तव्य समझा गया । जिसप्रकार प्राचीन कलामें ग्रीस देगकी परम सुन्दरी स्त्रियाँ समाजके श्रेष्ठ पुरुषोंका मनोरजन करनेके लिअे अविवाहित रहती थी, अुमी प्रकारकी मिलनी-जुलती व्यवस्था गधवं-समाजमें भी रही होगी । देवेन्द्र

द्वारा अम्पराका अेक अुपयोग और भी किया जाता था । कालिदासके 'विजयमोर्वशी'में रमा पुररवाके अुर्वंसीका वर्णन करती है 'या तपोविशेषपरिपाकिनस्य सुकुमार प्रहरणं महेन्द्रस्य । प्रत्यादेशः रूपविताया धिय । अलंकार स्वर्गस्य । सा न प्रिय सखी अुर्वंसी ।' अर्थात् जिस प्रकार अम्परा देवेन्द्रके दरवारकी भूषण थी अुर्वी प्रकार वह अुमके गम्परागारका नाजुक हृदिधार भी थी । क्या आज भी राजनीतिके रहस्योंको ज्ञात करनेके लिअे मुन्दर स्त्रियोका अुपयोग नहीं किया जाता है ? अम्परा विवाहके वधनसे मले ही मुक्त हो, लेकिन अुसका जीवन अन्य अनेक बन्धनोंसे अकड़ा रहता है । वह दूसरोंको मोहित कर सकती है, लेकिन स्वयं मोहका गिकार नहीं बन सकती । वह दूसरोंको प्रियतम बना सकती है, लेकिन स्वयं प्रेम नहीं कर सकती । अनिर्बंध और सर्वथा वधन-रहित जीवनही अुसके जीवनका महान् बन्धन है । पति प्रेम और सन्तान-प्रेमके जिन प्रबल पाशोंसे स्त्री-जातिका जीवन बद्ध है, अम्पराको अुन पाशोंसे सर्वथा अल्पित और निर्मुक्त जीवन व्यतीत करना पडना है । अुर्वंसीको बन्धन मुक्त रहनेसे ही पुरुषवाके प्रेमसाधको तोडकर देवेन्द्रके दरवारमें वापस जाना पडा था । अुर्वंसीने पुररवाको सान्त्वना करते हुअे नाव व्यक्त किये थे कि 'स्त्रियोका प्रेम वास्तवमें प्रेम ही नहीं है ।' ये अुद्गार अुसके मनकी कठोरता प्रगट नहीं करते अणितु नैरास्यके सूचक हैं । जिस प्रकार मनुष्य जीवन दुःसह होनेपर सप्तराको दोष देता है, अुमी प्रकार अनिर्बंध स्त्रीत्व असाह्य होनेपर अुम देवरमणीने स्त्री-जातिपर अिमियोका टीका लगाया है ।

तात्पर्य यह कि अुर्वंसीका अकरुण चरित्र भी सप्तराके साहित्यकी अेक अत्यन्त कर्पाजनक प्रेम-कथा है । अुध्वेदेके मूकतामें, शतरथके सवादाओंमें, मन्पयुरागकी कथाओंमें और विजयमोर्वशी नाटकमें अुर्वंसीके समय-समयपर बदलते हुअे चरित्रसे कर्पाका प्रवाह अत्यन्त मूकताके साथ बहता हुआ दिनायी देता है । अुर्वंसीके समान देवेन्द्रकी प्रिय अम्पराका मूलरूपके अेक मानव राजाके प्रणयपाशमें फसना ही अुसके अघ-पतनका सूचक है । लेकिन क्या वह यथार्थमें अघ-पतन या ? पुररवा

दास अर्वाशीकी स्वीकार कर लेनेपर जब अूसकी सहेली चित्रलेखा अुमे स्वर्गका स्मरण न आ पानेके ढगम अर्वाशीके माय व्यवहार करनेकी प्रार्थना करती है तब पुहरवार सचिव भाणवक चित्रलेखाकी विनतीका अुगहासात्मक अुत्तर देता है कि " तुम्हारे अुस स्वर्गमें मनको आकषित करने योग्य अंसा क्या है ? खाना नही, पीना नही । वहाँ तो केवल पलके न झुकनेवाले नेत्रोंसे मखियाको निहारकर समय नष्ट करना पडता है । [किवा स्वर्गें स्मर्तव्यम् । नशास्यते नवा घोषते । केवल मनमिषेर्नैषर्नैर्नाना विडम्ब्यन्ते ।] कालिदासका मूर्ख समझा जानेवाला चिद्रूपक कभी-कभी कितना मार्थिक बोलता है, जिसका यह अत्यन्त सुन्दर अुदाहरण है । सचमुच स्वर्गलोकमें मनको अच्छी लगने योग्य कौनसी बात हो सकती है ? जिन नाना प्रकारकी संवेदनाओसे माया मोह और सुख-दुखके प्रसंग निर्माण होकर मानवीय जीवनमें विचित्रता और मधुरता आती है, अुनका तो अुस अुपर लोकमें पूर्ण अभाव ही है । फिर वहाँ आकर्षण क्या होगा ? स्वीत्वके विकासके लिये तो वह सर्वथा निरर्थक है । स्वर्गमें देवताओका राज्य हो अथवा ईश्वोका, स्थियोको केवल अमृत पीने और नृत्य करनेके अलावा अन्य कोओ काम नही होना । अंसी स्थितिमें, सह्य नेत्रोंसे दीप्त देवेन्द्रके दिव्य शरीरको प्रतिदिन देख-देखकर तस्त और मंदतनके निरन्तर और नियमित वाद मुखविलाससे अुवकर, यदि पृथ्वीके अंक मनुष्यसे अुर्वशीका प्रेम हो जाओ तो क्या आश्चर्य है ? प्रेमानुभूतिका आनन्द लेनेके लिये वह धानुर धी और अंसी मत्र मिश्रितमें देवेन्द्रके सामने छेले गये "लत्रनी स्वयवर" नाटकमें लत्रणीकी भूमिका करते समय "पुरुषात्तम"के बदले "पुरुषवा" अन्द अुसके अुँहमें निकल जानेपर अुमे नाटकाचार्य भरतके अभिशापका पात्र होना पडा और अुम प्रेमोन्मादके कारण अुसे स्वर्ग छोडनेकी वारी आयी । लेकिन प्रणय-मीडित अुर्वशीको वह अभिशाप न होकर वरदान ही लगा होगा क्योंकि अुसेसे अुसे अग्रह्य और विफल स्वर्गीय जीवनमें परिवर्तन होकर मानवीय जीवनकी अनुभूति लेनेका सुख प्रसंग मिला ।

लेकिन देवताओकी अुर्वशी जैसा स्वर्गका धन्यकार और देवेन्द्रके अस्थका वियोग कैसे सहन हो मकता था ? जब भरतमूनिने अुर्वशीको शाप दिया था, अुमी समय देवेन्द्रने अुमे अंसा प्रतिशाप दे रखा था कि "तुम्हारे अुत्पन्न सन्तान पुत्रस्वाका दिवायी देने तक ही तुम्हें अुसके साथ रहनेका मुख मिलेगा" । जिस प्रतिशाप अंसा मार्थिक अुदाहरण अम्यत्र कहीं न मिलेगा । अुर्वशी जबतक स्वर्गमें थी तबतक अुसके सन्तान होना अस्तम्भ था, वयो कि अुमरा र्जसी अमर होती है, र्जमी ही नि सन्तान भी होनी है, मानो अुसका जीवन अनन्त होनेके कारण ही विफल होता है । जिसके अलावा जो पत्नी नही हो सकती वह जननी कैसे हो सकती है ? पिताके आश्रमने देवनीकमे आनेपर अंक बार सूर्योपामनाके लिये जाते समय अुर्वशी जब पुष्टवाके प्रेमका विषय बनी, तब अुसके प्रत्यक्ष स्पर्श होनेका प्रसंग न आनेपर भी अुसे पुत्रलाभ हुआ । लेकिन पुष्टवाकी पत्नी बनकर मर्त्य लोकमें रहनपर अुसे मातृपदके लिये सभी आक्षरक परिस्थितियामे पुत्ररत्ना पडा । अिनलिसे देवेन्द्रने अुसकी मातृपद-प्राप्तिमें ही अुसके सामारिक जीवनकी समाप्तिका कषण सीमित कर दिया । मानो स्वर्ग-शोकका अंसा नियम हो कि अुत्पन्नका जन्म केवल मानवीय सुखोपभोगके लिये ही है-सन्तानिमुख भोगनेके लिये नही । अिती कारण पुत्र-जन्म होने ही पुष्टवाको पता लगे बिना च्यवनाश्रमकी अंक तपस्विनीकी सुपुत्रं किये हुए अपने पुत्रको जब राजाने अचानक देला, तब जिस पुत्र-दशममें अुर्वशीकी आनन्द नही हुआ, अिनपु पुन स्वर्ग-लोक जानेकी कल्पनासे बह रो पडी । भरतके शापसे अुस अभावित आसराको पति सुखका अुपभोग भले ही मिला हो लेकिन देवेन्द्रके प्रतिशापके कारण अुमे पुत्र-सुखका आनन्द मरिक्किन् नी नही मिला । अुर्वशीकी प्रणय-कथामें कृष्णाकी परमसीमाको कोओ प्रसंग हो सकता है तो वह है पति और पुत्र छोडकर स्वर्ग-शोक जानेका । अुमपर आयी हुआ आपत्ति टलकर अुसे अपने प्रियतमके सहचामका सुख पुन प्राप्त हुआ, यह केवल अुसके अत्यधिक प्रेमका प्रभाव है । लेकिन जिसलिये अुसके प्रेमजीवनके बाण्यकी तीव्रता तिलमात्र भी कम नही (संपास पृष्ठ सख्या १७७ पर)

भारतका राष्ट्रपति और मंत्रिमंडल

: प्रो. जगदीशप्रसाद व्यास :

भारतके सविधानमें दो बातें अकेदम ध्यान आकृष्ट करती हैं। अंक तो है भारतका राष्ट्रपति और दूसरा है भारतीय मंत्रिमंडल। राष्ट्रपतिकी मिसाल अमरीकी सविधानसे ली गयी है, किन्तु मंत्रिमंडलका निर्माण ब्रिटिश सविधानके अनुरूप है। अिन दो विभिन्न प्रणालियोंको किम तरह भारतीय सविधानमें संयुक्त किया गया है ?

यह राजनीतिके विद्याधियोंके लिअे अध्ययनीय है। अध्ययनीय असिलअे है कि अिन दोनोमें अेक बहुत बडा विरोध है, अमरीकी राष्ट्रपतिका अुत्तरदायित्व अेकांतिक है, व्यक्तिगत है, किन्तु ब्रिटिश मंत्रिमंडलका अुत्तरदायित्व सामूहिक है और यह सामूहिक अुत्तरदायित्व असि प्रणालीका मौलिक अधार है। किस तरह अिन दो विरोधी आधारोंके बीच राज्य अेव प्रशासनकी कार्यवाहियां चलेगी यह विचारणीय होगा। भारतका सर्वधानिक प्रधान कार्यकारी तो राष्ट्रपति है, परन्तु प्रधान सत्ताधिकारी है प्रधानमंत्री, और असिमें अेक अुलझन और भी है, वह यह कि राष्ट्रपति मंत्रिमंडलके सदस्योंमें स्वतंत्र और प्रत्यक्ष भी संबध रख सकना है। प्रस्तुत निबधमें हमारे संविधानकी असि परिस्थितिपर तथा राष्ट्रपतिकी पदसत्ताओपर विचार करना अुद्देश्य है। असि स्थितिके दो पार्वं हैं। पहला राष्ट्रपति पदके लिअे वोटोंके समूहोंपर मंत्रियोंका प्रभाव और तदभूत तानेबाने तथा, दूसरा मंत्रिपदपर नियुक्त हो सकनेके मामलेमें राष्ट्रपतिका हाथ।

अध्ययन करनेपर मासित होता है कि यद्यपि राष्ट्रवा सर्वधानिक कार्यकारी अरु राष्ट्रपति है परन्तु अमल सत्ताधारी प्रधानमंत्री ही है। अतः जब यह कहा जावे कि सर्वधानिक दृष्टिमें प्रधानमंत्री तंत्रीक पदास्थ रह सकना है जबतक कि राष्ट्रपतिकी मर्जीको यह पसन्द है तब अुसका मतलब यही होता है कि

राष्ट्रपतिकी मर्जी असि समय लोक-सभाकी मर्जीका ही दूसरा नाम है। असलमें विधान कारिणी प्रत्येक कार्य-कारिणीमें अूपर पदपर आसीन है। व्यवहार रूपमें सविधानके असि वाक्यका यही स्वरूप पेश होना चाहिअे और अुसीके अनुरूप परम्पराओंका निर्माण भी होता चाहिअे, असिके अतिरिक्त प्रधान मंत्रीके हाथोंमें और भी महत्वपूर्ण सत्ता है। अन्य मंत्रियोंकी नियुक्ति राष्ट्रपति प्रधान मंत्रीकी सलाहसे ही करेगी। यहीअर ध्यान देने योग्य शब्द-समूह है "प्रधान मंत्रीकी सलाह अैसे राज्यके प्रधान कानूनी अधिकारीकी हैसियतसे राष्ट्रपति नि सदेह असि नियुक्तिपर कुछ न कुछ असर डालेगे ही। कमी वे किसी खास व्यक्तिको मंत्रिमंडलमें शरीक करनेपर जोर देंगे तो कमी किसीका नाम अलग करनेपर, परन्तु आमतौरसे अुसमें अतिम निर्णय प्रधान मंत्रीकाही होगा। अिअर भारतीय सविधान असि बातको स्पष्ट कहना है कि प्रधान मंत्री राष्ट्रपतिकी राष्ट्रके शासनमें मदद करेगा, डिस्टेट नहीं करेगा। अतः असि स्थितिमें दोनोंके अधिकारकी सीमाअे अस्पष्ट अेव अनिर्दिष्ट है।

अनायास हमारा ध्यान अन्य देशोंके प्रधान मंत्री और राष्ट्रके प्रधान सर्वधानिक कार्यधिकारीकी ओर जावेगा। अिलैंडका प्रधान मंत्री बराबरीवालोंमें पहला आदमी गिना जाता है। भारतमें अभी अुसने यह पोषीशन हासिल नहीं की है। जिन परिस्थितियोंमें मिलाकर हमारे प्रधान मंत्री प अवाहलाल नेहरूको अेक देवता, अेक विरमका 'हीरो' बना दिया है, अुनका लालन-पालन भी कुछ अैसे ढगना है, कि अुनकी अनेक कमजोरियोंके बावजूदभी वे जनताके लाडले हैं। और अपनी असि लोकप्रियताको वे सूब जानने तथा महसूस करते हैं। अदाज यह हुआ कि सरदार पटेलको छोड़-कर बाकी लगभग सब मंत्री बहुत नगण्य पडे। यदि आत्म-सम्मानवाले व्यक्ति हूअे तो अपने सिद्धांतकी

बाल कहरर मन्त्रिमंडलमें सहर्ष रजसत होना पसंद करने रहे। जिस ढंगसे ९ अप्रैल १९५० के पाक भारत समझौतेको लेकर प्रधान मंत्री और निमोगी तथा श्यामाप्रसाद मुखर्जीके बीच मतभेद हुआ और अिन दोनोन मन्त्रिमंडलके बाहर जाना ज्यादा श्रमस्वर समझा वह बड़ी खतरनाक घटना थी। पणित नेहरूजीका बाल्मी वाका न हो सका। अंसा परिस्थितिका मतलब यातो यह हुआ कि भारतवर्षका प्रधान मंत्री, अमरीकी प्रेसीडेंटकी नाथी अगने अय सहयोगियोंकी अपनी मर्जीका कठमुनली समझता है या यह कि भारतके प्रधान मंत्रीका मन्त्रिमंडल अंसे लोगमें भरा हुआ है कि जिनके अाने जानसे न तो पार्टीमें काअी हल्चल होनी है और न पार्टी अुह-ह व ह्री देती है। साथ ही अित परिस्थितिमें हमारा सविधान जिस सामूहिक जिम्मेदारीका दम भरना है वह भी बरबरार नही रहनी। जिस ढंगसे ये दो मंत्री ठकसत हुअे अुससे सामूहिक जिम्मेदारीका सिद्धांत बहुत षटाअीमें षडता है।

मन्त्रिमंडलकी सामूहिक जिम्मेदारीके प्रसंगमें हमें अपने सविधानकी अेव और वातका ध्यान रतना आवश्यक है, भारतीय राष्ट्रपतिको ससदने अवकाश कालमें आडिनग जारी करनका अधिकार है। अंसा समझना चाहिये कि वह आडिनस राष्ट्रपति अपने प्रधान मंत्रीकी सलाहपर जारी करेगा। परन्तु यह भी तो सम्भव हो सकता है कि वह अुसे किसी भी अग्य मंत्रीकी सलाहते जारी कर दे ? राष्ट्रपति सीधे बिना प्रधान मंत्रीके मध्यस्थ हुअ किसी भी मंत्रीको अपन पास सरकारी कामन बुला जोर विचार विनिमय कर सकते हैं। अिअेडमें सम्राटका सत्रघ प्रधान मंत्रीके सिवा किसी अग्य मंत्रीसे राजकीय मापनामें सीधा और मयकप नही होता। जो कुअ भी हाता है वह प्रधान मंत्रीसे ही। भारतीय सविधानकी धारा सध्या ७८ स के अनुसार हमारे देशमें अंसा कोअी बधन नही। मन्त्रिमंडलकी सामूहिक जिम्मेदारीके प्रसंगमें हमारे सविधानकी यह धारा बड़ी असाधारण है, क्योंकि अिससे षडबडी गुजाअिस है। राजकीय कायोंमें अिस तरहसे राष्ट्रपतिका हाथ बडा सबल और प्रभावशाली होगा।

सयुक्त मन्त्रिमंडलके साथ तो यह सत्रघ मजबूती ढा सकता है और राष्ट्रपति लगभग स्वयंही प्रधान मंत्रीके भाग्यविधाना वन सकते है। यह प्रणाली अंग्रजी कंविनट प्रणालीके विरुद्ध है तथा मन्त्रियोंकी स्थितिका भलही मजबूत कर दे, प्रधान मंत्रीको तो वह कमजोरही बनती है। अित तरह सविधानने अेक कठिनाअीकी अुलझन णा दी है। अगर प्रधान मंत्री अपन सह्योगियोंसे साथ कुछ सक्ती कर नो मंत्री राष्ट्रपतिके साथ धुरी कायम करके प्रधान मंत्रीको अुलझनमें डाल सनेग। अिअर प्रधान मंत्रीकी अुलझनमें डालकर रजत अयवा अपनेही अगुलमें फाने रहनेका प्रलोभन राष्ट्रपतिके लिअे बहुत अधिक है।

वात यह है कि राजनीतिमें सत्ताधिकारके पीछे पाटियों-पाटियोंमें, पार्टीके गुट गुटोंम और गुटोंके अ्यक्ति अ्यक्तिमें—कसमकस चअाही करनी है। अिसलिअे भारतीय राष्ट्रपतिका भविष्यमें क्या स्वरूप होगा, यह यद्यपि परिस्थितियापर अवअरित है तथापि आज विचारणीय है। भारतके प्रधान मंत्री और राष्ट्रपतिके बीच कसमकसकी परिस्थितिया अवश्यही आवगी। राष्ट्रपति प्रधान मंत्रीकी सलाहमें वाध्य रहे अयवा न रहे यह प्रर अितना बानूनका नही जितना कि अुचित परपराअी और रुडियोंके निर्माणका है। हमें यह निर्माण करना होगा, आज कानून चाहे जो बह रहा हो। यह कसमकस तब और भी गभीर होगी जब राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री विभिन्न पाटियोंके अ्यक्ति होंग। अिन परिस्थितियोंमें राष्ट्रपति अिअतीफकी धमकीका अवश्य ही अुपयोग करेग। यदि राष्ट्रपतिन अिअतीफकी धमकी तो सविधान अुस परिस्थितिका क्या अिलाज करता है, वह भी विचारणीय है।

भारतका राष्ट्रपति फिरसे जिननी बार चाहे अुतनी बार चुनावके लिअे षडा हो सक्ता है। अिसमें कोअी सर्वैधानिक आपत्ति नही अुठती। फिर भी अुसका स्थान रिक्त ही रहना है। सविधानको देणकेपर अुसकी चार हालत जाहिर होगी हैं—पहली तो है षचवर्षीय अवाधकी समाप्ति, दूसरी है मृत्यु अयवा

कोओ निकम्मा बना देनेवाली घोर बीमारी, तीसरी खुसका अिस्तीफा, और चौथी अिम्पीचमेंट-महाभियोग । अिस तरह जगह खाली होनेके छह महीनोके भीतर खुसका दूसरा चुनाव होना आवश्यक है । अमेरीकामें अिन हालतोंमें बाअिस प्रेसीडेंट प्रेसीडेंट बन जाता है । परन्तु भारतवर्षमें अुपराष्ट्रपतिके रहते हुअे भी नवीन चुनावके विना स्थायी राष्ट्रपति नहीं हो सकता । अुप-राष्ट्रपति केवल अत्रिम कालमात्रके लिये स्थानापन्न राष्ट्रपति हो सकेगा । हमारे मविधानकी यह धारा मुख्य गडबडकी है । होना तो अमरीका जैसा ही था, क्योंकि मान लीजिये कि कोओ राष्ट्रपति थोड़ा कम भीमानदार है । दूसरा चुनाव जीतनेकी अुम्मीद नहीं दिखती ? परन्तु अिसमें पदलोलुपता विद्यमान है ? तब वह कुछ समयके लिये तो अपनी कार्यावधि अवश्य ही हिकमतके साथ बढा सकता है । वह या तो ससद भंग कर देगा या किसी राज्यकी विधान-सभा भंग कर देगा, और जब तक पूरा निर्वाचक-मण्डल फिरसे चुनकर नहीं आ जाता तबतक शानसे गद्दीपर बना रहेगा । हमारे सविधानका कहना है कि जबतक दूसरा राष्ट्रपति पदस्थान नहीं हो जाता (मोनकी बात छोड दीजिये क्यों कि अुसमें अुपराष्ट्रपति स्थानापन्न हो ही जाता है) तबतक पुराना राष्ट्रपति अपनी गद्दीपर बना रहेगा । अतः, कतिपय सविधान पटितोका सुझाव है कि जो बात राष्ट्रपतिकी मृत्युपर लागू होकर अुप-राष्ट्रपतिकी पदाब्ध करा देनी है, वही बात अन्य तादृश परिस्थितियोंमें समब होनी चाहिये ।

साधारणतः राष्ट्रपतिका स्थान सान्नी तो नहीं होगा, अंसी अुम्मीद हमें करनी चाहिये, परन्तु यदि मानलो किन्हीं कारणोसे राष्ट्रपतिकी जानबूझकर पद खाली करनेके लिये मजबूर होना पडे ता अुम अवसरपर अुपरोक्त सुझाव काम आवेगा । सान्नी होनेके कारणोंमें अिस्तीफा सबसे महत्वपूर्ण है, परन्तु अिस्तीफेकी हान्तरमें अुपराष्ट्रपति पदाब्ध हो जाये अंसी व्यवस्था सविधानने नहीं दी । सविधानमें यही कहा गया है कि दूसरे राष्ट्रपतिके चुनाव तक पुराने राष्ट्रपति ही पदाब्ध रहेंगे । यह शेष हागा । यदि वे पदाब्ध होनेके लायक

ही होने तो अिस्तीफेकी नीवत ही क्यों आती । कहनेका तात्पर्य है कि अिस्तीफेके कारण बहुत जबरदस्त होने चाहिये । अेक कारण यही बीमारी हो सकती है । अखटम अेडवर्डक पदत्यागकी जैसी कोओ परिस्थिति भी आ सकती है जब सर्वधानिक सक्त खडा करनेके बजाय, राष्ट्रपति स्वयं मन्त्रिमण्डलके सामने आत्ममर्षण कर अिस्तीफा देकर चला जाना चाहे । अंसी ही किसी परिस्थितिमें खुसकी पार्टी ही अुसे अिस्तीफा दे देनेके लिये आदेश दे सकती है । तीसरी यह भी हालत हो सकती है कि आनेवाले अिपीचमेंटसे बचनेके लिये वह खुद बाहर चला जावे । चौथी यह है कि राष्ट्रपति प्रधान मंत्री अेक मन्त्रिमण्डलको घमकी देना चाहता है । घमकीके जरिये लोकसभाके बहुमतको किसी गभीर विषयपर अित मत हो नसीहन देना चाहता है कि वे अपनी स्थितिका नाजायज फायदा अुठा रहे हैं, अिसलिये लोक सभाको भंग करनेके बजाय अुनकी पोल खोलनेके लिये सविधानके अभिभावककी नाभी यह खुद अिस्तीफा दे ।

राष्ट्रपतिका त्याग पत्र

सक्रिय राजनीतिमें सबसे महत्वपूर्ण घटना राष्ट्र-पतिका त्यागपत्र है । क्योंकि अिस तरह राष्ट्रपति किसी सर्वधानिक विवादको सामान्य नागरिकोंके दृष्टि-केन्द्रमें लाना चाहता है और साथ ही यह भी चाहता है कि प्रधानमन्त्री, मन्त्रिमण्डल और अुसके बीचके अिग संद्धान्तिक प्रश्नका निबटारा लोक सभा करे । वह समझ सकता है कि अमुक मामलेमें अुमका मत ठीक है और मन्त्रिमण्डलका गलत, परन्तु अिनना गलत नहीं कि वह सदन-भंगका कदम अुठावे । यह भी हो सकता है कि प्रधानमन्त्रीका अ्बवहार ठीक न हो, और अुसकी पार्टीके बहुमतका स्वामी होनेके कारण राष्ट्रपति अुसे डिमिशन करके स्वामन्त्राह पूरी लोक-मन्त्रिणी ही दुरमनी और अीर्ष्या तथा बोराका भाजन बन रहा हो । वहनेका मतलब यह कि राष्ट्रपतिके पाम जब अरानी शिफायत पेट करनेका कोओ भी अन्य साधन न हो तब वह अवश्य ही अिस्तीफेकी घमकीका आश्रय ले सकता है । अिपर अदालतोंकी भी अिन मामलोंमें हस्तक्षेप करनेका हक हा मिल न होनेसे

राष्ट्रपति केवल अपना अिस्तीफा ही देना कर सकता है। कहा जाता है महारानी विक्टोरिया जिन घमकीका कासी लाभ बुढाका विराधी मत्रिमडलमे भी अपन काम करा लिया करती थी। अत यदि अंसा अदमर आ जाअ वा राष्ट्रपतिने सामने अिस्तीफा पेश करनेके अतिरिक्त और कोअी सुपाय नही। अेक दफा अिस्तीफा दे देनेपर सविधानने अिस्तीफेके वापिस होनेको राअी गुआअिद नही है जो होनेी चाहिअे थी।

राष्ट्रपतिकी अपने मतभेद ससदके सामन रखने और संसदका मत लेनेकी गुआअिद दी जानी चाहिअे थी ताकि वह अपनी विजयक प्रसगमें मत्रिमडलका डिमिंस करे अंसा पराजयके प्रसगमें खुद बाहर चला जाअे और निर्वाचक-दलको दूसरा राष्ट्रपति चुनना मीका दे। कमसे कम अिस्तीफा मजूर या मभून होनेके बीचकी अवधिमें अुमे पदपर नही रहना चाहिअे। राष्ट्रपतिका अिस्तीफा पस होने ही अुपराष्ट्रपतिकी पदासीन करा देनेकी सुविधा सविधानमें हीनी चाहिअे थी।

अिस तरह राष्ट्रपतिने अधिकारोके सवधनकी पाल करनेपर जिजाया बुढी है कि भारतीय राष्ट्रपतिने डिप्टेटर होनेकी सभासनामें क्या न बड़ जाअेंगी ? यो ही अ-पगगयना, पिडडी तथा आदिम जातियाके कटाणको विरोप जिम्मेदारीके वारण अुसे विरोपाविचार प्राप्त है सर्वपाणि मुक्तपाअें हामिल है तथा अिनि-निधियोंकी समदमें नामजद करनेरा भी अधिकार है। समदमें अपना सदेश भंजनेका भी अधिकार है। यह अधिनार अयेजी सम्राटको भी नही। अिन्डेअमें सर्वपाणि सविधाने सुताविन सारे मत्री और प्रधानमत्री पार्लिमेंटमें वहीनियत सम्राटने नोकराके है और अुसकी आज्ञाका पालन करते है। अगर सम्राट कोअी विधेय (बिल) अपने सदेशके साथ फिरम पार्लिमेंटके पास भेजे तो अुसका मतअन यह होगा कि अुसे अपने मत्रिमडलमें अिस्वास नही। यही हाल हमारे राष्ट्रपतिका भी समक्षिअे। अिन्डेअमें विधेयक (बिल) वापिस भंजनेरा अधिकार दूसरे सदसको है, सम्राटको तो सीधा अुसपर दस्तपत करनेरा अधिकार है। यदि वह अुसे असहमत है तो पार्लिमेंट अिनि

डिसमिन्स दूसरा प्राजिमिनिस्ट मोजना पढता है। यदि वह नही अिन्ता तो सदन भग करना पढता है और अुम परिस्वितिकी पुनरावृत्तिका मटवा पढता है अिन्ने स्टुअर्ट सम्राट पाअें प्रथमक मस्तक डेदनकी बलि जनताकी बदीपर ली थी।

हमारे देशमें भी यही होता था, विधेयक (बिलका) वापिस भजना तो बेकार है। कोअी समद और कोअी प्रधानमत्री अपनी सत्ताको दी गयी अंभी चुननी बर्दास्त नही करके आमसभण करना तो दूसरी बाद है। यदि राष्ट्रपति अिनी विधेयक (बिल) पर अपनी स्वीकृति नही देना चाहन ता वे मत्रियाको समसा-नुसा सजत है। अिसपर भी यदि वे नही मानते और राष्ट्रपति अंसा समझने है कि व सही है और मत्रिमडल गलत मार्गपर तो अिन्ह डिमिंस करना ही अेक मात्र मार्ग है। राष्ट्रपतिकी विधपाधिकारका ही अुपयोग करना होगा।

कतिपय राजनीति-मटितारा कयन है, कि राष्ट्रपतिकी सामन करना है तो प्रबानमत्रीकी मदद और गनह आवदयन है। मदद लेने तथा सलाह लेनेके अभावमें राष्ट्रपतिकी सारी सामकीय कार्यबढी अवैधानिक हो जायगी। मतअव यह है कि राष्ट्रपति अपने विशेषाधिकारका अुपयोग भी बिना प्रधानमत्रीकी सलाह और मददके नही कर सकता क्योकि वह अवैधानिक हो जावेगा। यह प्रथम सविधानक गन्दाको अुदपुन विधे और अुनका माप्य क्रिये अिना स्पष्ट नही हो सगा। अुपरासन माप्य अयवा विशादका सारा आधार सविधानकी ७४ वी धारा (१) और (२) है। धारा ७४ (१)म अिना है—There Shall be a Council of Ministers with the Prime Minister at the head to aid and advise the President in the exercise of his function.— राष्ट्रपति द्वारा अपने कर्तव्यका निर्वाह करानेक लिये, राष्ट्रपतिकी सलाह तथा सहायकके हेतु प्रधानमत्रीके नेतृत्वमें अेक मत्रिमडल रहेगा। अिसमें अयेत्रीक Shall दसपर सारा दारसदार है। अिसका अर्थ लगाया जाता है कि राष्ट्रपतिकी अपना कर्न प पूरा करनेके लिये प्रधानमत्री

तात्पर्य यह भी हुआ कि राष्ट्रपति बिना मन्त्रिमण्डलकी सलाह और सहायताके अपना कर्तव्य निभानेका अधिकारी नहीं। यदि वह ऐसा करता है तो सविधानकी अवहेलना करता है। खुसका 'अप्रीचमेंट' भी (जुर्ममें लपेटा) हो सकता है।

अब धारा ७४ (२) को देखिये—The question whether any and if so what advice was tendered by ministers to the President shall not be inquired into any Court—मंत्रियोंने राष्ट्रपतिको कौसी सलाह दी अथवा नहीं, और दी तो कौनसी सलाह दी अंसे प्रश्न देगकी किसी भी अदालतको पूछनेका अधिकार नहीं रहेगा।—अस धारामें जिस बातपर अदालतको प्रश्न करनेका अधिकार नहीं है वह है केवल 'सलाह' परतु कौसी मदद मंत्रियोंने राष्ट्रपतिको दी अथवा कौनसी नहीं दी अंसा प्रश्न पूछनेका हर अधिकारी अदालतको अधिकार रहेगा। जिसका मतलब यह होगा कि यह बयान केवल सलाह-पर लगा है, मददपर नहीं। अर्थात् राष्ट्रपतिको प्रधान-मंत्रीने कौनसी मदद दी और कौनसी नहीं अस प्रश्नपर सुप्रीमकोर्टको राष्ट्रपतिमें जवाबतलब करनेका अधिकार है। फिर यह अधिकार सिर्फ अदालतोंका है, लोकमनाका नहीं, लोकमना बमने कम प्रधानमंत्री अथवा खुसकी सरकारसे, अवश्य ही यह प्रश्न पूछनेका अधिकार रखती है कि राष्ट्रपतिने कौनसी सलाह या मदद ली और कौनसी सलाह या मदद अन्होंने नहीं ली? जवनक सविधान स्पष्ट रूपसे खुसका निषेध नहीं करता विमान-कारिण्ये अवश्य ही अम प्रश्नको अुठा खनी है क्योंकि खुसमें संविधानकी अेक धाराके अर्थका प्रश्न भी तो निहित है। सविधानकी ५३ (२) वीं और ७५ (१) और (४) धाराओंने अस प्रकारके निषेध प्रस्तुत भी किये हे जहाँ राष्ट्रपति बिना किसी सलाह और मन्त्रिमण्डलीय मददके अपना कर्तव्य निभानेकी अधिकारी है।

बढ़ा जाता है कि चूकि राष्ट्रपति अपनी स्वतन्त्रतासे बिना मन्त्रिमण्डलकी मदद या सलाहके कर्तव्य निभानेके अधिकारी है, अिसलिये अस अधिकारके अर्थका प्रश्नको परमिष्यिष्यता भी सविधानमें अित्तवान

किया है। यदि अन्हें यह स्वतन्त्र अधिकार न होता तो अुनके 'अप्रीचमेंट' की जरूरत ही क्यो पडती अिसका सविधानमें साफ-साफ निर्देश है। अप्रीचमेंटका दड अिसीलिये है कि राष्ट्रपतिको अुस प्रकारका अेक स्वतन्त्र अधिकार है, जिसमें अतिश्रमणकी समावना है और समावना होनेके कारण अुसपर अुसका जरूरी है। यदि अुसके हाथोंमें यह स्वतन्त्र अधिकार न होता तो अुसके दुस्प्रयोगकी समावना ही कैसे अुत्पन्न होती और 'अप्रीचमेंट' की दफाओकी भी जरूरत क्यो पडती? यदि राष्ट्रपतिको प्रत्येक कदम प्रधानमंत्रीको सलाह और मददमें अुठाना अनिवार्य होता तो फिर अुसके 'अप्रीचमेंटकी' गुंजाअिग और विधानकी जरूरत ही क्यो आती? वह अपने त्यागपत्रकी बमकी देकर मले मन्त्रिमण्डलको अुका ले; परन्तु वह अुनके मतेके विरुद्ध कुठ नी नहीं कर सकता। अस सबका मतलब यही है कि भारतीय राष्ट्रपति यह सलाह और मदद लेनेकी बाध्य नहीं और अिसीलिये अुसे संविधानकी अभिभावकता निभानेके लिये 'अप्रीचमेंट'का डर रखना पडा।

अिसके विरुद्ध अुत्तर दिया जाता है कि 'अप्रीचमेंट' का अस्त्र सविरानने मौजूद है परन्तु अस दगसे अुसने अिसे संचालित करनेकी प्रणालियाँ और धारीकियाँ निवारित की हे अुसने यह स्पष्ट है कि अुस अस्त्रका प्रयोग क्वचित ही किया जा सकता है। अन्य देशोंका अनुभव भी अिसी तथ्यका समर्थक है कि सार्वभौम अेक दफा कौसी भी महान् राष्ट्र अने सर्वोच्च राज्याधिकारीको अप्रीच करने (जुर्म लगाने) की लाचारी स्विकार करेगा। अत वटी किसी सगीन अवहेलना और संवैधानिक अपराधपर ही अस अम्रका अुपयोग होगा।

यदि राष्ट्रपति बहुत ही अिस सलाह और मददका अुल्लेखन कर रहा है तो भारतीय सविधानकी ५३ (३) व धारामें अुसका अित्तवान है। 'अप्रीचमेंट' की नोबत बिना लाने की सुधदकी अधिकार दिया गया है कि वह राष्ट्रपतिको अुसके सारे या अंशतः अधिकारोंमें बचित कर अुन अधिकारोंमें अुपयोग किसी अन्य व्यक्ति या अधिकारीकी दे दे। अिस दफाकी मानहतीमें सुधदकी

राष्ट्रपतिके 'अपीच' करनेकी जहरत नहीं। शायद ही कोश्री असा राष्ट्रपति होगा जो खामरुवाह समदका विरोध मोल ले। परन्तु प्रश्न यह है कि जमरीकी सविधानकी यह नियमन (Checks) और तुलन (Balances) की प्रणाली अधिकारीकी सुस्पष्टता और सुनिश्चितताको खटाभीमें न डाल दे? यह समझना पठिन होगा कि सर्वोच्च और अंतिम अधिकार विधान-कारिणीको है या राष्ट्रपतिको अथवा प्रधान-मन्त्रीको? यह कहना कि सर्वोच्च अधिकार नागरिक-वर्गको है व्यवहारकी राजनीतिमें कोरी बकवास है। आजकी दुनियामें ससारके किसी भी राज्यमें प्रत्यक्ष प्रजातंत्र सफलतापूर्वक न तो चल सकता है और न चलाया जाना अभीष्ट ही है।

अिन शकाओकी अुठानेका अुद्देश्य केवल अिनता ही है कि अन्य राजनीति शास्त्री अेव राजनीतिके पंडित

अिनमे सवधित विवेचनको सागोपाग रूपमें राष्ट्रभाषाम प्रस्तुत करे। हमारा सविधान अभी विलकुल बच्चा है अुसे प्रौढ होना है। जिमीलिअे अिन तमाम अयटाअे भुजूरना होगा। सविधानके राष्ट्रपतिका फेंच-प्रेसीडेंट जैसा भविष्य होगा, अथवा अंग्रेजी सम्राट जैसा, अमरीकी प्रेसीडेंट जैसा, या अंग्रेजी वाअिमराय जैसा, कुछ भी अभी निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता, बवोकि ये तमाम बात भावी राष्ट्रपतियोंकी प्रतिभा, व्यवित्तव और अुनकी महानतापर निर्भर हैं। हमारे सविधान निर्माताअोंने ससारके सभी सविधानों अेव राज्याधिकारियोंकी श्रेष्ठ विशेषताअोके तत्वोको समवेत करनेका अम भव प्रयास और महत्वाकांषाको सामने रखा है।

(पृष्ठ सहवा १७१ का शोपास)

होती। कालिदासने कुशलतापूर्वक ऋग्वेदकी कृष्णान्त मूलकथाको दोनोके पुनर्मिलन द्वारा सुखान्त बना दिया है।

लेकिन अिस कवि कल्पनावी योजनासे अुवंशीके हृदयका बाटा नहीं निकला। पुररुवाका सहवास योचमें ही छोडकर स्वर्गीय जीवनसे भ्रम्य मुरसुदरीका मानवीय जीवनके प्रति वही आकर्षण बना रहा और सहयो वर्षोंके पश्चात् जब पुररुवाका पराजमी वराज अर्जुन अस्त्र प्राणिके लिये देवलोक गया, तब देवेन्द्रकी सूचना-नुसार अुवंशीने अुसकी तरफ अुत्कठा भरी नजरासे देखा। लेकिन मानव समाजकी नैतिक कल्पनाअोमें हूवे अर्जुनने अुसे अपनी कुलजननी समझकर अुसके प्रेमको अस्वीकार किया। अप्सराअें काल और नीतिकी मयाश

से परे होती हैं, अिसके सत्यको अर्जुन नहीं समझ सका। प्रणयरीडिन अुवंशीको यह प्रेम-भग महन नहीं हुआ और "तू वर्षभर नपुमक रहेगा" यह कठोर शपथ अुसके सामने अिनघटनासे सडे अर्जुनको स्वीकार करना पडा। अुवंशीके नैराश्यपूर्ण जीवनका यही अंतिम सस्मरणीय प्रमय है।

रवीन्द्रने सत्य ही कहा है—

"नहमाता, नहकन्या नहवधु,

सुन्दरीरूपमी हे नवनचासिनी अुवंशी।"

अिसीलिये लगना है कि अुवंशी अुत्तरोत्तर परिणत होती हुआ मीदर्य-कल्पनाअोका प्रतीक है। वह न स्त्री है, और न अप्सरा है।

पतंग कट गयी

श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

मिया जयशंकरजी बुन व्यक्तिपरामर्शे एक प कि जिन्हीन जन्म तो पौरुषीमें पाया परन्तु अपन पुत्र-पाथ बोर बुद्धि चानुपक द्वारा चौवनकी भरो दोरहरा बोर प्रोडावम्पाकी सान महलामें व्यतान बा । मिया अशफाकजगीके बुद्धि बना बल-ताकी सचारी भा नहो पा सके, लकिन अशफक मियाक पाथ धाना-बन्धी मोरें । सचात्री यह थी कि भाग्यक परोगसे मियाजीन अान सनकी जिस प्रकार देवा वह खुहें अनुभव ला । परन्तु भाग्य बरुडा था या नही यह ता किसी ज्योतिषीको ही पता चल लकिन जितना अवश्य था कि अशफक मियां दूरदेग थ हवाका रख पहचानते थ, कहाचित यही कारण था कि व नवात्र साहबके दरबारमें नोकरी करके सामारण नुगीन बजोर बन स्य । निरुचप ही अशफक मियान चौवनकी बीडमें अवन बहूतन साधियोंको गिरम्य बी—पराज्य प्रदान की । वह अंत भाग जितन नज चल कि अन् ही सगानमें ला निकल गय । नदाबकी नाकका बाल बन गये, क्या मनाल कि रिपासतका पन्ना अुनकी मर्जीके खिलाफ हिल । व अशफक मियां कि जितन घरमें पहननक लिख ठीकन स्य नहा चूह-बौकमें बउन नही अुनक अज ठाठ कि क्या राजा-नदाबोंके हा । चौबीस घण्टोंमें किता अक समय नदाब माहबका दरबार जन्म लाता परन्तु मियां अशफकजलीका दरबार असा था कि जा प्रात म रातके बारह बजतक चहकता हया अुस दरवारका अक अजोब ठाठ था । मियां साहबकी अर परम्प्रा बोर नामलता का वह अक अजा नमुना था कि जो कजा सदी पाउक नवाबोंका याद दिलाता । अशफक मियांके हाथमें राज्यके प्रथक व्यक्तिका भाप था । अुस भाग्यका हसना राता बनना बिगडना अशफक मियांकी अिच्छापर निभर था ।

बुद्धि अशफक मियांका बचान छान सबकक कानमें बाता, जिसलिअ अुसाक अनुभव मनारदन

बोर खल दूदका भी बुहें गीन ला । मियां अशफकन बचपनमें दरबारकी तीतरबाबा बा । बुलबुल भी बहूत दिनतक बुडायो । साप ही पतंगबाजीका शौक भी मिया लखिन उस ज्यों अवमें पैसा पाता था, जावनका स्तर बडता गया तो अुसी अनुगत सगोंका शाक भी पटता-बडता गया । अनी दीवना खतन हा थीं । परन्तु पतंगबाजा चालू स्य । पतंग बुडानमें मियां अशफक जितन चतुर बन कि दूरदूरक पतंगबाज अुनस पता लडान अवन ला । जब जब अुनकी बाजी बडा बाजी लाता, ता दणक भा बगी तादादमें जात । पता लूटनवाल भी अानमनका बोर निगाह अुठात ।

अहनका वह जाअक अराम-अुडडका खल था परन्तु अुसपर ह्य, अशफकमियाका हवागें गया खब होता । जब बाबा विच्छि बाजी लाता, ता महनों पहिलस पतंगका डार तीवार का जाता । कजा कमी जादना काम करत । अुनका रोडा चलाता । जब बाबाका दिन जाता तो विच्छि दाकोंके लिअ खातिरपारका प्रबच हाता । पान दिरारे ता मानुला बत । अनी अान चीनका भी अिन्दराम जिदा स्या ।

अज अवसरपर मिया अशफकका बानका भी फुरजत न हाता । दास दासिदा ठीकन काम कर रह है, या नही, मह अुहें दखना पडता । नहननोंका पान दिरार बोर मिठाअीकी ताकतियां पड़ेवा ह, कोअ रह तो नहीं स्या है मह दखना अुनका काम था । यदनि बगबहाहिवा परदमें रहना अुनक अिच्छिदार करती परन्तु अने समय अिलमिल करता हुआ चिलननस दना बहर भा निकल जातीं । वह रूका पय व नहाय निगाह कनी महमानोंका भा अिज जातीं । किन्तु रिखता यह था कि बज-दिवाय जितना बडा दाम निरर अुसाका बामका पसन्द नहा था । अुह किअ दाकका नरता

था कि असे अवसरपर ही नौजर हाथ साफ करने ह । मिया अफाकके दोस्त भी अपनी चाउबाजीमें न वृक्ते ! असिअिअ बगम और मियांम अस पतंगराजी पर प्राय झगणा होता । मनगुटाव हाता । कभी कभी तिनोनक बोठना बढ रहना । असका परिणाम यह होना कि प्राय छोटी मोटी पतंगबाजिया चुपचाप ही हो जाती । अउनका बगमको पना भी न चत्न दिया जाना । किन्तु बगमकी ओ पुरानी लौडो धी वह बाहरकी सभी खबरे बगमको सुना देती । वह नित्य बता देती कि आज अफाकमियांन किनन पतंग काट अउनक कितन बट ! और स्वय अफाकमियांनका मत यह था कि पतंग जय आकाशमें अुत्ती है अूची जाती है तो निगाहे भी अूची होती ह । दिमागमें अक अजीब प्रकारकी बिरबन और सिहरन पदा होती है । प्रतिद्वदीका पतंग किस पेंचसे बाग जाअ और कितनी डीली रबी जाअ और कितनी सरत असे पतंगबाज ही जानना है । अस बाजीका लगनवाला दुनियाके जीवननपत्रम अय खलनवाली बाजियोसे भी अपना सम्बन्ध रखता है । अुनमें विजयी बनता है ।

जो हो अस गर्वोवितका कोओ और पतंगबाज प्रमाणे दे सके या नही पर तु स्वय मिया अफाक अपनको पेश कर सकने थ । और वे अस बातको बतते कि म हूँ अक सफल पतंगबाज — जीवनका अक निपुण खिलाडी — न हारा न पीछ हटा ! चला तो चलता गया । दीडा तो दौडता गया । भेरा भाग्य खला तो खुलता गया ।

अस प्रकार जीवनके खलमें पतंगबाजोके खलमें सिद्धहस्त मिया अफाक अनी जब विजयपर विजय पाते गय, तो वे जल्दी ही सामान्तवाणके सप क बन गय । जीवनके भोग भोगन लग । चादी और सोनकी चमकमें चौबिया गय । यद्यपि अफाकमियांकी शिक्का शैबया अधिक नही थी परन्तु अनुभव जानम वे माना स्वय सिद्ध हो चके थ । चूकि बचपन गरीबीमें बीता यौनन भी गरीबीक धपेड खाकर बिचलित हुआ तो तब वह अपन साधियोसे प्राय अस बालकी शिक्षामत करते

वे कहने कि गरीबीका जीवन जीवन नही अस जीवनमें शानि और चन नही । मानो मोन । दु मट पीण । अस प्रकार अफाकमिया न केवन् साधियोमें कहने अपितु वे नवाबकी अुम गियामतम बतकर भी नबाबके विरुद्ध जनसमाजको भडवाने ! वह विद्रोह खडा करते ! गर्वो कस्वाकी समाजोम भापण देते और चिागर और लोपोको मुनाते, मजूर मर रहा है किमान मर रहा है ! अिनके जीवनका परिश्रम बकार जा रहा है । अिनका गोपण हो रहा है ! नबाब मोटा हो रहा है । अवश्यके भोग भोग रहा है ! वह गुरां रहा है ! कदाचित यही कारण था कि मिया अफाक अलोको अक बार रियासतकी पुलिसन पकटा और बपभरके लिअ जलम ब द कर दिया । अस जलमें रहने हुआ अफाकमियांन जब कदियाका सम्पक पाया चोर डकतको निबटसे देखा तो अु होन समाना कि हाँ, चोर चोर नहा । डाकू डाकू नही । गुण्डा गुण्डा नही । य सब पूजीवाणके पथरीले महलोमे निमित्त किय गय ह कनुधानुरके पेटपर लत मारी गयी तो वह मचन्ना रोया । अिन जब वह निर तरके अत्याचारसे पिसन उगा तो अुनमें भी प्रतिरोध पदा हुआ ! पूजीवादन जिस चालाकीसे अुमका गोपण किया तो डाकू गुण्ड और चोरन अुमी निभ यतके साथ सचित घनको पाया अुनके मालिकका पून किया । बयोकि मियां अफाकन अुन दिनों अपन मनमें अस विचारका भी मूजन किया कि पसा समाजका है — प्रत्यक अ्यक्तिको अुमे भोगन और पानका अधिकार है । पसा और श्रम विभक्त नही । अतभव जो श्रम करता है पहिले असका अधिकार है । जो श्रम नही करता वह अधिकार नही रखना । वह श्रर बनता है । मदा थ भडिया । बबर हिंस बना हुआ यठ विठाय ठगी करता है गोपण करता है । ब्रहन और दुनी समाजका देखकर ही ही करता है दल निपोरना है मूल ।

किन्तु विद्रोही अफाकके समान नबाब भी चलुर था । वह मूल नही था । जब अफाकमियांकी जल अवधि पूण हुआ तो अुमन बाहर आकर दखा कि घरकी अवस्था खराब है । पहिले से ही बन्तर है ! बूडा बाप

भर गया, बुद्धिचा माँ है। अुसके पास भी रोटियोका आधार नहीं। अिगलिअे, अशफाकने पहिले माँकी ओर देखा। जीविकाके हेतु प्रयत्न किया और वह नबावके यहाँ मुन्शी ही गया। नबावने देवा और मूसवरा दिया। अुसने अनायास समझ लिया कि कुत्तेके सामने टुकड़ा डाला और वह पूँछ हिलाने लगा।

विन्तु अिम प्रकारका अुगालम्म पाकर भी, मियाँ अशफाकने मनका विद्रोह अभी गरम था। वह शांत नहीं हुआ। वह किसी न किसी रूपमें नवावशाही, सामन्तशाहीके विरुद्ध जहर अुगलता रहा। अशफाक मियाँ करते रहे, यह त्रातिका युग है.. विद्रोह करना ही, आजके जन-जनकी वाणी है। अुस वाणीमें आग है। टीस है ! तडप है ! क्यों ? किसलिअे ? अिसी-लिअे न कि मानव त्रपित है, पीडित है। अधिकारोंसे भ्रचित है। धरती तो सबकी माँ है। सभीके लिअं अपने अुदरसे अशीप देती है। अत प्रदान करती है। यह विराट-प्रकृतिका स्वरूप, जो शोभायमान है, दिख रहा है, आसिर क्यों ? क्या किसी अेकके लिअे ! किसी नबाव राजाके लिअे ? न, सभीके लिअे ! आसमान सभीके लिअे ! सूर्य चन्द्रमा सभीके लिअे ! अिनमेंसे किसीका भी बँटवारा नहीं ! किसीके पास अुपेववा या दुखाव नहीं ! प्रकृति मुमकरानी है और सभीको जीवन देती है। नव-जागरणका पाठ देती है ! गरीबकी छोपडोंमें भी चाँद शाकिता है, सूर्य प्रकाश देता है। फिर यह अवरुह क्यों ! अिगसानकी अिगसानके प्रति अुपेववा क्यों ! अिगसान गबिन क्यों ! अीपित क्यों ! वेंअीमान क्यों !

परन्तु नवावका पँसा, वंभव, जब मियाँ अशफाकने सभीपसे देखा, अुस जगमगाहटमें अपनेको विपन्न पाया, हीन पाया, तो नि सन्देह, अशफाकने मनमें भी यह भाव आया कि वह भी अँसा होता तो ? वभवशाली बनना तो ! और मानो अशफाक मियाँका भाग्य अिस भावनाको समझ रहा था। वह स्वय आँस-मिचोनी करनेके लिअे अुद्धत था। नि सन्देह, वह भाग्य अपने अशफाकके प्रति सहृदय और दयालु बननाही पसन्द करता। फलस्वरूप, नवावके दरबारमें अशफाक

मियाँको अेक-के-अर दूसरी तरक्की मिलनी चली। आमदनीके अन्य जरिये भी खुलने चले। वह अशफाक, जो अेक दिन खुले स्वरमें समाजकी चोरी और लूटका विरोध करता, वह स्वय मानवके अभावने खेलने लगा। जिने राज-दरवारमें काम कराना होना, अशफाक अुसकी जेब देखता। अुम जेबके पँसोंको परखना चाहता। वह यह समझनेके लिअे अुद्यत होता कि जो काम अुससे करवाया रहा है, अुमका मोल क्या है, अुसे क्या मिल सकता है। अिस प्रकार मानो पँसेकी मोहकताने जो अुच्चान-मन्न अशफाक मियाँको पढ़नेके लिअे विवश किया, निदयप ही, वह स्वय अपने-आपमें अितना हलका नहीं था जो आसानीसे भुलाया जा सकता, मन या दृष्टिसे अीवल किया जा सकता ! क्योंकि अुस मन्त्रके द्वारा ही तो पँसा आता ! और पँसेका अर्थ था, शरीर और मनकी अिन्द्रियोका भोग ! समूचे जीवनका भोग ! जिह्वाका भोग ! आँखाका भोग ! शरीरका भोग ! और अुस भोगकी तृप्तिके हेतु जब अशफाकमियाँ पँसा प्राप्त करने लगे, वह पँसा अवरिल धाराके समान बहना हुआ अुनकी तरफ अने लगा, तो तब, मियाँजीने समझा कि हाँ, यही है जीवन-माफ्क्यका परम और श्रेष्ठ सोपान जो अब पाया है, अब मिला है।

विन्तु बहावत है कि जब आदमी तरक्कीकी ओर आता है, अुमे सफलता मिलनी है, तो वह अँचाअीकी ओर ही देखता है। नीचे नहीं देखता। मूडकर नहीं देखता। तब वह अनुभव नहीं करता कि अेक दिन वह भी भूला था, नगा था। छोपडीका वासी था। क्योंकि कामनाओंके अुस भीडमें, अरमानोंके दहकने हुअे अुन अगारोपर चलनेहुअे, भला अितनी चेतना वहाँ कि आदमी सोचे, हाय ! विवशताओंका अेक दिन वह भी गिजार था। वह भी विवशताओंका दास बना था ! अतअेव, मियाँ अशफाकअलीको जब सफलताअें मिलनी चली, दृष्टि अूर होती चली, कामनाअें बढ़नी चली तो अुन्होंने पीछे छूटे हुअे साथी-साथियोंको तो मुलाभा ही, अनी गत म्पानिके भी भुला दिया। कदाचित् अिसीका यह परिणाम था कि अशफाक मियाँके अन्नरमें दम्भ जाग गया। मानव-कल्पनाका भाव भी भर गया।

किमान और मजदूरका किस प्रकार घोषण किया जाता है, वह सूर्यकी खुली धूपके नीचे किस प्रकार टगा जाता है, यह भी, उस व्यक्तिने मन लोकम तिरोहित हो गया। सचमुच, मियाँ अशफाकने भुला दिया कि किमान और मजदूरने थमपर ही अिम विरवना सौन्दर्य जीवित है ! मजदूरकी छातीपर ही राज-महलोंका निर्माण हुआ है। अपितु, हुआ यह कि मियाँ अशफाकअतीने धीरे-धीरे जप अपनी वाणीका पलटा, तो अुससे अेक और ही विपरीत ध्वनि प्रसारित हुई—जनता मूर्ख है भेडोके समान, जिन्ह सहायोकी सव्यामें अेक ही व्यक्ति मचालित करता है ! वह कहने, ससारका निर्माण भले ही मजदूरने किया, किसानने अन्न पैदा करके पेट भरनेका कार्य सम्पादित किया, परन्तु, अिस मजरा परिष्कार और परियोजन जो पटियोमे नहीं, मन्त्रोमे हुआ। सुद्धिजीवीके द्वारा ही, अिम ससारका अ्दम हुआ, अिन्सानका जन्म हुआ . अम्भुदय हुआ ...

—तो, अशफाक मियाँ चले और आगे बढ़े। वे मृग्मीसे वजीर बन गये। रियासतके तिरमौर ! वैभवका साम्राज्य उनके चारों ओर फैल गया। वे अुसके स्वामी बन गये। जिन्दगीके मौजके दरियामें वे अितने घड़े, अैसे बहे कि जैसे समुत्रे दूब गये। अुनका अस्तित्व बदल गया। रूप बदल गया। जवान बदल गयी। स्वर बदल गया। जप पैसा आया, तो निगाह भी बदल गयी। स्वस्वकी भावना अुनके मन प्रदशमें अिम प्रकार जागरित हुई कि मानो वह वहीपर थी। ममय पाने ही, पतन गयी। मित्र अुठाकर खडो हो गयी। अुसकी वाणी भी घोषित हो गयी।

जनतामें सर्वत्र कहा जाता कि अशफाक दूरन्देस है, कुशात्र नीतिज्ञ ! ये राज्यकी दरिद्रता दूर करेगे। सामन्तशाहीको मार देंगे। परन्तु जब अुन्हीको लोगोंने अुमी दूने अुअे दरियामें तरना पाया, तो जैसे लोगोंकी साम रुक गयी...मानव नित्तरमी और बहूरूपिया होनक अनिर्वचन और कुत्र न दिखायी दिया। क्योंकि, लोग तो सोचते थे कि अशफाक मियाँकी वाणीमें बल है, बुद्धिमें बल है, तो क्यों न अपने समाजको अुठाअेंगे।

ये क्या अपनी वही दुअी बातको भूल जाअेंगे ! अब क्या अपने दिमागमे निकाल देंगे कि आदमी अिमीलिअे चोरी करता है कि वह भूगा और नया हाता है ! अिधीलिअे डाकू गुण्टा ! खूनी ! नि मन्द्ह, लोभाकी धारणा थी कि मियाँ अशफाकअती अपन अुम अमर वाक्यको कभी भी दिमागसे दूर न करेगे कि मून चोरी और खूट करनेवाले के कारखानेदार, सरमायेदार और जमींदार हैं, जो वैभवकी जिन्दगी वितानेके लिअे भूण-दृत्याअें करते हैं, अिन्मानका दमन करते हैं !

परन्तु आह ! वे वाक्य मानो पीछे छूट गये, दूर ! वे पिछले अशफाक मियाँकी मौजके साथ कर्ममें सो गये ! अब वअेरे आजम अशफाक मियाँ हैं। जिनके विघात्र भवतमें दास दासियाँ हैं। अस्तबलमें घोड़े-बगियाँ हैं। मोटेरे हैं। हाथी हैं। वे अब नगी धरतीपर पैर नहीं रखते। छोटे आदमीसे बात नहीं करत। वह अुनक पट्टेव भी नहीं सकता। अमीर-अमरा अुनकी महफिलके पाय हैं ! अब वे ही साज बजने हैं, बोलने हैं। पुराने तराने अब गायत्र हो गये। नये तराने हैं, नये हवा है। नया साजोसामान ! जिनका प्रभाव यह हुआ कि अशफाक मियाँकी दुलहन बेगम अशफाक . . . हीरे जवाहरातोके जंवरोंमे तो अवश्य लद गयी, सेवाके लिअे दास-दासियाँ भी अेकत्र हो गयी, परन्तु अुस नारीके मनका सन्तोष जैसे तिरोहित हा गया ! अुमका मियाँ जैसे अुमने जुदा हो गया। वह किसी और दुलहनका खाविद बन गया। और अुसकी दुलहन थी—पैसा ! जीवनका आनन्द ! जीवनका भोग ! जिनका परिणाम यह हुआ कि बेगम रात-दिन अिम बानकी जाननेके लिअे बेचैन रहती कि मियाँकी आके, सोये, या जाये। क्योंकि अब अशफाक-मियाँ अन्दर हरममें कम आते। अब अुन्हे अिम बातकी जरूरत नहीं थी कि बीरीके पास बँटकर पैमे-पैसेका हिसाब करते...जीवनकी समस्यापर विचार विनिमय करते ! अब पैसेका अभाव नहीं ! खून्टेपर कोअी ममा बना है या नहीं, सुबद तो मिकी थी रोटी, अब धामको मिलेगी या नहीं,—आदि बातोंको समझने या मालूम करनेकी न आवश्यकता थी, न अवसर था।

यह काम अब नीकरोंका था । बीबीका भी नहीं था । वह तो अब बेगम थी । वजीरे-आजमकी दुल्हन ! अब सभी काम नीकरोंके ऊपर था । अूनकी अलग-अलग डप्टियाँ थी । राज्यमें सभीको बेतन मिलता । किन्तु यह सब तो था, दुल्हनको 'बेगम'का पद भी मिल गया, लेकिन बूस नारीको कुछ जोर भी चाहिये था । नव कुछ पाकर भी अुने पति चाहिये था । वह पति वजीर हो, या भिलारी, बूस चाहते अिनका सम्बन्ध नहीं था । बेगमको सुन्दर वस्त्र मिले, बीमती आनूपग मिले, महल मिला, बाग-बगीचे मिले, लेकिन पति नहीं मिला ! अिन चीजोंने पति बूससे ले लिया । यह होडूर गया । वह अ्यस्त बन गया । मानो वह अंके अनेक बीबियोंका खाबिन्द बन गया ।

कदाचिन्, जिनीका यह परिणाम था कि बेगम अगफाक रात-दिन बुझान रहतीं । चिन्तित रहतीं । वह रानी बनी हुई थी, मनमें भिलारिन रहतीं । चूँकि अगफाक मियाँ फुरमतके समय पतगदाजी करने, तो तब भी, वह बेगम अपनी अटारीपर चटी, दूरसे, पतिकी अूपर चडी पतगको निहारती । वह अूम पनंगको कटती देखती, काटती देखती । वह यह भी सुनती कि जब अगफाकमियाँ प्रतिद्वंदीकी पनंग काट देते, तो स्वयं सुगीबा शोर मचाते, अूनके साथी भी बिल्लाते । किन्तु जब अूनकी पनंग कटती, तो नव, मानो मौनके समान सभी मौन-के-मौन अुने रह जाते । अैसे समय बेगमका मन अंठता । अूम मनमें जैसे जहरीला धुवाँ चक्कर काटता । वह अन्त-अवेगमें चारों ओर फंल जाना । बेगमको कुठित और परेगान कर देना । जैसे धूसका दम घोटने लगता । अूम समय बेगमके मनमें आया,

वजीरे आजमको जीत प्यारी है... हार नहीं! वह क्हती, तो हार किसे प्यारी है ! सभी अीत चाहते है अंनका आनन्द पाना ही, मानों सब अरना अकिन्गर मानते हैं। वह क्हती, और यह आनन्द, यह जीवनका मोप अग अ्यिर है ! अिल्लान अमर है ! अिन चटाअीका क्हों अन् है.. अिन अूंकाअीका कोअी छोरे है ! वह देखती कि सचमूच, अूनके पतिकी महत्वादाअका बड रही है ! अिच्छा बड रही है ! मानो अंनने अानी अानी है । वह अुडा रही है । अूंकाअीपर ले जा रही है...

राज्यमें, अबअथा यह बन गयी थी कि नदांअका अस्तित्व न होनेके बरअबर रह गया था । मियाँ अगफाककी प्रभुता नबीगरि थी, परिस्थिति यह बनी कि नबाब मौन ! मानो अज्ञात ! जनअामें आहि-आहि थी । नून थी । पीडा थी । दरिद्रता और बेरोजगारी सर्वत्र फंल रही थी । अाअिन् अबअथा प्रायः नष्ट हो चुकी थी । खजाना खाली । अकिन्गारी अरमें सर्वत्र लूट मची थी । अुन्ही दिनों कि बाट है कि मियाँ-अगफाकने पतगदाजीकी अंज बड़ी बाजी लड़ी । रंगारियाँ पूरी हुईं । किन्तु अिन दिन वह बाजी लड़ी जानेकी थी, अूमने अंज दिन पूर्व प्रातः ही, अंजअंज उनठों चौक गयी । हतअन रह गयी । अुस समय सर्वत्र अंज ही आवाज गूँज गयी— मियाँ अगफाकअधीने दूवरे नबाबके मुन्ह की । मौदा किया । अानी रिपानअ अुने देनेकी दात की और अाधीका स्वयं नबाब दनना पअन्द किया । अपने देअके साथ विद्रोह किया ! गदारी की ! परन्तु नदाबको यह राज पहिले ही माअूम हो गया । अूमने अतुराअी की । बिना अिन्नी सुन-अराअंके, उत्तरनाके माप, देअके स्वअकी रकअके हेतु मियाँ अगफाकअलीको गिरफ्तार कर लिया !



नयी हिन्दी कविता और प्रकृति

• श्री सिद्धनाथकुमार :

बसंतवर्षने कहा था- ' प्रेरणा और अमिष्यक्ति देनेमें प्रकृति कमी नहीं बूकती । ' मनुष्य अति प्राचीन कालमें प्रकृति मनुष्यकी प्रेरणाका स्रोत रहती है । अणुपकी मधुमय मुस्कान, पूंठोकी हँसी, तफ-लता-गुन्माकी हरियाली आदिने युग-युगसे मनुष्यकी सौंदर्य-चेतनाको गुदगुदाया है, और विभिन्न युगोंके कवि अपनी कला-कृतियोंमें प्रकृतिके अनेक रूपोंके अंकित करते रहे हैं । आज भी प्रकृतिका आकर्षण नि सोप नहीं हुआ है । स्वयं कविके शब्दोंमें—

फूलोंके तनमें हास, हासमें सुरभि-रेल अवशेष अभी,
नख रूप और रस, मध, स्वर्शकी मतमें चाह अवशेष अभी ।

—नगेन्द्र

आज भी कवि प्रकृतिके सौंदर्यको देखता है, अक्समें प्रभावित होता है और अपने कान्धमें स्थान देना है, किन्तु आजका कवि प्रकृतिको असी रूपमें नहीं देखता, जिन रूपमें पिछले युगोंके कवि देखने आये हैं । अंसा समझ भी नहीं, क्योंकि प्रत्येक युगका प्रकृति काव्य अपने पिछले युगोंके प्रकृति-काव्यसे भिन्न होता आया है । वान यह है कि प्रत्येक युगकी अपनी सौंदर्य चेतना हानी है, जिसका जन्म युगकी परिस्थितियोंसे होता है । कलाकार युगकी परिस्थितियोंमें अद्भूत नवीन भावनाओंके भीतरसे ही प्रकृतिको देखता है । कलाकारके लिये प्रकृतिके वस्तुगत रूपका कोभी मूल्य नहीं, अपने संस्कारोंसे आवृद्ध होनेके कारण वह असे देख ही नहीं सकता । अत्याधुनिक युगके हिंदी कवियोंने भी प्रकृतिको अपनी दृष्टिमें देखा है । प्रस्तुत निबन्धमें यही दिखलानेका प्रयत्न किया जा रहा है कि हिंदीकी नयी कवितामें प्रकृतिका अुपयोग किस रूपमें हो रहा है । ' नयी कवितामें ' मेरा साक्षर्य छायावाद-युगके बादकी कवितासे है, जिसे दो खंडोंमें विभाजित कर प्रगतिशील और प्रयोगशील कविता कहा जाता है, पर अपने सपूर्ण रूपमें यह अत्याधुनिक या नयी कविता ही है ।

आजका युग अमन्यमनताका है । जीवनका मधुर बहून तोड़ हो गया है । मनुष्यके जीवनमें जितना जवकास नहीं कि वह मान बिना ही दो कण कहीं बैठ सके । समारमें चारा और हल्चल ही हल्चल दीख रहे है । दल, कल्पना साधन अणुपुंडन अथे युद्धकी आदारा आदिने मानव मन अस्त है । जिनम मुक्ति पानेके लिये सब लोग अुत्सुक है । आजका कवि भी जिन मुक्ति-सधर्षमें भाग लेता अपना कर्तव्य समझता है, वह कहता भी है—“ जन्म, जीवन, जागरण, सधर्षमें हम गर्व-भीरव साजन है । ” अंसी स्थितिमें प्रकृतिके प्रति कवियाका क्या दृष्टिकोण रहे, यह अेक कठिन समस्या है । क्या जीवन सधर्षको छोडकर कवि प्रकृतिकी गार्दमें बैठकर बांगुरी बगारे ? पर क्या यह पलायन नहीं है ? ' प्रसाद ' जीने लिया था—' ले चल मुझे मुलावा देकर भेरे नाविक धीरे-धीरे ' अिनके लिये अुनहें पदायनवादी कहा जाता है । ' शम्भु ' पतंगी कहते हैं—

वहीं कहीं जी करता, मैं जाकर छिप जाऊँ ।
मानव जगके प्रदलसे छुटकारा पाऊँ ।
प्रकृति-नीडमें व्योम लगीके गाने गाऊँ ।
अपने विर स्नेहातुर नूरकी व्यथा सुनाऊँ ।

जीवनकी दाहक हल्चलान दूर हटकर कुछ कणोंके लिये विश्रान्तिकी आकाशका स्वाभाविक ही है । अयाधुनिक कविके मनमें भी यह भावना अुठती है, किन्तु असे भय बना रहता है कि अंसा करना कहीं पलायन न समझ लिया जाये । सभवत जिनीलिये ' अनेप ' जी कहते हैं—

कण भर भुला सके हम
नगरीकी बेचन बुकती गड्ढदड्ड अकुलाहट—
और न माने असे
पलायन;

व्यग्न भर देख सके

आकाश, घरा,

दूबा, मेघाली,

पौधे,

लता डोलती,

फूल,

झरे पत्ते,

तितली-भुनगे,

फुनगी पर पूँछ झुठाकर अंतराती छोटी-सी चिड़िया

और न सहसा चोर कह झूठे मन में

प्रकृति वाद हैं स्वल्प

क्योंकि युग जनवादी है ।

कविके मनमें आशंका बनी रहनी है, फिर भी वह प्रकृतिको देखता है, क्योंकि, जैसा अपूर कहा गया, अभी भी युगके लिये प्रकृतिका आकर्षण निःशेष नहीं हुआ है । वह प्रकृतिके उस सौंदर्यको देखता है, जो सहज है, काल्पनिक न होकर हमारे यथार्थ जीवनका है । वह सीसपर छोटे गुलाबी फूलका मुरंठा बाँधे हाँ ठिगने चनेको देखता है, पीले हाथोवाली सयानी सर-सोकी देखता है, उसे खेतोंमें स्वयंवरका मनहर दृश्य दिखायी पड़ता है । पर कभी-कभी वह अपनी युग-भावनाका प्रतिबिम्ब भी प्रकृतिमें देखता है । नली और बबूलके रूपमें उसे समाजके दो वर्ग दिखायी पड़ते हैं । बबूलको देखकर तो युगायुग सतप्त प्रपीडित जनताके चित्र झुभरकर उसकी आँखोंके सामने आ जाते हैं—

यह बबूल भी

दुबला, घूल भरा, अग्रिय सा, सहज अक्षेपित

श्याम वक्र अस्तित्व लिये वह रंक तिरस्कृत,

अपमानोंको मौन झेलता चिर अपमानित,

पथके अंक और चुपचाप खड़ा है ।

फटे हाल जीवन्तकी मंगी कठिन दीनता साजे गहित

यह बबूल है ।

—‘मुक्तियोध’

अपने युगकी धरतीपर खड़ा होकर जिस प्रकार

प्रकृतिको देखना नये कविके लिये पूर्ण अचित अंध

स्वभाविक है । कवि अपने युगका प्राणी होता है,

अपने अपने युगकी परिस्थितियोंका साहसके साथ सामना करना चाहिये, युग-भावनाओंके साथ तार-तम्य करना चाहिये । अंसा करना ही युगकी शक्तिका परिचायक है । फ्रांसिस स्कॉफने सत्य ही कहा है—

‘The poet must be of his age, however bad

the age may appear if he is not ‘modern’

when he lives, if he is never contemporary

when he is alive, he never will be contem-

porary, He will be still-born (Auden and

after) जिस दृष्टिसे यह अचित ही है कि नयी कवितामें

युग भावनाकी झलक दिखायी पड़े । नये कवि जिस

दिशामें जागृक हैं, यद्यपि कभी-कभी बोझी स्वर

जिसके विरोधमें भी सुनायी पड़ जाता है । बृदाहरणके

लिये नरेशकुमार मेहता कहते हैं— ‘हम मनुष्यके

आदिकालके काव्यसे भावोंकी विराटता ग्रहण करके

सुंदर कल्पना प्रधान साहित्य रच सकने हैं ।’ यह प्रवृत्ति

प्रशंसनीय नहीं कही जा सकती । आजके कविकी

आदिकालके काव्यसे नहीं, युग-जीवनके काव्यसे प्रेरणा

ग्रहण करनी है । नयी कविता जिस ओर अग्रसर है ।

जिसे समझनेके लिये द्विवेदी काल, छायावाद-काल तथा

अत्याधुनिक कालकी प्रतिनिधि कविताओंमें श्रेय-अंक

बुद्धरण देखे जा सकते हैं—

तरल-सौर्यधि-सुंग-संरंपसे ।

निद्रिड-नीरद धे फिर घूमते ।

प्रबल ही जिनकी बढ़ती रही ।

अस्तित्ता-धनना-रवकारिता ।

—‘हरिऔध’

गर्जनमें मधु-लघ भर बोले,

झप्ता पर निधियाँ धर डोले,

आँसू बन झूठे तृण-कणने

मुस्कानोंमें पाले ।

कहसि आये बादल काले ?

कजरारे मतवाले ?

—महादेवी वर्मा

अध्वानक अंध-सा है रंग

मानों संकड़ों श्रामीण मिलकर

बेक दिन खोहारके दूरदगमें हूँ दग
पीकर भग !

बजती खजडो अश्वस्त

नचनी बेड़नी तस्ती,

कि डोलकपर किसीकी मस्त

पडती तालमे टपकार,

वैसे ही गगनमें गरजते कुछ मेघ ।

—प्रभाकर याचवे

तीनों अुद्धरण स्पष्ट रूपसे तीन युगाका प्रतिनिधित्व कर रहे हैं— भावना अथ अभिव्यञ्जना, सोनाकी दृष्टियोंमे । यहाँ ह्यमाग प्रयोजन विषय-वस्तुकी दृष्टिमे अिनपर विचार करनेका है । तीनों अुद्धरण जातबजकर मेघ सतपी दिये गये हैं, जिससे स्पष्टतः ज्ञात हो सके कि युगका प्रभाव अिनपर कितना गहरा है । प्रथम अुद्धरणमें मेघका सामान्य अर्थ यथातथ्य चित्र देनेका प्रयत्न किया गया है, दूसरेमें वादय मात्रक अन्तरकी सरल भावनाओमे भोग-मा गया है, और तीसरेमें वह ग्रामीण-जीवनके अत्यन्त निकट आ गया है । आजके जनवादी युगमें मघाको जिस रूपमें देखना कविकी जागरूकताका परिचायक है । यों, वे अुदाहरण मेघ सम्बन्धी हैं, पर प्रकृतिके विभिन्न दृश्यामे सम्बन्धित अन्य अुदाहरण भी अिस तथ्यकी पुष्टि करगे । रात्रिके सम्बन्धमें गुप्तजीने लिखा था—‘शुक्लाररा रजनी-वधू अिसारिका-सी जा रही’ आजका कवि लिखता है—‘कीचकेकी खानकी मजदूरिनी सी रात ।’ अिसी प्रकार प्रकृतिके दूसरे चित्रोंमें भी सामयिकताकी शलक देखा जा सकती है ।

नयी कविताके प्रकृति चित्रामें सामयिकताके अतिरिक्त जो दूसरी बात दिखायी पडती है, वह है वैयक्तिकता । यह युग ही वैयक्तिकताका है । आजका जागरूक कवि असामान्य मा दीखना चाहता है वह हमारे सामने कुछ जैसे असाधारण चित्र अुपस्थित करता चाहता है, जो अपनी नवानताके कारण हमारी चेतनाको शकजोर दें । पहलेके लगभग सभी कवि ‘चरण को ‘कमल’ मानकर सतपका अनुभव कर सकत थे, पर

आजका कवि अपन किसी समझान्यूनक ही चित्रकी दुहराना अपनी प्रतिभाकी पराजय समझता है । अिसीलिअे प्रकृतिके किसी अथ ही दृश्यका विभिन्न कवि विभिन्न रूपोंमे अुपस्थित करते हैं । अुदाहरणके लिअे सध्याके कुछ चित्र देखिये —

सोनेकी वह मेघ चील

अपने चमकीले पखों लें अथकार

अथ बँठ गयो दिन अड पर ।

—नरेअकुमार महुता

खिषा चला जाता है दिनका सोनेका रथ
अूची-नीची भूमि पारकर ।

—रघुवीर महाय

अिस दुनियापर

यककर आधी बँहोग दूअो अिस दुनियापर

छोहरेकी पल्लि फँलाती

मँडराती

चमकी चिडिया-सो

धीमे धीमे

अतरो आती

यह जाड़ेकी मनहूस शाम ।

—अर्जुन भारती

नहीं

साँस अेक असभ्य आदमीकी जँभाअी हँ ।

—केसरीकुमार

औंधे पडे दूअे नीले टक्कनपर रक्ता

वह चमकीला गोला सरका और गिर गया ।

—धीहरि

और, अिस तरहके कितने अुद्धरण बडी आसानीमे दिये जा सकते हैं । विभिन्न कवियोंके प्रकृति चित्रोंमें ही विभिन्नता नहीं, रथय अथ कवि भी अपने अनुभवको दुहराना नहीं चाहता । वास्तवमें कीअी अनुभव दुहगाया जा भी नहीं सकता । अेक नयण दूसरेसे पुषक । अूँकि आजका कवि अपनी मूकम अनुभूतियोंको सकल अभिव्यक्तिके प्रति सतर्क है, प्रकृतिका अथ ही दृश्य अुसे विभिन्न

वपनीमें विभिन्न प्रकारका दिखलायी पड़ता है। झुराहरणके लिये श्री गिरजाकुमार भापुरको ले ले। जिनके लिये रात कभी 'धुमकी' है, कभी 'घरमीकी' है कभी 'जवान' है, कभी 'लीपोंके छाने पर्वोंकी' है, कभी 'हन्नी-हन्की' है, कभी 'ठिठुरन भरों' कभी 'रक कर जाती हूँ'। मैं नहीं कहता कि जिनकी सतर्कता नहीं कवियोंमें है, पर यह नयी कविताकी श्रेय प्रवृत्ति है अवश्य।

झुरीपन-विनायक रूपमें प्रकृति वादि-वाद्यने ही चित्रित होती आयी है। अयायुनिक कालमें भी प्रकृति का यह रूप देखा जा सकता है। जिसके लिये श्रेय अंक अदाहरण पर्याप्त होगा—

धिर गया नभ, अन्ध आये मेघ बाले
भूमिके बम्पिन झुरीजोंपर झुरा-सा
विशद, श्वामाहत, चिरातुर
छा गया जिष्टिका नील वक्त्र—
बल्ल-सा, यदि तडित्ते झुरलता हुआ-सा।
आह, मेरा श्वान है झुरलन -
घननिषोंमें अन्ध आयी है लूकी धार—
प्यार है अग्निगत—
तुम कहाँ हो नारि?

—'अभेय'

नयी कविताके प्रकृति-चित्रणमें जो श्रेय वात और दिखायी देती है, वह है प्रकृतिके कवेयका विस्तार। छायावाद-युग तकके प्रकृति-चित्रणमें केवल पृथ्वी आकाश, नद-निहार, गिरि-झुरलक, सारंग-प्रात, लता-मुल्ल आदि का ही अवन होता था, पर आजका कवि अन्धके साप-नाश दृष्टि-भयमें आये हूँके नीतार, लेम्पनोन्ट

आदिनी भी चित्रित कर जाता है। वास्तवमें, ये प्रकृतिने पूषण है भी नहीं। वास्तवने लिखा है—'To separate in this way natural things from artificial is to make as dangerous a distinction as that between environmental and affective elements in the conscious field or between mental and material qualities—Society itself is a part of nature, and hence all artificial products are natural.' आजका कवि फिर अपने अपने मानना स्वीकार करता है और तपायपित हृदिन दन्तुओंका भी चित्रण दही झुरलताते कर जाता है। द्विवेदी-युगीन कविके सन्तुल 'कमलिनो दुष्ट-ललनकी प्रभा' तरु-गिन्दापर ही राजनी थी, पर अयायुनिक युगका कवि देखता है—

हैं ताम्रवर्ण परिचम जिनने
पड़ना हैं दुष्टनरा झुरिपाला हूर हूर,
निर्जीव चर्मते श्वानमानमें झुरे हूँ,
भारी भदनों, निलशिखरों, छन्नों पेशोंपर।

—गिरिजाकुमार भापुर

अतमें कहा जा सकता है कि प्रकृति कभी भी कविताका श्रेय प्रधान नियम है, पर नयी कवितामें प्रकृति विगत युगोंके विभिन्न रूपोंमें चित्रित हो रही है। नयी कविताका प्रकृति-वाच्य अितना दिशिष्ट श्रेय स्वतन्त्र है कि जिनके द्विवेदी श्रेय छायावाद-युगके भी प्रकृति-कालसे सहज ही अलग कर सकते हैं। नयी हिंदी-कविताके अितनी कम अवधिमें अपनी अतिविक संयुक्तता स्थापित कर ली है, यह जिनकी शक्ति का द्योतक है।



रानी गांधी डालू

. श्री जितेन्द्रचन्द्र चोधुरी

नागा पहाड़ हमारे असम प्रांतका अर्ध-पावत्य जिला है। हमारे नागाभाजी अिस जिलेके अधिवासी हैं। ये लोग बड़े सरल स्वयं परिधमी तथा स्वाधीनता-प्रिय हैं। जब प्रबल प्रतापी आहोम राजा अिस देश पर राज्य कर रहे थे, अूस समय नागा लोगोंने अपनी स्वाधीनताको सुरक्षित रखनेके लिये आहोम राजपरानवे साय प्रबल युद्ध किया था। यद्यपि ये अक्षिप्त हैं, फिर भी शिखा प्राप्त करनेके लिये विदेश प्रयत्न करते हैं। नागाओंके बीच यदि शिखाका आलोक भरी भूमि पहुँच जाये तो निश्चय ही किसी दिन ये अक्षमिया जातिवा मुंह अड्डावल करे।

मोरबच्चन नागा पहाड़ जिलेका एक अिलाका है। जिसके जैसे अज्ञात तथा अयम्य गाँव अक नागा कन्याका जन्म हुआ था जिसने अपने स्वदेश प्रेम और अभीम माह्य द्वारा त्रिदिश सिन्हेने सिंहासनको जिम तरहुने दिये दिया था कि ता काठिक सभी स्वयंभवा प्रेमी भारतीयानी दृष्टि अिस महाशक्ति शक्ति नागा कन्याक ऊपर पडी थी। यह यह समय था जब सारे भारतमें राष्ट्रपिता गांधीका अगोचर अहिंसा आन्दोलन तथा अमलका वैचारिक तूकान आसमूद्र हिंसाचर नीकरसाही वाक्क मडतीको बही वाठ पडा रहा था कि भाभी अइ समूहो हम जाय गये है तुम्ह हम नही टिकने देंगे। आधुनिक शिखाका आशोक न होनेपर भी जिस कौमलमति प्रवृत्तिकी गोदम पती सरता शक्तिवाक शण कसे स्वदेश- प्रेमकी अुदगसे अुदकित हो अुठे व-ना किसीकी कल्पनामें भी अमप्रभव सा लगता है। त्रिदिश शासनके समय नागा पहाड़ अक सुरक्षित अिलाका समया जाता था और अीसाअी मिशनरीके निवाय किसी भी अयका गहूअ प्रवेशाधिकार वहाँ न था। भारतक अय प्रा तोमें क्या-क्या विचार भारतीय जीवनमें हल चल रहा रहे है अुनका अुठे क्या पया? मिशनरा तो साधारणवादी शासन सदाके लिये वायम रखनका कल्प केवर, शिखाके बहान, अुन निदिन सिंहाका जातीय

मदद वाड डाउनके लिये तत्पर था। जिस प्रकारकी परिस्थिति भी रानी गांधी डाडू जैसे अयवाद देखकर यह कहना अनुचित नहीं होगा कि यह नागा जाति ही हमारे पवित्र प्र-व महाभारतम वणिग वीरगता प्रमविनी नागा जाति है जिसकी वीर व वा अुल्लोका पाणिग्रहण करने वीर अजनन अयनको अय माना था।

रानी गांधी डाडू जब किशीरो हा थी कि वह अपनी जातिकी गमी बीनी देगा और ममस्वाश्रीकी आर ध्यान देन लगी। यह अयुक्ति नहीं है कि जातीय मधुपत्रकी तापनवाली अीसाअी मिशनरी शिखाके ही रानीकी वीर मदाके लिये बोल दी। रानी मश ही जेकानमें बैठकर अपनी जातिका मगठ कंभे हो मोचनी रहती थी। जिस प्रकारका अेकातशण और मशही कुट स्वाश्रीगमीर किनाअे अयमनहना रानीको तपस्या थी। किशीरो गांधी डाडू हमें और अक अपनी जैना देग मय कानासी किशोरीका यद दिशती है जिसके नाम और कामस मारा मसार परिचित है। जान आक आकें और रानी गांधी डाडूम भिजना केवल जिस वातकी है कि जहाँ 'जोन' देवी पाहुअर डारा अयन देगकी स्वयंभवाकी रखाके लिये अुठ खडी हुआ वहाँ हमारी यह वीर भारत पुत्री गांधी गहूअ माय्य, मैत्री और स्वाधीनताको सुरक्षित करनेके लिये भारतीय सनासन प्रयाके अनसार अयोध वैजयवस्त्र अहिंसा, अमहयोग स याग्रह आरम्भ किया। वास्तवमें गांधी गहूअ जैमी देश प्रथिका मसारके किसी भी देशमें मिलना मुश्किल है।

जब महात्मा गांधी सारे भारतमें अहिंसा, अमहयोग आन्दोलनके द्वारा मुमुक्षुके प्रयाड आरक्षणमें निद्रित अरनीयोम प्राण सवार कर रहे थे, तब गांधी डाडू भारतके विरुद्ध अज्ञता, अक्षकार तथा अयुगासन की प्राचीरायुद्ध नागा पर्यन्तकी प्रकृति मानाकी अयव्यथिना मुकुमारी तापस क्या थी। न जाने कंभे बापूकी अममनयो स्वाधीनताकी वाणी जिस तापम कन्याकी हृदय-नन्धीमें लयकर अकृत होने लगी। जिस प्र-

अपनिषदके ऋषि ममत्त्वाके अन्तर्गत महादर्शन लाभ करके अपन मानपासके सभी जीवोंको पुकारकर अमृत मयी वाणी जादृहिताय सुनाने लगे थे 'शृण्वन्तु सर्व अमृतस्य पुत्रा'—जुसी प्रकार यह नागा तरंगी गाथी डालू स्वजाति भाभी-बहनको पुकारकर स्वाधीनताको अमृतमयी वाणी सुनाते लगे। 'स्वाधीनता सबका जन्मसिद्ध अधिकार है', विदेशी शासकोंके हाथ अपना अधिकार छोड़कर लाष्टिन, अपना निज संघ अत्याचारित होना मृत्युके समान है। अडों, जागा और विदेशी शासनके विरुद्ध अपना प्रतिवाद प्रकट करो। नागा जातिके मूलप्राय प्राणोंमें नव जीवनका मन्वार हुआ। अमन गाथी डाडूकी वाणीका प्रतिध्वनि करके नागा जातिके भिन्न भिन्न भाषा भाषी लोगोंको सगठित किया। अब नागा जाति ब्रिटिश शासनके विरुद्ध तनकर खड़ी हो गयी। सामकके होगे अडू गये। नागा नाभी-बहनों गाथी डालूको देवी समन लगे। अन्होन देवीको अपनी रानी बनाया और वे रानीकी प्रजाकी भाँति शासकोंके अहिंसाकी लडाई लडने लगे।

नागाओंके अिस नव जागरणकी खबर ब्रिटिश मिहके जानो तर पहुँचो तो तट अमन फ्रासीसी बचा जोन अँक आकँकी याद आ गयो। व नागा रानीको पँनानेके लिअे बाअी लााकर कोगिँयँ करने लगे। अिन व्याभारमें मिशनरियोका असीम अुन्हाह था। कोन यह नही जानता कि साम्राज्यवादके अग्रदूत बाअिवल एना अस्त्रसे सुनगिनत पादरी हो होते है। अैना नव जागरण अुनकी बाधक प्रतीत हुआ। अकलान् परिश्रमके बाद भारतके स्वाधीनता अिच्छूक युवकोंके समान नागा रानी को भी गामकाका आनिष्य ग्रहण करना पडा। किन्तु हाप' मनुष्य दुष्टिके बाटर किनने पुप प्रस्फुटिन होकर मृग्या जाते है—अुनकी खबर कोन ल'। अग्रज कविका यह आक्षेप क्या निराधार है? सभा समिति करके हमन ता शासकाक द्वारा अत्याचारित अापने अुन युवक रत्नाके प्रति समवदना प्रकट की थी प्रतिवाद व निदानयूक प्रस्ताव भी स्वीकृत किप य, किन्तु अपना रानीके लिअे नहीं कर मके। ननाप्राकी अिन यानकी खबर ही थी कि हमारी अक रानी अमाअेके कँदयानमें बदिनी जीवन बिठा रही है। ब्रिटिश सरकार

अिनके विषयमें अेकदम चुप। अिनका आरावास अिन अिष्ट कालके लिप था। किम जेलमें वह रहती थी कँम रहती थी—राज-कर्मचारी भी नहीं जानत थे। नागा रानीके विषयमें जो असावधानी जो चुपी, अासकोही नीतिमें, व्यवहारमें रही सा भारतके चीर किनी भी राजनैतिक दन्दीके विषयमें साधत ही थी। सा क्या? समनता कठिन नही कि नागा रानीके नीतर स्वाधीनताकी जो ज्वाला, चरित्रका जो बल अने अनोंको आदर्शके प्रति खींचनेकी जो शक्ति दिवानी देनी थी अुससे शासक डर गय। शासकोंके मनमें रानीका मान भयकर भीनिको अुपन कर रहा था। समन-ममदरर राजनैतिक दरी दिना शर्तें कारामक्ति पते थे, किन्तु नागा रानीके भाग्यमें कासामुक्ति अनभव ही थी। अिस प्रकार रानीके जीवनका अमून्य समय कँदयानेमें ही व्यतीत हुआ।

विगत महायुद्धके आरम्भ होनेसे पहले हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलालजी अनम प्रान्तमें पधारे थे। गाँधी डालूकी चर्चा अुहाने सुनी और व सभी वान मुनकर अैमे प्रभावित हुअे कि नागा रानीकी प्रशनामें पचमुस हो गये थे। भाषणमें तदा अरने लेखोंमें श्री जवाहरलालजीने आन्तरिक महानुमुक्ति तथा श्रदा प्रकट की। असकी मुक्तिके हेतु दन्त किया गया था। भारतमें स्वाधीनताका मूर्त अुदय होनेके पश्चात् अुन्ह मुक्ति मिली, किन्तु जीवनके चारम्भमें अिनकी स्वाधीनता प्रातिके लिअे कारा-राजपनीकी तृणा अपने रक्त विन्दुओंसे दुयानी पडी, वह अब किस प्रकार स्वल्प रह सकनी। नागा रानीकी देवनेका सीमाग्य मुन प्रान्त नशी हुआ, किन्तु सुननेमें जाया है कि अब वे अपना जरा जोपँ और कलात्त जीवन अने गाँवमें ही बाट रही हैं।

स्वाधीनता सधाममें अिन अिन महा-माअोंने अपना सबकुअ न्योटावर किया है और हमारे प्रान्त मरलीय बने हैं, अुनमें नागा रानी गाथी डालूका स्थान प्रमुग है। अनन अपूर्व न्याग स्वीकारक लिअे अेव मयापुनारागिताक लिअे नागा रानी अनमक। अिनहाम प्रमिअ राना अद मनीक और स्वाधीनता तथा स्वदेशके लिअे व 'जोन आर आर' के समकल्प हैं।

मिट्टीकी कहानी

डॉ सुधीन्द्र

सुन चुके हो देवताओंकी कहानी
सुन चुके हो तुम मनुष्योंकी कहानी—
म सुनाता हूँ सुनो तुम आज मिट्टीकी कहानी।

(१)

क्यों युगोंके बाद कविके कण्ठम यह
जागकर यो आज मिट्टी बोलती ह ?
जो न खोला था किसीन आज तक भी
भद कविकी लेखनी यह खोलनी ह ।
दूर मिट्टीके परे देखा कि जिसन
कह गया सगार मिट्टी ह कि जिसन
आज भूसकी भूलको पहिचान कर यो
यह हृदयकी मम गाँठ टडोलती ह—
फिर नथी कुछ वेतना लेकर जगो है—
आज मिट्टीकी वही गाया पुरानी !
सुन चुके हो देवताओंकी कहानी
सुन चुके हो तुम मनुष्योंकी कहानी
म सुनाता हूँ सुनो तुम आज मिट्टीकी कहानी।

(२)

जल रहे ह बीप जो आकाश क ये
प्रति निशा दीवाखली सी लग रही ह
जानते हो कौन अिनम जल रहा ह ?
और वह क्या ह कि मिट्टी जग रही ह ?
कोटि सूरज चंद्र ग्रह नक्षत्र सारे—
म कूना अक मिट्टी के सवारे
अिन्द्रधनुषी मेघ जो सु दर घिरे ह—
अक मिट्टी ही अहे यों रग रही ह ।
अक मिट्टीके लिय अया मधुर ह—
अक मिट्टीके लिय स पा सुहानी
सुन चुके हो देवताओंकी कहानी
सुन चुके हो तुम मनुष्योंकी कहानी
म सुनाता हूँ सुनो तुम आज मिट्टीकी कहानी

(३)

बापु मिट्टीकी कि चलती ताँत देलो
जल कि मिट्टीका लहू जो बह रहा ह
अग्नि क्या ह ? प्राणकी भूसकी लपट ह
गाय क्या आकाश ? यह मिट्टी कहाँ ह ?
जन्म कि पशु नर दय दानव देवता ह
अक मिट्टीकी कि यह विद्वपता ह !
और जिस पल पुण अतिमानस जग ह—
लिल गया बस कूल मिट्टीका यहाँ ह
किंतु मिट्टी ही अमर ह मूल असरी—
भूल कर भी ह न यह हमको भूलानी !
सुन चुके हो देवताओंकी कहानी
सुन चुके हो तुम मनुष्योंकी कहानी
म सुनाता हूँ सुनो तुम आज मिट्टीकी कहानी।

(४)

अठ गयी मिट्टी हिमालय नाम भूसका
भर भूडो मिट्टी—वही सागर कहाया ।
यह नदी जब मन कि मिट्टीका गला था
सत मिट्टीका हिमा ही लहलहापा ।
घर बसे भूस पर कहे तुम देस आय
और घर अजडा कि फिर धोरान टाय ।
कट पड जवालाभूषी मिट्टी कुवित थी
हिल गयी मिट्टी यहाँ भूकम्प आया
अक मिट्टीकी यहाँ राय बाल हलबल
ह अवल मिट्टी किमोने परन जायी ।
सुन चुके हो देवताओंकी कहानी
सुन चुके हो तुम मनुष्योंकी कहानी
म सुनाता हूँ सुनो तुम आज मिट्टीकी कहानी ।

(५)

छत्र-सिंहासन बने नरपाल आये
सज गये ये मुकुट मिट्टीने कि बाहा,
चक्रवर्ती राज—ये मुहत्ताज सारे—
दुर्ग-गड प्राकार मिट्टीने निबाहा ।
किन्तु मिट्टीके तिलीने, रूप भूले
खेल मिट्टीके रहे, ये भूप भूले ।
उपमगाये और चक्रनाचूर हैं वे—

अक पल ही जब कि मिट्टीने कराहा
यह प्रलय या श्राति यी यह कौन जाने ?

तुम सुनो यह आज मिट्टीकी जबानी ।
सुन चुके हो देवताओंकी कहानी
सुन चुके हो तुम मनुष्योंकी कहानी-
में सुनाता हूँ सुनो तुम आज मिट्टीकी कहानी ।

(६)

'मनुज,' मिट्टीकी यही तो चेतना है;
'सम्पत्ता' क्या है कि मिट्टीके चरण ही—
यह 'बला'—शृंगार मिट्टीने किया है,
और यह 'साहित्य' मिट्टीके वचन ही ।
'कर्म' है शासित कि मिट्टीके नियमसे,
'धर्म' मिट्टीके कि सपन और शमसे ।
काल क्या है यह कि मिट्टीकी प्रगति ही,
और पुण क्या ? अक मिट्टीके कि वचन ही,
तुम कहो 'भूगोल' मिट्टीकी प्रकृति है
और यह 'प्रतिहास' मिट्टीकी निशानी ।
सुन चुके हो देवताओंकी कहानी,
सुन चुके हो तुम मनुष्योंकी कहानी-
में सुनाता हूँ सुनो तुम आज, मिट्टीकी कहानी ।

(७)

बग या श्रेणी न जिसकी गोदमें है—
कौन फिर अक्षय बढ़ा है कौन छोटा ?
खड ये अपने न मिट्टी माननी है—
कौन फिर भूममें खरा है, कौन छोटा ?
ये बिखट सपना आये—शानि आये,
किन्तु मिट्टी ही वहाँपर शान्ति लाये ।

यह नहीं है सूक्ष्म तत्त्वज्ञान-दर्शन,
यह किसी समारका सिद्धान्त मोटा —
'जो कि मिट्टीको झुकाकर सिर चढ़ेंगे—
हार निज अन्दको नहीं होगी बुलानी ।'
सुन चुके हो देवताओंकी कहानी,
सुन चुके हो तुम मनुष्योंकी कहानी-
में सुनाता हूँ, सुनो तुम आज, मिट्टीकी कहानी ।

(८)

यह, अमित आलोक आत्माका त्विना जो,
अन्धतम जिसने दिशाओंका जलाया—
खिल सका है प्राणकी लीको जलाये—
जब असे है स्नेह मिट्टीने पिलाया ।
प्रेम प्राणोंमें तभी हंसकर खिलेगा,
रूप जब अन्को कि मिट्टीमें मिलेगा ।
दीपका जलना सभी हम जानने है—
किन्तु मिट्टीने असे जलना सिखाया
स्वर्ग या आकाशका सब प्रेम मूढा
है हमें अय प्रीति मिट्टीकी जगानी ।
सुन चुके हो देवताओंकी कहानी,
सुन चुके हो तुम मनुष्योंकी कहानी-
में सुनाता हूँ, सुनो तुम आज, मिट्टीकी कहानी ।

(९)

है जिया जगमें वही जिसने निरन्तर
रस बनाकर प्राण मिट्टीका दिया है,
दूर रहकर कौन मिट्टीमें बताओ—
जिन जगमें अक पत्थकी भी जिया है ।
मृत्यु मिट्टीको भला कब जौन पायी ?
वह कि मिट्टीमें स्वयं ही आ समायी ।
घर अकर ही या कि जड़ जगम, जगममें—
क्या न सबकी मृत्युको जीवन दिया है ?
अक मिट्टीसे बंधे रहकर जिशेंगे—
देव-मानवता कि औरवरना अज्ञानी,
सुन चुके हो देवताओंकी कहानी,
सुन चुके हो तुम मनुष्योंकी कहानी-
में सुनाता हूँ, सुनो तुम आज, मिट्टीकी कहानी ।

(१०)

हैं न मिट्टी तुच्छ, यह नदर नहीं है
 यह प्रलयसे भी न पलभर हारती है ।
 कौन मिट्टीको बसाकर जो सखा है
 यह अमर है—मृत्युको भी मारती है ।
 जो न मिट्टीमें बसा है या पला है
 जो न मिट्टीमें रमा है या ढला है—
 सश्रवर्ती हो कि यह जगत्ता विजेता—
 आज भीश्वरको घरी सलकारती है,
 कौन मिट्टीका भला तूफान रोके,
 कौन मिट्टीकी भला टोके जवाबी ।
 सुन चुके हो देवताओंकी कहानी,
 सुन चुके हो तुम मनुष्योंकी कहानी-
 मैं सुनाता हूँ सुनो तुम आज, मिट्टीकी कहानी ।

(११)

धीर मिट्टीका बताओ मोल क्या है ?
 क्योंकि मिट्टीपर सहज अधिकार सबका
 जिसलिसे यह मृत्ति मिट्टीपर बनी जो
 सब जनोकी है कि है सत्तार सबका ।
 देवता ? होगा—कि औदर ? कौन जाने ।
 किपरसे अतरा ? कृति कौन माने ?
 जो न अतरे, किन्तु मिट्टीसे अठे जो—
 थक असमें ही रहेगा प्यार सबका ।
 जो तुम्हें मिट्टी सुनायेगी किसी दिन—
 धी मुझे यह बात मिट्टीकी सुनानी ।
 सुन चुके हो देवताओंको कहानी,
 सुन चुके हो तुम मनुष्योंको कहानी
 मैं सुनाता हूँ सुनो तुम आज मिट्टीकी कहानी ।

कविता :

यह सीमान्तकी रेत

: श्री 'हृषीकेश' :

नहीं यहाँ जनरथ है,
 नहीं यहाँ कुछ भी कोलाहल
 ओष चढ़ रहा फूट रहा बादल,
 हो रहा विकास विघटितका है—
 और यही है नारगी रगकी शान्त शाम ।
 यही छटा है तनकी, मनकी 'श्री जन जीवनकी—
 अनिर्वचनीय शाश्वत भाषाकी ।
 यहीं रके क्या ? नहीं,
 अरे चलें और आगे भी देखें
 क्या घरा यहाँ है
 जो लगे प्रीतिकर, सम्मोहन ।
 यह सध्या ले रही धूवासी अलताप्रोती,
 ज्यों कोभी बाला कसमस कर अठनी
 अपने ही जीवनमें धूमध धमड़कर ।

लो । पहुँच गये हम ।
 यह सीमान्तकी रेत यहाँ है ।
 यह सरल, तरल, मधुमल-ती
 कोमल रेत,
 बनी लहरियोंसी अमर अमरकर
 ज्यों अमर रहा मानव जीवन,
 हीं प्रिय आओ !
 यहीं बैठकर मनका ताप मिटाओ,
 लघाओं और लुटाओं,
 पाओं सब कुछ जीव, प्रकृति, सत्य
 और सौंदर्य । नहीं नग्य कुछ
 जिससे होगा, यही प्रकृति है
 जो जीवन है ।



भावना भागीरथीके रजकण !

गुजराती

: श्री "धूमकेतु :

१ हजार दिवसमायी अंकज दिवस याद छे.
प्रकाशनी अने प्रेमनी ।

२ रोवु होय त्यारे हु अंकज गोमु छु. हमबु
होय त्यारे मिश्री ।

३. समुद्रने किनारे तारो पगरव केम सनळाय
छे ? बधेज तु छे अटला माटे, के बीजे क्याय तु नयी,
अटला माटे ?

४ कोअी नाम माटे जीवे छे, कोअी लक्ष्मी माटे
जीवे छे, कोअी स्त्री माटे जीवे छे नीलाटम टेकराओ
अपर काओ पण हेनु विना रखटवा माटे तो, हु अंकजो
जीवु छु ।

५ धनी बचत राति गनीग होय छे, अने चळकता
तारा तेने वधारे गभीर बनाने छे, त्यारे अंकज अ-
भुक्त्यो सवाळ हैयामा आवे छे 'आ बधु कोणे कयो
अने सामाटे ?'

६ अचामा अचा गिखर अपर वेमवा माटे हु
अंक हजार ने अंक जिदगी गुमाववा तमार छु पण सारन
अटलीके ते अचामा अचु हावु जोओये ।

७ मघरातना मुमसाम अंधकारमा कोअी वस्त
जरा जेटलो गन्द सअी जना सानळनी छे ? आमाओ
अवाज अटलीज गान होय छे, ने अटलीज वेपक ।

हिन्दी

: अतु०-श्री शंकरदेव विद्यालंकार :

हजारो दिनोमेसे अंक ही दिन याद है. प्रकाशका
और प्रेमका ।

रोना होता है तब अंकज खोजता हूँ और
हँसना होता है तब मिश्रीको ।

समुद्रके तटपर तेरी पद-ध्वनि क्यों सुनायी देती
है ? सर्वत्र ही तू विद्यमान है जिस कारण या अन्यत्र
कहीं भी तू नहीं, जिस कारण ?

कोअी नामके लिअे जीता है, कोअी लक्ष्मीके
लिअे जीता है, कोअी स्त्रीके लिअे जीता है, हरीनरी
पहाडी चीटियोपर, बिना कारण भटकनेके लिअे तो
अकेला में ही जीता हूँ ।

अनेक वार रात गभीर होनी है और चमकने
हुअे तारे अमको और भी अधिक गभीर बनाने हूँ, तब
अंक ही अनुत्तरित (वेजवाव सवाल) दिलमें अठता
है—' यह सब किसने बनाया और किमलिअे ?

अँचते अँचे दिखरके अपर बँठनेके लिअे तँपार
हूँ—पर मर्ने अितनी हो कि वह दिखर अँचने अँचा
होना चाहिये ।

मध्य-रात्रिके सुनमान अघकारमें कमी जरा-सा
हो जानेवाला गन्द मुता है ? आमाकी आवाज भी
अतनी सात हाँती है और अतनी ही वेपक !

८ घणा प्रकारनी मोटास दुनियामा छे छाना दर्दनी नोले आवे अथी मजा अके नथी ।

९ अणे नहयु क तमे दुखयी हार्या छा में रहयु वे तमे विश्वासमभय अनुभव्या नथी ।

१० स्वर्गमा ने पृथ्वीमा बहु फर नथा । श्रमन प्रेम वे माथे होय त्या स्वर्ग अ वे जुदा अरु पृथ्वी ।

११ विद्योगना आमुने चूमनार बालक छ त्या सुधी फिलमुकीना घोषा काण भुधाडे ?

१२ नीरस सयम अे अपघात छ । धर्मना अचछामा अे छुपायेले छे अेटलुज ।

१३ आवेश ज्यारे बुन्लामनो झन्थी पहरे छे त्यारे, अने पुराणी ज्यारे अकज सूरै कथा वाचे छे त्यारे अेक अद्भ्य मूर्ति धीमे-धामे त्या सनोप थी हस छ, अने ते मूर्ति सेताननो छे ।

१४ निराशाना समुद्र चेवा मोटा रणवी तने सभारी सभारीने रडवानो अे मजा मळे, ते मजानी खातर, हुँ घोळा फूल, खेपेरी चाँदनी अन कोयलनो मूर चणे जता वरै ।

१५ दुनियानु मोटामा मोट्टु करण नाटक मान-सना हृदयमाँ हरेक पळे भजवाथी रहयु छे ।

१६ मने क चीज सीयी बनु वहाली छे श्रम अने दुख । दुस बिना हृदय निमल धतु नथी श्रम बिना मनुष्यत्व समजानु नथी ।

१७ अणे कहयु के तमे निराशावादी छे । य कहयु के साथ बेसीने घडेलु स्वान छिद्र भिन करनार कोभी मित्र तमने मळया नथी ।

१८ हु निरास थयो छु ? पराजय थी हाकी गयो छु ? ना, ना, अनु वाञ्छीज नथी । विश्वासना समुद्रमा पडेलु, सेरनु अेक बिन्दु बोवा माट, आटली अहेमत थुठाथी रहयो छु ।

दुनियामें कशी प्रकारकी मिठासे हँ लेकिन छिपे दर्दका मुकाबला करनवाली अेक भी मिठाप नही ।

जुमने कहा—तुम दुखमे हार गय हो । मैं कहा—तुमन विद्वान भगका अनुभव नहीं किया है ।

स्वर्गमें और पृथ्वीमें बटुप अन्तर नहीं है । श्रम और प्रेम दोनों जहाँ साथ साथ हाने हैं वहाँ स्वर्ग है य दोनों जहाँ अलग हो जायें वहाँ पृथ्वी ।

विद्योगके आमुआको चूमनवाता बालक (जब तक) विद्यमान है तबतक दर्शनगास्त्रके पोथीको कौन पोल ?

नीरस सयम अपघात है । भद्र जिनना ही कि बहु धमक अचलमें छिया हुआ है ।

आवेश जब बुन्लामनरा चोगा (पोशाक) पहनता है और कथावाचक जब अेक ही स्वरमे कथा बॉचता है, तब अेक अद्भ्य मूर्ति सनापके साथ म द मन्द हँसनी है और वह मूर्ति सेतानकी है ।

निराशाके समुद्रके समान बड़ रेगिस्तानमें तुझका याद कर-करके रानेमें जो मजा आता है, अुत मत्रेके लित्रे मे सकद पुष्प, हगहली चाँदनी और कोयलका म्वर, अिन सीनोको वारनेके लित्र तैयार हँ ।

पमारका बड़मे बडा करण नाटक मानवके हृदयमें प्रतिपल अभिनोत हो रहा है ।

मुश दो चीजें सबसे ज्यादा प्रिय हैं—श्रम और दुख ! दुखके बिना हृदय निमल नहीं होता और श्रमके बिना मनुष्यत्व नहीं समझा जा सकता ।

जुमने कहा—तुम निराशावादी हो ! मैंने कहा—साथमें बैठकर गः दुखे स्व नको छिद्र भिन करनवाला कोभी मित्र तुमको मिला नहीं है ।

मैं निरास हुआ हूँ ? पराजयमे हॉक गया हूँ ? न, न, अंया कुठ भी नही ! विश्वासके समुद्रमें पड हूँ अे विपकी अेक बँदको घोलवे लित्रे अिनती जहमत (मुसीबत) अुठा रहा हूँ ।



[सूचना — 'राष्ट्रभारती' में समाष्टोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियाँ ही सम्पादकके पास आनी चाहिये।]

'रजवाड़ा'— लेखक — श्री देवेशदास बाप भी
अम । प्रकाशक—आरमाराम अंशु सन्स दिल्ली ६ ।
पृष्ठ संख्या—१४९, मूल्य—५)रु. ।

यद्यपि विलोनीकरणके बादसे भारतके रजवाड़ाका
वह राजनैतिक पुराना महत्त्व नहीं रह गया फिर भी
इनका अपना सांस्कृतिक अथवा ऐतिहासिक महत्त्व तो
सबतक बना रहेगा जबतक लोग इतिहास पढ़ने
रहेंगे । भारतीय वीरताके इतिहासमें राजपूतानाका
निस्सन्देह अपना अंक विविष्ट गौरवपूर्ण स्थान है ।

पुस्तकके रजवाड़ा नामसे लेखकका मक़दद राज-
स्थानकी ओर ही है और लेखकने भूमिकामें 'राजस्थानसे
अपने परिचय' की बातका जिक्र करते हुए अिसका
बुल्लेख भी किया है ।

राजदरबारोंमें अधिकारमन नवैत्र ही विलासताके
दर्शन होते हैं और राजस्थानके दरवार भी अिससे
बढ़ते न थे फिर भी राजस्थानका गौरव 'सुन्दर,
राजपूतोंकी वीरतापूर्ण कहानियोंमें ही निहित है ।
अिसमें प्रभावित होकर लेखककी कहना पडा कि
'रजवाडा तो वीरतापूर्ण कहानियोंका देस है । राज-
स्थानसे शृंगारके अेलान रूपका भी निवारनेका सुद्ध
मोषा दिना है । लेखक द्वारा राजदरबारोंकी वर्णन
पटनाअंसि हमें अिस सम्बन्धमें पर्याप्त जानकारी
मिलडी है ।

'हन्दीघाटीका युद्ध' यहाँकी अत्यन्त प्रसिद्ध आन-
सम्मान-दर्शक वीर गाथा है, भीराका अवतार यहाँकी
भक्तिका चरम अुत्कर्ष है और पयिनी राजस्थानी
सौन्दर्यकी अप्रतिम प्रतीक ! लेखकने अिन सभीके
सम्बन्धमें ऐतिहासिक दृष्टिको नामने रखकर बानी
प्रकाश टाला है । जूनके वर्णनकी भाषा अत्यन्त प्रौढ
अथवा प्रवाहपूर्ण है । लेखककी ऐतिहासिक दृष्टि तथा
तत्सम्बन्धी अुसके गम्भीर अध्ययनकी छान हमें पूरी
पुस्तकमें देखनेको मिलती है ।

अभिसारकी अलख, हवाअी पावा, रसिक जोवन,
दरबारी नृत्य, रस-अी रानी पयिनी, प्रेम-योगिनी मोरा
आदि सबह विभिन्न गोपकके अन्तर्गत पुस्तक बँटी
हुअी है और ये सभी गोपक अपने नामसे ही
राजस्थानकी प्राचीन गौरव-भाषाके पूर्ण अातक हैं ।

राजस्थानसे विदाअीके समय " नमस्कार चारण-
कवि । नमस्कार वीर-भाषा ! नमस्कार रज-कथाका
रजवाडा ! " अिन तीन अुद्गारोंमें ही लेखकने राज-
स्थानके इतिहासके तत्रका बनी भावि निहित कर
दिया है ।

पुस्तकमें राजस्थानके प्रमुख-अमुख दर्शनीय स्थलों,
नृत्यो, चित्र कलाके प्राचीन नमूनों तथा अेषभूषाओंके
चित्र दे देनेके कारण पुस्तक अथिद आकर्षक अथवा
अनूनीय ही गयी है ।

छपाअी साक-अुपरी तथा आवरण आकर्षक है ।

—मदन मोहन शर्मा, अंन अं, सा.र.

कविता — [अडिया भाषा तथा अडिया लिपि में प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका कविता । प्राप्तिस्थान ध्वन्यवाचक — अग्रणी प्रकाशनी ४ अ ब्राह्मच लेन कलकत्ता—१२]

असि द्वैमासिकका अथ सकल नामसे निकाला जाता है । आद्योद्य अकला नाम धरल सकल है (गन सितार—अक्टूबर १९५३ के लिख) । सप्ताहकाके नीचे दो भद्रनोके नाम ह श्री दुर्गाचरण परिडा और श्री कृष्णचरण बहेरा । श्री हूणन * म ठक जिके सचाता ह । प्रियडना मलय ६ आना और बार्पिउ मूल्य २ रुपया । अिम पत्रिकाम केवल कविता या पद्य रचनाओंकी आलोचना की जाती है ।

प्रस्तुत अकमें हिन्दीके दो परिचित प्रसिद्ध कवि निरालाजी अब पतञ्जी की कविताके दो अनवाद अडिया भाषामें दिय गय ह । य निराला की भिषप' शीषक कविता तथा पन्तजीके गीत' के अश विषयके अनुवाद ह ।

विश्वभारती' गाति निकतनके हिन्दी अध्यापक श्री गिवनाथ अम अ द्वारा उचित बनमान हिन्दी कविता शीषक अक छाटा सा आलोचना मक केव भी जिसी अरम प्रकाशित हुआ है । गिवनाथजीन शीषक बनमान हि दी कवितापर अपन विचार प्रकट किय ह । असिमे अडिया अग्री पाठकोंको नमान हि दी कविताकी गति बिश्विक कु उ परिचय प्राप्त हो सकेगा । आलोचकके शब्दमे अडिया भाषाम ही पहिअ

बनमान हि शी कविता सम्बन्धरे जाणिव पुत्रु आमर अनिकि मुञ्जि रखिवार ज डि आधनिक हि शी साहित्य ओ क व्य सवना समय ओ समाज सहित गतिशील । भारतीय जीवन ओ समाजर सुतुस हृष अु ठास अ गा आकाश्या सम व आधनिक साहित्यरे अभिन्दन होजि अ शि अठि । आधुनिक हि दी साहित्य कतेवले जम जीवन विमर होजि नाहि । भारते दु हरिश्चन्द्र मयित्रीकरण मल प्रमचदङ्क साहित्य अहार अुवल प्रमाण । अियाति ।

—लो प्र पा

साभार प्राप्त

(निम्नाविस्त पुस्तके और मासिक पत्र रटमारता म समीक्षयाय प्राप्त हुअ ह । अिनकी समीक्षयाय समीक्षयकोके द्वारा प्राप्त होते ही प्रकाशित की जयेगा ।)

पुस्तकालय स दश (मासिक पत्र) सपादक श्री श्रीकण्ठ चडडवाल । प्रका०—पुस्तकालय मन्ग कार्यालय पो०—पटना विश्वविद्यालय पटना (बिहार) । पृ म ब्राह्म २८ मू य ।)

भारतीय राष्ट्रीयता (त्रैम सप्ताह)—श्री चैत्रनूत विद्यार्थी । प्रका०—साहित्य रन भंगर आगरा । पृठ स ब्राह्म १७० मू य २)

भारती (मासिक पत्र) जनवरी ५८ वष १ अक १ —सपादकशय—श्री विठठल शर्मा चतुर्वी श्री बालकृष्ण चालुवा । प्रका० स्थान—२५ २९ बिरहापा रोड कानपुर । पृठ स ब्राह्म ६८ मू य ॥)

समुन्नत रात्रन्मान (मासिक पत्र) — प्र मपा०—भा इयापकरण । प्रका०—मायजनिक सम्पक कार्यालय राजस्थान सरकार जयपुर । पठ स डमी ८६ मू य)

प्रदीप (मासिक पत्र) नव दिगबर ५३ का चड गड विद्याक — प्र सपादक श्री द पचद वर्मा । प्रका० प्रदीप कार्यालय गामला २ । पृठ स डमी ३० मू य ।)

सम्प्राणी (मासिक पत्र) —सपा — शी रात्रन मारखत । प्रका०—रात्रन्मान प्रापा प्रचार सभा जयपुर । पठ सवया ब्राह्म ६६ मू य १)



“अेक अकपम्य अपराध !” :

अभी अुम दिन, लखनअूने हमारे अूलर प्रदेशके परमश्रेष्ठ राज्यपाल, अीग निम्सन्देह जो भारतीय साहित्य और सस्कृतिके कपेत्रमें अना नवोच्च स्थान रखते हैं अुन श्रीमान् क० मा० मुन्गीजीने आकाशवाणी द्वारा भारतकी लोक-कन्याग भावनामें प्रेरित होकर अपना मन्देश प्रनारित किया कि—“अंग्रेजी अपनी भाषा है, मवने महत्वपूर्ण भाषा है वह, और अिन देशमें अुनकी अुपेक्षा करना अेक अकपम्य अपराध होगा !”

और श्री मुन्गीजीके अिन आकाश-भाषिके पश्चात् ही बंबअी प्रादेशिक काग्रेस कमेटीके कन्वकष, जो स्वयं किसी भी राज्यपालने कन नहीं है, म०का० पाटील माहवने भी फरमा दिया कि—“कोअी भाषा परकोष नहीं है । अिन देशमें अंकयकी निमिति और स्थापनाका काम अंग्रेजीने किया है अन वह विदेशी कदापि नहीं है ।”

लौजिअे, अंग्रेजी भाषाके बिना अिस देशमें अेकना नहीं हो सकती और भारतका अुद्धार नहीं हो सकता । अेकनाका भाव समन्त देशमें अुपन्य करनेके लिअे और अुसे मजबूत बनाये रखनेके लिअे अब अंग्रेजीका ही अनुदिक् समर्पण किया जा रहा है । और अभी-अभी १९८३ ने पढते, पढ़ी महाअुरय हमारे बीचमें, भारतीय

जनताके बीचमें, मंचपर ला-आकर अुद्धोषित करते थे कि भावनामें भाषाका बहुत अन्वोन्वा-शयी मन्बन्ध है । यदि अंग्रेजीको अपनाअोगे नो पराधीन बने रहोगे और हममें अंग्रेजी भाष ही पैदा होगे । हमारी बोली, म्नाना-मीना, मुठना-बंठना, मोचना आदि नभी अंग्रेजों करीखे होगे । हममें भारतीयताका स्वाभिमान दिल्डुल न रहेगा ।

और अिस ‘आकाशवाणी’ भाषिको अब हम नन ही नन गुन रहे थे नव अंग्रेजीके पुरखा स्व. मैकाले महाराजकी गहरी अनुराअी हमारी सनसमें आ गयी और अट रोमन साम्राज्यवादके अेक छोटेने अित्तिहामकी घटना हमारे नेत्रोंकि मामने खडी हो गयी । रोमने सिलेगिया देश-पर आक्रमणकर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था । रोमन पार्लामेंटने अेक कतुर कागकष सिंसरो नामक शासकको वहाँ राज्य करनेके लिअे भेजा । सिंसरो सिलेगियाका गनर बनकर गया । बडा कतुर था वह । अूसने अति ही नारे सिलेगियामें लगभग १५० दिआल्प स्थापित कर दिये । अिनना ही कान करके सिंसरो अपना राज्यस्वजाल ममाप्त कर अरने देशको वापस चला आया । रोमकी पार्लामेंटमें, पार्लामेंटके सपरमन्तोने सिंसरोपर दोषारोप किया कि अूसने रोमन साम्राज्यकी वहाँ अट जमानेके लिये कुट भी नहीं किया, अुनकर अावाार करके अुनकी प्राचीन सन्धता और सन्धतिकी

मटियामेट क्यों नहीं कर डाला जिससे वे हमारे हमेशाके लिये गुलाम बन जाते। रोम साम्राज्यकी जड़ जमानेके लिये तुमने वहाँ क्या किया ? लेजा-जोखा मागा गया तो सिसरोने अपनी सफाई देते हुअे क्या कहा, अतिहासबिज्ञ मून्सीजी, पाटीलजी, हम अच्छी तरह जानते हैं और जानते हैं ससारके सभी समझदार कि सिसरोन अपनी सफाई पेश करते हुअे कहा, 'मैंने रोम साम्राज्यकी लैटिन भाषाके १४० या १५० विद्यालय स्थापित कर अपने साम्राज्यकी बहुत बड़ी सेवा की है। मैंने मिलेशिया देशकी भावी पीढीको, सिलेशियन प्योगोकी भावी सतानोको हमेशाके लिये रोमन बना लिया है। वे लोग लैटिन भाषा अपने स्कूलो-कालेजोम सीखेंगे, रोमन पोशाक पहनेंगे, रोमन सभ्यता सीखेंगे, अिम तरह अुनकी रग-रगमें रोमन सभ्यता समा जायेगी। अुन लोगोमें अपनापन कुछ भी न रहेगा ।"

अेक छोटासा यह दृष्टान्त है, जो काफी है ! अंग्रेजी भाषासे क्या विद्वकी किसी और भाषासे फ्रेंच, जर्मन या रसियन और अमेरिकन भाषासे हमारा विरोध नहीं है। देशकी अुन्नतिके लिये किसी भी भाषासे आवश्यक अेक अुपयोगी ज्ञान-विज्ञान प्राप्तकर देशको हम आगे बढ़ाअें। किन्तु यह तो सर्वे निश्चित है कि जर्मनीकी, जापानकी या रसियाकी और नव जागृत चीनकी अुन्नति वहाँ अंग्रेजी भाषाके कारण नहीं हुअी नित्रभाषाके ही कारण हुअी है। आधुनिक भारतके महान्मा हमारी आँखे खोल गये थे और स्वदेशीता और स्वभाषाका महत्व समझा गये थे कि अिम विशाल देशमें भारतीय सभ्यता और भारतीय भावनामें अेकताकी स्थापना करनी ही, अिम देशमें नाना जाति और नाना धर्मने लोग

अेक्य भासने रहे तो अंग्रेजी शिक्षापाना जो अथा मोह हममें आ गया है असे छोड़ देना होगा।

राष्ट्रपिता गांधीने वर्तमान अंग्रेजी शिक्षाको अेक ढगकी बुराअी बतलाया था और अुन्होंने कअी वार कहा भी कि वे अपनी तमान ताकत अंग्रेजी-शिक्षाके नाश करनेमें लगा रहे हें। और वे कहा करते थे कि अगर अंग्रेज भारतमें न होते तो यह देश ससारके अन्य देशोके साथ-साथ बहुत आगे बढ़ जाता। अंग्रेजी शिक्षाके साथ अंग्रेजी साहित्यने विवेकपूर्ण अध्ययनके लिये महान्माजी प्रेरणा करते थे। वे अपने रहते अंग्रेजी राज्य नष्ट कर गये और वही कुछ वर्ष, हमारे सौभाग्यसे वे हमारे बीच कुछ थोडा और रह जाते, तो अंग्रेजी शिक्षाको भी नष्ट कर डालने।

यह अर्द्धका आन्दोलन :

जितना खतरनाक और अवाञ्छनीय यह पाकिस्तान अमेरीकाके बीचका सैनिक सहायता नमझौना है, अुतना ही खतरनाक और अवाञ्छनीय है यह गडे मुर्दे अुखाडने जैसा अर्द्धका आन्दोलन।

देश जब स्वतन्त्र हुआ अुमना नया सन्निधान बना। असे अुन लोगोने बनाया जो अिम विशाल देशके दूरदेश, दिग् व दिमाग वाले सच्च प्रतिनिधि थे। अुस विधानके अुनुसार भारतके सभी जन्मसिद्ध अविकार मान्य होकर दुनियाके मानने आये। हमारे सविधानने अपने देशके लिये जिन चौदह भाषाओंको ग्रहण किया, ये हैं—ससूत, अममिया, ओडिया, बगला, पञ्जाबी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम, काश्मीरी, अुर्दू और हिन्दी। देवनागरीमें लिखी जानेवाली हिन्दीको राष्ट्रभाषा पद मिला। हिन्दीकी सविधानमें अंश अंमी

व्यापक भाषा मान लिया गया जिसमें अुसकी-वोलियो और अुपवोलियोका अन्तर्भाव ही जाता है । काश, अुर्दू भी तब कही दाखिल-दफ्तर कर दी गयी होती ।

किन्तु हमारे धर्म या सम्प्रदाय निरपेक्ष (सिक्वुलियर) सबिधानने अुन सारी सकीर्ण-ताओ, दोषो और बुराअियोको दूर रख अुर्दूको भारतीय भाषाओके बीचमे अुदारतापूर्वक स्वतंत्र रूपमें रखा । विधानने साफ साफ निर्देश भी कर दिया कि हमारी राष्ट्रभाषा सब प्रातीय भाषाओसे कुछ-न-कुछ नये सस्कार ग्रहण करेगी, अुमका तब स्वतंत्र विकास होगा और अुमका वेहद शब्द-भंडार भी बढेगा और तब वह मालामाल हो जायेगी । हिन्दीने अपने राष्ट्रीय रूपमें, हजार-वारह सौ वर्षोंसे चली आती परम्परामें, हमेशा अपनी समन्वयात्मक अुदारता ही कार्य-रूपमें बतलायी है । चद वरदाअी, खुसरो, कवीर, तुलसी, सूर, जायसी, रहीम, रसखानसे लेकर, भारतेन्दु, महावीरप्रसाद और आधुनिक युगके प्रतिनिधि—मैथिलीशरण गुप्त और प्रेमचद तक हिन्दीने अरबी, फारसी, तुर्की, अग्रेजी आदि अनेक भाषाओके हजारों शब्द अपने कुटुम्ब-परिवारमें शामिल कर लिये कि हम अुन्हें पराया नहीं समझते । अुर्दूको हमने बाहरकी भाषा कभी नहीं माना । अुर्दू हिन्दीका अेक विशेष रूप मात्र है, अेक स्टाअिल या शैली, जो फारसी लिखा-वटमें बाअी ओरसे दाहिनी तरफ लिखी जाती है, मीधी नहीं चलती, जरा नाज-नगरेके साथ चलती है । यदि कठिन सस्कृत और अरबी-फारसीके शब्द अुममें बहुतायतसे काममें न लाये जाअें और सर्वमुलभ अेक लिपि नागरीमें लिखी जाअे तो हिन्दू और मुगलमान ही बयो, नभी अुमे समझेंगे और

अिस्तेमाल करेगे । सदा सस्कृतके अत्यंत निकट रहनेवाली बगला, मराठी, गुजराती, अुडिया, तेलुगु, मलयालम् आदि प्रादेशिक भाषाओंके साथ हिन्दीका भी सम्बन्ध है । अुन अुन प्रान्तोंमें भी प्रादेशिक भाषाओंमें अरबी-फारसीके अनेक शब्द सस्कृत शब्दोंके साथ जा बँठे हैं । तब बगला, मराठी, अुडिया, तेलुगु आदि भाषाओं अपनी ही मातृ-भाषाके समान बोलनेवाले तत्-तत् प्रान्तवासी मुसलमान अुन भाषाओंमेंसे प्रचलित सस्कृत शब्द चुन-चुनकर अुनका वाय-काट थोडे ही करते हैं ? और जो करते होंगे तो वह अुनकी मनहूस ना-समझी ही होगी । बबअी, कलकत्ता, दिल्ली और मद्रासमें हम अँसे मुनाफिरो और सौदागरोंसे मिले हैं जिन्होंने बताया कि मध्य अेशियामें भी दूर-दूर तक यह हिन्दी जवान या सरल अुर्दू कह लीजिअे अुसे, समझी जाती है ।

हमें काफिर और म्लेच्छ, अिन दो दुर्भाव-नाओको अब छोडना होगा । मजहबी सनकसे दूर रहकर भारतके मुसलमान समझदारीसे काम ले, और हर बातमें मजहब खतरेमें और कुफका फतवा देना बन्द करे । हिन्दी अुर्दूको मूलके नामपर झगडेके रूपमें ला-खडाकर हम अपनी नालायकी, नादानी, बेहदगी, बेवकूफी और बेवफादारीको दुनियाके आगे न रखें । आजकल हमारे कुछ बडे और भले आदमी हिन्दी अुर्दूका झगडा लेकर अुत्तर प्रदेशमें अुल्टी गगा बहाने जा रहे हैं । कृपया गगाको अुल्टा मत बहाजिअे । भाषा-गगाका साफ-मुथरा, स्वास्थ्यबर्धक नीर स्वतंत्र रूपसे बहने दीजिअे, अिसीमें अुर्दूका कल्याण है ।

कुम्भकी दुर्घटना •

वहते हैं १२ वष बाद प्रयागवा पूण कुम्भ पव आता ह । यह भी कहा जाता ह कि अिस वष ग्रहोका कुछ असा योग बना था विगत सो वषोंम अँसा योग कभी नही आया था । कुछ भी हो अिसम सदेह नही कि अिस वष कुम्भके अवसरपर प्रयागम यात्रियोकी अचधिक भीड रही । अँसी भीड पहले कभी किसी भी कुम्भके अवसरपर प्रयागम नही हुआ—लगभग ५० लाख । अधिकारी तथा मेलेके प्रबधक भी अिस कुम्भके अवसरपर बहुत बडी भीडकी अपेक्षा करते थ । अुसके लिअ अुहोन अचित प्रबध भी किया था । यात्रियोकी सुविधा सफाओ भीडका प्रबध और आन जानके मार्गोंके निर्माणपर अुहोन लाखो रुपय खच क्रिय । परंतु होनहार कहिअ प्रबधकी अकल्पित त्रुटि कहिअ भीडको कावूमें रखनकी पुत्रिस तथा स्वयन्सेवकोकी असमथता कहिअ अधश्रद्धालु स्त्री पुरुषोकी भूखता कहिअ प्रकृतिका कोप कहिअ अथत्ता बड बड बेद्रीय अधिकारियोके आगमनके कारण पुलिस अधिकारियोका ध्यान बट जाना या कुछ अशम अुनका वीखला जाना कहिअ कुछ भी कहिअ मुख्य पव मौनी—अमावस्याके दिन सुबह जहाँ अक तरफ हमारे राष्ट्रपति तथा प्रधान मंत्री त्रिवेणी सगमपर गय और दूसरी तरफसे नागा साधुओका जलूस स्नान करन आया अुस समय अक हृदय विदारक असी बडी दुघटना हो गयी जँसी पहल कभी सुनी भी नही गयी थी । यह दुघटना ३ फरवरीके प्रात काल ९ या ९ ३० बजेके लगभग घटी थी और ४ फरवरीके प्रातको हम जब प्रयाग पहुचे हमन देता कि अिस दुघटनाकी काली छाया सारे

प्रयागपर छायी हुआ ह । प्रयकवे दिलम अिसका दुख था और मन ग्लानिपूण और खिन था । हमन अुस गडको भी देखा जिसम अनको स्त्री पुरुषोके प्राण गय और आगावे डर लग और अिस कारण अिसन खूनी गडका नाम कमाया । आज तक हमारी समझम यह बात नही आ रही ह कि गोगोके आनके रास्तेसे लगकर जो गढा पानीसे भरा था अुसे जसाका तसा प्रबधकोन बयो रहन दिया ? अुसे पाट देनकी अ हे कयो न सूती ।

मतकोकी सरयाके सम्बधम काफ़ी मतभद दिखायी देता ह । सरकारी आकडोम अुसे ५०० से अधिक नही बताया गया ह । परंतु कअी प्रत्यक्ष दखन सुननवाओकी यह राय ह कि वह १००० से अधिक ही हागी—क्रम नही । अिस दुघटनाके त्रिअ किसको दोष दिया जाअ अिसकी चर्चाम हम यहा अुतरना नही चाहते । सरकारन अिसके त्रिअ अक जाच-समिति नियुक्त की ह । जबतक समितिकी रिपोट प्रकाशित नही होती तब तक अिसकी चर्चा न करना ही हित कर प्रतीत होता ह । परंतु अिस दुघटनाके अनक पहलू ह अुनम कुम्भका मेला स्वय अक ह । अुसपर कअी दृष्टियोसे चर्चा की जासवती ह और होनी भी चाहिअ । प्रयागम ५० लाख स्नानार्थी प्रवासक सब प्रकारके सकट झटकर और गाँठवे पसे खच करके अिकटठ हुआ थ व कयो आय ? प्राणाका सवट अुठाकर भी वे वहाँ कयो पहुचे यह प्रस्न ह । हमारा सदियारा धार्मिक सस्वार भावना तथा तीथ तथा पवके प्रति हमारी श्रद्धा ही अिमका कारण था । हो सकता ह कि यह श्रद्धा अ धधद्धा ही हो । परन्तु अससे क्या ? आज भी हमारी धार्मिक श्रद्धा हम

प्रेरणा दे रही है। कुम्भमें जानेकी प्रेरणा हमारी दृष्टिसे गलत हो सकती है और यह भी हो सकता है जंसा कि श्रद्धेय टण्डनजी कहते हैं, हमारी मूर्खता प्रयागम कुम्भके अवसरपर केन्द्रित हुआ थी। यह मान भी लिया जावे कि कुम्भमें जाना मूर्खता थी तो भी यह तो मानना ही होगा कि वहाँ जो ४०-५० लाख जनता अकन हुआ अुसमें तब मूर्ख नहीं थे। अर्थात् हमारे सदियोंके धार्मिक-सांस्कृतिक संस्कारोंमें जितना प्रेरणा-बल है कि बुद्धिमान स्त्री-पुरुषोंने भी यह मूर्खताका कार्य करवाते हैं। अिन संस्कारोंमें जो बल है, अुसे देखकर अुसमें यदि कोअी दोष आ गया हो तो अुसे हमें परिमार्जित करना होगा। आज वह संस्कार अन्धश्रद्धाका रूप ले रहा है तो अुसे शुद्ध करके हमें सच्ची श्रद्धाका रूप देना होगा। अुसकी खिल्ली अुडानेसे काम न चलेगा। और अभी भारतीय ससदमें कुम्भ घटनापर जो चर्चा हुआ, अुसमें प जवाहरलाल नेहरूने भी तो कहा है कि अन्धश्रद्धा अवश्य बुरी है परन्तु वह कहाँ नहीं है, राजकीय क्पेनमें भी अन्धश्रद्धा देखी जाती है। अवश्य हमें अन्धश्रद्धाको दूर करना होगा। परन्तु श्रद्धाको तो हम छोड़ नहीं सकते। मनुष्यका या समाजका किसीका भी जीवन श्रद्धासे रहित होकर रह नहीं सकता और अुमकी अुन्नति या प्रगति तो कभी ही ही नहीं सकती। गीतामें भी कहा है कि "श्रद्धामयोऽयम् पुरुष ।"

हम लोग भारतीय ससृत्तिकी बात करते रहते हैं। प्राचीन ससृत्तिकी प्रशंसा करते हुअे, हम गौरवका भी अनुभव करते हैं। परन्तु हम यह भूल जाते हैं कि अिनी प्राचीन ससृत्तिमें जो मरुत धार्मिक ससृत्ति थी, हमने अेक

मरतवा सच्ची श्रद्धाका बल पाया था, परन्तु आज वह अन्धश्रद्धाका रूप ले चुका है। अुने सुससृत्त बनानेका क्या हम कुछ प्रयत्न कर रहे हैं? हमारा ख्याल है कि जब हम भारतीय ससृत्तिकी बात करते हैं तब सम्भवत लोगोंमें भ्रम ही फैलाते हैं। सब लोग ससृत्तिकी अलग-अलग व्याख्या करते हैं और देखा जाअे तो "ससृत्ति" शब्द स्वय ही भ्रामक है। हमें ससृत्तिकी नहीं, संस्कारोंकी बात करनी चाहिये। लोगोंको हमें संस्कार देना है, विद्यार्थियोंको हमें संस्कार देना है महिलाओंको संस्कार देना है, और वह संस्कार कैसा हो यदि अिसका विचार किया जाअे तो यह आवश्यक तथा हितकर कार्य होगा। लोग अिसको अच्छी तरह समझ भी सकेगे और समझानेवाले अिसे समझा भी सकेगे। प्राचीन कालके ऋषि-मुनि तथा समाजके नेतागण हमेशा संस्कारकी ही बात करते थे और अुसके सम्बन्धमें ही निर्णय देते थे, ससृत्तिके सम्बन्धमें नहीं। यदि प्रयत्न किया जाअे तो हमारा मानना है कि कुम्भका पर्व भी अेक अच्छा संस्कार देने-वाला मेला बन सकता है। अुसमें सामूहिक-सफाअी, सामूहिक व्यवस्था, नियमन, गमना-गमन तथा पारस्परिक सेवा, मिलन-परिचय, विचार-विनिमय आदिके अच्छे संस्कार दिये जा सकते हैं। गाधीजी हरद्वार कुम्भमें जब गये थे तब सफाअी सम्बन्धी भावना लेकर ही गये थे और अुनके प्रयत्नका अच्छा परिणाम भी तब हुआ था, यह हम जानते हैं। आगे होनेवाले कुम्भके वारिमें यदि सरकार तथा जनता दोनों अिस प्रकार विचार करने लगे तो हमारा दावा है कि कुम्भकी यह दुर्घटना वितनी भी दुःखद क्यों न हो प्रकारान्तरने आशीर्वादम्प बन सकती है।

हिन्दुस्तानी अकेडेमी, प्रयाग :

फरवरीके प्रथम सप्ताहमें अिम मस्याकी रजत-जयन्ती मनायी गयी । अिस मस्याकी म्या पना १९२७ औ मँ हुअी थी और तमसे अवतक यह सरकारी अनुदानसे ही चलनेवाली मस्या रही है । हिन्दी तथा अुर्दू साहित्यका मरवण तथा अभिवृद्धि अुसके अुद्देश्य रहे है । अिस मस्याने अतक १२२ पुस्तके प्रकाशित की है—जिनमें हिन्दीकी ७७ और अुर्दूकी ४५ पुस्तके है । अिन पुस्तकोंमें 'हिन्दीके कवि तथा काव्य' (३ खटोंमें) और 'अक़ादर मग़ुन' (५ खटोंमें) और अभी हाल ही में प्रकाशित अेक वृहद् "तुलसी शब्द-सागर" जेमे षष भी है । कुछ ग्रथ छप रहे हैं और जो प्रेममें हैं अुनमें आचार्य नरेन्द्रदेवजी द्वारा अनूदित अमुवधुना "अभिधर्म-कोष" भी अत्यन्त महत्वा प्रथ है ।

अिनमें सदेह नहीं नि अेकेडेमी अच्छा काम कर रही है, परन्तु १९५३ से अुसके मामने आर्थिक कठिनायीका बहून बडा प्रश्न अुपस्थित हुआ है । अुत्तर प्रदमरी सरकारसे अुमे जो वार्षिक अनुदान मिलता था, वह बंद कर दिया गया है । अत्र अेकेडेमीको अपने ही पैरोपर खड़ा रहनेका प्रयत्न करना होगा । जनतासे अुसे कितनी साहायता मिल सकती है यह भी असके सामने अेक प्रश्न है । सच तो यह है कि सरकारी अनुदानपर ही निर्वाह करनेवागी मस्याका अब अिस जमानेमें कोअी स्थान नहीं हो सकता । हिन्दु-स्तानी अेकेडेमी' अिम मस्याका नाम १९२७ औ में रखा गया था, अुस समय अिस नाममें कुछ आनर्पण रहा भी हो, पर आज तो अुस नाममें कुछ विशेषता नहीं दिखायी देती । यही नहीं, कअी लोगोको यह नाम पटवता भी है । अिसे

बदलना अति आवश्यक हानपर भी अत्र तत्र वह मरवारमे वधी हुआ थी अेमा परिवर्तन नहीं कर सकती थी । आज भी वह नाम परिवर्तन कर सकेगी कि नहीं यह हम नहीं कह सकते । परन्तु वानूनकी कोअी बाधा अुपस्थित न हो तो वह अब वैसा प्रयत्न अवश्य कर सकेगी । हम जानते है कि अहमदाबादकी गुजरात अर्नाक्युलर सोसायटी भी रजिस्टर्ड मस्या थी, फिर भी म्बन्धताके नये वानावरणमें यह नाम अुसके लिअे अनुपयुक्त था, अिमलिअे श्री मावलकर (समदके स्पीकर) क, जो अिसके अध्यक्ष थे, प्रयत्नमे अुसका नाम बदलकर "गुजरात त्रिधा सभा" रखा गया है जो अब लोकप्रिय बन गया है । अिमी प्रकार अिस अेकेडेमीके नाममें भी अीघ परिवर्तन करनेकी आवश्यकता है ।

सरकारी अनुदान बंद हो जानेसे मस्याको आर्थिक कठिनायीका तो सामना करना ही होगा, परन्तु हम मानते है कि अिममे मस्याको अतनोगतता लाभ ही होगा । अब तो वह स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी कार्य योजना बना सकेगी और राष्ट्रभाषा तथा अुमने पाठना तथा प्रेमियोंकी आवश्यकताओंको ध्यानमें रखकर योजनाबद्ध कार्य करनेपर महज ही अुमे जनताका समर्थन प्राप्त होगा । हमें जो जानकारी प्राप्त हुआ है अुसके अनुसार मस्याका अब अुपसमिति नियुक्त करके सरकारी अनुदान बंद हो जानेपर भी अब कार्य किम प्रकार किया जाअे अिसकी योजना बनानेका काम अुसे सौंपा है और सरकारी अनुदानने बिना भी मस्याको कायम रखनेका निर्णय किया है । हम अिम निर्णयका स्वागत करते है और मस्याके पदाधिकारियोंका तथा नियामकाका अिम निर्णयके लिअे अभिनन्दन करते है ।

संस्थाके जिस 'रजत जयंती-महोत्सव'के समय संस्थाकी ओरसे 'राष्ट्रभाषा और अस्सका साहित्य' जिस विषयपर अंक चर्चा रखी गयी थी। स्पष्टदर्शी तथा स्पष्टवक्ता विद्वद्वयं श्री अमरनाथ झा अस्सके अध्यक्ष थे और कभी विद्वानोंने चर्चामें भाग लेकर राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें अपने विचार प्रकट किये थे। जितने भी वक्ता अस्स मंचपरसे बोले अन्तर्ने विचारका दृष्टिकोण पृथक् पृथक् था। राष्ट्रभाषा तथा अस्सके साहित्यका कोअी स्पष्ट रूप तो श्रोताओंके सामने आ न सका, परन्तु जिस प्रकारकी चर्चाका जो लाभ होना चाहिये वह लाभ अवश्य हुआ। जिस सम्बन्धमें विचारके कितने दृष्टिकोण हैं, यह हम समझ सके, कि यह कोअी अल्प लाभ नहीं। हम चाहते हैं कि ऐसी चर्चा और भी अधिक व्यापक दृष्टिसे की जायें और जब हम राष्ट्रभाषाकी वात करे अस्स समय हमारे सामने केवल हिन्दी और हिन्दीके साहित्यका ही प्रश्न न हो परन्तु राष्ट्रनिर्माण तथा राष्ट्रीय अंकताके लिये आवश्यक भारतकी दूसरी भाषाओंका भी अपयोगी साहित्य हमारी दृष्टिके सामने रहे। राष्ट्रभाषा तथा अस्सके साहित्यका प्रश्न अति महत्वका प्रश्न बन गया है। राष्ट्रभाषाका प्रचार खूब हुआ है, हो रहा है और होगा। परन्तु अस्सके साहित्यका

प्रश्न-राष्ट्रव्यापी दृष्टिकोणसे हल करनेका प्रयत्न अभीतक किसी भी संस्थाने नहीं किया है। केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारें भी जिसके प्रति अदासीन रही हैं। सरकार जिसके लिये रुपया खर्च करती है, परन्तु अधिकतर रुपया तो दिखावेके लिये ही खर्च किया जाता है। साहित्यिकोकी कृतियोंपर पुरस्कार देकर अन्तर्ने सम्मान करना अच्छा है, परन्तु जिससे साहित्यके सर्जनका कोअी ठोस कार्य हो सकता है, यह हम नहीं मानते। हिन्दुस्तानी अकेडेमी जैसी संस्था यदि कोअी योजना साहित्य निर्माणकी बनाये और जिस भूमिदान, धर्मदान, सपत्तिदान आदि त्याग तथा सेवाके आदोलनोंके युगमें अकेडेमीके सब सदस्य अपना कुछ समय अस्स योजनाको सफल बनानेमें अपनी साहित्यिक प्रतिभाका अपयोग करे तो राष्ट्रभाषा तथा अस्सके साहित्यकी वे बहुत बड़ी सेवा कर सकेंगे। फिर हमारा ख्याल है कि अकेडेमीको पैसेकी भी चिन्ता न करनी होगी। परन्तु वह लगन, वह श्रद्धा और वह सेवा-भाव अस्सके सदस्योंमें होना चाहिये जो बरबस कार्य करनेकी प्रेरणा देते हैं और अस्से सफल बनानेके तमाम साधन और सामग्री खुदब-खुद जुटा देते हैं।

—मो० भ०



जिस घरमें आरोग्य प्रकाश नहीं, वहाँ सुख शान्ति कहाँ ?

आरोग्य, स्वच्छता और चिकित्साका सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ

भारत प्रसिद्ध श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेडके अध्यक्ष वंशराज प० रामनारायणजी वंशगास्त्रीने ५-६ वर्ष बड़ी मेहनतसे स्वयं अग्न प्रथरी लिखा है। ग्रन्थका अंग-अंग वाच्य हुआरु उपयेका काम देता है। व्यायाम प्रहाचर्य भोजन, सदाचार, अस्तम विचार आदि पूर्वाह्न विषयोको पढकर और तदनुसार चलकर सदा बीमार रहनेवाला रोमी बिना दवाके तीरोग (तन्दुरुस्त) हो जाता है। घरने अन्तराह्नमें शरीरमें पैदा होनेवाला सभी रोगानी अल्पति, कारण निदान, रोगके स्थापण घित्सा, पथ्यापथ्य आदि बड़ी ही सरल भाषाम लिये है जो पढकर विद्वान्ते लेकर साधारण पढे लिये दोनों समान भागसे लाभ भूटा करते हैं। अममें दवाआने जो नुस्ते लिये गय है वे बहुत बार परीक्षित कभी भी फेल न होनेवाले और शास्त्रानुमोदित है। सहर हो मा देहात सत्र जनह जिस पुस्तकके घरमें रहनेसे रोगीने तस्वाल लाभ पहुँचाया जा सकता है। ओपधि तैयार करनेका विधान तो जिस पुस्तकमें थोष्ठ है क्वाति लेखन जिस विषयने निर्णयामर जाता है। इसके आठ सस्करणोंमें ७१००० प्रतिया छपकर विष चुरी है। यह नवा सस्करण १५ हजारका अभी छप रहा है। अमते जिसरी लोक प्रियता और अपयोगिता स्पष्ट मान्य होती है। हिन्दीमें अंकी अन्तम पुस्तक इमरी नहीं है यह कहा अप मो अनुचित न होमा। प्रचारकी दृष्टिसे मन्थ भी बहुत कम रता गया है। ५१५ पृष्ठी पुस्तकका मूल्य सिर्फ १॥॥ डार तर्च ॥२॥, हमारी चार निर्माणशाला ५० किमी वेन्ड, १५००० अंज्रेनियामे प्रत्यका खरीदनेपर डार तर्च नहीं लगेगा।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड, कलकत्ता, पटना, झाँसी, नागपुर।

—: अद्यम :—

हिन्दी और मराठी भाषामें प्रकाशित होता है।

प्रतिपाठ १५ री तारीखको पढिये।

अद्यममें निम्न विषयोंके लेख छपते हैं:—

एतद्भक्षय अद्योगपधोत्री जानकारी अनाज तथा मञ्जीरी लेरी व रोमाना विचारण, पशुपालन, दुग्धव्यवसाय व शामोद्योग समी ऐन विद्यायियोन लित्र वैज्ञानिक व अन्य जानकारी आरोग्य, धरल ओपधिया समी ऐन हिन्दुस्तानके वैज्ञानिक और औद्योगिक कपधरी अपयोगी जानकारी, कृषि, औद्योगिक और व्यापारिक कपधम काम करनवाते लोगाकी मूलाज्ञान तथा परिचय।

अद्यमके विशेष लंभ

महिलाओने लिखे अपदुषत एचिजर ताद्यपदाय बनानेकी विधि घरेनू मितव्ययिता अद्यमका पणध्यवहार, शोत्रपूर्ण क्परे आविन तथा औद्योगिक परिवर्तन जिज्ञानु जगू व्यापारिक हन्कषारी मासिन सभाओचना निरयोगयोगी वस्तुअं स्वय तैयार कीजिये।

वारिक चम्बा ७ र और प्रति अष १२ आना

पता.— 'अद्यम' मासिक, धर्मपेट, नागपुर (म. प्र.)

सुन्दर टाजिप और वार्डर

जिस कारखानेके सुन्दर और मज-
बूत टाजिपको बनेक छापखानेवाले पसन्द
करते हैं। हमारे यहाँ अग्रेजी, मराठी,
गुजराती तथा कानड़ी टाजिप और बनेक
प्रकारके वार्डर तथा जिलेक्ट्रो ब्लक्स हमेशा
तैयार मिलते हैं।

बत्ती प्रकार हमारे यहाँ मोनो नुपर
कास्टरमे तैयार किये हुबे १२ पाजिट
हिन्दी और मराठी टाजिप भी तैयार हं।
बेटलाग जरूर मंगावें।

पता—मैनेजर, निर्णय सागर प्रेस,
बम्बयी नं० २

२६ जनवरी १९५४ से

“सार्थी”

सम्पादक— पण्डित द्वारकाप्रसाद मिश्र
भूतपूर्व गृहमंत्री, मध्यप्रदेश

जिसमें पढ़िजे—

बैचारिक क्रांतिका अदम्य श्रुतयें। संस्कृतिके
मूलतन्त्रोंका अन्वेषण। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय
घटनाओं और समस्याओंका भेदक विश्लेषण।
साहित्य सृजनकी बहुधा दिशाओंकी ओर प्रेरणा।
राजनैतिक, सामाजिक और जायिक अनाचारोंका
बनावरण और मर्मभेदी व्यंग अर्थ अविस्मरणीय
परिहासकी मृष्टि मिलेगी।

प्रत्येक छोटे-बड़े नगरमें बेजेट चाहिजे।

व्यवस्थापक— ‘सार्थी’ घरमपेट, नागपुर

संस्कृति, कला, शिल्पा, ग्राम सेवा तथा
समाज विकासकी संदेश-वाहिका
मासिक-पत्रिका

भारती

+ जेजेमी व विज्ञानके लिखे लिखापटी करें—
+ वार्षिक मूल्य नैजवर राष्ट्र बनें—
वार्षिक मूल्य ६) अंक अंक III)

व्यवस्थापक:—
भाखी, नवम्भात प्रेम, ग्यालियर

साहित्यिक-वैमार्मिक-पत्रिका

“राष्ट्रवीणा”

संपादक:— जेठालाल जोशी
वार्षिक मूल्य ३॥) अंक प्रति १२)
वर्षा समितिके सक्रिय प्रचारकों और केन्द्र-
व्यवस्थापकोंको पत्रिका आप्ने मूल्यमें भेजी जाती है।
— व्यवस्थापक “राष्ट्रवीणा”

पुजरात प्रा. च. भा. प्र. समिति, बालूपुर,
खजुरीकी पोस्ट, अहमदाबाद।

पुस्तकालय-संदेश

[पुस्तकालय-आवृत्तिका प्रकाश-स्तत्र मार्मिक-पत्र]

संपादक संचालक
श्री कृष्ण लंडेकर, श्री लट्टन चौधरी अन्-अन्-अ
वार्षिक मूल्य ३) अंक प्रति १।)

व्यवस्थापक, पुस्तकालय-संदेश
पो० पटना विश्वविद्यालय, पटना—५

महाराष्ट्र राजा प्रचार समिति, पुणेके तत्वावधानमें
राष्ट्रमाया प्रचारकों अर्थ परीन्यायियोंके
सुपयोगकी हिन्दीकी अभिनव साहित्यिक
मासिक “जयभारती” पत्रिका
सम्पादक अर्थ प्रकाशक:— श्री पं. सु. डांगरे
मनीजार्डसे वार्षिक मूल्य १) अंक रूपया
मित्रवाकर शीम प्राहक वन जाजिजे।
पता:— ८६६ नवमिष, पो बॉ न.५५८, पुणे २.

आवश्यक सूचना

राष्ट्रभारती राज्योके शिक्षा-विभागो द्वारा स्कूलो, कालेजो और वाचनालयोके लिभ्रे स्वोद्वृत है। 'राष्ट्रभारती' का चौथा वर्ष आरंभ हो चुका है। राष्ट्रभारती समग्र भारतीय—अन्तर-राष्ट्रीय साहित्यका प्रतिनिधित्व करती है। अमने हिन्दीकी साहित्य परियोजनाओंमें अपना अेक प्रतिष्ठित अेव महत्वका स्थान बना लिया है। प्रेमो पाठकोमें निवेदन है कि अेक अेक नया पाठक बनाकर अिस पत्रिकाकी प्रारंभिक मर्यादोंमें वृद्धि करे और राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके असाहको प्रोत्साहित करे। विनायक और 'राष्ट्रभाषा-रत्न' शोभोपयोगी अुक्च आलोचनात्मक-परिचयात्मक लेख भी प्रतिमात्र अिसमें छपेंगे। कृपया अिस बातको ध्यानमें रखके हमारी लिखित अनुमति लिये बिना कोओ मन्त्रन या प्रकाशक 'राष्ट्रभारती' के पिछले अकोमें या आगामी अकोमें प्रकाशित प्रातीय साहित्यके लेखो कहानियो और अेकाकी नाटको आदिको न छापें।

मोहनलाल भट्ट.

मंत्री, रा भा प्र म र्थो

राष्ट्रभारती-विज्ञापन दर

मासार्ण पत्र	पुरा — ४०)	प्रतिमात्र	तृतीय त्रवार पत्र	पुरा — १०)	प्रतिवार
	आ मा — २५)			आ मा — ४५)	"
द्वितीय त्रवार पत्र	पुरा — १००)		त्रवार त्रवार पत्र	पुरा — १२०)	"
	आ मा — ५१)			आ मा — ७०)	"

राष्ट्रभारतीकी साहित्य—९, ×३'

छाप पत्रको साहित्य—८ ×५,

तेनसे अधिक त्रार विज्ञापन देनवालोको विशेष सुविधा दी जायेगी।

'राष्ट्रभारती'में अकने व्यापारका विज्ञापन देकर लाभ बृद्धिअिअे। कर्षाक यह कर्मोरेते लेखर रामेश्वरतक और जगन्नाथपुरोते इारकापुरीतक हजारो पाठकीक हाथोमें पहुचनी है।

राष्ट्रभारती-अेजेन्सी

- १ प्रतिमात्र कम दे कम पाँच प्रतिमात्र केतर अी अजन्मो दी जायेगी।
- २ पाँच प्रतिमात्र लेनेपर २०) प्रतिमात्र कभीअत दिया जाअेगा।
- ३ छठमे अधिक प्रतिमात्र लेनेपर २५) प्रतिमात्र कभीअत दिया जाअेगा।
- ४ पाँचमे अधिक पाठक बना देनवाअोको भा विभाग सुविधा दी जायेगी।

विशेष जानकारिके लिअे आज ही लिखिअे —

श्री प्रबन्धक, "राष्ट्रभारती" पो० हिन्दीनगर (वर्धा, म. प्र.)

'राष्ट्रभारती' आपसे कुछ कहना चाहती है !

१ यही कि ता १ जनवरी १९५८ में वह अपन जीवनक चौथे वयमें प्रवेश कर चुकी है। भातक प्रायः सभी प्रमुख साहित्यकारों विद्वानों और पत्र-पत्रिकाओं 'राष्ट्रभारती' की प्रशंसा की और मराठा जनता अपना गुणगाना देती महोदय दिया और अन्तर्गत बनाया। अन्य सबकी कृपाओं किन गल्पों व्यक्त किया जाय।

२ यही कि वह निश्चित समयपर हर महानका पहली ताराखकी अपन प्रती पाकके हाथों अष्ट मूर्तिवृत्त स्वयं और सरन-न-दर, विविध विषयक गभार लक्ष कविता कहानी, ममालोचना आदि पाठ्य-मामदा अपन करता है।

३ यही कि फिर भी वह सबमें सती माऊ-नपरी पत्रिका है। वापिक मूल्य कहिये या सालाना बना कहिये ज्यादा नही सिर्फ ६ रुपये और अध-वापिक (छठ माही) ८ आना और अक्ष अक्ष १० आना।

४ यही कि राष्ट्रभाषा प्रचार समितिक प्रमाणित प्रचारका क-द-व्यवस्थापका और विद्यालया तथा महाविद्यालयाका राष्ट्रभारती' जेक रुपया कम करके दियायती मूल्य ५ र वापिक चन्में और अध-वापिक चन् २ र में डा जायगी।

५ यही कि जिस महान पत्रिक साहित्यिक अव-मान्युतिक राष्ट्रभाषा प्रचार काममें आप राष्ट्रभारती' का हाथ बनाय। अमकी सहायता करे। स्वयं साहक बन और अपन मित्राकी भी बनाय।

६ यही कि राष्ट्रभारता आपकी असी सहायताका मह्य आभारपूर्वक स्वागत करगी।

राष्ट्रभारतीके लेखकोंसे निवेदन

(१) 'राष्ट्रभारती' में प्रकाशनाय रचना आदि नामकी स्वच्छ-मुवाच्य लिखावटमें अपवा अन्धा टाइन का हुआ काम नजनी चाहिये। प्रकाशनाय नामकी जो कुछ भा आन भजे वह बहुत भार-वैपिन और बहुत लंबी नही होना चाहिये।

(२) यह अच्छी तरह ध्यानमें रहे कि राष्ट्रभाषा प्रकाशनाय भजा हुआ आकी रचना अमक पूर्व किता हिन्दा पत्र-पत्रिकाम प्रकाशित न हा चुकी हा और जा कुछ सामदा भजे वह राष्ट्रभारता क लिख हा भजे। राष्ट्रभारता अपन लक्षकाकी पत्र-पत्र-पर-कार' भी न करता है।

(३) अनुवादक महागय किमी अनुमित रचनाका भजनस पूर्व अमक मूल-ल-वचन पत्र-द्वारा अनुमित अवय प्राप्त कर ल तभी अनुमित रचना हमार यहाँ भजे।

(४) आपका स्वाहिन रचना सबदा नूषना सपाक द्वारा आका दा जायगी और छपननक आरका प्रकाशना करना होना।

(५) अपना अस्वाहिन रचनाका वाचन मातक लिख एक लिख अवय भजे आका आन अमका प्रतिनिधि अपन पान मूर्तिवृत्त मय।

(६) लक्ष रचना सम्पादन-हाथ आनि माग पत्र-व्यवहार अम पत्रपर कर —

संपादक 'राष्ट्रभारती'

पाल-हिन्दा नगर (वधा मध्यमग)

भारती

१९१६



प्रसिद्धि वर्धा

-: विषय सूची :-

	लेखक	पृ०सं०
१. लेख :		
१ बुद्धिवा माहितीची मुख्य धारा	** श्री बाबाय ना मायाधर माननिह	१०१
२ 'एह अर्थ'	श्री बाबाय दादा घमानिकारी	१११
३ प्रतापनि	श्री गिबनाथ	२११
४ कमी लोकसाहित्यमें विलाप गीत	श्री बी. राजेंद्र ऋषि	११६
५ सा निषाद प्रान्तावम	श्री राजेंद्र सादव	१०
६ बोवेंपार	{ श्री राजेंद्र सादव श्री राजेंद्र सादव	१०
२. कविता :		
१ नारे	श्री 'नग' तुपकरा	४३
२ गान दा	श्री प्रा मित्तल	४६
बबना	श्री अचल'	४६
४ पूष हा पायी नहा अमका बरानी !	श्रीमना गाति महाराज	
३. कहानी :		
१ मनुष्य (गुजरगती)	{ श्री पन्नालाल पटल अनुवादक— श्री गीरांगकर नागा	१११
४. अेकांकी :		
१ प्रममें भगवान	{ श्री स्व टालम्याद रघांतरकार— श्री विष्णु प्रभाकर	१
५. टेपनागर :		
१ ललाचराक वचन (काभारी)	अनुवादक— श्री प्रमनाथ जाटू	२६०
२ मध्यावाळ (मगगा)	{ श्री म म दगाथल अनुवादक— श्री अनिलकुमार	१८
३ मन समन पाना हें (मगगा)	{ श्री आ ना पणकर अनुवादक— श्री अनिलकुमार	६८
४ भावना नागाथ्याक रजकण (गुजर न)	** { श्री 'धूमकतू अनुवादक— श्री गकरदव विद्यालकार	१११ ११६
६. साहित्यालोचन :		
७. मम्पादर्शीय :		

वार्षिक चन्दा ६) मनीभांडरमे

अर्धमासिक ३।।)

अंक अक्का मूल्य १० चना

पता:— गण्डूभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर. वर्धा (म. प्र.)

राष्ट्रभारती

[भारतीय साहित्य और संस्कृतिकी मासिक पत्रिका]

—: सम्पादक :—

मोहनलाल भट्ट . हृषीकेश शर्मा

वर्ष ४ *

वर्धा, अप्रैल १९७४

* अंक ४ *

श्री सुमिश्राचन्द्रन्त फलतः :—

हमें हिन्दी-उर्दूको एक ही भाषाके दो रूप मानने चाहिये। दोनों एक ही जगह फूली-फकी हैं। दोनोंके व्याकरणमें, वाक्योंके गठन, स्तुलन तथा प्रवाह आदिमें पर्याप्त साम्य है—यद्यपि उनके ध्वनि-सौन्दर्यमें विभिन्नता भी है। साहित्यिक हिन्दी तथा साहित्यिक उर्दू एक ही भाषाकी दो चोटियाँ हैं, जिनमेंसे एक अपने निखारमें संस्कृत प्रधान हो गयी है, दूसरी अरबी-फारसी प्रधान। और उनका बीचका बोल-चालका स्तर ऐसा है जिसमें दोनों भाषाओंका प्रवाह मिलकर एक हो जाता है। हिन्दी उर्दूके एक होनेमें वाचक वे शक्तियाँ हैं जो आज हमारा धार्मिक, साम्प्रदायिक, नैतिक आदि संकीर्णताओंके रूपमें हमें विच्छिन्न कर रही हैं। भविष्यमें हमारे राष्ट्रीय निर्माणमें जो सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक शक्तियाँ काम करेंगी, वह बहुत हदतक जिन त्रिषोंको मिटाकर दोनों सम्प्रदायोंको अधिक अन्नत और व्यापक मनुष्यत्वमें बाँध देंगी।

रहा है। अडिया साहित्य साङ्गुथोपर लिखित अब भी गायके अन्दर पुस्तकालयोंमें बड़े विद्याल परिमाणमें छिपा पड़ा है। प्रा तवे सभी हिस्सोंमें अंगे विधात्र परिवार बितारे पडे हूँ जिनमें हरअेकके पास तात्पयकी कःङ्कलपियाका अेक-अेक पुस्तकालय है, जिनकी देर रेपका भार अुम परिवारके पुरोहितपर है। अुडीसाके लगभग सभी गाँवोंमें अिम प्रचारके साङ्गयनी पुस्तकालय हूँ। अुडीसाकी जनता और साहित्ययोषी अिमसे बड़कर सफलताकी कसौटी और कमा ही मकती है, कि राज्यरी सहायतासे वचित ससृष्ट अध्पयन अध्पायनके ठेरेदार ओग्यांनु ब्राह्मणोंसे अपहृत साहित्य, तथा अभिजात पंडित वर्गकी सरवपताम विलीन हापर भी अुडिया साहित्य अिननी मुडिकी प्राप्त हुआ है, और जो सामान्य जनसमूहको अपनी पविताके जाडूमे सापर और विधित करता रहा है।

अितना कुछ कहनेका तात्पर्य यह है कि अुडिया साहित्य मुख्यतया सर्वजनिय साहित्य है। धरतीके पुत्रीके लिये धरतीके पुत्रासे अुप्यन हुआ साहित्य है। अुदाहरणके तीरपर लीजिये—

कवि सरलादास घ अुनका अुडिया महाभारत

अुडिया साहित्यक निपनित्रपर औसाकी १४ वी गदीमें गयसे गहले सरलादासका अुदय हुआ। यह अुडिया महाभारतका प्रथम कवि है। अुडिया साहित्यकी सबसे बड़ी पह णी पुस्तक यही है। यह अिलेडो प्रसिद्ध कवि चॉमररा समसामयिक है और अुडीके जैसे अकचड और जीवित गुणारो लिय हुआ तथा वैसी ही सफायेपी और मभीर अीवें ओग वणर तथा चित्रणकी यही अकम्पा प्रवृत्ति अिममें पायी गयी है। अितने यगधर आज भी कटप जिउमें मौजूद हैं। अुसकी अुमभूमि और समाधि आज पवित्र तीर्थ बन गयी है। यह निविवाद है कि मह कृपक कवि ससृष्ट ज्ञानसे सवेवा अुप्य था और सकाटेशेडक कवि व गंकी भाति अिते भी सतोम हल कत्रने समय गुदरतसे ही कविता करनेकी प्रेरणा मिउती थी। ब्राह्मण पविताके सन्तके गुनी-गुनावी कयाओकी अेक साथ मिला पर अिस अर्धाधिकित जिसानने अक अेवी भाषामें महा

भागतवी रचना आरभ की जिसकी पुत्री तबतक कुछ कोनगीतातक ही सामित थी और जिये अुम समय तबक राजा और अुडिजीवी घृणा पूर्ण दृष्टिसे देना करते थे।

यह सरलादासका महाभारत अर विद्याल रचना है। अिये मूलका अनुवाद अिसलिअ नही कहा जा सता कि मह कवि ससृष्ट ज्ञानसे कोरा था। अिसत्रिअ यह शूनाधिर मायामें मौलिक रचना ही है। कविने मूल पुस्तकके प्रम और प्रगाहको अुलट पुलटपर कया वणनमें अपनी अततिहृत कल्पनासे वाम लिया है। पुरानीकी जगह नयी कयात्रा और परिस्थितियात्रा निर्माण किया है—ज्ञान अनजान मूलरी अतक घटनाआ और कयात्राकी अुपकपा की है। आरचपकी वान ती यह है कि कविने अपन मीमित अनुभवके आधारपर ही अपनी रचनाओरे लकाजीन अुडीसाके जन जीवनका दर्पण बना दिया है।

सरलादासकी रामायण

गल्पनायन महाभारतपूरा कालके बाद अुडियामें रामायणकी रचना भी करनी चाही वाटमीकि रामायणके कयातर अुसरी अररड अरुहड कृपक प्रवृत्तिकी प्रभाविय करतमें असमय रहे जिये महाभारतके वापर अपनी अससृष्ट अुद्गम तेजस्वितासे आजीवन आकाट करत आ रहे थ। कविने जीवनक प्रति अपन कृपक-सुलभ वस्तुवादी दृष्टिकोणसे कारण ससृष्ट महाभारतके देव सतामोनी अुनके जालजिक अुक्तासनसे अुतारकर सामान्य नर-नारिधोकी पकिनमें ला सडा किया है जो वपुड स्वाधिति लिअ लटने जगहने हैं, सामान्य प्रलो मनोके समकप पुनर टक देने हैं। अिसलिअ सरलादासन राम और सीताके आदकवादी चरित्रकी सधया भुपेअड करके अपन महाभारतके ढगपर अेक नयी रामायणकी रचना कर डाली। जब कि वार्माकिन रावणको लकना राजा कयावा है सरलादासने विउकषा का। और रावणके दम मुनारी जगह हजार सुभोंका वणन किया है। यह हजार मूलकाला रावण रामको अुसके भात्री और सन्तपदित्यात्र सय वार-वार पराजित करता है और अ तमें सीताक पतिअनने कलमे धारा जाता है।

पूरी रामायणकी रचना की है जिसमें प्रत्येक सर्गके लिये नये छंदका प्रयोग किया गया। इस आश्चर्यजनक वाक्यमें केवल प्रथम पंक्तिही 'वा' अक्षरसे आरम्भ होती नहीं, बल्कि प्रत्येक सर्गमें ऐसी अनेक कविताएँ हैं जिनका आरम्भ 'वा' वर्णसे होता है। इस ग्रन्थकी समाप्ति बारह महीनेमें हुई थी। ऋतुओका वर्णन पद्य-बद्ध रूपमें जिस प्रकारसे किया गया है कि यदि उसका प्रथम अक्षर पृथक कर दिया जाये तो उसमें गोष्म ऋतुका अर्थ निकलेगा, और द्वितीय अक्षर अलग करनेसे वर्षा ऋतुका। और तिसरी प्रकार अन्य ऋतुओका भी। अिन सब तथ्योपर विचारनेसे यह कहा जा सकता है कि अपेन्द्र 'शब्द-शिल्प-कला'के अत्यन्त शिखरपर पहुँचा हुआ था, जिसकी अपुमा किन्ती अन्य साहित्यमें मिलना कठिन है। अिसने अपने समयमें प्रचलित सरल और जटिल सभी प्रकारके छन्दोका बड़ी छटाके साथ प्रयोग किया है, और कुछ नये छन्दोका आविष्कार भी। विलासी रोमांचक रचनाओमें भी यह अपना सानो नहीं रखता। अपनी असाधारण शब्द-शिल्पिताके सहयोगसे अिसने जिस अुद्धाम रति-प्रेमके चित्रणमें असाधारण प्रतिभा दिखायी, अुसने सभी वर्गोंकी जनताको विमग्न-विभोर कर दिया है।

किन्तु, जब हम अपेन्द्रको और अुसकी कृत्रिमताको साहित्यके षषेनसे अलग कर दें, तो अिस युगमें भी अनेक स्थानोंमें हमें सच्ची कविताओकी निर्मल निर्दरिणीका दर्शन होता है। अिस युगके बड़े-बड़े कवियोंमें अभिमन्यु सामन्त, मिन्हार दीनकृष्णदास तथा कविपुरीय बलदेव हैं, जिनकी कविताओंमें शब्दाडवर और शास्त्रीय मर्यादाओके वावजूद सगीतकी सुन्दरता अुडीसाके जनगण-मनको अुद्वेलित करती है। अिस युगमें अुडिया भाषाको समृद्ध-निष्ठ बनानेका अुन्माह अिस सीमा तक पहुँच चुका था कि कवि बलदेवने अपने प्रसिद्ध "विशोर-चन्द्रानन्द चपू" को आधी समृद्ध और आधी अुडियामें लिखा। अिस नाटकका विषय राधा-कृष्णका मिलन है। अुसका त्रिक विवास सगीतमें होता है और अिन सगीतका अर्थ वर्ण-पंक्ति मालाके अंक अंक अक्षरसे होता है। प्रत्येक सगीतकी

प्रत्येक पंक्ति अंक ही अक्षरसे प्रारम्भ होती है। अिन मर्यादाओके वावजूद बलदेवके सगीत अनुपम हैं; जिसके स्वर-मन्दोहको अुडिया-सगीत-विद्वारद आज भी प्रमाण मानते हैं। सगीतकी अुत्कृष्टताके साथ-साथ गायिका श्री राधा और दूती ललिताका- चरित्र चित्रण अितना छटापूर्ण है कि अिसी विषयको लेकर लिखे गये सुकवि जयदेवके "गीत-गोविन्द" को अपेक्षा भी अिसमें अधिक सौष्ठव, माधुर्य और वास्तविकताका परिदर्शन होता है।

व्रजनाथ चट्टेना :

समर-तरंगके रचयिता व्रजनाथ बडजेनाका स्थान केवल अुसी युगके साहित्यमें ही नहीं, बल्कि सर्वगुण साहित्यमें सुरक्षित रहेगा, और अिस श्रेणीके अखिल भारतीय साहित्यमें भी बहुत कमको यह स्थान प्राप्त हो सकेगा। व्रजनाथ ढोकानल राज्यका निवासी था, और समवन अपने राज्यके विरुद्ध मराठा आक्रमणको विफल करनेमें अुनने हाथ भी बटाया था। अिसी विषयको लेकर अुसने युद्धोत्तेजक कविताओकी रचना की। काव्यमें विभिन्न वीर-छन्दोका प्रयोग किया और जहाँ अुडिया भाषा भावोंको अभिव्यक्त करनेमें असमर्थ रही वहाँ कविने खुलकर हिन्दी और मराठी शब्दोका भी प्रयोग किया।

रीति-काव्यकी प्रतिक्रिया :

१८ वी सदीके अन्तमें अुडिया-साहित्यके मक्षपर महान सन्त कवि गोपालकृष्णका आविर्भाव हुआ, जिनकी स्मृतियाँ आज भी बड़ी पूजा और प्रेमके साथ जन मनमें मौजूद हैं। अिसी समय काव्यमेंसे कृत्रिमताका हास होने लगा। कृष्णकी कथा और अुपदेश अिनके काव्यके विषय थे। अुनके छोटे छोटे मुक्तकोंमें हमें अंक साथ ओश्वर और मानव तथा नर और नारीके प्रेमकी रीतियो अेव गभीरता और अुद्धामताका परिदर्शन होता है। वृष्ण-गीतों और मुक्तकोंके लेख होनेके नाते गोपालकृष्ण विद्यापति, और चडीदासकी श्रेणीमें आते हैं। प्रेमकी सूक्ष्मता और महानताकी अभिव्यक्त करनेके लिये कथोपकथनकी अुत्कृष्टता अुन जैसे प्रतिभाशालीकी निजी विशेषता है।

आधुनिक युग

गोपाय-शृण्णकी मृत्युके समय तक अग्रजी विख्याता प्रकार हो चुका था। यद्यपि वे स्वयं पश्चिमी विख्याते मनुष्यत्व अङ्गूठे रहे। नवयुगकी अुपाका आविर्भाव हो चुका था, परन्तु अिज अन्तिम मध्ययुगीन महा कविका अुमका आभास नहा था। नय मुनिविपत पठो चहचहाने लग य किन्तु खद है कि नय और पुरान कवि न मिल सके।

अग्रजी नामन जालमें सभी भारतीय भाषाभाषा विहितज्ञान लगभग एक जैसा ही है। यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि साधारण रूपसे स्वतन्त्र अब सम्पन्न अग्रजी साहित्यके सम्पन्न भारतीय भाषाओंमें अस्वतन्त्र एक नया जीवन आ गया। कविताओंमें अन्विष्टवित्तके अिज नय आत्मबन्धोका आश्रय लिया गया। व्यवहारिक रूपम गद्यका जन्म हुआ। नाटक और अुपयासम जीवनके विषय खोजे जान लग और पत्र पत्रिकाअ धारावाहिक विचारोकी अविद्यवित्तका माध्यम बनी। किन्तु अिस नय साहित्यको अपनी स्वतन्त्रे अिज जभि जात वर्गीय जनतापर निर्भर रहना पडा। अिसय पूव पुस्तक निर्माणमें कवि या लिपिके परिश्रमके अतिरिक्त और कुछ ध्यय नही होना था। अेकिन अब अिगके अुत्पादनमें अुत्पादक औरविश्रना अुभय पक्षक अिज नरद पूजोकी जरूरत हातो है जब कि पुरान समयम मदिदा शाम-अुत्सवा और याया दलाके प्रवचनो अब धनियाके पर नृत्य-गीत-नमनारोहाके अवसरपर लोग मुपनम ही अिसका आनन्द लने य। मां सरस्वतीकी परिश्रम छायालानके प्रवेगने माय ही यह सब लुण हो गया। परिणामत साहित्य खर्चींग बन गया है। धनी और विनासी मध्यवर्गीय जनताकी पुष्पभूमिपर यह एक व्यापारिक वस्तु बन गयी है।

अुष्टिया साहित्यके तीन चमकते तारे

बुद्ध गिनतीके मरस्वतीके वरद पुत्रीकी कठोर लगनेके परिणाम स्वरूप पाश्चाय विचारोका प्रवाह अुष्टियामें बुद्ध देरम पहुचा। अग्रजी नामनम अुष्टोसाके यह सङ्घ कर दिय गय य। अुष्टिया भाषाका स्थान

पडोसी प्राणाकी भाषाआन लग आरम्भ कर दिया था। अिमी समय अुष्टिया साहित्यके आकाशमें तीन चमकन ताराका अुदय हुआ। अिनके नाम य फकीर मोहन राधानाय और मनुसूदन। अिन तीन प्रतिभाअ द्वारा रचित साहित्यन ही सङ्घ सम्म जहाँ तहा विचरी पनी अुष्टिया जातिको एक मुपन बाँचनको प्रस्था दी।

फकीरमोहन सेनापति

फकीरमोहन सेनापति एक वयन वड अुपयासकार होना साथ माय सेनापति नाम धमके अनुमार जन्म जान नया भी य। आधुनिक भारतीय साहित्यमें अिनका गणना अयनम असाधारणाम की जा सकती है। वे मरोवीमें पन्ना हुआ। अजीवन बीमार रहे। आरम्भिक गिनयाकी सीमाका लीध भी नहा पाय। कि तु अिन समयत 'युवाअाके वाक्यूद अुनकी सफन्ता अम्भुन आश्चयजनक है। अब प्रायमगी स्कूणके गिनयनमे बढने-बढने एक बहून बना रियासतके दीवान पदपर पहुँच गय। अुष्टिया वगात्री हिन्दी धीर सस्वृणको जानकारो और विद्वाना कारण बन बन विद्वान अग्रज अविचारी अुनक मित्र य। साहित्यिक क्षेत्रम अिनको मरुणता तो अिसस भी अधिक आदर्यजनक है। अकले ही अिहात रामायण और महाभारत जैसे विगाल यथाका अनुवाद कर शठा अितिहास और गणितकी पुस्तक अिधो व्यापामक उद और अुनके अुष्टय मूलक अिध अुष्टियामें सत्रयम अुच्चकोटिकी छोटी-छोटी कानिया अिधो अुच्चवायिक कत्री अुपयास लिख अिनको गणना अय भाग्यीय भाषाआक कथा साहित्यम भी सम्मानके साथ की जाअगी और अनम भगवान बुद्धका अेकर अक अुन्नम काव्य ग्रय लिखा। यह अक प्रकारमे बहून बडा वरदान ही था कि अुष्टोसाका अिन प्रतिभापर पाश्चाय गिनयाका रग नही चड पाया था। वह गामाय जन गयमे पन्ना हुआ य। और अनक भाषाआरी गभीर विद्वानाके रहने भी अुत्सव सोचन और लिखनका माध्यम गामाय जन गयना भाग्य ही थी। वस्तुत अिन भारतीय शक्ति वगका सत्रयम साहित्यकार कहा जाना चाहिय। यदि अिनम अपनी रचनाओंमें यामीनाका भाषा और

मूहावरोको अतनी कुशलताके साथ प्रयोग न किया होता तो अब भी यह भाषा साहित्यिक अभिव्यक्तिके अयोग्य ही समझी जाती। किन्तु आजकल ब्रुडिया कथाकार फकीर मोहनका अनुकरण करनेमें अपना गौरव समझने हैं। किन्तु उसके कथोपकथन और मूहावरे जिनसे ब्रुडीसाकी घरती, ग्राम, खत और किसानोकी शोषणदोषोकी मुगन्धि निकलनी है, आज भी अपना सानो नही रखते। ५० वर्षोंका भारतीय स्वातन्त्र्य आन्दोलनका अतिहास फकीरमोहनके पुछोमें विद्यमान है।

राधानायक :

राधानायके रामायण, महाभारत और भागवतके पौराणिक जगतपर कविनाओं लिखी। अग्ने स्काट और बाजिरतकी शैलीपर छन्दोबद्ध रोमांसोकी रचना की। अंग्रेजालिक और स्वर्गिक वातावरणको लिये हुअे अमके पान अर्ध-अतिहासिक है। अिनकी कविताओमें मुख्य तत्व है; वह पृष्ठ भूमि जिसमें वे अपने नायक और नायिकाओको समकथ रखते हैं और है ब्रुडीसाका मुन्दर स्वर्गिक प्राकृतिक दृश्य। जिस प्रकार प्राचीन भारतका भूगोल कालिदासकी रचनाओमें अमरत्वको प्राप्त हुआ है अमो प्रकार ब्रुडीसाका भूगोल राधानायकी पक्तिओमें। सबसे प्रथम राधानायके ही ब्रुडिया साहित्यमें हमारे मरोवरो, झरनो, नदियों, वनो और पर्वनोके सौदयसे हमें परिचित कराया। जिस प्रकृतिके पुराहितको सर्वोत्कृष्ट अभिव्यजना चिलका झीलपर लिखी गयी स्तुतिपूर्ण मनमोहक कविनाओमें परलवियत होती है। राधानायके ब्रुडिया साहित्यमें स्थानीय रग चदानेके लिअे शब्दविन्यासमें प्रातिकारी परिवर्तन किया। अन्होंने मध्ययुगीन अलंकारविताको त्यागकर अपनी रचनाओमें सरल, मुन्दर अनुशामारक और अपुपुवन शब्दोका प्रयोग किया। अिनकी कविताओको बार-बार पढ़कर भी जो नही अघाना।

मधुसूदन :

मधुसूदन कट्टर धार्मिक थे। ममाजके अु-नाहो सदस्य और महान मित्रवा-नास्यो थे। अिनकी रचना-ओमें रहस्यवादकी धारा पुन प्रकट होनी है जोकि ब्रुडिया ममाजमें अन्त मल्लिकाकी तरह सदा प्रवाहित होता रहकर लौकिक साहित्यमें अभिव्यक्त हानो रही है। अिम गंभीर प्रवाहका मूल स्रोत ८ वीं मदीकी बुद्धगान

तथा दोहा नामक पुस्तक यो, जो बौद्ध-गोनिकोमें पाया जाता है और यही अत प्रवाह आगे चलकर जगन्नायदास और अुनके शिष्योकी रचनाओम अेकाअेक प्रकट होता है। और यही तत्व १८ वीं शी सदीके प्रचलन बौद्ध अन्त कवि भीम भोओके अेकेस्वरवादी भजनोमें देखा जाता है, और फिर यही वाद आधुनिक ब्राह्मणमका, योग पहनकर मधुसूदनके भजनो और मुक्तकोमें अभिव्यक्त हुआ। मधुसूदनने जो कुछ भी लिखा अुमसे विमुद्धता और वादिताका आदर्न अुच्छाम प्रवाहित होता है। अिन्होंने क्या मनुष्य और क्या प्रकृति, सर्वत्र ओस्वरीय सत्ताका अनुभव किया और अपनी स्वर्गिक वृमुग्धानो अंसे अुत्कृष्ट भजनो और मुक्तको द्वारा अुडोला है जो किसी भी साहित्यको बहुमूल्य निधि हो सकते हैं। अिनके भजन और गीत ब्रुडियाके प्रत्येक स्कूलमें गाये जाने हैं। मेहर और नन्दकिशोर :

अुपरोक्त तीनों साहित्य-रत्नोके अनेक अनुयायी और अनुकर्ता हुअे हैं जिसमें गगाधर मेहर और नन्द-किशोर विशेषत अुल्लेख योग्य है। सबलपुरके जुलाहा-कवि गंगाधरने तो अपने गुरुओमें भी कहीं अधिक ख्याति प्राप्त कर ली। अुनकी शैलीमें सस्कृतकी अुत्कृष्टता और विमुद्धता तथा मध्य युगीन ब्रुडिया कविनाओके सगीतमय छन्दोका समिश्रण है। दृष्टिकी स्वच्छता और अभिव्यक्तिकी मूख्यतामें तो अिनने अपने गुरुओ और साहित्यकारोको भी मात कर दिया है। वह ब्रुडीसाके दरिद्र कवियों और कलाकारोकी श्रेणोका था। अपनी जीविकाके लिअे अेक हाथमें अपने तंतुक व्यवसायका आधार करघा और दूसरे हाथमें स्वर्गिक प्रवृत्तियोकी परितुलिके लिअे सदा लेखनी लिये रहना। वह दरिद्र था और अपनी कविताओमें अुन्ही अुत्तमताओको अनुस्यूत किया है, अिनके लिअे सबलपुरके कपडे प्रख्यात हैं। अिम गरीब अुत्प्रेका चित्र भी ब्रुडिया भूमिके दिग्गज महागुण्योके साथ लटकाकर ब्रुडीसा धन्यवादका पात्र है।

दूसरे कवि नन्दकिशोरने तो भाषामें अेक बिलकुल मौलिक प्रवृत्ति चलायी। अिनने पौराणिक और अतिहासिक सभारके नायकों और राजकुमारोकी बिल-कुल अपेक्षा कर अपने वर्गनका विषय ब्रुडीसाके दरिद्र ग्रामोंकी बनाया। ब्रुडिया-साहित्यमें यह पहला ही अवसर था कि ग्रामीण सस्था ग्राम पाठशालाओ, गाँवका

राजी, गाँवकी स्मृति-भूमि, गाँवका मंदिर और गाँवके बाजारने पलाकी अमरता प्राप्त की सर्वप्रथम नन्दकिशोरने ही बुद्धियाने लोह-गीताकी आधार बना-कर आधुनिक सूचनकोकी रचना की और सर्वप्रथम राजनीतिको भी। जिसके 'साम विष' बुनका अष्टुष्ट इलायदा और पुराने गाँवके प्रति आकर्षकताके लिये मरदा श्रेष्ठ कृति माने जाँये।

पंडित गोपबन्धुदास :

सेनापति राजानाय और मधुसूदनके बाद जिन आने-अनजाने बुद्धिया साहित्यको सबसे अधिक प्रभावित किया है, वह है प्रात स्मरणीय गोपबन्धुदास। जिस आधुनिक युगमें बुद्धिसाने जिनसे बढ़कर मानवता-प्रेमी, परोपकारी, सर्वोच्चवक्ता राजनीतिक-सामाजिक नेता और सिद्धा-शास्त्रीको पैदा नहीं किया। प गोपबन्धुका नवनीत जैसा कोमल हृदय मानवीय दुर्दशासे अभिभूत होने ही कविता, गद्य और वचनके रूपमें सहजधार होकर अउठ पटना था, न-भूलो न भविष्यति की भाँति बुद्धिमात्र जन-गण मनको अच्छीकी तरह रोत देखा है। बुद्धिने अके कविके रूपमें अपना जीवन-कम आरम्भ किया, किन्तु मानवता प्रेमीके नाते अंत राजनीतिक कार्योंमें लग जानेके कारण साहित्य-क्षेत्रमें समय और ध्यान देना बुनके लिये सम्भव नहीं था। किन्तु अकामके कथनोंमें जब वे जेलमें होते अथवा भावुकताक बसीभूत हो जाने तब आत्मिक दानिके लिये बुनका हृदय कविता बनकर बहने लगता, पवित्र जात्माके अभूते हृदय बुद्धिलिन हो अठना, दो प्रेमियोंके मिलनकी तरह वह कविता पाठको हृदय स्वर्ग बनाती। बुद्धिया जनताके राजनीतिक और सामाजिक अदतिके लिये वे अक मासिक और मासिक पत्रका संपादन करने थे जिनके स्तभोंमें ध्वनि और प्रभावयुक्त गद्यका विन्यास देवने ही बनता। पांडित्यकी अष्टुष्टता और योल्बालकी श्रेष्ठकृतिके, अथे बुने बुनकी संपा-बुद्धिया गद्यमें अके गया रमणीय आविष्कार था।

राधानाथके वादका काल :

यह काल महात्मा गांधीके नेतृत्वमें राष्ट्रीय आन्दोलनका था। गोपबन्धु केवल राजनीतिक नेता ही नहीं थे, अगिनु स्वयं अपने रूपमें अके महान राष्ट्रीय सत्या थे। अपनी जातिकी राष्ट्रीय आशा आकांक्षाको अभिव्यक्तिके केन्द्र थे। पुरीके निकट सत्यवादीमें बुद्धिने जनता और गांधीके धारा हुआ अके

विहार स्थापित किया। बुन समयके सुयोग्य बुद्धि-जीवियों अथ सर्वोच्च अपाधिधारियाका समूह बुनके व्यक्ति बने जग पीछे मिमट अथा। वे लोग केवल पेटपर स्कूल शिक्षक बननेको तैयार थे। यह केवल गोपबन्धुकी प्रतिभा और व्यक्तिवके लिये ही सम्भव था। जिनम प्रेरित हाकर पंडित नीरवच्छदास, प गोदावरी मिश्र प कृष्णसिन्धु मिश्र जैसे बुद्धिजीवियोंका गिरोह "सत्यवादी" में आ जुटा और जनजागतिके निर्मित साहित्य सेवामें अपनेको लगा दिया। नाटक, अतिहास तथा भारतीय आदर्श और देसभक्तिकी भावनासे अंत-प्रोत छोटी छोटी कविताएँ और सूचक रचे गये। किन्तु बड़े बंदकी बात है कि बुद्धिसाका यह साहित्यिक विद्व-विद्यालय जल्पा ही में रहा। महात्मा गांधीके असह-योग आन्दोलनकी तकती तरगमें वह भी बह गया।

गोपबन्धुके अनुयायियोंके तिरोहित हो जानेपर धारावाहिक परपरामें अके आकस्मिक विच्छद आ गया। अथ कालके छात्रोंके अके दलपर रवीन्द्रनाथकी आदर्श गीलीना अथर हुआ। पठत बुद्धिया साहित्यमें जिसकी अभिव्यक्ति होने लगी। जिस दलके नेता अजदा सरकार राय थे। जिस दलके आदर्शकी जैसे बुद्धिसासे बाहर था, फिर भी अजदा सरकार और वैकुण्ठनाथ पटनायककी कुछ कविताएँ और कालिन्दीचरण पाणिग्राहीकी कुछ कहानियाँ और अके अल्पनाथ समानोचककी दृष्टिमें बुद्धिया साहित्यकारकी मूयवान बन्तु मानी गयी।

समाजवादी और मुक्त छन्द-काल :

जिन अुपराकत दलका अनुगमन करने हुने साहित्य क्षेत्रमें समाजवादियाका आगमन हुआ। अथ सारा मसार अके परिवारमें परिणित हो गया है। असे मात्रामें साहित्य भी अन्तर राष्ट्रीयताकी और अधिकाधिक अग्रसर हो रहा है। अथेजी भाषाके माध्यमसे विद्व-साहित्यमें प्रवेश सुगम हो जानेके कारण सामने किमी-नी-दिशमें, अथे गये तवीन साहित्यिक प्रयोगका प्रभाव बहुर जरादी विद्वकी अके बपुर् भाषापर पडता है। अथिदामें भी समाजवादी कविताएँ आधुनिक अथेजी कविताओका अनुकरण मान हैं।

जोबिन कविता और धारावाहिक साहित्यपर निगम देना अजदाजी करी जायेगी। काल ही कलाका सर्वोच्च निर्णायक होता है। *

‘छह अप्रैल’

: आचार्य दादा धर्माधिकारी :

[सन् १९१९ की छह अप्रैल । पराधीन भारतकी आत्मशुद्धि और विभूतिका प्रख्यात पवित्र दिन । भारत भाग्य विधाता गांधीके महान अहिंसात्मक सत्याग्रह-संग्रामका धीगणेश । और तब ९ अप्रैलकी श्री रामनवमी पड़ी थी और १३ अप्रैलकी सन्धी अकाल सिलोंकी पुनीत तीर्थपुरी अमृतसरके जलियानवाला बागमें स्वेच्छाचारी अंग्रेजोंकी नौकरशाहीके तानाशाह डायर और ओडापरका वह भीषण नर सहार, हत्याकांड, जगप्रसिद्ध नृदान अत्याचार ! और जब गांधीजीने अत्यन्त धैर्य, सहिष्णुता और आत्मविश्वासके साथ अंग्रेजोंसे न्यायकी प्रतीक्षा की । किन्तु ? — अिससे गांधी सिद्धांतोंके आचार्य धर्माधिकारीके लेखमें पढ़िए । — सम्पादक]

छह अप्रैलका दिन अधुनिक भारतके त्रिनिहामम अेक पुण्य पर्वका दिन है । कोसी ३४ साल पहले छह अप्रैलको हमार राष्ट्रपिताने अिस अुदयोन्मुख राष्ट्रका व्रतबन्ध किया था और अुमे अेक नये राष्ट्रधर्मकी दीक्षा दी थी । अुस दिन अिस भारतीय राष्ट्रके पुन-जन्मका आरम्भ हुआ, अुमे अेक अपूर्व अर्थमें ‘द्विजन्म’ प्राप्त हुआ था । छह अप्रैलमे जो राष्ट्रीय भावनाके अनुष्ठानका सप्ताह प्रारम्भ हुआ अुमकी परिणमाप्ति ‘जलियानवाला बाग’ की ‘रवि-स्नान’ में हुआ । अम पवित्र रक्तस्नानमेंसे ही यह भारतीय राष्ट्र पुनर्जीवन होकर फिरमे अनुशासन हुआ । अिसी दृष्टिमे अेक विशेष अर्थमें यह छह अप्रैल का दिन प्राणदात्री पुण्य पर्व है ।

सन् १९१८ अी. में अंग्रेज-नौकरशाह सरकारने दमनके बेलनमे अिस देशके पीपयकी पूरी तरह कुचल डालनेके लिये ‘दो कान्ठे वानून’ — ‘नील्ट अेक्ट’ गढ़ डाले । अिस दमनका मन्त्रिय विरोध करना भारत-वागियोंके लिये आवश्यक था । भारतकी जनता अप-मानित हुअी थी । वह अपनी स्वन्ध-रक्षा कैसे करनी ? भूखी, नगी, अण्ड और निह्नी जनता अपनी ‘मान-

रक्षा’ किस अुपायसे करती ? वह मनन और प्रकृष्य थी, किन्तु किर्तव्यमूढ भी थी ।

अंने अवसरपर वापू आये । वे भारतीय जनताके वापू थे । भारत माताकी मिट्टीमें जो विसिष्ट गुण हैं अुनसे अुनका पिंड बना हुआ था । मानों भारतकी विशेषताअें अुनमें मूर्तिमती ही अुठी थी । वे बापूही थे जो भारतीय जनताकी विसिष्ट शक्तिका ध्यान, आवा-हन, और आराधन कर सक्ने थे । अुन्होंने सकल किया, ‘मे भूखमेंसे अुपवासही शक्ति आगत करेगा, जनतामेंसे जनार्दन अुत्पन्न करेगा, आसक्तिमेंसे अनासक्ति— निस्पृहताका विकास करेगा, निरक्षरतामेंसे साक्षरता पैदा करेगा और निःसहता-मेंसे आत्मबलका निर्माण करेगा ।’ अिसलिये ‘सत्याग्रह आन्दोलन’ का मूत्रपात्र देवाभ्यापी अुपवासमे हुआ ।



जिन देशमें भूखने जनताकी वर्षीण और हत्याग बना दिया था, अुम देशमें किसी भी महान् अनुष्ठानका आरम्भ सहभोजनमे नहीं हो

सकना था । अिसलिये सामुदायिक अुपवास ही अुपयुक्त समझा गया । छह अप्रैलके दिन अिन देशके करोड़ों लोगोंने केवल अुपवासका व्रत रखा । देवनेमें यह अेक

प्रजापति

: श्री शिवनाथ :

संस्कृतिके परिवर्तनके साथ साथ वैदिक कालके लेकर आधुनिक कालतक 'प्रजापति' शब्दका प्रयोग भारतीय साहित्यमें अनेक अर्थोंमें हुआ है^१। परन्तु अन्त (अर्थों)में इसका सर्वप्रमुख अर्थ है—'सृष्टिकर्ता प्रजा'। वस्तुतः इसी अर्थ द्वारा इसके यथाप्रसंग अनेक व्यक्तिक अर्थ निकाल लिये गये हैं। मूलतः 'प्राणियोका स्वामी' ही 'प्रजापति'का अभिधेयार्थ है। यहाँ जिस 'प्रजापति'के दर्शन करने हम जा रहे हैं उसका सवध 'प्राणियोंके स्वामी, सृष्टिकर्ता'ने अतना अधिक नहीं है जितना कि उसकी प्राणमयी सृष्टिसे। हम अन्त मरताकी झाँकी लगे जो सृष्ट होकर भी, प्रज होकर भी स्रष्टाका, प्रजापतिकी, नाम धरे बैठा है। ससारमें अलुट-पलट लगा ही है, किमाश्चर्यमत परम्।

वात यह है कि ब्रुडिया और बंगला भाषाओंमें 'प्रजापति' तितलीकी कहते हैं—विशेषकर बंगला भाषामें, और इस अर्थमें प्रयुक्त 'प्रजापति'स वग प्रदेशकी संस्कृतिका पनपट सवध है, जिसकी चर्चा यथाप्रसंग होगी। अेक विद्वान्का कथन है कि ब्रुडियामें जिन अर्थमें 'प्रजापति' शब्द व्यवहृत नहीं है^२। परन्तु ब्रुडिया मिया द्वारा ज्ञान हुआ है कि ब्रुडिया भाषामें भी इसका प्रयोग तितलीके अर्थमें होता है।

वग प्रदेशमें ग्रामीण लोग 'प्रजापति'का अुच्चारण 'पेजापति' करते हैं, जैसे ही जैम के 'प्रणाम'को 'पैनाम, पणाम और परणाम' बोलते हैं। बंगालमें पण्डित नित्यगीको 'पिणवनी' कहते थे और यामें 'प्रजापति' शब्द प्रचलित हुआ। 'पिणवनी' संभवतः किसीलिङ्गे

कहा गया कि उसका रग पीना' होता है, परन्तु रगीनी पीनेपन तक ही सीमित नहीं है, यह हम जानते हैं। जो हा, मराठीमें भी इसे 'पिणणी' कहते हैं। वग प्रदेशके ग्राम्यजन इसे 'पयो' भी कहते हैं, परन्तु यह प्रयोग अतिविरल ही है। हाँ, अममियामें इसे 'पखिला' ही बोलते हैं। यह किसी कारण कि तितलीमें आकर और चित्र-वचिनताकी दृष्टिसे पक्ष, पक्ष वा पक्षकी ही सर्वाधिक प्रधानता है।^३

संस्कृतके अभिधान-ग्रथोंमें कीट पतंगके अर्थमें 'प्रजापति' का अुल्लेख मिलता है। जैसे—'स्वनामह्यात् कीट विशेषश्च'^४, 'स्वनामह्याते कीट भेदे'^५, 'अस्ति-सीज औव् विशेषः'^६ आदि। परन्तु इसके आवाह-प्रकार, स्वरूप आदिवादिवा कीओ वर्णन नहीं मिलता। अत अन्तमें यह स्वनाम प्रतिद्ध अेक कीट विशेष', 'स्वनाम ह्यात् कीटका अेक भेद', 'कीटकी अेक जाति' ही रह जाना है। अन्तमें अभिन्यवन अर्थ द्वारा यह 'तितली' के रूपमें गृहीत नहीं हो पाता, जैनाकि बंगला और ब्रुडियामें होता है। पालि और प्राकृतके अभिधानोंमें तो अेसा ज्ञान पडता है कि 'प्रजापति' का पालि प्राकृत रूप 'पजापति' 'पयावात्रि' बनाकर इसके अर्थ स रृष्टके अभिधानोंसे ले लिये गये हैं^७। अन्त दुद्ध 'कीट'—वाग्य अर्थ अन्तमें भी मिलता है।

३ यही।

४ 'अद कल्पद्रुम'।

५ वाचस्पत्यु।

६ सर मोनियर मानियर विलियम् वृत्त अे संस्कृत-अिलिग डिक्शनरी, मन् १८९९ अी०।

७ (क) टी० ड० रीज डविड्स तथा विलियम् स्टीड वृत्त पालिडिक्शनरी, दि पालि टेक्ल सोमा-यटी, सिप्टेड, मरे, सन् १९२१ अी०।

(ख) हर गाविददास टी० सेठ वृत्त पात्रिभ्रसद्म हण्णावी, कलकत्ता, सन् १९२८ अी०

१ सर मोनियर मानियर विलियम् वृत्त 'अे संस्कृत-अिलिग डिक्शनरी', १८९९ अी०

२ योगेश चन्द्रराम, अेम अ, विद्यानिधि वृत्त बंगला शब्द-कोश, कलकत्ता, बंगला-संस्कृत १३००।

संस्कृत, पालि, ब्राह्मणके अभिधान-प्रयोगमें 'प्रजापति' का अर्थ 'कीट' अवश्य मिलता है, परन्तु अत्र अर्थमें असत्ता प्रयोग न तो वैदिक संस्कृतमें अवतक देखा गया है और न लौकिक संस्कृतमें ही, पालि ब्राह्मणमें भी नहीं। 'सुभूत' आदि वैदिक प्रयोगों, जिनमें कीट पतंगोवा अनुल्लेख मिलता है, उनमें भी 'प्रजापति' का प्रयोग नहीं है। अंग्रेजी हालतमें यह जान पड़ता है कि कीट-पतंगके अर्थमें 'प्रजापति' शब्द केवल अभिधानोंमें ही स्थान पा सका। जिसका अभिधानोंमें स्थान पानेका भी कोई कारण अवश्य रहा होगा। और अत्र सबधमें अनुमान यह किया जा सकता है कि 'कीट-पतंग' के अर्थमें 'प्रजापति' शब्दका प्रयोग लोककी भाषा-जनताकी भाषा-में प्रभूत रूपसे होता रहा होगा और कोशकारोंने जिसके प्रचलनकी बहुलताके कारण वहीसे अत्र ग्रहण किया। यह भी अनुमान किया जा सकता है कि कीटके अर्थमें अत्र शब्दके प्रयोगकी बहुलता लौकिक संस्कृत-कालमें हुई होगी, क्योंकि वेदोंमें अत्र अर्थमें असत्ता प्रयोग नहीं है।

भाषा-साहित्य (वर्नाक्यूलर लिटरेचर) में, बंगलामें, असत्ता प्रयोग तितलीके अर्थमें साहित्यकारोंने किया है, और लोकमें भी अत्र अर्थमें असत्ता प्रयोग चलता है। यह निवेदन पहले ही कर चुका हूँ। अत्र बुदाहरण लीजिये—

'प्रजापति आदि कत शत पतंगम।' <

यह पंक्ति हरिश्चन्द्र मिश्रकी है, जिनका रचना-काल बीसवीं सन् १८६२ और १८७२ के मध्य है। यह सम्भवतः प्राचीनतम प्रयोग है। अत्र अर्थमें 'प्रजापति' का प्रयोग रवीन्द्रनाथने भी खूब किया है। वग-भदेशके 'कवि-गानो' (अधु कविताओं) और लोक-साहित्यमें भी असत्ता प्रयोग प्रभूत रूपसे प्राप्त होता है।

अपर हमने देखा है कि अडिया और बंगला-भाषाओंमें 'प्रजापति' का प्रयोग 'तितली' के अर्थमें होता है। यह 'तितली' शब्द हिन्दीके 'तीतर' शब्दके

आधारपर बना है, जिन पतंगोंको लोग प्रायः खेला और लड़ानेके लिये पालने हैं। 'तीतर' संस्कृतके 'नित्तिर' शब्दका तद्भव रूप है, जिसका मतलब है 'तित्ति' शब्द करनेवाला पतंगी। अत्र प्रकार यह ध्वन्यानुकारी शब्द है। 'तीतर' के आधारपर 'नितली' असत्ताके बना कि तीतरके पत्तोंपरके दागों और तितलीके पत्तोंपरके दागोंमें अनुस्यूता होती है। जैसे तितलीको अनेक जातियाँ हैं, अनेके पत्तोंपर पड़े दागोंमें भी विभिन्नता होती है, जो कभी कभी 'तीतर' के पत्तोंके दागोंसे मेल नहीं भी खाती। जो हो, 'तितली' का सम्बन्ध है 'तीतर' से ही। यदि संस्कृतके 'तित्तिर' शब्दसे विशेषण रूप बनाया जाये तो वह होगा—'नित्तिरीक'; अत्र अर्थ होगा—जिसपर अथवा जिसमें तीतरके पत्तोंके दागोंकी भाँति दाग है। अंग्रेजी हालतमें स्वर्ण-पात्रके अर्थकी दृष्टिमें 'तितली' शब्द 'नित्तिरीक' से सुविधापूर्वक बन सकता है—'नित्तिरीक'—(तित्तिरीक) तित्तिरी—तित्तिनी—तित्तिनी—तितली।

अत्र 'तितली' के 'प्रजापति' बन जानेकी सांस्कृतिक कथापर आँसू। बंगालमें विवाहके जो निमन्त्रण-पत्र छाप जाते हैं अन्तपर मन्त्रमें अन्तपर मध्यमें ब्राह्मणकी मूर्ति अवश्य छपी है, वेदों ही जैसे अन्तपर भारतमें गणेशकी मूर्ति छपी है। और, वहाँ ३३ नमः प्रजापतये, प्रजापतये नमः अथवा "श्री श्रीप्रजापतये नमः" लिखा रहता है। प्राचीन नियम तो यह है कि विवाहके निमन्त्रण-पत्रपर ब्राह्मण-वर्ण ३३ नमः प्रजापतये अथवा प्रजापतये नमः लिखे और ब्राह्मणेतर वर्ण श्री श्रीप्रजापतये नमः लिखे। परन्तु अत्र युगमें ब्राह्मण-वर्ण द्वारा लिखा जानेवाला यह मित्रनाम ब्राह्मणेतर लोग भी लिखते हैं, अत्र कोई भेद-भाव नहीं है।

लगभग तीस वर्ष पूर्व, जब आञ्जली भाँति छपाईकी सुव्यवस्था नहीं थी तब विवाहके निमन्त्रण-पत्र पुष्प, लता, तितली आदिके चित्र आँक कर अंकित किये जाते थे। होता यह रहा कि शोभाके लिये 'नितली' का चित्र विशेषकर मध्यमें, अवश्य आँकते थे। परिणाम यह हुआ कि कालान्तरे शोभाके लिये आँकी गयी तितली प्रजापतिकी पदच्युति देकर स्वयं प्रजापति बन गई।

< हरिचरण वसोपाध्याय कृत वगोय शब्दकोश, बंगला सन् १९४८।

वग-प्रदेशमें आज भी विवाहके निमन्त्रण पत्रोंमें ब्रह्मा-प्रजापतिके चित्रकी जगह तितली रानी ही कभी कभी चिराजमान दिखायी पड़ती है। फिर तो तितली, जो अब प्रजापति हो गयी विवाहका प्रतीक हो गयी। बगलमें यह विदवास भी प्रचलित है कि यदि किसी विवाहके योग्य वयस्वाली कुंवारी अथवा कुंवारेपर तितली बंठ जाये तो उसका विवाह शीघ्र ही होगा। तितलीके प्रजापति (ब्रह्मा) बन जानेकी यह कहानी है।

प्रजापति और विवाहका प्रसंग आ गया है, तो दो शब्द और कहें। प्रजापति सृष्टिके प्रतीक है, और बुनका रंग लाल माना गया है। जिसी प्रकार सृजन अथवा जिसकी शक्तिका रंग भी लाल ही स्वीकृत है। वैसे प्रलय, नाश, सतरेका रंग भी लाल ही है। पहले जिसे फाँसी दी जाती थी, उसे लाल वस्त्र ही पहनाया

जाता था और जवा कुमुमकी लाल माला भी उसके गलेमें डाली जाती थी। आजकल अँसे व्यक्तिको काले कपड़े पहनाये जाते हैं। आज भी सतरेका सूचक रंग लाल ही है। अस्तु! विवाहके अवसरपर अब भी कन्याको सिंदूर (जिसका रंग लाल होता है), लाल सिंधौरा, लाल चूड़ी, लाल साडी, लाल ओढ़नी आदि दी जाती है। तात्पर्य यह कि सृष्टि-प्रजननके प्रतीक लाल रंगकी ही सभी सामग्री अँसे समर्पित की जाती है। जिस प्रकार प्रजननके प्रतीक लाल रंगकी सामग्री मँट कर उसे भी सृष्टि-प्रजननके अुपयुक्त, स्वीकार कर लिया जाता है। जिसके अतिरिक्त ऋतुमनी हो चुकनेपर ही कन्या सृष्टि करने योग्य मानी जाती है, और बुनका ऋतुमनी होना भी लाल रंग (रक्त) से संबद्ध है। राग (प्रेम)-अनुरागका रंग भी लाल माना जाता है, जिसका सबब भी अतन प्रजनन अथवा सृष्टिसे ही है।

स्व० अिकवाल :—

नशाआ दीलतका बद अतवारको जिस आन छड़ा,
सर पेँ रीतानके अँक और भी रीतान छड़ा ॥
[नशाआ-नशा, बद अनवार-बुरी चाल चलनवाला]



नशा पिलाके गिराना तो सबको आता है,
मजा तो जब है कि गिरतीको थामले साकी !



वतनकी फिक्र कर नादाँ ! मूसीबत आनेवाली है,
तेरी बरबादियोंके मशाविरे है आस्मानोंमें ।



फिरा करते नहीं मजहूँ-अुल्फत फिक्रे-दरमाँमें ।
ये जहमी आप कर लेते हैं पैदा अपनी मरहमको ॥

[मजहूँ-अुल्फत-प्रेमके पायल, फिक्रे-दरमाँमें-जिन्नाजकी चिन्तामें]



छुटाकर फँक दो बाहर पलोमें ।
नयी तहजीबके अँडे हैं गन्दे ॥
अिलेकशन, मँबरी, कीसिल, सदारत ।
बनाये सब आजादीने पन्दे ॥

[तहजीब-सम्भना, सदारत-गनापतिव, अध्यक्षपना]

मंजुला

: श्री पद्मलाल पटेल :

पत्नी अपने कलरवसे भीष्मके बाल रविका स्वागत भी नहीं कर पाये थे कि मनोहरकी आँख खुल गयी। अंक वषणके लिये वह कुछ सोचमें पड़ गया। 'स्वप्न सच्चा है या मैं यहाँ सोया हूँ, यह बात सच्ची है !' और थोड़ा होश ठीक होनेपर अभी-अभी उसे जो स्वप्न आया था, वह याद करने लगा।

मंजुला और वह दोनों घूमने जा रहे हैं। बानोची घुनमें-ओर वे बातें क्या थीं जिसे याद करनेका निष्फल प्रयत्न किया गया—वे करीब अंक भील दूर स्थित पुलतक निकल आये। अंकाअंक मंजुला रकी और बोली, 'अजी महाशय, हम तो बहुत दूर निकल आये।' मनोहरकी अपनी स्वप्नवाली बात याद हो आयी। बुनने कहा, 'चलो, मजु, हम लौट चले।'

'आपने खूब कही। वापस कितनी दूर जाना है, अिसका भी कुछ खयाल है ?' मजुके चेहरेपर यकाव थी। वह उसी जगह धमसे बँठ गयी।

'अरे, चाहे जितनी दूर हो, मगर वापस गये बिना कोभी चारा है ?' मनोहर बोला। लेकिन मजु तो बिलकुल लापरवाहीसे कहे जा रही थी, 'माअि पाँड ! कितनी दूर निकल आये ? यहाँ तो कोअी गाडी-वाडी भी शायद नहीं मिलेगी ?'

'चलो मजु अुठो ! हम अभी बातकी बातमें पहुँच जाते हैं। अिस प्रकार क्यों पबराती हो ?'

'आप चाहे तो खुशीसे जा सकने है। मगर अपने रामसे तो अब नहीं चला जा सकता।'

मनोहरकी फिर अपनी स्वप्नवाली बात याद आयी। अंसा कहते हुअे मंजुला चेहरा अंकदम गभीर हो गया था। बादमें अुसने अुगे बहुतेरा समझाया भी, लेकिन जब वह किसी भी प्रकार टमने मस न हुअी, तो यह बडा व्याकुल हो अुठा और अिसी बीच अुसकी आँख खुल गयी।

कोन जाने क्यों, लेकिन मनोहरको आज अिस स्वप्नने गभीर विचारमें अर डाल दिया। वह सोचने लगा 'मजु अंक अमीरकी लडकी है। अबलक योटरमें ही धूमि फिरी है। वह भला अुसके साथ अूबड भावड मार्गमें पैदल किस तरह चल सकेगी ? भले आज वह अपने माता-पिताका रोप सहकर विवाह करनेकी हिम्मन कर ले, लेकिन आखिर ता वह अंग-आराममें ही पनी है न ? कोन जाने वह जीवन भर मुतीवनाये टक्कर के सकेगी या नहीं ?'—और अिस प्रकारके अनेक विचार अुसके दिमागमें घूम गये।

मजुने देखा कि मनोहर आज जबने कॉलेज आया है तभीने कुछ चिन्तित सा लग रहा है। लेकिन अब तो नामको ही पता चलेगा, अभी पूछा भी कैसे जा सकता है ?

मनोहर जब शामको घूमने निकला ता अुसे लगा कि वह आज थोडा ज-दी आया है। लेकिन जब अुसने अपने रोजके निदिचन स्वानपर मजुको पहलेये छडी देखा तो वह स्तब्ध हो गया।

'अरे, आज तुम जितनी जल्दी कैसे आ गयी ? रोज तो मुअे अिन्तजार करते-करते वका देती थी, और—'

'लेकिन पहले यह बताअिअे कि आप कैसे आ गय ?' मोहक आँवोवाली मजुन पूछा। अुसने देना कि मनोहरकी आँवोकी गहराअीमें अब भी थोडी बहुत चिन्ताकी छाया है। थोडा आगे चलकर अुसने पूछा, 'आज जनावके मंहपर अिस तरह क्याही क्यों पुनी है ?'

'तुम्हारी आँवोको तो हमेगा कुछ न कुछ दीपता ही रहता है।' कहकर मजुकी ओर ताकने हुअे मनोहर हंसा।

'देविअ न, आप अंगा हंस रहे हैं जैसे कोअी बीमार हंस रहा हो।' फिर थोडी गभीर होकर बोली, 'आप माने या न माने, मगर आज आप चिन्तित अरूर हैं।'

अंक वपणके लिये मनोहरको अपने स्वप्नकी बात कहनेकी अिच्छा हुआ। लेकिन अुसका नतीजा वह जानना था। मजु सिवा पेट पकडकर हँसनेके और कुछ न करेगी। असिलिये और कोअी बात अेकाअेक न मूसने-पर अन्तमें अुमने सीधी ही बात दाह की।

'तो यह तय रहा कि हम अपनी शादी असिी गर्मीमें कर लें।'।

मजुका चेहरा अुतर गया। जँम वह मनाहरके हृदयसे दूर फँक दी गयी हो। अुसने पूजा, अेक बार तय हो जानेपर फिर यह सवाल नवो अुठा ?

नहीं नहीं अँसी कोअी बात नहीं। यह तो मँने योही पूछ लिया।'।

'अकारण ?' शब्दोक दजाय मजुकी आँखोने मनोहर पर ज्यादा असर किया।

अुसने गभीर होकर कहा, देखो मजु ! शादी अेक अँसा महत्वका प्रश्न है कि अुसके लिये हमें अवश्य ही गहरा सोच विचारकर लेना चाहिये। असिलिये—' लेकिन आगे अब क्या और कैसे कहा जाअे, यह वह नहीं सोच पाया। फिर भी वाक्य तो पूरा करनाही था, असिलिये बोला, 'यह तो योही।'।

'लेकिन आखिर आप कहना क्या चाहते हैं ? बिना साप माफ कहे कोअी क्या समझेगा ?' भीठा अुलाहना देती हुआ मजुकी आँखोने मनोहरको थोडी हिम्मत बँधायी।

'मुझे तो कुछ भी नहीं सोचना है। लेकिन मैं तुम्हें कहना हूँ कि तुम्हें अपना, अपने माता पिताका और साथही हमारी आर्थिक परिस्थितिके बारेमें खूब अच्छी तरहसे विचार कर लेना चाहिये। मनोहरने स्पष्टीकरण किया।

मनोहरने मजुको सोचनेके लिये कह ती दिया, लेकिन बादमें अुने यह डर भी लगा कि मजु वही शादीके लिये अिनकार कर दे।

परन्तु मजु तो यह मजु मजाकने रूपमें चुपचाप गुन रही थी। मनमें अेक विचार यह भी आया कि वही मनोहर मुझे छोड़ देनके लिये तो यह मजु नहीं

कह रहा है। लेकिन दिलमें वही असिी विचारके लिये स्थान नहीं था। वह मजाकमें लेकिन मंभीरताके साथ बोली, 'देखिये, मैं जानती हूँ कि मुझे— मनोहरकी ओर अँगुली करने हुअे— अिनके हाथमें अपना जीवन सँपाया है, (अिस वक्त मनोहरकी छाती फट पडनेको वर रही थी) दूसरे, मुझे अपने माता-पिताके साथ जिन्दगी भरके लिये मौन लेना है, और तीसरा, जिसका अपना असिी ससारमें कोअी नहीं है, और होगा भी तो केवल बी-अे की डिग्री और थोडे-बहुन पढनेके लायक कपडे, अँमी स्थितिवाले पुरापके साथ मुझे भी ठीक असिी स्थितिमें रहना होगा। असिके सिवा, मँने तो यहाँतक सोच रखा है कि सुबह जल्दी अुठना होगा, अिन महापायको दानुन देना पडेगा और अिनके लिये चाय भी बनानी पडेगी—

अच्छा-अच्छा, अब बहुत हुआ।' मनोहर हँसते-हँसते लोट पोटा हो गया।

अेक पलके बाद मजु गभीर होकर बोली, 'पायल तो नहीं हो मनोहर ! आप दुख अुठा सँवेंगे और मँ न अुठा सँवूंगे ? और 'वह सहज थोडी सक्पकायी— 'मुझे नहीं लगता कि हम केवल विषय वासनाकी तृप्तिके लियेही शादी कर रहे हैं।'।

'बेशक, असिमें क्या सन्देह !' मनोहर बीचमेंही बोल अुठा। मँजुके असिी वाक्यको वह गोद जँसा चिपक गया। मनमें सोचा— सही बात है। विवाह यानी दो आत्माअोका मिलन, शारीरिक मिलन तो गौण चीज है। और मँजुके अिन विचारोको जानकर अुसके प्रति अुसके मनमें कअी गुना आदर बड गया।

हालांकि बादमें असिी विषयपर चर्चा करनेकी अुम कअी बार अिच्छा हुआ, मगर वह खुदही अिम विषयका कोअी बहूत बडा हिमामयनी नहीं था, असिलिये वह चुपची रहा। अितनेमें अुने मयाल आया कि रोजकी अपेक्षया आज कुछ आगे निकल आये हैं। साथही अुने यह भी लगा कि देवें स्वप्न अँसी बाब तो नहीं होती है। लेकिन अुम अिमपर अमल करना ठीक नहीं लगा। 'वज, लौट चले न मजु ?'

आप अंसा चाहें ?' कहकर मजु हक गयी ।
मनोहर पूछ बैठा थक तो नहीं गयी ?

मजु कोभी बच्ची तो थी नहीं जो अिस तरहके कभी न पूछें गय प्रश्नसे और वह भी आजकी मन स्थितिम समझ न पाती । बोली थक गयी हूँ कहिअ है अुछ ले जानकी शक्ति ?

मनोहरको सिवा हसनके और कोभी बात न सूझी । दोना प्रकृतिके विविध दश्य देखने और अुसपर चर्चा करते वापस लौट ।

परीवषा आयी और चली गयी । अक निन परिणामकी प्रतीवषामें बैठ मजु और मनोहरन जाना कि कालेजके पढले दो वषामें दो-दो वष निकालावाला मनोहर बड अच्छ नम्बरसे अुत्तीण हो गया है जब कि आद्यत होशिवार मानी जानवाली मजु फल हो गयी है ।

पर अिस बातपर दोनोमगे किसीको कोअी खास अफसोस नहीं हुआ । हाँ यदि अिससे अुलटा नतीजा निकलता तो जरूर बड दुखकी बात होती ।

अप्रजीमें आनस होनेके कारण मनोहरको बडी आसानीसे अक अग्रनी दैनिक पत्रम ६० रुपयकी नौकरी मिल गयी । अकाथ महीन बाद अुसन किरापर अक घर लिया और दो आरामियाकी जरूरतके हिसाबसे दूसरी चीजें भी खरीद ली ।

जिस प्रकार कोअी यात्री अपनी यात्रा गुरु करनसे पहले अंक वार फिर अुसके बारेम विचार कर लेना है अुसी प्रकार मनोहरन भी विवाहके अगले दिन खूब अच्छी तरहसे सोच विचार कर लिया । मजुकी पडाओ आग जारी रखी जाअ और अुसे भन्सक हर प्रकारका सुख दिया जाअ । अलबत्ता सारीरक सम्बन्धसे विलकुल दूर रहा जाअ । यह अन्तिम विचार अुसके दिमागमें अुसी दिनसे चक्कर काट रहा था और अुसपर अुसन अपन आप तक भी कर लिया था विवाहका अय क्या है ? विवाह फिया ही क्या जाअ ? आदि । लेकिन अिसका निराकरण गाधीजीके विचारोन कर लिया था । हाँ यह सही है कि गाधीजीके विचारोंको वह कोअी बहुत आदरकी दृष्टिसे नहीं देखता था ।

रा भा ३

लेकिन अुम दिन मजुन हम कोअी विषय वासनाकी तृप्तिके त्रिअ योड ही विवाह कर रहे ह वात्री बात अिसी आगसे तो कही थी । मनोहरन निरचय किया कि किसी भी रूपमें मजुकी अिच्छाके विरुध न बरता जाअ विशयत अुमसे प्रत्यवष सम्बध रखनवाली बातोंमें तो हरगिअ नहीं ।

अिम विवाहके बारेमें वर कथाके माने रिस्तेदार भले अनभिज्ञ रहे हो पर मिय लोग तो मत्र कुछ जानने थ । और अिस साहस भरे वायमें अुन लोगोन काफी बन्नी सखाम हाजिरी भी दी । विवाह काय सम्पन्न होनपर सवन वर वषूको बनाअिया दी । अक दो सहेलियोन तो चलने चलने मजुसे कहा भी मज कही हमें भूल तो नहीं जाओगी ?' मजुकी लगजावा लाम अुठाकर दूसरी लकी बोल अुठी बचारीवा मन तो पहलेसे ही छूट लिया गया था, लेकिन आज तो पूरी पूरी लुट गयी ।

अिस बीच मुहल्लुट माधुरी बोली फिर भला वह लुटनवालेके साथ घूमगी या आप लोगके ? और सारी टोनीम अक मधुर हसीकी आवाज गूज अुठी ।

साथ ही वह माधुरी तो मित्राको बिग करके दरवाजपर खड मनोहरको भा कहनी गयी देखना फूल जती है ।

मनोहर प्रगट तो नहीं मगर मनमें जरूर बोला 'अपनी जानके खातिर है । कुम्हलान क्या दूगा ?

विवाह अक अंसा प्रसंग है कि वह हर अक समनदार अ्वातिको कम-ब्यादा रुपमें गमीर बना देना है । मनोहर भी आज कुछ गमीर था ।

अक मित्रके यहाँ भाजन आदि करके देखे रातकी घर ओटनपर मनोहरन मजुसे पूछा, 'वहाँ सोओगी ? छज्जम या कमरेमें ?

मजुका बहरा गमकी गुलाबीसे रग गया । मनोहरके दिलमें अर जबरम्त आन्दोलन हुआ । हसनका प्रयन करके वह फिर बोला, 'रोज तुम वहाँ सोती थी छज्जमें या कमरेमें ? लेकिन मजुकी

आँखोंमें असे बोझी और ही भाव दीख रहा था। बिस-लिअे वह पानी पीनेके बहाने कमरेमें चला गया।

मजु बोली, 'छज्जेमें और कहा ? अंगी गर्मोंमें क्या कोझी भोतर सोता है ?' और वह कपडे बदलने चली गयी। अितनेमें असके वानमें बिस्तरके पडनकी आवाज सुनायी दी। 'मनोहर, जल्दी क्यों करते हो ? मे आ तो रहो हूँ।' मजुने कहा।

'तो आओ न ? कौन तुम्हें रोचना है ! मनोहरने छज्जेमेंसे ही जवाब दिया।

मजु कपडे बदलकर आयी और अुसने देखा कि छोटेसे छज्जेके दोनो वाजु दो बिस्तर लगे हैं। बीचमें अेक बिस्तर होने जितनी जगह खाली थी।

'देखो, तुम्हें और तकिया तो नहीं लगेगा ? दो रखें हूँ।' मनोहरने अपने बिस्तरपर लेटने हुआे दरवाजे पर खडी मजुसे पूछा।

'लेकिन आपको यह सब होशियारी दिवानेको किमने कहा था ? मे आ तो रही थी।'

'अच्छा-अच्छा, अब सो जाओ, बारह बज रहे हैं।'

'हाँ सोना तो है ही।' मजुने अेक छिपा निद्रवाम छोडते हुआे कहा। और वह थोडे गुम्सेमें अपने बिस्तर पर आकर लेट गयी।

यह गुम्सा और बोल्नेका दग (अलबत्ता अमली कारण तो अप्रकट ही था) मनोहरसे कोझी छिपा न था। वह बोला, 'अरे, पर अिममें अेसी कौन सी बडी बात हो गयी ? चलो कल्से तुम बिस्तर करना, वस ?'

मजुको अिच्छा तो हुआी कि बहे 'आपका मिर।' लेकिन वह मौन ही रही।

मनोहर अच्छी तरह जान गया कि मजु अुमपर चिड गयी है। लेकिन अुसे तो वह बापी असेमें जानता है। अुमे विद्रवास था कि यहाँ मजु कल अुमे दुगुने प्रेमसे वुलाअेगी। और मच पूछो तो अेसी वानोंमें मनोहरको अेक प्रकारका मजा आता था। हालाँकि अुमका दिल तो अब भी मजुको चिडानेके लिअे तरस रहा था, लेकिन किमी अजात भयके कारण वह चुपचाप करबट बदलकर सोनेकी बोशिश करने लगा।

बिस्तरपर पडे-पडे मजु बादलोंमें मुमकराते हुआे जेठके चाँदको देखती रही। वह छोटा-ना छज्जा अब-जब कुछ अंधेरेमें डूबता, तब-तब वह सहज कनसियेनि मनोहरकी ओर देखती, और जब चाँदनी छिटक जाती, तब अेक दीर्घ स्वात लेकर वह अपनी आँवे मूँद लेती। काफी समय बाद जब अुसने देखा कि मनोहरका करवटें लेना बन्द हो गया है, तब अुसके मनमें केवल अेक ही प्रश्न जुठा, 'मनोहरने पूणिमाके दिन क्यों सादी पसन्द की ?' ... और वह खुद भी तो नहीं समझ पा रही थी कि आज वह अिननी बेचैन क्यों है ? पिछली और आजकी रातमें क्या अन्तर है ?..

सुबह जब वह जुठी तब भी अुसके मनमें यही प्रश्न घुट रहा था—

'मनोहरने पूणिमा क्यों पसन्द की ?'

'लो चलो, चाय बनाओ मजु।' हँसने-हँसने मनोहरने कहा,

'नहीं तो फिर-मेरी होशियारी निकालोगी।'

'क्यों न निकालूँगी ? आप करते ही अेसा है।' मजुने स्टीव सुलगाते हुआे कहा। मनोहर भी पास ही बैठकर चाय चक्करके डिव्ने आदि देने लगा। अुसे आशा थी कि कुछ ही क्षणमें मजु हँसेगी। लेकिन अब अुमे अपनी आशा पूरी होनेके कोझी चिन्ह न दीखे, तो अुमसे पूछे बगैर नहीं रहा गया, 'तुम्हारा आज मूँह क्यों चटा है ?'

'यों ही।' लेकिन जब मजुने देखा कि मनोहरका चेहरा अेकदम अुदाम हो गया, तब अुमे दयाके कारण सहज हँसी भी आ गयी। 'देखिये, अबते बिना मेरी अिजाअतके आपको किसी भी वाममें हाम न डालना चाहिये। कुछ जाना तो है नहीं।' बहते हुआे मजुने मनोहरको चायका प्याना दिया और अुसकी ओर अिम तरह देखा कि वह पमीने पमीने हो गया।

'बहुत अच्छा।' आजसे तुम जानो और तुम्हारा नाम जानें, लेकिन कौलिज शुरू होनेपर तो मदद लोगी न ?'

'बभी शुरू तो हो।' मजु चाय पीने लगी।

शामको विस्तर करते वचन मजुको बही देर तक सोचना पडा। अन्तमें धनकर पिछले दिनकी भांति ही विस्तर लगायें और अन्ती प्रकार कचवटें बदलने रात बितायो।

थोड़े दिन बाद बाँटैज शुरू हुआ। बरतन आदि माफ करनेके लिये अंक नोकरानी रख ली थी, जिसलिअरे रसोय्रीके मिथा मजुने मारा समय पढ़नेमें लगाया। फिर भी अभी बभी अुमकी आँखोंमें अतनी मन्ती और नया छा जाता कि मनोहर भी अुम मूक निमत्रणकी जान जाना। लेकिन अभी तो वह अुमे अपनी गलत-पहमी समझता या कमी मजुकी कमजोरी मानता। वैसे भी अिम विषयमें जिम्मेदारी तो अुमीकी है, अंसा मानकर वह अपने मनको अधिक मजबूत बनाता। साथ ही यह आदवामन भी देना—'बस, अंक वार परीकपा हो जाअे।'।

लेकिन अुसने देखा कि आजकल मजु कुछ अुदाग और अतमनी सी रहती है, दुबली भी हो गयी है, तो वह कारण बूढ़नेकी कोणित करने लगा। यद्यपि वह अिम बारेमें मजुमे सीधे भी पूछ सकता था, लेकिन अुमे लगा कि अंसेकी कोअी थान वान होंगी तो मजु अुसे कह यंगर नहीं रहती।

दूसरे दिन शामकी घरमें दाखिल होते ही अुसने देखा कि मजु शिडकीके सामने खडी है। चेहरा बहुत शाफ न दीपनेपर भी वह समझ गया कि मजु अिप्र मना है। तुरन्त ही अुसका ध्यान पडोसके मकानसे आते हुए रेडियो सगोनपर गया। वह मजुको अुदागीका कारण जान गया। अुसे दुख हुआ। जो लडकी आज तक मोटरमें धूमो फिरी हो, आखीदान यगनेमें रही हो और जिनने हारमोनियम, फोनोग्राफ सितार, रेडियो आदि मात्र मुने और यजायें हो, अुसे आखिर कभी न-कभी तो यह दरिद्र जीवन अुदा देगा न ?

मनोहरने अपनी थोडी-सी जमा रकम, वेतन और अंक ट्युगन पानेकी आशा रखकर शिवाव लगाया और अिम निर्णयपर पहुँचा कि कल ही अंक रेडियो खरीद

शिया जाअे। घाड खये ना है ही। बाकी किलामे चुका शिये जाअेंगे।

अंक दिन शामकी कठिगस गैटत हुए मजुन मनोहरको छनपर किमी आदमीके माव दा वसि लखे करके कोअी रस्मी जैसी चीज बाँटने हुए दखा। वह जन्दीग मीशिया वडकर कपरमें पुस्तके रखने गयी, तो वहाँ अुमकी दृष्टि टंकुलपर रखे हुए रेडियोपर पडी। वह मन-ही मन बोली 'कहाँ अिनका विभाग तो नहीं फिर गया है।' ..

मजुने सोचा ता यह था कि आज मनोहरकी अच्छी परेट ली जाअे। लेकिन वह अंसा न कर सकी। फिर भी अुमने गभीर होकर पूछा 'कियाका रेडियो है ?'

'हुमाग और किलका।'

'कया खरीदा है ? जिनने पैस कहाँ थे ?'

'जो थे वही तो। थोडे वाकी हूँ। लेकिन अुमह तो किलामें देना है।'

'लेकिन अिम ६० रुपयेके वेतनमेंछे आप किल कहुमि चुकाअेंगे ? कया रेडियो बगैर . . ?'

'तुम अिसकी चिन्ता न करा। देसो, अंक पच्छोयकी ट्युगन ता तय हो गयी है। अंक और मिलनेकी अुम्मीद है। बस, फिर कया ?'

मजुको गुम्सा तो बहुत आया, पर वह अधिक कटोर न हो सकी। पामकी कुर्सीपर बैठने हुए बोली, 'मेँ तो यही सोचती हूँ कि आखिर आपको अंकाअंक यह रेडियोकी वान कहुमि सूतो ?'

'बयो, क्या मेँ आदमी नहीं हूँ ? . तब फिर मुझे बोधे नहीं नीक हो सकता ?'

मजु जानती थी कि मनोहर आने नीकके लिये नहीं, बल्कि अुमीके शिअे सब कुछ करता है। तब अंसे आदमीको ज्यादा क्या कहा जाअे ? कहुनेपर भी वह कहाँ माननेवाता था। नहीं तो बिना अुमे पूछे-जाछे क्या अितना अधिक सचं कर सकता है ? अुमे अकाल हो अुठा। शिव कण्ड करने हुए अुमने कहा, 'मनोहर, क्या यह रेडियो बापम नहीं किया जा सकता ? हमें

अिसकी क्या जरूरत है ?' अुसने थाडा रिज्ञानेके स्वरमें कहा ।

'तुम खामरुवाह चिन्ता करती हो मजु ।' और अुसने खडे होकर कुर्सीपर बैठी हुअी मजुकी कहा, 'चलो बजाओ, खडी हो ।' लेकिन मजुको पूर्ववत स्थिर बैठे देखकर वह सामने आया और बोला, 'अुठनी हो या नहीं ? नहीं तो खीचकर खडी कर दूंगा ।'

अुसे क्या पता कि अिस वानयसे तो मजु खरी होनेवाली होगी तो अुलटी नहीं होगी ।

'मेरी बसम यदि तुमने न बजाया ।' कहते हुअे अुसने हँसी दवाये यत्रवत बैठी हुअी मजुकी हाय पकडकर खीचा । मजुको रोमाञ्च होआया । अुसके लिअे यह प्रसंग यह दिन और कारण-भूत रेडियो सभी धन्य हो अुठे । लिचती-लिचती वह खडी हुअी और रेडियोका स्विच दबाकर अपने मदमरे नयनोसे मनोहरकी ओर अंकटक देखती रही ।

'अच्छा, तुम बजाओ । मैं जरा प्रोग्राम बुक ले आता हूँ ।' कहता हुआ मनोहर खूँटीकी ओर बडा और कुछ प्रश्न पूछनेके लहजेमें कमरपर हाय रखकर तिरछी निगाहमें देखती हुअी मजुकी ओर देखकर अंसे कुछ जानता ही न हो अिस प्रकार कोट पहनते हुअे बोला, 'अभी आता हूँ । फिर हम साथ-साथ चाय पीअेंगे ।' और चल दिया । पीछे अेक दीर्घ निस्वास निकल रहा था, अिसका तो अुसे कुछ भान ही नहीं था ।

बादमें मनोहर बराबर अिस बातका ध्यान रखता कि मजु खुसा रहती है या अुदास । अेक रोज सुवह जब वह अपनी दोनो टपूदान निपटाकर घर लौटा, तो अुमने मीडियोसे ही रेडियोके साथ किसीके गानेकी आवाज सुनी । वह दवे पाँव धीरेसे कमरेमें झाँककर देखता है, तो मजु बपटोकी तह करले-करते अपनी मधुर आवाजसे गा रही थी । मनोहरने अुसे कॉलिजके समारोहके अवसरपर गरवे गाते सुना था । लेकिन बादमें अवतक अंसा बोअी मौका ही नहीं आया था । अलबत्ता कअी बार अुमने मजुसे गानेकी बहनेकी अिच्छा जरूर होनी थी । लेकिन फिर तुरन्त यह सयाल आना कि जोर-जबरदगीके बजाय अपनी मज्जामें गाना ही ज्यादा अच्छा होता है ।

और वह सामोस रह जाता । किन्तु आज अचानक अुसकी मनोकामना पूर्ण हो गयी । अिसके सिवा, आज अुसे ज्यादा खुसी तो अिस बातकी हो रही थी कि मजु बडी प्रसन्न दीख रही थी । और अिस विचार मात्रसे कि अब तो वह आगे भी अिसी प्रकार रेडियोके साथ गुन-गुनाया करेगी, अुसे बडी निश्चिन्तता हुअी । छिपकर गाना सुननेकी अिच्छासे वह अेक ओर हटकर खडा हो जाता है, लेकिन अिसी बीच मजु गाती हुअी बाहर आ जाती है और मनोहरपर दृष्टि पडते ही कहती है, 'चोर ?'

'हाँ भाअी, चोर ही सही । लेकिन तुम गाओ न ? वद क्यों हो गयी ?'

'किसके आगे ?' मजु बोली । और वह तुरन्त ही रसोअीघरकी ओर चल दी ।

अिन दो शब्दोने नहीं; लेकिन मजुके चेहरेने फिर मनोहरको चिन्तामें डाल दिया । 'मंजु अिस प्रकार अकारण वात-वातपर चिडती क्यों है ? अेकाअेक अुदास क्यों हो जाती है ? अुस दिन वह जब साडियाँ लाया था, तब भी अिसी प्रकार चिड गयी थी । लेकिन अिन प्रश्नोका जवाब भी अुसीने खुद दिया । चिडेगी क्यों नहीं । केवल दो साडियाँ और वह भी दस-पन्द्रह रुपये-वाली । अुसकी दृष्टिसे तो वे आखिर हलकी ही हुअी न ! और अितनी-सी बातमें मैं फूलकर कुप्पा हो रहा था । तब धोअेंगी नहीं तो और क्या होगा । अिसके बाद अुसने अेक नयी मिलनेवाली टपूदानका हिस्सा लगाया और मजुके लिअे अेक बडिया साडी, अेकाय अीयररिंगकी जोड आदि लाने और अुसे खुश करनेके मसूरे वह बाधने लगा ।

सच पूछो तो मजुकी चिडके असली कारणकी गना तो मनोहरकी थी, मगर अुमने वह अपने ही मनकी दुष्टता मानकर अुम और तनिक भी ध्यान देनेकी कोशिश न करता ।

गर्मसि तग आकर दोनो मूली चाँदनीमें छज्जेंमें बैठे थे । मनोहर अपनी नयी टपूदानकी बात कर रहा था । 'मंजु, बलसे अेक तीस रुपयेका और टपूदान करना

है। मज्जूको चुप देखकर वह फिर बोला, 'मैंने कहा, अब हम यदि लॉजमें ही खाना पेंगा लिया करे तो कैसा रहे? तुम्हें भी पडनेके लिये काफी बचन दिना करेगा?'

लेकिन मज्जूका ध्यान थिन वक्त और ही कहीं था। यद्यपि अंम भी पूरा-पूरा यह बिरवास तो नहीं था कि आजका चन्द्रमा चौदसवा है या पूनमका। फिर यो अमकी दाहकता पूनमसे कौश्री कम नहीं थी। अंका-अंक वह किसी निश्चयसे साथ गड़ी होती हुआ बोकी, 'मनोहर' आजो मुझे थोडा क्लीओपेट्रा समझाओ। मैं पुनक ले जाती हूँ।' और वह कुछ दृढ़, फिर भी दुनगतिते पुस्तक ले आयी।

बैम भी मनोहरको अंग्रेजी विषय पढानेमें मजा आना और दूसरे, क्लीओपेट्राका चरित्र चित्रण और वह भी मज्जूको, तब तो क्या कहने? वह बडी छटाते अंकके बाद अंक चुनिन्दे वाक्यो द्वारा समझाने लगा। मज्जू भी अमना ही रसपूर्वक सुनने लगी।

लेकिन थोडी ही देर बाद मनोहरने देखा कि मज्जूका ध्यान कहीं दूसरी तरफ है। साथ ही बीच-बीचमें कभी कभी मज्जूकी आँसों भी भिचित्र-सी हो जाती हैं। अंक बार तो असे मज्जूमें क्लीओपेट्रा ही दिखायी दी। वह चिढ़कर बोला, 'मज्जू, तुम्हारा ध्यान कहीं है?'

'क्लीओपेट्राके प्रियतममें और कहीं?' कहते हुये मज्जूने अपने नयनों द्वारा मनोहरपर मदमरा अमृत बरसाया। लेकिन जब अमने देखा कि अम अमृतको मनोहरसे अंक भारी स्वासके साथ पडनेमें लगकर मित्रकुल जहर बना दिया, तब वह बडी विन्म हा गया। मनमें यह भी लगा कि कैसा नीरम आदमी है।'

वह थोपसे तम-तमाकर खडी हुआ और 'बस, अब बहूत हुआ।' कहकर अपने कमरमें चली गयी।

मनोहरने अन्दर जाकर देखा कि मज्जू अंक आराम सुस्तपर अचलने भूँह डालकर पडी है। नीचे-अपर होनेवाली छाती और भीमी सिसकियोंने वह अिनता तो समझ गया कि मज्जू रो रही है। लेकिन रोनेका वास्तविक कारण वह नहीं जान पाया।

अमने पूछा, 'मज्जू, रोनी क्यों हो? अकानक तुम्हें क्या हा गया?' लेकिन मज्जू तो दुगुने वेगसे

रोने लगी। अंक अंक थोडा झुक्कर मनोहर अमके चेहरेमें अचल खाँचने लगा। मंजुपरने हाथ ह्मनेकी भी कौशिंग की। साथ ही पूछ भी रहा था, 'लेकिन तुम रोनी क्यों हो?'

मज्जू रोते रोते ही कह रही थी, 'मुझे रोने दीजिये। मेरे भाग्यमें रोना ही बडा है।' लेकिन थिन वानयोंने मनाहुरके दिलपर छुरीका काम किया। वह चुपचाप अमने अमू पौटना रहा। दिमागमें अिनता अधिक विचार छाया हुआ था कि असे कुछ भी नहीं मूझ रहा था। अंक म्यात्र यह भी काम, वन्चि ठोक-पौटकर बँटाया कहना अधिक ठीक होगा, कि शायद क्लीओपेट्रासे मज्जूको भी अपने बँधवगारी जीवनकी याद आ गयी होगी।

मनोहर थिन समय मज्जूके लिये आकाश-गाताल अंक वरनको तैयार था। लेकिन वह बोला, तब ना कुछ समझमें आये न? अमने शान होनी हुआ मज्जूकी आँसोंको पोंडते हुअे फिर पूछा, 'क्या हुआ मज्जू? कुछ बोली तो सही?' और अमने सामने आकर मुर्भके हाथे पकडकर थोडा अमन हुअे कहा, 'बोली, तुम्हें क्या चाहिये? तुम कहो तब ना समय--'

मनोहरका मुका हुआ मुन्दर भूँह अपने भूँहके बिलकुल पास होन हुअे भी मज्जूको वह क्पितत्र अिनता दूर प्रनीत हुआ। अपना होने हुअे भी पराया-मा लगा। अमके भूँहपर पसापेगमें पडे हुअे वाचकता-सा भाव देखकर असे फिर गुस्सा आया, 'आप मुझे चुपचाप पडी रहने दीजिये। मेहरवानी करके आप यहाँमें चले जाजिये।' और अमने अन्त भूँह अकलने छिया छिया।

मनोहर थककर कुछ तप आकर बिस्तर करके लेट गया। मज्जू भी सो गयी। लेकिन मनोहरकी आँसोंका और नीदका आज वारहवाँ चन्द्र था। बार-बार अमके दिलमें अंक ही प्रदन सुँटा था 'मज्जू बात क्यों छिपानी है? असे क्या चाहिये?' अंक आपना हुआ। 'यह सब विषय वामनाकी देवैनी तो नहीं है? लेकिन अगर यह बात भी हो, तो वह छिपानी किमलिये है?' यद्यपि अमके मनमें

तो कोअी कह ही रहा था कि वह कहाँ छिपाती है ? उसके हाव-भाव, उसके रग-ढंग और आँखें क्या नहीं दीखती ? पर जिस बीच उसे मँजुका वह वाक्य याद हो आया और उसने विरोध किया 'नहीं, नहीं, अँसा नहीं हो सकता । शादीके पहले उसीने तो मुझे सावधान किया था । और फिर अभी तो वह पढ भी रही है ।' उसने सिर हिलाया । 'अँ हँ, अभी मेरी या उसकी अच्छा तो... फ़िर भी कल पूछ देखूँगा ।' जिस तरह निपटारा करके वह देरसे सो गया ।

अस और मजु अपने बिस्तरमें पड़े-पड़े कोअी दूसरे ही विचार कर रही थी । मनोहरके प्रति उसे सन्देह पैदा हुआ । सहसा उसका दिल काँप अठा । उसे अपने मामने भविष्यका मरुस्थल दिखायी दिया । लेकिन यह केवल पल भरके लिये ही । जिस सन्देहके लिये वही कोअी बाह्य कारण न था, और यदि मान ले कि अँसा ही भी तो क्या मनोहर उससे यह बात छिपाता—किसीका जीवन बरबाद करता—नहीं अँसा आदमी वह नहीं है, जिसका उसे पूरा-पूरा विश्वास था । तब फिर जिस प्रकार विरक्त रहनेका क्या कारण है ! जबसे वह मनोहरके सम्पर्कमें आयी, तबसे अँक-अँक करके वह सारी घटनाओकी याद कर गयी, लेकिन उसे वही लग मात्र भी जिसका चिह्न नहीं दोखा । बहुत सोचनेपर अन्तमें उसे लगा कि शायद उसके विचार्या-जीवनके कारण ही वे अँसा करते होंगे । बहुत देर बाद वह अपने मनसे यह कहकर कि 'चलो, ठीक है ।' सो गयी ।

सुबह मनोहरने अपनेको जगाते हुअे मजुको विशेष स्या देखा । जिसलिये रातको उसने जो बात तय की भी वह 'अब तो बादमेंही पूछूँगा'—अँसा सोचकर नटा धोकर दँपुगनके लिये चल दिया । दोनो टपुगन निपटाकर, लौटकर सा-गोकर दफ़तर जानेके लिये तैयार हो गया ।

मजुकी पिछली रातबानी नयी टपुगनकी बातका स्मरण हो आया । अमने पूछा, 'क्या नीनीं टपुगन कर आये ?'

'अभी तीनो कँसे हो सकती हँ ? तीमरी तो शामको ही हो सकेगी ।' मजुने कटाक्ष किया, 'अँसाय चौथी भी मिले तो कर लीजिये ।' जानेकी जल्दीमें मनोहर जिसका मर्म नहीं समझ सका । वह सीडियाँ अंतरते हुअे बोला, 'देखता हँ, यदि वही मिल जाये तो ।'

अँकाकी मजु व्यग्र हो अुठी । लेकिन घोड़ी देर बाद न जाने क्यों उसके अँपर हास्यसे फडकने लगे ।... भान आनेपर वह भी कपडे बदलकर कॉलेज चल दी ।

अुसी रोज़ शामको टपुगनसे लौटते ही छज्जेमें बैठे हुअी मँजुको मनोहरने कहा, 'मँजु, घूमने चलोगी ? आओ चाँदनीमें थोडा मजा जायेगा ।'

'चलिये ।'

'तो तुम कपडे बदल लो ।'

'बिस्तर करके निरिचन्त होकर ही चले'—कहती हुअी मजु अुठी और 'आज बारिशकी कोअी समावना नहीं है, छज्जेमें ही बिस्तर लगा देती हँ'—कहकर वह अन्दर गयी । मनोहर भी अपना कोट निकालकर बिस्तर करनेमें मदद करने लगा । मजुकी दीवारसे हाथ भर दूर बिस्तर करते देखकर वह बोला, 'थोडा और भीतकी ओर जाने दो न ? बीचमें आने-जानेका रास्ता—'

'अजो महालय, दीवारकी ओर कोअी जन्तु आदि चड जायेगा । अँसा ही रहने दीजिये । यही ठीक है ।'

बिस्तर हो जानेपर मनोहरने देखा कि दोनो बिस्तरके बीच मुदिकलसे अँकआष बालिदनका अंतर होगा । उसकी हृदयकी सारे तार झनझना अुठे । सडे होने हुअे उसने कहा, 'लो अब क्यों मो रही हो, क्या चलना नहीं है ?'

'आग लगे जिस घूमनेकी । मेरा तो सिर चड गया है !' मजुने लेटे-लेटे ही जवाब दिया ।

मनोहर कुछ समझ न सका । अिननी सी देरमें ओर सिर कहीं चड गया ? लेकिन फिर उसे तुल्ल हो खयाल आया । ठीक है । बिस्तर आदि अुठानेमें चड गया होगा ।

‘लो मैं वाम मल देना हूँ।’ कहकर वह ‘शमूताजन’ की शीशी ले जाया और अपने विस्तरके अंक छोरपर बैठकर मजुने मस्तकपर मलने लगा।

‘अत्री....!’ बाल खींचते हैं।’ मजुने दर्द भरी आवाजमें कहा। ‘अच्छा, अब नहीं खींचग। कहकर वह मजुके कुछ अधिव निकट सरक गया और बाल ठीक करके फिर मलने लगा।

मजु आँख मूंदकर चुपचाप पड़ी रहो। बीच-बीचमें अठुनेवाली भारी श्वास दर्दकी धी या शांतिकी यह समझना कठिन था। कभी-कभी वह अपने सारे अंगोको मरोड़ती और अगडाअी सो लेती।

अस तरह मरुने-मरुने जब काफी देर हो गयी, लेकिन मजुने मना न किया तो वह ‘लो अब अतुर जाअंगा’—कहकर मलना बन्द करके शीशी रखने अदर गया।

लेकिन अतुरने वापस लौटकर देखा तो मंजु अपने दोनों घुटनोके बीच सिर रखकर बैठी थी। बंचारे मनोहरको क्या पता कि अतुरके तो रोम-रोममें चन्द्रिकावा

प्रसार हो चुका था? अतुरने पास बैठन हुआ, अब भी दर्द हो रहा है मजु?’ और मजुको बुप देवकर वह धीरेसे अतुरका सिर अतुर अठुनेकी कोशिश करने लगा। प्रश्न ता कर ही रहा था, मोगेन? कुछ बहो तम तो समझ पडे न?

तपाकसे मजुने अपना मंह अतुर अठुआया और तडाकसे मनोहरके गालपर अंक तपाचा लगाते हुआ कहा, ‘यह होना है। क्या बिल्कुल ही मूल हो? कुछ समझने ही—’

अस खतम! मनोहरके रोम रोममें जैसे कीअी नशा छा गया। अणभरमें वह समझ गया कि अस अतुरके प्रभावके अतुरने समय और विवके बिल्कुल व्यथ हैं। अतुरक रोके अतुर मनके वचन टूट गये। और मनोहरके आवेअने पामल वनकर बहनेवाअ पानीकी तरह अपनी मर्यादा छोड दी।

आशामें विहार करता बाँद जैसे किसीको कीअी बात कहनेके लिअे आतुर हो गया है। अस प्रकार वादअीमें दोडता हुआ मन्द मन्द मुसकरा रहा था।

—(गुजरतीसे अनुवादक : श्री गौरीशरर जोशी)

कविता जीवनकी आलोचना है

“मानव-जीवनके साथ कविताका घनिष्ठ सम्बन्ध है। यो कविताने समग्र जगत्के जड-चेतनको अपने दायरेमें लपेट रखा है, फिर भी वह मानव-जीवनका निरूपण करनी है। मनुष्यने कविताका निर्माण क्रिया और अतुरके अन्दर अपने समस्त जीवनको, विचारोको और अनुभवोको प्रतिष्ठित किया। कविता वास्तवमें जीवनका दर्पण है और अंक अतुरको आन्तो-चकका कथन है कि वह जीवनकी व्याख्या है—आलोचना है।”

रूसी लोकसाहित्यमें विलाप-गीत

: श्री वी. राजेन्द्र ऋषि :

[लिखक श्री राजेन्द्र ऋषि अम. अ. 'प्रभाकर और रूसी भाषा तथा साहित्यमें अर्पित रूपसे अर्पाधि प्राप्त हैं। आप गत १९५०-५२ तक मास्कोके भारतीय दूतावासमें कार्यकर्ता रहे और रशियन भाषा तथा साहित्यका विशेष अनुसोलनकर डिप्लोमा प्राप्त कर चुके हैं। ऋषिजी अंक ५०००० शब्दोंका रूसी हिन्दी कोश बहूत शीघ्र भारतीय भाषा साहित्य भंडारको दे रहे हैं।—सं.]

विशेष ममत्व अथवा कवित्वपूर्ण रदन करके मृतकके लिये शोक-व्यवन करनेकी प्रथा ससारमें बहुत प्राचीन-कालसे चली आ रही है। अंग्रे मृतक-विलाप रूस, सीरिया, मिस्र, भारत यूनान, रोम और यूरोपके सब देशोंमें मिलते हैं। रूसमें अजन्म मृतकके प्रति केवल अपना निजी शोक तथा दुःख प्रकट करनेके लिये ही नहीं हुआ। इसके अन्य भी बड़ी कारण हैं। रूसी मृतक-विलापोंमें हमें महत्त्वके तत्त्व मिलते हैं।

प्राचीन रूसी पूर्वज यह अनुमान भी नहीं कर सकते थे कि मृत्यु प्राणीका पूर्ण नाश है। अजन्मका विश्वास था कि प्राणी मृत्युके बाद भी जीवित रहता है तथा अजन्मके परिवार या कबीलेकी रक्षा करता है अथवा अजन्मके दुःख देनेकी क्षमता रखता है। अजन्मका यह भी विश्वास था कि मृतक अजन्मके सम्बोधित किये गये बाद और प्रार्थना भी सुन सकता है। अजन्मके विश्वासमें आध्यात्मिक मृतकका सम्मान करनेकी प्रथा चली। रदन-विलाप-करके मृतकके रिश्तेदार नया अजन्मके कबीलेके लोग अजन्मकी प्रार्थना करते थे। अजन्मका विश्वास था कि अजन्मके प्रेम अभिव्यक्ति द्वारा वे मृतकमें अपने कल्याणके लिये प्रार्थना कर सकते हैं तथा अभिव्यक्ति अजन्मके शोक और शान्ति बच सकते हैं।

प्राचीन रूसी गाँवोंमें अजन्म विलाप-गीतोंमें सुन्दर भावामक कृतियों, पूर्ण कल्याणक पात्रों तथा गम्भीर अनुभूतियाँ और अभिव्यक्तिवाचक सूत्रन किया है।

अजन्म विलापोंकी महत्त्वा केवल अजन्मके कवित्वापूर्ण गुणोंमेंही नहीं है। अजन्म प्राचीन रूसके मृतक विलाप कान्तिपूर्व रूसी गाँवोंका हृदय चित्र भी खींचते हैं।

परिवारके पालक पिताकी मृत्यु हो गयी— अजन्मकी पत्नी और बच्चोंकी सहायता तथा पालन-पोषण करनेवाला कोश्री नहीं रहा। विधवा अजन्मके मायपर फूट-फूटकर रोनी थी। अब अजन्मकी तथा बाल-बच्चोंकी अधिकारी बाँ, जमींदारों और पुलीसने रक्षा करनेवाला कोश्री नहीं, खेती-बाड़ीके कामको सम्भालनेवाला कोश्री नहीं। अब अजन्मकी छोटी-छोटी लड़कियोंको बुद्धि देनेवाला तथा अजन्मकी सहायता करनेवाला कोश्री नहीं रहा। बड़े कष्टसे कमायी थोड़ीसी पूँजी तथा जायदाद बर्ज और टँकस चुकानेमें चली गयी। कमसिन बच्चोंकी भीख माँगने या पराये लोगोंकी दासता या सेवा करनेसे विधा और कोश्री चारा नहीं रहा।

माँ मर जाती—अजन्मकी विवाह योग्य लड़की अजन्मके लिये फूट-फूटकर रोती। अब दुष्ट पटोसी अजन्मका जीवन दूभर कर देते। वे जब अजन्म बनाय, बेचारीका मजाब ब्रूडाअंगे। अजन्मके गालियाँ देते और तरह-तरहकी मोहमें लगाअंगे।

अजन्म लड़का मर जाता—माता-पिता अजन्मके बुढ़ापेके अजन्म मात्र सहारेकी रोते। अब अजन्मकी किमीका आवश्यकता नहीं रही। अब अजन्मपर कोश्री तरह नहीं खाअंगे। अजन्मकी परवरिश करनेवाला तथा बीमारोंमें देखभाल करनेवाला अब कोश्री नहीं रहा।

कल्याणक रूपमें किये गये वे रदन और विलाप न केवल मृतकको दयानेके समक्य अर्पित श्रोत्रागणोंके हृदयोंको कल्याणमान कर देते थे, परन्तु आब भी पुनःहीमें निश्चिन्त होकर वे पाउकाने दिलोंकी हिलाकर पिपला देते हैं। यह सब है कि सभी रदन करनेवाले

अिन विलापाका अभिनय समान रूपसे मुदरता तथा सफ्यतामे नही कर पाते थ । प्रत्येक विषया या अनाय अपनी अपनी बयमताके अनुसार अपन ही ढंगसे विज्ञाप किया करते थ । परन्तु प्राचीन रूसम अिस कलामें निपुण बडे रड अभिनयता भी थ जिनकी जीविकाका सहारा केवल दूसराके लिअ मृतक विलाप करना था । बहूतसी असी स्त्रियाँ था जिनका व्यवसायही मृतक विलाप करना था । वह घर घर घूमा करती थीं★ और जो लोग स्वय विलाप करनेमें असमथ होते थ वे सुनकी ओरसे विलाप किया करती थी । असी विज्ञाप प्रतिभा सम्पन्न कुछ स्त्रियोंका नाम रसी लोक साहित्यके अतिहासम सदा जीविन रहेगा । आजकल अुनके विला पोंका सग्रह किया जा चुका है और व पुस्तक रूपमें श्रुपलब्ध ह । अब व विश्व लोकसाहित्यका अक अमूल्य अग बन चुके ह ।

अिस विषयम अुत्तरी रूसके ओलान्त्सकी गांवकी विसान महिला अिरीना अन्द्रबना फदोसावाका नाम विज्ञापकर अुल्लेखनीय है । अपनी युवावस्थामें स्वय गोकर्न असे विलाप करत सुना था और अुसकी स्मृनिम अु हान मुदरतम पण्ड लिख ह । अिरीना अन्द्रबनाकी तीस हजारसे भी अधिक विलाप मुह जवानी याद थ ।

प्राचीन रूसमें मृतक विलापोका प्रयोग समाजके विभिन्न वर्गनि किया है । जारकी बोयारा (रानी)का सोदागराकी तथा नड बड जमींदाराकी मृत्युपर विलाप किय जाते थ । सम्राटके महलमें तथा गांवकी शोपडोम समान रूपसे विश्वास किया जाता था कि मृतके कमरेमें विडकीके दाम साफ पानीसे भरा हुआ बतन रखना चाहिअ ताकि मृतक आत्मा अूमम स्नान कर सके मृतक शरीरका घरसे बाहर ल जाने समय बडी सावधानीसे काम लेना चाहिअ ताकि मृतक शरीर किवाडकी ओलटसे न छ जावे वरन् घरम दूसरी

★ गुजरात, सोराष्ट्र पत्राव और राजस्थानम भी अिस प्रकारकी प्राचीन प्रथा हैं । कभी कभी अमे आय जब प्रौढ या बूढी औरतोंद्वारा छाती पीटने शोकगीत पानके और मातम मनानके अनोल दृश्य हमन देखे ह । --स

रा भा ५

मृत्युका होना अनिवाय है दुपहर और गामका खाना खाते समय मजदर फाल्नु बीजें रखनी चाहिअ ताकि मृतक गुप्त रूपमे परिवारक साथ खाना खा सक अित्यादि ।

प्राचीन रूस अिन रस्माकी बडी सावधानीम पालता था । अिनसे सम्बन्धित शकुना और अपशकुना पर अुनका पूण विश्वास था ।

पीटर प्रथम द्वारा किय गय मुघारके परिणाम स्वरूप अुन्य वर्गके लोगका जीवन युरोपीय ढंगपर तेजीसे बदलता गया । जार और बोयारा (रानी)के हरमास विलाप गीत भी धीरे धीरे लुप्त होने गय । सोदागराके मध्य यह विज्ञाप गीत चिरकाल तक प्रचलित रहे परन्तु बादमें अुहोन भी अिन गीताका भुला दिया । रूसम प्राति पूव अंतिम वर्षोंमें मृतक विलाप और दफनानकी प्राचीन रस्माका प्रयाग केवल गावाम ही किया जाता था ।

मृतक विलापोको लिपिबद्ध करनका वाय अत्यन्त कठिन है । अस समय अब मृतकके रिश्तेगर विज्ञाप कर रहे हा लिपिबद्ध करना बिल्कुल असम्भव है । व्यवसाय रूपसे विज्ञाप करनवाली जो पुरसतके समय अपनी कृतियाहा सग्रहकर्ताक सामन दुहरा सके अब रूसमें विरली ही मिलती ह । फिर भी रूसमें विलाप गीताकी सग्रह करनका बडा मराहनीय वाय हुआ है । रसी महिला अन० कोपाकोवान अपनी पुस्तक क्नीगा ओ रूसकोम फोकलारय (रसी लोक साहित्य)म कुछ असे विलापोको अुद्धन किया है ।

अक बार कोल्पाकीवा रसी लोक साहित्य विषयक सामग्रीका सग्रह करन गावामें घूम रही थी । वहाँ अुस अक बुडिया मिली जिसका व्यवसाय प्रातिपूव रूसमें दूसराके लिअ विलाप करना था । को पाकोवान हट करके तथा चालाकीमे अुस बुडियाको विज्ञापगीत सुनानके लिअ राजी वर लिया । बुडिया अक भव्यपर बठ गयी और अपनी ठोडी अपन हवलीपर रखकर कहन लगी

“अब मे तुम्हें ठीक लुमी प्रकार बिलाप करके
दिखानो हूँ जिन प्रकार मैंने अपनी बहिनके नाप मिल-
कर अपने पिताकी मृत्युपर बिलाप किया था ।”

बुडिया धीरे-धीरे परन्तु प्रिय और शोकजनक
स्वरमें गाने लगी :—

बुडा ती, भोयो जाकोभोये सेम्येयुसको,

भोतप्रावल्यामशस्या ?

ओस्तावत्यापत्ती भिन्या, पोबेदनुयु गोलोवूशकू,
स थयंय या सिच्चूदू, पोबेवताया गोलोवूशकू ?
रासप्रोस्तीसू काक ती स खोरोमनीय पोस्तुरोमेन्तमदेम,
ओ सो अंतोपेयी पालानोय बेळोकाभेन्भोय,
ओ सो सेद्वेचीनीमी रोसोनीमी देतूशकामी ।
ओ रासप्रोस्तीसू काक ती सो द्वोरोबोय भो स्कोनीनूसाकोय,
ओ सां अंतीमी पोत्पामी खलेबोरोदनीमी,
ओ सो अंतीमी लूगामी सेनीकोस्तीमी ।
ती पोस्तूखाओ-का, रोदीत्येल् मोय तानेन्का,
स थयंय मो सिच्चू बूधंय मोन्, पोबेदनेयो गोलोवूशकी ?
ओ काकमी बूधंय जापाखोवाच् पोत्प्या दा खलेबोरोदनीये
ओ ओबकासीवाच् लुगा दा सेनीकोस्तीये ?
रोस्तीम-बजुरोस्तीम् वेद भी दा मोन् मालदपेन्की,
ने ओबराबातीवाच् नाम थंन्प्यान्कोय राबोतूगको,
ओ ने जापाखोवाच् पोत्पेयी दा खलेबोरोदनीय,
ओ ने ओबकासीवाच् लूगोय दा सेनीकोस्तीय.....

[अर्थात्—

बहूँको तू, मेरे बानूनी परिवार, सियार रहा है ?
छोड रहा है तू मुझे, बिचारी गरीबनको,
मे किसके सग रहेंगी, गरीबन बिचारी ?
जिन मह्य बाडियोसे तू कंभे विदा लेगा,
और सट्टेद पन्थरने बने जिन धरने,
ओर अपने जाये प्यारे बच्चोंमे ।
ओर उगरोके बाडोंमे कंभे विदा लेगा,
ओर अन्न-अन्नबाबू जिन सेनेमे,
ओर पासमे देपी जिन चरागाहोंमे ।
तू, मुन मेरे प्यारे बानू.

अब हम जिसके सग रहेंगे गरीब बेचारे ?

रंगरीकी हम कंभे देख-भाल करेंगे,

और अन्न-अन्नबाबू खेतोंकी जैसे जोडाओ करेंगे
ओर पासमे देपी चरागाहोंको कंभे काटेंगे ?

बुडिसे तो हम सब बूडू है,

बानू व कदमें अनी बहुत जोटे है,

और अन्न-अन्नबाबू खेतकी जोडाओ नहीं कर सकेंगे,
ओर पासमे देपी चरागाहोंको नहीं काट सकेंगे.....]

बुडिया बिलाप करती-करती रुक गयी और
बहने लगी :—

‘नहीं, नहीं, यह काम बहुत कठिन है । आवाज
मी नहीं बुझती । ओर मृतकोको दाद करना भी नो
बहुत शोकजनक है । पिताको मुजुने पदचान् हम जनाय
हो गये थे । मां हमारा पालन-पोषण करनेमें असमर्थ
पी । जीविकाका कोजी साधन नहीं था । मां व्यवसाय-
रूपसे थोपोंके लिजे बिलाप किया करती थीं । नला
बानू बहाकर भी कहीं जीविका चलनी है । हमारी
होंपडीपर दरदराका राज्य था । जीवनमें मैंने बहुत
दुख बुझाया है । यही कारण है कि ये शोकजनक उद
बब मेरी हड्डी-हड्डीमें रच गये हैं.....”

बुडिया चुप हो गयी । कोन्पाकोवाने बुडियाका
ध्यान आकर्षित करनेके लिजे अन्तमे पूजा :—

“ओर तू बूडी अम्मा, विदाहोमें भी जाया करती
की ? विवाहितके माय रदन करने ?”

“नही बेटी, विवाहोंपर तो मैं नहीं जानी पी ।
बनी-बनी रगस्टोके प्रति रदन करने अवश्य जाया
करनी पी” बुडियाने झुत्तर दिया ।

“रंगस्टोने प्रति रदन-बिलाप” यह कृतिमां मी
मृतक-विन्यासोमे बहुत मिलनी-बुलती है । स्वेच्छाकारी
बादमाह जाओके समय रुसमें पौजी रगस्ट बज्री
वपंत्त नोटकर नहीं आते थे । साधारणत वे बूट्टे
होकर ही वापस अपने गाँव आते । भिक्षुजिने अन्नकी
नी मृतकीकी भाति ही रोना जाता पा । विदाओ बरटे
दूसे मृतकी ही तरह अन्नपर विन्यास किये जाते थे ।

बुडिया फिर दोल बुटी —

‘हमारे यहाँ पहिले रगस्ट दरोंके बाद लोटने थे ।
वही नामने देखी, वह यहाँके टहनेका स्थान । बस

ठीक वहाँ ही धुनको—जानके टकडोको—विदा किया जाता था। वहाँसे धुनको पेत्रोजाबोव्स्क और फिर पीतरबुग (२निनग्राद) ले जाया जाता था। वहाँमें सीपा रणकपत्रमें। मेरे तो कोजी उन्का नहीं था वेबल लडकियाँ ही थी। परन्तु मेरी बहनव दो लडकाको ले गय थ। तय मन धुनके अिअ विलाप किया था। अिअ प्रकार।' बुडियान फिर 'गोकजनन' रल्लो तान निकाली —

ती पोस्लूखाओ—का सेदेंशनो मोयो दित्याको
 वृक्ष काक घेदना कूचीप्राया गोलोवूगका
 काक या स्यजदीला जा ओनगूशकी सप्राविस्ता
 काक वखोदीला या थ घोयश्रीयथो पीमुसबीय
 काक स्तोअित मोयो सेदेंशनो रोसोनो दित्याको
 काक थो अतोम थो थोयश्रीम थो प्रीमुसथोअी
 काक या स्यामाम्नु स्मोअयू कूचीप्राया गोलोवूगका
 काक स्ताला स्ताविच सेदेंशनो मायो दित्याको
 वा पोद अतूयू पो' मेक गोसुद्वारस्तवू।
 जाप्रोसाली येवो रेजबीय तुत नीस की
 पोद अतोम पोद मेरीय गोसुद्वारस्तबीय।
 ताक अक्ष जानीलो यथो रेतलीबीय सेदेंबूशको
 अशीबला यथी तोस्का बलीकाया कूचीनशका
 ताक अक्ष अशीबला मो या वेलीकाया कूचीनशरा
 ताक अक्ष घदना पीबदनाया गोलोवूगका
 ओ काक सलोदीला ओ थो कुजनो सू झलेजनूय
 ओ श्कोवाला ओ श्री ओवहृचा झलेजनोए
 ओदीन ओवहृच बलाला या ना स्वीयो मलाद्वय
 गोलोवृशकू
 दूगोय ओवहृच बलाला या ना स्वीयो रेतलीबीय
 सेदचशकी
 प्रती ओवहृच बलाला या ना रेजवा स्वीओी नोशकी --
 ताक अक्ष अक्षपीला या स्वीय रेतलीबीय मस्चास्तनीय
 सेदचशकी

[अर्थात् —

तू मुन तो मेरे गडले बन्ने
 वितनी गरीबन हू 'गोकप्रप्त' विचारी
 मैं किस प्रकार ओनगशका के वानेमें पूछ नाउ करन
 गयी।

कसे दायिग हुआ म फौजी दफनरम
 किम तरह मेरा लडगन जाया खडा था
 किश तरह फौजके अिस दफनरम
 किश तरह देवा निहारा म 'गोकप्रस्त' विचारीन
 किम प्रकार धरन लग भरे लागै व चको
 सरकारके अिस हुनमके अधीन
 अुसकी पतली पतली मु दर टांग काँप गही थी
 सरकारके अिस हुनमके अधीन।
 अडका धन्कता हुआ अिअ मरता चुका था
 अुमको गहरे शोकन ग्रस लिया था
 मूक्ष भी गहरे शोकन ग्रस अिया था
 गरीबन विचारीकी
 मैं कसे लोहारके पास गयो
 और 'गेहेंके तीन पट्टे' तयार करवाय
 अक पत्र मन जवानके सिरपर रखा।
 दूसरा मन अपन घडकने हुअ दिलपर रखा
 और तीसरा पत्र मन अपनी पतली टाँगपर रखा
 अिस प्रकार मन अपन धन्कते हुअ अमाग दिल्ली
 मजदूर किया]

अिम प्रकार प्राचीन कृतम स्त्रियाँ विलाप
 किया करती थीं ' दुपट्टेके छोरसे अपन आँसू पोउने
 हुअ बयान कहा। यह आँसू विलाप करने करते
 छोटी छोटी बन्नेके रूपम अमके सुरींगपर गातापर जमा
 हो गय थ।

मृतक विलापा और रगहटी गीतोंके अगवा अ'प
 गम्भीर और जटिल भावनाओंको व्यक्त करनके लिये
 कविताम अिस साधारण प्रकारका प्रयोग करके विचार
 गीतोंम बहुत कुछ भर अिया जाता था।

वर्तमान सोवियत-युगम अक विंगय प्रकारके
 विलापोका निर्माण हुआ है। वे ह विलाप कयाअें।
 य विलाप सोवियत भूमिके प्रमुख कायकर्ताओ और
 चोराकी स्मृतिम लिप गय है। विचार-बन्धाओम
 अभिव्यक्त भावनाअ किन्ही अवन निजी भाँका नहीं
 प्र'युक्त समस्त जनताके शोचको व्यक्त करती ह।

डायरीका अंक पृष्ठ :

मा निषाद प्रतिष्ठांत्वम्

: श्री राजेन्द्र यादव :

१२ अक्टूबर, १९५०

“हाँ, आपसे मिलिअ, आप है श्री राजेन्द्र यादव, कहनेको प्रगतिशील लेकिन मानाहारके विरुद्ध कहानियाँ लिखने है।” परज बर्रररर अंक बरररर मुकुडर बरररर अटकावर मुहमें रखनेके पहले मेरे बून मित्रने अंक नवागन्तुवसे परिचय कराया। रेस्वाका माहिल, वान हैसीमें बुड गयी।

प्रगतिशीलताको वान छोड दीजिअे क्योकि प्रगतिशील होना आसान नहीं है और न होना कम खतरनाक नहीं है। सही-सही प्रगतिशीलता क्या है, अिनपर चारो तरफके विद्वान् अपने दिनागका तेल निवाले दे रहे हैं। लेकिन मे बडी देर तक सोचता रहा कि क्या मान न खाना अंसा प्रतिविपावादी है? यह कटावप मेरे अून मित्रने मेरो अंक 'वि नरनवयी' कहानीको लेकर किया था, और चूँकि मेने अपने अून मित्रको कविनाअेकि सारे चरुड लेकर अूसमें मजाक अुडा डाला था—अिनलिअे अूनकी वाउकी विभोप मह'ब नहीं दिया। लेकिन जब वह कहानी अंक अन्चे साहित्यिक पत्रमें छपी, और कुछ ही समय बाद अंनिअेकि अंक पत्र तथा सनातनियेकि कुछ पत्रामें अुडूत हुअी—तो वास्तवमें मेँ चौक पडा। वही मेँ अिन प्रतिविपावादीको हथियार तो नहीं बनाया जा रहा है?

बाकी दिन हो गये, भगवानने मेरा विरवान मुअ अंसा अुडा कि फिर जमता ही नहीं दिखायी देता। वुडूडे भोग कहेन है, "मब जम जाअेगा, हमने बडे-बडे नास्तिक देखे है, बाअमें नब मानने लगेते है।" तो मेने अूनकी वाउकी मय मानकर सोच लिया कि वुडाअेमें जम जाअेगा, तो देना जाअेगा। अनी तो निदिचन ही है। यो भगवानके बोअकी मेने वुडाअेमें अुडाअेके लिअे स्पग्गित कर दिया है।

भारतीय मनोविषयो द्वारा किया गया नास्तिक, राजनिक और तामनिक भोजनका विनाअन मुते धोर अत्यधमार्थिक और अर्धवार्थिक रूपका है। और ये मानता है कि मनुष्यके स्वास्थ्य और वृद्धिपर अिस भोजनका कोअी प्रभाव नहीं पडता—जो वुड प्रभाव अिससे पडता दीखता है वह मनोअंजानिक है। क्योकि आपको अपने भौगोलिक कारणसे अंनी सुविधाअें प्राप्त है कि अपने यहाँ होनेवाले भोजनोंको आप तीन भागोंमें विनाअिन कर जालते हैं—अूनमेंसे अंकको अ्रेष्ठ बटाते है ओपको निवृष्ट। मान लीजिअे अंक देना, या प्रान्तको ये सुविधाअें प्राप्त नहीं है और वहाँ केवल वही भोजन साधारणतया अुपलब्ध है (या कॉमन है) अिसे आपने तामनिक या राजनिकके धेनेमें डाल रखा है—अंने समुद्रके तटवर्ती प्रदेशोंका साधारण भोजन मउली है—अब आपके लिहाअसे न तो वहाँके लोगोका स्वस्थ ठीक है और न वहाँ प्रखर वृद्धि पायी जाती है, क्योकि मंस मउली तामनिक भोजन है। और नोधा निवर्ष यह है कि चूँकि हिन्दुस्तानको छोडकर—या बहें कट्टर हिन्दू धर्मको छोडकर सारे मनारमें तामनिक और राजनिक भोजन किया जाता है। (व्यक्तिग्न अुदाहरण छोड दीजिअे) अत नारी वृद्धि प्रतिनाकी पयल हिन्दुस्तानमें ही होयी है जब कि चिन्तन और वृद्धिके माननर हिन्दुस्तानने जो कुछ दिया वह सब हवाअी है। अंकटीकल और मनारकी गति देनेवाला चिन्तन हमें अुन्ही तामनिक और राजनिक देगोंमें मिलता है। और सब वाउ तो यह है कि भोजनेकि वृद्धि नेत्र या मउ होयी है यह विनाअन हमें अल्पतोअ्या प्राग्नीयता, जातिवाद, अूच-नीच और रखकी अ्रेष्ठता (Racism)

पर ला छोड़ता है— जिसका समर्थन केवल हिटलरक धर्मावगण करत ह ।

काफी सोचकर म पाता हूँ कि नही माम मानम राश्री घुराश्री नहा है । किन्तु कतन हुआ बकरकी बाँविके दद और गौरी खाम हुआ पकरीकी तडपनका म क्या कः—जा मनपर आरकी तरह चः बुलकी है । काग । मुश्री चुभानपर मरे दद न होना चाकका धाव मुम आनद द पाता तव तो गायद म अम दृश्यसे बुःमिन हो सकता था । मन अर वार मुर्गी कःन देखी और मुम तीन दिन न जान कःन-नसा गःना रहा । अर भी याद करना हूँ ता मिहःनस भर अःता ह । जा आदमी काः रहा था— जिनना प्रम न अपनी काः गुजारीपर वह था— धुतना म क्या नही हो पाता । म मानता हूँ कि मरी कमजोरी है म कःके रिःका आदमी हूँ, और वाधाको म सःन प्रतिश्रियावाःनी मानना हूँ जिनने कःा है— विधिके घनाय जीव जते ह जहाँ तहाँ चलन फिरत तिह खेलन फिरन देतु ।

अनित गिकारी प्रदेशका वह शैवमपियर—?

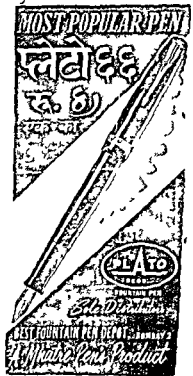
अज यू गःिन अिःके दूमरे अकका पहःा दृःय अईनः जगलम बनःामी—निवामित— डभूक अमी त और तीन गःड म ।

डभूक कहता है, आश्री चः अपन अिः कुः हिरन धर । किन्तु यह चीज मुम वःा ही कःट देना है कि अिम अका त म्वातम काम करनवाःक य चित्तपोदार खालवाःके प्यारे पःगु अनन घराम भी हमारे सीरो और भाःासे वः जाअें ?

पहुःग लाड अलर देता है— मचमुच महाराज जकमको अिसीका अकःाम है । म और वह जगलम चुपचाप म्प य वहा—अः आःके नीच जिनकी पुरानी जड मालिके अूपर जाँकती है अपन दःने धिःगुः हुआ वःारा अक वारहमिगा जो गिःारीके निगानम पायल हो गया था— मरन आधा था— और म आरमे सच कःता हूँ महाराज कि वह वःारा अःभाग पःगु अिनत जोरने दुःन पूण अुछवाम जोड रहा था कि अुमके निःकःनसे अुमकी खाल जैसे पःटी पःती थी । और अकके वाद अक वःड कःणःलादक डगसे धार वाँव हुआ वः-वःड अःमू अुसकी प्यारी नाकपर तुलने पःड रहे थ ।

अिम प्रकार अुम वहन नाःक दूमरे विनारपर म्ः दूअ अःदार खालवाः अुम वःभाग जानवःन जकःकी वःडा दुःषी कर िया है । और अिसी प्रकार वह मःनाता है कि जानःराकी अुनके घरामें जाकर माःनवाः हूँ गःगे कम अःथाचारा और नास ह ।

वहुन कोगिग करनपर भी म मोभासाका कहानी प्रम नहा भुला पाता । विनत कःाःगुण डगन अुमन यह कहाना कहा है । वःड अान चःवने नाःा काःक यहाँ गिःार मःन गया । व बःनूक बाँपर जगलम पहुँचे और भुवहकी फूःती रागनीम हुआ (डक) को मारन उग । दा कुत अुतक गिःारोका ला गकर पाम रखने जा रहे थ । व लाम वःकनकी ही थ कि गःा हःस लःरी गदत और पःड पःख मःगःसे अुवरम मुजर । मन गौरी चःगीकी और अुनपसे अक ठाक पराक पाम आ गिरा—यह छाटा जानिका सःक रपःरी छाती खाला हःस था । तमी मन सिरपर पःड नीक आनमानम चिडियाका अक आवाज सुना—वह अःनःटी-ःःगी वहरा



दुहराकर सुनायी जानेवाली—बडी हृदय विदारक चीत्कार थी। और वह छोटीमी चिडिया जो बच गयी थी, नीले आसमानमें अपने अंस भरे हुए साथीको देखनी, जिसे मैं हाथमें बूढाये था,—हम लोगोके सिरोंके ऊपर चक्कर लगाती मँडरा रही थी। कालं घटनोपर झुका कन्धेपर बन्दूक रखे, बडी अतृप्ततासे देख रहा था कि वह बन्दूकको मारकी सीमामें आ जाये। “तुमने हसिनीको मार दिया है—अब हस नहीं बुँडेगा।” वह बोला।

सचमुच वह नहीं बुँडा और चीत्कार करता हुआ लगातार हमारे सिरोंपर मँडराता रहा। शायद मुझे जिन्दगी भर कभी कष्ट-पूर्ण फलाओको सुनकर अतना दुख नहीं हुआ जितना अंसकी अुन असहाय प्रार्थनाओको सुनकर,—जितना अंस बचारी छोटी-सी चिडियाके कण अभिशापीको सुनकर, जो सूर्यमें लो गये थे। वह बार-बार बुँडता और अंसके साथीका मोह अुसे बार-बार अिधर खीच लाता।

“अुसे जमीनपर रख दो। कालंने मुझसे कहा।—“घोरे घोरे वह बन्दूककी मारके भीतर आ जायेगा। और सचमुच वह पास आ गया—जैसे खतरेकी अुसे कोअी चिन्ता ही नहीं हो—वह अपने अंस पर-भ्रममें अपने साथीके मोहमें जिसे मैंने अभी मार दिया था—वेहोस था। कालंने फायर किया और जैसे झटकेसे वह डीरा टूट गया जो अुमे अितनी देरमे अुलसाये था—फिर जैसे कोअी काली चीज जोरसे गिर पडी। कुत्ता-नागकर अुमे मेरे पाम अुठा लाया! मैंने अुन्हें अुसी पैलीमें रख दिया—वे ठण्डे पड गये थे—और अुसी घाम परिस लौट आया।

अेण्टन चँखवकी कमजोरी भी कुछ अिसी प्रकारकी थी। जब वह मँल्लिखोवोमें था—तब अवनर मिलनेवाले अुसेके पास आया करते थे। अेक बार प्रसिद्ध चित्रकार लैबिनन, अुसका मित्र भी दो-अेक दिनको आया और वे लोग अिन्कारको गये। लैबितनने अेक जगली मुँगेपर गोरी चलायी। मुँगा अेक अुली जगह गिर पडा। चँखवने अुसे अुठा लिया और देना—लम्बी चीच, बडी-बडी काशी आँवें,—और बहुत सुन्दर पर। मुँगा आश्चर्यमें अिन लोगोकी ओर देख रहा था। चँखवकी

समझमें नहीं आया कि अिस अभागे मुँगेका क्या करे। लैबितनके चेहरेपर वेदना अुमड गयी थी। अुपने अपने आँखें बन्द कर ली और कांपती आवाजमें बोला—“तुम बडे अच्छे हो, अिसके सिरको बन्दूकके पिछले हिस्सेसे तोड डालो।” चँखवने अुत्तर दिया कि “भाओ, मुझसे यह नहीं हो सकेगा।” लैबितनने दो बार कन्धे झटके—अँखें झपकी। वह बडा नर्वस हो रहा था। अुसने फिर चँखवके पथीको मार डालनेकी प्रार्थना की। आखिर चँखवने ही वह काम पूरा किया।—“अिस प्रकार सत्तारसे अेक सुन्दर प्राणी कम हो गया—” चँखवने सुवेरिनको अेक पत्रमें घटनाका वर्णन करनेके बाद कहा है—“और दोनो बेचकूफ चुपचाप अिन्न लटकाने पर लौट आये—”

अिन्कारकी बात याद आते ही सत्तारके सबसे बडे क्रान्तिकारी लैबिनके जीवनकी घटना याद आती है। अेक बार वे भी अपने अेक मित्रके साथ अिन्कार खेलने गये, और अेक जगह छिपकर चुपचाप बन्दूक लिये बँठ गये। तमी सामनेसे अेक लोमडी गुजरी, मित्रने कोहनीसे अिगारा किया, लेकिन लैबिन चुप। मित्रने फिर झटका दिया—लेकिन लैबिन फिर चुप। लोमडी निकल गयी। मित्रने अुजलाकर कहा—“अजब आदमी हो, गोली क्यों नहीं चलायी?” गहरी साँस लेकर लैबिनने कहा—“यार, वह अितनी सुन्दर थी कि अुसे मार डालनेको मेरा मन ही नहीं हुआ।”

मेरी वह कहानी ‘प्रगतिशील’ है या प्रतिक्रियावादी मुझे नहीं मालूम। लेकिन सचमुच मैं दिलसे नहीं चाहता कि अुसेसे प्रतिक्रियावादियोका कोअी भी अुदेश्य सजे। फिर भी भावुकताकी बात नहीं है, यह बात मेरे दिमागमें नहीं घुसती कि हम तो सिर्फ अेक वातसे अेसे घायल हो जायें कि महीनो अुसे पाले रहे—कोअी हमें नीच ले तो लपककर घुँसा मारें—लेकिन दूसरेकी गर्दन काटनेको अपना खेल समझें अुसकी मौतकी तडपनोसे आनन्द ग्रहण करें—और घर आकर सूरज-चाँद-तारे और ओममें प्राणीका आरोप बरके क्विटाअें लिखें। क्या यह “मैं ही सबसे अधिक ठीक हूँ” की डिक्टेटरी प्रवृत्ति नहीं है? और अुम समय जब ये अपने आपको बान्मोबिका वतन बताते हैं तो जो होता है मूँह नीच लें।

चित्र-रूपरू :

प्रेममें भगवान

• स्व. टालस्टाय

[प्रारंभिक सगीतके बाद माटिनका स्वर श्रुतता है ।]

माटिन . (स्वगत दुखभरा स्वर) हे भगवान, मुझे भी बूटा लो, तुम कैसे हो कि मेरा अिकलौता नन्हीनी अमरका जो मेरे प्यारका बच्चा था अुमे लो तुमने बूटा लिया और मुझ बूढेको छोड़ दिया, अब मैं तुम्हे कैसे याद करूँ, क्यों याद करूँ ? मैंने अपने पूत गाँठनेके काममें कभी कोताओ नही की। कभी किसीको पोसा नही दिया, फिर भी तुमने मेरी बीबीको बूटा लिया। सब बालक छीन लिये, अेक बच्चा था, वेचारा बे-माना बच्चा अुसे मैंने पाला पोसा, बारट् वर्षका किया। अुम्मीद बधने लगी थी, कि बूढापेकी लकड़ी बनेगा, अुसे भी बूटा लिया।

[तभी आवाज आती है]

बूढा यात्री माटिन हो क्या ? अजी माटिन ।
माटिन कौन हो ? जाओ आजओ. ओ हो आप है ? यात्रा कर आये ?

बूढा यात्री हाँ कर आया, आठ वर्षसे तीरथ ही घूम रहा था, बडी शांति मिली, कही तुम कैसे हो ?

माटिन मेरी क्या पूछते हो ? अेक लडका था ! तीन बरसकेकी अुसकी माँ छोड गयी थी, अेक बार सोचा था कि अुसे देहातमें बहनके पास भेज दूँ, पर दूमरेके घर बालकको जाने क्या भुगतना पडे, क्या नही, यह सोचकर अुसे अपने पास रखा। नोकरी छोडकर अुमे पाला। अब बारह वर्षका हा चत्रा था, वि भगवानने बूटा लिया।

बूढा यात्री ओ हो तुम्हारा बटा चल बसा ?

माटिन चल नही बसा, अुसे भगवानन मार डाला। भगवान बडे....

बूढा यात्री हरे राम हर राम, माटिन भगवान जो कुछ करन हैं अच्छा करते हैं, घबराओ नही व सब ठीक करग।

माटिन क्या ठीक करग ? अब तो भात्री मुझे जीनेकी भी चाह नही रह गयी वम भगवान करे मे जन्दी यहाँस बूट जाअं। तुम्ही कही जगमें अब कौन आशा मुझे बाकी है ?

बूढा यात्री अमी बात मुझे नही निकालन माटिन । ओश्वरकी सीला नला हम क्या जान कोत्री हमारा चाहा यहाँ थोडे ही होना है। ओश्वरकी मर्जी ही चरती है, अुनकी अँसी मर्जी है कि बच्चा चत्रा जाअे, और तुम जीओ। अिमीमें कोत्री भलाओ होगी। तुम जो निराशाकी बात करते हो अुसकी बजह यह है कि तुम वस अपने ही मुखके लिअे रहना चाहते हो।

माटिन अपने मुखके लिअे नही ता भला किसर लिअे रहना चाहिअे ?

बूढा यात्री ओश्वरक लिअे माटिन, अुमन हम जीवन दिया, सो अुमीके लिअे हमें रहना चाहिअे। अुसक लिअे रहना सीख जाओ ता फिर कोत्री बनेत न रहे।

(कथकिक सप्रदाट)

माटिन . (जैसे मोचना हो) ओश्वरके लिअे हमें रहना चाहिअे।

बू या हाँ, अुमन हमें जीवन दिया है।

मा. (पूर्ववन) लेकिन ओश्वरके लिअे रहना रँग होगा ?

- बू या बह तो सन लोगोके चरितम पता लग सकता है। अच्छा तुम बाँच ता सकते हो न ?

मा . हां हीं, बांच लेना हूं ।

यू या : तो वम अित्रीकी अंक पुस्तक ले आना, अुमे पडना, अुनमें सब लिखा है । अुनमे पता लग जाअेगा, कि अीश्वरकी मर्त्रीके अनुसार रहना कंसा होता है ।

मा अचड़ी बात है, मं आज ही जाकर वडें छापेकी अित्रील ले आअंगा, और छुट्टीके दिन, मातव रोज पढा कर्ंगा ।

(अन्तराल संगीत फिर माटिनका आवा भरा स्वर)

मा यह क्यासे क्या हो गया । पडनेमें अेना मन लगना है कि वसी वृक्ष आती है नभी पोयी छुटती है । अब बच्चेकी याद करके भी दुम नहीं होना, दारू भी छूट गयी । जीवनमें जैसे मानि आ गयी । आनन्द रहने लगा । हे भगवान्, तू ही है, तू ही जगदाधार है, तेगही चाहा हो, (अित्रीलके पत्रे पलटता है) आज तो छडा जघ्याप पडना है, "जो तुझे अंक गालपर घण्ड मारे तो तू रूसरा भी अुसके आगे कर दे । जो कोट अुतारना चाहे वुरता भी अुमे सौंप दे । जो मंगे मवको दे । और जो ले जाअे अुसमे तू वापिस कुउ ना मांगे, और जो तू चाहना है कि लोग मुझे अंसे बरते वैसेही तू अुनने बरत ।" (वपपिच मन्नाटा, पत्रांकी खड-खड) । 'तुम प्रभु तो पुकारते हो, पर मेरा कहा करते नहीं हो, जो मेरे पास आता है, मेरा कहा मुनता है, और फिर वंसाही करता है, वह अुम आदमीके समान है जिसने गहरा गोदकर अुनने प्रमानकी नील चूटापर अुमपरी है, आदी आयी और लहने टकरा-टकराकर हार गयी, पर मकान नहीं हिया पर जो मुनता है और करता नहीं, वह अुम आदमीके समान है, जिसने घरतीपर मकान खड़ा किया पर बुनियाद नहीं दी, आयी पानीकी वाट और टकरागी कि मकान टह पडा...." (फिर मन्नाटा) टकरागी कि मकान टह पडा । हूं, मेरा मकान चट्टानपर है, कि रेनपर ? चट्टानपर है तो ठीक है, यहीं बंठे बंठे तो मव ठीक लगना है । जैसे अीश्वरकी मर्त्रीके मन्ना-विकही मे चर रहा हूं । लेकिन और सबकी कि मनमें विकार हो आता है । तो जउन मुझे नहीं छोड़ना चाहिअे । अछडा अर मोअूं ..लेकिन मन नहीं करना । मो फिर तानवा अध्याप भी पडना गृह कर्, (पत्रे

पलटते है, पटता है, समम बीतता है, जोरसे पटने लगता है) तब प्रभु अुम स्त्रीकी ओर होकर साअिमनसे बोअे अिस स्त्रीकी देखा; मं तुम्हारे घर अतिथि हूं, पर तुमने मेरे परोपर पानी नहीं दिया, और यह है कि अुनने बांनुअंसि अिसने मेरे पंर घोअे और नेअंसि अुन्हें पोअं है । तुम मूतसे बचे हो, और जबसे मं आया हूं यह मेरे परोकी ही चूमती रही है, तुमने मेरे सिरपर भी तेल नहीं दिया और यह है कि मेरे पांव रनेहसे भिगोती रही है.... ।' (सहमा रुककर सोचमें डूब जाता है) ... अुनने परोपर पानी नहीं दिया, अुन्हें छुनेसे बचा, सिर तेल नहीं दिया, .. (अंक वपण सन्नाटा, फिर बोळता है) वह आदमी मेरी तरहका रटा होगा, अपनी ही अपनी सोचता होगा । छुद अछडा खा लेना और आरामसे रहना । बस अन्ना ही सोच, मेहमानकी चिन्ता नहीं, कुल अपना ही अपना अुसे खाल था, मेहमानकी तनिक परवाह नहीं थी । और मेहमान कोन ? स्वम भगवान्, जो कही वह मेरे घर पधार जाअे तो क्या मं भी बैसा ही कर् ?

(अंसे बोळते-बोळने स्वर घोमा पडता है, वह सो जाता है, रात्रिका संगीत अुटना है, फिर जैसे कीअी सूक्ष्म स्वरमें पुकारता हो ।)

स्वर . माटिन,

मा. (चौककर) कोन है ? (चलनेका स्वर) कोन है भाजी ?

स्वर. माटिन, कल गरपिर ध्यान रखना; मं आअंगा ।

मा. - (चकित) यह कोन बोला, कोन हो तुम... ..अं . यहाँ तो कोअी नहीं ।" जायद मे सपना देख रहा था, हां सपना ही होगा, नहीं तो अिस वक्त यहाँ कोन आता ? चलो मोअूं ।

(फिर मो जाता है, अन्तराल संगीत, फिर माटिनके जुते गाठनेका स्वर : अुमके बाद माटिन बोनने लगता है ।)

मा : (स्वगत) रात वह मयना था या मचपुच बोअी आया था, मुझे तो अंमा लगना है जैसे वह मचपुचकी आवाज थी, पहिले भी तो लोग अंभी

भावाओं सुनते रहे ह किसीके चलनकी आवाज कौन बा रहा है वही है क्या ? अरे यह तो वही है नय चमचमाने जूते पहन ह और यह कहार है और अन्न कौन ? (घिसे जूतोंकी आवाज) ओह वूडा सिपाही स्तपान है किसीके घरमें रहना है । बचारा रात जो बरफ पानी धी खुसे हटान आया है (हम पडता है) म भी अमरसे बुडा गया हूँ नहीं तो क्या ? देखो न कसे बहकन लगा हूँ, आया तो स्तपान है गली साफ करन और मुझ मूसा कि मसीह प्रभु ही आ गय ह । हे न बात कि म सठिया गया हूँ (कहता हुआ जूते ठोकता रहता है कुछ बपण केवल ठक ठक कर आवाज अउती है) हूँ जब तो स्तपान बरफ हटा चका होगा । देखू अरे यह तो दीवारके सहारे सुस्ता रहा है । बचारा वूडा भी तो बहुत हो गया है । कमर मुक गया है । देहमें बल नहीं रहा । बह तो हाँफ सा रहा है । क्यों न बूलाकर खुसे चायके लिअ पूछू बनी हुभी तो ही ही हाँ हाँ खुसे वुलाअ (छिडकी थपथपाकर पुकारता है) स्तपान भाभी स्तपान ।

स्तपान० (दूरसे) कौन है ? क्या है जी ?

मा० आओ अदर आजाओ थोडा गरमा लो न तुम्हे ठड लग रही मालूम होनी है लो दरवाजा खोलना हूँ (दरवाजा खोलनका स्वर) आजाओ अघर ।

स्तपान० भगवान तुम्हारा भला करे सचमुच मेरी देखें सरदी वठ गयी है और जोड दद करते ह जरा पर झाड लू तो अदर आभू ।

मा० अरे अरे गिर पडोग भाभी रहन भी दो फा झड जाअगा सफाभी तो रोज होती ही है कोअी बात नहा भाओ आजाओ, यहाँ बडो यहाँ बँडो और लो चाय पिओ ।

स्तपान० (विनम्र स्वर) ह ह कसे घयवाद दू ? (दोनो चाय पीते ह) सचमुच गर्मी आ गयी आप कितन धच्छ ह ?

मा० ओ अक गिलास और लो अरे लो भी (गिलास भरता है पीते ह) गरमी जाअगी तो काम भी भूब हीगा ।

स्तपान० तुम तो भाओ सचमुच लेकिन तुम चार बार सडककी तरफ क्या देख रहे हो क्या किसीको बाट जोहते हो ?

रा भा ५

मा० बाट ? भाओ क्या घनाअ ? कहने लाज आती है सच पूछो तो अिन्तजार तो नहीं है पर रात अक आवाज सुनी थी जो मनसे दूर नहा होनी है । वह सचमुच कोअी था या सरता था । कह नहीं सकना कल रातकी बात है कि म अजीउ बाध रहा था असमें प्रभु अीसामा वपन है न कि कस बुहौन दुख अुठाय ओर किस भाँति वह अिम धरतीपर प्रम और भक्तिसे रहे सो तुमन भी जएर मुना होगा ।

स्तपान० सुना तो मन है पर म जपड आदमी हूँ और समझना-बूझता नम हूँ ।

मा० तो सुना भाओ अुनके जीवनके विषयकी बात है म पड रहा था पडन-पडने वह प्रमग आया जहा ममीह अक धनवान आदमीके यहाँ जाने ह वह धनी आदमी मनसे अुनकी आवभगत नहीं करता ।

स्तपान० फिर फिर क्या हुआ

मा० तुम्हें म क्या कहू म सोचन लगा कि कहीं म होता तो जान क्या न करता पर देखो कि अुस आदमीन मामूली भी कुछ नहीं किया अिनी तरह सोचने सोचते मुझ नीउ आ गयी फिर अकअव जो जागकर अुडा तो असा लगा कि कोअी मुझ नाम लेकर धीमस बह रहा है कि देवना अितजारम रहना म कल आअूग ।

स्तपान० सच अना हुआ ?

मा० अँसा दो बार हुआ सच कहूँ तो भाओ वह बाध मेरे मनम बैठ गया यो तो मुझ खुद गरम आनी ह पर क्या घनाअ मनम आगा लगी ही है कि खुद भगवान वही न आने हो ।

स्तपान० बडी अजीब बात है वायद

मा० अरे लो तुम्हारा गिलास खाली हो गया बातोंमें लगा रहा लो

स्तपान० नहीं-नहीं, अन्न नहीं ।

मा० ला भाओ, पीओ भी (भरता है) हाँ म क्या कह रहा था हाँ म सोच रहा था कि अिस धरतीपर मसीह प्रभ कसे रहने थ । नफरत किसीसे नहा करते थ जोत मामूलीसे मामूली लोगोंके बीच मिल जुलकर रहने थ हम जमे अघर्मी और पापी लोगोंको अुन्हाव शरण देकर अुठाय था ।

स्टे० सो तो है ही । वे प्रभु थे, प्रभु

मा० . अन्होंने कहा, जो तनेगा अुसका सिर नीचा होगा, जो सुकेगा वही अुठेगा, अुन्होंने कहा तुम मुझे बडा कहते हो, और मैं हूँ कि तुम्हारे पर धोअूंगा, अुन्होंने कहा जो दीन है और दयावान है, और प्रीति रखता है वही धनी है ।

स्टे० : (भावावेरा) कितनी बडिया बात है, तुम कितने भागवान हो माटिन, जो प्रभुकी वाणी वाँच सकते हो, तुमने मुझे ये बाते मुनाकर घग्य कर दिया, घग्य कर दिया ।

मा० अरे तुम तो रोने लगे, स्टेपाल लो अंक गिलास, बस अेक गिलास और लो ।

स्टे नहीं-नहीं अब नहीं, मैं माफी चाहता हूँ, किस तरह तुम्हारा घग्यवाद अदा करूँ, तुम्हारा मुसपर बडा अेहसान हुआ, तुमने मेरे तन और मन दोनोंको खूराक दी और मुख पहुँचाया, अब तो चलूँ

मा० : अजी क्या कहते हो, कब तो अतिथि मिलते हैं । भाभी फिर भी अिधर आया करना । मुझे वडी खुशी होगी, (स्टेपाल जाता है) गया, चलो मैं भी काम निबटा लूँ, (कुछ बषण काम करता है फिर सिपाहीके जूतोंकी आवाज अुठती है) . कीन आया ? ओह सिपाही है । सरकारी जूते पहने हैं और वह मकान मालिक है, वह नानवाअी गया ।...अरे हवा चल पडी है, खिडकी बन्द कर लूँ (कुछ चलता है) वह कीन दीवारके पास हवाकी ओर पीठ करके छडा है, अेक स्त्री हूँ, अुमकी गोदमें तो बच्चा है, अुसे दबना चाहती है, पर बपडा तो अुसके पाम है नहीं । जाअेंमें गरमीके कपडे पहने हूँ वे भी पडे हूँ, (तभी बच्चा रो अुठना है, रोना रहना है, स्त्रीके चुपकारनेकी आवाज अुठती है, पर बच्चा नहीं चुपता, माटिन पुकारता है) मुनना भाभी अिधर मुना ?

स्त्री० मुझे बुलाया तुमने ?

मा० : हाँ, हाँ, मैंने बुलाया है, वहाँ सरदी में बच्चेको लेबर क्यों नहीं है, अन्दर आ जाओ, यहाँ बच्चेको ठीक तरह अुड़ा भी लेना, अिधर आओ, अिधर,

(स्त्री आती है) वह खाद है, वहाँ बैठ जाओ, आग है ही, जरा गरमा लो, और बच्चेको भी दूध पिला लो ।

स्त्री० दूध मेरे कहाँ है, सवेरेमें मैंने कुछ खाया ही नहीं है ?

मा० : तो फिर रोटी खा लो, शोगवा भी है, हाँ दलिया अभी नहीं हुआ, क्या हर्ज है रोटी-रमा ही लो, लो बैठ जाओ और शुरू करो, बच्चोंको लाओ मुझे दो । देखती क्या हो ? मेरे भी बच्चे थे, देख लेना मैं बच्चोंको खूब मना लेता हूँ ।

स्त्री० : आप तो . क्या कहूँ ?

मा० : कहती क्या हो ? बच्चा मुझे दे दो, हाँ आओ मुना आजाओ, आजाओ, देखो अे, अे, मुना राजा वेटा, (तरह-तरहकी आवाजें करता है पर बच्चा रोना रहना है) तुम तो भाभी, बडे बुरे हो, अच्चा हम तुम्हें गुद-गुदाअेंगे और हँसाअेंगे । अँ हँसो, हँसो, यह देखो यह लो... (बच्चा चुप हो जाता है) देखो चुप हो गया है. पर हाँ तुमने यह तो बनाया नहीं कि तुम कीन हो ?

स्त्री० : मेरा आदमी सिपाही था, कोअी आठ महीने दुबे जाने अुन्हें कहाँ भेज दिया गया सबसे कोअी खबर अुनकी नहीं मिली, नहीं मिली तो मैंने रोटी पकानेकी नौकरी कर ली । लेकिन जब यह होनेकी हुआ तो काम सूर गया । अब तीन महीनेमें भटक रही हूँ । जो पास था सब बेच चुकी, सोचा धाम बन जायूँ, लेकिन कोअी रखता ही नहीं,... ..

मा० रने भी क्यों, किननी दुबली दीवती हो । दूध बहाने अुतरेगा ।

स्त्री० : सो तो है ही, अब अेक सेअानीके बहनेपर आयी थी, वहाँ हमारे गाँवकी अेक नौकरानी है, वहाँ गयी तो कहा--कि अगले हफ्ते तक पुमंत नहीं है फिर आना, मो लौट रही थी, दूर जगह थी, आने जाने दम पूल गया, बच्चा बेचारा मूखा है, देखो नैसी अाँतें हीं गयी हैं ।

मा० : (माँस भरकर) कोअी गरम बपडा पाम नहीं है ।

स्त्री० गरम बपटा कहति हा । धनो क' १
छा जानमें अपना चदरा गिरवी रख चुका है बच्छा
पत्रा चचको मुझ से तुमन ।

लक्ष्मी (गया दुआ) था मज छा मन
कृष्ण नया गिया । मुझ बना मां रहा हा । मुझ
छा दा ।

मादिन मुनी । म' पास अक गरम धागा है ।
है ठा बना पुराना पर बना बच्चक कु' काम तो बाही
साधगा । १ २ जात्रा । अर तुम रोता बना १ ला ।

स्त्री म नुझ ग'गा बना । म नय प्रियमें
रूगी ।

मान्नि (बाकर) जान से नाशा । भगवानके
लिखे अमु अर माफ कर दा ।

स्त्री भगवान तुम्हारा भग कर बादा । मुच
मुच ओवरन हा मुझ लिपर मने गिया । नहीं ता
बच्चा गिरुकर मर चुका हाता । क्या सबकी ग्या
बपाय बन रही है । अर यह ओवरका बना है
कि तुमन शिखीय बाण झाका ओर मुच गरीबीपर
दया का ।

स्त्री अजा न शिष गिया दुगा । तिसुच मां
भर याद था रख । बन्धागका धान २ जाधगा ।

मान्नि (शायदाक स्वरम) न न मानी जान
नी १ निर अया नहा करगा भगवान लिखे अमु
जान दा । हाँ हाँ छा १ ।

मान्नि सबमुच यह सब ओवरका करना है ।
धुमीन मुच छात्र छुवर रखनका बना था । य' कोशी
सयाग हा नहीं है कि मन नम्ह ग'जा अमुन मुचय ग'त्र
सपनमें कहा था त्रिन्नाकार करना कर म आधगा ।

स्त्री तुम कहत १ ना ग'न दजा २ पर ।

मा० बा ल'क । तिस मासि मास मासि ।
बौर किर अया न करना । मन नम्ह मुच २ प्रात
देवा था ।

स्त्री कीन जान आबर बना नहीं कर मवजा ।
बच्छा म अर बनू । बन्धाग तो बन रू ।

लक्ष्मी (गया गन) म म मानी मागिना है ।
म लिखे धानी नहीं बना ।

मान्नि जा रहा १ । क'या प्रभुच नामपर
य' १ । छा जान । चन्गा ल'का बना ।

मा० टाक । अर टाक है । लो द' लो अक
मुच । नाशा मुचक पस म रगा

स्त्री (ग' २) आ आप त'ना बना १ । प्रमु
शिखु बापका बना कर ।

स्त्री तिस उम्ह तिन टाकरिका तुम बिगा
गल । तिस बा' गान चालिखे य । ह'न मर ना
या' रखता ।

मादिन प्रमु मा'क मा'कि ह ।

(अन्तरा मगान)

मान्नि (स्वगत) अर ना गाम गनका बना १ ।
ग'निन य' कीन है लिखक पास ब'छा सबकाग
है । पापर बादा है । २ तिसम शि'नी मरी २ ।
तिस बादा कारण थक गया है । मन्ना र'न है । अर
अर यह बना ? यह ल'का दोन्ना बादा बौर सब ल
नाग (त'जाय म्भीदा स्वर)

मा० बाह भाशा । छा' छा' । यह उरका
२म गगाका था ओ बरका म' तरीका नहीं है । अर
अर मुचक लिखे अर का' ल'न बाहिब ना ह'न अरन
धारीके लिखे बना मि'का चालिखे साधा ला (क'य'क
मनाया) तिस व' क'या नहीं मना ज'नी प्रमु ना धान
मवकेपर माग ल'न ग'त्र २ ह'न वह तिस बरायक
लिखे अरन ब'त्राके २ग जा र'दावक है । ना
प्रमुका बना है कि ह'न मा'क कर । नहीं ता हम भा
मानी नहीं बना । ह' कियका मा'क करो । धनजान
बा'कनी ता बौर ना च'न मा'का मि'ना चालिखे ।

स्त्री अर अर ली'ना ली'ना यह उरका
सब ल'का नाग रहा है । हाँ हाँ जाता कहा है-मुँगी
बा । मुन्नाका मा'क सुमसा है । म'च छा'गा १ १
बाह त्रि'ना जार ग'गा ल' २ बौर ग'ग
१ । त'रायन य'ना है

स्त्री य' ना म'च है ल'निन व' शि'न बिगड
जा र' ह' ।

मा० : यह तो हम बढ़ोपर है न कि अपने बुद्धाहरणने बुद्धें हम अच्छी राह दिखायें ।

स्त्री : यही तो मैं कहती हूँ । मेरे खुद सात बच्चे हो चुके हैं । अन्तमें अब सिर्फ़ एक लड़की है । बुनोके साथ रहती हूँ । कभी घेवती-घोवते हैं । बूड़ी हो गयी हूँ फिर भी बुनके लिये काममें जुटी ही रहती हूँ । नहीं तो अब मुझे छोड़कर किसीके पास जाती ही नहीं ! (स्वर कण) सो सब तो है जिस लड़केका बचपन या सेव हुआ लिया । बीरवर बुसकी मदद करे । अच्छा चलूँ । जरा बोरा कमरपर रखवा दो, फिर टोकरी सिरपर ले लूँगी ।

लड़का लाम्रो बोरा में ले चलूँ माँ । मैं बुनो तरफ़ जा रहा हूँ ।

स्त्री हाँ, हाँ, ले चलो । तुम तो बड़े अच्छे लड़के बन गये ।

मा० : (हँसकर) सब अच्छे हैं, बुरा कौन है ? अच्छा चलूँ, काम निबटा लूँ, वे तो गये ! (चलता है)

मार्टिन . (ठक ठक होती है : अन्तराल) यह जूता पूरा कर ही डालूँ । (फिर ठक ठक, काँट काँट, ठक ठक) हूँ अब दुरस्त हो गया । ठीक है । आजका काम खतम हुआ । (बीजार समेटता है) अब तो त्रिबील बाँचू । आज प्रभु आज तो नहीं । अच्छा बुनकी माया वे जाने । (पुस्तक बुतारने-रखने-पत्रे पलटनेका स्वर) आज तो यहाँसे पढ़ना है । अरे यह तो बल्के सपनेवाला पत्रा है । (सभी जैसे कोश्री चलता हो) कौन, कौन है ? कोश्री नहीं । पर वह अंधेरे कोनेमें कौन खड़ा है । (त्रिमी समय स्टेपानके स्वरमें कोश्री बोलना है ।)

स्टेपानका स्वर : मार्टिन मार्टिन, क्या तुम मुझे नहीं पहिचानते ?

मा० : (सन्देह) कौन ?

स्टेपान० (पास आकर) यह मैं हूँ !

स्त्रीका स्वर० : बीर यह मैं हूँ, (बच्चेकी हँसी)

सेववालीका स्वर : और यह मैं । (हर स्वरके बाद हर्फ़का संगीत)

लड़केका स्वर और यह मैं ।

मा० (गदगद होकर) प्रभु प्रभु, तुमने क्या लीला दिखायी । तुमने किस रिश्तेकी भेजा, प्रभु तुम धन्य हो । तुमने मुझे धन्य किया । (पत्रे पलटकर पटता हुआ) मैं भूखा था, और तूने मुझे खाना दिया, मैं प्यासा था तूने मुझे पानी दिया, मैं अजनबी था तूने मुझे ग्रहण किया, जिन भावियोंमेंसे अँधेके लिये, अदनासे अदनाके लिये जो तूने किया, वह मुझको जिया समझ । जो दिया मुझे पढ़ेका समझ ।

(पत्रे-पत्रे रक जाना है) बहा यह तो मेरा सपना सच्चा हुआ, प्रभुने किसीकी नहीं भेजा, वे रक्क प्रभु मेरे घर सचमुच खुद पधारें थे, अन्होंने ही मेरा आतिथ्य पाया था; खुद अन्होंने । ओह प्रभु करुणा-निधान अब समझा । वह स्टेपान नहीं था, तुम थे । वह बच्चेवाली गरीब औरत नहीं थी, तुम खुद थे । वह सेववाली औरत और लड़का और कोश्री नहीं थे, वह तुम ही थे । प्रभु, ओह प्रभु, बाप मेरे घर पधारें, प्रभु मेरे घर पधारें (भावातिरेक और फिर मन्त्रि) : धन्य हो प्रभु, धन्य हो ! *

● यह नाटक बड़ी सरलतासे रंगमंचपर खेला जा सकता है । अँधे ही संटककी आवश्यकता होगी । परिवर्तन, जो केवल समयके है— अघितकर प्रकाशके अतार-चक्रावसे सूचित किये जा सकते हैं ।

(रूपांतरकारः— विष्णु प्रभाकर)

और्वेयार

: स्व० राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती :

सारे ससारमें स्थिराँके लिजे नीतिके नियम पुरुषोके ही बनाये हुअे हैं। तमिलनाडुकी स्थिराँ भी राजनीतिके क्षेत्रमें छोटे दायरेके अंदर पुरुषोको विधारित नीतिके नियमोको मानती थीं। तो भी आम तोरपर जन-समाज सगरी अपचार व्यवहारोके सबधमें तमिलनाडुमें हमेशा और्वेयारके नीतिवाक्य तथा नीति-ग्रथ ही प्रमाण माने जाने आ रहे हैं। पुराणों भी अरुच सिधियत अल्प सखयक लोग ही बळ्ळुवरका कुरल व 'नालडियार' आदिका प्रमाण मानते थे। अर्ध सिधियत तथा असिधियत जनता स्त्री पुरुष सबके लिजे और्वेयारके बनाये हुअे नीतिवाक्य ही पथ प्रदर्शक हैं। दो हजार सालोसे और्वेयारका नीतिसाम्प्र ही तमिलनाडु-वामियोमें बहुजनके लिजे प्रमाण रहा है।

आम जनता अन्ह मानीती है मानीती थी। मेरा श्रेया कहनेका मतलब यह नहीं है कि राजा तथा पंडित लोग अन्हे अुपेयित समजते थे। पंडित, राजा पामर तथा जनता सब कुरल नालडियार आदि ग्रथोमें अधिक और्वेयारके ग्रथोको मानते और अनुसर गर्व करे आये हैं। (यहाँ यह भी स्मरण दिलाता चाहूँगा कि) हाँ अंक दल है जिसके लोग कहते हैं कि य नीतिग्रथ दो हजार वर्ष पहले जो और्वे जीवित थी, अुनके बनाये नहीं है लेकिन अुस दूसरी और्वेके बनाये हुअे हैं जो अंक ही हजार सालके पहले जीवित थी। अस्तु।

और्वेयार निरी साहित्यकर्मी नहीं थी। अुनके जीवनकालमें ही राजाओने अुनके राजनीतिक ज्ञानको मानकर अुनको राजदूत बनाया था। यही नहीं, वे बड़ी धार्शनिक भी थीं। योग सिद्धिकी महिमासे अुगुहाने अपन

* बळ्ळुवर—अिमी लेखके अंदर पीछे अुनका जिन आता है। यू० अं०० अं०० ने अिनके ही कुरलका अर्धेनी अनुवाद करानेकी योजना बनायी है।

शरीरको रोग व जरामे बचा लिया था और वे अुनी आधुनक जीवित रही।

‘मारारं कोळहं मनतुतमंदवकाल्
ओशानेवका दृदुम् अुदुद।’

(शब्दार्थ . मारारं—दोहरहित कोळहं—सिद्धात, मनतु—मनमें, अमंदकाल—रहें तो अुदुदु—शरीर, ओशाने—भगवानको, कादृदुम—दिखाअेगा।—अनुवाद)

अर्थात् हृदयमें पवित्र, निर्भय, कपटरहित, दोष-रहित, द्वेषहीन भावोको स्थित कर त तो शरीरका दैवीपन यानी न मिटनेका भाव (अभयता) अुदुमाभित होगा। यह कुरल (दो पणितयोवाश पद्य) ओर्वेका है। ये स्वय अिममें प्रकटित अुपदेशके अनुसार अपना जीवन चला रही थी यह बात अुनके जीवन चरित्रके अध्ययनसे स्पष्ट मातुम होती है।

अेक देशकी सभ्यताका अुग देशका साहि व ही श्रेष्ठ प्रतीक है। अुदाहरणके तोरपर अंग्रेजी सभ्यताका शेनमयिपर प्रभृति कविताकी साहित्यिक कृतियाँ मानदण्ड समयी जाती हैं। मेकाठेने अंक बार कहा भी था कि हम चाहे भारतपर शासन करनका अधिकार त्याग दें दोससियारको छोडनेको कभी तैयार नहीं होंगे।

अिस तरहकी गर्वोक्ति हम कम्बुके नामपर कर सकते हैं। कुरलके रचयिता तिरुवळ्ळुवर, गिलप-धिकारके कर्ता अिल्लगोवडिट्टु और अंमे ही अन्य महानु-भावोके नामपर कर सकते हैं। लेकिन अिन सबामे अुत्रिक हम और्वेयारपर गर्व कर सकते हैं जिनकी धार स्वय कम्बत तथा तिरुवळ्ळुवर आदिने भी मानी थी। अगर कोअी हमसे पूछ वेडे कि आप तमिलनाडुकी अग्य सफलिको खोने तैयार होंगे या और्वेयारके रचित ग्रथोको? तो हम नि यकोच कह सकते हैं कि अग्य सफलितमे रचित रहना कोअी बडी बात नहीं है, अुमका फिर

अपने प्रयामसे तमिलनाडु निर्माण कर सकता है। लेकिन और्वेयारके प्रथम पंमे नहीं है। हम अन्ह खोनेको कभी तेंवार नहीं होते। वे दुबारा पैदा नहीं किये जा सकते। अुनके प्रथम हमारी सबसे श्रेष्ठ पुन दुर्लभ संपत्ति है। क्या यह हमारी देवियाके लिअे फ़रकी बात नहीं है कि तमिलनाडुकी मन्मताका अेक मात्र श्रेष्ठ प्रतीक अुसकी अितनी बड़ी दीपन, अितना अुज्वल अमर दीप अेक तमिल महिलाकी कृतियां हैं? हाँ, यह निर्रं तमिल महिाअके लिअे कीतिवर्षकही नहीं है, बल्कि ये कृतियां अुनके लिअे रक्याके विधान भी हैं। अुन देवकी स्त्रियोंको, अिस देशमें और्वेयार पैदा हुआ थी, और चूकि और्वेयार भी स्वयं महिा थीं अुस वजहसे हमारे देवकी स्त्रियाकी कियो भी पुरपसे कम समनवाली कह नहीं सकेगा, बेघडक। अिन सबधमें अिन्डेडका अुदाहरण लीअिअे।

वही अेक दल है जो स्त्रियाकी पुरपोंके नमकप मानने सपा अुनको पुरपोंकी बराबरीके अधिकार देनेके विषयमें है। अुनकी दलील है कि स्त्रियां प्रकृतिसे ही पुरुषनि कम समपवाली हैं। अिसलिअे वे घरके अदरके काम-काज करनेवाली सफल गृहिणी बन सकती हैं लेकिन बाहरके सार्वजनिक क्षेत्रामें बुद्धिके बलपर आधारित कार्य निबाह करनेकी शक्ति नहीं रखती। अिन दलीलकी पुष्टिमें वे कहन हैं कि पुरुषोंमें अंने अेक कवि संग्राह शक्तिपर पैदा हो सका वंसा क्या स्त्रियोंमें अेक कविपित्री पैदा हो सकी है? जो अुनकी बराबरीकी कविता कर सकी हो? पैदा नहीं हो सकी। क्यों? क्या अिस बातसे साक साबित नहीं होना कि स्त्रियां प्रकृतिसेही पुरुषनि कम बुद्धि रखती हैं?

तमिलनाडुमें यह दलील बारा नही हो सकती। बकि अुसके विपरीत यहाँकी देविया यह दावा कर सकती हैं कि और्वेयारके समान प्रथम रचनवाला कोश्री पुरुष कवि यहाँ पैदा हो सका है? क्यों पैदा नहीं हो सका? क्या अिस बातसे यह स्पष्ट लक्षित नहीं होता कि पुरुष अिनमेंसे प्रकृतिसेही कम बुद्धि रखते हैं?

महिमागालिनी दशनिा और्वेयारका रचा हुआ 'और्वेयारुण्ड' नामक अिन प्रथम तमिलनाडुके योगी

तपा सिद्धोने अुपनिषद्गत माना है। योगविद्या तथा भोवप साम्नाध्ययनमें यह प्रथम आवश्यक शास्त्रोंमें अेक माना जाता है। अिनमें अेक और विशेषता है। साधारण तथा योगानुभूतिके सबधमें लिखते बसत लोग कठिन तथा अप्रकलित शब्दोका प्रयोग करते हैं और दूरूह तथा अटिल वाक्योंमें भावोकी आवड करता अनिवापं तथा आवश्यक नमत्तकर काम करते हैं। लेकिन और्वेयारका प्रथम बहुत ही साक, सुलसो हुआ रीतिसे लिखा गया है और सब लोग अुसे आसानीसे समन सकते हैं। "अन शब्दोंमें पूर्णरूपसे नाव समपाना" कविताकी प्रमुख विशेषता है। अिस क्रियामें और्वेयारकी आसाधारण दक्षता प्राप्त थी। अलावा अिसके, शनीर विषयोंको सबके जाननेयोग्य सुलनाकर लिखना देवदत्त प्रतिभासे ही हो सकता है, यह मामूली कवियोंके लिअे साम्य नहीं है। वंसा स्वयं बड़े-बड़े विद्वान कवि भी मानत हैं। अिस अदनुत क्रियामें नी और्वेयार बेजोड थी।

पुरुषार्थ यानी मनुष्य जन्मसे प्राप्य सर्वश्रेष्ठ फल चार हैं। वे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं। अिनमें मोक्ष मन और वाकुसे परे है, अत वर्तमानगीत देखकर विश्वरूडुवरने अुस पुरुषार्थका विस्तार अपने प्रथम में नहीं किया। वाकी तीन पुरुषार्थोंका ही विस्तार अुसमें पाया जाता है। चौथे पुरुषार्थका साधन जो भक्ति है, अुसपर प्रथके गुरुमें सिर्रं अेक अध्याय है। कियो कारण वह प्रथम 'मुपपाल'के नामसे (तीन पुरुषार्थवाला प्रथम) प्रसिद्ध है और स्वयं वरूडुवरको "अुनपालिन् नारतल मोविदान्" (तीन वर्गोंके अदर चार वर्गोंका विस्तार देनेवाला) कहते हैं। अेक हूवार तीन सौ तीस दो पवितावाले पदोंमें अुन्होंने तीनों पुरुषार्थोंका सम्यक विस्तार बतलाया है। यह अदनुत कार्य समसा जाता था। अिसको देखकर और्वेयारने चारों पुरुषार्थोंको अेक ही वेग्वा (venba-चार पवितावाला पद)के अदर रखकर गाया है। वह अनीना पद यों है —

ओरुत्तरं, तीविने विट्टीट्टलपोदन्, अश्रुजानुदन्
कारुत्तरुत्तु कदत्तोप मिन्-तादरु
पट्ट दे अिन्बं, परने तिनैन्दि अ्मून्
विट्टे दे पेरिन्बोडु ॥

दावार्थं यो हः—

शीदल-दान करना। अरं-धर्म है। तीर्थिन-अन्धाय।
विट्ट-छोटकर। ओट्टल-घनाजंन करना। पोख्ल-अर्थ
है। अंग्रप्रान्त-हमेसा। काबलिखर-प्रेमी युगताता।
कषत्तोहमित्त-अंक मन हो। आवरयु पट्टु-आनन्दित
रहना ही। अन्ध-काम है। परने निरंभु-जन्म
स्मरण कर। अम्भुन-अन तीनोंका। विट्टदे-भ्रुमर्ग ही।
पेरिख्य शीद-रमानन्दधाम है। —अनु०

अिम वेप्राका भावार्थ क्या है ?

शीदलका अर्थ दृष्या करना या दान करना है
यानी लोक हितया अपना तन मन-धन अन्तर्ग
अपना धन गच्छंकर, वास्तुशक्ति को खर्चकर, अपने शरीरसे
धन करके दूसरोंका कष्ट दूर करना और अन्नका सुख
पहुँचाना है। कुछ लोग धन देनेको ही दान करना
समझते हैं। वह गलत है। दूसरोंके हित जान देना
यया दान नहीं है ? किसी बीमारका अिलाज कर
स्वस्थ करना भी दान ही है। किसीको विद्या देकर
स्वय अर्थ तथा अन्य आवश्यक स्वायत्तिकी कामानेकी
शक्ति पैदा करना क्या दान नहीं है ? हाँ, प्रतिदानकी
अच्छा न कर दूसरोंका कष्टनिवारण करना हितपूर्ण
कोश्री सहायता करना भी दानके अन्तर्गत ही आया।
यही मनुष्यका अह लोकमें धर्म या कर्ण्य है। अनु०।

बुरा रास्ता छोडकर बुद्धिके परिश्रमसे हो चाहे
पारिरीक परिश्रमसे जो खाना-प्याडा आदि आवश्यक
वस्तुअं, सवारियाँ जाभूषण, बाज प्रतिमाअं आदि
आरामकी या विनादकी वस्तुअं और अिनके अुपभोगके
लिअे साधनके रूपमें रहनवाले घर, बाग वगैरह तथा
अिनके अदल-बदलका सागरण माध्यम रुपया नोट,
मोहरे आदि वस्तुअं हं व सग धन या अर्थ है। सद्पथसे
जाकर अर्जित अर्थ ही हितकारी है। बुरे रास्ते अल्प-
पार कर कमाया हुआ धन अर्थ है। अिमलिअे
ओषधे अपनी कर्ण वाणीसे बताया कि बुराश्री छोडकर
पैदा किया हुआ धन ही अर्थ है। बुरे जरियसे कमायी
पैदा बुराअियोंकी खात है।

अथ 'काम (अिय गुण) की ओषधे देवीकी
व्याख्या अनुपम श्रेष्ठता किये हुअे है। प्रणय मुखको ही
पूर्वजान मुख ' शब्दम निदिष्ट किया है क्योंकि भ्रुसीको
श्रेष्ठ मुख माना जाता है। अर्थार्जन तथा धर्मावतनके
शिया-तलापोमें ही यत्र-तत्र मुख प्राप्त ह्य सकत है।
तो भी वे सब दृग्द प्रणयके अपागवत् हं, अत वे कामसे
नामके योग्य नहीं हैं। मनुष्य गुरुचिपूर्ण पदार्थ खानेमें,
सरस गाना सुननेमें तथा अचूत पुरोही सुगव सूदनमें
जा अिद्रिय मुख प्राप्त ह्य सकते हं अुन्त पानके अिअं
बहुत पयाम करते हैं। शीतिता मुख, अिन्कारका मुख
आदि असायक मुणोके मवादनेके लिअे भी लीग दिन रात
परिश्रम करत पाय जात है। ता भी बटान अिन सगको
गीण या अन्ध मुख समझकर कामसे अनगत अुनकी
गणना नहीं की है। कौन अधिकार यद् मव अर्थके
अतर्गत दरसाया गया है। अिद्रिय मुखोंमें मीठी तथा
सुस्वादु वस्तुओंका खाना, पुरोही सुगवका मूषना
आदिसे प्राप्त मुख अल्पाय होने हैं और वे मिर्ष पारिरीक
रह जाते हैं। अुनस आत्माको कोश्री मुख नहीं मिलना।
अिसी कारणसे बडान अुनका कामसे अनर्गत नहीं
लिया है।

कण्डु केट्टु अण्डु अयित् अरंरिय अिध्वं-दु

श्रीणो डिळ् कण्णैयुळ यत् तिक्कळुवन्ना कचन है।

पानी देखकर, गुनरर चाहकर, एभकर अिन
पाको कियाआसे जो मुख प्राप्त किया जा सकता है वह
अिम नमकदार ककणवाली रमणीके पाग है। यही
अुमका मतलब है। शरीरकी सभी अिद्रियोंको ही नहीं,
मन तथा आत्माको भी यह द्रव्य प्रणय अक साथ मुख
समूह कर सकता है। अिसी वजहसे यह प्रणय मुख
सर्वश्रेष्ठ मुख माना गया। अत जत्र एहार पूर्वजान
' चार पुरुषार्थ ' यानी मानवी जन्मके फलस्वरूप पाये
जानेवाले प्रयोजनाकी वान कत्री तत्र प्रणय मुखको
'काम क नामसे पटचनयाया। ओषधे देवाधारने भी ह्यको
अपनी अिम वाणीम अनुगृहीत किया कि यत्री मुख
सर्वश्रेष्ठ मुख है। अुमे अवयममेव भागना है। देवीने
अुसे कंसे भोगना है, अिमका विवरण भी अपनी मीठी
वाणीमें सरय तमिद् भाषामें व्यक्त किया है।

बूढ़ेन कहा है—

नर श्रेष्ठ नारीपर तथा नारी नरपर मन, बक्
तथा शरीरसे प्रेम करे—प्रवृत्तिमय, ज्योत्स्न्याश्रित और
बुद्धोत्तर वरिष्ठ होमेवाला प्रेम करे, दोनों मनने
श्रेष्ठ होकर परस्परश्रित सुख भोगें वही “काम” है,
सच्चे अर्थमें सुख है। अस्तु।

अब मुक्ति क्या है ?

औरतको हृदयमें स्थापितकर, अहंकार-ममकार
त्यागकर, अधिबोध प्राप्तकर, सुपर्युक्त नीला पुत्रपार्थीमें
स्वयं छोड़कर रहनेकी स्थिति ही मुक्ति है। अिम
तरहकी “मुक्ति” प्राप्त करनेसे कोश्री अन्य तीन पुत्र-
पार्थीके बचानेमें अपनी जिम्मेवारी छोड़कर शिवाहीन
बालसी बन जायेगा अंसा समयता गलत है। जबतक
जानमें जान है तबतक प्रवृत्ति किसीको चूप तथा
निष्कर्मी होने नहीं देती। कोश्री भी ही असे मनस
हो तनसे ही चाह वाकने, काम किये बिना हाथपर हाथ

घर बैठना श्रेष्ठ बचपके लिये भी समव नहीं है।
“सहस्रत गुणके कारण हर काशी काम करनेकी
मजदूर है।” यह कृष्ण भयवानने स्वयं गीतामें कहा है।

और भी अधिबेदाके जयंति कश्ये वाक्य या पद
अदृष्टकर अज्ञकी महिमा शानी ही ता कश्ये पुत्र-
लिखनी पढ जायेगी। वह काम कभी बादकी होगा।

तमिलनाडकी स्नेह तथा आदरकी याती बहनों!
अिम तमिलनाडके गौरवकी बनाये रखना आपके
अुत्तम कार्यों तथा प्रयासोंपर ही निर्भर है। ----

आज मानव जातु प्रचंड पवनके समान बहने-
वाली अुपल पुपल, परिवर्तन, अति आदिके कारण
प्रलयनर्तन् करनेवाली लहरोंके मध्य पंखी टूटकी नौकाकी
मार्ति धक्के खा रहा है, धपडे खा रहा है। अल्ट-
पुल्ट होने जा रहा है, बहकर खाकर छटपटा रहा है।
औरत आप लोगको अपनी विद्या-शक्तिसे तथा परिश्र-
वलेसे असे बचानेकी सामर्थ्य प्रदाव करे।

—(अनुवादक : श्री विद्वान् ति. शेषाष्टि. मडुरा)

अग्निसे तेजस्वी वैदिक प्रार्थना—

“अग्नि मेधा अग्नि प्रज्ञा मय्यग्निस्तेजो दधातु
अग्नि मेधा अग्नि प्रज्ञा मयोऽग्नि अग्नि दधातु,
अग्नि मेधा अग्नि प्रज्ञा अग्नि सूर्यो भ्रात्रो दधातु,
अग्नि अग्नि तेजस्तेनाह तेजस्वी भूयामस्,
अग्नि अग्नि वचस्तेनाह वचस्वी भूयासम्
अग्नि अग्नि हरस्तेनाह हरस्वी भूयासम्।”

अर्थ

अग्नि मुझे बुद्धि, विचार-शक्ति दे। अग्नि मुझे बुद्धि विचार शक्ति और सामर्थ्य दे।
सूर्य मुझे बुद्धि विचार-शक्ति व तेज दे। हे अग्नि, मुझे अपने तेजसे तेजस्वी होने दे।
अग्नि विद्ययी नेत्रसे मुझे महान बनने दे। अपने मत्पिताको सम्म कर देनेवाले तेजसे
मुझे भी अपनी मत्पिताको सम्म करनेवाला बनने दे।

☆☆ तारे ☆☆
★

: श्री "भृग" तुपकरी :

ये तारे ।

बेचारे तारे ।

दिनके द्रुत रातकी दुनिया
में फिरते हैं मारे मारे ।

ये तारे ।

गत संभवकी याद संजोकर अपने दिलमें

और थके पथीसे, पथमें

बैठे हैं मन मारे ।

तारे बेचारे ।

अिनके णस ज्योति हैं लेकिन

अिनके पथवर अंधकार हैं ।

अिनका बल अिनका हित करनेमें निष्फल हैं ।

टिम् टिम् टिम् टिम् जलते जाते

मनहारे मन बेचारे तारे ।

काली काली तमकी कारा

अिनको कैदी बना रही हैं !

किसने छलसे

अिनके यलके

टुकड़े-टुकड़े कर डाले हैं ?

अंधकारके काले पजेमें प आकुल

अलग अलग हैं ।

लाचारीमें अंधकारमे हार चुके हैं ।

ये बेचारे,

टिम् टिम् तारे ।

+ + +

है, सचमुच ये अंधकारसे

हार चुके हैं,

अिमीलिथे हैं शायद अिनकी

प्रतिभा क्षण्डित

बिखरी बिखरी,

रा भा ६

टूटी-टूटी,

और नहीं हैं अिनके पथपर

हल्की सी प्रकाश रेखा भी ।

हो सकता है,

अेक दिवस वो आवे धरती

का आकाश

अिनके जगमग प्राण तोड़ ले

और गिरे पं

अूचाभीसे टूट टूटकर

नीचे, पहले किसी सभदरकी गोदीमें

या कि किसी अूचे पर्वतकी

कठिन कूर, निर्मम चट्टानोके सीनपर

अपने सिरकी वे भारें ये,

मर जावे ये ।

पट जाअगी अिनके शवसे

कोअी छोटी मोटी लाओ,

और सदाको नीलाम्बरकी

सूना कणके चले जावें य ।

अिनके प्राण

पलट बनकर

नील गगनमें समा जावेंग ।

य धरतीके बुद्धिवादिघोके अगुआ ह,

बिद्वंदर अंसे ही तममें जल जलकर,

घुल घुलकर,

घुट घुटकर अिक दिन

मर जाते हैं अिस भारतके ।

अिसी तरह तो लय ही जाते

हैं अूनके भी जगमग प्राण । ।

+ + +

किन्तु अंक बिन यह भी होगा ।
 चाँद चाँदनी लिये भुगेगा ।
 जिसके लिये अँघेरेमें ही
 की है अिनने कठिन तपस्या ।
 अँघकार-साग्वाग्म्य निटेगा ।
 चाँद भुगेगा ।
 काला पर्दा सितली कागज बन जायेगा ।
 स्निग्ध किरणकी शीतल अँगुली
 पँकेका तन मन छेदेगी ।
 तब यह आहत अघकार
 भू-स्रुष्टित होगा,
 पग पगपर सर धर लोदेगा ।
 छोटे छोटे झाड-झड्डुल्लों
 तकके पँर पकडकर,
 रोकर,
 शरण माँगनेको मचलेगा ।

पत्ती-पत्तीसे करणाकी
 भील मांगता हुआ फिरगा ।
 पर हर पत्ती किरण-बूधमें नहा-नहाकर
 झूम अडेगी,
 ओ, जिसके हित नग्न चाँदनीकी मधु बूँदें
 बाध बनेंगी ।
 जिनपर यह छामा रहता था,
 अुनके धरण पलारेगा यह ।
 पछतायेगा,
 रोयेगा,
 आँसू ढालेगा ।
 अूस दिन अिन तारोंके मनकी शीतल ज्वाला
 शुभ्र चाँदनी बन बिकसेगी,
 नयी ज्योत बनकर चमकेगी ।

दान दो

: श्री प्रो. मित्तल :
 भूमिका दान दो ।

जग प्राणके लिये,
 शुभ दानके लिये
 सुख मानके लिये
 अिन्सानके लिये

आज बलिदान दो ।

मनुजता दीन है
 मनुज सुख हीन है
 घोर दुख लीन है
 तडपती मीन है

स्नेह-जल दान दो ।

जगत बन जाये नव
 मधु-भीत गाये नव
 दुख दैन्य जाये सब
 मनुज बन जाये नव

वह सुख शान दो ।
 भूमिका दान दो ।

युगकी पुकार है
 स्वार्थकी हार है
 मनुज अनुदार है
 स्नेहकी धार है

प्रणयका गान दो ।

कोओ न दीन हो
 मनुज न हीन हो
 स्वार्थ न आसीन हो
 जगत सुख लीन हो

मनुजको मान दो ।

बेवसी

: श्री 'बंचल' :

अब तक मेरा समय न आया ।

आकुलता ही रही, तृप्तिका मेरा समय न अब तक आया ।

दिलमें अगणित आकाव्याओं पर न अुग्हे पूरी कर पाता,
काँटोकी नोकोपर जीवनके फूलोको जड़ता जाता,
आग वचनाकी तन-मनमें जिसको मैंने अब तक गाया ।

मेरी भाग्य-क्रान्तिका सोया है प्रतीक किस सूनेपनमें,
तम-अभिसप्त पन्थ जीवनका जा मिलता है भग्न विजनमें;
अब तक मैंने पथ-दर्शक आदर्शजयी नक्पत्र न पाया ।

तृपित, अतृप्त प्राणका पछी जब अड़नेको पर फंलाता,
चाँद कल्पनाका तब सहस्र दुखकी बदलीमें छिप जाता,
रह जाता असफलताका अवशेष कपुट्टव जीवनपर छाया ।

साथ चले थे जो साथी वे निकल गये सब कितने आगे,
पडा रह गया मैं छलनामे गतिके झशावात न जागे,
क्यो मेरी विश्वास-शिखाने सपनीका छल नहीं मिटाया ?

विद्ध अभावोकी पीडामें जलता है मेरा कटु जीवन,
बलका अंसा स्रोत नहीं जो अपराजित रहने दे तन-मन,
मूक विवश प्रतिहिंसा मेरी दग्ध अह मेरा भरमाया ।

हँसते मुखके पीछे मेरा मुरझाया दिल रोता रहता,
मदमें भूले जगके हाथो अपमानोकी ज्वाला सहता,
लोहू अपने ही अरमानोका पीती रहती यह काया ।

अब तक मेरा समय न आया ।



पूर्ण हो पायी नहीं बुनकी कहानी !

• श्रीमती शांति मेहरोत्रा :

प्रातः आया विद्वर्मे जीवन नुटाने
ताप आया शीतपर सौरभ बिछाने
वायु आयी कुजका शृंगार करने
रश्मि आयी पथपर मृदु हास भरने

किन्तु कुछ ही दरपर दृग्हीन तारा टूटता बन रातकी अन्तिम निशानी !
पूर्ण हो पायी नहीं बुनकी कहानी !

हो गया मध्याह्न गति यक-सी गयी कुछ
चर-अचरकी चेतना रक्-सी गयी कुछ
खिल-खिलाती ज्योतिकी कुछ रीति बदली
मुस्कराती प्रीतिकी कुछ नीति बदली

रत्न न अपनेमें नकी मकरद भयुकी डालने टूटे नुमनकी सावधानी !
पूर्ण हो पायी नहीं बुनकी कहानी !

सांझकी पायल बजी जब नौडपर आ
शात कोकिल स्वर हुआ जब पौडपर आ
रात जागी पक्ष तमने फ़फ़डाये
चांद आया और तारे मुस्कराये

दिव्य रविकी अग्नि-सी बुज्ज्वल निखाने, रातकी धुधली प्रभासे हार मानी !
पूर्ण हो पायी नहीं बुनकी कहानी !





काश्मीरी

लक्ष्मीशरीके वचन

[प्रियके सार्वभौम नन्दनन काश्मीर देशकी राजनगरी श्रीनगरकी केशर-क्यारियोमे सदा सुरमित पम्पुर नामक ग्रामकी कविलग्राणी रगौया कल्पीका नाम जैसा कौन काश्मीरी भाषाल-वृद्ध हिन्दू सुखलमान है जो नहीं जानता ! जहाँ वह सनोंकी कोटिमें सिरमीर है वहाँ वेदान्तवेद्य रहस्यगदरी सर्वोत्तम कविविधो भी हो गयी है । अमुकी जीवनभरकी आध्यात्मिक साधनाने ही अमुके देशने अुमे “ लक्ष्मीशरी ” क पदपर आमीन कर दिया । भरतजन अुमे योगिनी, त्रिकाक्षजा, कहते हैं । दुर्भाग्यकी बात है कि अुमकी अुक्तिर्योका समग्र समग्र समुचित रूपमे अथ तक किमी प्रकाशकने प्रकाशित नहीं किया । सत लक्ष्मीशरीकी अुक्तिर्योके भाव गांभीर्यमें और अर्थ-मर्ममें काश्मीरी भाषाने आधुनिक प्रकांड पंडित भी गहरे पानी पैठनेका प्रयास करते हैं, पर नहीं पहुँच पाते अन्तस्तलमें । नीचे लक्ष्मीकी कुछ अुक्तिर्यो दी जाती हैं । ' राष्ट्रभारती ' क प्रेमी पाठक काश्मीरकी केशरका आध्यात्मिक सौरभ ग्रहण करें ।

—सम्पादक]

छट्ट इवह् द्रायस लो छरे
छाडान मुस्तुम छन कयोह् राय ।
बृष्टम पण्डित् पननि गरे
सुप म्य रट्टमस नकयतुर साय

शब्दार्थ—

लल्ल- (लला या ल लेखरी) इवह् द्रायस-म
निकली लो छरे-अनुरागमरी, छाडान बूढ़ने,
मुस्तुम-अस्त हुआ छन कयोह् राय-दिन बिवा रात,
बृष्टम-देरा, पण्डित्-त्रदशास्त्र-गारगत यहाँ ब्रह्म
अभिप्राय है, पननि गरे-अपने घरमें सुय-वही म्य-मन
रट्टमस-पकड़ा, नकयतुर साय-नयनन मूर्त ।

भाषार्थ—

लला अपनेही अत वरणमें ब्रह्मके निवासने
सम्बन्धमें बोलती हुयी कहती है कि मैं ब्रह्मानुराग भरी

अुमकी वाजम घरने निरली । दिनचे बाद रात और
राताच बाद दिन बीते पर कहन भिने । अतको मने
जब अपनेही हृदयमें देगा तो अुगीको गुम पडी और
गुम मूर्तन समझकर अुम प्राप्न किया ।

बसाहम कदमत वमन् हाचे
प्रजल्योम दीपत ननेयम जाव
अम्बुम प्रकाश न्यवर छट्टम
गट्टिट्टम त कदमत वप

शब्दार्थ—

बसाहम-दवानोकछवाम कदमम्-बिया, वमन
हाले-धोकनीसे प्रजल्योम दीप-दीपकना प्रदान हुना,
ननेयम जाव-जात मानू हुअी । अम्बुम प्रकाश-अदरना
प्राग न्यवर छट्टम-बाहर छाट लिया । गट्टिट्टम-परमें
पकडा, कदमत वप-हाथमे पकडा ।

भावाची—

योगाभ्यासकी विविधे प्राणायामो द्वारा मेरे
अन्दरका दीपक ज्योतिर्मय हुआ । अमुत्से अन्धकार दूर

हुआ जिसके परिणामस्वरूप वह ब्रह्म मूत्रे अपनेमें ही
मिला और असे में दृढ़तापूर्वक पकड़ बैठी ।
(काश्मीरीसे अनुवादक— श्री प्रेमनाथ जाड़)

मराठी : संध्याकाळ

: श्री म. म. देशपांडे :

संध्याचा श्यामल हात फोडळा
पकडू पाहतो
नदीकांठचा अडता बगळा !
पुसट पुसट क्षितिज-रेषा
मोलनामघली—
दोन जोवाची अस्फुट भाषा !
दिवस मिटतो हळूच पापणी
पकून भागून—
गालांत हासते शुभ्राची चांदणी !
क्षपासणानें दाटतो काळोख
जुनी एखावी—
मनात सारखी घोळते ओळख !

मज कळतच नाहीं

: श्री आ. ना. पेडणेकर :

मी न राहिल्यें माझी
तो वेळ कोणती
मला न मूर्छि आठवते
काळास विसरतें
पाउल बळतां तेंचें...
पाउल बळतें जेचें
तें स्थान कोणते
मला न ये ओळखता
तें पुसटून जाने
त्याला पाहत बसतां...
ज्याला पाहत बसतें
तो कोण कोट्या
येईल जसें सागाया ?

हिन्दी : संधिकाल

: अनुवादक— श्री अनिलकुमार :

हाथ सांतका मुहुल सांवाला
छुआ चाहता
नदी किनारे अडता बगुला !
धुंधली धुंधली रेल विपत्तिजकी
मिलनपर्वकी—
दोन दोनोंकी अस्फुट भाषा !
दिन धीरेसे पलक मुंदता
थके पथक-सा—
हँसनी है गालोंमें पौरी दुन्न तारिका !
घिरता जाता हरपल घना अंधेरा
बेक पुरानी—
गूजा करती है मनमें पहचान !

मैं न समझ पाती हूँ

: अनुवादक— श्री अनिलकुमार :

मैं न रही अपनी ही
वह समय कौनसा
नहीं स्मरण है कुछ भी
काल नुल्लुकी
पाँव अंधर जब मुँहते...
जिधर पाँव मुह जाने
वह स्थान कौनसा
पहचान नहीं पाती हूँ
वह मिट-मा जाता
असे देखने रहने...
जिसे देखती रहती
वह कौन कहाँका
कैसे तो बसा मरुंगी ?

२५ जेणे जीवनमा विरह अनुभव्यो नथी, जेणे
जीवननी मीठास पण क्यारे अनुभवी छे ?

२६ तमे कलानी बात करो छे बा ? हा, हा,
समझ्यो । खेवी वस्तु, जेने लोको जीवनमायी बहार
काडे छे अने प्रदर्शनमा जोवा जाय छे । बेज कला के ?

२७ तु आवजे अेम में क्यारे बह्युं ? तु न आव-
वानो संकल्प करी राखजे ।

२८ जे मजा सग्राममा छे ते मजा खोत्रीने मूर-
खात्री विजय बाच्छे छे ! बाच्छवा दो विजयना जेवो
महान पराजय जोत्रीने कोण नथी पत्ताय ?

२९ मारी वाट जोवानो धीरज पासे, तारी वाट
जोवराबवानी शक्ति नमे अे तो मारा जीवन-सग्रामनी
पायो छे । तु आवजे अेम विनति करीने हूं वात्री जीव-
ननी पायो खोदी नाहूं ? तु न आवती, न आवती,
कलानी अधिष्ठात्री न आवनी ।

३० में तो औरर पासे अेटलुज भाव्युं हतुं. हमेगा
आनन्दी- मोत्रीलु अेवु हृदय न आपवो, थोडु घणु
विपादमय अन्तर पण आरजे । औरवरे स्पष्ट ना पाडी ।
'अन्या तारे जीवननी अमून्य रस 'विपाद' जोत्रीअे
छीअे ? अे ते क्याय मंगानी हने ?- अने वट्टी अे माग्ये
मळे पण खरो ? अे तो तारा जीवनमपननुं रल छे ।
अने ते तुज गोधी लेजे । जेने जेने अे रलन, आनद
सागरने तल्ले थो मळगुं छे, तेने जीवनमर बीजो कात्री
वाछना रही नथी: अेमने मन अनरनी घेरो अवाज अेज
जीवनसर्वस्व बनी रहेल छे ।

३१. विलासने कला मानो निधिप्रदाने आनन्द
गयो, असमानदाने गौरव लेखो व्यवहारने 'धर्म' समजो ।
चातिना बीज नमे रोपी चूकदा हवे मात्र अेना फलनीज
राह जूधो ।

२५ बिसने जीवनमें विरहका अनुभव नहीं
किया, वह जीवनकी मिठासको भी कब अनुभव कर
सकेगा ?

२६ क्या तुम कलाकी बात कर रहे हो ? हा-
हां समझ गया ! खैसी वस्तु, जिसे लोग जीवनमें
बाहर निकालने हैं और प्रदर्शनोंमें देखने जाते हैं ।
क्या यही कला है ?

२७ जो आनन्द संग्राममें है, उसे खोकर मूल-
लोग विजय चाहते हैं । चाहने दो । विजय जैसी महान्
पराजय देखकर कौन नहीं पछताया ?

२८ मेरी प्रतीक्षा करनेकी धीरताके आगे, तेरी
प्रतीक्षा करवानेकी शक्ति क्षुब्ध जानी है, यही तो मेरे
जीवन-संग्रामकी आधार-शिला है ! तू आ जाना अंसी
प्रार्थना करके मैं क्या अपने जीवनकी आधारशिला खोद
डालूं ? नू मत आना, मत आना, हे कलाकी अधिष्ठात्री
मत आना ! !

३०. मैंने तो अश्वरसे यही मांगा था— मदा
आनन्दमय, भूमिमय हृदय मुझे मंत्र देना, थोड़ा-सा
विपादमय अन्तर भी प्रदान करना । अश्वरने स्पष्ट
नकार कर दिया— अरे मूलें, तुझे जीवनका अमून्य
रस "विपाद" चाहिये ? क्या उसे भी कोशो मांगता
है ? और वह भी वही मांगनेसे मिल सकता है ? वह
नो तेरे जीवनमयनका रस है । उसे तू स्वयं खोज
लेना । आनन्द-मागरके तल्ले जिन-जिनको भी वह
रस प्राप्त हुआ है, उन्हें जीवनमर अन्य कोशो आवाक्या
नहीं रही है । अूनकी दृष्टिमें अन्तरकी गभीर आवाज
ही जीवन-सर्वस्व बन जाती है ।

३१. विलासकी कला समझकर, निधियताकी
आनन्द मानकर, असमानताकी गौरव ममसकर और
व्यावहारिकताकी धर्म मानकर, आदिके बीज तो तुम
वो ही चुके हो । अब नो केवल तुम्हें अूनके फलकी
प्रतीक्षा करनी होगी ।



[सूचना—‘शाब्दभारती’ में समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियाँ ही सम्पादकके पास आनी चाहिये।]

हिमालय-परिचय. लेखक राहुल साहूपायन, मुद्रक और प्रकाशक—जॉर्ज जर्नल प्रेस, अिलाहाबाद। मूल्य छाप नहीं गया।

हि दीमें शायद भौगोलिक साहित्यकी कमी नहीं है परन्तु साहित्यिक भूगोलकी कमी सदा छटकती रहती है। राहुलजीकी नयी पुस्तक (अने पुस्तक-माला कहना अधिक रायके होंगा क्योंकि अभी हिमालय-परिचय (२) कुमाभू और हिमालय परिचय (३) .. नेपाल, प्रकाशित हो ही रही है इस कमीकी पूर्तिमें अक सराहनीय प्रयत्न है।

अस पुस्तकमें गडवालके इतिहास, भूगोल, भूमि, जातिया, प्रथाओं, भूत-च और खनिज, सामन, धम, जातिया, आकृति, वेशभूषा, आजीविका, यातायात मचार, तीर्थस्थान आदिका ज्ञानकोपात्मक चित्र खीचनकी लेखकने पर्याप्त सफल कोशिश की है, परन्तु कर्तव्य बड़ा रखनेके कारण चित्र अतना अच्छा नहीं जुमर सका है जितनी अम्मोद की जाती थी। अस कमीकी लेखकने अपने प्राक्कथनमें स्वीकार भी किया है। और स्वीकार करत हुअे आनेवाली पीढीको अस दिशाकी ओर बढ़नेके लिये चुनौती भी दी है, जो पर्याप्त स्वास्थ्यप्रद है।

असमें कोअी शक नहीं कि पुस्तक इसके बाजुद भी अुपादेय है, सुन्दर है, विद्विष्ट है पर अक बात थोडी सी छटकती है, वह यह कि नीलीमें अुन्होंने रा भा ७

अिसी विषयकी अण्डेजीकी पुस्तकको नरुत्र को है और जिसका फल यह हुआ है कि भाषा कती कही टूटनी सी है, अुसकी सुन्दर मखलाविशुल्लित सी हो जाती है और राहुल भाषाका अपना निवार पूरी तरहम सामने नहीं आता है। अस कमीका भान अस विषयकी योरोपीय भाषाओंमें लिखी पुस्तकके देखनसे अत्रिक अच्छी तरह होता है।

तीसरी कमी लेखककी न होकर प्रकाशक या मुद्रककी है। जो चित्र अिममें दिये गय हं अुनके अक अच्छे नहीं बने। अस विषयकी पुस्तकमें जहाँ प्राकृतिक सौंदर्यका विसद् वर्णन है जो चित्र दिये जाव वे साफ तरीकेसे प्रकाशित हा, यह परपावश्यक है।

अगले पाँच साल: लखक जाचार्य जी. अेम पयिक, प्रकाशक—मेसर्स आम्पाराम अण्ड सभ कश्मीरी गेट, दिल्ली—६, मूल्य—पाच रुपय।

प्रस्तुत पुस्तकका यदि मैं पूर्णत पलायनवादी कहू तो शायद अयुक्ति नहीं। यह सामयिक राजनीतिक पत्रकारिताका पुस्तकरूप, सो भी श्री जी० अम० पयिक जैसे अनुभववी लेखककी कलमसे, जिनने अतलक लगभग अक दर्जन राजनीतिक पुस्तके हिन्दीमें लिखी हा, कुछ अव्यवस्थित-ता लगता है।

सबसे पहली बात जो देखनमें आती है वह यह कि अुनपर कम्पूनिज्म अक भूतकी तरह सचार है। वे

जिते अंक होवा समझने हैं। जिससे बरने हैं। जिसके विरुद्ध हैं। भारतमें जिसकी प्रगति देखकर रुष्ट होने हैं परन्तु जिसके मुकाबिलमें खड़ी किसी दूसरी आदर्श-वादिनाकी भी वे सराह नहीं पाते हैं। वे यह तो कहते हैं कि यदि कम्युनिज्मकी भारतमें विजय हुआ तो देश तबाह हो जायेगा। गृहयुद्ध छिड़ जायेगा। पर यह नहीं जान पाते कि भारतमें साम्यवादी विचारधारा क्यों जोर पकड़ रही है? जिसकी जड़ क्या है? वे जिसे आकाशबैलकी तरह समझते हैं।

दूसरी बात यह देखनेमें आती है कि पूँजीवादके विनाशका अगुंहे बहुत दुख नहीं है। परन्तु भारतीय समाजमें जो थोड़ेसे आर्थिक और सामाजिक सुधार हुए हैं, उनसे वे अत्यधिक रुष्ट हैं, अगुंहे शक्तिशाली राजनीति पनप है। अगुंहे पंडित नेहरूकी परराष्ट्र-नीति खोखली दिखती है। अगुंहे उनमें न तो कोअ्री तत्व दिखता है और ना बुझका कोअ्री विरुद्धकी राजनीतिपर अंतर ही। अिनलिखे कहना न होगा कि अगले पाँच सालोंके लिखे अूनकी राजनीतिक भविष्यवाणी बहुत काली है। बहुत नचाबह है, दाह और विनाशसे पूर्ण है। मैं स्वयं अिनना निराशावादी नहीं हूँ।

अपने देशमें जो आर नयी जनजागृति, नयी जनचेतना, नयी जनशलाअें विकसित हो रही हैं अूनकी ओर पयिकअ्री आहृष्ट नहीं हो पाते हैं। अगुंहे भाषावार राज्य गल्प लगे हैं। अगुंहे सामूहिक विकासकी नयी सीडियाँ गल्प लगती हैं। अगुंहे राष्ट्रका धर्मनिरपेक्ष होना गल्प लगता है।

और फिर, वहींपर गभीर विचारके रूप नहीं दिखते हैं। सारी पुस्तक पढ़ आअिअे, अंसा लगेगा कि किसी दैनिक अवधारमें अंश लेखमाला पढ़ रहे हो। यो पुस्तककी धनाअ्री नरुअ्री अच्छी है। यो २८८ पृष्ठोंके लिखे पाच रुपये दाम कुछ अधिक लगता है।

सब मिलाकर मैं यह नहीं कह सकता हूँ कि जिसने हमारे राजनीतिक साहित्यकी कोअ्री बड़ी धीनुडि की हो।

—“लोकचक्रवर्तु”

दृष्यके आंसू : लेखक — श्री परमिह शर्मा
'कमला', अम. अे, ना. २ । प्रकाशक—मुगील
'कमला', मत्पोली-प्रकाशन, गोकुलपुरा, बागरा ।
मूल्य २॥)

जिस पुस्तकमें अिनजीव गीत है। गीतोंमें विरोध-पत्रकी ही प्रधानता है। किन्तु कविके पाँतुअोंमें बड़का-नलकी दाहकता भी है जो कि विन्दवके लिखे व्याहृष्ट है। कविका व्यक्तिगत प्राय समाजगत प्रेनमें परिवर्तित होना चाहता है। —

मुझे प्यारके बन्धनोंमें न बाँधो ॥
असौमिन जलधिकी विपत्ता लिये मैं
ससौमिन सलिनके रूपोंमें न बाँधो ।
सकल विदवकी वेदनासे विकल मैं
अरेके हृदयके धनोंमें न बाँधो ।
मुझे प्यारके बन्धनोंमें न बाँधो ॥ (पृष्ठ १३)

विलासके वांगनसे कविका पय विकासकी ओर अग्रसर होता हुआ दिखानी देना है —

अरो, ओ प्राणकी बेहोश शोकिच
देख अगमें जल रही दावगिण पागल
मन अधिक शोह शीचअमें समा तू
मुनिके पयपर चरण मैं मोडुना हूँ ॥
तो सुराके मुखद प्याले तोड़ता हूँ (पृष्ठ ३६)

कुछ गीतोंमें प्रकृतिका मानवीकरण बहुत ही मौलिक हुआ है —

महागुन्यकी आसिगन कर
ध्यासिषत अपने जीवन भर
शन-शन पाव हृदयमें सेकर
सोनी है क्यों रान न जाने !
रोनी है क्यों रान न जाने ? (पृष्ठ १९)

कविके कुछ गीत बहुत सुन्दर हैं। गीतोंमें हृदयकी जो सरमना है, बुझका स्वागत भी अवश्य आवश्यक है। पुस्तककी धनाअ्री-नरुअ्री तथा बाह्य-आवरण आकर्षक व सुंदर है।

—“अंकुश”



स्वर्गीय पंडित रघुवरदयालु मिश्र :

अबम कीओ ३४ माउ पहउ १९२० म म०
गा थीके आनेगानुसार कुठ हिन्दी तक्षण दक्षिण भारतमें
हिन्दीका प्रचार और प्रसार करनक लिअ द भा हिन्दी
प्रचार समाज कमठ सेनानी अण्णा हरिहर गमाजाके
पास यह दूठ अत लकर पहुच थे कि काय वा साययय
गरीर वा पानयय — हम वायम गोनवाउ नहा हे,
चाहें आप हम मद्राम तटपर गजन-नजन करनवाल
ट्रिप्टिकेन वाचक गहरे समुद्रमें छुठाकर फेंक दीजिअ ।
श्री रघुवरदयालु मिश्रजी अनुमसे अक कत्रव्यनिष्ठ और
कमठ हिन्दी-मवक थ जिनका गत २७ फरवरीका
रातके साठ दम बज मद्रामक स्नाना अस्पतालमें
बिलकुल सा अिनाज रागीकी दुखद दयनीय दगामें
बारीरात हो गया । अपन जीवनके मवस अधिन
महत्वपूर्ण ३४-३५ वष मिश्रजीन हिन्दी प्रचार
कययमें हिन्दीकी सेवामें अपण कर दिअ । आइम्बर
रहिन, सब प्रकारकी प्रानायता साम्प्रदायिकता और
पथपपातितान दूर सरल सायु जीवन मरुर भापण
नम्र व्यवहार और अपन ममी सगी मादी सहयोगियाकी
सायमें लेकर चलनकी प्रसन्न मनोवलि यह स्वर्गीय
मिश्रजीका स्वच्छ अथ स्पहणीय गील रहा । जि ह
देखकर जिनसे भेंटकर जिनके सम्पर्कम आकर जिनमे
चद मिनठ वातायणकर और जिनक साय रहकर
हिन्दीका काय करनवाउ सकनें सहयोगी लोग प्रसन्न
हान थ अून स्वर्गीय रघुवर दयालुजीन अपन जीवनकी
अंतिम दवासा तक भारतकी राष्ट्रभारती हिन्दीकी
अमानुदारके भाय बडी सेवा की । स्व० मिश्रजी बडी
निर्भीकता समजदारो मज्ज ता और गभीरतापूर्वक
अपन बडसे बड सहयोगियाकी कयजोरियाकी और
गतिवियाकी बालोचना करते थ सचाओ और आत्म

विरामके साथ । मिश्रजीका हमारे बीचमे अममयमें
खुठ जाना दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समाओी अ्रेम) भारी
कयलि है कि वस्तुन जिसकी प्रति नहा हा सकनो ।
दक्षिण भारतक समस्त हिन्दी मयनको भी मिश्रजीके
जिस आकस्मिक नियमन अक मारा धक्का पहुचा है ।
पूरे डठ महीनकक मद्रामक स्नानी अस्पतालम मिश्रजीके
जीवनक साय अनिश्चन औदधानचार मम्बयी अभाव
धानियाका नाक होना रहा । अून महयोगी वनुवाका
सोमाय कहिअ या दुभाय जा मिश्रजीक अंतिम समयमें
अूनक पाम पहुच सके थ जब अूनकी जीवन चतना दुम
रही थी और वाणो वन हा रही थी । दुवकी कात्री
रायपुरी अदासीको उकर थायी और अूनकी जिन्दगाका
सउ पूण विभीषिकाके साथ स म हुआ ।

स्व मिश्रजी तो जिस दुनियामे हमेगाके लिअ
रखनन अकर चले गय और अपन पीछ दुक्षिया घम
पनी अक पुत्र दा पुनिया और सखडों सोक-सखिन
मानम भजन सहयागा मुहदाका अक बहुत बडा समूह
छाड गय ह । परमात्मा अूम निवगत मात्तिक अमाको
गानि दे ।

प्रायनाके दो गल्ल — (जिस नान कि म भी
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समाका १९१८ मे जिस
समय बीजारोपण पूय वापूके हायो हुआ — लगातार
२० वय तक अकनिष्ठ सेवक रह चुका ह ।)
सभाके कणधाराय विगपन समुद्र-मयत्र सभाके वन
मान समय गगन प्रदान मत्री सहृदय मयनारायणजीम
कि आप स्व मिश्रजीकी मेवाओकी स्मतिको समा
भवनम सामूहिक रूपमें सदाके लिअ सुरक्षित रख
तथा अूनके अमहाय निराजिन शनो परिवारकी महायना
करे । हम सब सहयागी राष्ट्रभाषा हिन्दीके कायकता
और अूनका हाय बटाव ।

बम्बयी राज्य-सरकारको बधायी :

राष्ट्रभाषा हिन्दीको ब्रुसका ब्रुचित स्थान प्राप्त हो, अिनके लिअे केन्द्रीय सरकार तथा अधिकतर राज्य सरकारो द्वारा बहुत कम प्रयत्न हो रहा है। कतिपय राज्य सरकारें, जो अिसके लिअे प्रयत्नशील है, अूनमें मध्य-प्रदेग तथा बम्बयी राज्य अुल्लेखनीय हैं। मध्य-प्रदेशकी सरकारने द्विभाषी प्रान्त होनेके कारण मराठी तथा हिन्दी द्वारा राजकाज चलानेका निर्णय करके राष्ट्रभाषा तथा प्रादेशिक भाषा दोनोंकी सेवा की है, अितना ही नहीं मध्य-प्रदेशकी जनताकी भी सेवा की है। बम्बयीकी राज्य-सरकार भी, अपने राज्यमें अिसके अुपरके तदर्थ हिन्दीका अुपयोग ही और अुनके नीचेके विभागोंमें प्रादेशिक भाषाका अुपयोग किया जाअे यह निर्णय करना चाहती थी। अिसके लिअे अुनने अेक विषय भी तैयार किया था, जो राज्यकी विधान-सभामें रखा जानेवाला था, परन्तु अुसका बहुत विरोध हुआ, अिस कारण अुने छोड दिया गया। अुसे विधान-सभामें नी नही रखा गया। अब बम्बयीकी राज्य सरकारने अेक दूसरा निर्णय किया है जो अति आवश्यक है और साथ ही सममानकूल भी। बम्बयीके शिक्षा-विभागका निर्णय है कि १९५५ से महाविद्यालयोंमें (कालेजोंमें) हिन्दीके माध्यम द्वारा शिक्षा दी जाअेगी। शालाओंमें-हाथीस्कूलोंमें हिन्दीकी पढाअी अनिवार्य बनायी गयी है, परन्तु वहाँ शिक्षाका माध्यम प्रादेशिक-भाषा होगा-जो अनिवार्य है, अुचित भी है। परन्तु अुसके बाद, हमारे कितने ही गण्यमान्य नेताओंका अभिप्राय है कि महाविद्यालयोंमें राष्ट्रीय दृष्टिसे राष्ट्रभाषाके द्वारा शिक्षा देना अति आवश्यक है। बम्बयी सरकार भी यही मानती है और अुसने तदनुषंग निर्णय किया है। हम बम्बयीके शिक्षा-मन्त्रपालयका अुसके अिम निर्णयके लिअे हादिक बधाअी देते हैं। हम जानते हैं कि अिसका बडा विरोध हा रहा है, और होगा। परन्तु हम आशा करते हैं बम्बयी सरकार अिस विरोधके बावजूद भी अपने निर्णयपर दृढ रहेगी। बम्बयी राज्यके मुख्य-मन्त्री श्री मोरारजीभाभी तथा शिक्षा-मन्त्री श्री दिनकर-भाभी देसाअी दोनों यदि यह मानते हैं कि अुन्होंने यही

कदम अुठाया है और वह सममानकूल है तो अननी अिस अुद्देशके कारण कंना भी विरोध क्यों न हो, अुसका समाना करनेकी वे शक्ति रखते हैं।

हमने भी समय-समयपर महाविद्यालयोंमें शिक्षाके माध्यमके प्रश्नपर बर्चा की है। महाविद्यालयोंमें शिक्षाका माध्यम राष्ट्रभाषा हिन्दी ही रहे, अिसके पक्षमें बहुत ही महत्वके तथा विपाल दृष्टिके कारण हैं। राष्ट्रीय-दृष्टिसे तो यह अति आवश्यक तथा अनिवार्य ही समझा जाना चाहिये। परन्तु प्रादेशिक-भाषाका भी अपना महत्व है, अुसका महत्व कम न हो और मातृभाषाके द्वारा शिक्षाके मूलभूत सिद्धान्तकी रक्षा हो, अिस कारण हमने अुने भी वैकल्पिक रूपसे शिक्षाका माध्यम बनानेकी बात कही है। गुजरात युनिवर्सिटी तथा बडीदा युनिवर्सिटीने हिन्दी तथा मातृभाषाके माध्यमको स्वीकृति-का निर्णय किया है, अुसे हमने हमेशा बडा ही स्वागतार्थ निर्णय माना है। परन्तु हमने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि मेडिकल, अेन्जिनियरिंग तथा कानून जैसे अविल भारतीय महत्वके विषयोंकी तो हिन्दीके द्वारा ही पढना होगा, क्योंकि परिभाषाका भी प्रश्न अुसमें होगा और परस्पर लेन-देनके प्रश्नका भी अुसने बडे महत्त्वका भाग होगा। सम्भव है अिसके परिणाममें महाविद्यालयोंमें दूसरे विषयोंकी भी हिन्दी द्वारा पढाअी करनेमें सुविधा दिखानी देने लगे और अून दिषयोंकी भी हिन्दीमें पढानेसे छात्रोका तथा प्रभाका अधिक हित हो।

महाविद्यालयोंमें शिक्षाके माध्यमके प्रश्नपर बडा तीव्र मतभेद है, अिसमें सन्देह नहीं, परन्तु अिसका हमें विचार राष्ट्रीय-दृष्टिसे ही करना होगा। सकारकी आज जो परिस्थिति है अुनमें हमारे राष्ट्रकी सुगठित अेकता का होना-न होना ही हमारे जीवन-मरणका प्रश्न है, यह हमें भूलना नहीं चाहिये। प्रांतीय भावनाअें, स्वनाथा-अभिमानके अेंसे विचारोंको, जो हमारी राष्ट्रीय अेकताके विरोधी हो, हमें त्याग देना होगा। राष्ट्रभाषाके माध्यमके विरुद्ध जो दलीलें की जाती हैं वे अतिकतर अेंसी ही भावनाओं तथा अभिमानसे प्रेरित हैं। मातृभाषाके द्वारा ही विद्यार्थीकी शिक्षा दी जानी चाहिये, अिस मूलभूत सिद्धान्तकी सभी मानते हैं, परन्तु अिस सिद्धान्तकी

अनुचित खींचातानी करके विचित्र प्रकारके तर्क रचगित किये जाते हैं तब बडा ही दुःख होता है। यह कहना कि गुजराती मराठी-भाषी प्रदेशोंमें अतनी हिंदी ही परकीय भाषा है जितनी कि अग्रजी केवल हास्यास्पद बात ही नहीं विवृण मनावृत्तिकी भी चोतक है। संकडा घपसि अिन प्रप्रेषोंमें ही बयो नीचेके दनिषण प्रा तोम भी हिंदी ममझी जाती रही है। साधुओन, धर्माचार्योंन अिसीके द्वारा धम भावनाआका प्रचार किया है। अज्ञात जनतामें भी अिसीके द्वारा ज्ञानका प्रसरण (Percolation) होता रहा है और वही कोओ कठिनाओ नहा आयी। फिर भी यह तो कोओ नहीं कहना कि मातृभाषाका अुपयोग हीन हो। मातृभाषाका अपना स्थान है गौरव युवत स्वतंत्र स्थान है। अपनी मातृभाषाप्रति प्रति सभीको अभिमान होना चाहिये और वह गौरवना विषय होगा। जहाँ तक जनताये मन्ब ध है सारा व्यवहार मातृभाषा द्वारा ही हावा। हाँ शिष्यतोको राष्ट्रभाषामे अधिक काम पडगा और वे अुसम आसानीसे तैयार भी हो सकय। अु हैं कोओ कठिनाओ न मालूम होगी। आज भी गुजराती तथा मराठी शिष्या प्राप्त विद्वान बडी आसानीसे हिंदीके प्रयोका स्वय अध्ययन कर सकने ह और गभीर विषयोपर व्याख्यान देनमें भी अु ह काओ असो विगय परेशानी नहीं होती। अिसका कारण है प्रादेशिक भाषाओ तथा हिंदीका अति निकट सम्बन्ध। दोनो सहोदरा ह और कभी कभी तो अुनको अक दूसरेसे अलग करना भी कठिन प्रतीत हाता है। भवतकवि मीराबात्रीकी कवितापर हिंदी भाषी तथा गुजराती भाषी दोनो दावा कर सकते ह अुसी प्रकार विद्यापतिको कवितापर भी हिंदी भाषी तथा बंगाली भी दावा कर सकते ह। ह्य मानते ह जो लोग बिना कारण आज हिंदीका विरोध कर रहे हैं, वे केवल अग्रजी प्रचार-अवशयक प्रभावमें ह। हमें विदवाम है कि यह अनिष्ट प्रभाव अब दूर होनवाला है और तब हमारे य बंधुण भी स्पष्ट रूपसे यह महसूस करेग कि राष्ट्रके लिअ राष्ट्रभाषा हिंदीका माध्यम महा विद्यालयमें हाना अति आवश्यक है। अिसअ अुनकी स्वभाषाका भी हित ही होगा। प्रादेशिक भाषाओकी

ममृद्धि बढगी घटगी नहीं। आज जो भूँ हम कर रहे ह और कभी कभी सजुचित दृष्टिका हम भूँ जाने ह कि अभी हम सन्चे भारत राष्ट्रका निर्माण करना है। जो राजकीय अकता हमें प्राप्त है अम अब राष्ट्रीय भित्तिपर दृढ करना है और गवम अविन आवश्यक तो यह है कि हमारी सांस्कृतिक राष्ट्रीयताकी परम्पराको मूर्तरूप देकर नुनकी अक अविच्छिन्न मस्कार परम्परा जन जीवनमें की जाअ।

साहित्यिक-अकेडेमी :

केन्द्रीय गिबपा विभागके प्रयन्नोंमे अक साहित्यिक अकेडेमीकी स्थापना की गयी है और अुसमें भारतकी समाम भाषाआके साहित्यिकोंके प्रतिनिधि लिय गय ह। वने देखा जाअ तो यह अक बहुत अच्छा और आवश्यक काय है। परन्तु अिसका नाम साहित्यिक अकेडेमी क्यों रखा गया यह ममझमें नहीं आता। क्या अकेडेमीका भाव व्यक्त करनके लिअ हिंदी सस्कृत तथा अय भारतीय भाषाओमे काओ गन्द नहीं लिया जा सकता था ? और अकमे अधिक गन्दाका अुपयोग करके भी अुसे भारतीय रूप दिया जाना तो अुसम क्या रनि होती ? अकडेमी शब्दमे हमारा विरोध नहीं है। वने कओ अग्रओ शब्द जो हिंदीम चल गय ह अुनका अुपयोग करनके हम पक्षमें ह। अकेडेमी अग्रजीका गन्द है अिसलिअ अुसका हम विरोध नहीं कर रहे ह। परन्तु अितना बडा महत्वका साहित्यिक मण्डल सरकार बनाय और अुसके नाममें विप्रेसिधोके अनुकरणकी अु भाय और अुसम भारतीय वातावरणका अभाव हो यद हमें खटकता है।

अब प्रश्न है यह अकेडेमी क्या करेगी ? अिस भिन्न भारतीय भाषाआके विद्वान साहित्यिक अकअ हो और देशके साहित्यकी अभिवृद्धिके निअ प्रय नशील हा-यह अवश्य स्वागतके योग्य बात होगी परन्तु क्या वे मव भिन्नकर हमें अच्छा साहित्य दे सकय ? अुटे केन्द्रमसे या अय प्रकारसे अुनके लिअ प्ररणा मिल सकेगी ? राष्ट्र निर्माणकी दृष्टिमे अुसकी क्या अुपयोगिता हागी ? य सब प्रश्न विचारणीय ह।

कहा जाता है कि फ्रान्सकी साहित्यिक-अकेडेमीके अनुकरणमें जिस अकेडेमीकी कल्पना की गयी है। परन्तु फ्रान्सकी परिस्थिति भिन्न है। फ्रेंच वहाँकी स्वीकृत 'लिगूवा फ्रेंका' है और जुसी भाषा द्वारा वहाँके साहित्यिकोंकी अपनी साहित्य-साधना करनी थी। परन्तु हमारे यहाँ यह परिस्थिति नहीं। विधानमें हिन्दीको राज्य भाषाके रूपमें स्वीकार कर लिया गया है परन्तु राष्ट्रभाषा अभी अज्ञाने बनाता है और भिन्न-भिन्न भारतीय भाषाओंके सब साहित्यिक भी राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रति जंमना चाहिये वैसा मद्भाव नहीं रखने। केन्द्रीय-शिक्षणालय भी हिन्दीके प्रति अज्ञाने है। असी स्थितिमें अकेडेमीके सदस्योंमें परस्पर साहित्यिक लेन-देनके लिये किस अंक सामान्य भाषाका उपयोग होगा—यह प्रश्न तो अठूठा ही है। क्या अंग्रेजी द्वारा यह काम किया जायेगा या हिन्दीके द्वारा? अगर अंग्रेजीका ही अधिकतर व्यवहार हुआ तो क्या वह हमारे राष्ट्रके हितमें होगा? और यह भी सम्भव है कि यदि राष्ट्रभाषा हिन्दीका आपनके व्यवहारमें उपयोग न किया गया, तो भारतीय भाषाओंकी आनसकी खोजतानी भी अकेडेमीका अंक अग वन जायेगी। जिस प्रकार विचार करनेसे प्रतीत होता है कि सायद जिसकी स्थापना वह गाड़ी पीछे छोड़ा जीवनके समान है। जिससे गाड़ी चलेगी नहीं। परन्तु क्या किया जाये? शिक्षा-केन्द्रालयके द्वारा प्रायः अंश ही निर्णय किये जाते हैं। फ्रान्स वर्षोंमें राष्ट्रभाषा हिन्दीको सक्षम बनाकर राजधानीमें अनेक अनेक अक्षय स्थानपर प्रतिष्ठित करनेकी बात अति आवश्यक है, परन्तु अगुनपर वह ध्यान नहीं दे रहा है।

हम यह नहीं कह रहे हैं कि अकेडेमीका कोई उपयोग नहीं या अनेक आवश्यकता भी नहीं है। अनेक आवश्यकता और उपयोग दोनोंको हम स्वीकार करते हैं, परन्तु हम यह अवश्य मानते हैं कि पहले राष्ट्रभाषाके लिये शिक्षा-व्यवस्थाकी आरम्भ प्रयत्न होना चाहिये या और फिर यदि जिस अकेडेमीकी स्थापना की जाती तो वह अधिक उपयोगी कार्य होता।

अपराध हम यह भी देखते हैं कि अनेक सामने जो कार्यक्रम है अनेक भी किसीको मन्त्रोप नहीं। हम यह नहीं मानते कि जिसमें मौलिक तथा उपयोगी

साहित्यका निर्माण होगा। विभिन्न भारतीय भाषाओंकी कुछ पुस्तकोंको चुनकर अगुनपर पुरस्कार देना अपवा कुछ साहित्यिकोंकी सहायता करनेसे कुछ साहित्यकारोंकी सेवा अवश्य होगी, परन्तु साहित्यकी सेवा जिसमें अधिक न हो सकेगी। जिसके लिये तो आवश्यक वातावरण चाहिये, राष्ट्र-निर्माणकी दृष्टि चाहिये और राष्ट्रके संपर्कोंकी अनुभूति चाहिये। प्रजाकी भावनाओंके साथ तन्मय हाकर यदि साहित्यिक अनेक संपर्कोंकी अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं तो वे अनेक मौलिक राष्ट्रीय परम्पराके साहित्यका निर्माण कर सकनेमें समर्थ होंगे। क्या अकेडेमी अिन साहित्यिकोंके लिये अंश वातावरण तथा साधन पंदा कर सकेगी? जिसमें हमें शक है। यदि वह यह कर सके, तो अकेडेमी अवश्य अपनी सार्थकता सिद्ध करेगी, परन्तु यदि वह विभिन्न भाषा-भाषी साहित्यिकोंका, पुरस्कार तथा सहायता प्राप्त करनेके लिये खोजतानी करनेका अछाडा बन गयी, तो देखने लिये अंक साध ही सिद्ध होगी।

केन्द्रमें राष्ट्रभाषाका अलग मंत्रणालय :

नागरी प्रचारिणी सभाके हीरव-जयन्ती-महोत्सवके समय बिहारके राज्यपाल श्री दिवाकरजीकी जन्मस्थलमें जो राष्ट्रभाषा-सम्मेलन हुआ उसमें अंक प्रस्ताव द्वारा यह भाग की गयी है कि राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रचार, प्रसार, शिक्षा तथा अनेक अक्षय स्थान दिलायके लिये तथा १९६४ में जब अंग्रेजीके स्थानपर राजकाज, न्याय-विभाग आदिमें अनेक अक्षय स्थान दिलायके लिये अनेक अक्षय बनाने तथा अनेक अक्षय विकास करनेके लिये केन्द्रमें अंक स्वतन्त्र मंत्रणालय स्थापित किया जाये। हम जिस माँगका समर्थन करते हैं। केन्द्रीय शिक्षा-विभागने यदि हिन्दीके प्रति अज्ञानेना न दिवायी होती और राष्ट्रभाषाके प्रति अपना जन्म्य अदा किया होना तो अंश अलग मंत्रणालयकी माँग करनेका प्रश्न ही अक्षय स्थित न होता। परन्तु केन्द्रीय शिक्षा विभागने जिस सम्बन्धमें बहुत त्रुटियाँ की हैं, अज्ञान ही नहीं, अिन सम्बन्धमें अनेक अक्षय जैसी चल्-विचल् मनोदिशा आज है अनेक देखते हैं वह योग्य निर्णय करनेमें अक्षय है। अंग्रेजीकी जो फ्रान्स वर्षोंकी अवधि दी गयी थी, अनेकसे पाँच वर्षों की दी गयी है, अब केवल दस वर्षें रहेंगे। अिन पाँच वर्षोंमें राष्ट्रभाषा हिन्दीका

जो काय हुआ है वह अति निराशाजनक है। गौघ्न ही हिन्दीकी प्रगतिकी जाँच करनेके लिये एक आयोग नियुक्त किया जाया। वह आयोग जो रिपोर्ट देगा वह सनोपजनक नहीं हो सकती और केन्द्रीय शिक्षण विभागके शेषके कारण आयोग द्वारा जो असतोपजनक रिपोर्ट दी जायगी उसके नुस्खे अक्षरोंकी अवधि बढ़ाय जानका नियम बनकरा प्रसंग अपस्थित हो तो जनता बुझे कभी सहन नहीं करेगी। असौ स्थितिमें अब यह आवश्यक हो गया है कि सरकार द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दीके लिये आवश्यक तमाम प्रयत्न प्रामाणिक रूपसे किये जायें। शिक्षण विभागसे यह आशा नहीं की जा सकती। अभी तक अमन तो हिन्दीके कायम रीढ़ अटकानका हो काय किया है। अिमलिय अलग मन्त्रणालय खोलनके सिवा दूसरा कोअी अुपाय नजर नहीं आता। आशा है सरकार अिसपर ध्यान देगी और समद तथा विधान सभाके सन्स्य वस्तुस्थितिको समझकर अिस माँगका दडतापूर्वक समयन करेग। राष्ट्रसे हितम अिसको आवश्यकता ही नहीं अन्विवाथ आवश्यकता है अिसका जनताके प्रतिनिधियोंको अनुभव होना चाहिये।

हिन्दी भाषियोंकी ओरसे स्पष्टता :

नागरी प्रचारिणी सभाके अिम राष्ट्रभाषा सम्मेलनन और भी अक बड महत्वका प्रस्ताव पास किया है। यह प्रस्ताव श्री हजारीप्रसाद द्विवेदीजीन रखा था। श्री दिनकरजीन अुसका समयन करत हुअ अगन प्रभावशाली भाषणम रिषातिको बिलकुल ही स्पष्ट कर दिया। सब प्रकारकी शुभच्छाओंके बावजूद हिन्दीके सम्बन्धमें हिन्दी भाषियोंपर जो विना कारण आवश्यक स्थिय जाते ह अुसमे य दोनो विद्वान बड दुखी प्रतीत होने थ। प्रस्तावमें स्पष्ट किया गया है कि अहिन्दी भाषा भाषी वयत्रोम अा यह मिथ्या धारणा फल गयी है कि हिन्दीके समथक अय वयत्रोम भाषाओंके विकासको अवरोध करना चाहने ह निराधार है। हिन्दीके समथकोंन कभी भी अिम प्रकारका कोअी विचार व्यक्त नहीं किया। प्रस्तावम यह भी कडा गया है कि सम्मेलन सभी राज्य भाषाओंके विकासको कामना करता है और त्रिविधान रूपसे अँसो कोअी मिथ्या धारणाका निवारण कर देना चाहता है कि हिन्दीके समथक अय भाषाओंकी अुन्नति नहीं चाहने। सम्मेलन राष्ट्रभाषाके विकासपर राष्ट्रकी सुदृढता और अय सभी भारतीय भाषाओंकी सामूहिक अुन्नतिकी दृष्टिमें ही और देता है।

यह स्पष्टता नागरी प्रचारिणी सभाकी हीरक जयन्तीके अवसरपर राष्ट्रभाषा सम्मेलनमें अर्जित हिन्दीके विद्वानोंका समर्थनको द्वारा की गयी है। नागरी प्रचारिणी सभाके अिन्यासको जा गेग जानने ह वे यह भी जानते ह कि वह हिन्दीका काय करनवाली तमाम सस्थाओंकी मातामही है और करीब करीब सभी हिन्दीके विद्वानोंका अमके प्रति सन्मान जसा आनर भाव है। हिंद पाठिय सम्मेलन प्रयाग अनीका अक अंग था जो स्वतन्त्र होकर अितना बड गया कि अविषय भारत हिन्दी प्रचार सभा तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्षोंकी स्थापना की गयी और अमका काय मारे भारत वयम फड गया। हिन्दी साहित्य सम्मेलनके जनमान तथा भूतपूर्व पत्राधिकारी तथा समथक विद्वान भी अिम सम्मेलनम अुपस्थित थ। अिस कारण यह प्रस्ताव बड महत्वका प्रस्ताव बन गया है और आशा की जाती है कि अिसमे हिन्दीनर भाषा भाषी विद्वानोंका जनताका समर्थन होगा। हम मानते ह कि असा प्रस्ताव फलके अिस सम्मेलनन बहुत बडा काम किया है। साहित्यके समाधानके लिये अिससे अधिक कोअी कुछ कर भी क्या सकता है ?

इसकी बार तो यह है कि अय अिन हिन्दीके साम्राज्यवादको तथा हिन्दीके समर्थनपर यहाँ तक कि राजपि टण्डनजीपर भी कोमवान तथा दूसरे हीन प्रकारके आक्षेप करनवाली बाने होनी रहती ह। और हमें अधिक दुख तो अित बानका है कि अने मल्ल प्रचारम विचारवान लोग भी बह जाते ह। अिसमे आक्षेप करनवात्रोकी देगनी राष्ट्रभाषाकी और प्रादेशिक भाषाओंकी सबकी हानि जो हो रही है अुनपर कोअी विचार नहीं करता। जो लोग अानुसूचकर असा शूटा प्रचार काय कर रहे ह अु हें तो हम क्या कहें ? परंतु जो लोग विचारवान ह जिन्हें राष्ट्रभाषामे प्रेम है जो अपनी मातृभाषाके प्रति प्रेम रखने ह तथा राष्ट्र अय राष्ट्रकी जनताका हित चाहने ठ अनम हम अवश्य अनुरोध करे। कि वे अनी आगड बाटाके फरमें न पडें खुद सोच समझें और वास्तविकताका पान प्राप्त करे और फिर जमा अुचित समझ नियम करे। हम विश्वास है कि अु हे यह अवभव होगा कि राष्ट्रभाषाका निर्माण अुसका प्रचार प्रसाग हम सबका काम है केवल हिन्दी भाषियोंका ही नह। राष्ट्रभाषा हमारी सबकी अपनी हीनी कियो प्रदेश विशयकी नही।

—मो० भ०

सुन्दर टाइप और घाडर

अस कारखानेके सुन्दर और मज-
वूत टाइपको अनेक छापखानेवाले पमन्द
करते हैं। हमारे यहाँ अग्रेजी, मराठी
गुजराती तथा बानडी टाइप और अनेक
प्रकारके बाडर तथा अलेक्ट्रो ब्लाइम हमेशा
तैयार मिलते हैं।

अुत्ती प्रकार हमारे यहाँ मोनो सुपर
कास्टरने तैयार किये हुअे १२ पाजिट
हिन्दी और मराठी टाइप भी तैयार हैं।
केटलाग जहर मंगावे।

पता—मैनेजर, निर्णय सागर प्रेस,
बम्बयी नं० २

सुपमा

सम्पादक : कुंडलराय मोहकर

या मासिकाची वैशिष्ट्ये—

☺ सुन्दर लघुकथा. ☺ नामांकित लेखकांचे
लिखाण ☺ जीवन कला साहित्य विविध
विषयावर उपयुक्त मज़कूर ☺ या निवास
चेतोहारी चित्र. साधव वर्गणी पाठवून प्राप्त
होम फायद्याचें आहे.

वार्षिक वर्गणी ६ रुपये किरकोळ अंकान ८ आणे

पता:— सुपमा : पराग विहिडिंग्ज,
घरमपेट, नागपुर (म.प्र.)

संस्कृति, कला, शिक्षण, ग्राम सेवा तथा
समाज विकासाको संदेश-साहिका
मासिक-पत्रिका

भारती

+ अग्रेजी व विज्ञानक लिखे निवापडी करे—
+ वार्षिक रूप अंजकर प्रह्व बने—
वार्षिक मूल्य २) अंक अंक 111)

व्यवस्थापक —

भारती, नयनभात प्रेस, खालियार

साहित्यिक 'राष्ट्रवीणा' असासिक पत्रिका

संपादक:— जेठालाल जोशी
वार्षिक मूल्य ५) अंक प्रति १)
वर्षा-समितिके सक्रिय प्रचारकों और वेद-
व्यवस्थापकोंको पत्रिका आपे मूल्यमें भेजी जाती है।

पोस्टेज सब्ं भाठ आना अधिक।

— व्यवस्थापक "राष्ट्रवीणा"

गुजरात प्रा रा ना प्र मनित्रि, काणपुर,
सकुरीकी पोल्, जयमदासाद।

पुस्तकालय-संदेश

[पुस्तकालय-आदोलनका दगस्थी मासिक-पत्र]

सम्पादक:— संचालक:—

श्री कृष्ण संदेशकर, श्री लहटन चौधरी अम अेफ अे
वार्षिक मूल्य ३) अंक प्रतिका 1)

व्यवस्थापक, पुस्तकालय-संदेश

पो० पटना विदेशविद्यालय, पटना—५

महाराष्ट्र, या प्रचार समिति, पुणेके तत्वावधानमें
राष्ट्रभाषा प्रचारकों अेउं परी न्यायिंशेके
सुपयोगकी हिन्दीकी अभिनव साहित्यिक
मासिक "जयभारती" पत्रिका

सम्पादक:— श्री प. सु डांगरे

वार्षिक मूल्य ०) दो रूपया

शीघ्र प्राप्तक यनिअे।

पता:— ८९९ मदासिद, पो बां न ५५८, पुणे २.

जिस घरमें आरोग्य प्रकाश नहीं, वहाँ सुख शान्ति कहाँ ?

आरोग्य, स्वच्छता आर चिकित्साया सर्श्रेष्ठ ग्रन्थ

भारत प्रसिद्ध श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेडके अध्यक्ष वधराज प० रामनारायणजी वैद्यसास्त्रोन् ५६ वर्ष बड़ी मेहनतसे स्वयं इस ग्रन्थको लिखा है। ग्रन्थका अक-अक वाक्य हजारों रुपयका काम देता है। व्यायाम ब्रह्मचर्य भोजन मदाचार अल्पम विचार आदि पूर्वार्द्ध विषयको पढ़कर और तदनुसार चलकर सदा बीमार बननेवाला रोगी बिना दवाके बीरोग (तदुल्लस) हो जाता है। ग्रन्थके अनुसाररुद्धम तरीरमें पैदा होनवाल सभी रोगाकी अल्पति कारण निदान रागके लक्षण चिकित्सा पथ्यापथ्य आदि बड़ी ही सरल भाषामें लिख है जो पढ़कर विद्वान्से लेकर साधारण पढ़ लिख दोनों समान भागसे लाभ अर्जित सकत ह। अिमम दवाआके जो नुकसे लिय गय ह वे बहुत बार परीविपत कभी भी फल न होनवाल और शम्भानुमोदिन ह। दाहर हो या देहान सब जगह इस पुस्तकके घरमें रहनसे रोगीको तकाठ आन पढ़ैकाया जा सकता है। औषधि तैयार करनका विधान ता अस पुस्तकमें अष्ट है क्यादि लेखक अस विषयके निगयात्मक ज्ञाता ह। अिमक आठ सम्करणोंमें ७१००० प्रतिपाद्य छपकर विक चुकी ह। यह नवा सम्करण १५ हजारका अभी छप रहा है। अिमम जिसकी लोक प्रियता और अ्ययोगिता स्पष्ट मालूम होनी है। हिदीमें अभी अ्युत्तम पुस्तक रूपरी नहीं है यह कहा जाय तो अनुचित न होगा। प्रचारकी दृष्टिम मूल्य भी बहुत कम रखा गया है। ५१५ पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य सिर्फ १।।।।। डाक खर्च ॥०॥ हमारी चार निर्माणशाला ५० विक्री केंद्र, १५००० अर्जियामें प्रत्यक्ष खरीदतपर डाक खर्च नहीं लगता।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड, कलकत्ता पटना, झांसी, नागपुर।

—: अद्यमः —

हिन्दी और मराठी भाषामें प्रकाशित होना है।

प्रतिमास १५ की तारीखको पढ़िअ।

अद्यममें निम्न विषयोंके लेख छपते हैं —

लाभदायक बुधारायधोकी जानकारी, अनाज तथा सब्जीकी धर्ती व रोगोका निवारण पशुपाउन दुग्धव्यवसाय व सामोद्योग सबधी लेख विद्यार्थियोंके लिअ बज्ञानिक व अय जानकारी आरोग्य धरल औषधिया सबधी लेख हिन्दुस्तानके बानिक और औद्योगिक कपनकी अ्ययोगी जानकारी कृषि औद्योगिक और व्यापारिक कपनमें काम करनवाले लोगाका मुलाकान तथा परिचय।

अद्यमके विशेष स्तंभ

महिलाओके लिअ अ्यपदान सचिकर स्वाद्यपदाय बनानकी विधि धरलू मितव्ययिता अद्यमका पत्रव्यवहार खबरें आधिक तथा औद्योगिक परिवचन जिज्ञानु अगत् व्यापारिक ह्कचलाकी मासिक समालाचना नित्योपयोगी वस्तुअं स्वयं तयार कीजिअ।

वार्षिक चर्चा ७ व और प्रति अक १२ आना

पता — 'अद्यम' मासिक, धर्मपेठ, नागपुर (म. प्र.)

भारत सरकारके व्यापार और उद्योग मंत्रालय द्वारा प्रकाशित

‘उद्योग व्यापार पत्रिका’

★ उद्योग और व्यापार सम्बन्धी प्रामाणिक जानकारी युक्त विशेष लेख, भारत सरकारकी आवश्यक सूचनाओं, उपयोगी आकड़े आदि पत्रिकामें प्रति मास दिये जाते हैं। ★ डिमाजी चौपेजी आकारके ६०-७० पृष्ठ मूल्य केवल ६ रुपया वार्षिक। ★ अंग्रेजोंको अच्छा कमीशन दिया जायेगा। पत्रिका विज्ञापन देनेका सुन्दर साधन है। ग्राहक बनने, अंग्रेजी लेने अथवा विज्ञापन छपानेके लिये नीचे लिखे पतेपर पत्र भेजिये—

सम्पादक,

उद्योग व्यापार पत्रिका,

व्यापार और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली।

अुत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा

कार्यालय—कटकका मुखपत्र

❀ राष्ट्रभाषा-पत्र ❀

सम्पादक

पंडित लिंगराज मिश्र

श्री राजकृष्ण चौप

पंडित अनमूयाप्रसाद पाठक

व्यवस्थापक— प बनमाली मिश्र

वार्षिक मूल्य ४) पा० मासिक २।)

अवन्तिका

वार्षिक का जिस अंकका

१०) काव्यालोचनांक ३)

संपादक : लक्ष्मीनारायण सुधायु

यह अंक वार्षिक ग्राहकोंको साधारण दरपर ही मिलेगा।

प्रकाशक—श्री अजन्ता प्रेस लिमिटेड,

पटना-४

सरस्वती प्रेसका नवीन आयोजन

जनवरी १९५४ से प्रकाशित

हिन्दीमें कथा-साहित्य का अनुपम मासिक

क हा नी

कथा साहित्यके अिस अनुष्ठानमें ‘कहानी’ को लेखकों, पाठकों, विद्वानों सभीका कृपापूर्ण सहयोग अपेक्षित है।

—बी० पी० नहीं भेजो जाती—

व्यवस्थापक : ‘कहानी’ कार्यालय,
सरस्वती प्रेस, ५, सरदार पटेल मार्ग, पो बा न २४,
बिलाहावादा - १

आलोचनाके तृतीय वर्षका पहला अंक

“आलोचना अंक”

लगभग २५० पृष्ठोंका विशेष अंक। अिस अंकका मूल्य ५) मात्र वार्षिक ग्राहकोंको साधारण मूल्यमें ही मिलेगा।

वा० मू० १२) मनीआर्डर द्वारा भेजिये

प्रकाशक:— राजकमल प्रकाशन,

१ फैज बाजार, दिल्ली

आपके, आपके परिवारके प्रत्येक सदस्यके,
प्रत्येक शिक्षा मंथ्या तथा पुस्तकालय
के लिये उपयोगी

हिन्दीका अपने ढंगका पहला पत्र

वार्षिक मूल्य १०)
पृष्ठ संख्या १२५

गुलदस्ता

नमूने की प्रति
अंक दयाया

(हिन्दा डाजिस्ट)

३१,३८ पीपलमंडी, आगरा

अजन्ता

सम्पादक—

श्री बसोधर बिद्यालकार श्री धोराम नर्म
प्रकाशक —

हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार मभा,
हैदराबाद (दक्षिण)

१ वृत्त कोटिका साहित्य २ मुद्रक और
रबूट छपाही ३ कलापूर्ण चित्र
वार्षिक मूल्य ९ रुपया

हिन्दी नामसे ब्राह्मक वन मन्ते हैं ।

हिन्दी स्वस्थ, सान्त्विक अर्थ
सस्ता मासिक पत्र

‘जीवन-साहित्य’

वार्षिक शुल्क केवल ४)

चाहे तो पहले अंक वाटें भेजकर
नमूना मगाने देख लें ।

जुलाही और जनगरीसे ब्राह्मक
बनाये जाते हैं ।

पता:— सस्ता साहित्य भंडाल, नर्री 'दुहरी

नयी धारा

डिमाही भाट पेजिके १०० पृष्ठ, पन्की
जिल्द, आकर्षक रचर, मन्त्रि, सुमज्जित ।

नयी धाराके पुराने प्राण्य अंक आधी
कीमतमें प्राप्त होंगे । पोस्टेज फ्री । रगमच अंककी
बोझीकी प्रतिष्ठा श्रेय है । प्राक्क शीघ्रता करें ।

अंक अंक १) रु.] [वार्षिक १०) रु.

पता.— प्रबन्धक, नयी धारा, प्रशोक प्रेस, पटना ६

हिन्दीका स्वतंत्र मासिक

“नया समाज”

संचालक : नया समाज-ट्रस्ट

संपादक : मोहनसिंह बैंगर

या पन्ना ८) : अंक प्रति ॥॥) : विदेशी १०) वा

आज ही नमूनेके लिये लिखिये:—

व्यवस्थापक 'नया समाज',

३३, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता-१

आपके मनोरंजनके लिये

रानी

नाना प्रकारके मन्त्रि लम्ब, वजानिया,
छाया छाव और आलोचनाओं आदि आदि ।
वर्षमें हालिकाक और दोरावगी-अंक मूल्य ।

रानीका वार्षिक वन्दा केवल बार दयेये है ।

“रानी” कार्यालय,

१२१ चित्तरंजन अेविन्ग्यू,

कलकत्ता ७

गुजराती भाषाका निराला साप्ताहिक-पत्र

निर्माण

[सम्पादक : हरिलाल पंड्या]

ममस्त भारतकी शैवर्षिक, साहित्यिक और प्रवाजीवनके नव निर्माणकी प्रवृत्तियोंका ज्योतिर्वर । विज्ञापनका अत्युत्तरम साधन ।

वार्षिक मूल्य ५) छुः माही ३)

अंक प्रति दो आना

'निर्माण' कार्यालय स्वस्तिव प्रिन्टर,
धर्मद मार्ग, राजकोट (सौराष्ट्र)

वार्षिक मूल्य ४) * अंक प्रति 1=)

'माता'

श्री अरविन्द साहित्यकी उत्तर भारतकी अंक मात्र मासिक पत्रिका चार वर्षसे नियमित रूपसे प्रकाशित होकर भारत-वर्षके कोने-कोनेमें तथा अन्य देशोंमें आध्यात्मकी धारा बहा रही है ।

प्रधान सम्पादक—श्री मोहन स्वामी

पता:—प्रबन्धक 'माता' (मासिक)

श्री मातृकेन्द्र, गाजियाबाद (यू पी.)

त्रजका सर्वश्रेष्ठ मासिक 'देशबंधु'

वार्षिक मूल्य ५) अंक प्रति 1=)

देशबन्धु मयूरासे निकलनेवाला सर्वोद्भूत मुन्दर साहित्यिक मासिक पत्र है, जिसे मनी लाग बडे चावसे पढते हैं । त्रिममें युवक कोटिके लेखकोंके चुने लेख, कहानी, कविता, अंकाकी नाटक आदिके अनिर्विकन परीक्षणीयोगी लेख भी रहन हैं । नवीन साहित्यिक पुस्तकों और पत्रोंकी समीक्षा पठनीय होनी है ।

विज्ञापनबाताओंके निम्ने देशबन्धु अपूर्व साधन हैं ।

—देशबन्धु कार्यालय, मयुरा ।

मओ पीटीकी मेहनत और प्रतिभाका प्रतीक
'नव निर्माण' का चतुर्थ वार्षिक अंक

'परीक्षा-विशेषांक'

अम अं, बी. अं प्रिन्टर, साहित्य रत्न प्रभाकर, विचारद, साहित्यमूषण, साहित्यालंकार आदिके लिखे विषय उपयोगी ।

अंक प्रति २) पुस्तकाकार २॥ डाक व्यय अलावा नवनिर्माणके प्राहकोंकी वार्षिक दुल्ल ५) रु. में पता:—

कुमार साहित्य परिषद, जोधपुर-५

'गोरक्षपण'के १०,०००)२०के 'प्रचार फंड' से सहायता लेकर सार्वजनिक सस्थाओंको, गोरक्षपणके क्रान्तिकारी आन्दोलनको कंस सफल बनाना चाहिये अिने—

'गोरक्षपण'

मासिक पत्रमें पडिये । आज ही २॥२०

वार्षिक भेजकर प्राहक बनिये । नमूनेके लिखे 1)का टिकट भेजिये । ग्राहक बनानेवालो और विज्ञापन सग्रह करनेवालोको भरपूर कमीशन दिया जाता है ।

व्यय०—'गोरक्षपण' रामनगर, बनारस (ब्र०प्र०)

हिन्दीका अंकमात्र चौड मासिक

'धर्मदूत'

ॐ भगवान् बुद्धका सन्देश-वाहक

ॐ बौद्ध संस्कृतिका प्रचारक

ॐ सत्य, अहिंसा, मैत्रीका पोषक

ॐ बौद्ध जगत्का परिचायक

ॐ धर्म, दर्शन, इतिहासका गवेषक

वार्षिक मूल्य ३), अंक अंक 1=)

व्यवस्थापक 'धर्मदूत', सारनाथ, बनारस ।

आवश्यक सूचना

राष्ट्रभारती राजकीय शिक्षण विभागों द्वारा स्कूलों, कालेजों और वाचनालयोंके निम्ने स्वीकृत है। राष्ट्रभारती का चौथा वर्ष चल रहा है। राष्ट्रभारती तम्र भारतीय—अंतर प्रांतीय साहित्यका प्रतिनिधित्व करती है। इसमें हिन्दोकी सांस्कृतिक पत्रिकाओंमें अपना अंक प्रतिष्ठित अथ महत्त्वका स्थान बना लिया है। प्रमो पाठकोते निवेदन है कि अंक अंक नया ग्राहक बनाकर अथ पत्रिकाकी ग्राहक सख्यामें वृद्धि करे और राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके भूतगतको वृद्धाव। बिगारद और 'राष्ट्रभाषा रत्न' परोषयोपयोगी अथ आलोचनात्मक-परिचयात्मक लेख भी प्रतिमास अंशमें छपते हैं। कृपया अथ बातको ध्यानमें रख कि हमारी लिखित अनुमति लिय बिना कोओ सज्जन या प्रकाशक 'राष्ट्रभारती' क पिछले अंशमें या आगामी अंशमें प्रकाशित प्रांतीय साहित्यके लेखों कहानियों और अंक को नाट्यो आदिको न छापें।

मोहनगार भट्ट,
मन्त्री, रा भा प्र स यर्धा

राष्ट्रभारती-विज्ञापन दर

माधारण पृष्ठ पूरा — ४०) प्रतिवार	तृतीय कवर पृष्ठ पूरा — ८०) प्रतिवार
, आवा — २५)	आवा — ६५) ,
द्वितीय कवर पृष्ठ पूरा—१००)	चतुर्थ कवर पृष्ठ पूरा — १२०) ,
आवा — ५५) ,	आवा — ७०) ,

राष्ट्रभारतीकी साजिज—९० × ३

छप पृष्ठकी साजिज—८ × ५ १/२

तासे अधिक वार विज्ञापन देनवालोंको विशेष सुविधा दी जाअगी।

'राष्ट्रभारती'में अथन ध्यावारका विज्ञापन देकर लाभ भूटाअिअ। क्योंकि यह कश्मीरसे लेकर रामेश्वरतक और जगन्नाथपुरीसे द्वारकापुरीतक हजारों पाठकोके हाथोंमें पहुँचनी है।

राष्ट्रभारती अजेन्सी

- १ प्रतिमास नम १० रुम पांच प्रतियाँ लनपर ती अत्र मा दी जाअगी।
- २ पांच प्रतियाँ लनपर २०) प्रतिगत वम नन त्रियाँ जाअगी।
- ३ छहमा अथिक प्रतियाँ लनपर २५) प्रतिगत वमोशन त्रियाँ जाअगी।
- ४ पाँचमे अथिक ग्राहक बना देनवा त्राका भा विगत सुविधा दी जाअगी।

विशेष जानकारीक लिअे आज ही लिखिअ —

श्री प्रबन्धक, "राष्ट्रभारती" पो० हिन्दीनगर (धर्धा, म प्र.)

‘राष्ट्रभारती’ आपसे कुछ कहना चाहती है !

१ गत जनवरी—१९५४ न, राष्ट्रभारती चौथे वर्षमें प्रवेश कर चुकी है। भारतके प्राय सभी प्रमुख साहित्यकारों, विद्वानों और पत्र-पत्रिकाओंने ‘राष्ट्रभारती’ की प्रशंसा की, अपने मराहा, अपनाया, अपनी शुभक-मना दी, सहयोग दिया और ब्रुत्साह दयाया। इन सबकी हुराकी जिन शब्दोंमें व्यक्त किया जाये।

२ वह निश्चित मनपर हर महीनेकी पहली तारीखको, अपने प्रेमी पाठकोंके हाथोंमें राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा प्रांतीय भाषाओंको श्रेष्ठ, सुरक्षित, स्वस्थ और सज्ज-सुन्दर, विविध-विषयक गंभीर लेख, कविता, कहानी, अंकाकी, समाजीचना आदि पाठ्य-साग्री प्रस्तुत करती है।

३ फिर नी वह सबने ज्यादा मन्ती, सज्ज-सुन्दरी मानिक पत्रिका है। वार्षिक मूल्य कहिये या मासाना चदा कहिये, ज्यादा नहीं, निरुं ६ रपया और अर्ध-वार्षिक (उह-माही) ३ र ८ आना और अर्ध अरुका १० आना।

४ राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति अपने प्रमाणित प्रचारकों, केन्द्र-अध्यक्षोंकी तथा विभिन्न प्रांतीय सज्ज-सुन्दरी विद्यालयों तथा महाविद्यालयोंकी, पुस्तकालयोंकी ‘राष्ट्रभारती’ अर्क रपया कम करके रियायती वार्षिक मूल्य ५ र और अर्ध-वार्षिक ३ र चन्देमें देती है।

५ जिन महान् पवित्र भारतीय साहित्यिक अथ सज्ज-सुन्दरी राष्ट्रभाषा-प्रचार कार्योंमें आप ‘राष्ट्रभारती’के प्रचारमें हाथ दयायें। स्वयं प्राहक बनें और अपने मित्रोंकी भी बनायें।

६ जो हिन्दी-प्रेमी “राष्ट्रभारती”के पांच प्राहक बना देंगे अर्हूँ अर्क वर्षतक गेट स्वल्प “राष्ट्रभारती” भेजी जायेंगी। अर्ही सहायताका सहय स्वागत किया जायेगा। वार्षिक चंदा मनोआंशरने ही आना चाहिये। प्रतिवषामे—

राष्ट्रभारतीके लेखकोंसे निवेदन

(१) ‘राष्ट्रभारती’ में प्रकाशनार्थ रचना आदि साग्री स्वच्छ-सुदाय लिखावटमें अपवा दखी टाकिप की हकी कानी भेजनी चाहिये। प्रकाशनयोग्य साग्री जो हूठ भी आन भेजें वह बहुत मारी-बोसिल और बहुत लवो नहीं होनी चाहिये।

(२) यह अच्छी तरह ध्यानमें रहे कि राष्ट्रभारतीमें प्रकाशनार्थ भेजी हकी आनकी रचना अरुंके पूर्व किसी हिन्दी पत्र-पत्रिकामें प्रकाशित न हो चुकी हो; और जो कुछ साग्री भेजें वह ‘राष्ट्रभारती’के लिये ही भेजें। ‘राष्ट्रभारती’ अपने लेखकोंको ‘पत्रपुण-सुगन्धार’ की गेट करती है।

(३) अनुवादक महागय किसी अनूदित रचनाकी भेजनेसे पूर्व अरुंके मूल-लेखकसे पत्र द्वारा अनुमति अवश्य प्राप्त कर ले, तभी अनूदित रचना हमारे यहाँ भेजें।

(४) आपकी स्वहित रचना सबधी सूचना सपादक द्वारा आनको दी जायेगी और उपनेतक आपको प्रतीवदा करनी होगी।

(५) अपनी अस्वीहित रचनाको आपन मगानेके लिये डाक-टिकट अवश्य भेजें अरुंदा आन अरुंकी प्रतिलिपि अपने पास सुरक्षित रखें।

(६) लेख, रचना सपादकीय आदि सारा पत्र-व्यवहार जिन संवेतर करें—

संपादक : ‘राष्ट्रभारती’

राष्ट्र—हिन्दीनगर (दर, मज्जदर)